1

बहादुर

आपने कम उम्र के अनेक लड़के-लड़कियों को कारखानों, चाय की दुकानों या फिर घरों में काम करते देखा होगा। आपकी इच्छा होती होगी कि उनके विषय में कुछ जानें, जैसे– वे कहाँ से आए हैं? क्यों आए हैं? कैसे रहते हैं? उनके साथ कैसा व्यवहार किया जाता है? विभिन्न परिस्थितियों का सामना वे कैसे करते हैं ? संभव है कि इस विषय में आपके भी कुछ अनुभव हों।

चित्र 1.1

बहादुर एक ऐसे किशोर की कहानी है, जो अपने घर से भागकर शहर आता है। वहाँ एक घर में नौकरी करने लगता है। वह अपना काम पूरी ईमानदारी और लगन से करता है, लेकिन एक दिन अचानक वह इस घर से भी भाग जाता है। वह ऐसा क्यों करता है – आइए, जानें।

उद्देश्य

इस पाठ को पढ़ने के बाद आप

- बहादुर के घर से भागने के मनोवैज्ञानिक कारण स्पष्ट कर सकेंगे;
- वयस्कों, विशेषतः किशोरों पर सामाजिक परिवेश के दबाव को समझ सकेंगे;
- भिन्न परिस्थितियों वाले दो किशोरों के व्यवहार में अंतर स्पष्ट कर सकेंगे;
- बहादुर के प्रति परिवार के प्रत्येक व्यक्ति के व्यवहार पर कारण सहित टिप्पणी कर सकेंगे;
- बहादुर के नौकरी छोड़कर भाग जाने के बाद सभी के पछतावे का कारण बता सकेंगे;

- बहादुर जैसे किसी अन्य किशोर के रहन-सहन पर टिप्पणी कर सकेंगे;
- कहानी के मुख्य पात्रों का चरित्र-चित्रण कर सकेंगे;
- कहानी की भाषा-शैली पर टिप्पणी कर सकेंगे।

1.1 मूल पाठ

आइए, इस कहानी को एक बार ध्यान से पढ़ लेते हैं। आपकी सहायता के लिए कहानी में आए कठिन शब्दों के अर्थ हाशिए पर दिए जा रहे हैं।

बहादुर

सहसा मैं काफ़ी गंभीर हो गया था, जैसा कि उस व्यक्ति को हो जाना चाहिए, जिस पर एक भारी दायित्व आ गया हो। वह सामने खड़ा था और आँखों को बुरी तरह मलका रहा था। बारह-तेरह वर्ष की उम्र। ठिगना चकइठ शरीर, गोरा रंग और चपटा मुँह। वह सफ़ेद नेकर, आधी बाँह की सफ़ेद कमीज़ और भूरे रंग का पुराना जूता पहने था। उसके गले में स्काउटों की तरह एक रूमाल बँधा था। उसको घेरकर परिवार के अन्य लोग खड़े थे। निर्मला चमकती दृष्टि से कभी लड़के को देखती और कभी मुझको और अपने भाई को। निश्चय ही वह पंच बराबर हो गई थी।

उसको लेकर मेरे साले साहब आए थे। नौकर रखना कई कारणों से बहुत ज़रूरी हो गया था। मेरे सभी भाई और रिश्तेदार अच्छे ओहदों पर थे और उन सभी के यहाँ नौकर थे। मैं जब बहन की शादी में घर गया, तो वहाँ नौकरों का सुख देखा। मेरी दोनों भाभियाँ रानी की तरह बैठकर चारपाइयाँ तोड़ती थीं, जबकि निर्मला को सबेरे से लेकर रात तक खटना पड़ता था। मैं ईर्ष्या से जल गया। इसके बाद नौकरी पर वापस आया, तो निर्मला दोनों जून 'नौकर-चाकर' की माला जपने लगी। उसकी तरह अभागिन और दुखिया स्त्री और भी कोई इस दुनिया में होगी? वे लोग दूसरे होते हैं, जिनके भाग्य में नौकर का सुख होता है....

पहले साले साहब से उसका किस्सा सुनना पड़ा। वह एक नेपाली था, जिसका गाँव नेपाल और बिहार की सीमा पर था। उसका बाप युद्ध में मारा गया था और उसकी माँ सारे परिवार का भरण-पोषण करती थी। माँ उसकी बड़ी गुस्सैल थी और उसको बहुत मारती थी। माँ चाहती थी कि लड़का घर के काम-धाम में हाथ बटाए, जबकि वह पहाड़ या जंगलों में निकल जाता और पेड़ों पर चढ़कर चिड़ियों के घोंसलों में हाथ डालकर उनके बच्चे पकड़ता या फल तोड़-तोड़कर खाता। कभी-कभी वह पशुओं को चराने के लिए ले जाता था। उसने एक बार उस भैंस को बहुत मारा, जिसको उसकी माँ बहुत प्यार करती थी, और इसीलिए उससे वह बहुत चिढ़ता था। मार खाकर भैंस भागी-भागी उसकी माँ के पास चली गई, जो कुछ दूरी पर एक खेत में काम कर रही थी। माँ का माथा ठनका। बेचारा बेज़बान जानवर चरना छोड़कर यहाँ क्यों आएगा?

सहसा – अचानक
ठिगना – छोटे कद का
दायित्व – ज़िम्मेदारी
आँखों को मलकाना – आँखें जल्दी-जल्दी खोलना और बंद करना
चकइठ – गोल बनावट का
चमकती दृष्टि से देखना – आशा तथा प्रसन्नता से देखना
ओहदा – पद
खटना – बहुत मेहनत करना
ईर्ष्या से जलना – बहुत ईर्ष्या करना
जून – समय (सुबह-शाम)
माला जपना – रट लगाना; एक ही बात बार-बार कहना
अभागिन – भाग्य जिसका साथ न दे
भरण-पोषण –पालना-पोसना
गुस्सैल – गुस्से वाली; क्रोधी
हाथ बँटाना – सहायता करना
माथा ठनकना – शक होना
बेज़बान – जो बोल नहीं सकता

चित्र 1.2

ज़रूर उसने उसको काफ़ी मारा है। वह गुस्से से पागल हो गई। जब लड़का आया, तो माँ ने भैंस की मार का काल्पनिक अनुमान करके एक डंडे से उसकी दुगुनी पिटाई की और उसको वहीं कराहता हुआ छोड़कर घर लौट आई। लड़के का मन माँ से फट गया और वह रात भर जंगल में छिपा रहा। जब सबेरा होने को आया, तो वह घर पहुँचा और किसी तरह अंदर चोरी-चुपके घुस गया। फिर उसने घी की हँडिया में हाथ डालकर माँ के रखे रुपयों में से दो रुपए निकाल लिए। अंत में नौ-दो ग्यारह हो गया। वहाँ से छह मील की दूरी पर बस स्टेशन था, जहाँ गोरखपुर जाने वाली बस मिलती थी।

तुम्हारा नाम क्या है, जी?—मैंने पूछा।

दिल बहादुर, सा'ब।

उसके स्वर में एक मीठी झनझनाहट थी। मुझे ठीक-ठीक याद नहीं कि मैंने उसको क्या हिदायतें दीं। शायद यह कि वह शरारतें छोड़कर ढंग से काम करे और इस घर को अपना घर समझे। इस घर में नौकर-चाकर को बहुत प्यार और इज़्ज़त से रखा जाता है। जो सब खाते-पहनते हैं, वही नौकर-चाकर खाते-पहनते हैं। अगर वह यहाँ रह गया तो ढंग-शऊर सीख जाएगा, घर के और लड़कों की तरह पढ़-लिख जाएगा और उसकी ज़िंदगी सुधर जाएगी। निर्मला ने उसी समय कुछ व्यावहारिक उपदेश दे डाले थे। इस मुहल्ले में बहुत तुच्छ लोग रहते हैं, वह न किसी के यहाँ जाए और न किसी का काम करे। कोई बाज़ार से कुछ लाने को कहे, तो वह 'अभी आता हूँ' कहकर अंदर खिसक जाए। उसको घर के सभी लोगों से सम्मान और तमीज़ से बोलना चाहिए। और भी बहुत सी बातें। अंत में निर्मला ने बहुत ही उदारतापूर्वक लड़के के नाम में से 'दिल' शब्द उड़ा दिया।

परंतु, बहादुर बहुत ही हँसमुख और मेहनती निकला। उसकी वजह से कुछ दिनों तक हमारे घर में वैसा ही उत्साहपूर्ण वातावरण छाया रहा, जैसा कि प्रथम बार तोता-मैना

टिप्पणी

गुस्से से पागल होना – बहुत अधिक गुस्से के कारण कुछ न सूझना
काल्पनिक अनुमान – मन में अंदाज़ा करना
मन फट जाना – लगाव न रहना; प्रीति न रहना
नौ दो ग्यारह होना – भाग जाना
हिदायत – चेतावनी; सीख
शऊर – ढंग; तरीका
व्यावहारिक – व्यवहार करने योग्य
हँसमुख – हमेशा हँसते रहने वाला

टिप्पणी

फ़रमाइश – माँग
फ़िक्र – चिंता
तलना-भूनना – बहुत दुख देना
महीनावारी – मासिक; प्रतिमाह
तकलीफ़ – दर्द
पुलई – टहनी का अंतिम हिस्सा
रिपोर्ट – सूचना
गोया – जैसे

या पिल्ला पालने पर होता है। सबेरे - सबेरे ही मुहल्ले के छोटे-छोटे लड़के घर के अंदर आकर खड़े हो जाते और उसको देखकर हँसते या तरह-तरह के प्रश्न करते। ''ऐ, तुम लोग छिपकली को क्या कहते हो?''... ''ऐ, तुमने शेर देखा है?''... ऐसी ही बातें। उससे पहाड़ी गाने की फ़रमाइशें की जातीं। घर के लोग भी उससे इसी प्रकार की छेड़खानियाँ करते थे। वह जितना उत्तर देता, उससे अधिक हँसता था। सबको उसके खाने और नाश्ते की बड़ी फ़िक्र रहती।

निर्मला आँगन में खड़े होकर पड़ोसियों को सुनाते हुए कहती थी – बहादुर, आकर नाश्ता क्यों नहीं कर लेते? मैं दूसरी औरतों की तरह नहीं हूँ, जो नौकर-चाकर को तलती-भूनती हैं। मैं तो नौकर-चाकर को अपने बच्चे की तरह रखती हूँ। उन्होंने तो साफ़-साफ़ कह दिया है कि सौ-डेढ़ सौ महीनावारी उस पर भले ही ख़र्च हो जाए, पर तकलीफ़ उसको ज़रा भी नहीं होनी चाहिए। एक नेकर-कमीज़ तो उसी रोज़ लाए थे...और भी कपड़े बन रहे हैं...

धीरे-धीरे वह घर के सारे काम करने लगा। सबेरे ही उठकर वह बाहर नीम के पेड़ से दातून तोड़ लाता था। वह हाथ का सहारा लिए बिना कुछ दूर तक तने पर दौड़ते हुए चढ़ जाता। मिनट भर में वह पेड़ की पुलई पर नज़र आता। निर्मला छाती पीटकर कहती थी – अरे रीछ-बंदर की जात, कहीं गिर गया तो बड़ा बुरा होगा। वह घर की सफ़ाई करता, कमरों में पोंछा लगाता, अँगीठी जलाता, चाय बनाता और पिलाता। दोपहर में कपड़े धोता और बर्तन मलता। वह रसोई बनवाने की भी ज़िद करता, पर निर्मला स्वयं सब्ज़ी और रोटी बनाती। निर्मला की उसको बहुत फ़िक्र रहती थी। उसकी उन दिनों तबीयत ठीक नहीं रहती थी, इसलिए वह कुछ दवा ले रही थी। बहादुर उसको कोई काम करते देखकर कहता था – माता जी, मेहनत न करो, तकलीफ़ बढ़ जाएगा। वह कोई भी काम करता होता, समय होने पर हाथ धोकर भालू की तरह दौड़ता हुआ कमरे में जाता और दवाई का डिब्बा निर्मला के सामने लाकर रख देता।

जब मैं शाम को दफ़्तर से आता, तो घर के सभी लोग मेरे पास आकर दिन भर के अपने अनुभव सुनाते थे। बाद में वह भी आता था। वह एक बार मेरी ओर देखकर सिर झुका लेता और धीरे-धीरे मुस्कराने लगता। वह किसी बहुत ही मामूली घटना की रिपोर्ट देता। बाबू जी, बहिन जी का एक सहेली आया था या बाबू जी, भैया सिनेमा गया था। उसके बाद वह इस तरह हँसने लगता था, गोया बहुत ही मज़ेदार बात कह दी हो। मैं उससे बातचीत करना चाहता था, पर ऐसी इच्छा रहते हुए भी मैं जान-बूझकर बहुत गंभीर हो जाता था और दूसरी ओर देखने लगता था।

निर्मला कभी-कभी उससे पूछती थी – बहादुर, तुमको अपनी माँ की याद आती है?

टिप्पणी

– नहीं।
– क्यों?
– वह मारता क्यों था?–इतना कहकर वह ख़ूब हँसता था, जैसे मार खाना ख़ुशी की बात हो।
– तब तुम अपना पैसा माँ के पास कैसे भेजने को कहते हो?
– माँ-बाप का कर्ज़ा तो जन्म भर भरा जाता है – वह और भी हँसता था।

निर्मला ने उसको एक फटी-पुरानी दरी दे दी थी। घर से वह एक चादर भी ले आया था। रात को काम-धाम करने के बाद वह भीतर के बरामदे में एक टूटी हुई बँसखट पर अपना बिस्तर बिछाता था। वह बिस्तरे पर बैठ जाता और जेब में से कपड़े की एक गोल-सी नेपाली टोपी निकालकर पहन लेता, जो बाईं ओर काफ़ी झुकी रहती थी। फिर वह एक छोटा-सा आईना निकालकर बंदर की तरह उसमें अपना मुँह देखता था। वह बहुत ही प्रसन्न नज़र आता था। इसके बाद कुछ और भी चीज़ें उसकी जेब से

चित्र 1.3

निकलकर उसके बिस्तरे पर सज जाती थीं – कुछ गोलियाँ, पुराने ताश की एक गड्डी, कुछ ख़ूबसूरत पत्थर के टुकड़े, ब्लेड, कागज़ की नावें। वह कुछ देर तक उनसे खेलता था। उसके बाद वह धीमे-धीमे स्वर में गुनगुनाने लगता था। उन पहाड़ी गानों का अर्थ हम समझ नहीं पाते थे, पर उनकी मीठी उदासी सारे घर में फैल जाती, जैसे कोई पहाड़ की निर्जनता में अपने किसी बिछुड़े हुए साथी को बुला रहा हो।

दिन मज़े में बीतने लगे। बरसात आ गई थी। पानी रुकता था और बरसता था। मैं अपने को बहुत ऊँचा महसूस करने लगा था। अपने परिवार और संबंधियों के बड़प्पन तथा शान-बान पर मुझे सदा गर्व रहा है । अब मैं मुहल्ले के लोगों को पहले से भी तुच्छ समझने लगा। मैं किसी से सीधे मुँह बात न करता। किसी की ओर ठीक से देखता भी नहीं था। दूसरे के बच्चों को मामूली-सी शरारत पर डाँट-डपट देता था। कई बार पड़ोसियों को सुना चुका था – जिसके पास कलेजा है, वही आजकल नौकर रख

बँसखट – बाँस से बनी चारपाई
निर्जनता – सुनसान; सूनापन
बड़प्पन – बड़ा होने के भाव

सकता है। घर के सवांग की तरह रहता है। निर्मला भी सारे मुहल्ले में शुभ सूचना दे आई थी – आधी तनख़ाह तो नौकर पर ही ख़र्च हो रही है, पर रुपया-पैसा कमाया किसलिए जाता है? ये तो कई बार कह ही चुके थे कि तुम्हारे लिए दुनिया के किसी कोने से नौकर ज़रूर लाऊँगा... वही हुआ।

निस्संदेह, बहादुर की वजह से सबको बहुत आराम मिल रहा था। घर ख़ूब साफ़ और चिकना रहता। कपड़े चमाचम सफ़ेद। निर्मला की तबीयत भी काफ़ी सुधर गई थी। अब कोई एक खर भी न टकसाता था। किसी को मामूली काम करना होता, तो वह बहादुर को आवाज़ देता – "बहादुर, एक गिलास पानी...", "बहादुर पेंसिल नीचे गिरी है, उठाना।" इसी तरह की फ़रमाइशें ! बहादुर घर में फिरकी की तरह नाचता रहता । सभी रात में पहले ही सो जाते थे और सबेरे आठ बजे के पहले न उठते थे।

मेरा बड़ा लड़का किशोर काफ़ी शान-शौकत और 'रौब-दाब' से रहने का कायल था और उसने बहादुर को अपने कड़े अनुशासन में रखने की आवश्यकता महसूस कर ली थी। फलतः उसने अपने सभी काम बहादुर को सौंप दिए। सबेरे उसके जूते में पालिश लगनी चाहिए। कॉलेज जाने के ठीक पहले साइकिल की सफ़ाई ज़रूरी थी। रोज़ ही उसके कपड़ों की धुलाई और इस्त्री होनी चाहिए। और रात में सोते समय वह नित्य बहादुर से अपने शरीर की मालिश कराता और मुक्की भी लगवाता। पर इतनी सारी फ़रमाइशों की पूर्ति में कभी-कभी कोई गड़बड़ी भी हो जाती। जब ऐसा होता, किशोर गर्जन-तर्जन करने लगता, उसको बुरी-बुरी गालियाँ देता और उस पर हाथ छोड़ देता। मार खाकर बहादुर एक कोने में खड़ा हो जाता – चुपचाप।

'देख बे' – किशोर चेतावनी देता – मेरा काम सबसे पहले होना चाहिए। अगर एक काम भी छूटा, तो मारते-मारते हुलिया टाइट कर दूँगा। साला, कामचोर, करता क्या है तू? बैठा-बैठा खाता है।

रोज़ ही कोई-न-कोई ऐसी बात होने लगी, जिसकी रिपोर्ट पत्नी मुझे देती थी। मैंने किशोर को मना किया, पर वह नहीं माना, तो मैंने यह सोचकर छोड़ दिया कि थोड़ा बहुत तो यह चलता ही रहता है। फिर एक हाथ से ताली कहाँ बजती है? बहादुर भी बदमाशी करता होगा। पर, एक दिन जब मैं दफ़्तर से आया, तो मैंने किशोर को एक डंडे से बहादुर की पिटाई करते हुए देखा। निर्मला कुछ दूरी पर खड़ी 'हाँ-हाँ' कहती हुई मना कर रही थी।

मैंने किशोर को डाँटकर अलग किया। कारण यह था कि शाम को साइकिल की सफ़ाई करना बहादुर भूल गया था। किशोर ने उसको मारा तथा गालियाँ दीं तो उसने उसका काम करने से इन्कार कर दिया।

तुम साइकिल साफ़ क्यों नहीं करते ? – मैंने उससे कड़ाई से पूछा।

बाबू जी, भैया ने मेरे मरे बाप को क्यों लाकर खड़ा किया ? – वह रोते हुए बोला।

टिप्पणी

सवांग – (स्व अंग) अपने परिवार का सदस्य; संबंधी
तनख़ाह – वेतन
निस्संदेह – बिना शक
एक खर भी न टकसाना – कुछ भी न करना
फिरकी की तरह नाचना – काम के लिए यहाँ से वहाँ दौड़ना
शान-शौकत – ठाठ-बाट
कायल – माननेवाला
अनुशासन – नियम; व्यवस्था
नित्य – रोज़; प्रतिदिन
पूर्ति – पूरा करना
गर्जन-तर्जन करना – ऊँची आवाज़ में डाँटना-फटकारना
हाथ छोड़ना – पिटाई करना
हुलिया टाइट करना – चेहरा बिगाड़ना; बुरी तरह से पीटना

टिप्पणी

मैं जानता था कि किशोर उसको और भी भद्दी गालियाँ देता था, लेकिन आज उसने 'सूअर का बच्चा' कहा था, जो उसे बरदाश्त न हुआ। निस्संदेह वह गाली उसके बाप पर पड़ती थी। मुझे कुछ हँसी आ गई। ख़ैर, किशोर के व्यवहार को अच्छा नहीं कहा जा सकता, पर गृहस्वामी होने के कारण मुझ पर कुछ और गंभीर दायित्व भी थे।

मैंने उसे समझाया – बहादुर, ये आदतें ठीक नहीं। तुम ठीक से काम करोगे, तो तुमको कोई कुछ भी नहीं कहेगा। मेहनत बहुत अच्छी चीज़ है, जो उससे बचने की कोशिश करता है, वह कुछ भी नहीं कर सकता। रूठना-फूलना मुझे सख़्त नापसंद है। तुम तो घर के लड़के की तरह हो। घर के लड़के मार नहीं खाते? हम तुमको जिस सुख-आराम से रखते हैं, वह कोई क्या रखेगा? जाकर दूसरे घरों में देखो, तो पता लगे। नौकर-चाकर भरपेट भोजन के लिए तरसते रहते हैं। चलो, सब ख़त्म हुआ, अब काम-धाम करो...

वह चुपचाप सुनता रहा। फिर हाथ-मुँह धोकर काम करने लगा। जल्दी ही वह प्रसन्न भी हो गया। रात में सोते समय वह अपनी टोपी पहनकर देर तक गाता रहा।

लेकिन कुछ दिनों बाद एक और गड़बड़ी शुरू हुई। निर्मला बहुत पतली-पतली रोटियाँ सेंकती थी, इसलिए वह रोटी बनाने का काम कभी बहादुर से नहीं लेती थी, लेकिन मुहल्ले की किसी औरत ने उसे यह सिखा दिया कि परिवार के लिए रोटियाँ बनाने के बाद वह बहादुर से कहे कि वह अपनी रोटी ख़ुद बना लिया करे, नहीं तो नौकर-चाकर की आदत ख़राब हो जाती है, महीन खाने से उनकी आदत बिगड़ जाती है।

यह बात निर्मला को जँच गई थी और रात में उसने ऐसा ही प्रयोग किया। वह अपनी रोटियाँ बनाकर चौके में से उठ गई। बहादुर का मुँह उतर गया। वह चूल्हे के पास सिर झुकाकर चुपचाप खड़ा रहा।

– क्या हो गया रे? – निर्मला ने पूछा।

वह कुछ नहीं बोला।

– चल, चुपचाप बना अपनी रोटियाँ। तू सोचता है कि मैं तुझे पतली-पतली, नरम-नरम रोटियाँ सेंककर खिलाऊँगी? तू कोई घर का लड़का है ? नौकर-चाकर तो अपना बनाकर खाते ही रहते हैं। तीता तो इनको इसलिए लग रहा है कि सारे घर के लिए मैंने रोटियाँ बनाईं, इनको अलग करके इनके साथ भेद क्यों किया? वाह रे, इसके पेट में तो लंबी दाढ़ी है! समझ जा, रोटियाँ नहीं सेंकेगा, तो भूखा रहेगा।

पर, बहादुर उसी तरह खड़ा रहा, तो निर्मला का गुस्से से बुरा हाल हो गया। उसने लपककर उसके माथे पर दो-तीन थप्पड़ जड़ दिए – सूअर कहीं के! इसीलिए किशोर तुझे मारता है। इसी वजह से तेरी माँ भी मारती होगी। चल, बना रोटी...

भद्दी – गंदी
बरदाश्त – सहन
गृहस्वामी – घर का मालिक
महीन खाना – अच्छा खाना; संपन्न लोगों का भोजन
मुँह उतरना – उदास हो जाना
चौका – रसोई
तीता – कड़वा; बुरा
पेट में लंबी दाढ़ी होना – बाहर शरीफ़ दिखना, लेकिन वास्तव में चालाक होना

– मैं नहीं बनाऊँगा... मेरी माँ भी सारे घर की रोटियाँ बनाकर मुझसे रोटी सेंकवाती थी– वह रोने लगा था।

– तो क्या मैं तेरी माँ हूँ कि तू मुझसे ज़िद कर रहा है? घर के लड़कों के बराबर बन रहा है? मारते-मारते मुँह रँग दूँगी।

चित्र 1.4

पर, उसने अपने लिए रोटी नहीं बनाई। मुझे भी बड़ा गुस्सा आया। मैंने उसको डाँटा और समझाया। पर वह नहीं माना। रात भर वह भूखा ही रहा।

पर, सबेरे उठकर वह पहले की तरह ही हँसने लगा। उसने अँगीठी जलाकर अपने लिए रोटियाँ सेंकीं। अपनी बनाई मोटी और भद्दी रोटी को देखकर वह खिलखिलाने लगा। फिर रात की बची हुई सब्ज़ी से उसने खाना खा लिया।

लेकिन निर्मला का भी हाथ खुल गया था। वह उससे कुछ चिढ़ भी गई थी। अब बहादुर से कोई भी गलती होती, तो वह उस पर हाथ चला देती। उसको मारने वाले अब घर में दो व्यक्ति हो गए थे और कभी-कभी एक गलती के लिए उसको दोनों मारते।

बरसात बीत गई थी। आकाश दर्पण की तरह स्वच्छ दिखाई देता। मैंने बहादुर की माँ के पास चिट्ठी लिखी थी कि उसका लड़का मेरे पास मज़े में है और मैं उसकी तनख़ाह के पैसे उसके पास भेज दिया करूँगा, लेकिन कई महीने के बाद भी उधर से कोई जवाब नहीं आया था। मैंने बहादुर से कह दिया था कि उसका पैसा यहाँ जमा रहेगा, जब घर जाएगा, तो लेता जाएगा।

पर, अब बहादुर से भूल-गलतियाँ अधिक होने लगी थीं। शायद इसका कारण मार-पीट और गाली-गलौज़ हो। मैं कभी-कभी इसको रोकना चाहता, फिर यह सोचकर चुप लगा जाता कि नौकर-चाकर तो मार-पीट खाते ही रहते हैं।

एक दिन रविवार को मेरी पत्नी के एक रिश्तेदार आए। वे बीवी-बच्चों के साथ थे। वे अपने किसी ख़ास संबंधी के यहाँ आए थे, तो यहाँ भी भेंट-मुलाकात करने के लिए चले आए थे। घर में बड़ी चहल-पहल मच गई। मैं बाज़ार से रोहू मछली और देहरादूनी चावल ले आया। नाश्ते-पानी के बाद बातों की जलेबी छनने लगी। पर इसी समय एक घटना हो गई।

अचानक उस रिश्तेदार की पत्नी नीचे फ़र्श पर झुककर देखने लगी। फिर उसने चारपाई के अंदर झाँककर देखा। अंत में कमरे के अंदर चली गई और फ़र्श पर पड़े हुए कागज़ों को उठाकर जाँच-पड़ताल करने लगी।

मारते-मारते मुँह रँगना – बहुत मारना; इतना मारना कि चेहरा लाल हो जाए
खिलखिलाना – ज़ोर से हँसना
हाथ खुलना – मारने की आदत पड़ना
हाथ चलाना – मारना
स्वच्छ – साफ़
बातों की जलेबी छनने लगी – इधर-उधर की ढेर सारी बातें होने लगीं

टिप्पणी

– क्या बात है ?–मैंने पूछा।

रिश्तेदार की पत्नी ज़बरदस्ती मुस्कराकर मजबूरी में सिर हिलाते हुए बोली – क्या बताएँ ... ग्यारह रुपए साड़ी के खूँट से निकालकर यहीं चारपाई पर रखे थे... पर वे मिल नहीं रहे हैं...

चित्र 1.5

आपको ठीक याद है न...

– हाँ-हाँ ख़ूब अच्छी तरह याद है। ये रुपए मैंने खूँट में बाँधकर रखे थे... रिक्शेवाले को देने के लिए खूँट खोला ही था, फिर वे रुपए चारपाई पर रख दिए थे कि चार रुपए की मिठाई मँगा लूँगी और कुछ बच्चों के हाथ पर रख दूँगी। रास्ते में कोई ढंग की दुकान नहीं मिली थी, नहीं तो उधर से ही लाती। किसी के यहाँ खाली हाथ जाने में अच्छा नहीं लगता। बताइए, अब तो मैं कहीं की न रही। फिर मेरी ओर झुककर धीमे स्वर में कहा था – ज़रा उससे पूछिए न! वह इधर आया था। कुछ देर तक वह यहाँ खड़ा रहा, फिर तेज़ी से बाहर चला गया था।

– अरे नहीं, वह ऐसा नहीं है – मैंने कहा।

– यू डू नॉट नो, दीज़ पीपुल आर एक्सपर्ट इन दिस आर्ट – रिश्तेदार ने कहा। मैंने बहादुर की ओर तिरछी दृष्टि से देखा। वह सिर झुकाकर आटा गूँथ रहा था। उसके चेहरे पर संतुष्टि एवं प्रसन्नता थी। उसने ऐसा काम तो कभी नहीं किया, बल्कि जब कभी उसने दो-चार आने इधर-उधर पड़े देखे, तो उठाकर निर्मला के हाथ में दे दिए थे। पर, किसी के दिल की बात कोई कैसे जान सकता है ? न मालूम अचानक मुझे क्या हो गया और मैं गुस्से में आ गया।

– बहादुर ! मैंने कड़े स्वर में पूछा।
– जी, बाबू जी।
– इधर आओ।

वह आकर खड़ा हो गया।

– तुमने यहाँ से रुपए उठाए थे?
– जी नहीं, बाबू जी – उसने निर्भय उत्तर दिया।
– ठीक बताओ... मैं बुरा नहीं मानूँगा।

साड़ी का खूँट – साड़ी का कोना, जिसमें पैसे रखकर बाँध लिए जाते हैं
यू डू नॉट नो, दीज़ पीपुल आर एक्सपर्ट इन दिस आर्ट – आप नहीं जानते, ये लोग इस कला में बड़े माहिर होते हैं।
तिरछी दृष्टि से – शक की दृष्टि से
संतुष्टि एवं प्रफुल्लता – संतोष और खुशी

टिप्पणी

– नहीं बाबू जी। मैं लेता, तो बता देता।

– तुम यहाँ खड़े नहीं थे? – रिश्तेदार की पत्नी ने कहा – फिर तेज़ी से बाहर चले गए थे। देखो भैया, सच-सच बता दो। मिठाई ख़रीदने और बच्चों को देने के लिए ये रुपए रखे थे। मैं तो बुरी फँसी। अब वापस जाने के लिए रिक्शे के भी पैसे नहीं।

– मैं तो बाहर नमक लेने लगा था।

– सच-सच बता बहादुर ! अगर नहीं बताएगा, तो बहुत पीटूँगा और पुलिस के सुपुर्द कर दूँगा – मैं चिल्ला पड़ा।

– मैंने नहीं लिया बाबू जी, – बहादुर का मुँह काला पड़ गया।

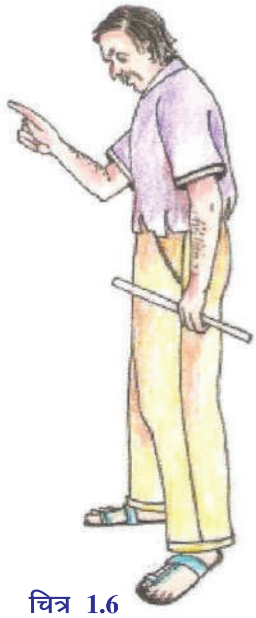

चित्र 1.6

पता नहीं मुझे क्या हो गया! मैंने सहसा उछलकर उसके गाल पर एक तमाचा जड़ दिया। मैं आशा कर रहा था कि ऐसा करने से वह बता देगा। तमाचा खाकर वह गिरते-गिरते बचा। उसकी आँखों से आँसू गिरने लगे।

– मैंने नहीं लिया...

इसी समय रिश्तेदार साहब ने एक अजीब हरकत की – अच्छा छोड़िए, इसको पुलिस के पास ले जाता हूँ। इतना कहकर उन्होंने बहादुर का हाथ पकड़ लिया और उसको दरवाज़े की ओर घसीटकर ले गए। पर, दरवाज़े के पास उससे धीरे से बोले – देखो, तुम मुझे बता दो...मैं कुछ नहीं करूँगा, बल्कि तुमको ईनाम में दो रुपए दे दूँगा।

पर, बहादुर ने इन्कार कर दिया। इसके बाद रिश्तेदार साहब दो-तीन बार उसको दरवाज़े की ओर खींचकर ले गए, जैसे पुलिस को देने ही जा रहे हैं। लेकिन आगे बढ़कर वे रुक जाते और उससे धीमे-धीमे शब्दों में पूछ-ताछ करने लगते।

सुपुर्द – हवाले
मुँह काला पड़ना – भयभीत होना
घाघ – चालाक; मँजा हुआ
दुरदुराना – डाँटना; भगाना
जान के पीछे पड़ना – बहुत परेशान करना; कष्ट देना

अंत में हारकर उन्होंने उसको छोड़ दिया और वापस आकर चारपाई पर बैठते हुए हँसकर बोले – जाने दीजिए...ये सब बड़े घाघ होते हैं। किसी झाड़ी-वाड़ी में छिपा आया होगा या ज़मीन में गाड़ आया होगा। मैं तो इन सबों को ख़ूब जानता हूँ। भालू-बंदर से कम थोड़े होते हैं ये। चलिए, इतना नुकसान लिखा था।

इसके बाद निर्मला ने भी उसको डराया-धमकाया और दो-चार तमाचे जड़ दिए, पर वह 'नहीं-नहीं' करता रहा।

इस घटना के बाद बहादुर काफ़ी डाँट-मार खाने लगा। घर के सभी लोग उसको कुत्ते की तरह दुरदुराया करते। किशोर तो जैसे उसकी जान के पीछे पड़ गया था। वह उदास रहने लगा और काम में लापरवाही करने लगा।

एक दिन मैं दफ़्तर से विलंब से आया। निर्मला आँगन में चुपचाप सिर पर हाथ रखकर बैठी थी। अन्य लड़कों का पता नहीं था, केवल लड़की अपनी माँ के पास खड़ी थी। अँगीठी अभी जली नहीं थी। आँगन गंदा पड़ा था। बर्तन बिना मले हुए रखे थे। सारा घर जैसे काट रहा था।

– क्या बात है ? – मैंने पूछा।

– बहादुर भाग गया।

– भाग गया! क्यों ?

– पता नहीं ! आज तो कुछ हुआ भी नहीं था। सबेरे से ही बड़ा प्रसन्न था। बराबर माता जी-माता जी किए जा रहा था। दोपहर में खाना खाया। उसके बाद आँगन से सिल-बट्टा लेकर बरामदे में रखने जा रहा था कि सिल हाथ से छूटकर गिर गई और दो टुकड़े हो गई। शायद इसी डर से वह भाग गया कि लोग मारेंगे। पर, मैं इसके लिए उसको थोड़े कुछ कहती ? क्या बताऊँ, मेरी किस्मत में आराम ही नहीं...

– कुछ ले गया ?

– यही तो अफ़सोस है। कोई भी सामान नहीं ले गया है। उसके कपड़े, उसका बिस्तरा, उसके जूते – सभी छोड़ गया है। पता नहीं उसने हमें क्या समझा ? अगर वह कहता, तो मैं उसे रोकती थोड़े? बल्कि उसको ख़ूब अच्छी तरह पहना-ओढ़ाकर भेजती, हाथ में उसकी तनख़ाह के रुपए रख देती। दो-चार रुपए और अधिक दे देती। पर वह तो कुछ ले ही नहीं गया..

– और वे ग्यारह रुपए ?

– अरे, वह सब झूठ है। मैं तो पहले ही जानती थी कि वे लोग बच्चों को कुछ देना नहीं चाहते, इसलिए अपनी गलती और लाज छिपाने के लिए यह प्रपंच रच रहे हैं। उन लोगों को क्या मैं जानती नहीं? कभी उनके रुपए रास्ते में गुम हो जाते हैं... कभी वे गलती से घर ही पर छोड़ आते हैं। मेरे कलेजे में तो जैसे कुछ हौंड़ रहा है। किशोर को भी बड़ा अफ़सोस है। उसने सारा शहर छान मारा, पर बहादुर

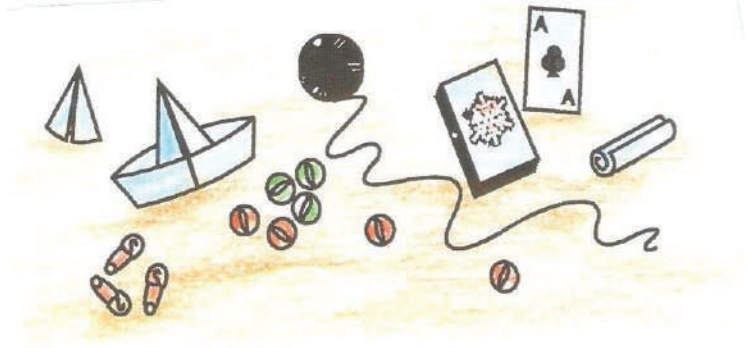

चित्र 1.7

टिप्पणी

विलंब – देर
सारा घर जैसे काट रहा था – घर में रहना बुरा लग रहा था
हौंड़ना – खलबलाना, उथल–पुथल होना
अफ़सोस – दुख
पहना-ओढ़ाकर भेजती – वस्त्र आदि बहुत सारी चीज़ें देकर भेजती।
प्रपंच – दिखावा, छल
सारा शहर छान मारा – सारे शहर में ढूँढ लिया
कलेजा बैठना – दुखी होना

टिप्पणी

लघुता – छोटापन
अलगनी – कपड़े टाँगने की रस्सी

नहीं मिला। किशोर आकर कहने लगा – अम्माँ, एक बार भी अगर बहादुर आ जाता तो मैं उसको पकड़ लेता और कभी जाने न देता। उससे माफ़ी माँग लेता और कभी नहीं मारता। सच, अब ऐसा नौकर कभी नहीं मिलेगा। कितना आराम दे गया वह। अगर वह कुछ चुराकर ले गया होता, तो संतोष हो जाता...

निर्मला आँखों पर आँचल रखकर रोने लगी। मुझे बड़ा क्रोध आया। मैं चिल्लाना चाहता था, पर भीतर ही भीतर मेरा कलेजा जैसे बैठ रहा हो। मैं वहीं चारपाई पर सिर झुका कर बैठ गया। मुझे एक अजीब-सी लघुता का अनुभव हो रहा था। यदि मैं न मारता, तो शायद वह न जाता।

मैंने आँगन में नज़र दौड़ाई। एक ओर स्टूल पर उसका बिस्तरा रखा था। अलगनी पर उसके कुछ कपड़े टँगे थे। स्टूल के नीचे वह भूरा जूता था, जो मेरे साले साहब के लड़के का था। मैं उठकर अलगनी के पास गया और उसके नेकर की जेब में हाथ डालकर उसका सामान निकालने लगा – वही गोलियाँ, पुराने ताश की गड्डी, ख़ूबसूरत पत्थर, ब्लेड, कागज़ की नावें...

– **अमरकांत**

बोध प्रश्न

सर्वाधिक उपयुक्त विकल्प चुनकर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

1. ''माँ-बाप का कर्ज़ा तो जन्म भर भरा जाता है'' – यह वाक्य किसका है?

   (क) निर्मला का ☐ (ख) वाचक का ☐

   (ग) बहादुर का ☐ (घ) किशोर का ☐

2. ''देख बे, मेरा काम सबसे पहले होना चाहिए। अगर एक काम भी छूटा, तो मारते-मारते हुलिया टाइट कर दूँगा''– यह कथन किसका है?

   (क) बहादुर का ☐ (ख) वाचक का ☐

   (ग) किशोर का ☐ (घ) रिश्तेदार का ☐

3. ''महीन खाने से नौकरों की आदत बिगड़ जाती है''–यह बात निर्मला से किसने कही?

   (क) उसके पति ने ☐ (ख) पड़ोसिन ने ☐

   (ग) उसके बेटे ने ☐ (घ) रिश्तेदार ने ☐

1.2 आइए समझें

आइए, अब हम इस कहानी को समझने की कोशिश करते हैं। कहानी में मुख्यतः पाँच तत्त्व होते हैं– कथावस्तु, पात्र, संवाद, देशकाल या वातावरण और भाषा-शैली। हम इन्हीं को ध्यान में रखते हुए इस कहानी की विवेचना करेंगे। कथावस्तु में मुख्य कथा या कहानी के विषय-क्षेत्र की बात की जाती है। समय-समय पर उपस्थित होने वाले पात्रों को समझने का काम पात्र और चरित्र-चित्रण के अंतर्गत किया जाता है। कहानी में पात्र केवल उपस्थित ही नहीं होते। वे अपना व्यक्तित्व साथ लेकर आते हैं। संवाद कहानी का मुख्य अंग होते हैं। इन्हीं से कहानी आगे बढ़ती है और पात्र का व्यक्तित्व भी प्रकट होता है। कहानी की भाषा व शैली नामक तत्त्व के अंतर्गत भाषा एवं प्रस्तुति की शैली का अध्ययन किया जाता है अर्थात् कहानी की भाषा कैसी है? शब्द-चयन कैसा है? कहानी कहने का तरीका क्या है? देशकाल या वातावरण में हम यह समझने का प्रयास करते हैं कि कहानी में किन परिस्थितियों अर्थात् किस समय और परिवेश की बात की गई है।

1.2.1 कथावस्तु

ज़रा सोचिए, लेखक ने इस कहानी का विषय जीवन के किस हिस्से से उठाया है यानी इसकी **कथावस्तु** क्या है? हम देखते हैं कि कहानी का एक पात्र यह कहानी सुना रहा है। उसे हम वाचक कहेंगे। उसी ने अपने परिवार और रिश्तेदारों के माध्यम से कम उम्र के घरेलू नौकरों के प्रति मध्यवर्ग के व्यवहार का चित्रण किया है। हमारे समाज का वह खाता-पीता हिस्सा, जो बहुत अमीर तो नहीं है, लेकिन गरीब भी नहीं है – मध्यवर्ग कहलाता है। वाचक का परिवार मध्यवर्गीय है।

हम कह सकते हैं कि वाचक और उसके परिवार द्वारा कहानी के शुरू में बहादुर को सताया नहीं जाता, बल्कि उसकी चिंता की जाती है। यह भी कहा गया है कि इस घर में नौकरों को घर के बच्चों की तरह रखा जाता है। बहादुर के आने से घर का माहौल भी उत्साहपूर्ण है। बहादुर की चिंता करने का एक और कारण है, वह है – दूसरों के सामने अपने को बढ़ा-चढ़ाकर दिखाना। इसीलिए निर्मला बहादुर के प्रति अपनी चिंता के बारे में लोगों को सुना-सुनाकर बहुत कुछ कहती है।

कहानी शुरू कैसे होती है – इस पर विचार करें, तो पाएँगे कि वाचक अचानक अपने गंभीर हो जाने की बात कहता है, बहादुर का नाम नहीं लेता, उसके लिए 'वह' का प्रयोग करता है। फिर, निर्मला की चमकती हुई दृष्टि का उल्लेख करता है। लेखक ने पूरी सूचनाएँ देने के स्थान पर केवल इस प्रकार के संकेत ही क्यों दिए? इस प्रकार की प्रस्तुति के कारण हम इस कहानी को पढ़ने के लिए प्रेरित होते हैं।

अगले दो अनुच्छेदों में हमें कुछ सूचनाएँ मिलती हैं। ये हमारी कुछ जिज्ञासाओं को शांत करती हैं। जैसे, नौकर रखने की ज़रूरत क्यों पड़ी? बहादुर कौन है? कहाँ से आया है ? क्यों आया है? उसका परिवार कैसा है? आदि। यहाँ पर एक संकेत ऐसा भी है, जिसका विकसित रूप हम कहानी में आगे देखते हैं कि बहादुर की माँ बहुत गुस्सेवाली है। वह बहादुर के काम न करने पर उसे मारती है। बहादुर की माँ भैंस के कारण बहादुर को इतना क्यों मारती है? कारण है कि बहादुर काम में सहायता तो नहीं करता, उल्टे उस भैंस को भी मारता है, जो परिवार का पालन-पोषण करने में सहायक है। बहादुर बच्चा है, इस बात को समझ नहीं पाता। उसे लगता है कि माँ को उससे ज़्यादा भैंस प्यारी है। उसे माँ का मारना बहुत बुरा लगता है और वह घर से भाग जाता है।

कहानी में ऐसी स्थिति आगे भी आती है। छोटी-छोटी गलतियों पर किशोर उसे मारता है। वाचक झूठे रिश्तेदारों के कारण बहादुर की पिटाई करता है। तीनों स्थितियों में बहादुर पिटाई होने के कारण बहुत दुखी होता है।

इस कहानी की तीन घटनाओं से आप भी बहुत दुखी हुए होंगे। इन तीनों का संबंध बहादुर के पिटने से है। कहानी में वाचक के बेटे किशोर के उल्लेख के बाद परिवर्तन तेज़ी से होने लगता है। उससे पहले सब कुछ ठीक-ठाक दिखाई देता है। वाचक के घर में बहादुर को सबसे पहले किशोर पीटता है। दूसरी घटना वह है, जब निर्मला बहादुर के लिए रोटियाँ बनाना बंद कर देती है। मोहल्ले की किसी महिला ने उसे समझा दिया है कि अच्छा खाने से नौकरों की आदत बिगड़ जाती है। यहाँ पर बहादुर द्वारा अपनी रोटियाँ स्वयं न बनाने पर वह उसे मारती भी है। यहीं हम एक और संकेत देख सकते हैं, जो बहादुर के इस कथन में निहित है– ''मेरी माँ भी सारे घर की रोटियाँ बनाकर मुझसे रोटियाँ सेंकवाती थी।'' इसका अर्थ हुआ कि बहादुर की माँ उसे मारती भी थी और उसके लिए रोटियाँ भी नहीं बनाती थी, इसलिए वह घर से भागा। यही स्थितियाँ वाचक के घर में भी बन रही हैं, लेकिन अभी बहादुर भागता नहीं है। वह प्रसन्न दिखने की कोशिश करता है, पर अब वह पहले वाला बहादुर नहीं रहता। उसे हर समय भय बना रहता है कि कहीं पिटाई न हो जाए। इस कारण वह अधिक गलतियाँ करने लगता है।

चित्र 1.8

आइए, अब तीसरी घटना देखते हैं, जो इस कहानी के अंत को तय कर देती है। इस घटना में ख़ुद वाचक बहादुर को पीटता है। क्यों पीटता है—यह आप पढ़ ही चुके हैं।

टिप्पणी

वाचक द्वारा पीटे जाने का बहादुर पर बहुत गहरा प्रभाव पड़ता है। उसका चेहरा भय से काला पड़ जाता है। आँखों में आँसू आ जाते हैं। बहादुर को पीटा तो किशोर और निर्मला ने भी है। पिटने पर वह पहले भी रोया है, लेकिन उसे भय पहली बार लगा है। आँखों से आँसू गिरने का वर्णन भी पहली बार है और उस पर चोरी का आरोप भी पहली बार ही लगा है। बहादुर अंदर तक दुखी भी यहीं होता है। इसके पहले उसे इस बात का संतोष था कि कम-से-कम घर का मालिक तो उसे नहीं मारता, लेकिन अब तो वह भी मारने लगा है— बिना किसी गलती के, दूसरों के कहने पर।

बहादुर के भागने के पीछे बहुत बड़ा कारण वाचक द्वारा पीटा जाना है।

कहानी के अंतिम तीन-चार अनुच्छेद बहुत ही मार्मिक हैं, जिनमें पूरे परिवार के पश्चाताप का उल्लेख है। निर्मला और किशोर को भी अपनी गलतियों का अहसास होता है, लेकिन उस अहसास में सबसे अधिक उनके भीतर का वह दुख दिखाई देता है कि बहादुर के चले जाने के बाद घर के सारे काम अब उन्हें ही करने पड़ेंगे। अगर उसके भाग जाने का दुख सचमुच किसी को है, तो वह है – वाचक। उसे लगता है कि यदि वह बहादुर को न मारता, तो बहादुर कभी न भागता। वह बहादुर के भागने पर उतना दुखी नहीं है, जितना उसके भागने के कारण से दुखी है।

बहादुर भागते-भागते भी अपने निर्दोष होने का सबूत दे जाता है। जब वह अपने घर से भागा था, तो कम-से-कम दो रुपए तो लेकर भागा था। यहाँ तो वह अपनी तनख़्वाह के पैसे और अपना सामान भी छोड़ गया।

वाचक को लगता है कि उसने बहादुर की पिटाई करके बहुत बड़ा अपराध किया है। वह अपनी ही नज़रों में ख़ुद को छोटा महसूस करता है। अंतिम अनुच्छेद में वह बहादुर के नेकर की जेब से वही सामान निकालता है, जिस सामान को देखकर बहादुर अपने परिवार, अपनी माँ, अपने गाँव, अपने देश को याद करता था। इस घटना से दो बातें स्पष्ट होती हैं। पहली तो यह कि बहादुर स्वाभिमानी है। वही बहादुर, जिस पर चोरी का आरोप लगाया गया था, घर का सामान तो क्या, अपनी वे चीज़ें भी छोड़ जाता है, जो उसे बेहद प्रिय थीं। दूसरी बात यह कि घर में काम करने वाला नौकर भी आदमी होता है, कोई वस्तु नहीं, जिसका मनमर्ज़ी इस्तेमाल करते रहो। उसके भी दिल होता है। वह भी अपने प्रति अच्छे-बुरे व्यवहार को समझता है, सोचता है, महसूस करता है। वाचक इस घटना के माध्यम से यह दिखाना चाहता है कि नौकर के प्रति बुरा व्यवहार और निर्दयता किस तरह अंततः पछतावे का कारण बनते हैं।

क्रियाकलाप-1.1

माँ द्वारा पीटे जाने पर बहादुर घर से भाग जाता है। बहादुर की जगह आप होते, तो निम्नलिखित में से कौन सा विकल्प चुनते? चुने गए विकल्प के पक्ष में अपने तर्क भी लिखिए–

(क) भागकर अपने किसी रिश्तेदार के यहाँ चले जाते।

(ख) घर की परिस्थितियाँ समझकर माँ की सहायता करते।

विकल्प :

तर्क :

1.2.2 पात्र और चरित्र-चित्रण

आइए, अब इस कहानी के प्रमुख पात्रों के कार्यों के आधार पर उनके व्यक्तित्व की विशेषताओं को समझने का प्रयास करते हैं। देखते हैं कि लेखक ने उनका चरित्र-चित्रण किस प्रकार किया है।

कहानी का मुख्य पात्र बहादुर है, इसीलिए कहानी का शीर्षक **'बहादुर'** रखा गया है। वह बारह-तेरह साल का है। छोटे कद का मोटा, गोल-मटोल है। रंग गोरा है। चेहरा चपटा है। आपने नेपाल के लोगों या पहाड़ी क्षेत्र में रहने वालों को देखा ही होगा, वैसा ही है बहादुर। उसकी आँखें छोटी-छोटी हैं, जिन्हें वह जल्दी-जल्दी झपकाता रहता है। उसने सफ़ेद नेकर, आधी बाँह की सफ़ेद कमीज़ और भूरे रंग के जूते पहन रखे हैं। गले में रूमाल बाँध रखा है। यह वर्णन शब्दों के माध्यम से एक चित्र उपस्थित करता है। बहादुर की आकृति हमारे सामने स्पष्ट हो जाती है, जैसे हम उसे देख रहे हों।

अब उन विशेषताओं को देखें, जिनके कारण बहादुर हमें अच्छा लगता है।

बहादुर बच्चा है। उसमें बचपन का भोलापन भी है और संवेदनशीलता भी। यानी, सुख और दुख का उस पर तुरंत असर होता है। उसके व्यक्तित्व की सभी विशेषताओं का आधार यही संवेदनशीलता है। वह इसीलिए अपने घर से भागता है। उसकी माँ बहुत गुस्सैल थी, उसे बहुत मारती थी— यह बहादुर को बुरा लगता था। पीटकर उससे काम नहीं करवाया जा सकता। आप देखेंगे कि वाचक के घर में भी वह काम करने में गलतियाँ तभी करता है, जब उसे पीटा जाता है। उसे न तो अपनी माँ का मारना समझ में आता है, न ही इस परिवार के लोगों का। वह चोरी के झूठे आरोप को भी सहन नहीं कर पाता। वाचक द्वारा पीटे जाने का उस पर बहुत गहरा प्रभाव पड़ता है। इसके विपरीत, जब बहादुर को थोड़ा-सा भी प्यार मिलता है, तो वह बहुत काम करता है। वह घर के लोगों का सम्मान करता है। निर्मला के स्वास्थ्य का पूरा ध्यान रखता है, उसे कोई काम नहीं करने देता। यहाँ तक कि वह निर्मला को माँ की तरह समझने लगता है।

बहादुर ईमानदार है। वाचक के यहाँ वह पूरी ईमानदारी से काम करता है। रिश्तेदार जब उस पर चोरी का आरोप लगाते हैं, तो वाचक कहता है – अरे नहीं, वह ऐसा नहीं है। जब कभी उसने दो-चार आने इधर-उधर पड़े देखे, तो उठाकर निर्मला के हाथ में दे दिए। जब वह वाचक के घर से भागता है, तो कुछ भी लेकर नहीं जाता। यहाँ तक कि अपने कपड़े, जूते, खेलने का सामान, तनख़्वाह तक छोड़ जाता है।

बहादुर मेहनती और हँसमुख लड़का है। उसके आने के बाद वाचक के घर के लोगों को बहुत आराम मिलता है। अब कोई एक तिनका तक इधर से उठाकर उधर नहीं रखता। बहादुर घर के सारे काम करता है – घर की सफ़ाई, कमरों में पोंछा, अँगीठी जलाना, चाय बनाना, कपड़े धोना, बर्तन साफ़ करना। इतना काम करने के बाद भी खाना बनाने की ज़िद करता है। बच्चा होते हुए भी रात को सबके सोने के बाद सोता है और सुबह सबसे पहले उठ जाता है; फिर भी वह हमेशा ख़ुश रहता है, हँसता रहता है। उसे छेड़-छेड़कर सब हँसते हैं, लेकिन वह किसी की बात का बुरा नहीं मानता, सबको प्रसन्न रखता है।

आपने बहुत से चुस्त और फुर्तीले बच्चों को देखा होगा। बहादुर वैसा ही है। उसके बारे में एक जगह उल्लेख किया गया है कि वह फिरकी की तरह नाचता रहता था यानी काम के लिए घर में इधर से उधर दौड़ता रहता था। वह अपने गाँव में पेड़ों पर चढ़कर चिड़ियों के घोंसलों में हाथ डालकर उनके बच्चों को पकड़ता था और फल तोड़-तोड़कर खाता था। यहाँ, वाचक के घर में, भी दातून तोड़ने के लिए तुरंत पेड़ पर चढ़ जाता है।

बहादुर स्वाभिमानी है। किशोर द्वारा पिटाई को तो वह सहन कर लेता है, लेकिन 'सूअर का बच्चा' कहने पर काम करने से मना कर देता है। कोई उसके पिता को गाली दे, यह उससे सहन नहीं होता। उसके स्वाभिमान का पता हमें तब भी लगता है, जब निर्मला केवल उसी की रोटियाँ बनाना बंद कर देती है। अपनी रोटियाँ ख़ुद न बनाने के कारण उसे निर्मला से मार भी खानी पड़ती है, लेकिन वह इस भेदभाव को सहन नहीं कर पाता और बिना भोजन किए सो जाता है।

उसके स्वाभिमान का संकेत तब भी मिलता है, जब वाचक उसे चोरी के आरोप के कारण मारता है। वाचक के अलावा सब उसे मारते हैं, पर वह घर से नहीं भागता, क्योंकि उसे विश्वास है कि वाचक उसे चाहता है। लेकिन, जब उसका यह विश्वास टूटता है, तो वह भाग जाता है।

बहादुर में परिवार के प्रति कर्तव्य-बोध भी है। घर से वह भाग आया है, लेकिन उसने घर से अपने संबंध तोड़े नहीं हैं। वह अपनी तनख़्वाह के पैसे माँ के पास भेजने के लिए कहता है। कारण पूछने पर जवाब देता है – माँ-बाप का कर्ज़ा तो जन्म भर भरा जाता है।

वाचक

कहानी में दूसरा प्रमुख पात्र वाचक है। अगर आप ध्यान से देखें, तो उसके व्यक्तित्व के दो पक्ष दिखाई देंगे। उसमें मध्यवर्गीय व्यक्ति के गुण और दोष दोनों मिलेंगे। इसलिए उसके व्यक्तित्व का कोई पक्ष तो बुरा लगता है और कोई पक्ष अच्छा। पहला पक्ष तब सामने आता है, जब वह किशोर द्वारा पीटने और भद्दी गालियाँ देने पर

बहादुर को बचाता तो है, लेकिन उसका यह भी मानना है कि नौकर तो पिटते ही रहते हैं। पिता को गाली दिए जाने पर बहादुर काम करने से मना कर देता है, तो उसे हँसी आती है। निर्मला बहादुर को पीटती है, तो वह निर्मला को नहीं समझाता, उलटे बहादुर को ही डाँटते हुए कहता है कि ज़्यादा रूठना-फूलना मुझे पसंद नहीं। रिश्तेदारों को ख़ुश रखने के लिए यह जानते हुए भी कि बहादुर चोरी नहीं कर सकता, वह उसे पीटता है।

मध्यवर्ग की एक सीमा यह होती है कि वह कुछ कार्य दिखाने के लिए करता है। उसे लगता है कि इससे उसकी सामाजिक प्रतिष्ठा बढ़ेगी। बहादुर को घर में नौकरी पर रखना इसका प्रमाण है। इस वर्ग के बहुत से लोग दूसरों के कहे या दबाव में आ जाते हैं। निर्मला और वाचक भी ऐसे ही पात्र हैं। निर्मला पड़ोस की स्त्री के कहने पर बहादुर के लिए रोटियाँ बनाना छोड़ देती है और वाचक रिश्तेदार के कहने पर बहादुर पर चोरी का शक करता है, उसे मारता है।

वाचक के व्यक्तित्व का एक रूप और भी है। उसका पछतावा बहुत महत्त्वपूर्ण है। यह पूरी कहानी ही उसके पछतावे पर लिखी गई है।

इस कहानी में बहादुर मुख्य पात्र है, जिसके इर्द-गिर्द कहानी घूमती है। इसमें निर्मला, किशोर और निर्मला के रिश्तेदार कहानी को आगे बढ़ाने में सहायक हैं– ऐसे पात्रों को गौण पात्र कहते हैं। इन गौण पात्रों में से किशोर के विषय में आपने ज़रूर कुछ सोचा होगा। किशोर और बहादुर लगभग एक ही आयु के हैं। इस आयु-वर्ग के किशोरों में मूलतः समानता होती है लेकिन वातावरण, सामाजिक परिस्थिति, आर्थिक स्थिति, पारिवारिक स्थिति आदि के कारण व्यवहार में अंतर आ जाता है। दोनों में समानता यह है कि कोई फ़ैसला लेते समय दोनों सोचते-विचारते नहीं।

पाठगत प्रश्न-1.1

सर्वाधिक उपयुक्त विकल्प चुनकर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

1. बहादुर ने काम करने से मना कर दिया, क्योंकि–

   (क) उसे अपने घर की बहुत याद आने लगी। ☐

   (ख) निर्मला ने उसके लिए रोटियाँ नहीं सेंकीं। ☐

   (ग) उस पर चोरी का झूठा आरोप लगाया गया। ☐

   (घ) किशोर ने उसे गाली दी, जो उसके बाप पर पड़ती थी। ☐

2. कहानी में वाचक किस वर्ग का है?

   (क) निम्न ☐ (ख) सामंत ☐

   (ग) मध्य ☐ (घ) उच्च ☐

3. बहादुर बहुत संवेदनशील है, क्योंकि–
   (क) वह सिल टूटने पर घर से भाग जाता है ☐
   (ख) सभी के लिए दौड़-भाग कर काम करता है ☐
   (ग) मारपीट का उस पर कोई प्रभाव नहीं होता ☐
   (घ) झूठे आरोप लगने पर वह घर से भाग जाता है ☐

4. 'माँ बाप का कर्ज़ा तो जन्म भर भरा जाता है,' बहादुर के इस कथन से पता लगता है कि—
   (क) उसे माँ-बाप द्वारा लिया गया कर्ज़ा चुकाना है ☐
   (ख) उसे माँ-बाप के प्रति अपने कर्तव्य का बोध है ☐
   (ग) उसके माँ-बाप जीवन भर कर्ज़ चुकाते रहे ☐
   (घ) उसने माँ-बाप से बहुत सारा पैसा लिया है ☐

1.2.3 संवाद

पात्रों की बातचीत को संवाद कहा जाता है। संवाद कहानी के घटनाक्रम को आगे बढ़ाते हैं, चरित्रों के व्यक्तित्व की विशेषताएँ बताते हैं और कहानी में नाटकीयता का गुण उत्पन्न करते हैं।

'बहादुर' कहानी में संवाद अधिक नहीं हैं, क्योंकि वाचक पाठक से सीधे बात कर रहा है। एक के बाद एक घटनाओं की जानकारी वही देता है। उसी के कथन से पात्रों के व्यक्तित्व की विशेषताओं का पता लगता है। लेखक द्वारा संवाद तब दिए जाते हैं, जब उसे वाचक द्वारा कही गई बात का प्रमाण देना होता है। जैसे— बहादुर के व्यक्तित्व की विशेषता का पता निर्मला के इस कथन से लगता है— "सच, अब ऐसा नौकर नहीं मिलेगा। कितना आराम दे गया वह।"

एक स्थान पर बहादुर के घर में आने के बाद जो उत्साहपूर्ण वातावरण बनता है, उसका उल्लेख वाचक करता है, फिर मोहल्ले के बच्चों द्वारा बहादुर से कहे गए ऐसे वाक्य हमारे सामने रखता है – "ऐ! तुमने शेर देखा है?" ऐसे छोटे-छोटे संवाद बहादुर के प्रति बच्चों के उत्साह को तो बताते ही हैं, साथ ही इस ओर भी संकेत करते हैं कि मध्यवर्गीय परिवारों में बच्चों को शुरू से ही यह सिखा दिया जाता है कि नौकरों से किस तरह बात की जाती है।

आपने कहानी पढ़ते समय ध्यान दिया होगा कि किशोर का बहादुर के प्रति कैसा व्यवहार है। किशोर के एक संवाद से भी इसका पता चल जाता है— "अगर एक काम

भी छूटा, तो मारते-मारते हुलिया टाइट कर दूँगा। साला, कामचोर, करता क्या है तू? बैठा-बैठा खाता है।''

रिश्तेदार के अंग्रेज़ी वाक्य ''यू डू नॉट नो, दीज़ पीपुल आर एक्सपर्ट इन दिस आर्ट'' में जो दृष्टिकोण है, वह बच्चों और किशोर को वही सिखाता है, जो उनके संवाद में दिखता है।

कभी-कभी वाचक दूसरों के संवादों को अपने शब्दों में कहता है। जैसे निर्मला नौकर न रखे जाने से दुखी है। वह जो कहती है, उसे वाचक इस प्रकार व्यक्त करता है – ''उसकी तरह अभागिन और दुखिया स्त्री और भी कोई इस दुनिया में होगी? वे लोग दूसरे होते हैं, जिनके भाग्य में नौकर का सुख होता है।'' यह बात निर्मला ने कही होगी या सोची होगी, लेकिन वाचक इसे अपने शब्दों में कहकर निर्मला पर व्यंग्य करता है।

हम यह देखते हैं कि इस कहानी के अंत में संवाद अधिक हैं। यह कहानी का चरम बिंदु है, इसलिए नाटकीयता की सबसे अधिक ज़रूरत यहीं पर है। निर्मला के रिश्तेदार, उसकी पत्नी और वाचक के संवादों में यह विशेषता मिलती है।

1.2.4 देशकाल और वातावरण

इस कहानी के वातावरण अथवा सामाजिक आधार या परिस्थितियों का उल्लेख करते समय हमें दो परिवारों की स्थितियों को ध्यान में रखना चाहिए। एक है बहादुर का परिवार, दूसरा वाचक और उसके रिश्तेदार का। बहादुर के पिता की मृत्यु हो चुकी है। उसकी माँ पूरे परिवार का पालन-पोषण करती है। कहानी में जिस तरह से बहादुर के घर का वर्णन है, उससे हम अनुमान लगा सकते हैं कि वह निम्न वर्ग का है, यानी गरीब। इसलिए बहादुर की माँ को बहादुर के खेलने-कूदने पर गुस्सा आता होगा। बहादुर भागकर जिस परिवार में पहुँचता है, वह एक मध्यवर्गीय परिवार है। ऐसे वातावरण में नौकरों के प्रति आम तौर पर लोगों का व्यवहार अच्छा नहीं होता। अगर नौकर कम उम्र का है, तब तो उसे और ज़्यादा दुख सहना पड़ता है।

चित्र 1.9

मध्यवर्ग के लोगों में सुविधाओं को प्राप्त करने की होड़ लगी रहती है। उनके लिए नौकर टी. वी., फ़्रिज, कार आदि की तरह एक सुविधा है। ये चीज़ें घर में जब नई-नई आती हैं, तो बड़ा ख़ुशी का माहौल होता है।

धीरे-धीरे बात सामान्य हो जाती है। बहादुर के प्रति ऐसा ही व्यवहार होता है। बहादुर वाचक के परिवार के लिए घमंड और दिखावे का माध्यम है।

बहादुर बहुत काम करता है। पोंछा लगाता है, सफ़ाई करता है, बर्तन माँजता है, कपड़े धोता है। उसकी मेहनत से परिवार के लोगों को आराम मिलता है, फिर भी निर्मला उसके लिए रोटियाँ बनाना बंद कर देती है। कारण यह है कि मुहल्ले की किसी औरत ने निर्मला को समझा दिया है कि ''महीन खाने से इन लोगों की आदत बिगड़ जाती है।'' 'इन लोगों की' यानी नौकरों की। यह वाक्य निम्नवर्ग के प्रति मध्यवर्ग की मानसिकता को दर्शाता है।

इसी तरह बहादुर के पीटे जाने पर वाचक सोचता है कि ''कोई बात नहीं, नौकर तो पिटते रहते हैं।'' यह भी इस ओर संकेत करता है कि मध्यवर्ग के लोग नौकरों को जानवरों की तरह समझते हैं। निर्मला के रिश्तेदार द्वारा कहे गए अंग्रेज़ी वाक्य में भी मध्य और निम्नवर्ग के बीच के अंतर को देख सकते हैं। इस वाक्य से यह भी पता लगता है कि मध्यवर्ग का व्यक्ति कितना दिखावा करता है।

इस कहानी को पढ़ते समय हमारा ध्यान बाल-श्रम जैसी कुरीति की तरफ़ भी जाना चाहिए, जिसके कारण बहुत से शिक्षार्थियों को शिक्षा नहीं मिल पाती। यह आज हमारे लिए चिंता का विषय है। इसीलिए मजबूरी के शिकार बहादुर जैसे किशोरों को ध्यान में रखकर हमारे देश में बाल-श्रम कानून बनाए गए हैं। मानवाधिकार आयोग भी बच्चों की तरफ़ ध्यान दे रहा है और उनके पढ़ने-लिखने के अधिकार के पक्ष में माँग उठाता है। बच्चों या बाल-मज़दूरों से ख़तरनाक काम करवाने वालों और उनके प्रति हिंसा करने वालों के लिए दंड का भी प्रावधान है। आज बाल-श्रम एक अपराध है।

क्रियाकलाप-1.2

जब दिल्ली में बम-विस्फोट हुए, तो एक गुब्बारे बेचने वाले लड़के ने पुलिस को जीवित बम की सूचना देकर न जाने कितने लोगों की जान बचाई। आपकी दृष्टि में फुटपाथों पर काम करने वाले किशोर और क्या-क्या ज़िम्मेदारियाँ निभाते हैं, या निभा सकते हैं? यहाँ लिखिए:

....

....

....

....

टिप्पणी

1.2.5 भाषा-शैली

आइए, अब कहानी की **भाषा** की विशेषताओं का उल्लेख करते हैं। कहानी को पढ़ते हुए कहीं भी यह नहीं लगता कि इसकी भाषा कठिन या बनावटी है। हम कहानी को पढ़ते चले जाते हैं।

इस कहानी की भाषा पात्रों के व्यक्तित्व और उनके भावों के अनुकूल है। सभी पात्रों का बोलने का ढंग अलग-अलग है। इस ढंग से हमें इनकी विशेषताओं का पता लगता है। बहादुर 'तकलीफ़ बढ़ जाएगी' के स्थान पर 'तकलीफ़ बढ़ जाएगा', 'वह मारती क्यों थी?' के स्थान पर 'वह मारता क्यों था?' कहता है। वह नेपाल का रहने वाला है, इसलिए वैसी हिंदी नहीं बोल सकता, जैसी हिंदी क्षेत्र के लोग बोलते हैं।

निर्मला की भाषा घरेलू मध्यवर्गीय महिलाओं वाली है, जैसे – "बहादुर आकर नाश्ता क्यों नहीं कर लेते? मैं दूसरी औरतों की तरह नहीं हूँ, जो नौकर-चाकर को तलती-भूनती हैं। मैं तो नौकर-चाकर को अपने बच्चे की तरह रखती हूँ।"

किशोर की भाषा देखिए – "देख बे, मेरा काम सबसे पहले होना चाहिए। अगर एक काम भी छूटा, तो मारते-मारते हुलिया टाइट कर दूँगा।" ऐसी भाषा का प्रयोग न वाचक कर सकता है, न निर्मला।

निर्मला के रिश्तेदार के व्यक्तित्व का पता अंग्रेज़ी के इस एक वाक्य से लग जाता है – "यू डू नॉट नो, दीज़ पीपुल आर एक्सपर्ट इन दिस आर्ट।" यही वाक्य हिंदी में होता, तो इसमें मध्यवर्ग का वह घमंड और नौकरों के प्रति घृणा न होती, जो अंग्रेज़ी में होने पर है।

जब हम किसी के दोषों पर चोट करते हैं, तो हमारी भाषा में व्यंग्य आ जाता है। इस कहानी की भाषा में व्यंग्यात्मकता है।

भाषा-प्रयोग–हमारी बोलचाल की भाषा की यह विशेषता होती है कि उसमें तत्सम, तद्‌भव, क्षेत्रीय और अनेक भाषाओं के शब्द चले आते हैं। उसमें हम मुहावरों का भी प्रयोग करते हैं। इस कहानी में ये सभी बातें मिलती हैं, जैसे–

स्रोत् के आधार पर शब्द के चार भेद हैं– **तत्सम, तद्‌भव, देशज और आगत**

- जो शब्द संस्कृत भाषा से ज्यों के त्यों लिए जाते हैं, वे तत्सम शब्द कहलाते हैं। जैसे– गंभीर, दायित्व, स्वच्छ, संतुष्टि, प्रफुल्लता, उत्साहपूर्ण, वातावरण, निस्संदेह, काल्पनिक, अनुमान आदि।
- संस्कृत भाषा के वे शब्द, जिनका हिंदी भाषा में आकर स्वरूप बदल जाता है, तद्‌भव शब्द कहलाते हैं। जैसे–आँखें, पुराना, भाई, बहन, खेत, घर, आँसू आदि। ये क्रमशः अक्षि, प्राचीन, भ्राता, भगिनी, क्षेत्र, गृह, अश्रु के परिवर्तित रूप हैं।

- वे शब्द, जो लोक में उत्पन्न और प्रयुक्त होते हैं देशज कहलाते हैं। जैसे—मलकाना, जून, चकइठ, खटना, शऊर, पुलई, बँसखट, तीता आदि।
- वे शब्द, जो अन्य भाषाओं— उर्दू, अंग्रेज़ी आदि— से आए होते हैं आगत शब्द कहलाते हैं। जैसे—हिदायतें, फ़रमाइश, फ़िक्र, तकलीफ़, गोया, तनख़्वाह, शान-शौकत, बरदाश्त, अफ़सोस, सुपुर्द टाइट, बस स्टेशन, साइकिल आदि।

मुहावरे —चारपाई तोड़ना, हाथ बँटाना, माथा ठनकना, गुस्से से पागल हो जाना, नौ दो ग्यारह हो जाना, सीधे मुँह बात न करना, फिरकी की तरह नाचना, पेट में लंबी दाढ़ी होना, कहीं का न रहना आदि।

कहानी कहने के तरीके को उसकी **शैली** कहते हैं, हमने देखा कि यह कहानी वाचक के जीवन का एक अनुभव है। घटनाएँ घट चुकी हैं। बहादुर वाचक के परिवार में आकर रहा और अब जा चुका है। जब कोई व्यक्ति अपने जीवन की घटनाओं का स्वयं उल्लेख कर रहा हो, तो वह आत्मकथा कहलाती है। इस कहानी में वाचक अपने जीवन की घटना सुना रहा है। वाचक याद करते हुए उसका किस्सा पाठकों को सुना रहा है, इसलिए इस कहानी में आत्मकथात्मक शैली मिलती है।

किसी व्यक्ति को याद करते हुए शब्दों के माध्यम से उसके व्यक्तित्व का एक चित्र हमारे सामने उपस्थित कर देना रेखाचित्र है। इस कहानी में रेखाचित्र-शैली को भी देखा जा सकता है, क्योंकि बहादुर के रूप-रंग आकार और उसके व्यवहार के कुछ विशिष्ट बिंदुओं को बताकर लेखक ने उसके व्यक्तित्व को उभारा है।

1.2.6 उद्देश्य

आप यह तो समझ ही गए कि इस कहानी का उद्देश्य क्या है अर्थात् लेखक कहना क्या चाहता है। इस कहानी में हमें बहादुर के व्यक्तित्व ने सबसे अधिक प्रभावित किया। उसके बाद किसने प्रभावित किया? क्या वाचक ने नहीं? वही तो आपको बहादुर के बारे में बता रहा है। उसका पश्चाताप या पछतावा उसकी सारी कमियों को दूर कर देता है। वाचक का यह पछतावा आरंभ से अंत तक चलता है। वह हमें यह अनुभव कराता है कि मध्यवर्गीय परिवारों का मासूम नौकरों के प्रति किया जाने वाला व्यवहार बहुत क्रूर होता है। हमें यह क्रूरता बुरी लगती है। बहादुर पर हुए अत्याचार का बुरा लगना — यही तो इस कहानी का उद्देश्य है।

इस कहानी में वाचक का पछतावा बहुत महत्त्वपूर्ण है। यह हमें इस बात के लिए तैयार करता है कि हम समाज में रहने वाले नौकरों के प्रति समानुभूति रखें, उन्हें अपने जैसा मनुष्य समझें, उन पर अत्याचार न होने दें। हमारा उनके प्रति समानुभूतिपूर्ण व्यवहार उनके जीवन की दिशा बदल सकता है और समाज भी अनेक समस्याओं से बच सकता है।

यहाँ हमने 'सहानुभूति' नहीं, बल्कि 'समानुभूति' शब्द का प्रयोग किया है; आइए, इन दोनों शब्दों के अर्थ को समझें:

सहानुभूति– किसी को दुखी देखकर स्वयं दुखी होना, हमदर्दी रखना।

समानुभूति– जब दूसरे का दुख अपना दुख बन जाए। दूसरे भी अपने जैसे लगें, अपने-पराये का भेद समाप्त हो जाए। दूसरे की अनुभूति में लीन होने की स्थिति। इस स्थिति में हम कष्ट को समाप्त करने का प्रयास करते हैं।

पाठगत प्रश्न-1.2

1. नीचे दिए गए वाक्यों में से सही के आगे सही (√) और गलत के आगे गलत (X) का निशान लगाइए :

   (क) संवाद कहानी घटना-क्रम को आगे बढ़ाते हैं, लेकिन पात्रों की विशेषताएँ नहीं बताते। ( )

   (ख) वाचक द्वारा पाठक से सीधे बातचीत किए जाने के कारण 'बहादुर' कहानी में संवाद अधिक है। ( )

   (ग) सामाजिक, आर्थिक, पारिवारिक स्थितियों एवं वातावरण के कारण व्यक्ति के व्यवहार पर प्रभाव पड़ता है। ( )

   (घ) मध्यवर्ग केवल रहन-सहन और खान-पान में ही दिखावा नहीं करता, भाषा के स्तर पर भी करता है। ( )

सर्वाधिक उपयुक्त विकल्प चुनकर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

2. 'बहादुर' कहानी के अंत में क्या अभिव्यक्त नहीं होता?

   (क) घृणा ☐ (ख) पछतावा ☐

   (ग) दुख ☐ (घ) अपराध-बोध ☐

3. निम्नलिखित शब्द-समूह में से बेमेल शब्द-समूह को चुनिए :

   (क) **तत्सम**—निस्संदेह, वातावरण, अनुमान ☐

   (ख) **आगत**—सुपुर्द, हिदायत, तकलीफ़ ☐

   (ग) **तद्‌भव**—आँखें, खेत, बँसखट ☐

   (घ) **देशज**—तीता, पुलई, खटना ☐

4. 'बहादुर घर में **फिरकी की तरह नाचता रहता** था' का आशय है कि वह—

   (क) काम करने से बचने के लिए छिपता फिरता था। ☐

   (ख) दिन भर बहुत उछल-कूद मचाता रहता था। ☐

   (ग) मार खाने के कारण चीख-पुकार मचाता रहता था। ☐

   (घ) काम करने के लिए इधर से उधर दौड़ता रहता था। ☐

टिप्पणी

क्रियाकलाप-1.3

कहानी के आरंभ में आपने वाचक द्वारा बहादुर का रेखाचित्र पढ़ा। अपने किसी मित्र, परिजन या परिचित का चित्रण अपने शब्दों में कीजिए :

....

....

....

....

आपने क्या सीखा

- कोई भी निर्णय भावों के आवेग में या दूसरों के कहने पर नहीं, बल्कि ख़ूब सोच-विचार कर करना चाहिए।
- ईमानदार और मेहनती लोगों को स्नेह देना चाहिए, उनका सम्मान करना चाहिए।
- निम्न वर्ग की मजबूरियों और मध्यवर्ग की मानसिकता को मासूम बहादुर ही नहीं झेलता, बल्कि देश के न जाने कितने बहादुर यही मानसिक परेशानी उठाते हैं।
- मासूम नौकरों से आवश्यकता से अधिक काम लेकर भी उन पर झूठे आरोप लगाना, अत्याचार करना अपराध है।
- बहादुर जैसे लड़कों के साथ समानुभूति का व्यवहार करना चाहिए। उनसे भावनात्मक संबंध स्थापित करना चाहिए।
- कहानी की भाषा बोलचाल की है। संवाद और भाषा पात्रों के व्यक्तित्व की विशेषताओं के अनुकूल है। मुहावरों और तत्सम, तद्भव, देशज तथा उर्दू के प्रचलित शब्दों का आवश्यकता के अनुसार उपयोग किया गया है।

योग्यता-विस्तार

- इस कहानी के लेखक अमरकांत का जन्म 1 जुलाई, 1925 को ग्राम नगरा, ज़िला बलिया, (उ. प्र.) में हुआ। अमरकांत उन लेखकों में से हैं, जो 1942 के 'भारत छोड़ो आंदोलन' में शामिल हुए थे। इस विषय पर उन्होंने एक उपन्यास 'इन्हीं हथियारों से' लिखा है। अमरकांत के उपन्यासों में 'सूखा पत्ता' भी बहुत चर्चा में रहा है। उन्होंने बहुत-सा बाल और प्रौढ़-साहित्य भी लिखा है। कहानी-लेखन के क्षेत्र में उन्हें विशेष रूप से प्रसिद्धि मिली। यदि आप उनकी और कहानियाँ पढ़ना चाहते हैं, तो वे 'अमरकांत की संपूर्ण कहानियाँ' (दो भागों में) में संकलित हैं।

अमरकांत को अनेक पुरस्कारों से सम्मानित किया गया है, जिनमें सोवियत लैन्ड नेहरू पुरस्कार, साहित्य अकादमी पुरस्कार और भारतीय ज्ञानपीठ पुरस्कार शामिल हैं। वे आजकल इलाहाबाद में रहकर लेखन-कार्य कर रहे हैं।

- बाल-श्रम कानूनन अपराध है। इस संबंध में संशोधित कानून के बारे में जानकारी एकत्रित कीजिए।

पाठांत प्रश्न

1. वाचक के लिए नौकर रखना किन कारणों से आवश्यक था? आपकी दृष्टि में क्या वे कारण उचित थे? उल्लेख कीजिए।
2. 'बहादुर' कहानी के आधार पर मध्यवर्गीय परिवार की कुछ प्रवृत्तियों का उल्लेख कीजिए।
3. जब बहादुर को अपने घर की याद आती थी तो वह क्या करता था ?
4. बहादुर और किशोर के व्यवहार में अंतर के कारणों का विश्लेषण कीजिए।
5. निम्नलिखित का आशय स्पष्ट कीजिए :

   (क) उसकी हँसी बड़ी कोमल और मीठी थी, जैसे फूल की पंखुड़ियाँ बिखर गई हों।

   (ख) उन पहाड़ी गानों का अर्थ हम समझ नहीं पाते थे, पर उनकी मीठी उदासी सारे घर में फैल जाती, जैसे कोई पहाड़ की निर्जनता में अपने किसी बिछुड़े हुए साथी को बुला रहा हो।
6. बहादुर के व्यक्तित्व पर टिप्पणी कीजिए।
7. बहादुर कहानी की भाषा की प्रमुख विशेषताओं का उल्लेख कीजिए।
8. निम्नलिखित शब्दों का वाक्यों में प्रयोग कीजिए।

   अभी – ....

   अभी-अभी – ....

   उछलकर – ....

   उछल-उछलकर – ....

   घूमकर – ....

   घूम-घूमकर – ....

   गाकर – ....

   गा-गाकर – ....

9. निम्नलिखित शब्दों में से तत्सम, तद्भव, देशज और आगत शब्दों को छाँटिए:—
संतुष्टि, खेत, मलकाना, तकलीफ़, स्वच्छ, पेड़, शहर, तनख़्वाह।

उत्तरमाला

बोध प्रश्नों के उत्तर

1. (ग), 2. (ग) 3. (ख)

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

1.1 1. (घ) 2. (ग) 3. (घ) 4. (घ)

1.2 1. (क) (X), (ख) (X), (ग) (√), (घ) (√),
2. (क) 3. (ग), 4. (घ)

2

दोहे

पिछले पाठ में आपने एक कहानी पढ़ी। इस पाठ में हम दोहे को पढ़ेंगे जो कि हिंदी का एक प्रमुख छंद है। कबीर, रहीम, वृंद आदि मध्यकालीन हिंदी कवियों ने अपनी कविताओं में ज्यादातर इसी छंद का प्रयोग किया है। प्रायः दोहों के विषय भक्ति, शृंगार और नीति के रहे हैं। इस पाठ में हम कबीर, रहीम और वृंद के नीति या उपदेशपरक दोहों का अध्ययन करेंगे।

उद्देश्य

इस पाठ को पढ़ने के बाद आप—

- व्यक्तित्व-निर्माण में निंदा और आलोचना की भूमिका का उल्लेख कर सकेंगे;
- बड़ों द्वारा किए गए कठोर व्यवहार के सकारात्मक पक्ष को स्पष्ट कर सकेंगे;
- अनावश्यक धन से उत्पन्न विकृतियों को समझकर धन की उपयोगिता पर टिप्पणी कर सकेंगे;
- अवसरानुकूल व्यवहार के औचित्य का वर्णन कर सकेंगे;
- जीवन में अभ्यास का महत्त्व रेखांकित कर सकेंगे;
- दोहा छंद को पहचान कर उनके प्रयोग के बारे में व्याख्या कर सकेंगे;
- दोहों के काव्य-सौंदर्य पर टिप्पणी कर सकेंगे;
- समान भाव के दोहों की तुलना कर सकेंगे और उनका अवसरानुकूल प्रयोग कर सकेंगे।

टिप्पणी

2.1 मूल पाठ

आइए, एक बार इन दोहों को पढ़ लें :

दोहे

ऊँचे कुल का जनमिया, करनी ऊँच न होइ ।
सुबरन कलस सुरा भरा, साधू निंदे सोइ ।। 1।।

निंदक नियरे राखिए, आँगन कुटी छवाय ।
बिन पानी साबुन बिना, निरमल करत सुभाय ।। 2।।

गुरु कुम्हार सिष कुंभ है, गढ़ि-गढ़ि काढ़ै खोट।
अंतर हाथ सहार दै, बाहर बाहै चोट ।। 3।।

जो जल बाढ़ै नाव में, घर में बाढ़ै दाम ।
दोऊ हाथ उलीचिए, यही सयानो काम ।। 4।।

—कबीर

पावस देखि रहीम मन, कोइल साधै मौन।
अब दादुर बक्ता भए, हमको पूछत कौन।। 5।।

खैर, खून, खाँसी, खुसी, वैर, प्रीति, मदपान।
रहिमन दाबे ना दबैं, जानत सकल जहान।। 6।।

—रहीम

करत-करत अभ्यास तें, जड़मति होत सुजान।
रसरी आवत-जात तें, सिल पर परत निसान।। 7।।

नैना देत बताय सब, हिय को हेत-अहेत।
जैसे निरमल आरसी, भली-बुरी कहि देत।। 8।।

—वृंद

शब्दार्थ

जनमिया = जन्मा
सुबरन = स्वर्ण, सोना
कलस = कलश, घड़ा
सुरा = शराब
निंदै = निंदा करता है
सोई = उसे, उसकी
नियरे = पास
छवाय = बनाकर
सुभाय = स्वभाव
सिष = शिष्य
कुंभ = घड़ा
काढ़ै = निकालता है
खोट = दोष, कमी
सयानो = समझदार
पावस = वर्षा ऋतु
कोइल = कोयल
मौन = चुप्पी
दादुर = मेंढक
बक्ता = वक्ता, बोलने वाला
खैर = कत्था। खैर और ख़ैर दो अलग-अलग मूल के शब्द हैं। "खैर" (बिना नुक्ता लगाए) मूलतः हिंदी का शब्द है, जिसका अर्थ होता है— 'कत्था' (इसे पान में डालकर खाया जाता है। दूसरा शब्द है ख़ैर (नुक्ता सहित), जो अरबी मूल का शब्द है, जिसका अर्थ है— कुशलता। यहाँ रहीम ने कत्थे के अर्थ में 'खैर' का प्रयोग किया है।
मदपान = मदिरापान (नशा)
सकल = सारा
जहान = संसार
जड़मति = मूर्ख
सुजान = चतुर, समझदार
रसरी = रस्सी
सिल = पत्थर
निसान = निशान, चिह्न
हिय = हृदय, मन
हेत-अहेत = हित-अहित, भलाई-बुराई
निरमल = निर्मल, स्वच्छ
आरसी = आईना, दर्पण

टिप्पणी

2.2 आइए समझें

2.2.1 अंश-1

दोहा-1

आइए, कबीरदास का प्रथम दोहा एक बार फिर पढ़ लेते हैं।

ऊँचे कुल का जनमिया,
करनी ऊँच न होइ।
सुबरन कलस सुरा भरा,
साधू निंदै सोइ।।

चित्र 2.1

कबीर कहते हैं कि अगर अच्छे घर-ख़ानदान में पैदा हुए व्यक्ति का व्यवहार और उसके कर्म अच्छे न हों, तो वह उसी प्रकार निंदा का पात्र होता है, जिस प्रकार शराब भरे सोने के कलश को सज्जन निंदनीय समझते हैं। कहने का मतलब है कि जिस प्रकार सोने का घड़ा भी अपने अंदर शराब जैसी वस्तु भरी होने के कारण अपनी महत्ता खो देता है और बुराई का पात्र बनता है, उसी प्रकार अच्छे कुल या परिवार में जन्म लेने वाले व्यक्ति का आचरण अगर अच्छा न हो, तो वह भी लोगों की तारीफ़ का नहीं, बल्कि निंदा का पात्र बन जाता है।

इस दोहे में कवि ने बताया है कि आदमी की पहचान उसके घर-ख़ानदान से, उसके वर्ण और जाति से, उसके धनवान और निर्धन होने से नहीं; बल्कि उसके आचरण, उसके व्यवहार और चाल-चलन से होती है। अच्छे कर्म करने वाले व्यक्ति की प्रशंसा की जाती है और बुरे कर्म करने वाले की निंदा होती है।

टिप्पणी

1. मनुष्य के बारे में अपनी बात को अधिक स्पष्ट करने के लिए कबीर ने इस दोहे में सोने के कलश का उदाहरण दिया है। जब किसी बात को समझाने के लिए जीवन-जगत् के किसी दूसरे व्यवहार को उदाहरण के रूप में प्रस्तुत किया जाता है, तो उसे दृष्टांत कहते हैं। अतः यहाँ **दृष्टांत अलंकार** का प्रयोग है।

2. मनुष्य का तन सोने के घड़े जैसा है। ऐसा तन पाकर उसमें अच्छाई का विकास करने की जगह उसे बुराइयों का घर बनाना किसी भी तरह प्रशंसा की बात नहीं हो सकती।

3. बहुत आसान तरीके से अच्छे कर्म करने की बात कही गई है।

दोहा-2

आइए दूसरा दोहा फिर से पढ़ लें।

निंदक नियरे राखिए,
आँगन कुटी छवाय।
बिन पानी साबुन बिना,
निरमल करत सुभाय।।

आपने अनुभव किया होगा कि अधिकतर लोगों को अपनी प्रशंसा बहुत अच्छी लगती है, जबकि अपनी आलोचना करने वालों को कोई पसंद नहीं करता। यों भी समाज में ऐसे लोग तो अक्सर मिल जाते हैं, जो मुँह पर तारीफ़ करते हैं और पीठ-पीछे निंदा। मगर, ऐसे लोग बड़ी मुश्किल से मिलते हैं, जो सामने ही हमारी आलोचना करें, हमारी कमियाँ बताएँ। प्रायः हम ऐसे लोगों से मिलने से कतराते हैं, उन्हें पसंद नहीं करते।

चित्र 2.2

कबीर ने ऐसे आलोचकों से बचने की नहीं, बल्कि उनको अपने नज़दीक रखने की आवश्यकता पर बल दिया है। वे कहते हैं कि निंदक को तो आँगन में कुटी बनवाकर अपने पास ही रखना चाहिए, निंदा से हमें अपनी कमियों का पता चलता है और हम उन्हें दूर कर लेते हैं। इस प्रकार, साबुन और पानी के बिना ही वे हमारे स्वभाव को निर्मल बना देते हैं।

अब ज़रा सोचिए कि आदमी अपना शरीर तो साबुन-पानी से साफ़ कर लेता है, पर वह अपने व्यवहार, आदतों और स्वभाव की कमियों और बुराइयों से कैसे छुटकारा पाए? आदमी को अपनी कमियाँ, कमज़ोरियाँ, बुराइयाँ ख़ुद तो दिखती नहीं। दूसरे लोग आम तौर पर उसके सामने इनका उल्लेख नहीं करते। केवल आलोचक ही हैं, जिनसे हमें पता चलता है कि हममें कहाँ और क्या कमी है? तो फिर उनसे कतराएँ क्यों? क्यों न उनकी सुनें, जिससे हमें अपनी कमियों का पता चले और हम उनको दूर करने का प्रयास करें और अपने स्वभाव को निर्मल बनाएँ। इस दोहे में कबीर हमसे यही कहना चाहते हैं।

टिप्पणी

टिप्पणी

1. प्रस्तुत दोहे में निंदक से दूर रहने के प्रचलित रिवाज़ के विपरीत उससे लाभ उठाने का संदेश दिया गया है।
2. कविता में जहाँ पास-पास आने वाले शब्दों में एक ही वर्ण का बार-बार दुहराव (आवृत्ति) हो, वहाँ अनुप्रास अलंकार होता है। यहाँ 'निंदक नियरे' में 'न' वर्ण की आवृत्ति से **अनुप्रास अलंकार** है।
3. प्रस्तुत दोहे में 'आत्म-बोध' और 'विश्लेषणात्मक चिंतन' जैसे जीवन-कौशलों को उभारा गया है।

क्रियाकलाप-2.1

कोई परिचित या अपरिचित व्यक्ति जब आपकी किसी गलती की ओर इशारा करता है, तो आपको कैसा लगता है? कबीर के इस दोहे को पढ़ें और इस संदर्भ में अपनी प्रतिक्रिया लिखें:

....

....

....

....

....

दोहा-3

आइए, तीसरा दोहा एक बार फिर पढ़ लेते हैं।

गुरु कुम्हार सिष कुंभ है,
गढ़ि-गढ़ि काढ़ै खोट।
अंतर हाथ सहार दै,
बाहर बाहै चोट।।

हमेशा से एक पीढ़ी दूसरी पीढ़ी को अपना अनुभव और ज्ञान सौंपती आ रही है। ज्ञान देने वाले व्यक्ति को गुरु कहते हैं अर्थात् गुरु वह होता है, जो ज्ञान दे, ज्ञान को धारण करने लायक बनाए, जो चरित्र-निर्माण करे और बेहतर मनुष्य बनाए।

कबीर ने अपने इस दोहे में गुरु-शिष्य संबंध और गुरु के कार्य के विषय में बताया है। जिस प्रकार कुम्हार घड़ा बनाता है, उसी प्रकार गुरु शिष्य को तैयार करता है।

आपने कुम्हार को घड़ा बनाते देखा है? अगर नहीं, तो चित्र 2.3 को ध्यानपूर्वक देखिए। वह चाक पर गीली मिट्टी रखता है और चाक को घुमाता है। बीच-बीच में हाथ से मिट्टी के उस लोंदे को आकृति देता जाता है। जैसे-जैसे यह आकृति स्पष्ट होती है और उसका आकार बढ़ता है, वैसे-वैसे उसे सँभालने के लिए विशेष प्रयत्न करना होता है, वरना आकृति बिगड़ सकती है। घड़ा बना चुकने पर जब वह उसे चाक से उतारता है, तो घुमा-घुमा कर उसकी कमियों को परखता है। अक्सर कहीं-कहीं मिट्टी के बीच हवा आ जाने से छेद रह जाते हैं। वह उन्हें देखता है और ढूँढ-ढूँढ कर निकालता है, उन्हें दूर करता है। वह भीतर की तरफ़ से हाथ का सहारा देता जाता है, ताकि घड़ा

टूट न जाए और बाहर की तरफ़ से थपकी से चोट करता जाता है। तब कहीं जाकर एक सुंदर और दोष-रहित घड़ा तैयार होता है।

प्रस्तुत दोहे में कबीर कहते हैं कि गुरु कुम्हार है और उसकी रचना यानी उसका शिष्य घड़ा है। शिष्य को तैयार करते हुए गुरु उसकी ख़ामियों, उसके दोषों को दूर करता जाता है। 'काढ़ना' का अर्थ निकालना होता है (जैसे–दूध काढ़ना)। ऐसा करते हुए वह अपने शिष्य को भीतर-भीतर तो सहारा देता है यानी आंतरिक रूप से स्नेह देता है, पर बाहर से ठोकता चलता है। कहने का अर्थ है कि गुरु का व्यवहार ऊपर से तो कठोर लगता है, पर आंतरिक रूप से बड़ा स्नेहपूर्ण होता है। वह अपने शिष्य की तमाम कमियों और कमज़ोरियों को अपने कठोर नियंत्रण से दूर कर देता है और उसे ज्ञान देने के साथ-साथ आत्मिक और चारित्रिक रूप से भी दृढ़ बना देता है।

चित्र 2.3

'गढ़ना' शब्द का अर्थ सिर्फ़ बनाना नहीं होता, बल्कि पूरी आत्मीयता से दोषरहित कृति तैयार करना होता है–जैसे अच्छा मूर्तिकार मूर्ति गढ़ता है, तो उसे सजीव और जीवंत बना देता है; सुनार आभूषण में कलात्मक सौंदर्य उभारता है। इसीलिए यहाँ कवि ने गुरु द्वारा शिष्य को गढ़ने की बात कही है। अच्छा गुरु शिष्य को कोरा ज्ञान ही नहीं देता, बल्कि उसे समाज और दुनिया के लिए एक बेहतर इंसान के रूप में तैयार करता है। यहाँ ज्ञानवान बनाने के साथ-साथ चरित्रवान बनाने का भी संकेत है। जैसे घड़े में अगर नन्हे-नन्हे छेद रह जाएँ, तो उससे पानी रिसेगा और उसकी उपयोगिता कम या समाप्त हो जाएगी, वैसे ही ज्ञान अगर आचरण या व्यवहार पर खरा नहीं उतरेगा, तो उसकी भी सामाजिक उपयोगिता नहीं रहेगी।

टिप्पणी

1. कबीर ने इस दोहे में कुम्हार और घड़े के माध्यम से गुरु और शिष्य के संबंध को तो आसानी से समझाया ही है, ज्ञान की सामाजिक उपयोगिता यानी व्यवहार की कसौटी पर ज्ञान के खरे उतरने पर भी बल दिया है।

2. कबीर ने अपने काव्य में गुरु को अत्यधिक महत्त्व दिया है। गुरु की महिमा को व्यक्त करने वाला यह दोहा आपने पढ़ा या सुना होगा, जिसमें उन्होंने गुरु को ईश्वर से भी अधिक महत्त्व दिया है–

गुरु गोविंद दोऊ खड़े, काके लागूँ पाँय।
बलिहारी गुरु आपने, गोविंद दियो बताय।।

दोहा-4

कबीर का चौथा दोहा फिर पढ़ लेते हैं।

जो जल बाढ़ै नाव में,
घर में बाढ़ै दाम।
दोऊ हाथ उलीचिए,
यही सयानो काम।।

आप अक्सर सोचते होंगे कि अगर हमारे पास अपार दौलत होती, तो कितना मज़ा होता! क्या कभी यह भी सोचा है कि धन हमेशा ही फ़ायदेमंद नहीं होता। वह अपने साथ बहुत सी बुराइयाँ भी लाता है। अगर किसी के पास बहुत-सा पैसा हो, तो वह क्या करेगा? ज़ाहिर है कि वह पहले अपनी ज़रूरतों को पूरा करेगा, फिर अपने लिए सुविधाएँ जुटाएगा, फिर भोग-विलास और फिर बुरे शौकों (व्यसनों) को पूरा करने लगेगा। यानी, धन एक हद तक तो ज़रूरतों को पूरा करता है, लेकिन ज़्यादा पैसा होने पर आदमी सुख-सुविधा में फँसता है, केवल अपना फ़ायदा देखता है और विलासी बन जाता है। कबीर ने धन की अधिकता होने पर उससे छुटकारा पाने की या उसे दान कर देने की बात कही है। उन्होंने नाव में पानी भरने से इसकी तुलना की है। उनके अनुसार जैसे नाव में पानी भरने पर यदि पानी को बाहर न निकाला जाए, तो नाव का डूबना तय है, वैसे ही धन की अधिकता होने पर यदि दान करके उसे ख़र्च न किया जाए, तो व्यक्ति का पतन भी निश्चित है।

इस दोहे में कबीर कहते हैं कि यदि नाव में पानी भरने लगे और घर में पैसे की अधिकता होने लगे, तो समझदारी इसी में है कि दोनों हाथों से उलीचना शुरू कर दीजिए। नाव में पानी बढ़ने पर उसका डूबना निश्चित है, इसलिए जैसे ही पानी भरने लगता है, नाविक उसे दोनों हथेलियाँ मिलाकर (अंजुरी बनाकर) बाहर फेंकने लगता है। इसी तरह, यदि घर के अंदर आवश्यकता से अधिक पैसा बढ़ने लगे, तो समझदार व्यक्ति को अंजुरी भर-भर कर उसे बाहर कर देना चाहिए अर्थात् दान कर देना चाहिए, क्योंकि धन की अधिकता अपने साथ ऐसी विकृतियाँ लेकर आती है, जिससे घर का विनाश होना निश्चित होता है।

टिप्पणी

1. 'नाव में जल' और 'घर में धन' जैसी दो भिन्न स्थितियों में न केवल समानता स्थापित की गई है, बल्कि इससे नीतिगत उपदेश को सरल और बोधगम्य बना दिया गया है।

2. आप जानते हैं कि नाव में वैसे तो पानी आता नहीं, पानी तभी आता है, जब उसमें छेद हो या टूट आ जाए। इसी प्रकार, घर में गलत तरीके से कमाया गया धन आ जाए, तो उसे भी घर से निकाल देना चाहिए। यदि ऐसा नहीं किया गया,

चित्र 2.4

तो जो हाल पानी भरने से नाव का होगा, वही हाल गलत तरीके से आनेवाले पैसे से घर का भी होगा अर्थात् दोनों का डूबना, नष्ट होना तय है।

3. 'सयाना' का वास्तविक अर्थ है—वयस्क, बालिग, परिपक्व, समझदार आदि। यहाँ 'सयानो काम' का अर्थ है— समझदारी का काम।

4. कबीर ने धन की आवश्यकता को नकारा नहीं है, उसकी अधिकता को हानिकारक बताया है। धन मनुष्य के पास कितना हो, इस विषय में उनका यह दोहा देखिए—

साईं इतना दीजिए, जामें कुटुम समाय।
मैं भी भूखा न रहूँ, साधु न भूखा जाय।।

पाठगत प्रश्न-2.1

सर्वाधिक उपयुक्त विकल्प चुनकर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए—

1. कबीर के अनुसार ऊँचे कुल में जन्म लेने पर भी आदमी निंदा का पात्र होता है, जब वह—

   (क) अच्छे कर्म नहीं करता ☐ (ख) सुरापान करता है ☐
   (ग) साधुओं का सत्संग करता है ☐
   (घ) धन को इकट्ठा नहीं होने देता ☐

2. अच्छा गुरु—

   (क) स्वभाव को निर्मल बनाता है ☐ (ख) घर में धन बढ़वाता है ☐
   (ग) रास्ते में फूल बोता है ☐ (घ) कमियों को दूर करता है ☐

3. कबीर ने दोहे में जल की तुलना किससे की है?

   (क) नाव से ☐ (ख) धन से ☐
   (ग) हाथों से ☐ (घ) सयानेपन से ☐

2.2.2 अंश-2

दोहा-5

आइए, पाँचवें दोहे को ठीक से समझने के लिए उसे एक बार फिर से पढ़ लेते हैं।

यह दोहा रहीम का लिखा हुआ है। आपको पता होगा कि एक वर्ष में छह ऋतुएँ होती

हैं। इनके नाम हैं— ग्रीष्म (गरमी), पावस (वर्षा), शरद (हल्की सरदी) शिशिर, (तेज़ सरदी) हेमंत (पतझड़) और वसंत।

आपने वसंत में कोयल की कूक और वर्षा में मेंढक की टर्र-टर्र की आवाज़ें तो सुनी ही होंगी। ज़ाहिर है कि कोयल की कूक सभी को भाती है। उसके स्वर में मिठास होती है और गायन में लय। आपने प्रायः एक बार में एक ही कोयल का स्वर सुना होगा, सामूहिक स्वर नहीं। दूसरी तरफ़, मेंढक एक साथ टर्राते हैं, उनका टर्राना सुनने में बड़ा ही अरुचिकर लगता है। उस शोर में और सभी आवाज़ें दब-सी जाती हैं। इसी आधार पर कवि ने कोयल को ज्ञानवान व्यक्ति के प्रतीक के रूप में और मेंढक को शोर-शराबा करके ध्यान खींचने वालों के प्रतीक के रूप में प्रस्तुत किया है।

पावस देखि रहीम मन,
कोइल साधै मौन।
अब दादुर बक्ता भए,
हमको पूछत कौन।।

आइए, अब इस दोहे का अर्थ-सौंदर्य देखें।

रहीम कहते हैं कि पावस अर्थात् वर्षा ऋतु के आने पर कोयल अपने मन में यह विचार करके मौन साध लेती है कि अब तो मेंढक वक्ता हो गए हैं (जानकारी न रखते हुए भी बढ़-चढ़कर बात करने लगे हैं), अब हमें कौन पूछेगा अर्थात् अब हमारी कद्र कौन करेगा?

तात्पर्य यह है कि जब कम जानकार या अज्ञानी लोग बढ़-चढ़ कर बातें करते हुए महत्त्व पाने लगते हैं, तब ज्ञानी लोग मौन धारण कर लेते हैं; क्योंकि उनका स्वर इस शोर-शराबे में दबकर रह जाता है और न सुने जाने के कारण उनकी बात का उचित प्रभाव नहीं पड़ता।

अब सवाल उठता है कि क्या रहीम यह कहना चाहते हैं कि मूर्खों के बढ़-चढ़ कर बोलने पर विद्वान को ज्ञानपूर्ण बातें नहीं करनी चाहिए? नहीं, ऐसा नहीं है। गौर करें, पावस देखकर कोयल के मौन साधने की बात कही गई है, हमेशा के लिए नहीं। जब ऋतु बदलेगी, तो मेंढकों का टर्राना बंद हो जाएगा, फिर वसंत ऋतु आएगी और कोयल फिर पंचम स्वर में संदेश देगी। मतलब साफ़ है— विद्वान का मौन सिर्फ़ उतने समय के लिए होता है, जितने समय तक शोर-शराबा हो, बढ़-चढ़कर मूर्खतापूर्ण बातें हों। अनुकूल अवसर मिलते ही विद्वान को फिर ज्ञान और मानव–कल्याण की बातें कहनी चाहिए। इससे यह भी पता लगता है कि विद्वान अनुकूल अवसर पर ही अपनी विद्वत्ता का प्रदर्शन करता है।

टिप्पणी

1. इस दोहे में सामान्य रूप में कोयल और मेंढक का ही ज़िक्र है, पर उसके द्वारा विद्वान और मूर्ख वाला अर्थ व्यक्त होता है। जहाँ साधारण तौर पर एक बात कही जाए, पर उसका अर्थ बिल्कुल भिन्न या अप्रत्यक्ष निकलता हो, वहाँ **अन्योक्ति अलंकार** होता है। प्रस्तुत दोहे में अन्योक्ति का बहुत सुंदर और सटीक प्रयोग है।

2. 'अब दादुर बक्ता भए' में 'बक्ता' (वक्ता) शब्द में व्यंजना का सौंदर्य निहित है। 'बोलने लगे' या 'बोलते हैं' या 'बोल रहे हैं' की जगह 'बक्ता भए' का प्रयोग

किया गया है। आपने मंच पर लोगों को बोलते देखा होगा। किसी सभा या समाज में जो व्यक्ति मंच से अपनी बात कहे, उसे वक्ता कहते हैं। व्यंजना से अर्थ निकलता है कि अब मंच मूर्खों के ही हाथ में है।

टिप्पणी

दोहा-6

खैर, खून, खाँसी, खुसी,
वैर, प्रीति, मदपान।
रहिमन दाबे ना दबैं,
जानत सकल जहान।।

आइए, छठा दोहा ध्यान से पढ़ लेते हैं और इसे समझने का प्रयास करते हैं। इसमें सात चीज़ों या बातों का उल्लेख है। खैर यानी कत्था, खून, खाँसी, खुशी, वैर यानी दुश्मनी, प्रीति अर्थात् प्रेम और मद-पान यानी नशीली चीज़ का सेवन। रहीम कहते हैं कि ये सातों दबाने से नहीं दबते यानी उभर ही आते हैं। कहने का अर्थ है कि सारी दुनिया जानती है कि इन सातों को छिपाया नहीं जा सकता। ये सभी बातें समय आने पर प्रकट हो ही जाती हैं।

खैर यानी कत्था पान में प्रयोग किया जाता है और होठों को लाल करके अपनी उपस्थिति प्रकट कर देता है। ऐसे ही ख़ून भी अपने रंग को ऐसा छोड़ देता है कि उसे छिपाना संभव नहीं होता। ये तो आप जानते ही हैं कि खाँसी को भी दबाया नहीं जा सकता।

आपने ऐसे लोगों को तो देखा ही होगा जिनकी आपस में नहीं बनती और मौका पाते ही वे एक-दूसरे को नुकसान पहुँचाने से नहीं चूकते। इसी को वैर कहते हैं। ऐसे लोग जब एक दूसरे के सामने आते हैं, तो उनका हाव-भाव और व्यवहार सभी के सामने उनके संबंधों को स्पष्ट कर देता है।

इसी तरह, किसी के प्रति प्रेम का भाव भी आँखों की चमक, बोलने के तरीके और व्यवहार से प्रकट हो जाता है।

आपने नशेड़ियों या शराबियों को देखा होगा। उन्हें देखते ही आपको पता लग जाता है कि इस आदमी ने ज़रूर शराब पी रखी है। उसकी चाल-ढाल, उसका बोलने का तरीका अपने आप शराब पीने की बात ज़ाहिर कर देता है।

इस तरह आपने देखा कि जिन सात बातों की चर्चा इस दोहे में की गई है, वे स्वयं ही अपने आपको व्यक्त कर देती हैं। उन्हें छिपाया नहीं जा सकता।

आपने दैनिक भाषा-व्यवहार में ध्यान दिया होगा कि किसी बात पर बल देने के लिए यह कहा जाता है—'अरे, भई! सारी दुनिया इस बात को जानती है' या 'हर कोई यह जानता है' या 'कौन इस बात को नहीं जानता' अथवा 'सभी जानते हैं' या 'सबको पता है जी' .....आदि-आदि। 'जानत सकल जहान' ऐसा ही प्रयोग है।

टिप्पणी

1. 'खैर, खून, खाँसी, खुसी' में 'ख' वर्ण का दुहराव है। अतः यहाँ **अनुप्रास अलंकार** है। आप जानते ही हैं कि जहाँ एक ही वर्ण की बार-बार आवृत्ति हो, वहाँ अनुप्रास अलंकार होता है।

टिप्पणी

पाठगत प्रश्न-2.2

सर्वाधिक उपयुक्त विकल्प चुनकर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए:

1. रहीम के अनुसार खून, खाँसी, खुसी, वैर, प्रीति और मदपान के अतिरिक्त और कौन-सी चीज़ छिपाए नहीं छिपती?

   (क) कत्था ☐ (ग) ऊँचा कुल ☐

   (ख) ख़ुशबू ☐ (घ) चोरी ☐

2. 'अब दादुर बक्ता भए' से कवि का क्या आशय है?

   (क) मूर्ख मंच पर आ पहुँचे ☐

   (ख) समझदारों की इज्ज़त होती है ☐

   (ग) मेंढकों ने कूकना शुरू कर दिया ☐

   (घ) कोयल ने मौन साध लिया। ☐

3. "पावस देखि रहीम मन कोइल साधै मौन
   अब दादुर बक्ता भए, हमको पूछत कौन"

   – ऊपर दिए गए दोहे में कौन-सा अलंकार है?

   (क) दृष्टांत ☐ (ख) उपमा ☐

   (ग) रूपक ☐ (घ) अन्योक्ति ☐

2.2.3 अंश-3

दोहा-7

आगे बढ़ने से पहले एक प्रसिद्ध कवि वृंद का दोहा फिर से पढ़ लेते हैं।

करत-करत अभ्यास तें,
जड़मति होत सुजान।
रसरी आवत-जात तें,
सिल पर परत निसान।।

आप देख रहे हैं न कि इस दोहे में कुछ ख़ास बात कही गई है! इसमें कुछ करने पर बल दिया गया है! क्या करने पर? जी, हाँ! अभ्यास करने पर। यह अभ्यास क्या होता है, जानते हैं? कहाँ-कहाँ आपने यह शब्द पढ़ा या सुना है, याद कीजिए। अभ्यास, रियाज़ ..... अब कुछ याद आया? हाँ, संगीत में, खेल में ......

आपको पता होगा कि संगीत सीखने वाले ही नहीं, बल्कि संगीत के बड़े-बड़े पंडित और उस्ताद भी रोज़ाना रियाज़ करते हैं। रियाज़ का अर्थ अभ्यास ही होता है। आपने बड़े संगीतज्ञों का साक्षात्कार या भेंटवार्ता/इंटरव्यू सुना या पढ़ा होगा। वे बताते हैं कि वे दिन में दस से बारह घंटे तक रियाज़ (अभ्यास) करते थे। नए सीखने वालों को भी वे अभ्यास पर अधिक समय देने की सलाह देते हैं। इसी तरह आपने खिलाड़ियों को

भी देखा होगा कि वे प्रतिदिन कई घंटे का समय अपने खेल के अभ्यास पर ख़र्च करते हैं। आपने समाचारों में भी देखा-सुना होगा कि किसी भी मैच से पहले पूरी टीम एक बार अभ्यास करती है। आपको शायद यह भी पता हो कि वकील और डॉक्टर तो अपने पूरे के पूरे काम को ही प्रैक्टिस (अभ्यास) कहते हैं।

आइए, इस दोहे के भाव को समझने से पहले कुछ और बातें जान लें।

चित्र 2.5

इस दोहे में कवि ने कहा है कि अभ्यास करते-करते यानी, निरंतर अभ्यास करने से मूर्ख व्यक्ति भी ज्ञानवान बन जाता है। कवि ने मूर्ख के लिए 'जड़मति' शब्द का प्रयोग किया है। 'जड़' का एक तो आम अर्थ है—किसी भी पेड़-पौधे का वह हिस्सा जो ज़मीन के भीतर होता है और जिसके द्‌वारा उसे खाद-पानी मिलता है। आप जड़ और चेतन पदार्थ के इन दो भेदों के बारे में जानते हैं :

जड़— वे पदार्थ जिनके अंदर जीवन के तत्त्व नहीं होते, साधारणतः जिनमें ख़ुद बढ़ने और हिलने-डुलने की शक्ति नहीं होती।

चेतन— वे पदार्थ, जिनमें जीवन के तत्त्व होते हैं, जिनमें बढ़ने और हिलने-डुलने की शक्ति होती है।

तो 'जड़' का अर्थ है ठहरा हुआ, रुका हुआ, धड़कनरहित, बेजान। 'मति' बुद्‌धि को कहते हैं। अतः जड़मति का अर्थ हुआ—जिसकी बुद्‌धि का विकास न हुआ हो या जो मूर्ख हो। आम भाषा में इसके लिए 'ठस दिमाग' का भी प्रयोग करते हैं। आमतौर पर ऐसे व्यक्ति को मूर्ख कहते हैं। सुजान भी आप जानते ही हैं— चतुर, बुद्‌धिमान, विद्‌वान।

चलिए, अब आपको हम थोड़ा पहले के समय तक ले चलते हैं। आपने कुआँ देखा है? हाँ, ठीक है, आज इनका बहुत कम प्रयोग होता है, पर पहले पानी की ज़रूरत को कुएँ ही पूरा करते थे। एक बाल्टी या घड़ा लिया, उसमें रस्सी बाँधी और कुएँ में लटकाकर ढील देते गए। तल तक पहुँचने पर दो-तीन बार रस्सी को ऊपर-नीचे झटका दिया, बाल्टी में पानी भर गया। अब उसे ऊपर खींच लिया। आपने ऐसा करके या ऐसा होते हुए देखा है कभी? देखा है? वह तो नहीं, जिसमें रस्सी के नीचे ऊपर जाने-आने के लिए

घिरनी लगी होती है? घिरनी तो बाद में लगने लगी। उससे पहले कुएँ के चारों तरफ़ पत्थर का फ़र्श बना होता था और रस्सी के इसी पत्थर पर रगड़ खाने से पत्थर पर उतने हिस्से में गहरा गड्‌ढा बन जाता था।

पत्थर के लिए संस्कृत शब्द 'शिला' है, जिससे हिंदी में 'सिल' शब्द बना है।

अब इस दोहे के भाव और संदेश को हम आसानी से समझ सकते हैं :

कवि कहता है कि निरंतर अभ्यास करने से मूर्ख व्यक्ति भी चतुर और ज्ञानवान बन जाता है; ठीक उसी तरह, जैसे रस्सी के निरंतर आने-जाने से पत्थर पर उसका निशान बन जाता है। इसीलिए, किसी भी काम में सफलता पाने के लिए अभ्यास करना ज़रूरी है।

टिप्पणी

1. जड़मति से सुजान बनने की प्रक्रिया के लिए दैनिक व्यवहार के उदाहरण—'सिल पर परत निसान' का प्रयोग किया गया है, इसलिए यहाँ **दृष्टांत अलंकार** है।

2. क्या आपने इस बात पर ध्यान दिया है कि लिखने वाली भाषा से बोलने वाली भाषा में अंतर होता है। जी हाँ, लिखने वाली भाषा अक्सर वह होती है, जो पूरे भाषा-क्षेत्र में एक जैसी होती है। इसे 'मानक भाषा' कहते हैं। लेकिन बोली जाने वाली भाषा के दो रूप साथ-साथ मिलते हैं। एक मानक रूप और दूसरा क्षेत्रीय या स्थानीय रूप। मानक रूप हर जगह एक जैसा बोला जाता है। स्थानीय रूप अलग-अलग होते हैं, जैसे— कलकतिया हिंदी, बंबइया हिंदी आदि। इन स्थानीय रूपों के साथ ही, उसी भाषा-क्षेत्र की उपभाषाएँ होती हैं, जैसे— अवधी, ब्रज, भोजपुरी, मैथिली आदि। हर क्षेत्र की उपभाषा के उच्चारण का तरीका और बोलने का लहज़ा भी अलग-अलग होता है। इस दोहे में 'रसरी' ऐसा ही शब्द है। मानक भाषा में शब्द है—रस्सी। इसी रस्सी को ब्रज में 'रसरी' बोला जाता है। दोहे की भाषा ब्रज है।

3. इस दोहे के अर्थ को जानने के संदर्भ में हमने मानक भाषा और उपभाषा में अंतर समझा है। हिंदी की उपभाषाओं को पाँच वर्गों में बाँटते हैं। इन वर्गों में शामिल उपभाषाओं के नाम इस प्रकार हैं :

1.	पश्चिमी हिंदी-वर्ग	:	खड़ी बोली, हरियाणवी, ब्रज, बुंदेली और कन्नौजी
2.	पूर्वी हिंदी-वर्ग	:	अवधी, छत्तीसगढ़ी और बघेली
3.	बिहारी-वर्ग	:	भोजपुरी, मगही और मैथिली (मैथिली को अब संविधान की आठवीं अनुसूची में स्वतंत्र भाषा का दर्जा प्राप्त है)

4.	राजस्थानी-वर्ग	:	मेवाती, जयपुरी, मालवी और मारवाड़ी
5.	पहाड़ी-वर्ग	:	कुमाउँनी, गढ़वाली आदि

टिप्पणी

दोहा-8

आइए, कवि वृंद का अगला दोहा फिर से ध्यानपूर्वक पढ़ लेते हैं।

> नैना देत बताय सब,
> हिय को हेत-अहेत।
> जैसे निरमल आरसी,
> भली-बुरी कहि देत।।

इस दोहे में एक शब्द आया है— 'आरसी'। 'आरसी' किसे कहते हैं, पता है? आरसी का अर्थ है— शीशा या आईना। आरसी एक आभूषण का भी नाम है, जिसे स्त्रियाँ अँगूठे में पहना करती थीं। इसमें एक शीशा (आईना) लगा होता था। अपने साज-सिंगार के लिए और अपने चेहरे को देखने के लिए इसका उपयोग किया जाता था। निर्मल यानी साफ़-सुथरी आरसी वास्तव में रूप-रंग या साज-सिंगार के अच्छे या बुरे होने को प्रकट कर देती है। आप शीशा देखते हैं। क्या करता है वह, यही न कि जो जैसा है— अच्छा या बुरा, उसे प्रतिबिंबित कर देता है, बता देता है।

तब, इस दोहे का अर्थ हुआ कि आदमी के नयन यानी उसकी आँखें उसके हृदय में विद्यमान हित या अहित के भाव को पूरी तरह व्यक्त कर देती हैं। ठीक उसी तरह जैसे स्वच्छ आरसी भले या बुरे रूप-रंग को व्यक्त कर देती है। अर्थ यह है कि आदमी की आँखों से उसके मन के भावों का पता चल जाता है। प्रेम करने वालों की आँखों में चमक होती है। क्रोध हो, तो आँखें लाल हो जाती हैं। अगर शोक है, तो आँसू उमड़ आते हैं, वगैरह...वगैरह। आँखें ही व्यक्ति के मन के भाव को ठीक-ठीक प्रकट करती हैं। बिहारी भी लिखते हैं:

> झूठे जान न संग्रहे, मुख सों निकसे बैन।
> या ही तैं विधि ने किए, बातन को ये नैन।

मुख से निकले हुए वचन तो झूठे हो जाते हैं (क्योंकि मुँह से कोई भी चीज़ निकले वह जूठी हो ही जाती है) इन वचनों को झूठे जानकर ही कवि ने कहा है कि सच्ची बात तो आँखें ही कह सकती हैं; इसीलिए सच को व्यक्त करने के लिए ही भगवान ने ये नैन दिए हैं।

कवि इस दोहे में बताना चाहता है कि आँखें मनुष्य के हृदय के भावों को प्रकट कर देती हैं। हम उन्हें देखकर समझ सकते हैं कि वह व्यक्ति हमारे प्रति कैसा भाव रखता है।

टिप्पणी

1. 'नैना' शब्द संस्कृत के नयन से बना है, यह तद्भव रूप है। हित से हेत और अहित से अहेत भी ऐसे ही प्रयोग हैं।

2. दृष्टांत अलंकार है।

टिप्पणी

पाठगत प्रश्न-2.3

सर्वाधिक उपयुक्त विकल्प चुनकर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

1. अभ्यास करने का अर्थ होता है—
   (क) किसी काम को जल्दी करने लगना ☐
   (ख) कार्य-कारण संबंध सीख जाना ☐
   (ग) निरंतर कार्य करके उसमें कुशलता पाना ☐
   (घ) बहस करके सीख जाना ☐

2. हिंदी की किस उपभाषा को संविधान की आठवीं अनुसूची में स्वतंत्र भाषा का दर्जा प्राप्त है?
   (क) ब्रज ☐ (ख) भोजपुरी ☐
   (ग) मैथिली ☐ (घ) कुमाउँनी ☐

2.3 दोहा छंद का परिचय

नाम	चिह्न	मात्रा
ह्रस्व (लघु)	।	1
दीर्घ (गुरु)	ऽ	2

आपको कुछ दोहे याद हैं न? आप यह जानते हैं कि पहले कविता लिखने के लिए कवि छंदों का प्रयोग करते थे— आज भी करते हैं। छंद या तो मात्राओं, या वर्णों पर आधारित होता था और निश्चित मात्राओं या वर्णों के बाद उसमें यति (ठहराव या विराम) और तुक का पालन किया जाता था। हिंदी में अधिकांशतः मात्रिक छंदों का प्रयोग किया गया है। दोहा भी एक मात्रिक छंद है।

मात्रा का अर्थ है— उच्चारण में लिया गया समय। उच्चारण-समय के आधार पर ह्रस्व और दीर्घ इकाइयाँ होती हैं। ह्रस्व को 'लघु' भी कहते हैं और इसकी एक मात्रा गिनते हैं तथा इसके लिए '।' चिह्न का प्रयोग करते हैं। दीर्घ को 'गुरु' भी कहते हैं और इसकी दो मात्राएँ गिनते हैं तथा इसके लिए 'ऽ' चिह्न का प्रयोग करते हैं। इसे हाशिए पर दिए गए चार्ट से आसानी से समझ सकते हैं।

तो आइए, अब हम मात्रा गिनना सीखें। हिंदी में अ, इ और उ ह्रस्व स्वर हैं, शेष सभी यानी आ, ई, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ दीर्घ स्वर हैं। इसलिए जहाँ अ, इ, उ अथवा इनकी मात्राओं वाले व्यंजन (क, कि, कु आदि) होंगे, वहाँ ह्रस्व अर्थात् एक मात्रा होगी। जहाँ आ, ई, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ अथवा इनकी मात्राओं वाले व्यंजन (का, की, कू, के, कै, को, कौ, आदि) होंगे, वहाँ दीर्घ अर्थात् दो मात्राएँ होंगी। इसके अलावा संयुक्त व्यंजनों से पूर्व ह्रस्व (लघु) भी दीर्घ हो जाते हैं; जैसे 'अभ्यास' में 'अ' की दो मात्राएँ होंगी। इसी रक्षक, पंथी, वक्ता में क्रमशः र, पं और व भी गुरु होंगे।

टिप्पणी

अब इस दोहे पर गौर कीजिए :

| ऽ | ऽ ऽ ऽ | ऽ =13
बड़ा हुआ तो क्या हुआ,

ऽ ऽ ऽ| | ऽ | =11
जैसे पेड़ खजूर

ऽ| | ऽ ऽ ऽ | ऽ =13
पंथिन को छाया नहीं,

| | ऽ ऽ | | ऽ| =11
फल लागे अति दूर

आपने देखा कि इस दोहे में दो पंक्ति और चार चरण हैं।

पहले चरण में 1 + 2 + 1 + 2 + 2 + 2 + 1 + 2 = 13 मात्राएँ हैं।

दूसरे चरण में 2 + 2 + 2 + 1 + 1 + 2 + 1 = 11 मात्राएँ हैं।

तीसरे चरण में 2 + 1 + 1 + 2 + 2 + 2 + 1 + 2 = 13 मात्राएँ हैं।

चौथे चरण में 1 + 1 + 2 + 2 + 1 + 1 + 2 + 1 = 11 मात्राएँ हैं।

अर्थात् 13, 11, 13, 11 मात्राओं वाले चार चरण हैं। हम दोहे का वाचन करते समय भी इसी हिसाब से ठहराव देते हैं। पहले 13, फिर 11, फिर 13 और फिर 11 मात्राएँ। यह दोहे को पढ़े जाने का तरीका है।

दोहे के दूसरे और चौथे चरण में अंतिम दो वर्ण क्रमशः गुरु और लघु होते हैं, जैसे इस दोहे में 'खजूर' और 'दूर' में अंत के वर्ण 'जू' और 'दू' गुरु हैं तथा 'र' लघु है।

आप ऊपर के दोहे में एक बात और देखेंगे कि दूसरे और चौथे चरण की तुक मिल रही है—**खजूर** और **दूर**। हाँ, यह भी दोहा छंद का आवश्यक नियम है।

दोहा छंद की पहचान

1. दो-दो चरणों वाली दो पंक्तियाँ
2. 13, 11, 13, 11 मात्राओं के चार चरण
3. दूसरे और चौथे चरण के अंत में गुरु के पश्चात् लघु मात्रा (ऽ।)
4. दूसरे और चौथे चरण की तुक में समानता

क्रियाकलाप-2.2

आपने मात्राएँ गिनना और दोहा छंद को पहचानना सीख लिया है। निम्नलिखित छंदों की मात्राएँ गिनिए और बताइए कि कौन छंद दोहा नहीं है—

(क) साँच बराबर तप नहीं, झूठ बराबर पाप।
जाके हिरदै साँच है, ताके हिरदै आप।।

(ख) रहिमन देखि बड़ेन को, लघु न दीजिए डारि।
जहाँ काम आवै सुई, कहा करै तरवारि।।

(ग) रहिमन मोहि न सुहाय, अमी पियावत मान बिनु।
जो विष देय बुलाय, मान सहित मरिबो भलो।।

आपने क्या सीखा

1. मनुष्य की पहचान उसके कुल, वर्ण और जाति से नहीं, बल्कि उसके कर्म और व्यवहार से होती है।
2. हमें अपनी आलोचना से घबराना नहीं चाहिए और न ही उसका बुरा मानना चाहिए, बल्कि उन कमियों को दूर करने का प्रयास करना चाहिए।
3. हमें ज्ञान के साथ-साथ अपने व्यवहार और चरित्र को भी श्रेष्ठ बनाना चाहिए। व्यवहार की कसौटी पर खरा उतरकर ही ज्ञान उपयोगी होता है।
4. धन आवश्यकता के अनुसार ही अच्छा होता है। उससे अधिक होने पर व्यसन पालने की अपेक्षा दान देना बेहतर है।
5. ज्ञान की बातें करना वहीं अच्छा होता है, जहाँ उनको सुनने-समझने वाले हों।
6. प्रेम और शत्रुता के भाव छिपाए नहीं जा सकते।
7. निरंतर अभ्यास से मनुष्य की बुद्धि का विकास होता है और वह ज्ञानी बन जाता है।
8. आँखों से मनुष्य के मन के भावों का पता चल जाता है।
9. दोहा छंद में 13, 11, 13, 11 मात्राओं की यति के साथ चार चरण होते हैं तथा दूसरे और चौथे चरण के तुक समान होते हैं।
10. कबीर, रहीम और वृंद ने दोहों में आसान शब्दों में और उदाहरणों के माध्यम से नीति और सामाजिक व्यवहार की गूढ़ बातें बताई हैं।
11. संस्कृत के शब्दों के यथावत रूप **तत्सम** शब्द और ध्वनि के आधार पर बदले हुए रूप **तद्भव** शब्द कहे जाते हैं।
12. हिंदी की अनेक उपभाषाएँ हैं।
13. उदाहरणों (दृष्टांतों) और अलंकारों से भाषा और अभिव्यक्ति का सौंदर्य बढ़ जाता है।

योग्यता-विस्तार

- लगभग 1000 साल से हिंदी भाषा में साहित्य रचा जा रहा है। आसानी के लिए हम इस समय को चार बड़े भागों में बाँट लेते हैं। ये हैं—आदिकाल, भक्तिकाल,

रीतिकाल और आधुनिक काल। भक्तिकाल और रीतिकाल को मिलाकर मध्यकाल भी कहते हैं। कबीर, रहीम और वृंद मध्यकाल के कवि हैं।

- कबीर ने अपने काव्य में भक्ति और नीति का उपदेश दिया है। इतना समय बीत जाने पर भी आम जन-जीवन में किसी बात को समझाने और उस पर बल देने के लिए उनके उपदेशपरक दोहों का प्रयोग आज भी किया जाता है।
- हिंदी भाषा यों तो पूरे भारत में ही समझी और बोली जाती है, पर विशेषतः उन क्षेत्रों को, जहाँ के रहने वालों की मातृभाषा हिंदी या उसकी उपभाषाएँ हैं— हिंदीभाषी प्रदेश कहते हैं। हिंदीभाषी प्रदेश हैं—हिमाचल प्रदेश, हरियाणा, दिल्ली, उत्तराखंड, उत्तर प्रदेश, बिहार, झारखंड, राजस्थान, मध्यप्रदेश और छत्तीसगढ़। हिंदी भाषी प्रदेश से सटे हुए क्षेत्रों में काश्मीरी, पंजाबी, गुजराती, तेलुगु, बांग्ला और ओड़िया भाषाएँ बोली जाती हैं। इनके अतिरिक्त हमारे देश में तमिल, कन्नड, मलयालम, कोंकणी, असमिया, मणिपुरी, नागा, मिजो आदि भाषाएँ बोली जाती हैं।
- हिंदी के साथ-साथ हिंदीभाषी प्रदेशों में उर्दू भाषा का भी चलन है। यह कई हिंदी भाषी प्रदेशों की द्वितीय राजभाषा भी है। हिंदी और उर्दू के व्याकरण और शब्द-भंडार में काफ़ी समानता है और वाक्य-रचना के नियम भी काफ़ी हद तक समान हैं, लेकिन दोनों की लिपि अलग-अलग है। हिंदी भाषी प्रदेशों में बोलचाल के स्तर पर प्रायः दोनों के मिले-जुले रूप का प्रयोग किया जाता है, जिसे 'हिंदुस्तानी' कहते हैं।

पाठांत प्रश्न

1. निम्नलिखित दोहे का भाव स्पष्ट करते हुए अपनी टिप्पणी कीजिए:

   निंदक नियरे राखिए, आँगन कुटी छवाय।
   बिन पानी साबुन बिना, निर्मल करत सुभाय।।

2. 'गुरु कुम्हार सिष कुंभ है, गढ़ि-गढ़ि काढ़ै खोट—' पंक्ति में 'गढ़ि-गढ़ि काढ़ै खोट' का आशय स्पष्ट कीजिए। गुरु—शिष्य के संबंध का आदर्श रूप क्या है?

3. "जो जल बाढ़ै नाव में, घर में बाढ़ै दाम।।
   दोऊ हाथ उलीचिए, यही सयानो काम।।"
   — इस दोहे में धन के अर्थ में 'दोऊ हाथ उलीचिए' से क्या अभिप्राय है?

4. 'करत-करत अभ्यास तें...' दोहे में मूर्ख के लिए 'जड़मति' शब्द का प्रयोग क्यों किया गया है?

5. निम्नलिखित दोहे में निहित भाव-सौंदर्य का उल्लेख करते हुए अपने अनुभव के आधार पर प्रस्तुत कीजिए :

नैना देत बताय सब, हिय को हेत-अहेत।।

जैसे निर्मल आरसी, भली-बुरी कहि देत।।

6. निम्नलिखित शब्दों में से तत्सम शब्द छाँटकर लिखिए :

कुल, सुरा, गुरु, कुम्हार, कुंभ, निदंक, सुभाय, जल, घर, हाथ, काम, पावस, मौन, खून, प्रीति, जहान।

7. निम्नलिखित दोहों को ध्यानपूर्वक पढ़िए और पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

कबिरा गर्व न कीजिए, काल गहे कर केस।
क्या जानौं कित मारिहै, क्या घर क्या परदेस।।

रहिमन निज मन की व्यथा, मन ही राखो गोय।
सुन इठलैहैं लोग सब, बाँट न लइहै कोय।।

प्रश्न

(i) 'काल गहे कर केस' का अर्थ स्पष्ट कीजिए।

(ii) कबीर ने घमंड करने के लिए क्यों मना किया है?

(iii) मन की व्यथा को छिपाकर क्यों रखना चाहिए।

7. हिंदी की उपभाषाओं का वर्गवार उल्लेख कीजिए।

8. नीचे दिए गए दोहे में ह्रस्व और दीर्घ का चिह्न अंकित करके मात्राएँ गिनिए :

जो जल बाढ़ै नाव में घर में बाढ़ै दाम।
दोऊ हाथ उलीचिए यही सयानो काम।।

उत्तरमाला

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

2.1 1. (क) 2. (घ) 3. (ख)

2.2 1. (क) 2. (क) 3. (घ)

2.3 1. (ग) 2. (ग)

3

गिल्लू

पिछले पाठों में आप एक कहानी और कुछ दोहे पढ़ चुके हैं। आइए, अब एक नई साहित्य विधा रेखाचित्र पढ़ते हैं।

आप जानते हैं कि मनुष्य और दूसरे जीवों का संबंध कितना महत्त्वपूर्ण है। कई बार पशु–पक्षी या अन्य प्राणी अपने प्रेम भरे व्यवहार, अपनेपन और समझदारी से हमें प्रभावित कर देते हैं। उनके साथ अच्छा व्यवहार करें, तो वे भी हमें अपना मानने लगते हैं, हमारे सुख-दुख के साथी बन जाते हैं। आपने देखा होगा कि पशु-पक्षी या कोई अन्य जीव किसी व्यक्ति से बहुत घुल-मिल जाता है, वह व्यक्ति के जीवन का अभिन्न अंग बन जाता है। उसके न रहने पर, उसे याद करके व्यक्ति बहुत दुखी होता है।

यह रेखाचित्र एक छोटे-से प्राणी– गिलहरी की याद में लिखा गया है।

उद्देश्य

इस पाठ को पढ़ने के बाद आप–

- मनुष्य और पशु-पक्षी तथा अन्य जीवों के परस्पर संबंध का उल्लेख कर सकेंगे;
- वात्सल्य तथा ममता जैसे भावों का वर्णन कर सकेंगे;
- मन को छूने वाले स्थलों के सकारात्मक प्रभाव का उल्लेख कर सकेंगे;
- इस रेखाचित्र की विशेषताओं और भाषा-शैली पर टिप्पणी कर सकेंगे;
- अपने संपर्क में आए मनुष्यों और अन्य प्राणियों के व्यवहार के विषय में लिख सकेंगे।

टिप्पणी

शब्दार्थ

अनायास	– यूँही, बिना प्रयास के।
हरीतिमा	– हरियाली।
स्वर्णिम	– सोने जैसा, सुनहरा।
काकभुशुंडि	– कौआ, एक ऋषि का नाम
समादृत	– सम्मानित
अवमानित	– तिरस्कृत
पुरखे	– पुराने लोग (बुजुर्ग)/दादा-परदादा।
काक	– कौआ।
अवतीर्ण	– प्रकट होना।
दूरस्थ	– दूर स्थित।
कर्कश	– कानों को बुरा लगने वाला
काकपुराण	– कौवे का पुराण।
काक-द्वय	– दोनों कौवे।
छुआ-छुऔवल	– एक-दूसरे को छूने का एक प्रकार का खेल
संधि	– मिलन-बिंदु
जीव	– प्राणी
दृष्टि	– नज़र
संभवतः	– शायद
सुलभ	– सरलता से प्राप्त
आहार	– भोजन
लघुप्राण	– छोटा प्राणी
निश्चेष्ट	– जो हिलडुल न रहा हो

3.1 मूल पाठ

इस पाठ में आप गिल्लू नामक गिलहरी के बारे में पढ़ने जा रहे हैं। आपकी सहायता के लिए कठिन शब्दों के अर्थ मूल पाठ के साथ दिए जा रहे हैं। आइए, इस पाठ को एक बार पढ़ लेते हैं।

गिल्लू

सोनजुही में आज एक पीली कली लगी है। इसे देख कर अनायास ही उस छोटे जीव का स्मरण हो आया जो इस लता की सघन हरीतिमा में छिप कर बैठता था और फिर मेरे निकट पहुँचते ही कंधे पर कूद कर मुझे चौंका देता था। तब मुझे कली की खोज रहती थी, पर आज उस लघुप्राण की खोज है।

परंतु वह तो अब तक इस सोनजुही की जड़ में मिट्टी होकर मिल गया होगा। कौन जाने स्वर्णिम कली के बहाने वही मुझे चौंकाने ऊपर आ गया हो।

अचानक एक दिन सबेरे कमरे से बरामदे में आकर मैंने देखा, दो कौवे एक गमले के चारों ओर चोंचों से छुआ-छुऔवल जैसा खेल खेल रहे हैं।

यह काकभुशुंडि भी विचित्र पक्षी है– एक साथ समादरित, अनादरित, अति सम्मानित, अति अवमानित।

हमारे बेचारे पुरखे न गरुड़ के रूप में आ सकते हैं, न मयूर के, न हंस के, उन्हें पितरपक्ष में हमसे कुछ पाने के लिए काक बनकर ही अवतीर्ण होना पड़ता है। इतना ही नहीं, हमारे दूरस्थ प्रियजनों को भी अपने आने का मधु संदेश इनके कर्कश स्वर में ही देना पड़ता है। दूसरी ओर हम कौवा और काँव-काँव करने को अवमानना के अर्थ में ही प्रयुक्त करते हैं।

मेरे काकपुराण के विवेचन में अचानक बाधा आ पड़ी, क्योंकि गमले और दीवार की संधि में छिपे एक छोटे-से जीव पर मेरी दृष्टि रुक गई। निकट जाकर देखा, गिलहरी का छोटा-सा बच्चा है, जो संभवतः घोंसले से गिर पड़ा है और अब कौवे जिसमें सुलभ आहार खोज रहे हैं।

काकद्वय की चोंचों के दो घाव उस लघुप्राण के लिए बहुत थे। अतः वह निश्चेष्ट-सा गमले से चिपका पड़ा था।

चित्र 3.1

सबने कहा, कौवे की चोंच का घाव लगने के बाद

यह बच नहीं सकता, अतः इसे ऐसे ही रहने दिया जावे।

परंतु मन नहीं माना— उसे हौले से उठाकर अपने कमरे में लाई, फिर रुई से रक्त पोंछकर घावों पर पेन्सिलिन का मरहम लगाया। रुई की पतली बत्ती दूध में भिगोकर जैसे-तैसे उसके नन्हे से मुँह में लगाई, पर मुँह खुल न सका और दूध की बूँदें दोनों ओर ढुलक गईं।

कई घंटे के उपचार के उपरांत उसके मुँह में एक बूँद पानी टपकाया जा सका। तीसरे दिन वह इतना अच्छा और आश्वस्त हो गया कि मेरी उँगली अपने दो नन्हे पंजों से पकड़ कर, नीले काँच के मोतियों जैसी आँखों से इधर-उधर देखने लगा।

चित्र 3.2

तीन-चार मास में उसके स्निग्ध रोएँ, झब्बेदार पूँछ और चंचल चमकीली आँखें सबको विस्मित करने लगीं।

हमने उसकी जातिवाचक संज्ञा को व्यक्तिवाचक का रूप दे दिया और इस प्रकार हम उसे गिल्लू कहकर बुलाने लगे। मैंने फूल रखने की एक हल्की डलिया में रुई बिछा कर उसे तार से खिड़की पर लटका दिया। वही दो वर्ष गिल्लू का घर रहा। वह स्वयं हिला कर अपने घर में झूलता और अपनी काँच के मनकों-सी आँखों से कमरे के भीतर और खिड़की से बाहर न जाने क्या देखता-समझता रहता था। परंतु उसकी समझदारी और कार्यकलाप पर सबको आश्चर्य होता था।

चित्र 3.3

जब मैं लिखने बैठती, तब अपनी ओर मेरा ध्यान आकर्षित करने की उसे इतनी तीव्र इच्छा होती थी कि उसने एक अच्छा उपाय खोज निकाला।

वह मेरे पैर तक आकर सर्र से परदे पर चढ़ जाता और फिर उसी तेज़ी से उतरता। उसका यह दौड़ने का क्रम तब तक चलता, जब तक मैं उसे पकड़ने के लिए न उठती।

शब्दार्थ

रक्त	=	खून
पेन्सिलिन	=	घाव पर लगाने वाली एक प्रकार की दवाई
ढुलक जाना	=	गिर जाना
उपचार	=	इलाज
उपरांत	=	बाद
आश्वस्त	=	चैन में आना
मास	=	महीना
स्निग्ध	=	चिकना
झब्बेदार	=	ख़ूब बालों वाली
विस्मित	=	आश्चर्यचकित
स्वयं	=	खुद
कार्यकलाप	=	गतिविधि
मनका	=	मोती
तीव्र	=	तेज़
उपाय	=	तरीका

शब्दार्थ

लघुगात = छोटा-सा शरीर
अद्‌भुत = आश्चर्यजनक
मुक्त = खुला, आज़ाद, स्वतंत्र
नित्य का क्रम = रोज़ की बात
उत्पन्न = पैदा
चुन्नट – सलवटें।

कभी मैं गिल्लू को पकड़ कर एक लंबे लिफ़ाफ़े में इस प्रकार रख देती कि उसके अगले दो पंजों और सिर के अतिरिक्त सारा लघुगात लिफ़ाफ़े के भीतर बंद रहता। इस अद्‌भुत स्थिति में कभी-कभी घंटों मेज़ पर दीवार के सहारे खड़ा रहकर वह अपनी चमकीली आँखों से मेरा कार्यकलाप देखा करता।

भूख लगने पर चिक्-चिक् करके मानो वह मुझे सूचना देता और काजू या बिस्कुट मिल जाने पर उसी स्थिति में लिफ़ाफ़े से बाहर वाले पंजों से पकड़ कर उसे कुतरता रहता।

फिर गिल्लू के जीवन का प्रथम बसंत आया। नीम-चमेली की गंध मेरे कमरे में हौले-हौले आने लगी। बाहर की गिलहरियाँ खिड़की की जाली के पास आकर चिक्-चिक् करके न जाने क्या कहने लगीं।

गिल्लू को जाली के पास बैठकर अपनेपन से बाहर झाँकते देख कर मुझे लगा कि इसे मुक्त करना आवश्यक है। मैंने कीलें निकालकर जाली का एक कोना खोल दिया और इस मार्ग से गिल्लू ने बाहर जाने पर सचमुच ही मुक्ति की साँस ली। इतने छोटे जीव को घर में पले कुत्ते-बिल्लियों से बचाना भी एक समस्या ही थी।

आवश्यक कागज़-पत्रों के कारण मेरे बाहर जाने पर कमरा बंद ही रहता है। मेरे कॉलेज से लौटने पर जैसे ही कमरा खोला गया और मैंने भीतर पैर रखा, वैसे ही गिल्लू अपने जाली के द्वार से भीतर आकर मेरे पैर से सिर और सिर से पैर तक दौड़ लगाने लगा। तब से यह नित्य का क्रम हो गया।

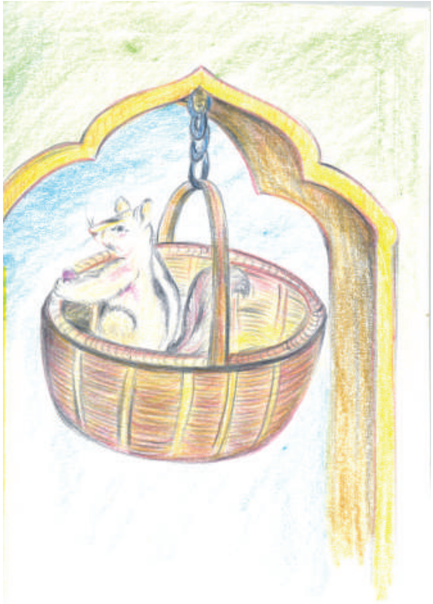

चित्र 3.4

मेरे कमरे से बाहर जाने पर वह भी खिड़की की खुली जाली की राह बाहर चला जाता और दिन भर गिलहरियों के झुंड का नेता बना, हर डाल पर उछलता-कूदता रहता और ठीक चार बजे वह खिड़की से भीतर आकर अपने झूले में झूलने लगता।

मुझे चौंकाने की इच्छा उसमें न जाने कब और कैसे उत्पन्न हो गई थी। कभी फूलदान के फूलों में छिप जाता, कभी परदे की चुन्नट में और कभी सोनजुही की पत्तियों में।

मेरे पास बहुत से पशु-पक्षी हैं और उनका मुझसे लगाव भी कम नहीं है, परंतु उनमें से किसी को मेरे साथ मेरी थाली में खाने की हिम्मत हुई है, ऐसा मुझे स्मरण नहीं आता।

गिल्लू इनमें अपवाद था। मैं जैसे ही खाने के कमरे में पहुँचती, वह खिड़की से निकलकर आँगन की दीवार, बरामदा पार करके मेज़ पर पहुँच जाता और मेरी थाली में बैठ जाना

चाहता। बड़ी कठिनाई से मैंने उसे थाली के पास बैठना सिखाया, जहाँ बैठकर वह मेरी थाली में से एक-एक चावल उठाकर बड़ी सफ़ाई से खाता रहता। काजू उसका प्रिय खाद्य था और कई दिन काजू न मिलने पर वह अन्य खाने की चीज़ें या तो लेना बंद कर देता था या झूले से नीचे फेंक देता था।

चित्र 3.5

उसी बीच मुझे मोटर-दुर्घटना में आहत होकर कुछ दिन अस्पताल में रहना पड़ा। उन दिनों जब मेरे कमरे का दरवाज़ा खोला जाता, गिल्लू अपने झूले से उतर कर दौड़ता और फिर किसी दूसरे को देख कर तेज़ी से अपने घोंसले में जा बैठता। सब उसे काजू दे जाते, परंतु अस्पताल से लौटकर जब मैंने उसके झूले की सफ़ाई की तो उसमें काजू भरे मिले, जिनसे ज्ञात होता था कि वह उन दिनों अपना प्रिय खाद्य कितना कम खाता रहा।

मेरी अस्वस्थता में वह तकिये पर सिरहाने बैठ कर अपने नन्हे-नन्हे पंजों से मेरे सिर और बालों को इतने हौले-हौले सहलाता रहता कि उसका हटना एक परिचारिका के हटने के समान लगता।

गर्मियों में जब मैं दोपहर में काम करती रहती तो गिल्लू न बाहर जाता, न अपने झूले में बैठता। उसने मेरे निकट रहने के साथ गर्मी से बचने का सर्वथा नया उपाय खोज निकाला था। वह मेरे पास रखी सुराही पर लेट जाता और इस प्रकार समीप भी रहता और ठंडक में भी रहता।

गिलहरियों के जीवन की अवधि दो वर्ष से अधिक नहीं होती, अतः गिल्लू की जीवन-यात्रा का अंत आ ही गया। दिन भर उसने न कुछ खाया और न बाहर गया। रात में अंत की यातना में भी वह मेरी वही उँगली पकड़कर हाथ से चिपक गया, जिसे उसने अपने बचपन की मरणासन्न स्थिति में पकड़ा था।

चित्र 3.6

पंजे इतने ठंडे हो रहे थे कि मैंने जाग कर हीटर जलाया और उसे उष्णता देने का प्रयत्न किया। परंतु प्रभात की प्रथम किरण के स्पर्श के साथ ही वह किसी और जीवन में जागने के लिए सो गया।

टिप्पणी

शब्दार्थ

स्मरण	=	याद
अपवाद	=	नियम से भिन्न
खाद्य	=	खाने की वस्तु, खाने योग्य पदार्थ
दुर्घटना	=	बुरी घटना
आहत	=	घायल
अस्वस्थता	=	तबियत ठीक न होना
परिचारिका	=	सेवा करने वाली स्त्री
यातना	–	कष्ट, दुख।
मरणासन्न	–	मरने के नजदीक
उष्णता	–	गर्मी, ताप
प्रभात	–	प्रातःकाल।

उसका झूला उतार कर रख दिया गया और खिड़की की जाली बंद कर दी गई है, परंतु गिलहरियों की नयी पीढ़ी जाली के उस पार चिक-चिक करती ही रहती है और सोनजुही पर बसंत आता ही रहता है।

सोनजुही की लता के नीचे गिल्लू को समाधि दी गई है– इसलिए भी कि उसे वह लता सबसे अधिक प्रिय थी– इसलिए भी कि उस लघुगात का, किसी वासंती दिन, जुही के पीताभ छोटे फूल में खिल जाने का विश्वास मुझे संतोष देता है।

शब्दार्थ

स्पर्श – छूना।
समाधि – किसी की याद में उसके अंत्येष्टि-स्थल पर किया गया निर्माण।
पीताभ – पीली आभा वाले।

बोध प्रश्न

सर्वाधिक उपयुक्त विकल्प चुनकर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए:

1. 'लघु प्राण' शब्द का प्रयोग किसके लिए किया गया है?

   (क) चिड़िया ☐ (ख) सोनजुही ☐
   (ग) गिल्लू ☐ (घ) कली ☐

2. लेखिका गिल्लू को अपने कमरे में क्यों लाई?

   (क) अन्य पशु-पक्षियों से मिलाने के लिए ☐
   (ख) उसका जीवन बचाने के लिए ☐
   (ग) अपने घर के लोगों को दिखाने के लिए ☐
   (घ) उसे पालतू बनाने के लिए ☐

3. लेखिका ने खिड़की की जाली का एक कोना खोल दिया ताकि–

   (क) बाहर की गिलहरियाँ अंदर आ सकें। ☐
   (ख) बाहर से ठंडी हवा आ सके। ☐
   (ग) गिल्लू आज़ादी से अंदर-बाहर आ-जा सके। ☐
   (घ) नीम-चमेली की गंध कमरे में आ सके। ☐

4. लेखिका के अस्वस्थ होने पर गिल्लू के स्नेह-भाव के विषय में दिए गए विकल्पों के आगे सही (√) और गलत (X) का निशान लगाइए :

   (क) वह लेखिका के साथ उसकी थाली में खाता था। ☐
   (ख) वह लेखिका की अनुपस्थिति में काजू नहीं खाता था। ☐
   (ग) वह लेखिका के बालों को अपने पंजों से सहलाता था। ☐
   (घ) वह लेखिका के पास रखी सुराही पर लेट जाता था। ☐

टिप्पणी

3.2 आइए समझें

आपने ध्यान दिया होगा कि इस पाठ में गिल्लू के पूरे जीवन की कुछ ऐसी महत्त्वपूर्ण बातों का संकेतों में उल्लेख किया गया है, जिनसे उसकी एक तस्वीर हमारे सामने उभर आती है। जी हाँ, ठीक उसी तरह, जैसे भूगोल विषय में आप कुछ लाइनों के माध्यम से यह जान जाते हैं कि यह भारत है या श्रीलंका या नेपाल या दिल्ली या उत्तर प्रदेश। इसे आप ख़ाका, स्केच या रेखाचित्र कहते हैं। ठीक उसी तरह जब पूरे विस्तृत विवरण की जगह कुछ ख़ास-ख़ास बातों का उल्लेख करके लेखक किसी के विषय में लिखते हैं, तो उसे साहित्य में 'रेखाचित्र' कहते हैं। जब इस रेखाचित्र में आत्मीय संबंध भी झलकने लगे तो वह 'संस्मरण' विधा के नज़दीक पहुँचने लगता है। इसीलिए, ऐसे रेखाचित्र को 'संस्मरणात्मक रेखाचित्र' कहते हैं। 'गिल्लू' एक संस्मरणात्मक रेखाचित्र है।

आपने प्रायः पेड़ों पर, घर के आस-पास या पार्क में गिलहरियों को उछलते-कूदते देखा होगा। आप इस तरह के प्राणियों को अक्सर देखते हैं। उनके भीतर भी कुछ संवेदनाएँ होती हैं। उनके साथ हमारा जैसा व्यवहार होता है, उसी के अनुसार वे भी हमारे साथ व्यवहार करते हैं।

प्रस्तुत रेखाचित्र 'गिल्लू' की लेखिका महादेवी वर्मा हैं। महादेवी वर्मा को पशु-पक्षियों से बहुत लगाव था। वे उन्हें अपने परिवार का अंग मानती थीं और उनके साथ आत्मीयता का अनुभव करती थीं। पशु-पक्षियों पर उनके कई रेखाचित्र हैं, जैसे– 'गौरा', जो एक गाय के बारे में है; 'नीलकंठ', जो एक मोर के बारे में है और 'सोना', जो एक हिरन पर है।

आइए, देखें कि लेखिका ने इस लघुप्राण जीव अर्थात् छोटे-से प्राणी गिल्लू की संवेदनशीलता को किस प्रकार हमारे सामने उभारा है। सुविधा के लिए हम इस पाठ को पाँच अंशों में बाँटकर पढ़ते हैं।

3.2.1 अंश-1

आइए, इस पाठ के पहले अंश– "सोनजुही में आज .... इधर-उधर देखने लगा।" को एक बार फिर ध्यानपूर्वक पढ़ लें।

रेखाचित्र के आरंभ में लेखिका अपने बगीचे में ताज़ा खिली हुई सोनजुही की पीली कली को देखकर पुरानी यादों में खो जाती है। सामान्यतः ऐसा होता है कि किसी वस्तु या स्थान के साथ हमारी यादें जुड़ी होती हैं और जब हम उन्हें देखते हैं तो अनायास ही वे यादें ताज़ा हो जाती हैं और हम अतीत में खो जाते हैं। वे यादें हमारे स्मृति-पटल

पर सिनेमा की तरह उभरने लगती हैं। हम उनमें ऐसे डूब जाते हैं कि उस समय के सुख-दुख के भाव हमें आज भी घेरने लगते हैं। यहाँ लेखिका के साथ भी ऐसा ही हुआ है।

एक समय था, जब लेखिका को सोनजुही बहुत आकर्षक और सुंदर लगती थी, किंतु गिल्लू उसके मन पर ऐसी अमिट छाप छोड़ जाता है कि उसे भुला पाना उसके लिए नामुमकिन हो जाता है। उसकी याद सोनजुही से जुड़ी है, क्योंकि वह छोटा-सा जीव उसी की छाया में बैठा करता था और नज़दीक आते ही लेखिका के कंधे पर कूद कर उसे चौंका देता था। लेखिका गिल्लू की स्मृति में खो जाती है। उसे लगता है कि उस सुनहरी कली के रूप में वह लघुप्राण (गिल्लू) ही उन्हें चौंकाने के लिए आया है। निहायत संवेदनशील गिल्लू की याद से लेखिका का मन भर आता है।

लेखिका को पहली बार गिल्लू निरीह स्थिति में दिखाई दिया था। वह शायद अपने घोंसले से गिरकर घायल हो गया था और कौवे उस पर अपनी चोंचों से प्रहार कर रहे थे। लेखिका ने कौवों की प्रवृत्ति का उल्लेख करने के लिए 'छुआ-छुऔवल' शब्द का प्रयोग किया है। बच्चे आपस में एक-दूसरे को छूने का खेल खेलते हैं, किंतु यहाँ इस शब्द का प्रयोग व्यंग्यात्मक रूप में किया गया है। वास्तव में, कौवे गिल्लू को चोंच मार-मार कर खाने का प्रयास कर रहे थे। वह तो संयोग था कि लेखिका की दृष्टि पड़ी और गिल्लू को बचाया जा सका। यहाँ लेखिका ने कौवों के स्वभाव का वर्णन किया है। वे बताती हैं कि कौवा एक विचित्र प्राणी है। विचित्र इसलिए कि यह जितना तिरस्कार पाता है, उतना ही सम्मान भी पाता है। हम जानते हैं कि कौवा अपने काले रंग व कर्कश आवाज़ के लिए अपमानित होता है, लेकिन पितर पक्ष में उसे अपनेपन के साथ खाना भी खिलाया जाता है।

भारतीय केलेन्डर के अनुसार भी वर्ष में बारह महीने होते हैं—

1. चैत्र – चैत
2. वैशाख – बैशाख
3. ज्येष्ठ – जेठ
4. आषाढ – असाढ़
5. श्रावण – सावन
6. भाद्रपद – भादों
7. अश्विन – क्वार
8. कार्तिक – कातिक
9. मार्गशीर्ष – अगहन
10. पौष – पूस
11. माघ – माह
12. फाल्गुन – फागुन

हिंदू धर्म में देवी-देवताओं के साथ-साथ अपने पूर्वजों के प्रति भी देवत्व का भाव पाया जाता है। इसीलिए वर्ष में एक बार उनका श्राद्ध-कर्म किया जाता है। भादों के महीने की पूर्णिमा से लेकर क्वार की अमावस्या तक के सोलह दिन पितर पक्ष के रूप में मनाये जाते हैं। 'पितर' यानी परिवार के वे सदस्य, जिनकी मृत्यु हो चुकी है और 'पक्ष' यानी पूर्णिमा से अमावस्या तथा आमावस्या से पूर्णिमा तक के पंद्रह-पंद्रह दिन (मगर श्राद्ध के संदर्भ में सोलह दिन)।

परिवार के दिवंगत सदस्यों की मृत्यु की तिथि के दिन उनका 'श्राद्ध किया जाता है। इस दिन उनकी स्मृति में ब्राह्मणों को भोज कराया जाता है। ऐसी धारणा है कि पितर कौवे का रूप धरकर घर पर आते हैं, अतः सबसे पहले उनके लिए भोजन निकाला जाता है।

लेखिका ने यहाँ कौवे के लिए 'काकभुशुंडि' शब्द का प्रयोग किया है। काकभुशुंडि एक ऋषि थे, जो कौवे थे; जिनकी बुद्धि और ज्ञान की प्रशंसा भारतीय परंपरा में अक्सर की जाती है। कहा जाता है कि रामकथा को कहने वाले चार वक्ता थे और उसे सुनने

वाले भी चार थे। इन वक्ताओं में से एक थे काकभुशुंडि, जिन्होंने गरुड़ को रामकथा सुनाई।

टिप्पणी

(i) पाठ को पढ़ते हुए आपके दिमाग में यह ज़रूर आया होगा कि 'गिलहरी' तो स्त्रीलिंग शब्द है, पर यहाँ उसके लिए पुल्लिंग क्रियाओं का प्रयोग किया गया है। ऐसा क्यों है, आइए इसे जानते हैं :

प्रायः पशु-पक्षियों के नाम पुल्लिंग होते हैं और उनके स्त्रीलिंग बनाए जाते हैं, जैसे– शेर, घोड़ा, कुत्ता। इनके स्त्रीलिंग हैं– शेरनी, घोड़ी, कुतिया।

कुछ नाम अपने मूल रूप में स्त्रीलिंग होते हैं, जैसे– बिल्ली का सामान्यतः स्त्रीलिंग रूप में प्रयोग होता है और इसके पुल्लिंग रूप के लिए 'बिलौटा' शब्द का प्रयोग किया जाता है। किंतु, इस तरह के अन्य शब्दों के पुल्लिंग के लिए 'नर' शब्द का प्रयोग किया जाता है; जैसे– नर चींटी। 'चींटी' का पुल्लिंग 'चींटा' नहीं है, वह एक अलग प्रजाति है, क्योंकि वह आकार-प्रकार और संभवतः स्वभाव में भी चींटी से भिन्न होता है।

इसी प्रकार 'भेड़िया' पुल्लिंग है और उसका स्त्रीलिंग बनाने के लिए मादा भेड़िया कर लिया जाता है। मूल नाम भेड़िया है, केवल उसके लिंग में परिवर्तन के लिए मादा शब्द जोड़ा गया है।

प्रायः ईकारांत ('ई' की मात्रा पर समाप्त होने वाले) शब्द स्त्रीलिंग होते हैं, किंतु कुछ पुल्लिंग भी होते हैं जैसे– हाथी, माली, इत्यादि।

गिलहरी मूलतः स्त्रीलिंग शब्द है, लेकिन इनमें नर और मादा दोनों होते हैं। महादेवी वर्मा ने गिल्लू को पुल्लिंग रूप में चित्रित किया है; क्योंकि वह नर गिलहरी है।

(ii) लेखिका ने 'मिट्टी होकर मिल गया होगा' वाक्यांश का प्रयोग एक ख़ास संदर्भ में किया है। एक निश्चित अवधि के पश्चात् शरीर का अंत होता है। माना जाता है कि हमारे शरीर का निर्माण करने वाले तत्त्व पाँच हैं– धरती (मिट्टी), जल, अग्नि, आकाश और वायु। मरने के पश्चात् हमारा शरीर इन्हीं में विलीन हो जाता है।

जब कोई मृत्यु को प्राप्त होता है तो उसके अंतिम संस्कार के अनेक तरीके हैं। इनमें से दो तरीके हैं– जलाना और दफ़न करना। पशुओं को जलाने की प्रथा हमारे समाज में नहीं है। उन्हें यूँ ही कहीं पर डाल दिया जाता है और उनका शरीर धीरे-धीरे नष्ट हो जाता है। यदि हम किसी पशु को बहुत प्यार करते हैं, तो उसे किसी स्थान पर मिट्टी में गाड़ देते हैं। गिल्लू को भी सोनजुही की जड़ में

दफ़नाया गया था, इसीलिए लेखिका को सोनजुही की ताज़ा खिली कली देखकर गिल्लू की याद आ गई।

(iii) हिन्दी के मूल शब्दों में उपसर्ग और प्रत्यय लगाकर कुछ नये शब्द बनाये जाते हैं। उदाहरण के लिए पाठ में आए समादृत–अनादृत शब्दों को लिया जा सकता है। समादृत में 'आदृत' मूल शब्द है और उसमे 'सम्' उपसर्ग लगाकर 'समादृत' शब्द बनाया गया। इसी 'आदृत' में 'अन्' उपसर्ग लगा दने से अनादृत शब्द बन गया, जो समादृत का ठीक उल्टा है।

(iv) पाठ में 'पुराण' शब्द का प्रयोग किया गया है। 'पुराण' भारतीय संस्कृति के उन ग्रंथों को कहा जाता है, जिनमें अनेक प्रकार की आख्यानमूलक रचनाएँ हैं। किंतु पुराणों में केवल कहानियाँ ही नहीं हैं, बल्कि उनमें जीवन के विभिन्न पक्षों को लिया गया है।

क्रियाकलाप-3.1

मान लीजिए आप सड़क से गुज़र रहे हैं। सड़क पर आपको एक घायल व्यक्ति पड़ा दिखता है। आपको लगता है कि उसे अस्पताल पहुँचाने की ज़रूरत है। ऐसी स्थिति में आप क्या करेंगे और क्यों? निम्नलिखित विकल्पों में से एक चुनिए और कारण सहित टिप्पणी कीजिए–

पुलिस को सूचना देंगे,एम्बुलेंस बुलाएँगे, भीड़ में से कुछ लोगों को साथ लेकर उसे अस्पताल ले जाएँगे इत्यादि।

....

....

....

3.2.2 अंश-2

आइए पाठ के 'तीन-चार मास में .... उसे कुतरता रहता।' अंश को एक बार पुनः पढ़ लेते हैं।

इससे पहले अंश में हमने देखा कि उपचार के बाद गिल्लू बच गया है। वह अपने सुंदर रूप से सबको चकित कर देता है। अब उसका नामकरण किया गया। उसकी पूरी प्रजाति को गिलहरी कहा जाता है। इसी साम्य पर लेखिका ने उसका नाम गिल्लू रख दिया। इस प्रकार जो नाम जातिवाचक संज्ञा के रूप में था, वह अब एक प्राणी विशेष के नाम के कारण व्यक्तिवाचक संज्ञा के रूप में बदल गया।

लेखिका ने गिल्लू के यौवन का चित्रण संकेत रूप में किया है। वास्तव में, जीवन की अवधि निश्चित होती है– पहले बचपन आता है, फिर युवावस्था, और उसके बाद बुढ़ापा। गिल्लू के जीवन में भी किशोरावस्था और युवावस्था आती है और उसके व्यक्तित्व में एकदम से परिवर्तन दिखाई देता है। यह शरीर-विज्ञान की स्वाभाविक प्रक्रिया है और

इस प्रकार का शारीरिक परिवर्तन पशु-पक्षियों की भाँति मनुष्य में भी आता है। लड़के-लड़कियों में भी यह शारीरिक परिवर्तन आता है और उस स्थिति में उनके सोचने-समझने के तरीके से लेकर व्यक्तित्व के विभिन्न पहलुओं में परिवर्तन आता है। उनमें उन्मुक्तता एवं स्वायत्तता के साथ-साथ गंभीरता और ज़िम्मेदारी का भी बोध होता है।

इस अंश में लेखिका ने इस बात की ओर इशारा किया है कि हमें परोपकारी होना चाहिए और हमारा हृदय विशाल होना चाहिए। परदुखकातरता (दूसरे के दुख से दुखी होना) एक बहुत बड़ा मानवीय गुण है। पशुओं के प्रति दया, सहानुभूति और मैत्री का भाव रखने से वे भी हमारी रक्षा और सुरक्षा का ध्यान रखते हैं। आपने अक्सर देखा होगा कि जब हम किसी पशु को प्यार के साथ रखते हैं, तो वह हमें अपना समझने लगता है और हमारे ऊपर किसी प्रकार की विपत्ति आती है, तो वह भी हमारी बेचैनी में बेचैन और दुख में दुखी में होता है। उदाहरण के तौर पर देखें तो हमारे अधिकांश साहित्य में इस तरह का चित्रण मिलता है, जैसा कि महादेवी वर्मा ने गिल्लू के संदर्भ में किया है। कालिदास के नाटक 'अभिज्ञान शाकुंतलम्' में जब शकुंतला कण्व ऋषि के आश्रम से विदा होती है, तो उसके वियोग में पशु-पक्षी सभी दुखी होते हैं और खाना तक नहीं खाते। इसे ही समानुभूति कहते हैं, जब किसी और का दुख हमारा दुख बन जाता है। गिल्लू का दुख महादेवी का दुख बन जाता है और जब महादेवी अस्वस्थ होती हैं, उनके दुख में स्वयं गिल्लू खाना नहीं खाता– सारे काजू उसके झूले में यूँ ही ज्यों-के-त्यों मिल जाते हैं। इसका उल्लेख हमें पाठ में आगे मिलता है।

आपने देखा होगा कि कुछ पशु या पक्षी अगर आपसे घुल-मिल जाते हैं, तो अपने प्रेम की अभिव्यक्ति कर प्रभावित करने की कोशिश करते हैं। लेखिका के साथ भी ऐसा ही होता है। गिल्लू उससे निकटता प्राप्त करने के लिए उछल-कूद करता है। कभी वह तेज़ी से परदे पर चढ़ जाता है, कभी लिफ़ाफ़े में बंद हो जाता है। यह क्रिया हमें भी गिल्लू के प्रति सहृदय तथा आत्मीय बना देती है। ऐसा लगता है, जैसे हम किसी बच्चे के साथ खेल-कूद कर रहे हों और वह अपनी मोहक अदाओं से हमें प्रभावित करने का प्रयास कर रहा हो। इस अंश में लेखिका ने उसके नटखटपन का भी सहज चित्रण किया है, जो अत्यंत आकर्षक लगता है।

इस अंश में लेखिका ने यह भी संकेत किया है कि पशु भी अपनी भाषा में अपने दुख-सुख का आभास कराते हैं। हम उनकी भाषा को उनके संकेतों के आधार पर अथवा उनके हाव-भाव के द्वारा समझ सकते हैं। वे या तो किसी प्रकार की आवाज़ निकालते हैं अथवा क्रियाओं के माध्यम से संकेत करते हैं। गिल्लू के चिक-चिक करके अपनी भूख मिटाने की इच्छा ज़ाहिर करने की प्रक्रिया का लेखिका ने बड़ी सजीवता और सहजता के साथ चित्रण किया है।

इस अंश में लेखिका ने गिल्लू के तीन महीने के हो जाने पर उसमें आने वाले शारीरिक और व्यवहारगत परिवर्तन का बड़ा सुंदर और सांकेतिक चित्रण किया है। आप जानते

ही होंगे कि प्राणीमात्र बचपन, जवानी और बुढ़ापे के सोपानों से गुज़रता है। जिस प्रजाति की जितनी जीवन-अवधि होती है, उसी के हिसाब से उसके जीवन में इन तीनों की अवधि भी निर्धारित होती है। गिलहरियों का कुल जीवन दो वर्ष का होने के कारण उनमें तीन-चार माह में जवानी के लक्षण आने लगते हैं।

गिल्लू के रोओं का चिकना होना, पूँछ का झब्बेदार होना और आँखों की चंचलता उसमें आए शारीरिक परिवर्तन हैं।

लेखिका ने गिल्लू के कमरे के बाहर और भीतर झाँकने का ज़िक्र किया है, जिसके द्वारा वे संकेत करना चाहती हैं कि गिल्लू इस संसार की विचित्र संरचना (बनावट) पर सोच-विचार करने लगा है। इस उम्र में आकर सभी के भीतर बदलाव की स्थिति आती है— पशु-पक्षियों में भी और मनुष्य में भी। किशोर-किशोरियों के मन में अनेक तरह की जिज्ञासाएँ होती हैं और वे उनका समाधान करने का प्रयास करते हैं। गिल्लू का लेखिका को चौंकाने का प्रयास करना, पर्दे पर सर्र से चढ़ना-उतरना आदि इसी प्रकार की क्रियाएँ हैं। अपनी समझदारी को वह जिस रूप में अभिव्यक्त करता था, वह लोगों को आश्चर्य में डालने वाला था। वह लेखिका के साथ इस प्रकार से व्यवहार करता था, जैसे कोई मनुष्य करता है। इससे इस बात का भी पता चलता है कि पशु-पक्षियों में भी मनुष्य की भाँति महसूस करने की शक्ति होती है।

पाठगत प्रश्न-3.1

सर्वाधिक उपयुक्त विकल्प चुनकर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए:

1. 'गिल्लू' रेखाचित्र के साथ-साथ और किस विधा के नज़दीक है?

   (क) लघु कथा ☐ (ख) संस्मरण ☐

   (ग) डायरी ☐ (घ) रिपोर्ताज ☐

2. 'कौवे गिल्लू के साथ 'छुआ-छुऔवल' कर रहे थे'— इस वाक्य में 'छुआ-छुऔवल' के प्रयोग में है—

   (क) मुहावरा ☐ (ख) प्रतीक ☐

   (ग) व्यंग्य ☐ (च) लोकोक्ति ☐

3. सही विकल्प चुनकर रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए:

   (क) इस रेखाचित्र में 'गिल्लू' शब्द का प्रयोग .... संज्ञा है। (व्यक्तिवाचक/जातिवाचक)

(ख) गिल्लू का कमरे के भीतर और बाहर झाँकना उसके .... परिवर्तन को सूचित करता है। (शारीरिक/व्यवहारगत)

(ग) गिलहरियों में किशोरावस्था का आगमन .... में होता है। (तीन माह/दो वर्ष)

(घ) .... उपसर्ग लगाने से शब्द का अर्थ उल्टा हो जाता है। (सम/अन्)

4. महादेवी वर्मा के रेखाचित्रों को ध्यान में रखते हुए मिलान करके सही युग्म बनाइए :

नीलकंठ	हिरन
गिल्लू	मोर
गौरा	गिलहरी
सोना	गाय

3.2.3 अंश-3

'फिर गिल्लू के जीवन का .... सोनजुही की पत्तियों में आइए' तक के अंश को एक बार फिर पढ़ते हैं।

लेखिका ने गिल्लू के प्रथम बसंत की बात की है। जीवन का पहला बसंत प्रतीकात्मक प्रयोग है। हमारा जीवन बहुत कुछ ऋतुओं से भी जुड़ा हुआ है। आपने अक्सर महसूस किया होगा कि गर्मी, सर्दी और बरसात के मौसम का हम पर अलग–अलग रूपों में प्रभाव पड़ता है। इसी प्रकार, बसंत ऋतु का हमारे जीवन में अलग ही महत्व है। यह ऋतु हमारे जीवन में उल्लास भर देती है।

बसंत ऋतु प्रकृति और मानव-जगत के नवीन विकास की प्रेरक है। आपने देखा होगा कि बसंत में पेड़-पौधों और लताओं में नवीन कोंपलें उग आती हैं। उनमें फूल आते हैं। फूलों के पराग कण, दरअसल, उनके बीज होते हैं, जिनसे उस तरह के फूलों के नए पौधे विकसित होते हैं। कुछ वृक्षों-लताओं में ये फूल फल में परिवर्तित हो जाते हैं। फल भी अपने भीतर बीजों को छिपाए होते हैं। तो इस तरह, बसंत प्रकृति की संतति-परंपरा को विकसित करने वाली ऋतु है। इसका प्रभाव प्राणी-जगत, विशेषकर मनुष्य पर भी पड़ता है। इस ऋतु में स्त्री-पुरुष का परस्पर आकर्षण बढ़ जाता है।

लेखिका ने गिल्लू के माध्यम से पशुओं के भीतर पनपने वाले उस मूल भाव की ओर संकेत किया है, जब गिल्लू बड़ा होकर आज़ाद जीवन बिताने की इच्छा रखने लगता। उम्र का यह पड़ाव मानव-जगत को ही नहीं, पशु-जगत को भी आज़ादी की ओर प्रेरित करता है। युवावस्था प्राप्त करने वाला गिल्लू अब जाली से बाहर निकल कर मुक्ति के वातावरण में विचरण करना चाहता है।

एक वर्ष में छह ऋतुएँ होती हैं :

1. ग्रीष्म – गरमी
2. पावस – वर्षा
3. शरद – गुलाबी ठंड
4. शिशिर – तेज़ ठंड
5. हेमंत – पतझड़
6. बसंत – सर्दी का उतार और नयी कोंपलों-फूलों का मौसम

मुक्ति की आकांक्षा मनुष्य ही नहीं, समस्त प्राणी-जगत का मूल भाव है। संसार का कोई भी प्राणी बँधकर रहने में स्वाभाविक विकास नहीं कर पाता। आपने यह महसूस किया होगा कि आप जब किसी पालतू पशु को बाँध देते हैं या कमरे में बंद कर देते हैं, तो वह घुटन महसूस करने लगता है और उससे मुक्ति का प्रयास करता है। कई बार तो कुत्ते या कुछ बड़े पशु उस बंधन को तोड़ने के लिए आक्रामक भी हो जाते हैं। इसीलिए, लेखिका गिल्लू के भीतर उठने वाली मुक्ति की आकांक्षा की आहट पाते ही उसे जाली के बंधन से मुक्त कर देती है और गिल्लू अन्य गिलहरियों के साथ अपना अंतरंग संबंध स्थापित कर लेता है। किंतु, इस बीच भी वह लेखिका के स्नेह को भूल नहीं पाता और उसके कॉलेज से लौटने पर वह लेखिका के सिर से पैर तक दौड़-धूप करना नहीं छोड़ता। लेखिका ने इस अंश में यह संकेत किया है कि पशु-जगत के प्रति प्रेम का व्यवहार होने पर वे भी वैसा ही व्यवहार करते हैं और उसे अपने क्रिया-कलापों के माध्यम से व्यक्त करते हैं। यह सहज स्वभाव पशु-जगत अथवा मानवेतर प्राणियों में भी वैसा ही होता है, जैसा कि मानव-जगत में।

मुक्ति की भावना में प्राणी की पहचान भी छिपी होती है। मुक्ति मिलते ही उसके व्यक्तित्व के भीतर की चेतना जगने लगती है। लेखिका हमें गिल्लू के माध्यम से यह अहसास कराती है। आपने इस पाठ में पढ़ा है कि जैसे ही गिल्लू बंधन से मुक्त होता है, उसमें नेतृत्व की क्षमता आ जाती है। वह गिलहरी-समाज का नेता बन जाता है। उसमें आत्मविश्वास भर जाता है और इसे वह डाल-डाल पर उछल-कूद कर अभिव्यक्त करता है। इस प्रकार, लेखिका ने यहाँ बंधन और मुक्ति के अंतर को भी हमारे सामने स्पष्ट कर दिया है। इस अंश में लेखिका ने मुक्ति को ही उचित बतलाया है अर्थात् हमारी सार्थकता इस बात में है कि हम मुक्ति का वरण करें, न कि बंधन का; क्योंकि मुक्ति हमें स्वावलंबी बनाती है और बंधन परावलंबी। मनुष्य की सार्थकता भी मुक्त होने में है, लेकिन हमारी मुक्ति दूसरों की मुक्ति के साथ जुड़ी है; वह निरपेक्ष नहीं है। गिल्लू अपनी आज़ादी का तो उपयोग करता है, पर लेखिका के समय के सामंजस्य के साथ!

महादेवी ने गिल्लू को मुक्त करने की बात कही है। वे जाली खोलकर उसे मुक्त करती हैं, तो वह अपने समूह की गिलहरियों से मिलता है। उसके व्यक्तित्व में एक प्रकार का बदलाव आता है और उस बदलाव की अभिव्यक्ति वह विभिन्न रूपों में करता है। इस प्रकार का बदलाव पशु-पक्षियों में ही नहीं, मनुष्य में भी आता है। किशोर-किशोरियाँ समूह में रहकर अपनी भावनाओं को व्यक्त करना चाहते हैं और किसी प्रकार की रोक-टोक स्वीकार नहीं करना चाहते।

क्रियाकलाप-3.2

लेखिका ने गिल्लू की किशोरावस्था का और उसके कारण व्यवहार में परिवर्तन का चित्रण किया है। आप भी उम्र के इस दौर से गुज़र रहे होंगे या गुज़र चुके होंगे। किशोरावस्था में क्या-क्या शरीरगत और व्यवहारगत परिवर्तन होते हैं, लिखिए :

किशोरावस्था

शरीरगत परिवर्तन	व्यवहारगत परिवर्तन
1.	1.
2.	2.
3.	3.

3.2.4 अंश-4

आइए, पाठ के 'मेरे पास बहुत से पशु-पक्षी हैं ....ठंडक में भी रहता।' तक के अंश को एक बार फिर से पढ़ लेते हैं।

महादेवी वर्मा को अनेक प्रकार के पशु-पक्षियों को पालने का शौक था। लेखिका को न केवल शौक था, अपितु उनके प्रति अपार करुणा और स्नेह का भाव भी था। वे सभी के प्रति समान स्नेह का व्यवहार करती थीं। किंतु, गिल्लू उनके लाड़-प्यार का विशेष अधिकारी था। यही कारण था कि वह महादेवी वर्मा की भोजन की थाली में सीधे मुँह लगाकर खाना खाने लगता है। अन्य पशु-पक्षी ऐसा व्यवहार नहीं करते थे, इसीलिए गिल्लू एक अपवाद था। उसके विशिष्ट व्यवहार और क्रियाकलापों की वजह से लेखिका उसे खाने के लिए तो नहीं रोकती, पर उसे इस तरह का संस्कार प्रदान करना चाहती है, जिससे वह एक सभ्य और सुसंस्कृत जीव के रूप में व्यवहार करे। इसीलिए, लेखिका उसे धीरे-धीरे थाली में ही निकालकर खाना सिखाती है और वह उसी के अनुरूप चावल का एक-एक दाना उठाकर खाने लगता है। वह बहुत सफ़ाई से खाता है। एक दाना भी ज़मीन पर नहीं गिराता।

गिल्लू के खाने का अंदाज़ भी अलग था और उसकी रुचि भी विशिष्ट थी। वह खाने में काजू विशेष रूप से पसंद करता था। काजू न मिलने पर या तो वह बाकी चीज़ें खाता ही नहीं था या उन्हें अपने झूले से नीचे फेंक देता था। किशोरावस्था में आपने अक्सर महसूस किया होगा कि यदि किसी को उसकी रुचि की कोई चीज़ मिल जाती है, तो उससे उसे प्रसन्नता होती है। यदि जो चाहिए, वह नहीं मिलता, तो मन खिन्न हो जाता है। आपने गिल्लू के संदर्भ में भी देखा कि वह किस प्रकार काजू न मिलने पर नाराज़ होता था। नाराज़ होने की आदत केवल मनुष्यों में ही नहीं होती, पशु और पक्षियों में

भी दिखलाई पड़ती है। इस प्रकार, लेखिका ने यहाँ जीव-मनोविज्ञान का बहुत ही सुंदर चित्रण किया है।

पशुओं को शिष्टाचार का ज्ञान नहीं होता; क्योंकि उनकी दुनिया में यह सब नहीं है; किंतु लेखिका ने उसे शिष्टाचार सिखा कर उसे भी मानवीय व्यवहार से अवगत कराया। लेखिका ने यह भी संकेत किया है कि सामान्य शिष्टाचार का व्यवहार सबके लिए अपेक्षित है। किशोर-जीवन में उन्मुक्तता की आकांक्षा होती है, किंतु वह निरंकुश या असंयमित नहीं होनी चाहिए।

प्रेम ऐसा भाव है, जो हमें महान बनाता है। लेखिका की अस्वस्थता में गिल्लू का उनके बालों को हौले-हौले सहलाना प्रेम की उत्कृष्टता का अनुपम नमूना है। गिल्लू का यह सेवा-भाव हमें विस्मित करता है और उसे हम अपना आत्मीय पात्र मानने लगते हैं।

अभी तक तो आपने गिल्लू की रुचि-अरुचि के बारे में पढ़ा। आइए, अब देखें कि गिल्लू के जीवन में आगे किस तरह का बदलाव आता है। लेखिका ने मनुष्य और पशु के बीच विकसित होने वाली संवेदनशीलता और समानुभूति को बड़ी मार्मिकता के साथ चित्रित किया है। लेखिका को मोटर-दुर्घटना में चोट लग जाती है और कुछ दिनों के लिए उसे अस्पताल में रहना पड़ता है। इस बीच गिल्लू बहुत उदास और असहाय महसूस करता है, क्योंकि जो आत्मीयता एवं प्यार उसे लेखिका देती थी, वह किसी अन्य से नहीं मिलता। लेखिका का कमरा खुलने पर वह दौड़ता है, किंतु उसे न पाकर वह वापस अपने झूले पर जाकर बैठ जाता है। यहाँ तक कि लोग उसे काजू खाने के लिए देते हैं, जो उसके खाने की सबसे प्रिय वस्तु थी, पर वह उन्हें भी जस-का-तस छोड़ देता है। इस अंश में गिल्लू मानवता की उस ऊँचाई को छू लेता है, जो आज के समय में मनुष्य में भी शायद धीरे-धीरे कम हो रही है।

इस अंश के माध्यम से लेखिका (मनुष्य) और गिल्लू (पशु) के बीच पनपने वाले प्रेम की सुंदर अभिव्यक्ति हुई है। इस प्रकार के वर्णन से लेखिका ने पशु के भीतर ऐसी मानवीय संवेदना और ऊँचाई भर दी है, जिससे एक छोटा-सा जीव महानता का अधिकारी बन जाता है और हमारे दिल को छू जाता है। मनुष्य और मनुष्येतर प्राणी के बीच विकसित होने वाले प्रेम की इस रेखाचित्र में अद्‌भुत अभिव्यंजना हुई है। बीमारी के समय लेखिका के सिरहाने बैठकर अपने छोटे पंजों से उसके बालों और सिर को सहलाने की क्रिया गिल्लू के भीतर छिपे उस भाव को व्यक्त करती है, जिसमें दुख के समय मनुष्य और मनुष्येतर का भाव मिट जाता है। दोनों एक समान भाव-भूमि पर स्थित हो जाते हैं और दोनों का दुख एक जैसा हो जाता है। इसी प्रकार, गर्मियों में लेखिका की निकटता प्राप्त करने के लिए वह ऐसा अनोखा तरीका निकाल लेता है, जो अपनी संवेदना में हमें गुदगुदाता है। उसके प्रति हम सहज ही आकर्षित हो जाते हैं। वह हमारा बन जाता है और हम उसके। पशु-पक्षी अपनी समस्याओं का समाधान भी खुद ढूँढ लेते हैं। गिल्लू का सुराही के ऊपर लेट जाना इसी बात का प्रतीक है। वह गर्मी से राहत भी पा लेता है और लेखिका से निकटता भी।

टिप्पणी

पाठगत प्रश्न-3.2

सर्वाधिक उपयुक्त विकल्प चुनकर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए:

1. लेखिका ने गिल्लू के लिए 'अपवाद' शब्द का प्रयोग करके–
   - (क) उसके नटखटपन का मज़ाक उड़ाया है। ☐
   - (ख) उसके द्वारा पेड़-पौधों को नुकसान पहुँचाने का संकेत किया है। ☐
   - (ग) उसके क्रियाकलापों पर गुस्सा प्रकट किया है। ☐
   - (घ) अन्य पशु-पक्षियों से उसके क्रियाकलापों को अलग बताया है। ☐
2. लेखिका के प्रति गिल्लू की समानुभूति का पता किस बात से लगता है–
   - (क) कमरा खुलने पर दौड़कर आने, पर लेखिका को न पाकर वापस लौट जाने से ☐
   - (ख) किसी अन्य व्यक्ति द्वारा काजू देने पर प्रायः उन्हें न खाने से ☐
   - (ग) लेखिका के बालों को अपने नन्हे-नन्हे पंजों से सहलाने से ☐
   - (घ) लेखिका के पास सुराही पर लेट जाने का तरीका खोजने से ☐
3. मनुष्य की तरह गिल्लू भी अपनी समस्याओं का समाधान कर लेता था– किस घटना से यह पता चलता है?
   - (क) थाली में बैठकर खाने से ☐
   - (ख) सुराही पर सोने से ☐
   - (ग) लेखिका का सिर सहलाने से ☐
   - (घ) काजू कम खाने से ☐

3.2.5 अंश-5

आइए, अब हम इस पाठ के शेष अंश 'गिलहरियों के जीवन .... से .... विश्वास मुझे संतोष देता है।' अर्थात् अंतिम अंश को एक बार फिर पढ़ लेते हैं।

पिछले अंश में लेखिका ने गिल्लू के जीवन के विविध पक्षों का सुंदर चित्रण करते हुए उसके व्यक्तित्व के विभिन्न महत्त्वपूर्ण पहलुओं को रेखांकित किया है। पाठ के अंतिम अंश में लेखिका ने गिल्लू के जीवन की अंतिम अवस्था का ज़िक्र किया है। इस पाठांश में लेखिका के जीवानानुभव का हमें पता चलता है, जिसमें वह मानवेतर जगत के बारे में गहरी मानवीय दृष्टि का परिचय देती है। उसने इन प्राणियों के विविध क्रियाकलापों

के सुंदर चित्रण के साथ यह भी बताया है कि गिलहरी की कुल जीवन-अवधि दो वर्ष की होती है। लेखिका को यह आभास हो गया था कि अब गिल्लू की उम्र पूरी हो चुकी है और अब वह बूढ़ा ही नहीं, बल्कि मृत्यु के निकट पहुँच चुका है। गिल्लू के ठंडे पंजों की पकड़ से लेखिका को उसके विछोह अर्थात् विदा होने का आभास हो जाता है। उसने उसे ठंडक से बचाने के लिए हीटर जलाकर गरमाहट देने का प्रयास किया, किंतु वह तो अब जीवन की अंतिम साँस ले रहा था और प्रातःकाल मृत्यु को प्राप्त हो गया।

गिल्लू की जीवन-अवधि बहुत सीमित थी– कुल दो साल की। इसीलिए, जब उसके जीवन का अंत समय आया तो लेखिका के मन में उसके प्रति प्रेम ही नहीं, उसके बिछुड़ने का दर्द भी प्रकट हो उठा है। इस छोटे से जीवन में वह लेखिका को इतना प्रभावित करता है कि उसकी स्मृति उसके लिए अविस्मरणीय हो जाती है।

हम किसी की याद को यादगार बनाए रखने के लिए समाधि बनाते हैं। आपने राष्ट्रपिता महात्मा गांधी, पं. जवाहरलाल नेहरू, इंदिरा गाँधी आदि की या कोई अन्य समाधि देखी होगी। गिल्लू की याद में लेखिका ने सोनजुही की लता के बीच एक समाधि बनवाई, क्योंकि गिल्लू को सोनजुही की लता सबसे अधिक प्रिय थी।

उसकी मृत्यु के पश्चात् लेखिका ने उसका झूला उतरवा कर रखवा दिया और खिड़की की जाली भी बंद करवा दी, जिससे बाहर निकलकर वह अन्य गिलहरियों से मिलने-जुलने जाया करता था। इस अंश में लेखिका और गिल्लू के बीच आत्मीय भाव और वियोगजन्य उदासी का सुंदर चित्रण मिलता है। गिल्लू का दो वर्ष का साथ लेखिका के जीवन को इस कदर प्रभावित करता है कि वह उसके असहनीय वियोग से दुखी होती है। उसकी स्मृति को अपने मन में स्थायी बनाए रखने के लिए वह गिल्लू की समाधि वहीं बनवाती है, जहाँ वह छाया में छिपकर बैठता था और अचानक लेखिका के ऊपर कूदकर उसे चौंका देता था। अपने इस छोटे से जीवन में गिल्लू ने लेखिका के ऊपर ऐसी अमिट छाप छोड़ी कि वह उसकी स्मृति को कभी नहीं भुला सकी। जुही के उस पीले फूल में लेखिका को बार-बार ऐसा आभास होता है कि कहीं फूल के रूप में गिल्लू ही तो नहीं प्रकट हुआ? गिल्लू की यह अविस्मरणीय (कभी न भूलने वाली) याद उसकी स्मृति को हमेशा के लिए सजीव बना देती है– लगता है कि हमारी आँखों के सामने जीता-जागता गिल्लू उछल-कूद करते हुए हमें जीवन में सक्रिय रहने की प्रेरणा दे रहा है।

लेखिका ने गिल्लू की मृत्यु का भी बहुत ही मार्मिक वर्णन किया है। आमतौर पर हम अपने किसी बहुत ही प्रिय की मृत्यु के बाद यह नहीं कहते कि 'वह मर गया' या 'वह मर गयी'। सामान्य शिष्टाचार और सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य में भी हम उसके लिए इस प्रकार के शब्दों का प्रयोग करते हैं जैसे—'वे हमेशा हमेशा के लिए सो गये', 'भगवान को प्यारे हो गये', 'हमें छोड़कर चली गई', 'उनका स्वर्गवास हो गया'। लेखिका ने प्रेम के वशीभूत होकर ही गिल्लू के लिए यह वाक्य प्रयोग किया है—'वह किसी और जीवन में जागने के लिए सो गया।'

टिप्पणी

3.2.6 भाषा-शैली

आइए, अब हम इस रेखाचित्र की भाषा-शैली की विशेषताओं पर विचार करते हैं। इस रेखाचित्र के विषय में आपने यह महसूस किया होगा कि इसे पढ़ना शुरू करें तो पूरा पढ़ जाने की इच्छा होती है। क्या आपने सोचा कि ऐसा क्यों हुआ? वास्तव में इसका एक कारण यह है कि यह रेखाचित्र रोचक तो है ही, इसकी भाषा भी बहुत ही सरल, सरस और प्रवाहपूर्ण है। लेखिका ने इसमें आम बोलचाल की भाषा का प्रयोग किया है अर्थात्, हमारे दैनिक जीवन में जिन शब्दों का प्रयोग होता है, उन्हीं शब्दों का प्रयोग लेखिका ने किया है। इसमें तत्सम शब्दों का प्रयोग भी है, इसके अतिरिक्त आम बोलचाल में आने वाले अंग्रेज़ी एवं अन्य भाषाओं के कुछ शब्द भी हैं। ये सभी शब्द इस रेखाचित्र में सहज रूप में आ गए हैं। इसीलिए भाषा में स्पष्टता बनी रहती है।

तत्सम–	संधि, जीव, दृष्टि, संभवतः, सुलभ, आहार, लघुप्राण, निश्चेष्ट, रक्त, उपचार, उपरांत, आश्वस्त, मास, स्निग्ध आदि।
तद्भव–	मिट्टी, बत्ती, मुँह, घर, पत्तियाँ, उँगली, हाथ आदि।
देशज–	झब्बेदार, चौंकाना, काँव-काँव, चिक्-चिक्, झुंड आदि।
आगत–	पेन्सिलिन, गमला, दीवार, हौले, तेज़ी, लिफ़ाफ़ा, मेज़, बिस्कुट, जाली, कॉलेज, फूलदान, मोटर आदि।

इस रेखाचित्र की भाषा की दूसरी महत्त्वपूर्ण विशेषता है– सरसता। इसका मतलब यह है कि इसकी भाषा में ऐसी अभिव्यक्तियों और वाक्यांशों का प्रयोग किया गया है, जिससे पढ़ते समय आनंद की अनुभूति होती है। सरसता का गुण न होने के कारण हम किसी पाठ को थोड़ा-सा पढ़ने के बाद ही ऊब जाते हैं और उसे पढ़ने में अरुचि और आलस्य होने लगता है। लेकिन, 'गिल्लू' को पढ़ते समय हमें इस प्रकार का बोध बिल्कुल नहीं होता। हमारे समक्ष गिल्लू के रूप-रंग, व्यवहार और गतिविधियों के चित्र उभरने लगते हैं और हम जैसे खुद ही इन दृश्यों को देखने वाले बन जाते हैं। हमारा मन कभी लेखिका, तो कभी गिल्लू की अनुभूति के साथ जुड़ जाता है। हम उनके दुख से दुखी और उनकी प्रसन्नता में खुश होने लगते हैं।

इसकी भाषा की तीसरी महत्त्वपूर्ण विशेषता है– प्रवाहपूर्णता अथवा प्रवाहमयता। प्रवाहपूर्णता भाषा का वह गुण है, जो किसी रचना को हमें निरंतरता में पढ़ने के लिए बाध्य कर देता है। जैसे नदी में पानी का प्रवाह होता है, वैसे ही भाषा में भी प्रवाह होता है। यह प्रवाह शब्दों के चयन और उनके सटीक प्रयोग से आता है। महादेवी वर्मा ने भाषा के इन पक्षों का ध्यान रखा है, इसीलिए उनकी भाषा में प्रवाह आ गया है।

इस रेखाचित्र की शैली कुछ आत्मकथात्मक-सी है। वास्तव में, जब लेखक अपने अविस्मरणीय क्षणों के अनुभव को शब्दों के माध्यम से व्यक्त करता है, तो वह आत्मकथात्मक-सा ही होता है। आत्मकथात्मक शैली का मतलब होता है, अपने अनुभव

को इस प्रकार व्यक्त करना कि उसमें अपना व्यक्तित्व भी आ जाए। कई बार हम बात किसी और के बारे में करते हैं, किंतु उसके माध्यम से अपनी बात भी व्यक्त हो जाती है।

रेखाचित्र में लेखक शब्दों के माध्यम से किसी वस्तु या व्यक्ति का एक चित्र प्रस्तुत करता है और अपनी भाषा-शैली के कौशल से उसे जीवंत बना देता है। उसके शब्दों और वर्णन-शैली में इतनी कलात्मकता होती है कि हमारी आँखों के सामने उस वस्तु या व्यक्ति का समग्र चित्र उपस्थित हो जाता है। इस रेखाचित्र में भी लेखिका महादेवी वर्मा ने एक कुशल चित्रकार के समान छोटे-छोटे चित्रों से गिल्लू का चित्रण करते हुए उसके भीतर छिपी संवेदनाओं को प्रभावशाली रूप में व्यक्त किया है। इस रेखाचित्र में उनकी शैली भावात्मक और विचारात्मक दोनों रूपों में मिलती है। पशु-प्रवृत्ति के संबंध में उनकी निरीक्षण-दृष्टि सराहनीय है। गिल्लू जैसे उपेक्षित प्राणी के चित्र को अपने असीम स्नेह से रँगकर लेखिका ने इस प्रकार व्यक्त किया है कि हम उससे एक गहरी आत्मीयता का अनुभव करने लगते हैं।

आपने ध्यान दिया होगा कि इस रेखाचित्र की शुरुआत सोनजुही की लता में खिले पीले फूल से हुई है। इसे देखते हुए लेखिका को गिल्लू की याद आती है, जो अब दिवंगत हो चुका है। फिर वह उसके मिलने के दिन से मृत्यु तक की बातों का स्मरण करती है। अंत में पुनः उसी दृश्य से वर्तमान समय में लौटती है। इस प्रकार, पीछे लौटने के तरीके को साहित्य और फ़िल्म की भाषा में 'फ़्लैश बैक टेक्नीक' यानी 'पूर्वदीप्ति तकनीक' कहा जाता है। इस रेखाचित्र में इस तकनीक का बहुत सुंदर उपयोग किया गया है।

पाठगत प्रश्न-3.3

सर्वाधिक उपयुक्त विकल्प चुनकर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

1. 'गिल्लू' रेखाचित्र का अंत–

   (क) भावुकतापूर्ण है ☐ (ख) वैचारिक है ☐

   (ग) हताशाजन्य है ☐ (घ) उत्साहजनक है ☐

2. गिल्लू ने अपने अंतिम समय में लेखिका की उँगली क्यों पकड़ ली थी?

   (क) वह लेखिका से पुनः प्राण-रक्षा की अपेक्षा करता था। ☐

   (ख) वह लेखिका के प्रति कृतज्ञता का भाव प्रकट कर रहा था। ☐

   (ग) वह लेखिका के हाथ से काजू खाना चाहता था। ☐

   (घ) वह लेखिका की उँगली पकड़कर मरना चाहता था। ☐

टिप्पणी

3. 'गिल्लू' रेखाचित्र की भाषा में कौन-सा गुण नहीं है—

(क) सहजता (ख) सरसता

(ग) दृश्यात्मकता (घ) जटिलता

आपने क्या सीखा

- पशु-पक्षी हमारे जीवन का अभिन्न अंग हैं और उनके प्रति मानवीय करुणा का भाव रखना चाहिए।
- पशु-पक्षी हमारे मित्र और सहायक हो सकते हैं। यदि हम उनकी रक्षा करेंगे तो वे भी हमारे सुख-दुख में साथी होंगे। प्रेम और ममता का भाव पशु-पक्षियों या मानवेतर प्राणियों में भी उसी प्रकार होता है, जैसा कि मानव में।
- गिल्लू के व्यवहार से मन पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है।
- करुणा और समानुभूति के माध्यम से हम किसी को भी अपना बना सकते हैं, जैसे लेखिका गिल्लू को अपना बना लेती है।
- जिस प्रकार मानव में उम्र के अनुसार शारीरिक एवं व्यवहारगत परिवर्तन होते हैं वैसे ही अधिकांश मानवेतर प्राणियों में भी ये परिवर्तन होते हैं।
- इस रेखाचित्र की भाषा-शैली सहज, सरल और सरस है। भाषा प्रवाहपूर्ण है। भाषा में तत्सम, तद्भव, देशज तथा अन्य भाषाओं से प्राप्त (आगत) शब्दों का प्रयोग किया गया है।
- रेखाचित्र और संस्मरण आधुनिक गद्य-विधाएँ हैं। जहाँ रेखाचित्र में चरित्र की ख़ास-ख़ास बातों के चित्रण का विशेष महत्त्व होता है, वहीं संस्मरण में स्मृति महत्त्वपूर्ण हो जाती है। रेखाचित्र का संबंध विगत और वर्तमान से होता है, जबकि संस्मरण का विगत (बीते समय) से। रेखाचित्र की अपेक्षा संस्मरण में आत्मीयता अधिक होती है।
- महादेवी ऐसी विशिष्ट रचनाकार हैं, जिनके लेखन में अभावग्रस्त मनुष्य ही नहीं, पशु-पक्षियों तक को गहरी आत्मीयता मिली है।

योग्यता-विस्तार

- इस रेखाचित्र की लेखिका महादेवी वर्मा का जन्म सन् 1907 में फ़र्रुखाबाद (उ.प्र.) में हुआ। उन्होंने उच्च शिक्षा इलाहाबाद (उ.प्र.) से प्राप्त की और वे आजीवन इलाहाबाद में ही रहीं। वे छायावाद की महत्त्वपूर्ण कवयित्री थीं। 'यामा' उनकी

कविताओं का प्रमुख संकलन है, जिस पर उन्हें भारतीय ज्ञानपीठ पुरस्कार से सम्मानित किया गया था। 'दीपशिखा', 'नीरजा', 'नीहार' और 'रश्मि' उनके उल्लेखनीय काव्य–संग्रह हैं। कविता के साथ-साथ उन्होंने महत्त्वपूर्ण गद्य साहित्य भी लिखा। उनके संस्मरण और रेखाचित्र बहुत महत्त्व के हैं और कवयित्री के साथ-साथ एक रेखाचित्रकार और संस्मरण-लेखिका के रूप में भी उन्हें विशेष ख्याति प्राप्त है। 'अतीत के चलचित्र, 'पथ के साथी', 'स्मृति की रेखाएँ' तथा 'मेरा परिवार' उनके महत्त्वपूर्ण संस्मरण और रेखाचित्र संग्रह हैं। 'गिल्लू' उनके 'मेरा परिवार' नामक संग्रह से ही लिया गया है, जिसमें उन्होंने गिल्लू के अतिरिक्त नीलकंठ (मोर), सोना (हिरनी), दुर्मुख (खरगोश), गौरा (गाय), नीलू (कुत्ता), निक्की (नेवला), रोजी (कुत्ती) और रानी (घोड़ी) जैसे मानवेतर प्राणियों के भीतर छिपी संवेदनशीलता को चित्रात्मक रूप में व्यक्त किया है। इसके अतिरिक्त स्त्री की स्थिति और उसकी समस्याओं पर उनके लेखों का संग्रह 'श्रृंखला की कड़ियाँ' है।

पाठांत प्रश्न

1. लेखिका ने गिल्लू पाठ के आरंभ में ही सोनजुही की पीली कली को क्यों याद किया है– उल्लेख कीजिए।
2. घाव ठीक होने के पश्चात गिल्लू में कैसा परिवर्तन दिखाई पड़ा– उल्लेख कीजिए।
3. निम्नलिखित का आशय स्पष्ट कीजिए :

   (क) उसकी समझदारी और कार्यकलाप पर सबको आश्चर्य होता था।

   (ख) फिर गिल्लू के जीवन का प्रथम बसंत आया। नीम-चमेली की गंध मेरे कमरे में हौले-हौले आने लगी। बाहर की गिलहरियाँ खिड़की की जाली के पास आकर चिक्-चिक् करके न जाने क्या कहने लगीं।

   (ग) इस मार्ग से गिल्लू ने बाहर जाने पर सचमुच ही मुक्ति की साँस ली।
4. गिल्लू की कौन-सी बात आपको अच्छी लगी और क्यों?
5. गिल्लू रेखाचित्र की भाषा की प्रमुख विशेषताओं का उल्लेख कीजिए।
6. रेखाचित्र के अंतिम अंश में गिल्लू की मृत्यु का मर्मस्पर्शी चित्रण हुआ है। आपने भी कभी कोई ऐसा दृश्य देखा होगा जिसका आपके मन पर गहरा प्रभाव पड़ा। उसका उल्लेख कीजिए।
7. पाठ में गिल्लू का वर्णन इस प्रकार है– ''स्निग्ध रोयें, झब्बेदार पूँछ, नीले काँच के मोतियों जैसी आखें, दो नन्हें पंजे।'' आप भी किसी पालतू जानवर/पक्षी/मनुष्येतर प्राणी का वर्णन इसी प्रकार की भाषा में कीजिए।

उत्तरमाला

बोध प्रश्नों के उत्तर

(1) ग (2) ख (3) ग (4) क (X) ख (√) ग (√) घ (√)

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

3.1 1. (ख)

2. (ग)

3. (क) व्यक्तिवाचक (ख) व्यवहारगत (ग) तीन माह (घ) अन्

4. नीलकंठ – मोर
   गिल्लू – गिलहरी
   गौरा – गाय
   सोना – हिरन

3.2 1. (घ)

2. (ग)

3. (ख)

3.3 1. (क) 2. (क) 3. (घ)

4

आह्‌वान

संसार में जो भी उपलब्धियाँ हैं, उन सबके पीछे एक ही चीज़ दिखाई देती है, वह है— पुरुषार्थ, परिश्रम, मेहनत। आज कृषि, चिकित्सा–विज्ञान आदि के क्षेत्र में जो प्रगति हुई है, वह पुरुषार्थ के बिना भला कैसे संभव हो सकती थी। क्या आलसी व्यक्ति यह सब कर सकते थे? आप दसवीं कक्षा पास करना चाहते हैं। क्या आपके आलस्य से काम बन पाएगा? मात्र भाग्य के भरोसे बैठे रहना, परिश्रम न करना, न तो बुद्धिमत्ता है और न ही सफलता पाने का ज़रिया। भाग्यवाद तो व्यक्ति को आलसी बना देता है। यह प्रगति का शत्रु होता है। तुलसीदास जी ने यही कहा है— 'सकल पदारथ एहि जग माहीं। करमहीन नर पावत नाहीं।' तो आलस्य छोड़ो, कर्महीनता त्यागो। इसी तरह कठोपनिषद् में भी कहा गया है—

— उत्तिष्ठत, जाग्रत, प्राप्य वरान्निबोधात।

अर्थात् उठो, जागो और श्रेष्ठतम को प्राप्त कर उन्हें जानो।

प्रस्तुत कविता का स्वर भी ऐसा ही है।

उद्‌देश्य

इस पाठ को पढ़ने के बाद आप–

- कर्म और परिश्रम के संबंध की व्याख्या कर सकेंगे;
- जीवन में उन्नति और प्रगति के लिए पुरुषार्थ के महत्त्व को स्पष्ट कर सकेंगे;
- राष्ट्र के विकास के लिए एकता और भाईचारे के महत्त्व का उल्लेख कर सकेंगे;
- 'भाग्यवाद मनुष्य को अकर्मण्य बना देता है'— कथन की व्याख्या कर सकेंगे;
- रूपक तथा दृष्टांत अलंकारों को पहचान कर उनका प्रयोग कर सकेंगे;
- कविता की पंक्तियों का अपने शब्दों में अवसरानुकूल प्रयोग कर सकेंगे;
- कविता के भाव-सौंदर्य की सराहना कर सकेंगे;
- कविता की भाषा पर टिप्पणी कर सकेंगे।

4.1 मूल पाठ

आइए, पहले निम्नलिखित पंक्तियों को ध्यानपूर्वक पढ़ लेते हैं। हाशिए पर कठिन शब्दों के अर्थ दिए जा रहे हैं–

बैठे हुए हो व्यर्थ क्यों? आगे बढ़ो, ऊँचे चढ़ो!
है भाग्य की क्या भावना, अब पाठ पौरुष का पढ़ो!
है सामने का ग्रास भी मुख में स्वयं जाता नहीं,
हा! ध्यान उद्यम का तुम्हें तो भी कभी आता नहीं।।

जो लोग पीछे थे तुम्हारे, बढ़ गए, हैं बढ़ रहे,
पीछे पड़े तुम, दैव के सिर दोष अपना मढ़ रहे!
पर कर्म–तैल बिना कभी विधि–दीप जल सकता नहीं,
है दैव क्या? साँचे बिना कुछ आप ढल सकता नहीं।।

आओ, मिलें सब देश–बांधव हार बनकर देश के,
साधक बनें सब प्रेम से सुख–शांतिमय उद्देश्य के।
क्या सांप्रदायिक भेद से है ऐक्य मिट सकता अहो!
बनती नहीं क्या एक माला विविधा सुमनों की कहो?

–मैथिलीशरण गुप्त

4.2 आइए समझें

4.2.1 अंश-1

ध्यान दें कि यह कविता सन् 1912 के आस–पास, तब लिखी गई थी जब हमारा देश गुलाम था। आपने आधुनिक भारत के इतिहास में पढ़ा होगा कि किस तरह सन् 1857 के स्वाधीनता–संघर्ष में अंग्रेज़ों ने भारत के लोगों का क्रूरतापूर्वक दमन किया। अंग्रेज़ों ने अपने यहाँ की मिलों में बनी विदेशी वस्तुओं से भारतीय बाज़ारों को भरकर देशी कारीगरों को बेरोज़गार बना दिया गया। यह दमन निरंतर जारी रहा। कवि का परिचय सहमी और डरी हुई जनता से हुआ। कवि को आशंका थी कि ऐसी स्थिति में देश की जनता निराश होकर भाग्यवादी न बन जाए अर्थात् भाग्य के भरोसे न बैठ जाए। अतः इस कविता के माध्यम से वह देश की जनता को जगाकर कर्म और संघर्ष की प्रेरणा देता है।

हे भारतवासियों! निरर्थक अर्थात् बेकार क्यों बैठे हो? अगर अपने दुखों से मुक्ति पाना चाहते हो तो उठो और सफलता की चोटी छूने के लिए चल पड़ो। सफलता पाने अर्थात् जीवन में कुछ सार्थक या अच्छा काम करने के लिए चलना ही पड़ता है, परिश्रम करना

टिप्पणी

शब्दार्थ

व्यर्थ	- बेकार, निरर्थक
आगे बढ़ना	- पहल करना/विकास करना
ऊँचे चढ़ना	- अपनी क्षमता बढ़ाना/ तरक्की करना/ प्रगति करना,
भावना	- इच्छा, कामना
पुरुषार्थ	- कर्म, पौरुष
पाठ पढ़ना	- आचरण करना/सीखे हुए पर अमल करना
ग्रास	- निवाला, कौर, टुकड़ा
उद्यम	- परिश्रम, मेहनत, प्रयास
पीछे पड़े	- पिछड़ गए
कर्म-तैल	- कर्मरूपी तेल
विधि-दीप	- भाग्यरूपी दीपक
दैव	- विधाता, भाग्य
साँचा	- मूर्तियाँ बनाने का खाँचा या फर्मा
दोष मढ़ना	- जिम्मेदार ठहराना
देश-बांधव	- देश के नागरिक भाई-बहन
साधक	- साधना या परिश्रम करने वाले
ऐक्य	- एकता
विविध	- अनेक प्रकार के

बैठे हुए हो व्यर्थ क्यों? आगे बढ़ो, ऊँचे चढ़ो!
है भाग्य की क्या भावना, अब पाठ पौरुष का पढ़ो!
है सामने का ग्रास भी मुख में स्वयं जाता नहीं,
हा! ध्यान उद्यम का तुम्हें तो भी कभी आता नहीं।।

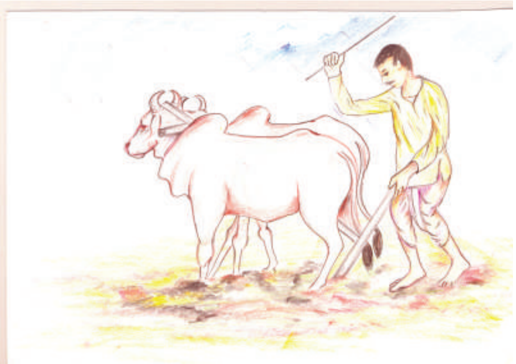

चित्र 4.1

ही पड़ता है। अब भाग्य के बदलने या परिस्थितियाँ सुधारने की प्रतीक्षा में बैठे रहना छोड़ो। केवल कर्म या पुरुषार्थ के मार्ग पर चलो क्योंकि परिस्थितियाँ अपने आप नहीं बदलतीं, उन्हें मनुष्य अपने उद्यम से बदलता है। भारतीयों के मन में फैली हुई निराशा और आलसीपन को देखकर कवि को दुख होता है। देशवासियों का उद्बोधन करते हुए कवि एक उदाहरण देते हुए कहता है– तुम जानते हो कि सामने रखा निवाला भी अपने–आप मुँह में नहीं जाता, उसके लिए प्रयास करना पड़ता है यानी हाथ बढ़ाकर उसे उठाना होता है। कवि खेद प्रकट करते हुए कहता है कि यह सब जानते हुए भी हम दुख से मुक्त होने के लिए उद्यम नहीं करते। यह आवश्यक है कि हम समस्त देशवासी निराशा के अंधकार से बाहर निकलें, सुस्ती की जकड़न को तोड़ फेंके और देश की दशा सुधारने के लिए हर संभव प्रयत्न में जुट जाएँ।

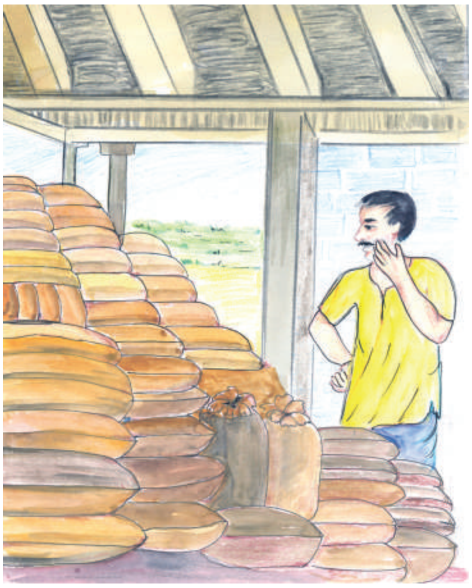

चित्र 4.2

इसी भाव से संबंधित संस्कृत की एक कहावत है—'उद्यमेन हि सिध्यन्ति कार्याणि न मनोरथैः' अर्थात् उद्यम या प्रयास करने से ही किसी कार्य में सफलता मिलती है, केवल इच्छा रखने या सपने देखने से नहीं।

रामधारी सिंह दिनकर की एक कविता की इस पंक्ति को भी देखिए– 'खम ठोक ठेलता है जब नर, पर्वत के जाते पाँव उखड़!' अर्थात् मनुष्य जब दृढ़तापूर्वक आगे बढ़ता है तो पहाड़ के पाँव भी उखड़ जाते हैं यानी हिम्मत के बल पर पहाड़ पर भी विजय प्राप्त की जा सकती है। हम जिस विकास के चरण पर आज पहुँचे हैं, उसके लिए हमारे पूर्वजों ने पहाड़ को काटकर रास्ते बनाने जैसा असंभव कार्य कर दिखाया है। इस बात से यही सिद्ध होता है कि कठिनाइयों पर विजय पाने का बस एक ही उपाय है, और वह है– आलस्य छोड़कर प्रयास और परिश्रम में जुट जाना। आलस्य तो शरीर के भीतर छिपा हुआ शत्रु है– 'आलस्यं हि मनुष्याणाम् शरीरस्थो महान् रिपुः।'

इस कविता को पढ़ते हुए इसकी भाषा पर आपका ध्यान जरूर गया होगा। इस अंश में दो प्रयोग अपने सामान्य अर्थ से कुछ भिन्न अर्थ दे रहे हैं। वे हैं– आगे बढ़ना और ऊँचे चढ़ना। इनके प्रयोग से अभिव्यक्ति में विशेष अर्थ–सौंदर्य आ गया है।

आगे बढ़ो और ऊँचे चढ़ो का प्रयोग हमेशा इस अर्थ में नहीं होता। जैसे किसी व्यक्ति से आप जल्दी चलने, पहल करने या आगे चलने के लिए कहें तो कह सकते हैं– आगे बढ़ो। आप किसी लाइन में खड़े प्रतीक्षा कर रहे हैं। आगे के लोग धीरे–धीरे आगे बढ़ रहे हैं, आपसे आगे वाला वहीं खड़ा है तो आप उससे कह सकते हैं– 'आगे बढ़िए', या 'आगे बढ़ो'। इसी प्रकार 'ऊँचे चढ़ो' का प्रयोग भी ऊपर चढ़ने के सामान्य अर्थ में हो सकता है। कविता में 'आगे बढ़ो और 'ऊँचे चढ़ो' का प्रयोग पहल करने, विकास करने या प्रगति करने के अर्थ में हुआ है।

कविता में कभी–कभी किसी अर्थ को पाठक या श्रोता तक पहुँचाने के लिए कुछ दृष्टांतों अथवा उदाहरणों का उपयोग किया जाता है। जैसे इस पंक्ति में यह बात कही गई कि कोई भी वस्तु बिना प्रयास के प्राप्त नहीं होती। फिर एक दृष्टांत दिया गया कि खाने के लिए निवाले को मुँह में रखने के लिए भी प्रयास करना पड़ता है। यहाँ दृष्टांत अलंकार है।

इस काव्यांश में 'हा' खेद अथवा दुख प्रकट करने के लिए आया है। यह विस्मयादिबोधक शब्द है। हर्ष, शोक, खेद, कष्ट आदि को प्रकट करने के लिए हिंदी में अनेक विस्मयादिबोधक शब्द हैं, जैसे वाह!, आह!, अहा! शाबाश! आदि।

जब यह कविता लिखी गई थी तो देश में स्वाधीनता आंदोलन ज़ोरों पर था और देशभक्त इन पंक्तियों को गाते हुए सत्याग्रह के जुलूसों एवं प्रभातफेरियों में भाग लेते थे। जानते हैं क्यों? क्योंकि इन पंक्तियों में एक ऐसा ओज और प्रवाह है, जो निराशा में डूबे हुए व्यक्ति के मन में भी जोश और उत्साह भर देता है। ऐसी भाषा को 'ओजपूर्ण' भाषा कहा जाता है।

पाठगत प्रश्न-4.1

सर्वाधिक उपयुक्त विकल्प चुनकर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए:

1. कवि ने किन्हें पौरुष का पाठ पढ़ने के लिए कहा है?

   (क) आलसी लोगों को ☐ (ख) भाग्य का विरोध करने वालों को ☐

   (ग) आगे बढ़ने वालों को ☐ (घ) ऊँचे चढ़ रहे लोगों को। ☐

2. जो भाग्य के भरोसे रहता है उसे क्या कहते हैं?

   (क) भाग्यहीन ☐ (ख) भाग्यवादी ☐

   (ग) भाग्यवान ☐ (घ) भाग्यशाली ☐

3. कर्म के बारे में क्या सच नहीं है?

   (क) स्वस्थ, चुस्त और सतर्क बनाता है। ☐

   (ख) आराम करने का अवसर प्रदान करता है। ☐

   (ग) कठिनाइयों से मुक्ति दिलाता है। ☐

   (घ) एक सफल मनुष्य बनाता है। ☐

टिप्पणी

क्रियाकलाप-4.1

कविता के इस अंश को समझते हुए आपने विस्मयादिबोधक शब्दों के बारे में पढ़ा। यह भी जाना कि हर्ष, शोक, खेद, कष्ट आदि को प्रकट करने के लिए विस्मयादिबोधक शब्दों का प्रयोग किया जाता है। नीचे कुछ विस्मयादिबोधक शब्द और जिन स्थितियों में उनका प्रयोग किया जाता है, वे स्थितियाँ दी जा रही हैं, उन्हें ध्यान से पढ़िए :

शब्द		स्थिति
अरे	—	विस्मय
अरे–अरे	—	सावधान करना
हाय	—	कष्ट या पीड़ा
अहा	—	हर्ष
आह	—	दुख, पीड़ा
ओह	—	विस्मय, कष्ट, खेद
उफ़	—	कष्ट, खेद
वाह	—	आश्चर्य, सराहना, उत्साहवर्धन
शाबाश	—	सराहना, उत्साहवर्धन
हुँह	—	तिरस्कार, उपेक्षा

अब आप उपर्युक्त विस्मयादिबोधक शब्दों का प्रयोग करते हुए ऐसे वाक्य लिखिए जिनमें ये शब्द उचित रूप में आए हों–

1. ....

2. ....

4.2.2 अंश-2

जो लोग पीछे थे तुम्हारे, बढ़ गए, हैं बढ़ रहे,
पीछे पड़े तुम, दैव के सिर दोष अपना मढ़ रहे!
पर कर्म-तैल बिना कभी विधि-दीप जल सकता नहीं,
है दैव क्या? साँचे बिना कुछ आप ढल सकता नहीं।।

आइए, अब दूसरे अंश को समझने के लिए उसे एक बार फिर पढ़ लेते हैं।

इस काव्यांश को पढ़ते हुए आप जान गए होंगे कि कवि ने इसमें भी भारतवासियों को कर्म का पाठ पढ़ाने का प्रयास किया है, पर कुछ अलग ही तरह से, नए उदाहरणों के द्वारा।

इस अंश की पहली पंक्ति में कवि एक सूचना देते हुए कहता है कि जो लोग पीछे थे, वे आगे बढ़ गए हैं और बढ़ते जा रहे हैं। आप समझ रहे हैं कि यहाँ किन लोगों के बारे में कहा जा रहा है?

टिप्पणी

इतिहास पढ़ते हुए आपने शायद जाना होगा कि सभ्यता के विकास के दौर में भारत बहुत समृद्ध देश था। इसकी समृद्धि विश्व में विख्यात थी और इसे 'सोने की चिड़िया' कहा जाता था। इसकी तुलना में विश्व के अन्य देश क़ाफी पीछे थे। किन्तु आगे चलकर पश्चिम के कई देशों में नए–नए आविष्कार किए गए। वहाँ के लोग परिश्रम और अभ्यास के बल पर अपने देश में औद्योगिक क्रान्ति ले आए और विकास करते गए।

चित्र 4.3

प्रगति के पथ पर अग्रसर उन्हीं देशों की ओर इशारा करते हुए कवि कहता है कि वे लोग आगे बढ़ रहे हैं और हम शासकों के दमन से भयभीत, हताश और निराश होकर भाग्य के भरोसे बैठे हैं। बदलते हुए समय के अनुसार अपने को बदलने के लिए परिश्रम नहीं करते और अपनी हर असफलता के लिए भाग्य को दोषी मानते हैं। एक कहावत में कही गई बात बिलकुल सत्य है– 'दैव–दैव आलसी पुकारा' अर्थात् आलसी लोग कर्म नहीं करते और विपत्ति आने पर केवल भाग्य को दोष देते हैं। ऐसे लोग नहीं जानते कि कर्म–रूपी तेल के बिना कभी भी भाग्य–रूपी दीपक नहीं जल सकता। अर्थात् जिस तरह दीपक को जलाने के लिए तेल का होना आवश्यक है, उसी प्रकार किसी भी कार्य में सफलता पाने के लिए निरंतर कर्म और परिश्रम करना आवश्यक है। इसी बात को कवि एक दूसरे उदाहरण से समझाते हुए कहता है कि मूर्ति ढालने या बनाने से पहले उसका साँचा या फर्मा बनाना आवश्यक होता है और यह साँचा मनुष्य अपने परिश्रम से बनाता है। भगवान भी उन्हीं की सहायता करते हैं जो परिश्रम करना जानते हैं। उर्दू और अंग्रेज़ी भाषाओं में प्रचलित इन कहावतों को पढ़िए

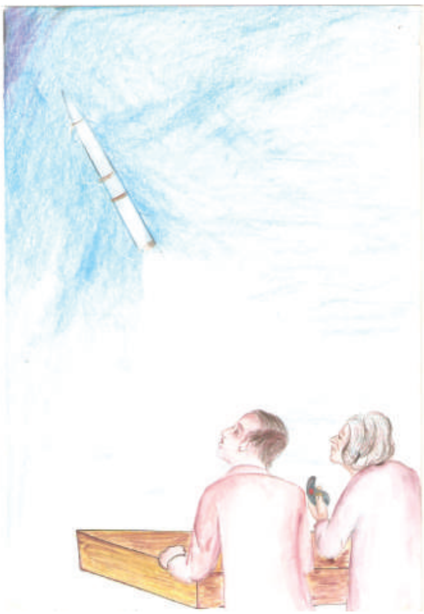

चित्र 4.4

उर्दू– हिम्मते मर्दां मददे खुदा। अर्थात्– मनुष्य हिम्मत करे तभी भगवान मदद करता है।

यही कहावत अंग्रेजी में इस प्रकार है— God helps those who help themselves.

ऊपर के उदाहरण से स्पष्ट है कि मेहनती लोग ही अपनी मेहनत या अभ्यास से ईश्वर की कृपा का प्रसाद पाकर जीवन में सफलता प्राप्त करते हैं। अतः हमें आलस छोड़कर मेहनत करनी चाहिए, तभी कठिनाइयों पर विजय पाई जा सकती है।

टिप्पणी: यहाँ आपने देखा कि कवि ने परिश्रम या कर्म के महत्त्व को दीपक और तेल के माध्यम से समझाया है। इस तरह के वर्णन से इन पंक्तियों में रूपक अलंकार है। आइए रूपक अलंकार के बारे में जानें—

रूपक अलंकार

परिभाषा- उपमेय पर जब उपमान का आरोप कर दिया जाए तो रूपक अलंकार होता है। इस स्थिति में उपमान और उपमेय एकरूप हो जाते हैं। जैसे— मुखरूपी चंद्रमा।

पाठ में पंक्ति है—

'पर कर्म—तैल बिना कभी विधि-दीप जल सकता नहीं'

आइए, पहले परिभाषा में प्रयुक्त उपमेय, उपमान तथा 'एकरूप वर्णन' शब्दों का मतलब समझें।

उपमेय- कविता की पंक्ति में जिस वस्तु का वर्णन हो, उसे 'उपमेय' कहते हैं। इस उदाहरण में 'कर्म' तथा 'विधि' उपमेय है।

उपमान- जिस वस्तु से उपमेय की तुलना की जाती है। जैसे 'मुख चंद्रमा के समान है' में चंद्रमा उपमान है। कविता की पंक्ति में 'तैल' और 'दीप' उपमान हैं।

एकरूप वर्णन— उपमा अलंकार में उपमेय और उपमान की तुलना की जाती है। पर रूपक अलंकार में उपमेय और उपमान का वर्णन इस तरह मिला कर किया जाता है कि दोनों में कोई भेद नहीं रहता। इस तरह के एकरूप वर्णन को 'उपमेय पर उपमान का आरोप' कहते हैं और जहाँ उपमेय पर उपमान का एकरूप आरोप हो, वहाँ रूपक अलंकार होता है।

पाठगत प्रश्न-4.2

सर्वाधिक उपयुक्त विकल्प चुनकर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए:

1. जो लोग कभी पीछे थे वे कैसे आगे बढ़ गए?

(क) भाग्य के सहारे ☐ (ख) ईश्वर की कृपा से ☐

(ग) साँचे में ढलकर ☐ (घ) कठिन परिश्रम करके ☐

2. उपमेय कहा जाता है–

(क) जिसकी तुलना की जाए ☐ (ख) जिससे तुलना की जाए। ☐

(ग) जिसका आरोप हो। ☐ (घ) जो एकरूप हो। ☐

3. नीचे लिखे वाक्यों के रिक्त स्थानों को उनके सामने कोष्ठक में दिये गए दो विकल्पों में से सर्वाधिक उपयुक्त विकल्प चुनकर लिखिए:

(क) पश्चिम के लोग .... के बल पर ही हर क्षेत्र में विकास कर सके हैं। (परिश्रम/सुविधाओं)

(ख) परिश्रम न करने पर यदि हम असफल हुए तो इसके लिए .... दोषी हैं। (भगवान/परिस्थितियाँ/हम स्वयं)

(ग) कर्मरूपी .... (भाग्य/तेल) के बिना भाग्यरूपी .... (दीप/भाग्य) नहीं जल सकता।

(घ) .... बनाने की अपेक्षा .... बनाने में अधिक परिश्रम करना पड़ता है। (साँचा/मूर्ति)

4.2.3 अंश-3

आइए, हाशिए पर दिए गए कविता के तीसरे अंश को एक बार फिर से ध्यानपूर्वक पढ़ लेते हैं।

आपने एक कहानी शायद पढ़ी या सुनी होगी जिसमें एक व्यक्ति के तीन बेटे आपस में लड़ते–झगड़ते रहते थे। उनके झगड़े से दुखी पिता ने एक दिन उन्हें बुलाया और तीनों के हाथ में एक–एक लकड़ी देकर उसे तोड़ने को कहा। तीनों ने अपने–अपने हाथ में आई अकेली लकड़ी को आसानी से तोड़ दिया। फिर उस व्यक्ति ने अपने बेटों को तीन–तीन लकड़ियाँ देकर कहा कि इन लकड़ियों को एक साथ मिलाकर तोड़ो। पिता की आज्ञानुसार बेटों ने उन लकड़ियों को इकट्ठा करके तोड़ने की चेष्टा की पर असफल रहे। यह कहानी हमें क्या शिक्षा देती है? यही कि एकता में बल है। कविता में भी देशवासियों को एक होकर रहने के लिए कहा गया है।

आओ, मिलें सब देश–बांधव हार बनकर देश के,
साधक बनें सब प्रेम से सुख–शांतिमय उद्देश्य के।
क्या सांप्रदायिक भेद से है ऐक्य मिट सकता अहो!
बनती नहीं क्या एक माला विविध सुमनों की कहो?

हम सब जानते हैं कि भारत अनेक धर्मों, जातियों एवं संप्रदायों का देश है। जब तक सब लोग एकजुट होकर देश के विकास के लिए कार्य नहीं करेंगे, तब तक देश गुलामी, गरीबी और पिछड़ेपन से मुक्त नहीं हो सकता। इसलिए इस अंश में कवि कहता है–

देशवासियो! माना कि हम अलग–अलग जातियों व संप्रदायों से जुड़े हुए हैं, पर भारत के नागरिक होने के नाते हम सब भाई–भाई हैं। इसलिए आओ, सब मिलकर देश को एकता के सूत्र में बाँधों और सुख–शांतिमय उद्देश्य को पूरा करने के लिए काम करें। सुख कैसे मिलेगा? आज़ादी से। शांति कैसे आएगी? गरीबी दूर होने से। गरीबी दूर कैसे होगी? गरीबी दूर होगी अपना शासन स्थापित करके। इसके लिए हमें एक होकर संघर्ष

करना पड़ेगा। समृद्धि और शांति लाने के लिए आओ, हम मिलजुल कर कठिन परिश्रम करें। कवि कुछ प्रश्नों के रूप में देश की जनता को एक होने के लिए कहता है। वह पूछता है कि क्या हम लोगों की जाति, धर्म, संप्रदाय अलग–अलग होने पर भी हम एक नहीं हो सकते? कवि कहना चाहता है कि इन आधारों पर भिन्नता एकता के मार्ग में बाधक नहीं है। हम एक देश के होने के नाते एक हो सकते हैं। इसी तरह वह कहता है कि क्या अलग–अलग प्रकार के फूलों को इकट्ठा करके एक माला नहीं बनाई जा सकती? आशय है, बनाई जा सकती है। जिस प्रकार यह हो सकता है, वैसे ही हम सब भी एक हो सकते हैं।

चित्र 4.5

कविता के इस अंश में कवि ने पुनः एक दृष्टांत का उपयोग किया है, वह है– 'बनती नहीं क्या एक माला विविध सुमनों की कहो?' यह दृष्टांत कवि के किस कथन के उदाहरण स्वरूप आया है। जी हाँ, कवि पहले यह कह चुका है कि धर्म, संप्रदाय, मत और जाति की भिन्नता का होना किसी भी देश के विकास में बाधक नहीं बन सकती। कवि ने एकता को गले का हार कहा– यहाँ रूपक है। इसके बाद कवि अपनी बात का तर्क देते हुए कहता है कि क्या अनेक प्रकार के फूलों से एक माला नहीं बन सकती? बन सकती है, और बेहतर माला बन सकती है। ठीक उसी प्रकार हम अनेक भाषाएँ बोलने वाले विभिन्न धर्मों के अलग–अलग प्रदेशों में रहने वाले लोग मिलकर देश को एक बनाकर उसे बेहतर ढंग से मज़बूत कर सकते हैं। वैसे भी भारत को अनेकता में एकता का देश कहा जाता है।

चित्र 4.6

क्रियाकलाप-4.2

आप अपने आस–पास के कुछ ऐसे लोगों को अवश्य जानते होंगे, जो पहले बहुत गरीबी या भयंकर विपत्तियों से घिरे हुए थे, पर आज वे खुशहाल या सुखमय जीवन व्यतीत कर रहे हैं। ऐसे कम–से–कम दो लोगों के बारे में उल्लेख कीजिए जिन्होंने कठिनाइयों का सामना करते हुए सफलता प्राप्त की।

....

....

....

4.3 भाव-सौंदर्य

प्रस्तुत कविता के माध्यम से कवि ने देश की निराश, हताश तथा निष्क्रिय जनता का आह्वान किया है। कवि देश की जनता में नवीन उत्साह का संचार करके उसे कर्मशील बनाना चाहता है। कवि की इच्छा है कि देश न केवल अंग्रेज़ों की गुलामी से मुक्त हो, बल्कि मुक्त होकर आगे बढ़े, विकास करे। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए कवि विभिन्न संप्रदायों, मतों तथा धर्मों आदि के बीच एकता कायम करने की आवश्यकता पर भी बल देता है। यह कविता इन सब बातों की अभिव्यक्ति बहुत ही प्रभावशाली ढंग से करती है। इन सब बातों के साथ यह कविता जिस समय में लिखी गयी थी, उस समय से आगे बढ़कर आज भी हमारा मार्गदर्शन करने में सक्षम है।

4.4 भाषा-सौंदर्य

आपने प्रतिकूल परिस्थितियों के सामने निराश और हताश हो जाने वाले लोगों को देखा होगा। ऐसे लोगों को भी देखा होगा जो इन निराश, हताश लोगों को उत्साहित करते हैं, निराशा से उबारते हैं। निराश, आलसी तथा अकर्मण्य लोगों को कर्म के लिए प्रेरित करते समय विशेष प्रकार की भाषा का प्रयोग किया जाता है। आपने जो कविता पढ़ी उसकी भाषा–शैली भी ऐसी ही है। कवि देश की जनता का उद्‌बोधन करके उसका आह्वान करता है। आप जानते हैं उद्‌बोधन और आह्वान में क्या अंतर है? किसी व्यक्ति, समूह अथवा समाज को संबोधित करना उद्‌बोधन है। कवि देश की जनता का उद्‌बोधन कर रहा है। किसी बड़े उद्‌देश्य हेतु कर्म के लिए प्रेरित करना आह्वान कहलाता है। आह्वान के लिए यह आवश्यक है कि उसमें उद्‌बोधन और आह्वान करने वाला स्वयं को भी शामिल करे। वरना वह उपदेश मात्र बनकर रह जाएगा। कविता के आरंभिक दो छंदों में लगता है जैसे कवि जनता को उपदेश दे रहा है, लेकिन अंतिम अनुच्छेद में ऐसा नहीं है। दरअसल, निराशा, आलस एवं अकर्मण्यता से ग्रस्त देश की जनता को कवि जगाने की कोशिश कर रहा है। जब जनता उत्साह से भरकर देश के विकास के लिए आगे बढ़ती है, तो उसके साथ कवि भी हो लेता है। इसलिए यह कविता आह्वान की कविता है।

अब उपर्युक्त बातों के आधार पर इस कविता की भाषा–शैली पर ध्यान दीजिए। इसमें आगे बढ़ो, ऊँचे चढ़ो, जो तुम्हारे पीछे थे, आगे बढ़ रहे हैं, भाग्य के भरोसे मत रहो, आओ, मिलें साधक बनें– ये सभी पद आह्वान की शैली के सूचक हैं। यह शैली सुनने वाले में जोश और उत्साह भरती है, ऐसा जोश और उत्साह कि वह बड़े–से–बड़े पहाड़ से टक्कर ले सके। देश की तरक्की के लिए हमें ऐसे ही उत्साह की आवश्यकता पड़ती है।

टिप्पणी

पाठगत प्रश्न-4.3

सर्वाधिक उपयुक्त विकल्प चुनकर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए:

1. हमारे देश की क्या विशेषता है?

    (क) यहाँ प्राचीन काल में औद्योगिक क्रांति हुई। ☐

    (ख) यहाँ अनेक धर्मों–संप्रदायों के लोग रहते हैं। ☐

    (ग) यहाँ के लोगों ने दूसरे देशों पर शासन किया। ☐

    (घ) यहाँ धर्म के आधार पर एकरूपता है। ☐

2. सुख–शांतिमय उद्देश्य क्या है?

    (क) आज़ादी और खुशहाली ☐

    (ख) उद्यम और आराम। ☐

    (ग) घोर परिश्रम ☐

    (घ) शांति के लिए प्रार्थना ☐

3. 'बनती नहीं क्या एक माला विविध सुमनों की कहो?' पंक्ति का क्या आशय है?

    (क) अनेक प्रकार के फूलों की माला बननी चाहिए। ☐

    (ख) अनेकता होने पर भी एकता हो सकती है। ☐

    (ग) विविधता एकता में बाधक है। ☐

    (घ) सभी को एक ही तरह से रहना चाहिए। ☐

4.4 योग्यता-विस्तार

काव्यांश 'भारत भारती' नामक काव्य से लिया गया है जिसके रचनाकार राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त हैं। मैथिलीशरण गुप्त आधुनिक काल के सर्वाधिक लोकप्रिय कवि रहे हैं। इनका जन्म उत्तर प्रदेश के झाँसी जिले के चिरगाँव नामक स्थान में 1886 ई. में हुआ। इन्होंने लगभग चालीस मौलिक तथा छह अनूदित पुस्तकें लिखी हैं, जिनमें 'रंग में भंग', 'भारत भारती', 'साकेत', 'यशोधरा, 'द्वापर', 'जयद्रथ वध', 'जय भारत', 'विष्णुप्रिया', 'पंचवटी', 'प्रदक्षिणा' आदि उल्लेखनीय हैं।

सबसे पहले 'भारत भारती' ने ही गुप्त जी को ख्याति दिलाई। इस पुस्तक ने हिंदी भाषियों में अपनी जाति और देश के प्रति गौरव और गर्व की भावनाएँ विकसित कीं और तभी से ये राष्ट्रकवि के रूप में विख्यात हुए। इनकी अनेक अन्य रचनाएँ भी राष्ट्रीय भावना से ओत–प्रोत हैं।

खड़ी बोली के स्वरूप को निखारने में गुप्त जी का महत्त्वपूर्ण योगदान है। आज हम जिस हिंदी भाषा के उत्तराधिकारी हैं, उसे काव्यभाषा के रूप में प्रतिष्ठित करने वाले प्रथम कवि गुप्त जी ही थे।

आपने क्या सीखा

- भाग्य भी उसी का साथ देता है जो परिश्रमी तथा कर्मशील होते हैं। इसलिए व्यर्थ बैठकर समय बर्बाद नहीं करना चाहिए।
- उद्‌यम अर्थात् प्रयास से ही सफलता प्राप्त होती है, उसे बैठे–ठाले प्राप्त नहीं किया जा सकता।
- जिन लोगों ने भी विकास किया है, वे परिश्रमी और संघर्षशील थे, अतः उनसे प्रेरणा लेकर कार्य करना चाहिए। असफलता के लिए भाग्य को दोषी नहीं मानना चाहिए।
- जिस प्रकार तेल के बिना दीपक नहीं जल सकता, साँचे के बिना मूर्ति नहीं बन सकती, वैसे ही कर्म और योजना के बिना जीवन में कुछ प्राप्त नहीं किया जा सकता।
- भारत अनेकता में एकता वाला देश है। यहाँ पर अनेक धर्मों, संप्रदायों और जातियों के लोग रहते है, लेकिन इनकी अनेकता देश की एकता में बाधक नहीं। सभी लोग देश के लिए एक होकर उसका विकास कर सकते हैं।
- 'भारत भारती' मैथिलीशरण गुप्त का ऐसा काव्य है जिससे देशवासियों को अंधकार और निराशा से जूझने की प्रेरणा मिलती है।
- इस काव्यांश की भाषा ओजपूर्ण एवं उद्‌बोधनपरक है।
- रूपक अलंकार में उपमेय और उपमान का एकरूप वर्णन किया जाता है।

पाठांत प्रश्न

1. भाग्यवादी किसे कहते हैं? क्या मनुष्य को भाग्य के सहारे ही आगे बढ़ना चाहिए?
2. पिछड़े देश और समाज भी हमसे आगे निकल गए, आपके विचार से इसका क्या कारण हो सकता है?
3. 'पाठ पौरुष का पढ़ो' कथन से कवि का क्या आशय है?
4. कवि देशवासियों का आह्वान कर उनसे क्या आशा करता है?
5. 'विविध सुमनों की एक माला' से क्या तात्पर्य है और यह उदाहरण क्यों दिया गया है?

6. काव्य–सौंदर्य स्पष्ट दीजिए–

   पर कर्म–तैल बिना कभी विधि–दीप जल सकता नहीं,
   है दैव क्या? साँचे बिना कुछ आप ढल सकता नहीं।।

7. कवि देशवासियों को क्या आत्मबोध कराना चाहता है? क्या देश के प्रति हमारे भी कुछ कर्त्तव्य हैं? उल्लेख कीजिए।
8. देश के विविध धर्मों/संप्रदायों के बीच पारस्परिक एकता का महत्त्व समझाइए।
9. सांप्रदायिक समस्या के समाधान के लिए कोई दो उपाय सुझाते हुए किसी प्रतिष्ठित दैनिक समाचारपत्र के संपादक को पत्र लिखिए।
10. मैथिलीशरण गुप्त की एक अन्य कविता की नीचे लिखी पंक्तियों का अर्थ लिखिए। बताइए ये पंक्तियाँ कविता की किन पंक्तियों से मिलती जुलती हैं?

    नर हो न निराश करो मन को।
    कुछ काम करो, कुछ काम करो।
    जग में रहकर कुछ नाम करो।।
    यह जन्म हुआ किस अर्थ अहो,
    समझो जिससे यह व्यर्थ न हो।

11. निम्नलिखित पद्यांश को पढ़कर उस पर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए:

    हिमालय के आँगन में उसे प्रथम किरणों का दे उपहार
    उषा ने हँस अभिनंदन किया और पहनाया हीरक हार।
    जगे हम लगे जगाने विश्व, लोक में फैला फिर आलोक,
    व्योम तम–पुंज हुआ सब नष्ट, अखिल संसृति हो उठी अशोक।

(i) भारत का अभिनंदन किसने और कहाँ किया?

(ii) 'जगे हम' कथन में 'हम' कौन हैं?

(iii) किस पंक्ति का आशय है कि भारत ने सारे संसार में ज्ञान का प्रकाश फैलाया।

(iv) ज्ञान का प्रकाश फैलने से संसार पर क्या प्रभाव पड़ा?

उत्तरमाला

पाठगत प्रश्न-4.1

1. क, 2. ख 3. ख

4.2 1. घ 2. क

3. क. परिश्रम, ख. हम स्वयं, ग. तेल, दीप, घ. मूर्ति, साँचा

4.3 1. ख 2. क 3. ख

टिप्पणी

5

रॉबर्ट नर्सिंग होम में

आप कभी-न-कभी किसी अस्पताल या नर्सिंग होम में अवश्य गए होंगे। वहाँ आपने यह ध्यान दिया होगा कि किस तरह कुछ लोग रोगियों तथा पीड़ितों की सेवा करते हैं। ऐसे दृश्य आप में भी दूसरों के लिए कुछ कर पाने की इच्छा जगाते होंगे। अपनों की सेवा तो सभी करते हैं, पर बड़ी बात तो तब है, जब दूसरों के लिए भी कुछ किया जाए। दूसरों के लिए कुछ करने की भावना से भरे लोग जाति, क्षेत्र, भाषा, धर्म, लिंग व रंग आदि के बंधन को नहीं मानते। वे तो बस यह मानते हैं कि मनुष्य-मनुष्य में भेद कैसा? मनुष्य तो मनुष्य है, वह और कुछ हो ही नहीं सकता। आइए, इस पाठ के माध्यम से ऐसी ही भावना रखने वाले लोगों के विषय में जानने एवं उनसे प्रेरणा लेने का प्रयास करते हैं।

उद्देश्य

इस पाठ को पढ़ने के बाद आप—

- मानव-जीवन में सेवा-भाव और करुणा, प्रेम तथा उदारता के महत्त्व का उल्लेख कर सकेंगे;
- क्षेत्र, भाषा, जाति, धर्म एवं रंग-भेद आदि के बारे में अपने विचार प्रस्तुत कर सकेंगे;
- विश्व-स्तर पर त्याग व समर्पण के क्षेत्र में महिलाओं के योगदान के विषय में बता सकेंगे;
- पाठ की भाषा-शैली पर टिप्पणी कर सकेंगे;
- रिपोर्ताज विधा का वर्णन कर सकेंगे।

टिप्पणी

5.1 मूल पाठ

कल तक जिनका अतिथि था, आज उनका परिचारक हो गया; क्योंकि मेरी आतिथेया अचानक रोग की लपेट में आ गईं और उन्हें इंदौर के रॉबर्ट नर्सिंग होम में लाना पड़ा।

यह है सितंबर, 1951 !

रोग का आघात पूरे वेग में, परिणाम कँपकँपाता और वातावरण चिंता से घिरा-घिरा कि हम सब सुस्त। तभी मैंने चौंक कर देखा कि अपने विशिष्ट धवल वेश में आच्छादित नारी कमरे में आ गई है।

देह उनकी कोई पैंतालीस बसंत देखी, वर्ण हिम-श्वेत, पर अरुणोदय की रेखाओं से अनुरंजित, कद लंबा और सुता-सधा।

''लंबा मुँह अच्छा नहीं लगता, बीमार के पास लंबा मुँह नहीं,'' आते ही उन्होंने कहा। साफ़-सुथरी भाषा, उच्चारण साफ़ और स्वर आदेश का; पर आदेश न अधिनायक का, न अधिकारी का, पूर्णतया माँ का, जिसका आरंभ होता है शिकंजे से और अंत गोद में।

हाँ, वे माँ ही थीं: होम की अध्यक्षा मदर टेरेसा, मातृभूमि जिनकी फ़्रांस और कर्मभूमि भारत! उभरती तरुणाई से उम्र के इस ढलाव तक रोगियों की सेवा में तल्लीन; यही काम, यही धाम, यही राग, यही चाव और बस यही, यही !

उन्होंने रोगी के दोनों म्लान कपोल अपने चाँदनी-चर्चित हाथों से थपथपाए तो उसके सूखे अधरों पर चाँदी की एक रेखा खिंच आई और मुझे लगा कि वातावरण का तनाव कुछ कम हो गया।

तभी एक खटाक और हमारा डॉक्टर कमरे के भीतर। मदर ने उसे देखते ही कहा—''डॉक्टर, तुम्हारा बीमार हँस रहा है।''

''हाँ, मदर ! तुम हँसी बिखेरती जो हो,'' डॉक्टर ने अपने जाने कितने अनुभव यों एक ही वाक्य में गूँथ दिए।

मैंने भावना से अभिभूत हो सोचा—जो बिना प्रसव किए ही माँ बन सकती है, वही तीस रुपये मासिक पर बीस वर्ष से दिन और रात सेवा में लग सकती है और वही पीड़ितों के तड़पते जीवन में हँसी बिखेर सकती है।

चित्र 5.1

शब्दार्थ

परिचारक	-	रोगी की सेवा करने वाला
आतिथेया	-	मेज़बान (अतिथि का सत्कार करने वाली)
आघात	-	हमला, चोट
विशिष्ट	-	विशेष
पैंतालिस बसंत देखना	-	पैंतालिस वर्ष की उम्र
धवल	-	सफ़ेद
आच्छादित	-	ढकी हुई
हिम-श्वेत	-	बर्फ़ के समान सफ़ेद
अरुणोदय	-	सूर्योदय
अनुरंजित	-	रँगी हुई
सुता-सधा	-	छरहरा
अधिनायक	-	तानाशाह
शिकंजा	-	जकड़ने या कसने वाला
तरुणाई	-	युवावस्था
तल्लीन	-	तन्मय/निमग्न
म्लान	-	मुरझाया हुआ/फीका
कपोल	-	गाल
चाँदनी-चर्चित	-	चाँदनी की आभा वाले
धाम	-	ठिकाना
राग	-	लगाव
चाव	-	शौक
अधरों	-	होंठों
अभिभूत	-	डूबकर
प्रसव	-	बच्चे को जन्म देना
हँसी बिखेरना	-	खुशी देना

टिप्पणी

तीसरे पहर का समय, थर्मामीटर हाथ में लिए वे आईं—मदर टेरेसा और उनके साथ एक नवयुवती, उसी विशिष्ट धवल वेश में, गौर और आकर्षक। हाँ, गौर और आकर्षक, पर उसके स्वरूप का चित्रण करने में ये दोनों ही शब्द असफल। यों कहकर उसके आस-पास आ पाऊँगा कि शायद चाँदनी को दूध में घोलकर ब्रह्मा ने उसका निर्माण किया हो। रूप और स्वरूप का एक दैवी साँचा-सी वह लड़की। नाम उसका क्रिस्ट हैल्ड और जन्मभूमि जर्मनी।

फ्रांस की पुत्री मदर टेरेसा और जर्मनी की दुहिता क्रिस्ट हैल्ड एक साथ—एक रूप, एक ध्येय, एक रस।

''तुम्हारा देश महान है, जो युद्ध के देवता हिटलर को भी जन्म दे सकता है और तुम्हारे-जैसी सेवाशील बालिका को भी,'' मैंने उससे कहा, तो दर्प से दीप्त हो वह स्टेच्यू हो गई और अपना दाहिना पैर पृथ्वी पर वेग से ठोंककर बोली— ''यस-यस।''

वह दूसरे कमरे में चली गई, तो मदर टेरेसा को टटोला, ''आप इस जर्मन लड़की के साथ प्यार से रहती हैं?''

बोली, ''हाँ, वह भी ईश्वर के लिए काम करती है और मैं भी, फिर प्यार क्यों न हो?''

चित्र 5.2

मैंने नश्तर चुभाया— ''पर फ्रांस को हिटलर ने पददलित किया था, यह आप कैसे भूल सकती हैं?''

नश्तर तेज़ था, चुभन गहरी; पर मदर का कलेजा उससे अछूता रहा। बोलीं— ''हिटलर बुरा था, उसने लड़ाई छेड़ी, पर उससे इस लड़की का भी घर ढह गया और मेरा भी; हम दोनों एक।''

'हम दोनों एक'—मदर टेरेसा ने इतने गहरे डूब कर कहा कि जैसे मैं उनसे उनकी लड़की छीन रहा था और उन्होंने पहले ही दाँव में मुझे चारों खाने दे मारा। मदर चली गईं, मैं सोचता रहा। मनुष्य-मनुष्य के बीच मनुष्य ने ही कितनी दीवारें खड़ी की हैं—ऊँची दीवारें, मज़बूत फ़ौलादी दीवारें, भूगोल की दीवारें, जाति-वर्ग की दीवारें। कितनी मनहूस, कितनी नगण्य, पर कितनी अजेय।

शब्दार्थ

गौर	-	गोरा
दैवीय	-	अलौकिक
दुहिता	-	बेटी
ध्येय	-	उद्देश्य
दर्प	-	गर्व
दीप्त	-	दमकती
स्टेच्यू	-	मूर्ति
नश्तर	-	धारदार औज़ार (जैसे चाकू, उस्तरा आदि)
पद-दलित	-	पैरों से कुचला, रौंदा
चारों खाने दे मारना	-	पराजित कर देना
फ़ौलादी	-	लोहे की तरह मज़बूत
नगण्य	-	जो गिनने लायक न हो (यहाँ मामूली)

क्रिस्ट हैल्ड के पिता जर्मनी में एक कॉलेज के प्रिंसिपल हैं और उसने अभी पाँच वर्षों के लिए ही सेवा का व्रत लिया है।

रोगिणी के गहरे काले बाल देखकर उसने कहा, ''तुम्हारे काले बाल मेरे पिता के से हैं।'' कहा और स्मृतियों में खो-सी गई।

मुझे लगा कि मैं ही क्रिस्ट हैल्ड हूँ। अपने माता-पिता से हज़ारों मील दूर, एक अजनबी देश में, अकेली, खोई, छली-सी और मेरी आँखें भर आईं।

लड़की मेरे आँसुओं में डूब-डूब गई और किनारा पाने को उसने जल्दी से उन्हें अपने रुमाल से पोंछ दिया। उसकी सदा हँसती आँखें, नरम हो आईं, पर ज़रा भी नम नहीं। मैंने पूछा, ''घर से चलते समय रोई थीं तुम?'' उसका भोला उत्तर था, ''न, माँ बहुत रोई थी।''

फटी आँखों से कुछ देर उसे मैं देखता रहा, तब कुछ बिस्किट उसे भेंट किए। बोली, ''धन्यवाद, थैंक यू, तांग शू।'' वह अक्सर हिंदी, अंग्रेज़ी, जर्मन भाषाओं के शब्द मिलाकर बोलती है।

हम सब हँस पड़े और वह हँसती-हँसती भाग गई।

मदर टेरेसा बातों के मूड में थीं। मैंने उनके हृदय-मानस में चोर दरवाज़े से झाँका—''मदर, घर से आने के बाद फिर आप घर नहीं गईं, कभी मिलने-जुलने भी?'' कान अपना काम कर चुके थे, वाणी को अपना काम करना था, पर मदर ने उसकी राह मोड़ दी और तब मैंने सुनी यह कहानी।

कई वर्ष हुए। फ्रांस में विश्व-भर के पूजा-गृहों का एक सम्मेलन हुआ। भारत की दो मदर भी प्रतिनिधि होकर उस सम्मेलन में गईं। वे फ्रांस की ही थीं, उनके माता-पिता फ्रांस में ही थे। उन्हें पता था कि बरसों बाद हमारी पुत्रियाँ आ रही हैं।

दोनों माताएँ अपनी पुत्रियों का स्वागत करने जहाज़ पर आईं, पर विचित्र बात यह हुई कि वे दोनों अपनी पुत्रियों को पहचान न पाईं और आपस में कहती रहीं कि तुम्हारी बेटी कौन-सी है। अंत में उनका नाम पूछा और तब गले मिलीं।

कहानी पूरी हुई, तो कई प्रश्न उठे, पर मदर टेरेसा उनके उठते-न-उठते भाग गईं। निश्चय ही उन दोनों अनपहचानी पुत्रियों में से एक वे स्वयं थीं।

बस इतना ही एक दिन मैं उनसे और कहला सका—''घर से बहुत चिट्ठी आती हैं, तो मैं यहाँ के किसी स्थान का फ़ोटो भेज देती हूँ।''

रोग पूरे उभार पर था, रोगी के लिए असह्य। मदर टेरेसा ने कहा, ''तुम्हारे लिए आज विनती करूँगी।'' उनका चेहरा उस समय भक्त की श्रद्धा से आलोकित हो उठा था।

रोगी ने कहा, ''कल भी करना मदर।'' मदर के स्वर में मिसरी-ही-मिसरी, पर मिसरी कूजे की थी, जो मिठास तो तुरंत ही देती थी, पर घुलती तुरंत नहीं और बल का प्रयोग

व्रत	– संकल्प/निश्चय
नम	– भीगा
फटी आँखों से	– हैरानी से/आश्चर्य से
असह्य	– जिसे सहा न जा सके
कूजे की मिसरी	– साँचे वाली मिसरी
सौम्य	– शालीन
उत्सर्ग	– त्याग/बलिदान

हो, तो मुँह तक को छील देती है। बोलीं, "न, कल उसके लिए करूँगी, जिसे सबसे अधिक कष्ट होगा।" जैसे हज़ार वाट का बल्ब मेरी आँखों में कौंध गया।

चित्र 5.3

मैंने बहुतों को रूप से पाते देखा था, बहुतों को धन से और गुणों से भी बहुतों को पाते देखा था, पर मानवता के आँगन में समर्पण और प्राप्ति का यह अद्भुत सौम्य स्वरूप आज अपनी ही आँखों से देखा कि कोई अपनी पीड़ा से किसी को पाए और किसी का उत्सर्ग सदा किसी की पीड़ा के लिए ही सुरक्षित रहे।

ऊपर के बरामदे में खड़े-खड़े मैंने एक जादू की पुड़िया देखी– जीती जागती जादू की पुड़िया। आदमियों को मक्खी बनाने वाला कामरूप का जादू नहीं, मक्खियों को आदमी बनाने वाला जीवन का जादू– होम की सबसे बुढ़िया मदर मार्गरेट। कद इतना नाटा कि उन्हें गुड़िया कहा जा सके, पर उनकी चाल में गज़ब की चुस्ती, कदम में फुर्ती और व्यवहार में मस्ती; हँसी उनकी यों कि मोतियों की बोरी खुल पड़ी और काम यों कि मशीन मात माने। भारत में चालीस वर्षों से सेवा में रसलीन, जैसे और कुछ उन्हें जीवन में अब जानना भी तो नहीं!

ऑपरेशन के लिए एक रोगी आया, ऐश-आराम में पला जीवन। कहने की बेचारे को आदत, सहने का उसे क्या पता? पर कष्ट क्या पात्र की क्षमता देखकर आता है?

"मदर मर जाऊँगा," उसने विह्वल होकर कहा।

वातावरण चीत्कार की विह्वलता से भर गया, पर बूढ़ी मदर की हँसी के दीपक ने झपकी तक नहीं खाई। बोलीं, "कुछ नहीं, कुछ नहीं, आज है ऐवरीथिंग (सब कुछ), कल समथिंग (कुछ-कुछ) और बस, तब नथिंग (कुछ नहीं)" और वे इतने ज़ोर से खिलखिलाकर हँसीं कि आस-पास कोई होता, तो झेंप जाता।

एक रोगी उन्होंने देखा–चिंता के गर्त से उठ-उभरती रोगिणी। ज़ोर से चुटकियाँ बजाकर वे किलकीं– "जी-उती, जी-उती।" अर्थ है– जी-उठी, जी-उठी।

यह अनुभव कितना चमत्कारी है कि यहाँ जो जितनी अधिक बूढ़ी है, वह उतनी ही अधिक उत्फुल्ल, मुस्कानमयी है। यह किस दीपक की जोत है? जागरूक जीवन की ! लक्ष्यदर्शी जीवन की! सेवा-निरत जीवन की! अपने विश्वासों के साथ एकाग्र जीवन की! भाषा के भेद रहे हैं, रहेंगे भी, पर यह जोत विश्व की सर्वोत्तम जोत है।

सिस्टर क्रिस्ट हैल्ड का तबादला हो गया–अब वह धानी के भील सेवा-केंद्र में काम करेगी। ओह, उस जंगली जीवन में यह कर्पूरिका; पर कर्पूरिका तो अपने सौरभ में इतनी लीन है कि उसे स्वर्ग के अतिरिक्त और कुछ दिखता ही नहीं।

टिप्पणी

कामरूप	– असम का प्राचीन नाम
रसलीन	– आनंद में डूबी
विह्वल	– बेचैन
चीत्कार	– पीड़ा से चीखना
झेंप	– लाज, शरम, संकोच (शरमाना)
गर्त	– गहराई, (गड्ढा)
उत्फुल्ल	– खिली हुई/प्रसन्न
लक्ष्यदर्शी	– उद्देश्यपूर्ण
सेवानिरत	– सेवा में लगा हुआ
कर्पूरिका	– कपूर जैसी गोरी देह वाली
सौरभ	– सुगंध/खुशबू

टिप्पणी

निस्संग	– तटस्थ, अलग
निर्द्वंद्व	– द्वंद्व से रहित
मानस–चक्षु	– मन के नेत्र
कृतार्थ	– धन्य

वह हम लोगों को मिलने आई–हँसती, खिलती, बिखरती और कुदकती। यहाँ से जाने का उसे विषाद नहीं, एक नई जगह देखने का चाव उसके रोम-रोम में, पर मुझे उसका जाना कचोट-सा रहा था। वह दूसरे रोगियों से मिलने चली गई।

इधर-उधर आते-जाते वह दो-तीन बार कमरे के बाहर से निकली, पर फिर एक बार भी उसने उधर नहीं झाँका। मैंने अपने से कहा, ''कोई लाख उलझे, उसे किसी में नहीं उलझना है।'' और तब सिस्टर क्रिस्ट हैल्ड का, सच यह है कि सिस्टर-मदर वर्ग का निस्संग, निर्लिप्त, निर्द्वंद्व जीवन पूरी तरह मेरे मानस-चक्षुओं में समा गया और फिर मैंने आप ही आप कहा–''सिस्टर क्रिस्ट हैल्ड, हम भारतवासी गीता को कंठ में रखकर धनी हुए, पर तुम उसे जीवन में ले कृतार्थ हुई।''

–कन्हैयालाल मिश्र 'प्रभाकर'

बोध प्रश्न

सर्वाधिक उपयुक्त विकल्प चुनकर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

1. 'देह उनकी कोई पैंतालीस बसंत देखी' के माध्यम से लेखक क्या बताना चाहता है?

   (क) सौंदर्य ☐ (ख) मौसम ☐

   (ग) उम्र ☐ (घ) चुस्ती-फुर्ती ☐

2. हिटलर को मदर ने बुरा कहा, क्योंकि वह–

   (क) फ्रांस को जीतना चाहता था ☐ (ख) नफ़रत फैला रहा था ☐

   (ग) जर्मनी का रहनेवाला था ☐ (घ) स्त्री-विरोधी था ☐

3. 'काम यों कि मशीन मात माने' का आशय है–

   (क) सभी उपकरण चलाने का कौशल ☐ (ख) शीघ्रता से काम कर लेना ☐

   (ग) मशीनों को बुरा मानना ☐ (घ) मशीनों से भी तेज़ काम करना ☐

आइए समझें

आइए, अब इस पाठ को तीन अंशों में बाँटकर समझने का प्रयास करते हैं।

टिप्पणी

5.2.1 अंश-I

कल तक जिनका...पर कितनी अजेय।

पाठ के आरंभ में लेखक ने इंदौर के रॉबर्ट नर्सिंग होम का उल्लेख किया है। इस नर्सिंग होम में लेखक अपने किसी जानकार को बीमार होने पर, इलाज के लिए लेकर जाता है। यहीं पर उसने पहली बार मदर टेरेसा और क्रिस हैल्ड को देखा। लेखक इन दोनों के रूप-सौंदर्य तथा रोगियों के प्रति इनकी आत्मीयता और सेवा-भावना से बहुत प्रभावित, प्रेरित हुआ। इसके साथ ही लेखक यह व्यक्त करता है कि मानवता की सेवा करने वालों का हृदय एक होता है, वे मनुष्य-मनुष्य के बीच खड़ी की गई दीवारों को ढहा देते हैं। इस अंश में इन बातों का ऐसा वर्णन किया गया है मानो पाठक के सामने प्रत्यक्ष घटित हो रहा हो।

मदर टेरेसा का नाम तो हम सब जानते ही हैं। लंबे कद व गोरे रंग वाली टेरेसा सफ़ेद साड़ी पहने माँ की मूर्ति जैसी दिखती थीं। लेखक ने जब इस नर्सिंग होम में मदर को देखा, उस समय मदर की आयु लगभग 45 वर्ष की होगी। लेखक ने मदर टेरेसा के रोग्रस्त वातावरण में आने और उनकी उम्र और प्रभावशाली व्यक्तित्व का आँखों देखा वर्णन किया है। निम्नलिखित उद्धरण पर ध्यान दीजिए– ''देह उनकी कोई पैंतालीस बसंत देखी, वर्ण हिम-श्वेत, पर अरुणोदय की रेखाओं से अनुरंजित, कद लंबा और सुता–सधा।''

इस वर्णन को पढ़कर मदर का चित्र हमारे सामने उपस्थित हो जाता है। बर्फ की तरह सफेद रंग पर उगते हुए सूर्य की किरणें पड़ें तो बर्फ का रंग लालिमायुक्त हो जाता है– ऐसा ही आकर्षक रूप था मदर का।

मदर नहीं चाहती थीं कि रोग, विपत्ति तथा अन्य कष्ट हमारे समाज में बचे रहें। मदर ने इनमें से एक क्षेत्र चुन लिया। वे रोगियों की सेवा करने लगीं। मदर जब किसी को कुछ कहतीं तो वह किसी तानाशाह व अधिकारी का आदेश न होता, बल्कि सहृदय माँ की ममता उसमें झलकती थी। जैसे कभी आपकी माँ भी आपको डाँटती होंगी, पर उस डाँट में उनका स्नेह समाया होता है।

जैसे आप अपनी माँ के स्पर्श मात्र से खुश हो जाते हैं, वैसे ही मदर टेरेसा के स्पर्श से रोगी अपनी पीड़ा भूलकर हँसने लगते थे। एक स्थान पर मदर के स्पर्श के प्रभाव का उल्लेख किया गया है। कष्ट से ग्रस्त रोगियों को मदर का स्पर्श-मात्र ठंडक पहुँचा देता था। पीड़ितों को खुश देखने के लिए उन्होंने अपना सारा जीवन लगा दिया। स्वयं बच्चे को जन्म दिए बिना भी किसी नारी में इतना ममत्व व इतनी करुणा हो सकती है, यह मदर टेरेसा को देखकर पता चलता है। सारा संसार उन्हें माँ कहता है, क्योंकि टेरेसा के लिए सभी उनके अपने बच्चे थे। चाहे, उन्होंने किसी संतान को जन्म न दिया हो पर उनके लिए संतान की कमी न थी। और संतान भी कैसी, जिसे माँ की औरों से ज्यादा ज़रूरत हो।

राबर्ट नर्सिंग होम में

इसी नर्सिंग होम में लेखक ने मानव-सेवा को समर्पित एक और महिला को देखा। वह भी बहुत आकर्षक थी। ऐसा स्वरूप, जैसे कोई देवी हो! जर्मनी में जन्मी क्रिस्ट हैल्ड भी मदर टेरेसा के साथ ही रॉबर्ट नर्सिंग होम में रोगियों की निःस्वार्थ-भाव से सेवा करती थीं। क्रिस्ट हैल्ड के व्यक्तित्व और सौंदर्य का भी वैसा वर्णन ही लेखक ने किया है, जैसा मदर का किया था। जिन शब्दों में यह चित्रण किया गया है, उन पर आपका अपने आप ही ध्यान गया होगा।

हम सब जानते हैं कि द्वितीय विश्वयुद्ध के समय जर्मनी और फ्रांस एक-दूसरे के घोर विरोधी थे। दोनों एक दूसरे के विरूद्ध लड़े भी थे। लेखक को इस बात पर थोड़ा आश्चर्य होता है कि फ्रांस की मदर टेरेसा और जर्मनी की क्रिस्ट हैल्ड यहाँ एक साथ, एक कर्म, एक ध्येय लिए मानव सेवा में लीन थीं। लेकिन हम यह जानते हैं कि त्याग-तपस्वी, निस्वार्थ-भाव से काम करने वाले लोग प्रत्येक देश में होते हैं। जर्मनी में हिटलर ने ही जन्म नहीं लिया, विश्व का भला करने वाले वैज्ञानिकों, दार्शनिकों, चिकित्सकों आदि ने भी वहाँ जन्म लिया है। मानवता की सेवा करने वाली क्रिस हैल्ड भी वहीं की हैं। इसीलिए लेखक क्रिस हैल्ड से कहता है– "तुम्हारा देश महान है, जो युद्ध के देवता हिटलर को भी जन्म दे सकता है और तुम्हारे जैसी सेवाशील बालिका को भी।"

चित्र 5.4

लेखक मदर से थोड़ी चुटकी लेता है। मदर के साथ लेखक की यह बातचीत बहुत रोचक है, साथ ही हमें प्रेरणा भी देती है। कभी-कभी हमें यह गलतफ़हमी हो जाती है कि यदि दो देशों के बीच राजनीतिक संबंध ठीक नहीं होते तो उनकी जनता के बीच के संबंध भी खराब हो जाते हैं। ऐसा नहीं होता। रॉबर्ट नर्सिंग होम में फ्रांस की मदर टेरेसा और जर्मनी की क्रिस हैल्ड एक होकर काम करती हैं। मदर के साथ लेखक के इस संवाद को पढ़िए–

"आप इस जर्मन लड़की के साथ प्यार से रहती हैं?"

बोली, 'हाँ, वह भी ईश्वर के लिए काम करती है और मैं भी, फिर प्यार क्यों न हो?" मैने नश्तर चुभाया–" पर फ्रांस को हिटलर ने पददलित किया था, यह आप कैसे भूल सकती हैं?"

नश्तर तेज़ था, चुभन गहरी; पर मदर का कलेजा उससे अछूता रहा। बोलीं– "हिटलर बुरा था, उसने लड़ाई छेड़ी, पर उससे इस लड़की का भी घर ढह गया और मेरा भी; हम दोनों एक।"

जानते हैं न कि युद्ध में किसी का भला नहीं होता। हिटलर ने युद्ध छेड़ा तो उससे मदर के देश का तो नुकसान हुआ ही, स्वयं हिटलर के देश की वासिनी क्रिस हैल्ड का भी घर गिरा। संकट और दुख एकता स्थापित करता है। मदर इस सचाई को जानती हैं और वे क्रिस हैल्ड के साथ एक होकर दुखियों की सेवा करती हैं।

अब आप ही सोचिए कि क्या किसी व्यक्ति से इस कारण द्वेष रखना उचित है कि वह किसी अन्य देश व धर्म का है? मनुष्य-मनुष्य के बीच भेद कैसा? क्या हम किसी को जाति, धर्म, भाषा और रंग के आधार पर बाँट सकते हैं? न जाने ऐसी कितनी ही दीवारें हमने खड़ी कर रखी हैं जो सारी मनुष्य जाति को एक परिवार नहीं बनने देतीं। हम केवल मानव हैं, न कि मराठी-गुजराती या हिंदू-मुस्लिम या ब्राह्मण-क्षत्रिय। बाँटने वाली ये दीवारें गिरानी होंगी तभी सबका कल्याण संभव है। वैसे भी भारतीय दर्शन में पूरे विश्व को एक परिवार के रूप में माना गया है।

क्रियाकलाप-5.1

'प्रयास', 'हेल्पेज़ इण्डिया' तथा 'केयर' जैसी अनेक संस्थाएँ समाज के लिए अपना योगदान दे रही हैं। आपके आस-पास या आपके इलाके में भी कुछ ऐसी संस्थाएँ होंगी जो निःस्वार्थ भाव से अनाथों, बूढ़ों व विकलांगों अथवा पशु-पक्षियों की सेवा कर रही हैं। ऐसी कुछ संस्थाओं (कम-से-कम दो) की जानकारी एकत्रित करें। उनमें से आप किसके कार्य में योगदान देना चाहेंगे और क्यों?

	संस्था का नाम	योगदान के क्षेत्र
•	....	....
	....	....
•	....	....
	....	....
•	....	....
	....	....

5.2.2 अंश-2

क्रिस्ट हैल्ड के पिता...पीड़ा के लिए ही सुरक्षित रहे।

पाठ के इस दूसरे अंश में क्रिस हैल्ड और मदर टेरेसा की पारिवारिक पृष्ठभूमि का थोड़ा–सा परिचय दिया गया है। घर में इन दोनों को भरपूर स्नेह मिला पर ये दोनों अपने-अपने परिवारों को छोड़कर हज़ारों मील दूर मनुष्यता की सेवा करने निकल पड़ीं। इस अंश में यह भी बताया गया है कि ये दोनों–विशेष रूप से मदर कर्त्तव्यपरायणता से सेवा करती हैं और इसे लेकर वे भावुक कभी नहीं होतीं–इससे उनकी सेवा का लाभ उसे मिलता है जिसे उसकी सबसे अधिक ज़रूरत होती है।

ऐसा हमारे साथ भी होता है कि हमें या हमारे माता-पिता को रोज़गार की तलाश में अपने परिवार, अपने गाँव-शहर या देश से दूर जाना पड़ता है। ऐसी स्थिति में मुख्यतः आजीविका कमाना हमारा उद्देश्य होता है, पर क्रिस्ट हैल्ड का उद्देश्य मानव की सेवा करना था। यही है जीवन का महान उद्देश्य। हमें भी स्वार्थ को त्यागकर दूसरों के लिए कुछ करना चाहिए और ऐसा हमें उत्साह से करना चाहिए, जैसा क्रिस्ट किया करती थीं। काम में लगी हुई क्रिस्ट कभी-कभी भावुक हो जाती हैं। कब? तब जब किसी को देखकर उसे घर की याद आती है, लेकिन वह फौरन संभलकर सेवा में लग जाती हैं। लेखक ने क्रिस्ट की इस भावदशा का बहुत ही भावपूर्ण उल्लेख किया है। उसने लिखा है कि क्रिस्ट हैल्ड की आँखें नरम हो आईं, पर ज़रा भी नम नहीं हुईं, अर्थात् घर की याद ने क्रिस्ट हैल्ड को थोड़ा भावुक तो बना दिया, पर उसने आँखों में पानी नहीं आने दिया। जर्मनी में जन्म लेने के कारण वे जर्मन भाषा, अंग्रेज़ी भाषा का अध्ययन करने के कारण अंग्रेज़ी और भारत में रहने के कारण हिंदी भी थोड़ी-बहुत बोल लेती थीं। कोई भाषा उनके काम में बाधा नहीं बनती थी। हर किसी की आवश्यकता को समझते हुए उनका अच्छी तरह ध्यान रखती थीं।

यह तो हुई बात क्रिस्ट हैल्ड की। अब थोड़ा मदर टेरेसा के बारे में भी जान लें। वे भी तो फ़्रांस में रहने वाले अपने परिवार को छोड़कर भारत में रहने लगी थीं। लेखक ने उनसे पूछा कि वे अपने घर वापस क्यों नहीं गईं? उन्होंने कहा कि वे कई वर्षों बाद एक बार गई थीं पर उनकी माँ उन्हें पहचान ही नहीं पाईं। बात यह थी कि मदर की वेशभूषा व सेवा-कर्म ने उन्हें इतना बदल जो दिया था। मदर ने यह भी बताया कि घर से बहुत पत्र आते हैं पर उनके जवाब में वे यहाँ की कुछ तस्वीरें यानी फोटो भेज देती हैं। सोचिए, वे ऐसा क्यों करती होंगी। शायद वे बिना कुछ लिखे, बहुत कुछ दिखला देना चाहती थीं। ऐसा माना भी जाता है कि चित्र बात को और अधिक प्रभावी ढंग से स्पष्ट कर देते हैं। यहाँ किए गए काम को दिखाकर वे अपने परिवार को अपनी कुशलता की सूचना पहुँचा दिया करती थीं। यहाँ के लोगों को उनकी आवश्यकता अधिक थी। चित्रों को देखकर परिवार गर्व करता होगा।

आप प्रार्थना, दुआ या अरदास तो ज़रूर करते होंगे। ईश्वर से कुछ-न-कुछ माँगते भी होंगे। जो कुछ हम माँगते हैं वह अपने और अपनों के लिए होता है। कई बार हमारी मन्नतें पूरी होती हैं, तो कई बार नहीं भी। माना जाता था कि मदर की हर माँग ईश्वर पूरी करते थे। उनकी प्रार्थना का बहुत असर होता था। वह इसलिए कि वे अपने लिए नहीं बल्कि दूसरों के लिए माँगती थीं। सभी की पीड़ा को वे अपनी पीड़ा मानती थीं। उसके कष्टों को दूर करने के लिए दिन-रात एक कर देतीं और उसके लिए प्रार्थना करती थीं। हुई न यह बड़ी बात! इसे ही समानुभूति कहते हैं। आप भी बहुत से मित्र बना लेते होंगे। धन के बल पर बहुत से सेवक रख सकते हैं पर किसी की सेवा कर उसे अपना बना लेना यह है बड़ी बात। यही तो किया मदर टेरेसा व क्रिस्ट हैल्ड ने। आइए, अंतिम अनुच्छेद को एक बार फिर से समझें—

इस अनुच्छेद में लेखक ने उल्लेख किया है कि कोई अपने रूप के सौंदर्य से लोगों को आकर्षित करता है, कोई अपने धन से बहुत कुछ प्राप्त कर लेता है और कोई अपने गुणों के कारण संपत्ति या यश अर्जित करता है। लेकिन मदर इन सबसे अलग–विलक्षण हैं। मदर, मानवता के प्रति अपने समर्पण-भाव के कारण अपने प्रति आदर और श्रद्धा अर्जित करती हैं। जो पीड़ित और कष्ट में होते हैं, जिन्हें कहीं सहारा नहीं; लेकिन जिन्हें सहारे की सबसे अधिक जरूरत होती है, वे मदर को प्राप्त करते हैं और मदर का त्याग-बलिदान भी उन्हीं के लिए सुरक्षित है। अर्थात् जिनके पास न रूप है, न धन, न गुण वे भी कुछ पा सकते हैं, लेकिन उन्हें कुछ दे सकने वाले केवल मदर जैसे लोग होते हैं। अब आपको मदर का यह कथन समझ में आ गया होगा कि, "न, कल उसके लिए (बिनती) करूँगी, जिसे सबसे अधिक कष्ट होगा।"

मदर के स्वभाव की कठोरता का भी उल्लेख लेखक ने किया है, लेकिन इसे पढ़कर आप यह समझ गए होंगे, कि यह कठोरता सकारात्मक है, इससे अधिक-से-अधिक लोगों का और ज्यादा कष्ट से ग्रस्त लोगों का भला होता है। लेखक ने मदर के स्वर की तुलना मिसरी के कूजे से की है। मिसरी का कूजा बड़ा और कठोर होता है, मीठा होते हुए भी। मदर भी जानती हैं कि सेवा की ज़रूरत किसे अधिक है, अन्य के प्रति उन्हें थोड़ा कठोर होना ही पड़ता है, पर यह कठोरता किसी के लिए मीठी साबित होती है।

पाठगत प्रश्न-5.1

सर्वाधिक उपयुक्त विकल्प चुनकर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

1. मदर टेरेसा का जीवन-उद्देश्य था—

   (क) ईसाई-धर्म का प्रचार करना।

   (ख) महिलाओं को जागरूक बनाना।

   (ग) भारत की संस्कृति को समझना।

   (घ) रोगियों व ज़रूरतमंदों की सेवा करना।

2. हिटलर के लिए उपयुक्त विशेषणों का समूह है—

   (क) वीर, विजेता, शासक

   (ख) संवेदनशील, सहृदय, शासनाध्यक्ष

   (ग) क्रूर, निरंकुश, तानाशाह

   (घ) निर्दय, साहसी, अधिनायक

टिप्पणी

3. लेखक ने सबसे अधिक महत्त्व किसे दिया है?

(क) रोगों को दूर करने को ☐ (ख) भावुकतापूर्ण आचरण को ☐

(ग) कठोरतापूर्ण व्यवहार को ☐ (घ) मानवता के प्रति समर्पण को ☐

5.2.3 अंश-3

ऊपर के बरामदे में...जीवन में ले कृतार्थ हुई।

पाठ के अंतिम अंश में मानव-कल्याण में लगी एक और मदर मार्गरेट का चित्रण किया गया है। मदर मार्गरेट बुजुर्ग हैं, लेकिन उनका अचूक प्रभाव छोड़नेवाला जादुई व्यवहार, उनकी चुस्ती-फुर्ती और हँसी का लेखक द्वारा वर्णन अत्यंत पठनीय है। इस अंश के अंत में क्रिस्ट हैल्ड के तबादले का भी उल्लेख है।

आपने जादूगर के करतब तो अवश्य देखे होंगे। पलभर में वह कुछ भी करके दिखा सकता है। एक चीज़ को दूसरी चीज़ में बदल सकता है। यह सब तो हमारे भ्रम के कारण होता है। मदर मार्गरेट भी जादू करती है, पर उनका जादू सच्चा है। लेखक रॉबर्ट नर्सिंग होम में एक ऐसी महिला मदर मार्गरेट से मिला, जो अपने व्यवहार व सेवा से रोगियों को पलभर में ठीक कर देतीं। इतनी बूढ़ी होने के बाद भी उनमें गज़ब की फुर्ती थी। मार्गरेट के जादू से कष्ट के कारण तड़पता रोगी पलभर में भला-चंगा हो जाता।

इसीलिए लेखक ने उन्हें जादू की पुड़िया कहा है। आपने कामरूप के जादू की कहानियाँ सुनी होंगी। कामरूप असम में है। वहाँ के बारे में कहानियाँ प्रचलित थीं कि जो वहाँ बाहर से जाता था, उसे मक्खी, कुत्ता-बिल्ली आदि बनाकर छोड़ दिया जाता था। ऐसा जादू किस काम का? लेखक के अनुसार जादू तो मदर मार्गरेट करतीं हैं जो अनुकरण करने लायक है। मदर का जादू मक्खियों जैसा जीवन बिताने वाले लोगों को वास्तविक मनुष्य बनाने का जादू है। जानते हैं मक्खियों जैसा जीवन बिताने का आशय क्या है? इसका आशय है— बीमारी से ग्रस्त दयनीय जीवन। ऐसे ही लोगों की सेवा करके, उन्हें मनुष्य बनाने का काम मदर मार्गरेट कर रही हैं। रॉबर्ट नर्सिंग होम को लेखक ने 'जादू-होम' कहा है, क्योंकि यहाँ मदर टेरेसा हैं, क्रिस हैल्ड हैं और मदर मार्गरेट हैं, जो रोगियों की सेवा करके, उनका जीवन सुधार रही हैं।

टिप्पणी

पाठ में आगे यह पता चलता है कि इसी अस्पताल में एक अमीर रोगी आया जिसने कभी कोई दुख नहीं सहा था। वह बहुत तड़प रहा था। यहाँ पर लेखक ने थोड़ा व्यंग्य किया है। यह व्यंग्य ऐसे अमीरों पर है जो अपने छोटे से कष्ट को बहुत बढ़ा-चढ़ा कर देखते दिखाते हैं दूसरों के भयानक कष्ट उन्हें नहीं दिखाई देते। वैसे दुख कभी यह देखकर नहीं आता कि कौन कितना सह सकता है? अगर ऐसा होता तो छोटे मासूम बच्चे और कमज़ोर तथा वृद्ध कभी दुखी ही नहीं होते। मार्गरेट ने उसे समझाया कि अभी कष्ट है, फिर धीरे-धीरे कम हो जाएगा और थोड़े दिनों में बिल्कुल खत्म हो जाएगा। दुख या कष्ट अगर आया है तो थोड़ा-बहुत तो उसे सहना ही पड़ता है। हमें भी चोट लगती है तो हम उसका उपचार करते हैं और थोड़े दिनों में ठीक हो जाती है। सुख-दुख तो आते-जाते रहते हैं, हमें कष्ट के कारण निराश नहीं होना चाहिए। यहाँ पर एक आशय और भी है। आज सब कुछ है, कल थोड़ा कम है और फिर सबकुछ समाप्त। यही जीवन की नियति है, फिर छोटे-मोटे कष्टों से क्यों घबराना, हँसकर उनका सामना करना चाहिए।

अच्छा! यह सोचें कि आपके जीवन का लक्ष्य क्या है? अगर अभी तक इस पर विचार नहीं किया तो अब करें, क्योंकि हमें अपने जीवन को किस दिशा में आगे बढ़ाना है, यह तो पता होना ही चाहिए। इससे कर्म के प्रति उत्साह हमेशा बना रहता है। मार्गरेट भी इतनी बूढ़ी होने के बावजूद हमेशा खुश व उत्साही रहती थीं। आखिर उनमें कौन-सी ऐसी जोत यानी ज्योति थी जो उन्हें इतनी शक्ति व खुशी प्रदान करती थी। वह जोत थी—मानव—सेवा की।

लेखक को जब यह पता चला कि क्रिस्ट हैल्ड का तबादला धानी के भील सेवा-केंद्र पर हो गया, तो वह दुखी हो गया। लेकिन लेखक की इस चिंता से अनजान क्रिस्ट नई जगह जाने को लेकर बहुत उत्साहित थीं। इस दुख का एक कारण यह था कि धानी का जीवन कठिन है और क्रिस हैल्ड का शरीर नाजुक। इसीलिए लेखक ने कहा कि— ''ओह, उस जंगली जीवन में यह कर्पूरिका?'' अर्थात् उन कठिन परिस्थितियों में यह क्रिस्ट हैल्ड कैसे रह पाएगी। वहाँ जाकर लोगों की सेवा करने का उनमें जोश था। वस्तुतः सुविधाओं से विहीन ऐसी ही जगहों पर काम करने की ज़्यादा आवश्यकता है। इस बात को क्रिस्ट समझती हैं। आपको अगर किसी ऐसी जगह से जाने के लिए कहा जाए, जहाँ आप कई वर्षों से रह रहे हैं तो शायद आपको भी अच्छा न लगे। लेकिन जब आपको पता चले कि आपके कार्य का बहुत महत्व होगा तो आप बहुत खुश होंगे। क्रिस्ट के लिए सारी जगहें एक-सी थीं और वे हर जगह केवल मानव-सेवा करना चाहती थीं। अपने इस महान कार्य को करने के मार्ग में वह किसी स्थान को बाधा नहीं बनने देती थीं। हमारे जीवन में रोज़ नई चुनौतियाँ आती हैं, उन्हें स्वीकार करना चाहिए। सेवा-भाव को आधार बनाकर पूरा जीवन बिता देने की कला को लेखक ने वहाँ सीखा। शायद आप भी निःस्वार्थ भाव से सबके लिए स्वयं को समर्पित करने के महत्व को समझ पाएँगे।

आप बहुत-सी अच्छी-अच्छी बातें सुनते हैं। हमारे अनेक धार्मिक ग्रन्थ भी हमें खूब नीति की बातें समझाते हैं। 'गीता' में कर्म को बहुत महत्त्व दिया गया है, हम ये बात जानते

टिप्पणी

हैं, परंतु इस पर अमल नहीं करते। नित्य गीता पाठ करना या गीता की चर्चा करना ही उसे कंठ में रखना है। हम भारतीयों को इस बात पर गर्व भी है कि गीता एक भारतीय ग्रंथ है। पर जहाँ उसके अनुसार आचरण करने का प्रश्न है, वहाँ हम पिछड़ जाते हैं। लेकिन क्रिस्ट हेल्ड सच्चे अर्थों में गीता के अनुसार आचरण कर रही थीं। सारी अच्छी बातें हम सिर्फ सुनते हैं, जीवन में उतारते नहीं हैं। क्रिस्ट ने सही अर्थों में कर्म के ज्ञान को अपने जीवन में उतारा। जीवन में कर्म के सौंदर्य का सर्वाधिक महत्त्व है। यह बात आप एक अन्य पाठ 'सुखी राजकुमार' के माध्यम से भी जानेंगे। राबर्ट नर्सिंग होम में सेवा-भाव का जो रूप दिखा, उसमें जीवन जीने की कला का रहस्य छिपा था। यह सब देखकर लेखक आश्चर्यचकित था। उम्मीद है कि पाठ को पढ़कर आपको भी मानव-सेवा की प्रेरणा प्राप्त हुई होगी।

क्रियाकलाप-5.2

लेखक ने ज़रूरतमंद लोगों की सेवा में निस्वार्थ-भाव से लगी महिलाओं का आँखों देखा प्रभावशाली चित्रण किया है। आपके जीवन में भी कोई ऐसी घटना घटी होगी जिसे आप आज तक भूल नहीं पाए। ऐसी ही किसी घटना का आँखों देखा चित्रात्मक वर्णन कीजिए।

5.2.4 भाषा-शैली

'रॉबर्ट नर्सिंग होम' एक ऐसा पाठ है जिसमें संस्मरण, रेखाचित्र, रिपोर्ताज़ आदि विधाओं का संयोग हुआ है। इन विधाओं में विशिष्ट प्रकार की भाषा, शैलियों का प्रयोग होता है। इस पाठ में भी इन भाषा-शैलियों को देखा जा सकता है। कहीं पर ऐसा लगता है मानो लेखक आँखों देखा वर्णन कर रहा है, कहीं वह शब्दों के माध्यम से व्यक्ति चित्र बनाता है और कहीं भावुक होकर भाषा का व्यवहार करता है।

पाठ के आरंभ में ही आप देखते हैं कि आँखों देखा हाल सुनाया जा रहा है। उदाहरण देखिए:

"यह है सितंबर, 1951!

रोग का आघात पूरे वेग में, परिणाम कँपकँपाता और वातावरण चिंता से घिरा-घिरा कि हम सब सुस्त। तभी मैंने चौंककर देखा कि अपने विशिष्ट धवल वेष में आच्छादित नारी कमरे में आ गई है।''

मदर टेरेसा के साथ क्रिस्ट हैल्ड आती हैं तो उनका भी ऐसा ही वर्णन किया गया है। कभी-कभी आँखों देखी घटना के वर्णन को प्रभावशाली बनाने के लिए छोटे-छोटे ब्यौरे भी दिए जाते हैं। ऐसे ही ब्यौरे इस पाठ में भी आए हैं। उन स्थलों पर पाठ बहुत प्रभावशाली हो गया है, जहाँ इन ब्यौरों के माध्यम से मदर टेरेसा, क्रिस्ट हैल्ड और मदर मार्ग्रेट के व्यक्ति-चित्र खींचे गए हैं।

कहीं–कहीं लेखक इन तीनों पात्रों की मानव-सेवा से इतना प्रभावित हुआ है कि वह भावुकतापूर्ण अभिव्यक्तियाँ करता है। एक अभिव्यक्ति देखिए–

''हाँ, माँ ही थीं: होम की अध्यक्षा मदर टेरेसा, मातृभूमि जिनकी फ्रांस और कर्मभूमि भारत! उभरती तरुणाई से उम्र के इस ढलाव तक रोगियों की सेवा में तल्लीन; यही काम, यही धाम, यही राग, यही चाव और बस यही, यही।''

एक अन्य स्थल पर लेखक कहता है–

''फ्रांस की पुत्री मदर टेरेसा और जर्मनी की दुहिता क्रिस्ट हैल्ड एक साथ, एक रूप, एक ध्येय, एक रस।''

इन सेवारत महिलाओं का लेखक के आंतरिक मन पर बहुत गहरा प्रभाव पड़ा। उस प्रभाव को व्यक्त करने के प्रयास में कुछ अभिव्यक्तियाँ जटिल या लीक से हटकर हो गई हैं। इस पाठ में अधिक बात को बहुत कम शब्दों में कहने का कौशल जगह-जगह मिलता है, जैसे–

''साफ-सुथरी भाषा, उच्चारण साफ़ और स्वर आदेश का; पर आदेश न अधिनायक का, न अधिकारी का, पूर्णतया माँ का, जिसका आरंभ होता है शिकंजे से और अंत गोद में।''

पाठ में अनेक स्थलों पर लाक्षणिक अभिव्यक्तियाँ हैं, जो लेखक के आशय को पाठक तक पहुँचाने में बहुत सहायक हैं। उदाहरण देखिए–

- चाँदनी-चर्चित हाथ।
- हँसी बिखेरना।
- चाँदनी को दूध में घोलकर ब्रह्मा ने उसका निर्माण किया हो।
- हज़ार वाट का बल्ब मेरी आँखों में चौंध गया।
- हँसी उनकी यों कि मोतियों की बोरी खुल पड़ी।
- ओह, उस जंगली जीवन में यह कर्पूरिका।

लेखक ने अवसरानुकूल तत्सम, तद्भव, देशज और आगत शब्दों का उपयोग किया है।

टिप्पणी

पाठगत प्रश्न-5.2

सर्वाधिक उपयुक्त विकल्प चुनकर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

1. ''पर कष्ट क्या पात्र की क्षमता देखकर आता है?— कहने का आशय है—

   (क) अमीर लोगों पर कष्ट नहीं आना चाहिए। ☐
   (ख) सहने की क्षमता के अनुसार कष्ट आना चाहिए। ☐
   (ग) कष्ट किसी भी व्यक्ति पर आ सकता है ☐
   (घ) प्रत्येक व्यक्ति को कष्ट झेलना चाहिए। ☐

2. चीखते-तड़पते रोगी को मदर मार्गरेट ने 'कुछ नहीं, कुछ नहीं' कहा क्योंकि वे—

   (क) उसके रोग को मामूली समझती थीं। ☐ (ख) डॉक्टर पर विश्वास करती थीं। ☐
   (ग) रोग से लड़ने की हिम्मत देना चाहती थीं। ☐ (घ) रोग का सही उपचार जानती थीं। ☐

3. पाठ की भाषा-शैली में कौन-सी विशेषता नहीं मिलती?

   (क) आँखों देखा वर्णन ☐ (ख) छोटी-छोटी बातों की व्याख्या ☐
   (ग) भावुकतापूर्ण उद्‌गार ☐ (घ) चित्रात्मकता ☐

आपने क्या सीखा

- सुखी मानवता के लिए महिलाओं का योगदान अविस्मरणीय है। इन महिलाओं ने देश, भाषा, धर्म, संप्रदाय आदि की दीवारों को ढहा दिया।
- अपने मानवीय व्यवहार व आचरण से हम किसी को भी अपना बना सकते हैं।
- मनुष्य के आपसी संबंध मानवीयता के आधार पर होने चाहिए, किसी देश, धर्म, जाति या रंग के आधार पर नहीं।
- मदर टेरेसा, मदर मार्गरेट व सिस्टर क्रिस्ट हैल्ड का समर्पण एवं सेवा-भाव समानुभूति का अद्‌भुत उदाहरण है।
- हम विश्व में कहीं भी रहकर रचनात्मक और मानवीय कार्य कर सकते हैं।

टिप्पणी

- निःस्वार्थ भाव से सदैव कर्मरत रहने की प्रेरणा मिलती है।
- पाठ की भाषा तत्समनिष्ठ होते हुए भी बोधगम्य है। कहीं-कहीं पर अंग्रेजी के शब्दों का प्रयोग किया गया है।
- रिपोर्ताज किसी सच्ची घटना पर आधारित सामान्यतः समाचार पत्र के लिए लिखी जाने वाली विधा है।

योग्यता-विस्तार

इस पाठ के लेखक कन्हैयालाल मिश्र 'प्रभाकर' हैं। इनका जन्म सन 1906 में हुआ था। परिवार में अशांति के कारण उनकी प्रारंभिक शिक्षा सुचारू रूप से नहीं हो पाई। उन्होंने स्वाध्याय से ही हिंदी, संस्कृत, अंग्रेजी आदि भाषाओं का ज्ञान प्राप्त किया। भारत के स्वतंत्रता-संग्राम में भाग लेने वाले 'प्रभाकर' जी ने पत्रकारिता के क्षेत्र में विशेष प्रतिष्ठा अर्जित की। उन्होंने हिंदी में लघुकथा, संस्मरण, रेखाचित्र और रिपोर्ताज जैसी अनेक विधाओं में रचना की। अन्याय के विरुद्ध क्रोध और पीड़ित मानवता के प्रति सहृदयता और करुणा इनकी समस्त रचनाओं में दिखाई पड़ती है। इनकी प्रमुख कृतियाँ हैं—'माटी हो गई सोना', 'धरती के फूल', 'आकाश तारे', 'जिंदगी मुसकाए', 'भूले-बिसरे चेहरे', 'क्षण बोले कण मुसकाए', 'महके आँगन चहके द्वार।'

'प्रभाकर' जी की भाषा में व्यंग्यात्मक सरलता, मार्मिकता, चुटीलापन, भावाभिव्यक्ति की अद्भुत क्षमता है। भाषा और शैली की अद्वितीयता के कारण गद्यकारों में प्रभाकर जी का विशिष्ट स्थान है।

पाठांत प्रश्न

1. रॉबर्ट नर्सिंग होम में जाना लेखक के लिए क्यों यादगार बन गया? अपने विचार प्रस्तुत कीजिए।
2. रॉबर्ट नर्सिंग होम के डॉक्टर ने कहा, 'मदर तुम हँसी बिखेरती जो हो।' आशय स्पष्ट कीजिए।
3. लेखक मदर टेरेसा के जाने के बाद किस प्रकार की दीवारों के बारे में सोचता रहा? आपकी दृष्टि में इन दीवारों को गिराना क्यों ज़रूरी है?
4. मदर मार्गरेट का जादू किसे कहा गया है? स्पष्ट कीजिए।
5. 'फ़ोटो किसी बात को अधिक प्रभावी ढंग से प्रस्तुत करती है।' आप इस विचार से कहाँ तक सहमत हैं? स्पष्ट कीजिए।

6. 'रॉबर्ट नर्सिंग होम' पाठ से हम अपने जीवन में क्या प्रेरणा ले सकते हैं, उल्लेख कीजिए।

7. निम्नलिखित के आशय स्पष्ट कीजिए:-

   (क) उभरती तरुणाई से उम्र के इस ढलाव तक रोगियों की सेवा में तल्लीन, यही काम, यही धाम, यही राग, यही चाव और बस यही, यही।

   (ख) फ्रांस की पुत्री मदर टेरेसा और जर्मनी की दुहिता क्रिस्ट हैल्ड एक साथ, एक रूप, एक ध्येय, एक रस।

   (ग) कष्ट क्या पात्र की क्षमता देखकर आता है?

   (घ) भाषा के भेद रहे हैं, रहेंगे भी, पर यह जोत विश्व की सर्वोत्तम जोत है।

   (ड) हम भारतवासी गीता को कंठ में रखकर धनी हुए, पर तुम उसे जीवन में ले कृतार्थ हुईं।

8. यदि मदर टेरेसा और क्रिस हैल्ड एक होकर कार्य न करतीं तो किसकी हानि होती और क्यों, उल्लेख कीजिए।

9. निम्नलिखित अनुच्छेद को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए:-

परोपकार मानव जीवन का धर्म है। परोपकार की भावना के बिना मनुष्य और पशु में किंचित् अंतर नहीं है। परोपकार करने से आत्मा को जिस सच्चे आनंद की प्राप्ति होती है, उसको शब्दों में नहीं बाँधा जा सकता। स्वयं भूखे-प्यासे रहकर किसी की भूख-प्यास को मिटाने से असीम आत्मिक आनंद की प्राप्ति होती है। परोपकार में ही जीवन की सार्थकता है। अपने जीवन को सफल बनाने के लिए हमें अपनी समस्त शक्तियों का प्रयोग परोपकार के लिए करना चाहिए। हमें अपनी धन-संपदा का प्रयोग दूसरों का हित-संपादन करने के लिए, अपनी शक्ति का प्रयोग अत्याचार तथा अन्याय के निवारण के लिए तथा अपनी बुद्धि का प्रयोग अज्ञान के अंधकार को दूर करने के लिए करना चाहिए। यदि जीवन में आप पुण्यशील बनकर पुण्य प्राप्त करने के इच्छुक हैं तो परोपकार कीजिए और यदि पापों का संचय करना चाहते हैं तो दूसरे प्राणियों को पीड़ा दीजिए। अतः हमें परोपकार की पवित्र भावना से प्रेरित होकर जहाँ तक संभव हो सके, दूसरों के कष्टों का निवारण करना चाहिए, क्योंकि जीवन में आनंद की प्राप्ति का यह एक सहज मार्ग है।

1. मनुष्य व पशु के बीच अंतर स्पष्ट कीजिए।
2. हम आत्मिक आनंद की प्राप्ति किस प्रकार कर सकते हैं?
3. हमें अपनी शक्ति व धन का प्रयोग कैसे करना चाहिए?
4. इस अनुच्छेद का सार एक तिहाई शब्दों में लिखिए और एक उपयुक्त शीर्षक भी दीजिए।

उत्तरमाला

बोध प्रश्न

1. (घ) 2. (ग) 3. (घ)

पाठगत प्रश्न

5.1 1. (घ) 2. (ग) 3. (घ)

5.2 1. (ग) 2. (ग) 3. (ख)

6

भारत की ये बहादुर बेटियाँ

आप इस बात से सहमत होंगे कि देश को गौरव दिलाने में महिलाओं की भागीदारी बहुत महत्त्वपूर्ण है। कई महिलाओं ने अपनी शक्ति, उत्साह और लगन के सहारे अनेक क्षेत्रों में बहुत नाम कमाया है। फ़िल्म-संगीत की ही बात करें, तो आप लता मंगेशकर को याद करेंगे। ओलंपिक की स्पर्धाओं के संदर्भ में आप 'उड़नपरी' पी.टी. उषा, कर्णम मल्लेश्वरी और सुनीता रानी को याद करेंगे। इसी प्रकार, सांस्कृतिक क्षेत्र में सरोजिनी नायडू को और राजनीति के क्षेत्र में अरुणा आसफ़ अली को याद करेंगे, जिनका नाम इतिहास के पन्नों में दर्ज़ है। इंदिरा गांधी को भारत तो क्या, पूरी दुनिया कभी भूल नहीं पाएगी।

गरीबों और कुष्ठ रोगियों की सेवा के द्वारा मदर टेरेसा ने संत की ऊँचाई पा ली। क्या आपने भी ऐसी प्रसिद्ध महिलाओं के बारे में सुना है? आइए, भारत की ऐसी ही दो बहादुर बेटियों के विषय में पढ़ें।

उद्देश्य

इस पाठ को पढ़ने के बाद आप–

- वर्तमान समाज में स्त्री के जीवन और कार्य-क्षेत्र के प्रति उसकी सजगता को समझ कर उसका उल्लेख कर सकेंगे;
- सामाजिक दबावों के बीच अपनी पहचान स्थापित करने के लिए किए गए स्त्री-संघर्ष की व्याख्या कर सकेंगे;
- स्त्री की शारीरिक, भावनात्मक, मनोवैज्ञानिक सबलता का विश्लेषण कर सकेंगे;
- आदर्श महिलाओं की उपलब्धियों का वर्णन कर सकेंगे;

- आधुनिक सफल नारी के आत्मविश्वास और स्वावलंबन का उल्लेख कर सकेंगे;
- समाज के लिए नारी-शक्ति की उपयोगिता तथा उसके महत्त्व को व्याख्यायित कर सकेंगे;

क्रियाकलाप-6.1

नीचे दिए चित्रों को ध्यान से देखिए और बताइए कि ये चित्र किनके हैं :

क................................. ख................................. ग.................................

इनके और अधिक चित्र तथा विवरण एकत्रित कर फ़ाइल तैयार कीजिए।

6.1 मूल पाठ

भारत की ये बहादुर बेटियाँ

'यत्र नार्यस्तु पूज्यंते रमंते तत्र देवता:' अर्थात् जहाँ नारी का सम्मान होता है वहाँ देवताओं का निवास होता है यानी वहाँ सुख-समृद्धि, शांति होती है। यह बात प्राचीन काल में मनुस्मृति में कही गई थी। लेकिन इसका अर्थ यह नहीं है कि उस वक्त नारी का सम्मान नहीं होता था और यह बात नारी के सम्मान को बढ़ावा देने के उद्देश्य से कही गई थी। बल्कि यह बात अनुभव से कही गई थी। प्राचीनकाल में हमारे देश में नारी समाज की बहुत ही सम्माननीय सदस्य थी। गार्गी, मैत्रेयी, गौतमी, अपाला आदि प्राचीनकाल की प्रसिद्ध और प्रतिष्ठित नारियाँ हैं। प्राचीनकाल से ही नारियाँ हमारे देश में पुरुष के बराबर बैठती रही हैं और समाज के निर्माण–कार्यों में अपना योगदान देती रही हैं।

आधुनिक काल में भी नारी एक बार फिर से अपनी पूरी क्षमता, शक्ति और साहस के साथ समाज में दिखाई देने लगी। शिक्षा के प्रचार-प्रसार से वह पूरी तरह आत्मविश्वास से भर गई। आप आज़ादी की लड़ाई का उदाहरण ही लीजिए। भीकाजी कामा, सरोजिनी नायडू, अरुणा आसफ अली, कैप्टन लक्ष्मी सहगल आदि बहुत सारे नाम आपके जेहन में आते जाएँगे। गांधीजी के एक आह्वान पर न जाने कितनी महिलाएँ घर-बार छोड़ कर देश की आजादी के लिए संघर्ष करने निकल पड़ीं। चाहे वो गाँव की हों, छोटे कस्बे की हों, शहर की हों, या महानगर की हों, चाहे वे पढ़ी लिखी हों, चाहे गरीब हों या अमीर, सभी वर्गों की नारियाँ पुरुषों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर आजादी की लड़ाई में घर से बाहर निकल पड़ी थीं।

आजादी के बाद, वर्तमान समय में, जब शिक्षा और तकनीक की सुविधाएँ बढ़ी हैं, तो महिलाओं ने एक बार फिर से अपनी क्षमता, साहस और बुद्धिमता का परिचय देना शुरू कर दिया।

चित्र 6.1

आज, जब यह कहा जाता है कि महिलाएँ पुरुषों से कम नहीं हैं तो इसलिए नहीं कि उनके प्रति दया-भावना है, बल्कि उन्होंने यह बात सिद्ध कर दिखाई है। आज कोई भी ऐसा क्षेत्र नहीं है, जिसमें महिलाओं की भागीदारी नहीं है– चाहे वह शिक्षा का क्षेत्र हो, प्रशासन हो, राजनीति हो, अर्थव्यवस्था, व्यापार या तकनीक क्षेत्र हो– हर जगह आपको महिलाएँ काम करती नज़र आएँगी। अब तो हिमालय की सबसे ऊँची चोटी एवरेस्ट तक पहुँचने, अंतरिक्ष यान की यात्रा करने और पुलिस-प्रशासन के क्षेत्र में भी महिलाओं ने सफलता अर्जित कर ली है। आज चाहे हवाई जहाज़ उड़ाने का काम हो, रेल इंजन चलाने का काम हो, बस या ऑटो रिक्शा चलाने का काम हो या पेट्रोल पंपों पर पेट्रोल भरने का ही काम क्यों न हो– हर काम अब महिलाएँ कर रही हैं। इंजीनियरिंग के क्षेत्र में हवाई जहाज़ के इंजन ठीक करने से लेकर स्कूटर ठीक करने तक में महिलाएँ सक्रिय हैं। इतना ही नहीं, अब तो उन्होंने पूरी दुनिया में सिद्ध कर दिखाया है कि महिलाएँ पुरुषों की अपेक्षा अधिक क्रियाशील, ईमानदार तथा कुशल प्रशासक होती हैं।

आज समाज का चाहे जो भी वर्ग हो, हर वर्ग की महिलाएँ समाज- निर्माण के कार्य में आगे आ रही हैं। चाहे वे साधारण परिवार में पली-बढ़ी हों, मध्यम परिवार में पली हों या बिल्कुल निर्धन परिवार में, कोई भी अभाव उनकी क्षमता के आगे बौना ही साबित होता है। महिलाओं ने यह सिद्ध कर दिखाया है कि कठिनाइयाँ चाहे जितनी बड़ी हों,

टिप्पणी

मुश्किलें चाहे जितनी विकराल हों, यदि साहस और आत्मविश्वास है, तो दुनिया का कोई भी कार्य कठिन नहीं है। यही कारण है कि महिलाओं ने न केवल अपने देश में, बल्कि विदेशों में भी भारत का नाम ऊँचा किया है। चाहे वह फ़िल्म-निर्माण या अभिनय का क्षेत्र हो, फ़ैशन का क्षेत्र हो, चिकित्सा का क्षेत्र हो, अनुसंधान का या अन्य कोई क्षेत्र–हर क्षेत्र में अपनी योग्यता का लोहा मनवाया है। अमेरिका और ब्रिटेन में ही चले जाएँ, जो कि दुनिया के शक्तिशाली देशों में गिने जाते हैं, वहाँ भारत की महिलाएँ चिकित्सा, कानून तथा फिल्म-निर्माण के क्षेत्र में पुरुषों से कहीं आगे हैं।

भारत की आधुनिक महिलाओं की बात करते हुए हम केवल अंतरिक्ष विज्ञान तथा खेल को ही लें, तो जो नाम सबसे पहले हमारे सामने आते हैं, वे हैं–कल्पना चावला, और बचेंद्री पाल। ये दो महिलाएँ अब भारतीय महिला के अदम्य साहस, बुद्धि कौशल और कर्त्तव्य निष्ठा की प्रतीक बन चुकी हैं। ये महिलाएँ किसी बहुत बड़े या संपन्न परिवार से नहीं आई हैं, न इन्हें कुछ ज़्यादा सुख-सुविधाएँ ही प्राप्त थीं। इनका पालन-पोषण भी सामान्य भारतीय लड़कियों की तरह ही हुआ था। इनकी शिक्षा-दीक्षा भी सामान्य लोगों की तरह ही हुई थी। जब इन्होंने अपने लक्ष्य की तरफ़ बढ़ना शुरू किया था, तब सामान्य लड़कियों की तरह ही इनका भी विरोध हुआ था, लेकिन इन्होंने अपने साहस और आत्मविश्वास के बल पर लोगों के विरोध या प्रतिकार पर ध्यान नहीं दिया और अपने लक्ष्य की तरफ़ आगे बढ़ती रहीं।

कल्पना चावलाः अंतरिक्ष में पहली भारतीय महिला

कल्पना चावला का जन्म हरियाणा प्रांत के करनाल शहर में 1961 की पहली जुलाई को एक साधारण व्यापारी परिवार में हुआ था। पिता बनवारी लाल एक साधारण व्यापारी थे तथा माँ संयोगिता एक सामान्य गृहिणी। कल्पना की पढ़ाई-लिखाई भी सामान्य लड़कियों की तरह उनके शहर के स्कूल से शुरू हुई थी, लेकिन कल्पना ने अपने लक्ष्य को ध्यान में रखा और साहस के साथ आगे बढ़ती रहीं। जब कल्पना 11वीं कक्षा में पढ़ती थीं, तब अमेरिकी अंतरिक्ष यान 'बाइकिंग' मंगल ग्रह पर उतरा था। इस बात से कल्पना इतनी रोमांचित हुई कि उन्होंने अपनी कक्षा की परियोजना में मंगल ग्रह को दर्शाया। शुरू से ही कल्पना के मन में अंतरिक्ष-विज्ञान के प्रति लगाव रहा और वे अंतरिक्ष की यात्रा के सपने देखती रहीं। शायद यही कारण है कि परिवार वालों के लाख मना करने के बाद भी उन्होंने चंडीगढ़ के पंजाब इन्जीनियरिंग कॉलेज

चित्र 6.2

शब्दार्थ

अंतरिक्ष = आकाश; ग्रहों या तारों के बीच की शून्य जगह

एअरोनॉटिक्स = वैमानिकी; विमान-विज्ञान
एअरोनॉटिकल इन्जीनियरिंग = वैमानिक अभियांत्रिकी; वैमानिकीय इन्जीनियरी

विशेषज्ञ = किसी विषय का विशेष जानकार
अभियान = मिशन; लक्ष्य

में एअरोनॉटिकल इन्जीनियरिंग (वैमानिकी) को अपना विषय चुना। इसके लिए उनके सहपाठी उनका मज़ाक उड़ाते रहे कि देखो अब लड़कियाँ भी एअरोनॉटिकल इन्जीनियर बनने चली हैं, लेकिन उन्होंने किसी की परवाह नहीं की। 1982 में इन्जीनियरिंग की डिग्री प्राप्त कर कल्पना अपने परिवार वालों के कठोर विरोध के बावजूद आगे की पढ़ाई के लिए अमेरिका चली गईं। वहाँ उन्होंने टेक्सास विश्वविद्यालय एअरोस्पेस इन्जीनियरिंग में एम.एस. की डिग्री ली। तत्पश्चात्, बोल्डर में कोलराडो विश्वविद्यालय से 1988 में एअरोस्पेस में पी-एच.डी. की डिग्री प्राप्त की। इस तरह उनके अंतरिक्ष में जाने के सपने के साकार होने का भी वक्त आ गया। जब अमेरिकी अंतरिक्ष यान के कोलंबिया मिशन के लिए वैज्ञानिकों का चुनाव हो रहा था, तब 2962 प्रतियोगियों में उन्हें सर्वाधिक योग्य पाया गया और उस मिशन का विशेषज्ञ बनाया गया। इसके लिए कल्पना ने कठोर प्रशिक्षण लिया और 19 नवंबर को पहली बार अंतरिक्ष की यात्रा पर निकल पड़ीं। जब वह अंतरिक्ष में थीं तब तत्कालीन प्रधानमंत्री श्री इंद्र कुमार गुजराल ने उनसे बात करके उन्हें इस अभियान के लिए बधाई दी। उनका यह अभियान काफ़ी सफल रहा और इस दौरान उन्होंने कई नए प्रयोग कर सबसे अपनी योग्यता का लोहा मनवा लिया।

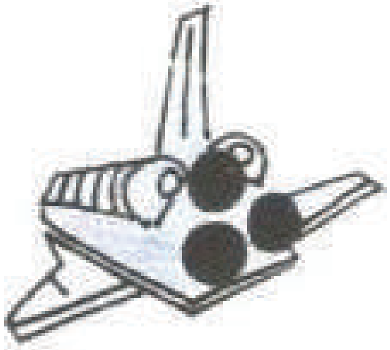

चित्र 6.3

फिर जब अमेरिका के अंतरिक्ष यान कोलंबिया के दूसरी बार अंतरिक्ष में जाने का कार्यक्रम बना, तो एक बार फिर कल्पना को उसके अभियान-दल में शामिल किया गया। 16 जनवरी, 2003 को कल्पना एक बार फिर 'केनेडी अंतरिक्ष केंद्र' से अंतरिक्ष की यात्रा पर निकल पड़ीं। 16 दिन के इस अभियान में 80 प्रयोग किए गए, जिनमें मानव-शरीर, कैंसर कोशिकाओं की परीक्षा और कीट-पतंगों पर भारहीनता संबंधी प्रयोग शामिल थे। 29 जनवरी, 2003 को इस अभियान-दल के यात्रियों ने अपने इस मिशन को कामयाब बताया। लेकिन दुर्भाग्य कि 16 दिन की अपनी सफल यात्रा के बाद जब यह अभियान– दल 1 फ़रवरी, 2003 को पृथ्वी पर लौट रहा था, तो पृथ्वी से कुछ मिनट की दूरी पर ही

चित्र 6.4

इस दल का यान भयानक विस्फोट के साथ नष्ट हो गया और अपने अभियान-दल के बाकी सात साथियों के साथ अंतरिक्ष की यह बेटी अंतरिक्ष में ही खो गई।

कल्पना के इस दुर्भाग्यपूर्ण अंत से पूरी दुनिया स्तब्ध रह गई। भारतीय प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी ने संसद में कल्पना के प्रति श्रद्धांजलि व्यक्त करते हुए घोषणा की कि उनकी स्मृति में अंतरिक्ष-यान 'मेट सेट' का नाम 'कल्पना–1' रखा जाएगा।

इस प्रकार अदम्य साहस, दृढ़ इच्छा शक्ति और कर्त्तव्य-निष्ठा के बल पर भारत की बेटी कल्पना ने न सिर्फ़ महिला जाति का नाम ऊँचा किया, बल्कि पूरे देश का नाम भी विश्व-इतिहास में सुनहरे अक्षरों में अंकित कर दिया।

पाठगत-प्रश्न-6.1

सर्वाधिक उपयुक्त विकल्प चुनकर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

1. जब पहली बार कल्पना चावला अंतरिक्ष में थीं, तब भारत के प्रधानमंत्री ने –

   (क) उन्हें ऐसे ख़तरे न उठाने की सलाह दी। ☐

   (ख) उन्हें जल्दी से जल्दी पृथ्वी पर लौट आने को कहा। ☐

   (ग) उन्हें कहा कि महिलाओं के लिए ऐसे करतब ठीक नहीं। ☐

   (घ) उन्हें इस अंतरिक्ष अभियान के लिए बधाई दी। ☐

2. पढ़े हुए अंश के आधार पर निम्नलिखित घटनाओं को सही क्रम में लिखिए :

   (क) 16 जनवरी 2003 को 'केनेडी अंतरिक्ष केंद्र' से आसमान में उड़े अंतरिक्ष-यान में बैठे लोगों में से एक कल्पना चावला भी थीं। ☐

   (ख) 'कोलंबिया मिशन' के लिए कल्पना भी चुन ली गई। ☐

   (ग) अपने सात साथियों के साथ 1 फ़रवरी, 2003 की शाम अंतरिक्ष की बेटी अंतरिक्ष में समा गई। ☐

   (घ) बोल्डर में कोलराडो विश्वविद्यालय से कल्पना चावला ने सन् 1988 में एअरोस्पेस में पी.एच.डी. की उपाधि प्राप्त की। ☐

   (ङ) कल्पना चावला ने एअरोनॉटिकल इंजीनियरिंग की डिग्री चंडीगढ़ इंजीनियरिंग कॉलेज से ली। ☐

   (च) हरियाणा राज्य के करनाल शहर के एक सामान्य व्यापारी बनवारी लाल के घर में एक साधारण गृहिणी संयोगिता ने सन् 1961 की पहली जुलाई को एक बिटिया को जन्म दिया, जो कल्पना कहलाई। ☐

टिप्पणी

3. दिए गए विकल्पों में से सही विकल्प चुनिए :

   कल्पना की दुखद मृत्यु के पश्चात् भारत के प्रधानमंत्री ने विशेष घोषणा की कि –

   (क) कल्पना को सभी भारतीय वैज्ञानिक श्रद्धांजलि अर्पित करेंगे। ☐

   (ख) मेट-सेट अब कल्पना–1 के नाम से जाना जाएगा ☐

   (ग) हमें ऐसे ख़तरे आगे भी उठाते रहने होंगे। ☐

   (घ) अंतरिक्ष से जुड़े शोध-कार्य कभी भी रुकने नहीं चाहिए। ☐

4. एअरोनॉटिकल इंजीनियरिंग को अपना विषय चुनने पर कल्पना चावला के सहपाठियों ने उसका मजाक उड़ाया। क्या आपके सही होने पर भी कभी आपके साथियों ने आपको गलत साबित करने की कोशिश की? तब आपने क्या किया?

   (क) अपने साथियों की बात को मान लिया। ☐

   (ख) उस दिशा में आगे न बढ़ने का निश्चय किया। ☐

   (ग) साथियों से जानने का प्रयास किया कि सही क्या है। ☐

   (घ) अपने साथियों को अपनी बात समझाते हुए अपना कार्य जारी रखा। ☐

6.1.2 बचेंद्री पाल : पहली महिला एवरेस्ट विजेता

शब्दार्थ

पर्वत-शिखर = पहाड़ की चोटी;

ज़ेहन = दिमाग

तानाशाह = अपनी ही बात मनवाने वाला; किसी की बात न मानने वाला

सर उठाने का मौका = गर्व करने का अवसर

जज़्बा = हौसला

कल्पना चावला की तरह ही बचेंद्री पाल भी साहस की पर्याय हैं। बचेंद्री को एवरेस्ट की चोटी पर चढ़ने वाली पहली भारतीय महिला होने का गौरव प्राप्त है। बचेंद्री का जन्म सन् 1954 में चमोली जिले में परंपरागत पुरुष-वर्चस्व वाले एक साधारण भारतीय परिवार में हुआ था। पिता किशनपाल सिंह और माँ हंसादेई नेगी की पाँच संतानों में बचेंद्री तीसरी संतान हैं। बचेंद्री के बड़े भाई को पहाड़ों पर चढ़ना अच्छा लगता था, लेकिन जब बचेंद्री उनके साथ पहाड़ पर जाने की बात करती थीं, तो उन्हें डाँट कर मना कर दिया जाता था। इससे बचेंद्री का मनोबल और बढ़ा और पहाड़ पर चढ़ने की इच्छा दृढ़ होती गई। उन्होंने निश्चय कर लिया कि वे भी वही करेंगी, जो लड़के करते हैं। वे किसी से पीछे

चित्र 6.5

नहीं रहेंगी, बल्कि उनसे बेहतर ही कर दिखाएँगी और इसी जज़्बे से पर्वतारोहण का प्रशिक्षण लेना शुरू कर दिया।

बचेंद्री को बचपन में रोज़ 5 किलोमीटर पैदल चलकर स्कूल जाना पड़ता था। बाद में पर्वतारोहण प्रशिक्षण के दौरान् उनका यह कठोर परिश्रम बहुत काम आया। आठवीं पास करने के बाद पिता ने उनकी पढ़ाई का ख़र्च उठाने से मना कर दिया। बचेंद्री ने इसका भी रास्ता तलाश किया। उन्होंने सिलाई का काम सीखा और सिलाई करके पढ़ाई का ख़र्च जुटाने लगीं। इस तरह उन्होंने संस्कृत से एम.ए. तथा बी.एड. की उपाधि प्राप्त की।

पढ़ाई के साथ-साथ बचेंद्री ने पहाड़ पर चढ़ने के अपने लक्ष्य को हमेशा अपने सामने रखा। इसी दौरान बचेंद्री ने 'कालानाग' पर्वत की चढ़ाई की। 1982 में उन्होंने 'गंगोत्री ग्लेशियर' (ऊँचाई– 6,672 मी०) तथा 'रूड गैरा' (ऊँचाई– 5,819 मी०) की चढ़ाई की, जिससे इनमें आत्मविश्वास और बढ़ा।

अगस्त, 1983 में जब दिल्ली में हिमालय पर्वतारोहियों का सम्मेलन हुआ, तब वे पहली बार तेनज़िंग नोर्गे (एवरेस्ट पर चढ़ने वाले पहले पुरुष) तथा जुंके ताबी (एवरेस्ट पर चढ़ने वाली पहली महिला) से मिलीं। तब उन्होंने संकल्प किया कि वे भी उनकी ही तरह एवरेस्ट पर पहुँचेंगी। वह दिन भी आया, जब 23 मई, 1984 को दोपहर 1 बजकर 7 मिनट पर एवरेस्ट पर पहुँचकर भारत का झंडा फहरा दिया। उस समय उनके साथ पर्वतारोही अंग दोरजी भी थे। इस तरह, बचेंद्री को एवरेस्ट पर पहुँचने वाली पहली भारतीय महिला होने का गौरव प्राप्त हुआ।

चित्र 6.6

हम कह सकते हैं कि अदम्य साहस और आत्मविश्वास के बल पर भारतीय महिलाओं ने पूरी दुनिया में अपनी अलग पहचान बनाई है। बहुत साधनों के न होते हुए भी उन्होंने लक्ष्यप्राप्ति में आने वाली कठिनाइयों के सामने कभी घुटने नहीं टेके। उन्होंने सिद्ध कर दिखाया कि अगर व्यक्ति में आत्मविश्वास, लगन, साहस

और दृढ़ इच्छा शक्ति हो तो अभाव या अन्य कोई भी कठिनाई उनका रास्ता नहीं रोक सकती।

पाठगत प्रश्न-6.3

1. सर्वाधिक उपयुक्त विकल्प चुनकर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

   (i) एवरेस्ट अभियान-दल में बचेंद्री के साथ निम्न में से कौन था?

   (क) तेनज़िंग ☐ (ख) हंसा देई ☐

   (ग) जुंके ताबी ☐ (घ) अंग दोरजी ☐

   (ii) बचेंद्री का पर्वतारोही बनने का संकल्प किस बात से मज़बूत हुआ?

   (क) पिता द्वारा पढ़ाई का खर्च न देने से ☐

   (ख) लड़की होने के कारण उपेक्षा से ☐

   (ग) सिलाई द्वारा प्राप्त आमदनी से ☐

   (घ) उच्च शिक्षा से प्राप्त आत्मविश्वास से ☐

2. पाठ के आधार पर निम्नलिखित घटनाओं को सही क्रम में लिखिए :

   (क) अपनी पढ़ाई जारी रखने के लिए बचेंद्री ने सिलाई का काम सीखा और कपड़े सिले।

   (ख) बचेंद्री का जन्म सन् 1954 में चमोली जिले के एक अत्यंत साधारण परिवार में हुआ।

   (ग) 23 मई, 1984 को दिन के 1 बजकर 7 मिनट पर बचेंद्री ने माउंट एवरेस्ट पर भारतीय तिरंगा लहरा दिया।

   (घ) बड़े भाई द्वारा तिरस्कार से बचेंद्री का पर्वतारोहण का संकल्प और दृढ़ होता गया।

   (ङ) संसार के सर्वोच्च शिखर पर पहुँचने वाली वह प्रथम भारतीय महिला बन गई।

फ़ीचर क्या है?

'भारत की ये बहादुर बेटियाँ' शीर्षक पाठ को आपने पढ़ा। इसे फ़ीचर की शैली में लिखा गया है।

टिप्पणी

आइए, जान लें कि फ़ीचर क्या है?

आप जानते हैं, अखबारों में समाचार छपते हैं। समाचारों से केवल यह जानकारी मिलती है कि क्या हुआ। उदाहरण के लिए, कल्पना चावला ने अंतरिक्ष में उड़ान भरी, तो अखबारों में यह खबर छपी कि एक भारतीय महिला ने अंतरिक्ष की परिक्रमा की। लेकिन कल्पना कौन है, वह अंतरिक्ष में जाने का साहस कैसे जुटा पाई, उसकी इस बहादुरी ने समाज को किस प्रकार से प्रभावित किया? इन बातों को सरल भाषा और मनोरंजक शैली में बताया जाए, तो वह फ़ीचर होगा। अर्थात् 'क्या हुआ?' यह बताना समाचार है। ''जो कुछ हुआ वह क्यों और कैसे हुआ और इसका परिणाम क्या होगा'', यह बताना फ़ीचर का काम है। फ़ीचर में घटनाओं को हमारी आँखों के आगे उतार दिया जाता है, कानों में घटनाओं की आवाज़ गुँजा दी जाती है। अखबार के तीन काम बताए जाते हैं—सूचना देना, शिक्षा देना और मनोरंजन करना। समाचार सूचना देते हैं। फ़ीचर हमें शिक्षित करते हैं और हमारा मनोरंजन करते हैं। फ़ीचर में इस बात का ध्यान रखा जाता है कि वह रोचक भी हो। फ़ीचर कई प्रकार के होते हैं या हो सकते हैं—जनरुचि वाले, गंभीर विश्लेषणात्मक, हल्के-फुल्के और मनोरंजक तथा व्यक्तित्व संबंधी। 'भारत की ये बहादुर बेटियाँ' अंश व्यक्तित्व संबंधी या 'पर्सनैलिटी फ़ीचर' है।

'फ़ीचर' पत्रकारिता जगत की महत्त्वपूर्ण विधा है, जिसमें समसामयिक पकड़ को प्रधानता दी जाती है। यही कारण है कि इसको **'समाचारात्मक निबंध'** की संज्ञा दी जा सकती है। विषय प्रस्तुति ही फ़ीचर को शक्ति देता है। यह किसी पाठक के लिए शिक्षक, पथ-प्रदर्शक का काम करता है। इसकी भाषा सहज, सरल और सभी को समझ में आने वाली होती है। इसमें प्रसंगानुसार शब्दों का चयन किया जाता है। ये शब्द किसी भी भाषा के हो सकते हैं। जैसा कि आपने यहाँ ध्यान दिया होगा कल्पना चावला वाले अंश में इंजीनियरिंग की विविध शाखाएँ प्रचलित हैं—मैकेनिकल, कैमिकल या एअरोनोटिकल, इन्हें ज्यों का त्यों ले लिया गया है। इसी प्रकार अन्य अनेक अंग्रेजी के शब्दों का प्रयोग भी यहाँ—वहाँ आपने पढ़ा है, उन पर ध्यान दीजिए।

फ़ीचर में शैली का विशेष ध्यान रखा जाता है। यहाँ मनोरंजक शैली का ही प्रयोग किया गया है। इसके साथ चित्र, छाया-चित्र भी हों तो इसको **'सचित्र फ़ीचर'** कहते हैं, मात्र चित्र ही चित्र हों तो **'फ़ोटो फ़ीचर'**।

रेडियो-फ़ीचर भी होते हैं, किंतु ध्वनि-माध्यम होने के कारण उनकी शैली बिलकुल भिन्न होती है।

क्रियाकलाप-6.1

1. आपको जो भी खिलाड़ी अच्छा लगता हो, उसकी विशेषताएँ बताते हुए उस पर फ़ीचर लिखिए।

2. अपनी माँ पर एक फीचर लिखिए।

3. अपने आसपास की किसी ऐसी महिला का चित्रण कीजिए जिन्होंने किसी–न–किसी क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य किया हो।

....

....

....

....

....

....

आपने क्या सीखा?

- 'भारत की ये बहादुर बेटियाँ' एक फ़ीचर है, जो विभिन्न क्षेत्रों में प्रसिद्धि के शिखर पर पहुँची महिलाओं पर लिखा गया है।
- महिलाएँ पुरुषों से कम नहीं है। भारत की बेटियों ने अपने आत्मविश्वास, संकल्प और परिश्रम से ऐसी उपलब्धियाँ हासिल की हैं, जिससे भारत को पूरे संसार में सिर उठाने का मौका मिला है। नारियों में अदम्य शक्ति छिपी है। उन्हें उपयुक्त अवसर मिलना चाहिए। कल्पना चावला, बचेंद्री पाल जैसी बहादुर बेटियों की जीवन-कथाएँ सभी को प्रेरित करेंगी।
- दुनिया की आधी आबादी महिलाओं की है। उनके विकास से ही किसी देश का, दुनिया का विकास संभव है।
- नारी-शक्ति की दृष्टि से भारत किसी भी देश से पीछे नहीं है। इन्हीं बातों को इस फ़ीचर में दो नारियों के माध्यम से बताया गया है। आधुनिक नारियाँ छुई-मुई नहीं हैं, वे शक्ति-स्वरूपा हैं।

योग्यता विस्तार

अब भारत में महिलाओं की रक्षा के लिए और उनके साथ किए जाने वाले भेदभाव के ख़िलाफ़ कई कानून बन गए हैं, जिनके द्वारा समाज में उनकी स्थिति को बेहतर बनाने के प्रयास किए जा रहे हैं। हमारे यहाँ जन्म से पूर्व ही परीक्षण करवा कर संतान का लिंग पता कर लिया जाता था तथा यह पता चलने पर कि गर्भ में पलने वाली संतान कन्या होगी, कई बार गर्भपात करवा दिया जाता था। यह संभव न होने पर पैदा होते ही नवजात कन्या को मारने के उदाहरण भी सामने आए। इन सब स्थितियों को ध्यान में रखते हुए ही 1994 में प्रसव-पूर्व निदान तकनीकी अधिनियम पारित किया गया जिसके द्वारा गर्भावस्था में लिंग की पहचान पर रोक लगा दी गई। यही नहीं, भ्रूण-हत्या को अपराध घोषित करते हुए उचित दंड का भी प्रावधान किया गया। महिलाओं की रक्षा और सशक्तीकरण हेतु अनेक ऐसे नियम बनाए गए, जिनके द्वारा यदि पुरुष परिवार में अपना वर्चस्व साबित करने के लिए उन्हें प्रताड़ित करता है या परेशान करता है, तो वे उसे घरेलू हिंसा कानून के अंतर्गत दंडित करा सकती हैं। आज महिलाओं का आत्मविश्वास तो बढ़ा ही है वे स्वयं भी और अधिक साहसी बनी हैं। चाहे वह छेड़खानी का मामला हो, भेदभाव का मामला हो, दहेज़ का मामला हो या उनके साथ किसी तरह के अन्य अन्याय का; महिलाएँ स्वयं उठकर खड़ी हो जाती हैं और इसका विरोध करती हैं। अब तो महिलाओं ने अपने अधिकार के लिए कई स्वयंसेवी संगठन भी खोल लिए हैं। हाल ही में जब अमेरिका मानव-क्लोनिंग की वकालत कर रहा था, तब महिलाओं ने इसे मातृत्व के ख़िलाफ़ एक साज़िश बताया और उसके विरोध में उठ खड़ी हुई। इसके परिणामस्वरूप पूरी दुनिया में मानव-क्लोनिंग पर रोक लगी।

इस तरह आधुनिक महिला ने अधिक आत्मविश्वासी, निर्भय, निर्णय लेने की क्षमता से परिपूर्ण, कर्त्तव्य-निष्ठ, ईमानदार और अनुशासन प्रिय होकर समाज में अपनी एक अलग पहचान बनाई है। वह अपने अधिकारों के प्रति पूरी तरह सजग और अन्याय के विरोध में कमर कसकर तैयार खड़ी है। बस ज़रूरत है उसकी क्षमता और कौशल को समझने की, उसे प्रोत्साहित करने की और उसकी सराहना करने की।

पाठांत प्रश्न

1. कल्पना चावला को लोगों ने एअरोनॉटिकल इन्जीनियरिंग पढ़ने से क्यों मना किया? अगर आपके जीवन में ऐसी परिस्थिति आए, तो आप कल्पना चावला के जीवन से क्या प्रेरणा लेंगे?

टिप्पणी

2. बचेंद्री पाल ने सिलाई करके पढ़ाई जारी रखी। यदि आपके सामने भी इसी तरह की कोई आर्थिक या पारिवारिक समस्या आए, तो आप उसका हल किस प्रकार निकालेंगे? लिखिए।

3. फ़ीचर किसे कहते हैं? 'भारत की ये बहादुर बेटियाँ' एक फ़ीचर है'। सिद्ध कीजिए।

4. इस पाठ का शीर्षक आपको उचित लगता है या नहीं? यदि उचित लगता है तो क्यों?

5. कल्पना चावला और बचेंद्री पाल अपने विषय में सोच-समझकर स्वयं फ़ैसला लेने वाली, साहसी, दृढ़ निश्चयी, आत्म-विश्वासी महिलाएं हैं, इसीलिए वे आज इस रूप में याद की जाती हैं। इसी तरह की किसी एक महिला पर एक फ़ीचर लिखिए।

6. आज भी हमारे समाज के कुछ हिस्सों में लड़के और लड़की में भेद किया जाता है, क्या आपकी दृष्टि में यह उचित है–तर्कसहित लिखिए।

7. निम्नलिखित अनुच्छेद पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

   तैराकी आनंद की वस्तु होने के साथ-साथ हमारी आवश्यकता भी है। नदियों के आसपास के गाँवों के लोग, सड़क-मार्ग न होने पर एक दूसरे से तभी मिल सकते हैं, जब उन्हें तैरना आता हो अथवा नदियों में नावें हों। प्राचीन काल में नावें कहाँ थीं? तब तो आदमी को तैरकर ही नदियों को पार करना पड़ता था। किंतु, तैरने के लिए आदिम मनुष्य को निश्चय ही प्रयत्न और परिश्रम करना पड़ा होगा, क्योंकि उसमें अन्य प्राणियों की भाँति तैरने की जन्मजात क्षमता नहीं है। जल में मछली आदि जलजीवों को स्वच्छंद विचरण करते देख मनुष्य ने उसी प्रकार तैरना सीखने का प्रयत्न किया और धीरे-धीरे उसने इस कार्य में इतनी निपुणता प्राप्त कर ली कि आज तैराकी एक कला के रूप में गिनी जाने लगी है। विश्व में जो खेल प्रतियोगिताएँ आयोजित की जाती हैं, उनमें तैराकी प्रतियोगिता अनिवार्य रूप से सम्मिलित की जाती है।

   प्रश्न :

   1. प्राचीन काल में तैराकी मनुष्य की आवश्यकता क्यों थी?
   2. तैराकी व्यायाम है या खेल अथवा दोनों? सही तर्क देते हुए लिखिए।
   3. इस अनुच्छेद का सार एक तिहाई शब्दों में लिखिए। अनुच्छेद का उचित शीर्षक लिखिए।
   4. अनुच्छेद से जातिवाचक संज्ञा के पाँच उदाहरण छाँटकर लिखिए।
   5. अनुच्छेद से ऐसे दो–दो शब्द छाँटिए, जिनमें उपसर्ग या प्रत्यय हों। उन शब्दों में शामिल उपसर्ग तथा दो प्रत्ययों का भी उल्लेख कीजिए।

उत्तरमाला

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

6.1 1 (घ) 2. (च), (ङ), (घ), (ख), (क) (ग) 3. (ख) 4. (घ)

6.2 1 (ग) 2. (क) 3. (क), (घ), (ग), (ख)

6.3 (i) (घ) (ii) (ख) 2. (ख), (क), (घ), (ग), (ङ)

टिप्पणी

7

आज़ादी

आप कभी-कभी यह सोचते होंगे कि कितना अच्छा होता यदि आपको अपने ढंग से जीने के लिए स्वतंत्र छोड़ दिया जाता। जब कभी आपको कोई टोकता है, तो आपको बुरा लगता होगा। आप शायद नाराज़ भी होते होंगे उस पर। आप पर किसी तरह का बंधन न होता, तो आप अपनी मर्ज़ी के मालिक होते। जैसा आप चाहते, वैसा कर पाते। जहाँ घूमना-फिरना चाहते, अपनी इच्छा के अनुसार कर पाते। लेकिन आप यह भी जानते हैं कि कुछ पाने के लिए मेहनत आवश्यक है। कुछ बनने के लिए अनुशासन ज़रूरी है। आज जिसे आप आज़ादी समझ रहे हैं, वह कल अनुशासन के अभाव में बंधन बन सकती है। किसी भी व्यक्ति के लिए आज़ादी के क्या मायने होते हैं? आज़ादी के संदर्भ में उसकी क्या-क्या जिज्ञासाएँ होती हैं? आइए, इन सवालों से परिचित होने के लिए मलयालम के प्रतिनिधि कवि बालचंद्रन चुल्लिक्काड की कविता का आनंद उठाएँ।

उद्देश्य

इस कविता को पढ़ने के बाद आप–

- आज़ादी के सीमित और व्यापक संदर्भों की व्याख्या कर सकेंगे;
- साहस और कर्त्तव्यनिष्ठा का आज़ादी से संबंध स्थापित कर सकेंगे;
- जीवन में अभिव्यक्ति के महत्त्व का उल्लेख कर सकेंगे;
- ज्ञान, कर्म, बलिदान और जीवन का कारण-कार्य संबंध स्पष्ट कर सकेंगे;
- आज़ादी के संदर्भ में 'श्रम और स्वप्न' तथा 'कर्त्तव्य और अधिकार' के संबंधों की व्याख्या कर सकेंगे;
- कविता के काव्य-सौंदर्य का उल्लेख कर सकेंगे।

टिप्पणी

क्रियाकलाप-7.1

आप अपने पड़ोस में जाकर कुछ किशोरों को इकट्ठा कीजिए। उनकी पसंद-नापसंद के बारे में बातचीत कीजिए। बातचीत के क्रम में उनसे पूछिए कि उनके सपने क्या हैं? वे आगे चलकर क्या बनना चाहते हैं? उनकी कौन-सी समस्याएँ हैं? सूचनाओं को इकट्ठा कर लेने के बाद सामान्य समस्याओं का विश्लेषण कीजिए:

नाम	सपने	समस्याएँ
....	....	....
....	....	....
....	....	....
....	....	....

विश्लेषण: ....

....

....

7.1 मूल पाठ

आइए, इस कविता को एक बार ध्यान से पढ़ते हैं। आपकी सुविधा के लिए कविता में आए कठिन शब्दों के अर्थ हाशिए पर दिए जा रहे हैं।

आज़ादी

''उस्ताद जी, आज़ादी क्या होती है?''
-पूछा दर्जी से उसके शागिर्द ने,
''क्या वह चरागाह में उछल-कूद मचाता
नन्हा-सा बछड़ा है?
या सूरज में घोंसला बनाने को
उड़ी जाती चिड़िया?
या उत्तर दिशा में दौड़ती सीटी बजाती
रेलगाड़ी?
या अँधेरे में चलता मुसाफ़िर जिसकी
कामना करता है
वह लैंपपोस्ट?
निश्चिंत नींद?

चित्र 7.1

शब्दार्थ

उस्ताद- गुरु
शागिर्द- शिष्य, चेला
चरागाह- पशुओं के चरने का स्थान
बछड़ा- गाय का बच्चा
दिशा- ओर, तरफ़
मुसाफ़िर- यात्री
लैंपपोस्ट- बिजली का खंभा
निश्चिंत- बेफ़िक्र, बिना चिंता के

टिप्पणी

या इस अनंत कपड़े, शाश्वत रूप से गतिमान पहिए
और कभी न रुकने वाली सुई से मेरी मुक्ति?''

दर्जी ने जवाब दिया:
''आज़ादी का मतलब है- भूखे को खाना
प्यासे को पानी
ठंड से ठिठुरते को ऊनी कपड़ा, और
थके-माँदे को बिस्तर।
आज़ादी कवि के लिए शब्द है,
शिकारी के लिए तीर,
तनहाई के मारे के लिए महफ़िल है
डरे हुए के लिए पनाह,
आज़ादी यानी अज्ञानी को ज्ञान,
ज्ञानी को कर्म,
कर्मठ को बलिदान
और बलिदानी को जीवन।

पर, जो कपड़े नहीं सिएगा,
सपने भी नहीं देख सकेगा।
सुई की चमकीली नोंक पर
टिकी है आज़ादी।
आज़ादी वह फ़सल है जिसे
बोनेवाला ही काट सकता है,
वह रोटी, जिसे मेहनती ही खा
सकता है,
यह वह कपड़ा है, जिसे दर्जी ही
पहन सकता है,''
यह कहकर दर्जी फिर से कपड़े सीने लगा।
शागिर्द की उलझन दूर हुई और
वह सुई में धागा पिरोने लगा।

चित्र 7.2

शब्दार्थ
अनंत- असीम, जिसका अंत न हो
शाश्वत- नित्य, जो सदा बना रहे
मुक्ति- बंधन से छूटने की अवस्था या भाव
तनहाई- अकेलापन
महफ़िल- सभा, जलसा
पनाह- रक्षा, बचाव
कर्मठ- काम में लगे रहनेवाले
बलिदान - त्याग
बलिदानी- बलिदान करने वाला
उलझन- बाधा, समस्या, चिंता

मूल लेखक : बालचंद्रन चुल्लिक्काड
अनुवाद : असद ज़ैदी

7.2 आइए समझें

आइए, अब हम कविता के पहले अंश का भाव समझने के लिए इसे एक बार फिर से पढ़ लें।

टिप्पणी

7.2.1 अंश-1

जैसा कि आपने पढ़ा, इस कविता में दर्ज़ी से उसके शागिर्द ने पूछा कि आज़ादी का क्या अर्थ है? इस सवाल के साथ-साथ शागिर्द ने अपनी ओर से कई संदर्भों का वर्णन करके आज़ादी का अर्थ जानना चाहा। उसने अपने गुरु के सामने यह जिज्ञासा रखी कि क्या चरागाह में नन्हे-से बछड़े द्वारा उछल-कूद मचाने, बेफ़िक्र और ख़ुश रहने अर्थात उच्छृंखलता का नाम आज़ादी है? दूसरा संदर्भ देते हुए शागिर्द कहता है- लगभग असंभव समझे जाने वाले काम को पूरा करने के दुस्साहस को आज़ादी कहा जा सकता है? सूरज में घोंसला बनाने के लिए उड़ान भरने वाली चिड़िया का काम कुछ ऐसा ही है। शागिर्द ने यह भी पूछा कि कहीं उत्तर दिशा में सीटी बजाते हुए तेज़ भागती रेलगाड़ी का नाम तो आज़ादी नहीं? यहाँ आपके मन में सवाल उठ सकता है कि रेलगाड़ी किसी अन्य दिशा में क्यों नहीं जा रही है? सिर्फ उत्तर दिशा की ओर क्यों? दरअसल, यह कविता मलयालम में लिखी गई है, जो केरल की भाषा है। कवि भारत के दक्षिणी हिस्से का है, इसलिए वह रेलगाड़ी उत्तर दिशा में भागने की बात का उल्लेख करता है। केरल से चलने वाली रेलगाड़ी केवल उत्तर दिशा की ओर ही जा सकती है, क्योंकि केरल की बाकी तीनों दिशाओं में समुद्र है।

चित्र 7.3

चित्र 7.4

चित्र 7.5

वैसे यहाँ पर कवि शागिर्द के माध्यम से उस्ताद से प्रश्न करता है कि क्या सैर-सपाटा, घूमना-फिरना आजादी है? वास्तव में कुछ लोग खासतौर पर बारह-तेरह वर्ष की उम्र के किशोर घूमने-फिरने, सैर-सपाटे को ही आजादी मानते हैं, इसलिए शागिर्द का यह प्रश्न अनुचित नहीं है। अपने अगले प्रश्न में शागिर्द पूछता है कि क्या अंधेरे में भटकने वाले को लैंपपोस्ट मिल जाए तो उसकी परेशानियाँ समाप्त हो जाती हैं? इस प्रश्न को यों समझिए कि हम किसी यात्रा पर निकलें और यात्रा के दौरान अंधेरा हो जाए। अंधेरे में कहीं आश्रय मिल जाए और हम रुक जाएँ। क्या यह कुछ समय के लिए रुकना यात्रा का अंत हो सकता है? ठीक उसी प्रकार शागिर्द यह पूछ रहा है कि क्या मुसाफिर का अंधेरे में किसी लैंप पोस्ट के नीचे रुकना आजादी है? मंज़िल की प्राप्ति है? आज़ादी के बारे में अपनी जिज्ञासा व्यक्त करते हुए वह फिर पूछता है कि क्या निश्चिंत अर्थात् बेफ़िक्र होकर सो जाने का दूसरा नाम

चित्र 7.6

"उस्ताद जी, आज़ादी क्या होती है?"
-पूछा दर्जी से उसके शागिर्द ने।
क्या वह चरागाह में उछल-कूद मचाता
नन्हा-सा बछड़ा है?
या सूरज में घोंसला बनाने को
उड़ी जाती चिड़िया?
या उत्तर दिशा में दौड़ती सीटी बजाती
रेलगाड़ी?
या अंधेरे में चलता मुसाफ़िर जिसकी
कामना करता है
- वह लैंपपोस्ट?
निश्चिंत नींद?
या इस अनंत कपड़े, शाश्वत रूप से
गतिमान पहिए
और कभी न रुकनेवाली सुई से मेरी
मुक्ति?

आज़ादी है? इस तरह पाँच प्रकार के संदर्भों का उल्लेख करने के बाद कविता का मूल बिंदु सामने आता है। यहाँ शागिर्द के मन में जो प्रश्न उभरे हैं वे उसकी चिंतन-क्षमता को बता रहे हैं। शागिर्द अपनी मुक्ति या आज़ादी के बारे में पूछता है कि अनंत कपड़ों के ढेर, सिलाई मशीनों के निरंतर गतिशील हो रहे पहियों, कपड़ों पर अनवरत चलने वाली सुइयों से मुक्ति पाने का नाम तो आज़ादी नहीं है? आशय यह है कि क्या कर्म से मुक्ति ही आज़ादी है? ज़रा सोचिए कि क्या आपके मन में भी देश में आज़ादी किस प्रकार की होनी चाहिए, इसके बारे में तरह-तरह के विचार नहीं आते? लेखक की आज़ादी की व्याख्या के बारे में आप क्या सोचते हैं?

टिप्पणी

- कविता की इन पंक्तियों के माध्यम से यह पता चलता है कि हमारे समाज में आज़ादी को अनेक संदर्भों में देखा जाता है। कभी-कभी उन्मुक्तता, उच्छृंखलता, मनमर्जी, सैर-सपाटे, गैर-जिम्मेदारी, तात्कालिक तथा सीमित लाभ और कर्महीनता को ही आज़ादी मान लिया जाता है। ये सारे संदर्भ व्यक्तिगत और मामूली आनंद से प्रेरित हैं। आज़ादी का अर्थ ज़िम्मेदारी का भाव भी लिए है, जबकि उपर्युक्त संदर्भ गैर जिम्मेदारी लिए हुए हैं। शागिर्द अपने आस-पास आजादी के जितने संदर्भ देखता है, उनका वर्णन करते हुए उस्ताद से पूछता है कि क्या ये सब आजादी के विभिन्न रूप हैं, या आजादी कुछ और है।

क्रियाकलाप-7.2

- आपने कविता में 'अनंत' और 'गतिमान' शब्दों को पढ़ा। उनमें पहले शब्द 'अनंत' में अन् उपसर्ग लगा है जबकि दूसरे शब्द गतिमान में 'मान' प्रत्यय है। यानी कुछ शब्दों में उपसर्ग और प्रत्यय जोड़कर नए शब्द बनाए जाते हैं, आइए, शब्द-निर्माण के बारे में कुछ और जानकारी प्राप्त करें।

1. शब्द निर्माण का कार्य उपसर्ग, प्रत्यय, संधि और समास के माध्यम से किया जाता है।

   (i) उपसर्ग उन्हें कहते हैं जो शब्द के पहले लगते हैं और अर्थ को बदल देते हैं; जैसे:– 'हार' शब्द के पहले 'उप' लगकर उपहार बन जाता है।

   आपने देखा कि 'हार' शब्द में प्र (प्रहार), आ (आहार), वि (विहार) आदि लग जाने से शब्द भी नया शब्द बन गया और अर्थ में परिवर्तन आ गया।

   (ii) शब्द निर्माण का दूसरा आधार है– प्रत्यय।

   प्रत्यय शब्द के पीछे लगता है और अर्थ में परिवर्तन कर देता है।

   जैसे– मूर्ख + ता = मूर्खता, वर्ष + इक = वार्षिक।

(iii) तीसरा आधार है संधि।

दो वर्णों के मेल को संधि कहा जाता है; जैसे–

सूर्योदय, इत्यादि, विद्यालय, चंद्रोदय। इनका विच्छेद होगा—सूर्य + उदय, इति + आदि, विद्या + आलय, चंद्र + उदय।

(iv) चौथा आधार है समास:

दो शब्दों के मेल को समास कहते हैं, जैसे रसोईघर, पीतांबर, माता-पिता, रेलगाड़ी। इनका विग्रह होगा- रसोई के लिए घर, पीला है अंबर जिसका, माता और पिता, रेल पर चलने वाली गाड़ी।

2. शब्द-भंडार :- शब्द-भंडार में पर्यायवाची, विलोम शब्द, एकार्थक, अनेकार्थक, वाक्यांश के लिए एक शब्द आते हैं। कविता को समझने के लिए शब्द निर्माण तथा शब्द भंडार दोनों जरूरी हैं।

उपर्युक्त जानकारी के आधार पर निम्नलिखित अभ्यास कीजिए :

(क) उपसर्ग छाँटिए

पराभव, अनुशासन, बेवजह, प्रत्युत्तर

....

(ख) प्रत्यय छाँटिए :

साप्ताहिक, खटिया, गरमाहट

....

(ग) संधि-विच्छेद कीजिए :

पुस्तकालय, सूर्योदय, अत्यंत, प्रत्युत्तर

....

(घ) विग्रह कीजिए :

देश प्रेम, दही-बड़ा, दाएँ-बाएँ, चतुर्भुज

....

7.2.2 अंश-2

आइए, अब हम पाठ के दूसरे अंश को समझने से पहले उन्हें पुन: ध्यानपूर्वक पढ़ लें जो हाशिए में दिया गया है।

आपके मन में यह जिज्ञासा अवश्य होगी कि शागिर्द के प्रश्न का दर्ज़ी ने क्या उत्तर दिया। शागिर्द के सवाल को दर्ज़ी ने ध्यानपूर्वक सुना। दर्ज़ी के पास गहरे अनुभव हैं। उसने अपने अनुभवों के आधार पर बताया कि मूलभूत, अनिवार्य आवश्यकताओं की पूर्ति ही आज़ादी है। मूलभूत ज़रूरतें हैं– रोटी, कपड़ा और मकान। भूखे को खाना, प्यासे को पानी, ठंड से पीड़ित के लिए राहत पहुँचाने वाले ऊनी वस्त्र, थके-माँदे के लिए बिस्तर ही आज़ादी है।

दर्ज़ी ने जवाब दिया:
"आज़ादी का मतलब है– भूखे को खाना
प्यासे को पानी
ठंड से ठिठुरते को ऊनी कपड़ा, और
थके-माँदे को बिस्तर।
आज़ादी कवि के लिए शब्द है,
शिकारी के लिए तीर,
तनहाई के मारे के लिए महफ़िल है
डरे हुए के लिए पनाह,
आज़ादी यानी अज्ञानी को ज्ञान,
ज्ञानी को कर्म,
कर्मठ को बलिदान
और बलिदानी को जीवन।

इसके बाद दर्ज़ी ने शागिर्द से कहा कि आज़ादी एक अभिव्यक्ति है जिसका माध्यम शब्द है। क्या आप जानते हैं कि शब्द या अभिव्यक्ति का आज़ादी से क्या संबंध है। जो हमें उचित या अनुचित लगता है और हम उसे सच्चाई से शब्दों में अभिव्यक्त न कर पाएँ तो हम स्वतंत्र नहीं है, इसलिए हमारे समाज और देश में अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता की बात प्राय: की जाती है। हमारा यह कर्त्तव्य है कि जो हमें ठीक लगे और जिसे कहना समाज-हित में आवश्यक हो, वह हम अवश्य कहें। इसके लिए कभी-कभी साहस भी करना पड़ता है। शिकारी के लिए तीर के कमान आज़ादी एक साधन है। शिकारी का तो अस्तित्व ही नहीं है यदि उसके पास तीर न हो तो। कवि यहाँ पर कहना चाहता है कि जीवन के लिए अनिवार्य साधन का होना भी आज़ादी है। अकेलेपन के कष्ट से मुक्त होना, भय से मुक्त होना भी आज़ादी है।

अगली पंक्तियों में कवि ने ज्ञान, कर्म और बलिदान के कार्य-कारण संबंध को स्पष्ट किया है। ज्ञान, कर्म और बलिदान के समन्वय से जीवन को स्वस्थ व सुंदर बनाया जा सकता है। अज्ञानी के लिए ज्ञान प्राप्ति ही आज़ादी है। कहा भी जाता है कि ज्ञान हमें मुक्त करता है। यहाँ मुक्त करने का आशय है– सोचने-विचारने की क्षमता को विस्तार देना, ऐसा विस्तार जो व्यक्ति को संकीर्ण या ओछी बातों से मुक्त करके विशाल-हृदय वाला बनाता है। लेकिन ज्ञान कभी निष्क्रिय नहीं बनाता। ज्ञान को कर्म में बदलना भी ज़रूरी है। यदि हम ज्ञान को कर्म में नहीं बदलेंगे तो ज्ञान निरर्थक एवं आंतरिक ही रहेगा उसका लाभ दूसरों को नहीं मिल पाएगा। ज्ञान को कर्म में बदलने वाले को ही कर्मठ कहा जाता है। आप जानते ही हैं कि हमारे देश की आज़ादी के लिए जो महान् लोग लड़े थे उन्हें पहले यह ज्ञान हुआ था कि हम गुलाम हैं, हमें आज़ाद होना चाहिए, इसके बाद वे इस

ज्ञान के आधार पर सक्रिय हुए और देश आजाद हुआ। इसके लिए उनमें से बहुतों ने कई तरह से त्याग-बलिदान किया। किसी ने घर-बार छोड़ा, कोई जीवन-भर जेल में यातना सहता रहा, कोई फाँसी पर झूल गया। कर्मठ को बलिदान, त्याग ही आज़ादी प्रतीत होता है। ज्ञान, कर्म और त्याग को कवि ने अत्यधिक महत्त्व प्रदान किया है क्योंकि बलिदान करने वाले कभी मरते नहीं, वे सदैव जीवित रहते हैं, वे दूसरों को जीवन देते हैं और उनके द्वारा निरंतर याद किए जाते हैं।

टिप्पणी:-

उस्ताद द्वारा शागिर्द को दिए गए उत्तर को पढ़कर आज़ादी के विषय में आपके जो विचार हैं, उनका विस्तार हुआ होगा। आपको पता चला होगा कि आज़ादी बेकार की उछल-कूद, उन्मुक्तता, स्वच्छंदता में या यह मान लेने में नहीं है कि मैं चाहे जो करूँ। आज़ादी इसमें भी नहीं है कि हम ख़याली पुलाव पकाते रहें अर्थात् बेकार की कल्पनाएँ करते रहें। इधर-उधर, निश्चिंत होकर घूमना और मान लेना कि यह आज़ादी है- भ्रम है। हमारे समाज में कुछ लोग ऐसी ही गतिविधियों को आज़ादी मानते हैं। इसीलिए शागिर्द के मन में आज़ादी के विषय में जिज्ञासा हुई और उसने इसके समाधान के लिए अपने अनुभवी उस्ताद की शरण ली। शागिर्द को और हमें भी यह पता चला कि आज़ादी जीवन की अनिवार्यताओं से है। आज़ादी का अर्थ केवल अधिकारों को भोगना ही नहीं, बल्कि समाज तथा देश के प्रति कर्त्तव्य निभाना भी है।

पाठगत प्रश्न-7.1

सर्वाधिक उपयुक्त विकल्प चुनकर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

1. 'नन्हे-से बछड़े द्वारा उछल-कूद मचाना' से कवि का क्या आशय है?

   (क) भयभीत होकर जीना ☐ (ख) उन्मुक्त और उच्छृंखल होना ☐

   (ग) इच्छित को प्राप्त करना ☐ (ग) दिशाज्ञान प्राप्त करना ☐

2. अंधकार से प्रकाश की ओर उन्मुख होने का आशय है–

   (क) बंधन से छुटकारा पाना ☐ (ख) अज्ञान से ज्ञान की ओर जाना ☐

   (ग) अँधेरे में दीपक जलाना ☐ (घ) सूर्योदय की दिशा में जाना ☐

3. निम्नलिखित शब्दों में से किस शब्द में 'ई' प्रत्यय नहीं है।

   (क) ज्ञानी ☐ (ख) दानी ☐

टिप्पणी

(ग) पानी ☐ (घ) धानी ☐

4. आज़ादी का मतलब है–

(क) कुछ भी करने की छूट ☐ (ख) अनिवार्य आवश्यकता की पूर्ति ☐

(ग) उच्छृंखलता और स्वच्छंदता ☐ (घ) कर्म से मुक्ति ☐

5. आज़ादी किसके लिए क्या है– एक रेखा खींचकर मिलान कीजिए:

भयभीत	ज्ञान
जीवन	तीर
शिकारी	बिस्तर
तनहाई	बलिदान
अज्ञानी	पनाह
थका-माँदा	महफ़िल

7.2.3 अंश-3

आइए, अब हम कविता के अंतिम अंश को ठीक से समझने से पहले एक बार फिर पढ़ लें।

पर, जो कपड़े नहीं सिएगा,
सपने भी नहीं देख सकेगा।
सुई की चमकीली नोंक पर
टिकी है आज़ादी।
आज़ादी वह फ़सल है जिसे
बोनेवाला ही काट सकता है,
वह रोटी, जिसे मेहनती ही खा
सकता है,
यह वह कपड़ा है, जिसे दर्जी ही
पहन सकता है,''
यह कहकर दर्जी फिर से कपड़े
सीने लगा।
शागिर्द की उलझन दूर हुई और
वह सुई में धागा पिरोने लगा।

आपने जाना कि आज़ादी का व्यापक अर्थ है। कविता के इस तीसरे अंश में दर्जी यानी उस्ताद ने आज़ादी को कर्म से जोड़ा है। कपड़े सीने का उल्लेख करते हुए दर्जी ने कर्म की ओर संकेत किया है। कर्मठ व्यक्ति ही सपने देख सकता है। कहने का आशय यह है कि जो परिश्रम करेगा उसी के सपने पूरे होंगे। सुई की चमकदार नोंक पर आज़ादी टिकी हुई है अर्थात् कर्म करते रहने में ही आज़ादी है। कपड़े सिए जायेंगे, सुई चलती रहेगी यानी कर्म जारी रहेगा, तो आज़ादी बनी रहेगी। आज़ादी को बनाए रखने के लिए कर्म का सर्वाधिक महत्त्व है। क्या आप समझ पा रहे हैं कि इस अंश में उस्ताद ने आजादी का संबंध सबसे पहले सुई की नोंक से क्यों जोड़ा है? शागिर्द के प्रश्नों में अंतिम प्रश्न क्या था, याद कीजिए। शागिर्द का अंतिम प्रश्न था कि क्या इस कपड़े सीने वाली मशीन और सुई से मेरी मुक्ति आजादी है, अर्थात् कर्म से मुक्ति आजादी है? कभी-कभी निरंतर काम करते हुए हम भी थक जाते हैं और सोचते हैं– बस! अब और काम नहीं, लेकिन यह आराम की स्थिति कुछ देर की स्थिति है। हम फिर काम में लग जाते हैं। कर्म को हमेशा के लिए छोड़ा नहीं जा सकता। यही बात तो उस्ताद भी कह रहे हैं, कर्म करना आज़ादी है।

उस्ताद का यह मत है कि जो कर्म नहीं करता, उसे आज़ादी को भी भोगने का अधिकार नहीं है। यह बात अनेक प्रकार के उदाहरण देकर कहता है। कड़ी मेहनत करके धूप,

बारिश, जाड़ा सहने के बाद किसान के खेत में फसल लहलहाती है। उस फसल को काटने का अधिकार केवल किसान को ही मिलना चाहिए। रोटी उसे ही मिलती रहनी चाहिए, जो उसके लिए मेहनत करता है। ऐसा न हो कि मेहनत कोई करे और खाए कोई और। बोए कोई और काटे कोई और। श्रम का उचित फल मिलना चाहिए। यह उचित फल आज़ादी का पर्याय है। इसके साथ-साथ आज़ादी का दूसरा नाम कर्म है। कर्म ही आज़ादी है और पारिश्रमिक का उचित फल प्राप्त होना ही आज़ादी है। इस प्रकार आज़ादी का वास्तविक अर्थ, उसके विविध संदर्भ और श्रम तथा कर्त्तव्य के साथ उसके संबंध को स्पष्ट करते हुए दर्जी फिर से कपड़े सीने लगा। यहाँ पर उस्ताद का फिर से कपड़े सीने में लग जाना, निरंतर कर्म करते रहने का संदेश देता है। उस्ताद का उत्तर सुनकर और उसे कर्मरत देखकर शागिर्द की परेशानियाँ दूर हुईं। वह भी सुई में धागा पिरोने लगा उसकी समस्या का समाधान हो गया और उसने पुनः कर्मरत होने का निर्णय ले लिया। आज़ादी को जीवित रखने के लिए श्रम परम आवश्यक है, यह आप भी समझ गए होंगे।

टिप्पणी

- भारत में कभी यह भी होता था कि किसान परिश्रम करता था, खेत जोतता था, उसे सींचता था, खेत की रखवाली करता था, लेकिन फसल पकने पर उसे कोई ताकतवर लोग काटकर ले जाते थे। भारत जब गुलाम था तब भी भारतीयों के श्रम से उत्पन्न वस्तुओं को शासक अंग्रेज ले जाते थे। स्वाधीनता के बाद भी कहीं-कहीं यह स्थिति बनी रही कि कुछ लोगों को श्रम का उचित फल नहीं मिला, इसलिए उन्हें वास्तविक आज़ादी नहीं मिली। इसलिए जनकवि अदम गोंडवी ने आज़ादी के बारे में कहा है-

  सौ में अस्सी फ़ीसदी जो आज भी नासाज़ हैं
  दिल पर रखकर हाथ कहिये देश क्या आज़ाद है?

- कर्त्तव्य एवं अधिकार सिक्के के दो पहलू हैं। आज़ादी को बनाए रखने के लिए कर्त्तव्य का स्थान महत्त्वपूर्ण है।
- आज़ादी केवल राजनीतिक ही नहीं होती, उसके सामाजिक तथा आर्थिक पहलू भी हैं।

क्रियाकलाप-7.3

पाठ में 'सकेगा' और 'सकता' क्रियाओं के प्रयोग देखे जा सकते हैं, जैसे बोनेवाला ही काट सकता है, सपने भी नहीं देख सकेगा आदि। दरअसल, 'सकना' क्रिया का प्रयोग अनेक अवसरों पर, अनेक रूपों में किया जा सकता है, जिनमें प्रमुख हैं:

अनुमति माँगने के रूप में - क्या मैं भी चल सकता हूँ?

संभावना को व्यक्त करने के लिए - तीन दिन में यह काम हो सकेगा।

अशक्तता या क्षमता को बताने के लिए - वह बीमार है, इसलिए चल नहीं सकेगा।

आशा की अभिव्यक्ति के लिए- एकजुट होकर दुनिया को बदला जा सकता है।

आग्रह को व्यक्त करने के लिए - यदि मेरे साथ चल सकें, तो बड़ी कृपा होगी।

अब आप भी उपर्युक्त स्थितियों को व्यक्त करने वाले ऐसे पाँच वाक्य लिखिए;

1. ....

2. ....

3. ....

4. ....

5. ....

7.4 भाव-सौंदर्य

कविता का आरंभ काम से थके शागिर्द की जिज्ञासा से होता है। चूँकि इस जिज्ञासा का संबंध पाठक से भी है, इसलिए यह कविता उसे आकर्षित करने की क्षमता रखती है। कविता प्रश्नों और उनके उत्तरों की शृंखला स्थापित करती है और इस शृंखला के अनुकूल लयात्मकता बनी है जो आज़ादी की वास्तविकता को स्थापित करती है। कविता में यह संदेश बहुत ही प्रभावशाली ढंग से दिया गया है कि आज़ादी या मुक्ति का अर्थ उच्छृंखलता, दुस्साहस, अवसरवाद या संकीर्ण सुख नहीं, बल्कि आज़ादी का संबंध श्रम, त्याग और बलिदान से है। आज जिस आज़ादी को हम भोग रहे हैं, उसके पीछे भी असंख्य लोगों का त्याग-बलिदान छिपा है। उनके त्याग-बलिदान ने हमें जीवन दिया है। वे हमारे भीतर जी रहे हैं। इसके साथ-साथ कविता उन लोगों को अधिकार दिलाने की बात करती हैं जो श्रम करने के बावजूद इन अधिकारों से वंचित हैं। इस स्थापना के माध्यम से कवि अपने उन सभी पाठकों को एक दिशा देता है जो आज़ादी को एकांगी, निरपेक्ष और व्यक्तिगत समझते हैं। आज़ादी और कर्त्तव्य अर्थात् श्रम के महत्त्व को जानकर ही शागिर्द के सारे भ्रम दूर हो जाते हैं और वह काम में लग जाता है। यह कविता प्रत्येक पढ़ने वाले को भी प्रभावशाली ढंग से यह प्रेरणा देती है।

7.5 भाषा-सौंदर्य

- कविता की भाषा सरल और सहज है। शब्द भी आसान और बोलचाल की भाषा के हैं।
- कविता में अरबी, फ़ारसी और अंग्रेजी शब्दों का भी प्रयोग हुआ है। उस्ताद, दर्ज़ी, शागिर्द, तनहाई, पनाह आदि शब्द फ़ारसी मूल के हैं, तो मुसाफ़िर, महफ़िल आदि शब्द अरबी भाषा के हैं। लैंपपोस्ट शब्द अंग्रेजी भाषा का है।

टिप्पणी

- **चमकीली** नोंक, **अनंत** कपड़े, **गतिमान** पहिए, **नन्हा-सा** बछड़ा आदि में विशेषणों का सुंदर प्रयोग हुआ है।
- आप जान चुके हैं कि यह कविता बालचंद्रन चुल्लिक्काड ने मूल रूप से मलयालम भाषा में लिखी है। इसका हिन्दी में अनुवाद कवि असद ज़ैदी ने किया है। भाषा-शैली के स्वाभाविक प्रयोग के कारण यह कविता अनूदित होकर भी मूल रचना की तरह आनंद प्रदान करती है।

पाठगत प्रश्न-7.2

सर्वाधिक उपयुक्त विकल्प चुनकर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए:

1. 'जो कपड़े नहीं सिएगा' पंक्ति किसकी ओर संकेत करती है:

   (क) दर्ज़ी के शागिर्द की ओर ☐

   (ख) कर्त्तव्य-पालन करने वाले की ओर ☐

   (ग) फटे-पुराने कपड़े सीने वाले की ओर ☐

   (घ) मस्ती में जीने वाले की ओर ☐

2. दर्ज़ी एक प्रकार का व्यवसाय है। नीचे दिए शब्दों में कौन-सा व्यवसाय नहीं है?

   (क) बढ़ईगिरी ☐ (ख) डॉक्टरी ☐

   (ग) कारीगरी ☐ (घ) राजगिरी ☐

3. दर्ज़ी के अनुसार आज़ादी को भोगने का अधिकार किसे होना चाहिए?

   (क) जो निरंतर कर्म करता है ☐

   (ख) जो देश का नागरिक है ☐

   (ग) जो देश से प्रेम करता है ☐

   (घ) जो सरकार की नौकरी करता है ☐

4. निम्नलिखित शब्दों में से उपसर्ग और प्रत्यय छाँटिए:

   अनंत, गतिमान, शिकारी, अज्ञानी, चमकीली, बोनेवाला

आपने क्या सीखा

- 'आज़ादी' शीर्षक कविता मूलरूप से मलयालम में लिखी गई है। इसके कवि बालचंद्रन चुल्लिक्काड हैं। इसका हिंदी अनुवाद असद ज़ैदी ने किया है।

- आज़ादी केवल राजनीतिक नहीं होती। इसके अनेक संदर्भ और अर्थ हैं।
- आज़ादी को बनाए रखने के लिए कर्त्तव्य अथवा कर्म के महत्त्व को भी जानना होगा। काम-धाम से छुटकारा पाना आज़ादी का लक्ष्य नहीं है।
- दर्जी के जवाब में उसके लंबे अनुभव और व्यापक चिंतन क्षमता का परिचय मिलता है। दर्जी और शार्गिद के बहाने आज़ादी के सही मायने बताए गए हैं।
- कविता की भाषा सरल और सहज है।
- अनुवाद मूल रचना का स्वाद प्रदान करती है।

योग्यता-विस्तार

- इस कविता के कवि बालचंद्रन चुल्लिक्काड हैं। उनका जन्म 1958 में हुआ था। आप मलयालम साहित्य के चर्चित रचनाकार हैं। 'अमावसी', 'पतिनेटु', 'कवितकव्व' आदि आपकी प्रतिनिधि रचनाएँ हैं। साहित्य के अलावा अभिनय तथा निर्देशन के क्षेत्र में भी बालचंद्रन चुल्लिक्काड एक उल्लेखनीय नाम है। पत्रकारिता में आपको विशेषज्ञता हासिल है।

  भारत की स्वाधीनता के बाद अनेक हिंदी कवियों ने देश की आज़ादी को झूठी आज़ादी कहा, क्योंकि आज़ादी के बाद जनता के बहुत बड़े हिस्से के लिए मूलभूत चीजें दुर्लभ रहीं। इस आशय की कविताएँ लिखने वालों में धूमिल का नाम महत्त्वपूर्ण है। इस संदर्भ में उनका कविता-संग्रह 'संसद से सड़क तक' पठनीय है।

पाठांत प्रश्न

1. शागिर्द ने अपने सवाल 'आज़ादी क्या होती है' के दौरान् कुछ जिज्ञासाएँ व्यक्त की थीं। क्या उन जिज्ञासाओं के साथ आप कुछ और जिज्ञासाएँ जोड़ सकते हैं? यदि हाँ, तो लिखिए।
2. क्या आज़ादी का संबंध कर्म से है? कैसे? समझाकर लिखिए।
3. आपकी दृष्टि में आज़ादी का सही अधिकारी कौन है और क्यों?
4. अपनी आज़ादी को लेकर आप भी परिवार में कई बार तनावग्रस्त हुए होंगे। आप तनावमुक्त कैसे हुए, उसका उल्लेख कीजिए।
5. निम्नलिखित पंक्तियों का भाव स्पष्ट कीजिए

   पर जो कपड़े नहीं सिएगा
   सपने भी नहीं देख सकेगा
   सुई की चमकीली नोंक पर
   टिकी है आज़ादी।

6. अपने परिवेश से उदाहरण देते हुए ज्ञान, कर्म और बलिदान के पारस्परिक संबंध को स्पष्ट कीजिए।

7. 'बलिदानी को जीवन' का आशय स्पष्ट कीजिए।

8. शागिर्द ने सुई में धागा पिरोने का निर्णय क्यों ले लिया?

9. निम्नलिखित कविता को ध्यान से पढ़िए और पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए–

हम पंछी उन्मुक्त गगन के
पिंजरबद्ध न गा पाएँगे
कनक तीलियों से टकराकर
पुलकित पंख टूट जाएँगे!

स्वर्ण–शृंखला के बंधन में
अपनी गति उड़ान सब भूले
बस सपने में देख रहे हैं
तरु की फुनगी पर के झूले।

1. पंछी पिंजरबद्ध होकर क्यों नहीं गा पाते?
2. पंछी पंख टूटने की आशंका क्यों जताता है?
3. पंछी सपने में क्या देखता है?
4. इन पंक्तियों का कोई उपयुक्त शीर्षक लिखिए।

उत्तरमाला

पाठगत प्रश्न

7.1 1. (ख) 2. (ख) 3. (ग) 4. (ख)

5. भयभीत – पनाह, जीवन – बलिदान, शिकारी – तीर, तनहाई – महफ़िल, अज्ञानी - ज्ञान, थका–माँदा - बिस्तर।

7.2 1. क 2. ग 3. क

4. अनंत - 'अन्' उपसर्ग
गतिमान - 'मान' प्रत्यय
शिकारी - 'ई' प्रत्यय
चमकीली - 'ईला' और 'ई' प्रत्यय
(चमक ---> चमकीला ---> चमकीली)
बोनेवाला - 'वाला' प्रत्यय

8

चंद्रगहना से लौटती बेर

आपने गाँव की खूबसूरती को देखा है। खुले-खुले खेत, झूमती फसलें, लहराते तालाब, चमकती चाँदनी, चहकते पक्षी और प्रकृति के अनेक सुंदर दृश्य हमारे मन में हलचल मचाते हैं। इन्हें देखकर बड़ा आनंद आता है। देखने के बाद सामान्य व्यक्ति उन्हें भूल भी जाते है, किंतु कवि का देखना औरों के देखने से अलग होता है। कवि किसी भी दृश्य का सूक्ष्म अवलोकन करता है, वह उन दृश्यों को अपने शब्दों में पिरो लेता है और ऐसा आकर्षक बना देता है कि पाठक या श्रोता आनंदित हो उठते हैं। हमने और आपने भी खेतों में कई प्रकार की फसलें देखी हैं, गाँव के पोखर भी देखे हैं, वसंत का आनंद भी लिया है, लेकिन कवि ने जिस ढंग से इन दृश्यों को उतारा है, वह बिल्कुल निराला है— ऐसा निराला कि कविता पढ़ते समय वे दृश्य हमारी आँखों के सामने सजीव हो उठते हैं, हमें आनंदित कर देते हैं। कवि ने कैसे उभारा है इन दृश्यों को, आइए पढ़ते हैं कविता— चंद्रगहना से लौटती बेर।

उद्देश्य

इस पाठ को पढ़ने के बाद आप—

- गाँव के प्राकृतिक दृश्यों के बारे में बता सकेंगे;
- ग्रामीण परिवेश में ब्याह-शादी के दृश्य पर टिप्पणी कर सकेंगे;
- प्रकृति-चित्रण के माध्यम से समाज के भिन्न-भिन्न व्यवहारों का उल्लेख कर सकेंगे;
- तालाब के दृश्य और उसमें घटित होने वाली घटनाओं का वर्णन कर सकेंगे;
- महत्त्वपूर्ण स्थलों की व्याख्या कर सकेंगे;
- कविता का भाषा-सौंदर्य स्पष्ट कर सकेंगे।

8.1 मूल पाठ

चंद्रगहना से लौटती बेर

देख आया चंद्रगहना
देखता हूँ दृश्य अब मैं
मेंड़ पर इस खेत की बैठा अकेला।
एक बीते के बराबर
यह हरा ठिगना चना,
बाँधे मुरैठा शीश पर
छोटे गुलाबी फूल का,
सज कर खड़ा है।
पास ही मिल कर उगी है
बीच में अलसी हठीली
देह की पतली, कमर की है लचीली,
नील फूले फूल को सिर पर चढ़ाकर
कह रही है जो छुए यह
दूँ हृदय का दान उसको।
और सरसों की न पूछो—
हो गई सबसे सयानी,
हाथ पीले कर लिए हैं,
ब्याह-मंडप में पधारी;
फाग गाता मास फागुन
आ गया है आज जैसे।
देखता हूँ मैं : स्वयंवर हो रहा है
प्रकृति का अनुराग अंचल हिल रहा है
इस विजन में
दूर व्यापारिक नगर से
प्रेम की प्रिय भूमि उपजाऊ अधिक है।

और पैरों के तले है एक पोखर,
उठ रहीं इसमें लहरियाँ,
नील तल में तो उगी है घास भूरी,
ले रही वह भी लहरियाँ।
एक चाँदी का बड़ा-सा गोल खंभा
आँख को है चकमकाता।
हैं कई पत्थर किनारे
पी रहे चुपचाप पानी
प्यास जाने कब बुझेगी!

टिप्पणी

चंद्रगहना – गाँव का नाम
बीते के बराबर – छोटा-सा (बालिश्त भर)
ठिगना – छोटा, नाटा
मुरैठा – पगड़ी
अलसी – एक तिलहन का पौधा
हठीली – ज़िद्दी
सयानी होना –(i) समझदार होना
(ii) युवती होना
(iii) चतुर होना
हाथ पीले होना – विवाह होना
फाग – होली के मौसम में गाया जाने वाला लोकगीत
स्वयंवर – विवाह की वह प्रथा जिसमें युवती स्वयं अपना वर चुनती है
अनुराग – स्नेह, प्रेम
अंचल – आँचल
विजन – निर्जन
पोखर – छोटा तालाब
लहरियाँ – पानी में उठने वाली छोटी-छोटी लहरें
नील तल – नीले रंग की सतह
चाँदी का बड़ा-सा गोल खंभा – पानी में चंद्रमा की परछाई या प्रतिबिंब
चकमकाता – चौंधियाता, चकाचौंध पैदा करता
श्वेत – सफ़ेद, उजला
चटुल – चतुर, चालाक
गगन – आकाश, आसमान

टिप्पणी

मीन – मछली
ध्यान निद्रा–ध्यान रूपी निद्रा, ध्यान में डूबा हुआ-सा
चट – तुरंत
झपाटे मारना – झपटना

चुप खड़ा बगुला डुबाए टाँग जल में,
देखते ही मीन चंचल–
ध्यान निद्रा त्यागता है,
चट दबा कर चोंच में
नीचे गले के डालता है।
एक काले माथ वाली चतुर चिड़िया
श्वेत पंखों के झपाटे मार फ़ौरन
टूट पड़ती है भरे जल के हृदय पर,
एक उजली चटुल मछली
चोंच पीली में दबाकर
दूर उड़ती है गगन में।

– केदारनाथ अग्रवाल

8.2 आइए, समझें

8.2.1 अंश–1

कविता पढ़ते हुए यह आप जान गए होंगे कि इसमें प्रकृति का सुंदर चित्रण किया गया है। कवि चंद्रगहना नामक किसी स्थान से लौटा है। लौटते हुए निर्जन खेतों में उसने प्रकृति के मोहक सौंदर्य के अनेक दृश्य देखे हैं और उन्हें अपनी कविता में चित्रित किया है। आइए, इसे ठीक से समझने के लिए इस कविता की प्रारंभ की 25 पंक्तियाँ एक बार फिर से पढ़ लें।

देख आया चंद्रगहना
देखता हूँ दृश्य अब मैं
मेंड़ पर इस खेत की बैठा अकेला।
एक बीते के बराबर
यह हरा ठिगना चना,
बाँधे मुरैठा शीश पर
छोटे गुलाबी फूल का,
सज कर खड़ा है।
पास ही मिल कर उगी है
बीच में अलसी हठीली
देह की पतली, कमर की है लचीली,
नील फूले फूल को सिर पर चढ़ाकर
कह रही है जो छुए यह
दूँ हृदय का दान उसको।
और सरसों की न पूछो–
हो गई सबसे सयानी,
हाथ पीले कर लिए हैं,
ब्याह-मंडप में पधारी;
फाग गाता मास फागुन
आ गया है आज जैसे।
देखता हूँ मैं : स्वयंवर हो रहा है
प्रकृति का अनुराग अंचल हिल रहा है
इस विजन में
दूर व्यापारिक नगर से
प्रेम की प्रिय भूमि उपजाऊ अधिक है।

कविता के प्रारंभ में पहली ही पंक्ति में कवि मानो सूचना दे रहा है–'मैं चंद्रगहना देख आया।' लौटते हुए खेत की मेंड़ पर अकेला बैठा हुआ वह खेत और उसके आस-पास के दृश्यों को देख रहा है। सबसे पहले उसका ध्यान खेत में उगे हुए चने की ओर जाता है। चने के पौधे का आकार छोटा होता है। चने में गुलाबी रंग के फूल आ गए हैं। कवि को लगता है, यह छोटे-से कद का, बित्ते भर का चना अपने सिर पर गुलाबी पाग (पगड़ी) बाँधे, सजे-सँवरे दूल्हे-सा खड़ा है।

चना और अलसी दोनों एक ही खेत में पास-पास खड़े हैं। अलसी का पौधा दुबला-पतला और लचीला होता है इसलिए हवा से हिलता-डुलता रहता है। कविता में अलसी के तीन विशेषण दिए हैं– वह हठीली है, वह देह की पतली है और उसकी कमर लचीली है। वह पतली होने के कारण हिलती तो रहती है लेकिन तन कर सीधी भी हो जाती है। तन कर सीधी खड़ी रहती है इसीलिए हठीली भी है। उसके सिर पर कुछ बड़े गोल आकार की डोंड़ियाँ होती हैं, जो फूलती हैं और उन्हीं में बीज बनता है। अलसी का फूल नीले रंग का होता है। अलसी को देखकर कवि को लगता है कि यह दुबली-पतली लड़की है, जो मचलती दिख रही है और मानो कह रही है, 'जो मुझे छू लेगा, मैं उसे

अपना हृदय दे दूँगी। उससे प्यार करने लगूँगी। उसी की हो जाऊँगी'। हठीली होने के बावजूद वह प्यार के लिए लालायित है।

'और सरसों की न पूछो'—किसी के निरालेपन की बात करनी होती है तो हम बात ऐसे ही शुरू करते हैं-'अरे, शोभा की न पूछो। उसकी तो बात ही कुछ और है।' या 'शलभ की बात न पूछो, उस जैसा तो कोई है ही नहीं।' इसी अंदाज़ में कवि कहता है—'और सरसों की न पूछो !' सरसों अब सयानी हो गई है। 'सयानी होना' के तीन अर्थ हैं—एक तो समझदार होना, दूसरा यौवन पा लेना और तीसरा चतुर होना। यहाँ सरसों के विषय में उसे सयानी कह कर कवि ने युवती होने की ओर संकेत किया है और बताया है कि वह विवाह-योग्य हो गई है इसीलिए उसने अपने हाथ पीले कर लिए हैं। हाथ पीले करना' एक मुहावरा है, जिसका अर्थ शादी कर लेना है।

कवि ने सरसों के प्रसंग में ही 'हाथ पीले करना' का प्रयोग क्यों किया? क्योंकि सरसों जब फूलती है तो पूरा खेत ही पीला हो जाता है। तो पीली सरसों ब्याह के मंडप में पधार चुकी है। वहाँ गुलाबी साफा बाँधे चना पहले से ही बैठा है। विवाह की हलचल में फागुन का महीना कैसे चुप रहता? वह 'फाग' गाता हुआ आ पहुँचा है। फाग का गाना, चने का सजना, सरसों का हाथ पीले करना, इन सबमें एक-दूसरे का हो जाने की ललक है।

इस पूरे दृश्य में कवि को लगता है, जैसे स्वयंवर हो रहा है। (किसका ? सरसों का।) जिस प्रकार माँ विवाह-मंडप में कन्या के ऊपर स्नेह भरे आँचल की छाँह करती है, उसी प्रकार यहाँ प्रकृति माँ की भूमिका निभा रही है। प्रकृति का अनुराग भरा आँचल हिल रहा है!

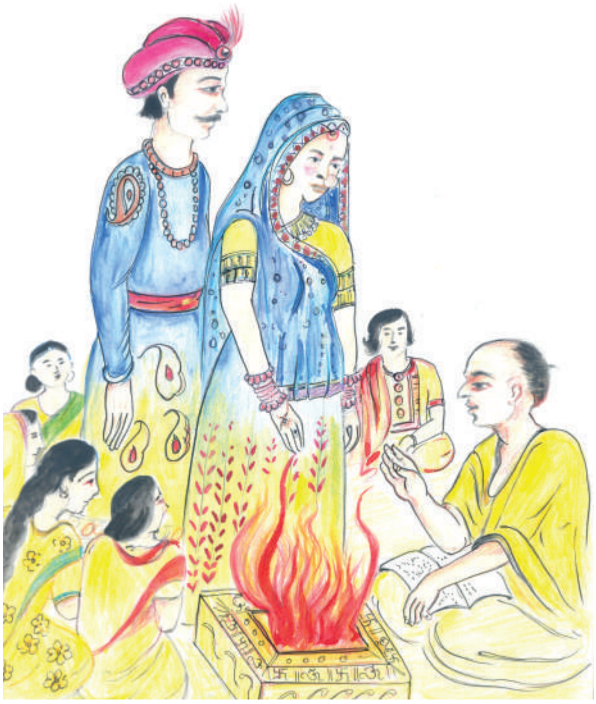

चित्र 8.1

यह दृश्य कवि के मन को छू लेता है। उसे लगता है इस ग्रामीण अंचल में किसी नगर की अपेक्षा अधिक प्यार भरा वातावरण है। नगर तो व्यावसायिक हो गए हैं। व्यावसायिक नगरों में प्यार कम उपजता है। ग्रामीण अंचल की भूमि प्रेम-प्यार के लिए अधिक उपजाऊ है। जैसे कि इस निर्जन अंचल में भी प्रकृति के चप्पे-चप्पे में प्यार दिखाई पड़ रहा है।

टिप्पणी

क्या आपने एक बात पर ध्यान दिया? अलसी, सरसों आदि वनस्पतियाँ हैं, परंतु कवि ने उन्हें मनुष्यों जैसी क्रियाएँ करते दिखाया है। चना पगड़ी बाँधे खड़ा है। पतली कमर वाली अलसी कह रही है–'मुझे छुओ तो हृदय का दान दे दूँ।' सरसों ब्याह-मंडप में हाथ पीले किए बैठी है। फागुन फाग गा रहा है। जहाँ कवि जड़ प्रकृति या वनस्पति- जगत को चेतन मनुष्य जैसा व्यवहार करते दिखाता है, उसे **मानवीकरण** कहते हैं। मानवीकरण से कविता में सुंदरता आ जाती है। इसे ही **मानवीकरण अलंकार** भी कहते हैं।

यहाँ मानवीकरण के अतिरिक्त एक और सुंदर विधान है। इस पूरे प्रकरण में एक विवाह के मंडप का रूपक है। विवाह के शुभ अवसर पर दूल्हा और उसके परिवार के पुरुष सदस्य गुलाबी पगड़ी बाँधते हैं, लड़कियाँ सज-सँवर कर फूल लेकर अगवानी और छेड़छाड़ करती हैं, कन्या ब्याह-मंडप में लाई जाती है और रात भर लोक गीत गाए जाते हैं।

पाठगत प्रश्न-8.1

सर्वाधिक उपयुक्त विकल्प चुनकर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

1. कवि ने चने को गुलाबी मुरैठा बाँधे बैठा हुआ क्यों कहा है?

   (क) चना बहुत प्रसन्न है ☐ (ख) चना विवाह के लिए तैयार है ☐

   (ग) चना पकने को है ☐ (घ) चने को मिलने जाना है ☐

2. हृदय का दान से क्या अभिप्राय है?

   (क) हृदय का इलाज कराना ☐ (ख) प्यार करना ☐

   (ग) भला चाहना ☐ (घ) इज्जत देना ☐

3. 'फाग गाता मास फागुन आ गया है' पंक्ति में कौन-सा अलंकार है।

   (क) यमक ☐ (ख) उपमा ☐

   (ग) मानवीकरण ☐ (घ) रूपक ☐

4. 'प्रेम की प्रिय भूमि उपजाऊ अधिक है'–किसके लिए कहा गया है?

   (क) सरसों के लिए ☐ (ख) व्यापारिक भूमि के लिए ☐

   (ग) ग्रामीण परिवेश के लिए ☐ (घ) अलसी के लिए ☐

टिप्पणी

क्रियाकलाप-8.1

मानवीकरण क्या है– यह आप समझ ही चुके हैं। विभिन्न ऋतुओं के आने पर प्रकृति में परिवर्तन होता है। नीचे ऐसी ही कुछ स्थितियाँ दी गई हैं। उनका मानवीकरण कीजिए।

	स्थिति	मानवीकरण
(क)	वसंत ऋतु में पेड़ में नए पत्ते आना	....
(ख)	सावन में मेघों का गर्जना	....
(ग)	सर्दी में कोहरा पड़ना	....
(घ)	गर्मियों में लू चलना	....

8.2.2 अंश - 2

आइए, पहले कविता की शेष पंक्तियों को एक बार फिर से पढ़ लेते हैं। इन पंक्तियों में पाँच दृश्य हैं, जो क्रमशः इस प्रकार हैं :

1. तालाब में लहरियाँ लेती भूरी घास।
2. चाँदी का बड़ा-सा गोल खंभा (चाँद का प्रतिबिम्ब)।
3. किनारे पर पड़े पत्थर
4. मछली की टोह में ध्यानमग्न बगुला।
5. मछली पर झपटती काले माथे वाली चिड़िया।

कवि को नीचे एक तालाब दिखाई पड़ता है जिसमें छोटी-छोटी लहरें (लहरियाँ) उठ रही हैं। पोखर का तल नीला है पर उसमें भूरे रंग की कुछ घास भी उगी है और तालाब की लहरों में वह भी डोल रही है।

साँझ होने को आई है और तालाब की सतह पर चाँद का प्रतिबिंब चमक रहा है। उसकी चमक आँखों को चौंधिया देती है। चाँद के बारे में कवि की कल्पना देखिए–'एक चाँदी का बड़ा-सा गोल खंभा'। चाँद के लिए चाँदी का बड़ा-सा, गोल खंभा कहना ठीक है, परंतु क्या आप बता सकते हैं कि चाँद कवि को खंभा क्यों प्रतीत हुआ? जी, हाँ ! किसी तालाब या पोखर के हिलते जल में चाँद का प्रतिबिंब उसकी गहराई का भी बोध कराता है जबकि शांत जल में वह एक गोला-सा ही लगता। लहरों वाले तालाब में किरणों के फिसलने से उसमें लंबाई प्रतीत होती है। इसलिए कवि को लगता है–'चाँदी का बड़ा-सा गोल खंभा।' –इसे ही कहते हैं कवि की सूक्ष्म दृष्टि और कल्पना।

और पैरों के तले है एक पोखर,
उठ रहीं इसमें लहरियाँ,
नील तल में तो उगी है घास भूरी,
ले रहीं वह भी लहरियाँ।
एक चाँदी का बड़ा-सा गोल खंभा
आँख को है चकमकाता।
हैं कई पत्थर किनारे
पी रहे चुपचाप पानी
प्यास जाने कब बुझेगी !
चुप खड़ा बगुला डुबाए टाँग जल में,
देखते ही मीन चंचल–
ध्यान निद्रा त्यागता है,
चट दबा कर चोंच में
नीचे गले के डालता है।
एक काले माथ वाली चतुर चिड़िया
श्वेत पंखों के झपाटे मार फ़ौरन
टूट पड़ती है भरे जल के हृदय पर,
एक उजली चटुल मछली
चोंच पीली में दबाकर
दूर उड़ती है गगन में।

चित्र 8.2

आइए अब देखें कि इस कविता की अगली तीन पंक्तियों में कवि क्या कहना चाहता है। क्या आप कभी तालाब के किनारे घूमने गए हैं? आपने ध्यान दिया होगा—तालाब के किनारे अनेक पत्थर भी होते हैं। कवि का ध्यान भी उन पत्थरों की ओर जाता है। कवि कल्पना करता है कि वे पत्थर तालाब के किनारे पड़े चुपचाप उसका पानी पी रहे हैं। कब से? वर्षों से, शायद जब से तालाब बना, तब से। कवि यहाँ पर तालाब और उसमें स्थित पत्थरों के प्राचीन साहचर्य को व्यक्त करता है। तालाब के पानी में रहने वाली अन्य वस्तुएँ गतिशील हैं, लेकिन पत्थर बिना हिले-डुले उसमें चुपचाप पड़े हुए हैं। इन्हें देखकर कवि कल्पना करता है कि ये पत्थर पता नहीं कितने समय से चुपचाप तालाब का पानी पी रहे हैं। पानी में डूबे पत्थरों में कवि को झुककर पानी पीते प्राणियों की याद आ रही होगी इसलिए यहाँ पर उसने पत्थरों का सुंदर मानवीकरण किया है। ये पत्थर निरंतर पानी पीने की मुद्रा में ही रहते हैं, इसलिए कवि विस्मय प्रकट करता है कि पता नहीं इनकी प्यास कब बुझेगी।

कविता की आगे की पंक्तियों में तालाब के कुछ और दृश्य भी कवि का ध्यान खींचते हैं। जैसे— एक बगुला, जो पानी में टाँगें डुबाए, ध्यानमग्न सोया हुआ-सा खड़ा है। वह सचेत तो है, परंतु देखने वाले को ऐसे लगता है जैसे सो रहा है। पर ज्यों ही उसे कोई चंचल मछली दिखाई पड़ती है वह उसे तत्काल लपक कर गटक लेता है।

एक काले माथे वाली चालाक चिड़िया भी अपने सफ़ेद पंख फैला कर तालाब की सतह पर झपट कर पानी के भीतर से एक उजली सफ़ेद मछली को अपनी पीली चोंच में दबाकर आकाश में उड़ जाती है।

कविता के पहले भाग के दृश्यों से अंतिम भाग के दृश्यों की तुलना कीजिए। आप क्या अंतर पाते हैं? पहले भाग में प्रकृति का लुभावना रूप था, पर यहाँ उसके कुछ कठोर किंतु वास्तविक रूप हैं।

प्रकृति की वास्तविकता और कठोरता का एक रूप आपने पढ़ा जो कविता में स्पष्ट रूप से उपस्थित है। किंतु क्या आप इस तथ्य से परिचित हैं कि अच्छी कविता वह मानी जाती है, जिसके कई आयाम हों, जो कई अर्थों को खोलती हो? आइए, इस कविता का एक दूसरा पक्ष भी समझ लेते हैं।

बगुला समाज के ढोंगी लोगों का प्रतीक है, जो दिखावा कुछ करते हैं और उनका आचरण कुछ और ही होता है। इसलिए कहावत भी है– बगुला भगत ! कविता में भी ढोंगी बगुला ध्यान लगाकर खड़ा है, किंतु मछली को देखते ही उसे झट पकड़ कर, चट गटक जाता है। चिड़िया के 'चतुर' विशेषण पर गौर कीजिए, यह कुछ चालाक लोगों की ओर संकेत करती है। चालाक चिड़िया, मछली को झपट कर उठा लेती है। प्रकृति के ये दृश्य भी समाज के व्यवहार की ओर संकेत करते हैं। समाज में कुछ कपटी, चालाक और धूर्त लोग दूसरों का शोषण करते हैं, किंतु इनकी अधिकता नहीं है। विशेष बात तो यह है कि प्रकृति का प्यार भरा रूप अधिक आकर्षक है।

पूरी कविता में दो दृश्य दिखाई दे रहे हैं– पहला दृश्य खेत का है, जिसमें चना, अलसी, सरसों सब प्रेम से ओत-प्रोत हैं। दूसरा दृश्य पोखर का है, जिसमें बगुला, चिड़िया, पत्थर आदि हैं। ये सब क्रमशः शोषक, चालाक और हृदयहीन व्यक्तियों के प्रतीक हैं। कविता से साफ़ ज़ाहिर है कि ग्राम की पृष्ठभूमि प्यार से उर्वर है, वहाँ एक दूसरे का हो जाने की तमन्ना है, परस्पर प्रेम है, स्नेह है, सौहार्द है।

लेकिन, दूसरे दृश्य में उन बगुला भक्तों का ज़िक्र है, जो अवसर मिलते ही दूसरों की जान तक ले लेते हैं। वे शोषक हैं और संवेदनशून्य।

पाठगत प्रश्न-8.2

सर्वाधिक उपयुक्त विकल्प चुनकर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

1. तालाब के तल में भूरी घास लहरियाँ क्यों लेती है? क्योंकिः–

   (क) तालाब का पानी हिलता है। ☐ (ख) तालाब के नीचे हवा है। ☐

   (ग) घास घुँघराली है। ☐ (घ) मछलियाँ घास को हिला देती हैं। ☐

2. चाँद गोल खंभा-सा क्यों लग रहा है?

   (क) पानी के हिलने के कारण ☐ (ख) पानी के ठहरे होने के कारण ☐

   (ग) मछलियों के चलने के कारण ☐ (घ) बगुलों के भय के कारण ☐

3. बगुला किसका प्रतीक है?

   (क) शोषित का ☐ (ख) मजदूर का ☐

   (ग) भूखे व्यक्ति का ☐ (घ) शोषक का ☐

4. काले माथे वाली चिड़िया प्रतीक है—

(क) सादे लोगों की ☐ (ख) चालाक लोगों की ☐

(ग) पठित वर्ग की ☐ (घ) श्रमिक वर्ग की ☐

क्रियाकलाप-8.2

'प्रकृति की व्यापारिक नगर से' पंक्ति में आपने 'व्यापारिक' शब्द पढ़ा है; इसे समझने के लिए निम्नलिखित शब्दों को देखिए :

मास + इक = **मा**सिक

वर्ष + इक = **वा**र्षिक

धर्म + इक = **धा**र्मिक

इतिहास + इक = **ऐ**तिहासिक

मूल + इक = **मौ**लिक

'इक' प्रत्यय लगने पर मूल शब्द में परिवर्तन के नियम निम्नलिखित हैं—

पूर्वस्वर में वृद्धि तथा अंतिम स्वर का लोप हो जाता है।

शब्द के पहले अक्षर के साथ बोले जाने वाले स्वर में वृद्धि हो जाती है, जैसे

- 'अ' का 'आ' हो जाएगा मास + इक = (मासिक)
- इ, ई, ए का ऐ हो जाएगा इतिहास + इक = (ऐतिहासिक)
- उ, ऊ, ओ का औ हो जाएगा मूल + इक = (मौलिक)

सामासिक शब्द में चूँकि दो शब्द होते है, अतः दोनों ही शब्दों के पहले अक्षर के स्वर में वृद्धि होगी।

पूर्वस्वर में वृद्धि तथा अंतिम स्वर के लोप का नियम ऊपर दिए अनुसार ही होगा तथा 'इक' प्रत्यय अंत में जुड़ेगा।

जैसे— परलोक का पारलौकिक बनेगा।

पर + लोक

पार + लौक

नीचे दिए गए शब्दों में 'इक' प्रत्यय जोड़कर लिखिए:

दिन, सप्ताह, पक्ष, मर्म, देह, निसर्ग, सर्वभूमि, इहलोक, इन्द्रजाल, अधिभूत

8.3 भाव-सौंदर्य

कविता पढ़कर आप यह तो जान ही गए कि यह कविता प्रकृति-सौंदर्य तथा ग्रामीण परिवेश के मोहक वातावरण को चित्रित करती है। इस वातावरण ने कवि को इतना

टिप्पणी

आकर्षित किया कि खेत के मेंड पर बैठे-बैठे उसने यह कविता रच डाली। देखे हुए प्राकृतिक सौंदर्य को पाठक तक पहुँचाने के लिए कवि ने एक सुंदर कल्पना की है। उसने विवाह के उत्सव का आरोप प्रकृति पर किया है। जिस प्रकार विवाह या किसी अन्य उत्सव के अवसर पर मनुष्य समाज में हलचल बढ़ जाती है, वैसे ही कवि को प्रकृति भी उल्लसित, हलचल से युक्त लगती है।

कवि ने वातावरण की प्रत्येक वस्तु को बड़े ध्यान से देखा है, इसीलिए वह इतने प्रभावशाली ढंग से उसे प्रस्तुत कर पाया है। जिन चीजों को हम देखकर अकसर उनकी उपेक्षा कर देते हैं, कवि ने उनका चित्रण, इस कविता में किया है। पोखर के तल में गतिमान भूरी घास, पोखर के पानी में चाँद के प्रतिबिंब में गोल खंभे की कल्पना, पत्थरों और पानी के लंबे साथ को इस रूप में देखना कि पत्थर झुककर न जाने कब से पानी पी रहे हैं फिर भी उनकी प्यास नहीं बुझती। इन सबके साथ बगुले और चिड़िया की गतिविधियों को कवि ने पाठक के सामने साक्षात कर दिया है।

8.4 भाषा-सौंदर्य

इस कविता के शीर्षक से ही स्पष्ट है कि चंद्रगहना नामक स्थान से लौटते समय कवि ने जो देखा, उसे सरल-सहज शब्दों में कविता के रूप में बाँध दिया है।

आप पढ़ चुके हैं कि इस कविता में स्थान-स्थान पर मानवीकरण है। क्या आप बता सकते हैं कहाँ है? जी हाँ ! चने के पौधे को दूल्हा बनाया गया है। उसके सिर पर मुरैठा बँधा हुआ है। अलसी को हठीली बताया गया है, उसकी कमर को लचीली और देह को पतली बताया गया है। चूँकि उसके फूल नीले निकलते हैं, इसलिए कहा गया है कि **'नील फूले फूल को सिर पर चढ़ा कर'**। कवि ने प्रकृति का कितना सुंदर दृश्य प्रस्तुत किया है—अलसी कहती है कि जो मुझे छुए उसे मैं अपना हृदय दे दूँ। इसी प्रकार सरसों को सयानी लड़की बनाकर प्रस्तुत किया है, जिसके हाथ पीले होने हैं, वह मंडप में ब्याह रचाने के लिए बैठी है। इसी प्रकार के सभी दृश्य मानवीकरण के ही उदाहरण हैं। इसी प्रकार फागुन मास का महीना फाग गाता है या फिर पत्थर कई वर्षों से पानी पी रहे हैं पर फिर भी प्यासे हैं।

इस कविता के कुछ दृश्यों में प्रतीकों की कल्पना भी की जा सकती है। आइए, इसे भी समझें। आप कविता के दूसरे अंश पर फिर से ध्यान दीजिए। उदाहरण के लिए—मछली सामान्य मानव के लिए, बगुले को सफ़ेदपोश व्यक्तियों के लिए या फिर पत्थर दिल इंसान के लिए, जो गरीबों का, आम जनता का शोषण करता रहता है, प्रतीक बनकर प्रयुक्त हुए हैं।

इस कविता को पढ़ते समय आपने इस बात पर भी ध्यान दिया होगा कि बीते के बराबर, ठिगना, मुरैठा, ब्याह, हठीली, लचीली, फाग, अंचल, चकमकाते आदि बोलचाल के सामान्य शब्दों का सुंदर प्रयोग कर कविता सहज बन पड़ी है। साथ ही विवाह का सुंदर दृश्य उपस्थित करने के लिए उसी से जुड़ी शब्दावली के प्रयोग से कविता का सौंदर्य और बढ़ गया है, जैसे—मुरैठा, हाथ पीले करना, ब्याह-मंडप, फाग गाना, स्वयंवर आदि।

• कहाँ 'बिंदु' और कहाँ 'चंद्रबिंदु'?

आइए भाषाा के एक प्रमुख रूप 'बिंदु' और उसके समान दूसरे रूप –चंद्र बिंदु' के प्रयोग को समझने की कोशिश करते हैं।

'चंद्रगहना' गाँव में, 'चंद्र' के ऊपर एक बिंदु लगा है। इसे अनुस्वार कहते हैं। यहाँ इसका उच्चारण 'न्' का है। इस कविता में कई शब्द आये हैं, जिनमें 'बिंदु' (अनुस्वार) या 'चंद्रबिंदु' (अनुनासिक) का प्रयोग हुआ है

आइए, अनुनासिकता को समझते हैं। आप जानते हैं कि 'अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ए, ऐ, ओ और औ– ये सभी स्वर मौखिक स्वर हैं यानी इनके उच्चारण में सारी प्राणवायु केवल मुँह से निकलती है। अनुनासिकता स्वरों का ही एक ध्वनिगुण है, इसमें मुँह के साथ-साथ प्राणवायु का कुछ भाग नाक से भी निकलता है। हम सभी स्वरों को अँ आँ इँ, ई, उँ, ऊँ, एँ– इस तरह भी बोल सकते हैं। नियम यह है कि शिरोरेखा के ऊपर यदि मात्रा है, तो केवल बिंदी का प्रयोग करते हैं।

आँख पैरों, (पैरो)
ऊँट मैं, (मैं)
हँस सेंक (सेंक) आदि

अनुस्वार और अनुनासिक में मुख्य अंतर यह है कि अनुस्वार एक व्यजंन है (पंचम व्यंजन– ङ्, ञ् ण् ण् न् म्), किंतु अनुनासिकता स्वर का ही गुण है। इन दोनों के पढ़ने में भी अंतर है। अनुनासिक को स्वर के साथ ही पढ़ा जाएगा, किंतु अनुस्वार का उच्चारण स्वर के बाद स्वतंत्र रूप से होगा।

नीचे दिए गए उदाहरण ध्यानपूर्वक पढ़िए और पाठ से शब्द छाँटकर रिक्त स्थानों को भरिए:

(क) अनुस्वार	(ख) अनुनासिक	
1. चंद्रगहना	1. हूँ	
2. मंडप	2. दूँ	
3. अंचल	3. बाँधे	
4. चंचल	4. लहरियाँ	
5. पंख	5. चाँदी	
6. खंभा	6. आँख	
	7.	7. ....
	8.	8. ....

9.	....	9.	....
10.	....	10.	....

ध्यान दीजिए :

पंख – प ङ् ख	क ख ग घ ङ
चंचल – चञ्चल	च छ ज झ ञ
मंडप – मण्डप	ट ठ ड ढ ण
चंद्र – चन्द्र	त थ द ध न
खंभा – खम्भा	प फ ब भ म

ङ, ञ, ण, न और म पंचम वर्ण हैं। जब भी ये अपने वर्ग के किसी वर्ण से संयुक्त होते हैं, तो उनको अलग से नहीं लिखकर उनके स्थान से पहले वाले अक्षर के ऊपर अनुस्वार के रूप में लिखा जा सकता है। इसे पंचम वर्ण नियम कहते हैं। ऊपर दिए गए शब्दों को फिर से ध्यानपूर्वक देखिए।

पाठगत प्रश्न–8.3

सर्वाधिक उपयुक्त विकल्प चुनकर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

1. कविता में सरसों का सयानी होने का संकेत किससे मिलता है?

   (क) हठीली होने से ☐ (ख) ब्याह-मंडप में पधारने से ☐

   (ग) हृदय दान देने से ☐ (घ) पीले फूल आने से ☐

2. नीचे विकल्पों में शब्द तथा उसमें आए पंचम व्यंजन दिए गए हैं। इस दृष्टि से कौन-सा युग्म गलत है–

   (क) कंचन – ञ् ☐ (ख) अनंत – न् ☐

   (ग) पंडित – ण् ☐ (घ) अंजन – ङ् ☐

आपने क्या सीखा

- ग्रामीण परिवेश से जुड़े प्रकृति-चित्रण को कवि ने बहुत सुंदर ढंग से प्रस्तुत किया है।
- चने के खेत की मेंड़ पर बैठे कवि ने हरे चने के गुलाबी फूल को खिले हुए होने के कारण मुरैठा बाँधे और पीली सरसों के फूल खिले होने के कारण उसके हाथ पीले होने और विवाह-मंडप आदि को सुंदर रूप में चित्रित किया है। अलसी को

टिप्पणी

दुबली-पतली लड़की और हठीली बताया है, क्योंकि वह बीच खेत में होती है। उसके नीले फूल होते हैं, इसलिए *'नील फूले फूल को शीश पर चढ़ाकर'* कवि ने कहा है।

- प्रकृति, माँ के रूप में अपने आँचल की छाया प्रदान कर रही है। इस प्रकार ग्रामीण स्थान पर प्रेम ही प्रेम दृष्टिगोचर हो रहा है।
- फागुन फाग गा रहा है, सरसों सयानी हो गई है, चना मुरैठा बाँधे खड़ा है आदि में मानवीकरण अलंकार है।
- गाँव के तालाब का भी सुंदर चित्रण है। कई वर्षों के प्यासे पानी पीते पत्थर, नीले तल का पोखर, उसमें लहराती हुई घास, मछली, बगुला सभी प्रतीक रूप में प्रयुक्त होकर कविता को नया अर्थ देते हैं।
- सफ़ेद बगुले को ढोंगी बताकर उसके माध्यम से सफ़ेदपोश व्यक्तियों के ऊपर कटाक्ष किया गया है। वह कैसे अपना शिकार पकड़ता है, बतलाया गया है।
- मछली आम आदमी का प्रतीक है, जिसे हर कोई अपना शिकार बनाना चाहता है।

योग्यता विस्तार

कवि-परिचय

केदारनाथ अग्रवाल का जन्म बाँदा जिले के कमासिन गाँव में 1 अप्रैल, 1911 को हुआ था। उनकी कविताओं में श्रमिक, कृषक और संघर्षशील जीवन के अनेक चित्र हैं। अद्‌भुत प्रकृति-चित्रण के लिए भी केदारनाथ अग्रवाल जाने जाते हैं। अनूठा शब्द चयन और चित्रात्मकता इनकी कविता की प्रमुख विशेषताएँ हैं। उन्हें साहित्य अकादमी और सोवियत लैंड नेहरू पुरस्कार से सम्मानित किया गया। श्री अग्रवाल की कुछ प्रमुख पुस्तकें हैं—जमुन जल तुम, फूल नहीं रंग बोलते हैं, आग का आईना, अनहारी हरियाली, कहें केदार खरी-खरी, आत्मगंध, कुहकी कोयल खड़े पेड़ की देह (कविता संग्रह); पतिया (उपन्यास); विचार-बोध, विवेक-विवेचन (निबंध-संग्रह); कवि-मित्रों से दूर (वार्ता)।

'चंद्रगहना से लौटती बेर' कविता 'फूल नहीं, रंग बोलते हैं' संग्रह में है। इस कविता में केदारनाथ अग्रवाल ने शहरी और ग्रामीण परिवेश की जीवन-शैली का तुलनात्मक और प्रतीकात्मक चित्रण किया है।

पाठांत प्रश्न

1. निम्नलिखित पंक्तियों का अर्थ लिखिए :

   (क) बीच में अलसी हठीली
   देह की पतली कमर की है लचीली,

   (ख) फाग गाता मास फागुन
   आ गया है आज जैसे।

   (ग) श्वेत पंखों के झपाटे मार फ़ौरन
   टूट पड़ती है भरे जल के हृदय पर,

2. कविता के आधार पर चने के सौंदर्य का चित्रण कीजिए और बताइए कि उसे किन-किन रूपों में दर्शाया गया है?

3. सरसों को *'हो गई सबसे सयानी'* क्यों कहा गया है? तर्क सहित उत्तर दीजिए।

4. व्यापारिक नगर की अपेक्षा ग्रामीण अंचल को प्रेम के लिए उर्वर क्यों माना गया है?

5. *'एक चाँदी का बड़ा–सा गोल खंभा'* का चित्र अपने शब्दों में स्पष्ट कीजिए।

6. बगुला समाज के किस वर्ग का प्रतीक है और किन विशेषताओं को रेखांकित करता है? क्या आज के समाज में यह उदाहरण प्रासंगिक है?

7. 'चंद्रगहना से लौटती बेर' कविता के माध्यम से कवि ने क्या संदेश दिया है? क्या आप उससे संतुष्ट हैं? उदाहरण सहित उत्तर दीजिए।

8. हृदयहीन पत्थर किन लोगों का प्रतीक है? क्या आज के समाज से ऐसे उदाहरण दे सकते हैं?

9. निम्नलिखित पंक्तियों को ध्यान से पढ़िए और पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए:

   छोटे-से आंगन में
   माँ ने लगाए हैं
   तुलसी के बिरवे दो
   पिता ने उगाया है
   बरगद छतनार
   मैं अपना नन्हा गुलाब
   कहाँ रोप दूँ।

   – केदारनाथ सिंह

   (i) 'तुलसी के बिरवे' और 'छतनार बरगद' के संकेतों को स्पष्ट कीजिए।

(ii) 'मैं अपना नन्हा गुलाब/कहाँ रोप दूँ?' से कवि का क्या आशय है।

(iii) 'गुलाब' किसका प्रतीक है?

उत्तरमाला

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

8.1. 1. (ख) 2. (ख) 3. (ग) 4. (ग)

8.2. 1. (क) 2. (क) 3. (घ) 4. (ख)

8.3. 1. (घ) 2. (घ)

9

अख़बार की दुनिया

अख़बार, समाचार-पत्र या न्यूज़ पेपर पढ़ना हमारी आदत में शामिल हो गया है। रोज़ सुबह उठते ही अख़बार वाला अख़बार दे जाता है और हमारी पैनी निगाहें उस पर दौड़ने लगती हैं। शहर में, राज्य में, देश में, दुनिया में कौन-कौन सी घटनाएँ घटीं, उन्हें विस्तार से जानने के लिए हम अख़बार पढ़ते हैं। अख़बार के अलावा रेडियो, टेलीविज़न और अब इन्टरनेट के द्वारा भी समाचार हम तक पहुँचते हैं, परंतु अख़बार पढ़कर हमें विभिन्न समाचारों की विस्तार से जानकारी प्राप्त होती है।

अख़बार पढ़ते समय आप देखते होंगे कि इसमें समाचारों के अलावा और भी सामग्री होती है, जैसे—संपादकीय, कार्टून, फ़ीचर, विज्ञापन आदि। इस प्रकार, अख़बार हमें तमाम महत्त्वपूर्ण घटनाओं की सूचना कई प्रकार से देता है।

इस पाठ में अख़बार की दुनिया की जानकारी दी जा रही है। आइए, देखें कि अख़बार में क्या-क्या सामग्री शामिल होती है और उसे किस प्रकार तैयार किया जाता है।

उद्देश्य

इस पाठ को पढ़ने के बाद आप—

- अख़बार के विभिन्न अंगों — समाचार, संपादकीय, फ़ीचर, फ़ोटो, कार्टून, ग्राफ़िक्स, विज्ञापन आदि के महत्त्व से परिचित हो सकेंगे,
- एक ही विषय पर छपे अलग-अलग अख़बारों के समाचारों की तुलना कर सकेंगे;
- समाचारों के आधार पर किसी घटना के बारे में अपना निष्पक्ष और तार्किक दृष्टिकोण विकसित कर सकेंगे;
- किसी घटना के बारे में प्रकाशित समाचारों पर लिखकर अथवा बोलकर अपने विचार व्यक्त कर सकेंगे;

टिप्पणी

- समाचारों का विश्लेषण कर सकेंगे;
- समाचारों की भाषा से परिचित होकर उनका लेखन कर सकेंगे;
- समाचारों की उपयोगिता का उल्लेख कर सकेंगे।

क्रियाकलाप-9.1

आप अख़बार पढ़ते हैं। कई अख़बारों से परिचित भी हैं। तो फिर—

1. किन्हीं चार हिंदी अख़बारों के नाम लिखिए।

   1..................................2..................................3..............................4.................................

2. अख़बार में मुख्य रूप से किस-किस तरह के समाचार छपते हैं?

   जैसे—खेल-समाचार, इसी प्रकार के अन्य उदाहरण दें—

   ....

   ....

9.1 अख़बार का स्वरूप

बहुत से लोगों की धारणा है कि अख़बारों में सिर्फ़ समाचार छपते हैं। लेकिन, अख़बारों में सिर्फ़ समाचार ही नहीं छपते, बल्कि समाचारों पर आधारित और समाचारों से अलग हटकर भी बहुत सारी चीज़ें छपती हैं, जिन्हें हम अलग-अलग नामों से जानते हैं। इन्हें हम अख़बार के अंग भी कह सकते हैं। इन्हीं सारी चीज़ों से मिलकर अख़बार का स्वरूप बनता है। हर अख़बार इन अलग-अलग चीज़ों के लिए अपने ढंग से अलग-अलग स्थान निर्धारित करता है। इससे अख़बार पढ़ने में सुविधा होती है। आइए, अख़बार के स्वरूप या उसके अंगों के बारे में जान लें।

9.2 अख़बार के अंग

आपने देखा होगा कि हर अख़बार में कुछ चीज़ें अनिवार्य रूप से छपती हैं, जैसे—

समाचार, संपादकीय, फ़ोटो, फ़ीचर, लेख, कार्टून, ग्राफ़िक्स और विज्ञापन आदि। इन्हें ही अख़बार के अंग कहा जाता है। अख़बार के मुख्य अंगों को नीचे दिए गए रेखांकन के माध्यम से आसानी से समझा जा सकता है—

यह आवश्यक नहीं कि हर अख़बार में ये चीज़ें एक ही तरह से छपती हों। हर अख़बार इन्हें अपने-अपने ढंग से प्रकाशित करता है। इन्हें प्रकाशित करने की हर अख़बार की अपनी शैली होती है जो उस अख़बार को विशिष्ट स्वरूप और पहचान देती है। आइए, अब अख़बार के विभिन्न अंगों के बारे में विस्तार से जानकारी प्राप्त करें।

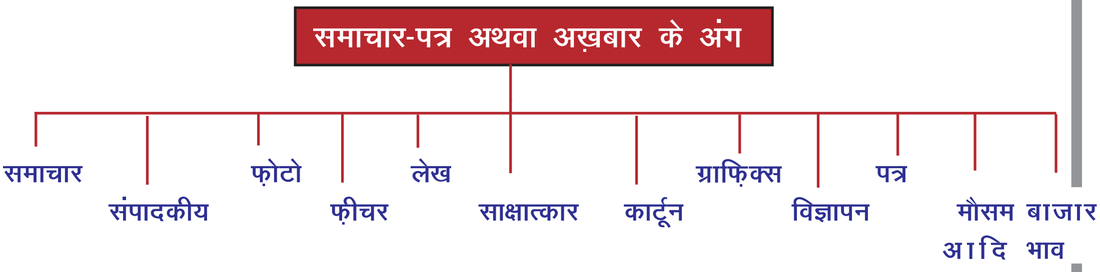

चित्र 9.1

9.2.1 समाचार

समाचार अख़बारों का प्रमुख अंग होता है। लेकिन, अब सवाल यह उठता है कि क्या सिर्फ़ अख़बारों में छपने वाले समाचारों को ही समाचार कहा जा सकता है या उन दूसरी घटनाओं को भी, जो अख़बारों में नहीं छप पातीं? क्या हर घटना अख़बारों के समाचारों में छप जाती है? ये सवाल स्वाभाविक हैं और आपके मन में भी उठते होंगे। कई बार ऐसा भी होता है कि कोई घटना घटती है, उसे आप देखते हैं या उसके बारे में सुनते हैं और सोचते हैं कि इसका समाचार अख़बार में ज़रूर छपेगा, लेकिन जब दूसरे दिन सुबह आप अख़बार देखते हैं, तो वह समाचार नहीं छपा होता। तब आप सोचते होंगे कि ऐसा क्या कारण था, जिसकी वजह से वह समाचार अख़बारों में नहीं छपा। फिर तरह-तरह के सवाल आपके मन में उठते होंगे। आप यह भी सोचते होंगे कि अख़बार का संवाददाता या अख़बार के संपादकीय विभाग के लोग सिर्फ़ अपनी पसंद के समाचार ही अख़बारों में छापते हैं, लेकिन ऐसा नहीं है। वस्तुतः वही घटना समाचार बनती है जिसका स्थानीय, क्षेत्रीय, राष्ट्रीय, अंतरराष्ट्रीय दृष्टि से महत्त्व होता है।

उसके बाद हर अख़बार अपनी प्राथमिकता के आधार पर समाचारों के पृष्ठों का बँटवारा करता है। पहले पृष्ठ पर राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय महत्त्व के समाचार छपते हैं। दूसरे और तीसरे पृष्ठों पर स्थानीय समाचारों को स्थान दिया जाता है। इसी प्रकार, अंतिम पृष्ठों पर क्रमशः अंतरराष्ट्रीय समाचारों, अर्थ अथवा व्यापार-जगत् के समाचारों और खेल-संबंधी समाचारों को स्थान दिया जाता है। बीच का एक पृष्ठ संपादकीय और पाठकों के पत्रों के लिए होता है। फिर इन्हीं पृष्ठों पर बीच-बीच में विज्ञापनों को भी स्थान दिया जाता है। इस प्रकार, हर अख़बार में उसके आकार और पृष्ठों की संख्या के

अनुसार ही अलग-अलग क्षेत्रों के समाचारों को प्रकाशित करने के लिए स्थान निर्धारित होता है। ऐसे में किसी भी अख़बार के लिए हर घटना को स्थान दे पाना संभव नहीं होता। इसलिए, हर क्षेत्र की प्रमुख और महत्त्वपूर्ण घटनाओं के समाचार ही अख़बारों में प्रकाशित हो पाते हैं। हम आगे **समाचारों की चयन-प्रक्रिया** पर बात करते हुए इस पर और विस्तार से चर्चा करेंगे।

समाचारों की चयन-प्रक्रिया

अख़बारों के लिए समाचारों का चयन करना एक बहुत ही महत्त्वपूर्ण और ज़िम्मेदारी का काम होता है, क्योंकि अख़बारों की साख और लोकप्रियता उनके समाचारों के चयन के आधार पर ही टिकी होती है।

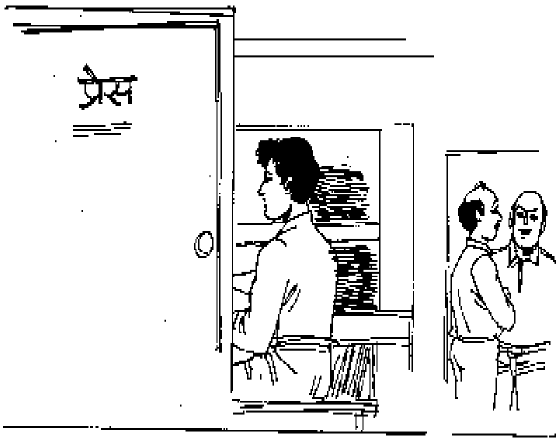

चित्र 9.2

अख़बारों में समाचारों का चयन सामूहिक निर्णय के आधार पर किया जाता है। हर अख़बार में अलग-अलग क्षेत्रों के अनुसार संवाददाताओं का वर्गीकरण किया जाता है। ये सभी संवाददाता अपने-अपने क्षेत्रों की ख़बरें रोज़ शाम तक अख़बार के संपादकीय कार्यालय में पहुँचाते हैं। इसके अलावा पी.टी.आई., यू.एन.आई., ए.पी., ए.एफ़.पी., रायटर आदि कई सरकारी तथा गैर-सरकारी, देशी-विदेशी समाचार एसेंजियाँ भी हैं, जो अपने सदस्य अख़बारों को प्रतिदिन समाचार भेजती रहती हैं। ये समाचार इन्टरनेट के माध्यम से आते हैं। इसके अलावा शहर की विभिन्न संस्थाएँ और विभाग प्रेस-विज्ञप्ति के माध्यम से भी अपनी गतिविधियों के समाचार डाक, फ़ैक्स या ई-मेल के द्वारा अख़बारों के दफ़्तरों में भेजते हैं। इस तरह

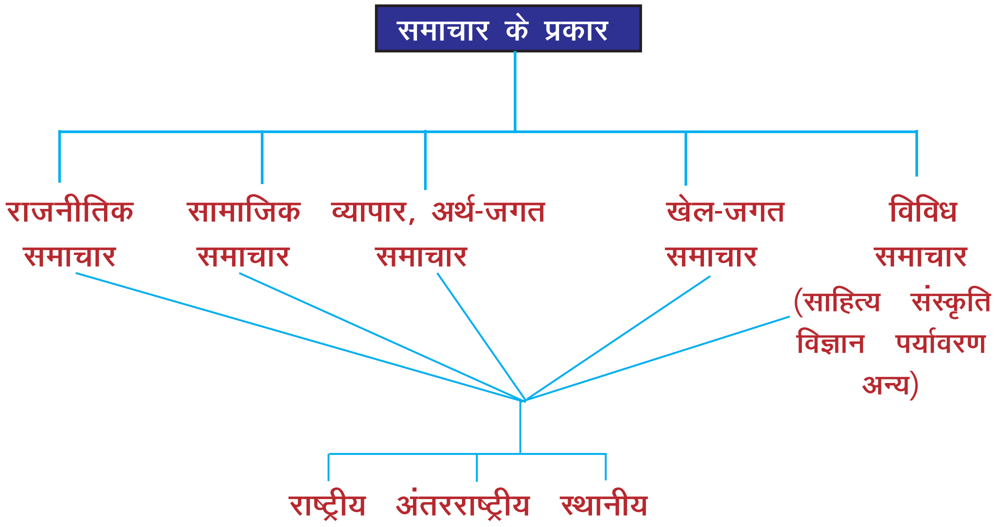

अख़बारों के कार्यालयों में प्रतिदिन शाम तक हज़ारों समाचार एकत्र हो जाते हैं। लेकिन, अख़बारों में स्थान सीमित होता है, ऐसे में हर समाचार को स्थान दे पाना संभव नहीं हो पाता। ऐसी स्थिति में उनके महत्त्व के आधार पर समाचारों का चयन करना पड़ता है।

समाचारों का चयन पहले तो संवाददाता अपने विवेक के आधार पर स्वयं ही कर लेते हैं। उसके बाद प्रमुख संवाददाता उनमें से समाचारों की छँटनी करते हैं। उसके बाद पृष्ठ की क्षमता को ध्यान में रखते हुए समाचार-संपादक और प्रमुख संपादक आपसी परामर्श के आधार पर समाचारों का चयन करते हैं।

समाचार के अंग

जब कोई संवाददाता किसी घटना की सूचना देता है, तो उसके लिए कुछ बातों का ब्यौरा देना आवश्यक होता है। यह सभी अख़बारों में आपको देखने को मिल जाएगा। इसके बाद समाचारों के महत्त्व के अनुसार उनकी प्रस्तुति में पाठकों की सुविधा और रुचि को ध्यान में रखते हुए कुछ चीज़ें जोड़ दी जाती हैं। ये चीज़ें समाचार के अंग कहलाती हैं। समाचार के प्रमुख अंगों को निम्नांकित रेखांकन के माध्यम से आसानी से समझा जा सकता है :

समाचार के अंग

- मेन हेडिंग
- सब हेडिंग
- बाई लाइन
- समाचार स्रोत
- इन्ट्रो
- ब्यौरा

आवश्यक नहीं कि सभी समाचारों में इन अंगों का प्रयोग जरूर हो। जैसे सब हेडिंग और बॉक्स-मैटर को सभी समाचारों में प्रयुक्त नहीं किया जाता। इनके अलावा बाकी अंगों को सभी समाचारों में अनिवार्य रूप से देखा जा सकता है। आइए, इन अंगों के बारे में थोड़ी अधिक जानकारी प्राप्त करते हैं। लेकिन, उससे पहले हम समाचार की प्रकृति के बारे में भी थोड़ा जान लें, तो इन अंगों के बारे में जानने में सुविधा होगी।

वास्तव में, समाचार एक तरह से किसी भी घटना के बारे में उठने वाली आम आदमी के मन की सभी जिज्ञासाओं का निदान होता है। दूसरे रूप में समाचार किसी भी घटना का संपूर्ण ब्यौरा होता है। मान लीजिए, आप कहीं जा रहे हैं। रास्ते में एक जगह आपको भीड़ जमा हुई दिखाई देती है। आपके मन में जिज्ञासा उठती है। आप रुकते हैं और पूछते हैं क्या हुआ? जवाब मिलता है – दुर्घटना हो गई। एक आदमी मर गया। आपकी जिज्ञासा बढ़ती है। आप फिर पूछते हैं – कैसे हुआ? जवाब आता है – बस से। आप फिर पूछते हैं – कब हुआ? फिर जवाब में पूरी घटना का ब्यौरा आपको मिल जाता है। एक संवाददाता भी इसी तरह समाचारों का संकलन करता है और उन्हें प्रस्तुत करता है। दरअसल, समाचार क्या, कैसे, कब, कहाँ, क्यों, कौन, किस आदि सवालों (ककारों) के जबावों का संपूर्ण विवरण होता है।

टिप्पणी

मेन हेडिंग (मुख्य शीर्षक)

जैसा कि हमने अभी पढ़ा, किसी भी घटना के बारे में हमारे मन में पहली जिज्ञासा उठती है कि क्या हुआ? यही समाचार का मेन हेडिंग होता है। जैसे दुर्घटना का समाचार देना हो तो मेन हेडिंग हो सकता है – 'बस दुर्घटना में एक की मौत।' इस हेडिंग या शीर्षक को पढ़कर ही पूरे समाचार के बारे में एक मोटी जानकारी मिल जाती है। आपने अक्सर लोगों को इस तरह की बातें करते सुना होगा कि आज 'क्या' नया समाचार है? आज संसद में 'क्या' हुआ? बाज़ार में सोने का भाव 'क्या' है या क्रिकेट मैच में 'क्या' हुआ आदि। मेन हेडिंग इसी 'क्या' का उत्तर होता है। मेन हेडिंग से घटना के बारे में एक मोटी सूचना तुरंत मिल जाती है। फिर उसके बाद की जिज्ञासाएँ उठती हैं। एक ही समाचार के लिए विभिन्न अख़बारों का मेन हेडिंग सभी अख़बारों में भिन्न हो सकता है।

किसी भी समाचार (के मुख्य शीर्षक) को पढ़ने के बाद पाठक के मन में लगातार कई जिज्ञासाएँ उठती हैं और वह एक झटके में उनके बारे में जान लेना चाहता है। उन्हीं जिज्ञासाओं को शांत करने के लिए छोटे-छोटे वाक्यों में सब हेडिंग (उपशीर्षक) दिए जाते हैं। प्रायः सब-हेडिंग बड़े समाचारों के साथ ही दिए जाते हैं, क्योंकि बड़े समाचारों को पढ़ने में पाठक को समय लगता है। इसलिए, जो लोग जल्दी से समाचारों पर एक नज़र डालकर अपने काम पर भागने की जल्दी में होते हैं, उन्हें सब-हेडिंग्स पढ़कर समाचार की मुख्य-मुख्य बातों का पता चल जाता है।

बाइ लाइन

समाचार लिखने वाले अथवा प्रस्तुत करने वाले संवाददाता के नाम को बाइ लाइन कहते हैं। आपने देखा होगा कि समाचारों के साथ संवाददाता का नाम भी लिखा होता है। उसे ही बाइ लाइन कहते हैं।

समाचार-स्रोत

यह समाचार का एक अत्यंत महत्त्वपूर्ण अंग है। इससे समाचार की प्रामाणिकता का पता चलता है। इसमें समाचार का ब्यौरा देने से पहले यह बताया जाता है कि समाचार कहाँ से प्राप्त हुआ और किस माध्यम से प्राप्त हुआ।

अख़बार पढ़ते समय आपने ध्यान दिया होगा कि एजेंसियों के बाद शहर का नाम लिखा होता है। यदि 'नई दिल्ली' लिखा है, तो इसका अर्थ यह है कि यह समाचार नई दिल्ली से लिया गया है या यह घटना नई दिल्ली में घटी है। उसके बाद घटना की तिथि दी जाती है। आपने ध्यान दिया होगा कि प्रायः अख़बारों में समाचारों की तिथि उस समाचारपत्र की प्रकाशन-तिथि से एक दिन पूर्व की दी गई होती है। ऐसा इसलिए होता है कि अख़बार रात को छपते हैं और सुबह-सुबह आपके पास पहुँच जाते हैं। यानी ये समाचार एक दिन पूर्व की रात तक के होते हैं।

कुल मिलाकर कहा जा सकता है कि समाचार **किसने** प्राप्त किया, **कहाँ से** प्राप्त किया और **कब** प्राप्त किया, इनकी जानकारी को समाचार-स्रोत कहा जाता है।

इन्ट्रो

इन्ट्रो अंग्रेज़ी के 'इन्ट्रोडक्शन' (परिचय) का संक्षिप्त रूप है। आपने देखा होगा कि जो समाचार लंबे या मध्यम आकार के होते हैं, उनमें शुरू में थोड़े मोटे अक्षरों में एक पैरा दिया जाता है, जिसमें संक्षेप में पूरे समाचार की मुख्य सूचनाएँ रहती हैं। इन्ट्रो को पढ़कर पूरे समाचार की मुख्य जानकारियाँ एक बार में प्राप्त की जा सकती हैं।

ब्यौरा

इन्ट्रो के बाद समाचार थोड़े विस्तार से दिया जाता है। इसे ही समाचार या घटना का ब्यौरा कहते हैं। इसमें घटना से संबंधित सभी जानकारियाँ दी जाती हैं। घटना कब हुई, किस स्थिति में हुई क्यों हुई और उसके क्या परिणाम हो सकते हैं, उस घटना पर किसकी क्या प्रतिक्रिया हुई आदि-आदि।

समाचार-प्रस्तुति

जैसा कि जान चुके हैं, समाचारों का कार्य किसी भी घटना के बारे में लोगों को सूचना देना होता है। इस तरह से किसी भी संवाददाता को समाचार में अपने विचार व्यक्त करने की बहुत कम गुंजाइश रहती है। किंतु, कई बार देखा जाता है कि विवादास्पद समाचारों में संवाददाता अपने विचारों से मेल खाते तथ्यों अथवा अपने विचारों से मेल खाते विचारों वाले व्यक्तियों के कथनों को अधिक उजागर कर, समाचार को अपने अनुकूल बनाकर, प्रस्तुत कर देते हैं। उस समाचार के पीछे उनकी विचारधारा अथवा विचार दृष्टि छिपी रहती है। आप एक ही विषय पर छपे अलग-अलग समाचारों की तुलना करके इस बात को आसानी से समझ सकते हैं। लेकिन अख़बार को किसी का पक्षधर अथवा विरोधी न होकर तटस्थ और निष्पक्ष रहना चाहिए। अधिकांश अख़बार ऐसे ही होते हैं।

यदि आपको अख़बार पढ़ने की नियमित आदत है, तो आप समाचारों की प्रस्तुति और समाचारों के तथ्यों को पढ़कर अपनी भी राय बना सकते हैं और समाचारों पर निष्पक्ष टिप्पणी कर सकते हैं।

पाठगत प्रश्न-9.1

सर्वाधिक उपयुक्त विकल्प चुनकर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

1. अख़बारों में प्रकाशित किए जाते/की जाती हैं—

   (क) सभी घटनाएँ ☐ (ख) परिचितों के समाचार ☐

   (ग) सिर्फ़ राजनीतिक सूचनाएँ ☐ (घ) महत्त्वपूर्ण घटनाएँ ☐

टिप्पणी

2. समाचार-स्रोत के अंतर्गत निम्नलिखित में से कौन-सी बात नहीं आती?

(क) समाचार किसने प्राप्त किया ☐ (ख) कहाँ से प्राप्त किया ☐

(ग) कब प्राप्त किया ☐ (घ) क्यों प्राप्त किया ☐

3. निम्नलिखित में से कौन-सा कथन असत्य है?

(क) समाचार तथ्यों पर आधारित होते हैं। ☐

(ख) समाचार संवाददाता के विचारों पर आधारित होते हैं। ☐

(ग) समाचार तटस्थ और निष्पक्ष होते हैं। ☐

(घ) समाचारों की भाषा अलग हो सकती है। ☐

9.2.2 संपादकीय

समाचारों पर आधारित संपादक की टिप्पणी को संपादकीय कहते हैं। संपादकीय के लिए हर अख़बार में बीच का एक पूरा पृष्ठ अलग से निर्धारित होता है। इसमें समाचारों पर संपादक की टिप्पणियाँ तो होती ही हैं, साथ ही समाचारों के विभिन्न पहलुओं पर आलोचनात्मक लेख और पाठकों की प्रतिक्रियाएँ भी प्रकाशित की जाती हैं। संपादकीय में समाचारों अथवा घटनाओं पर संपादक को अपने विचार प्रकट करने की पूरी छूट होती है। समाचारों को पढ़ने के बाद पाठक के मन में कई प्रकार की जिज्ञासाएँ उत्पन्न होती हैं और वह यह जानने के लिए उत्सुक रहता है कि संबंधित घटना उचित थी या नहीं। बहुत से समझदार पाठक समाचारों को पढ़ने के तुरंत बाद संबंधित घटना के बारे में अपनी राय बना लेते हैं और अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त कर देते हैं। लेकिन बहुत से पाठक ऐसे होते हैं, जो संपादकीय में प्रकाशित समाचार के विभिन्न पहलुओं को जानने के बाद अपनी राय बनाते हैं। इस तरह संपादकीय किसी भी अख़बार का एक बहुत ही महत्त्वपूर्ण अंग होता है। अतः संपादकीय टिप्पणियों और लेखों के आधार पर संपादक अथवा अख़बार की विचारधारा का आसानी से पता लगाया जा सकता है।

9.2.3 फ़ोटो

अख़बारों में प्रकाशित होने वाले फ़ोटो का महत्त्व भी समाचारों से कम नहीं होता। अख़बार में छपने वाला फ़ोटो भी अपने आपमें एक समाचार होता है। कई बार आपने देखा होगा कि अख़बार में सिर्फ़ फ़ोटो छपा होता है और उसके नीचे दो-तीन पंक्तियों की सूचना छपी होती है। इसके अलावा समाचार के साथ छपने वाले फ़ोटो के माध्यम से न सिर्फ़ उस घटनाक्रम की प्रामाणिकता का पता चलता है, बल्कि उस समाचार के बहुत सारे पहलुओं की जानकारी भी मिल जाती है। जब आप किसी स्थान पर भूकंप से हुई तबाही का समाचार पढ़ते हैं, तो आपके मन में यह जिज्ञासा अवश्य उठती है कि वहाँ का दृश्य अब कैसा है या वहाँ के लोगों के जीवन पर इसका क्या प्रभाव पड़ा है। ऐसे में यदि उस समाचार के साथ चित्र देखने को मिल जाता है, तो आपकी जिज्ञासा

काफ़ी हद तक शांत हो जाती है। अक्सर ऐसा होता है कि समाचार को पढ़ने के बाद आप उतने विचलित नहीं होते, जितने उससे संबंधित चित्र को देखकर हो उठते हैं। कई बार एक फ़ोटो और उसके नीचे दी गई दो पंक्तियों की सूचना आपके मन पर समाचार से अधिक प्रभाव डाल देती है। फ़ोटो देखने के बाद उस घटना के समाचार को विस्तार से पढ़ने की भूख भी आपके अंदर पैदा हो सकती है। इस तरह फ़ोटो जहाँ अपने आप में एक समाचार होता है, वहीं वह एक महत्त्वपूर्ण समाचार का पूरक और सहायक भी होता है। फ़ोटो के नीचे दी गई सूचना को अख़बार की भाषा में **'कैप्शन'** कहते हैं।

क्रियाकलाप-9.2

(क) पिछले दो महीने में जिस समाचार ने आपको बेहद प्रभावित किया उसका वर्णन कीजिए और प्रभावित करने के कारण लिखिए:

....

....

....

....

(ख) अपने आस-पास के प्रसिद्ध स्थलों, इमारतों, लोगों के चित्र अख़बार-पत्रिकाओं से छाँटकर दिए गए बॉक्स में चिपकाइए और उनके बारे में तीन-चार वाक्य लिखिए।

(i) प्रसिद्ध स्थल

....

....

....

(ii) प्रसिद्ध इमारत

....

....

....

(iii) प्रसिद्ध व्यक्ति

....

....

....

9.2.4 फ़ीचर

'भारत की ये बहादुर बेटियाँ' शीर्षक पाठ आप पढ़ चुके हैं, जो फ़ीचर-शैली में लिखा गया है। आइए, यहाँ थोड़े विस्तार से फ़ीचर के बारे में जानें :

आप जानते हैं कि अख़बारों में समाचार छपते हैं। समाचारों से केवल यह जानकारी मिलती है कि क्या हुआ? उदाहरण के लिए, कल्पना चावला ने अंतरिक्ष में उड़ान भरी, तो अख़बारों में यह ख़बर छपी कि एक भारतीय महिला ने अंतरिक्ष की यात्रा की। लेकिन, कल्पना कौन है? वह अंतरिक्ष में जाने का साहस कैसे जुटा पाई? उसकी इस बहादुरी ने समाज को किस प्रकार प्रभावित किया? इन बातों को सरल भाषा और मनोरंजक शैली में बताया जाए, तो वह फ़ीचर होगा। अर्थात् 'क्या हुआ?' यह बताना समाचार है। 'जो कुछ हुआ, वह क्यों और कैसे हुआ और इसका परिणाम क्या होगा'— यह बताना फ़ीचर का काम है। फ़ीचर में घटनाओं को हमारी आँखों के आगे उतार दिया जाता है, कानों में घटनाओं की आवाज़ गुँजा दी जाती है। अख़बार के तीन काम बताए जाते हैं—सूचना देना, शिक्षा देना और मनोरंजन करना। समाचार मात्र सूचना देते हैं। फ़ीचर हमें सूचना के आधार पर शिक्षित करते हैं और हमारा मनोरंजन करते हैं। फ़ीचर में इस बात का ध्यान रखा जाता है कि वह रोचक भी हो। फ़ीचर कई प्रकार के होते हैं या हो सकते हैं—जनरुचि वाले, गंभीर विश्लेषणात्मक, हल्के-फुल्के और मनोरंजक तथा व्यक्तित्त्व-संबंधी। 'भारत की ये बहादुर बेटियाँ' व्यक्तित्व-संबंधी या 'पर्सनैलिटी फ़ीचर' है।

9.2.5 लेख

अख़बारों में प्रायः दो प्रकार के लेख प्रकाशित होते हैं — एक प्रकार के लेख वे होते हैं, जो संपादकीय पृष्ठ पर प्रकाशित होते हैं और दूसरे प्रकार के लेख वे होते हैं, जो फ़ीचर वाले पन्नों पर प्रकाशित होते हैं। संपादकीय पृष्ठ पर प्रकाशित होने वाले लेखों की अनिवार्य शर्त होती है कि वे किसी समाचार अथवा घटनाक्रम पर आधारित हों, लेकिन फ़ीचर वाले पन्नों पर प्रकाशित होने वाले लेख किसी भी क्षेत्र से संबंधित हो सकते हैं — राजनीति, समाज, साहित्य, खेल, फ़ैशन, फ़िल्म, व्यापार, पर्यटन आदि। इसमें यह शर्त नहीं होती कि ये किसी घटना-क्रम पर आधारित हों। इनमें सूचनाओं का होना अनिवार्य होता है। किसी समाचार अथवा घटना-क्रम को आधार बनाकर भी फ़ीचर लिखे जा सकते हैं। आजकल अख़बारों की कोशिश होती है कि ऐसे ही लेख प्रकाशित किए जाएँ, जिनमें समाचारों और सूचनाओं का अधिक-से-अधिक समावेश हो। इस तरह अब अख़बारों में प्रकाशित होने वाले फ़ीचरों में भी समाचारों और सूचनाओं को आधार बनाने की परंपरा तेजी से विकसित हुई है।

9.2.6 साक्षात्कार

साक्षात्कार यानी किसी व्यक्ति से बातचीत। इसे अंग्रेज़ी में 'इंटरव्यू' कहा जाता है। साक्षात्कार अख़बार का एक अनिवार्य अंग है। यह अपने आप में एक स्वतंत्र विधा है, किंतु इसका उपयोग अख़बार के अन्य अंगों में भी किया जाता है। इसका उपयोग समाचारों के लिए तो किया ही जाता है, साथ ही लेखों और फ़ीचर के लिए भी किया जा सकता है। साक्षात्कार से सूचनाओं की प्रामाणिकता पुष्ट होती है।

साक्षात्कार मुख्यतः आमने-सामने बैठकर बातचीत के माध्यम से किसी विषय पर जानकारी प्राप्त करने को कहते हैं, लेकिन आजकल फ़ोन पर भी बातचीत के आधार पर सूचनाएँ प्राप्त की जाती हैं। यह भी साक्षात्कार का एक तरीका है।

साक्षात्कार किसी व्यक्ति से किसी घटना, वस्तु, स्थिति, विषय-वस्तु आदि की जानकारी प्राप्त करने के उद्देश्य से तो लिया ही जाता है, साथ ही कुछ प्रसिद्ध व्यक्तियों से उनके जीवन के बारे में जानकारी प्राप्त करने के उद्देश्य से भी लिया जाता है। अख़बार का एक स्वतंत्र अंग होते हुए भी साक्षात्कार इसके अन्य अंगों के लिए सहायक अंग के रूप में उपयोगी होता है। जैसे— इससे विशिष्ट व्यक्तियों के बारे में जानकारी मिलती है। इससे समाचार सजीव और प्रामाणिक बन जाते हैं। इन्टरनेट के माध्यम से वीडियो फ़ोन का प्रयोग करके (टेली कांन्फ्रेन्सिग द्वारा) भी साक्षात्कार लिया जाता है।

क्रियाकलाप-9.2

कारीगर, शिक्षक, डॉक्टर में से किसी एक व्यक्ति से मिलकर नीचे दिए गए बिंदुओं को ध्यान में रखकर उनसे प्रश्न पूछिए (उनका साक्षात्कार लीजिए)। आपने क्या सवाल पूछे और उनके क्या जवाब मिले, लिखिए:

(i) प्रमुख चुनौतियाँ

प्रश्न ....

उत्तर..

....

(ii) लोगों का उनके प्रति व्यवहार

प्रश्न ....

उत्तर..

....

(iii) पारिवारिक-सामाजिक जीवन

प्रश्न ....

उत्तर..

....

(iv) वे किस काम में निपुण हैं

प्रश्न ....

उत्तर..

....

टिप्पणी

(v) आसपास के परिवेश के बारे में उनकी प्रतिक्रिया

प्रश्न ....

उत्तर...

....

पाठगत प्रश्न-9.2

सर्वाधिक उपयुक्त विकल्प छाँटकर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

1. संपादकीय आधारित होता है–

(क) लेखों पर	☐	(ख) समाचारों पर	☐
(ग) फ़ीचर पर	☐	(घ) पाठकों के विचारों पर	☐

2. फ़ोटो के नीचे छपी सूचना को अख़बार की भाषा में कहते हैं–

(क) इंट्रो	☐	(ख) सब हेडिंग	☐
(ग) कैप्शन	☐	(घ) समाचार-स्रोत	☐

3. फ़ीचर में किसका होना अनिवार्य होता है?

(क) सूचना	☐	(ख) स्रोत की जानकारी	☐
(ग) संपादक के विचार	☐	(घ) फ़ोटो	☐

4. नीचे दिए गए वाक्यों में से सही वाक्य के सामने सही (√) का निशान तथा गलत वाक्य के सामने गलत (X) का निशान लगाइए :

(क) संपादकीय में समाचारों पर संपादक की स्वतंत्र टिप्पणी होती है। ( )

(ख) संपादकीय पृष्ठ पर प्रकाशित लेखों के लिए आवश्यक नहीं कि वे समाचारों अथवा किसी घटनाक्रम पर आधारित हों। ( )

(ग) फ़ोटो भी अपने आप में एक समाचार होता है। ( )

(घ) यह आवश्यक नहीं कि फ़ीचर सूचनापरक हों। ( )

(ङ) साक्षात्कार का प्रयोग सिर्फ़ समाचारों के लिए किया जाता है। ( )

9.2.7 व्यंग्य-चित्र (कार्टून)

अख़बारों में मुख्य रूप से दो प्रकार के व्यंग्य-चित्र या कार्टून छपते हैं – एक तो समाचारों पर आधारित और दूसरे शुद्ध मनोरंजन के लिए। समाचारों पर आधारित व्यंग्य-चित्र सिंगिल बाक्स अर्थात् एक घेरे में होते हैं। शुद्ध मनोरंजन वाले व्यंग्य-चित्र या कार्टून एक से अधिक बॉक्स के भी हो सकते हैं।

समाचारों पर आधारित कार्टून प्रायः अख़बार के मुख्य पृष्ठ पर प्रकाशित किए जाते हैं और इनका स्थान हर अख़बार में अपने-अपने हिसाब से निर्धारित होता है।

समाचारों पर आधारित कार्टून अख़बार की संपादकीय टिप्पणियों, लेखों और फ़ोटो की तरह ही महत्त्वपूर्ण होता है। एक छोटे से कार्टून के माध्यम से किसी घटनाक्रम पर जितनी तीख़ी टिप्पणी की जा सकती है, उतनी तीख़ी टिप्पणी आधे पृष्ठ के लेख में भी मुश्किल से की जा सकती है। कई बार एक कार्टून के दो शब्द बहुत सारी टिप्पणियों पर भारी पड़ते हैं।

आपने महसूस किया होगा कि एक छोटे-से चित्र और छोटी-सी टिप्पणी के माध्यम से जितनी तीख़ी धारदार बात एक कार्टून कह जाता है, वही बात एक लेख अथवा टिप्पणी में कहने के लिए काफ़ी शब्दों की ज़रूरत पड़ती है।

दूसरे प्रकार के कार्टून प्रायः फ़ीचर वाले पन्नों पर छपते हैं। इनमें कथा को माध्यम बनाकर अथवा किसी चुटकुले अथवा व्यंग्य को आधार बनाकर चित्र दिए गए होते हैं। ऐसे कार्टूनों का उद्देश्य प्रायः लोगों का मनोरंजन करना होता है। कई अख़बारों में कार्टून लगातार आते हैं। जैसे– आर.के. लक्ष्मण, शंकर आदि के कार्टून।

9.2.8 विज्ञापन

विज्ञापन अख़बारों की आय का प्रमुख साधन होते हैं। ये न तो समाचारों अथवा संपादकीय की तरह अख़बारों के अनिवार्य अंग होते हैं और न ही अख़बारों की पहचान बनाने में सहायक होते हैं। चूँकि मुख्यतः इनसे ही अख़बारों की आमदनी होती है, अतः विज्ञापन जुटाने के लिए संवाददाताओं की तरह ही विभिन्न क्षेत्रों में एजेन्ट और अख़बार कर्मचारी नियुक्त करते हैं। अख़बारों को जितने अधिक विज्ञापन प्राप्त होते हैं, उन्हें उतनी ही आय होती है। इस तरह विज्ञापन अख़बार का एक अनिवार्य अंग बन चुके हैं।

किंतु, यह कहना कि विज्ञापन सिर्फ़ आय के स्रोत होते हैं, पूरी तरह सही नहीं होगा। विज्ञापन कई तरह से पाठकों को लाभ पहुँचाते हैं और शिक्षित भी करते हैं। विज्ञापन

टिप्पणी

से जहाँ अख़बारों को लाभ होता है, वहीं पाठकों और विज्ञापनदाता को भी लाभ पहुँचता है। यह लाभ का एक चक्रीय क्रम बनाता है।

आप एक उदाहरण से इसे आसानी से समझ सकते हैं — मान लीजिए, आप पाँच दोस्त हैं। आपमें से पाँचों की रुचियाँ अलग-अलग हैं। आप पाँचों को अलग-अलग चीज़ें ख़रीदनी हैं। आप उन चीज़ों के बारे में जानना चाहते हैं। आपमें से एक दोस्त कंप्यूटर ख़रीदना चाहता है और बाज़ार में गए बिना, घर बैठे ही जानकारी प्राप्त करना चाहता है कि कौन-सा कंप्यूटर ख़रीदना उचित होगा, जो उसके बजट में भी आए और गुणवत्ता में भी बेहतर हो। दूसरा दोस्त कपड़े ख़रीदना चाहता है। तीसरा दोस्त नौकरी तलाश रहा है, चौथा दोस्त अपनी बहन के विवाह के लिए वर की तलाश में है और आप यह जानना चाहते हैं कि पुस्तक-मेले में आपकी रुचि की पुस्तकें कहाँ मिलेंगी। आप पाँचों अख़बार उठाते हैं और अपनी रुचि की जानकारी प्राप्त कर लेते हैं तथा लाभ उठाते हैं। इसी तरह अख़बार विज्ञापन के माध्यम से लोगों तक सूचनाएँ पहुँचाता है और लाभ का एक चक्रीय क्रम बनाता है। विज्ञापन के इस चक्रीय क्रम को निम्न रेखांकन के माध्यम से समझा जा सकता है—

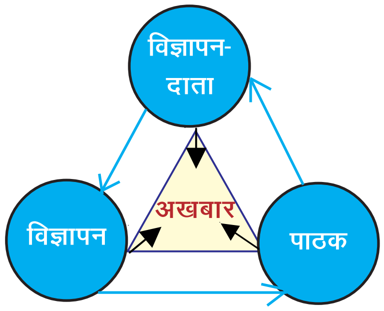

विज्ञापन की भाषा

हम बात कर चुके हैं कि विज्ञापन का उद्देश्य होता है— उत्पाद अथवा अपनी योजना की जानकारी लोगों तक पहुँचाना। ऐसे में विज्ञापन की भाषा का बहुत बड़ा योगदान होता है। विज्ञापन में कम-से-कम शब्दों के माध्यम से उत्पाद अथवा योजना की संपूर्ण जानकारी देनी होती है। साथ ही यह भी ध्यान रखना आवश्यक होता है कि भाषा रोचक हो, सरल हो और पढ़ने वाले को प्रभावित करे। आपने ऐसे बहुत से विज्ञापन देखे होंगे, जिनमें बहुत सारी सूचनाओं के बजाय सिर्फ़ एक या दो वाक्यों के नारे लिखे होते हैं और वे नारे उपभोक्ता को इतना प्रभावित कर जाते हैं, जितना एक लेख अथवा टिप्पणी भी नहीं कर पाती। विज्ञापन में स्थान की भी सीमा होती है। उपभोक्ता किसी विज्ञापन को लेख अथवा फ़ीचर की तरह नहीं पढ़ना चाहता। इसलिए विज्ञापन बनाते समय यह ध्यान रखना आवश्यक होता है कि वे संक्षिप्त हों, रोचक हों, आकर्षक हों, प्रभावशाली हों और पूरी जानकारी प्रस्तुत करें। विज्ञापन उपभोक्ता वर्ग को कैसे प्रभावित करें, इस पर विशेष ध्यान दिया जाता है।

इसके अलावा अख़बार के लिए विज्ञापन बनाते समय इस बात को ध्यान में रखना आवश्यक होता है कि इन विज्ञापनों को उपभोक्ता देख भी सकता है और पढ़ भी सकता है। ये विज्ञापन ज़्यादा समय तक उपभोक्ता के सामने रहते हैं। एक अख़बार का विज्ञापन टीवी अथवा रेडियो के विज्ञापन से अधिक समय तक उपभोक्ता के बीच में रहता है।

9.2.9 पत्र

पाठकों के पत्र अख़बारों के लिए दिशा-निर्देश का कार्य करते हैं। समाचारों, संपादकीय अथवा अन्य सामग्रियों पर पाठकों की प्रतिक्रिया से अख़बारों को जहाँ अपने अंदर सुधार करने का मौका मिलता है, वहीं उत्साह भी बढ़ता है। पाठकों के पत्र भी कई बार संपादकीय अथवा अन्य लेखों की तरह ही प्रभावकारी सिद्ध होते हैं, क्योंकि समाचारों अथवा संपादकीय टिप्पणियों को पढ़ने के बाद पाठक के मन में जो विचार उत्पन्न होते हैं, उन्हें वह अपने पत्रों में व्यक्त करता है। इसके अलावा पाठकों के पत्रों के माध्यम से उनकी समस्याओं को भी जानने का मौका मिलता है। कई ऐसी समस्याओं का भी पता चलता है, जिनकी तरफ़ अख़बारों का ध्यान कभी गया ही नहीं।

यानी, पाठकों के पत्र भी संपादकीय फ़ीचर और लेखों की तरह ही महत्त्वपूर्ण होते हैं।

9.2.10 मौसम और बाज़ार-भाव

जिस तरह लोगों को दूसरे समाचारों की प्रतीक्षा रहती है, उसी तरह बहुत से ऐसे लोग भी होते हैं, जिन्हें मौसम और बाज़ार भाव की जानकारी प्राप्त करनी होती है। कई बार आप भी जानना चाहते होंगे कि कल कितनी गर्मी थी, सर्दी थी या कल बारिश होगी या नहीं होगी। फिर आप उसी तरह अपनी दिनचर्या निर्धारित करते हैं। इसी प्रकार, किसानों और व्यापारियों तथा मछुआरों को मौसम की जानकारी की ज़रूरत होती है। यात्रा करने वालों के लिए मौसम का समाचार ज़रूरी होता है।

वस्तुओं के भाव रोज़ बढ़ते-घटते रहते हैं। ऐसे में व्यापारियों और दुकानदारों को बाज़ार भाव की जानकारी की आवश्यकता होती है। यदि आप कभी सुनार की दुकान पर जाएँ और सोने का भाव पूछें, तो दुकानदार तुरंत उस दिन का सोने का भाव बता देगा। इसकी जानकारी उसे अख़बार से मिलती है। इसी तरह रोज़ के बाज़ार-भाव अख़बारों में प्रकाशित किए जाने से न सिर्फ़ दुकानदारों और व्यापारियों को, बल्कि ग्राहकों को भी सुविधा होती है।

पाठगत प्रश्न-9.3

सर्वाधिक उपयुक्त विकल्प चुनकर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

1. अख़बार में कार्टून छापने का क्या उद्देश्य है?

   (क) मनोरंजन और तीख़ी टिप्पणी करना ☐ (ख) विज्ञापन की सूचना देना ☐

टिप्पणी

(ग) शिक्षा प्रदान करना ☐ (घ) सामाजिक घटना पर राय देना ☐

2. विज्ञापन का उद्देश्य क्या नहीं है?

(क) सूचना ☐ (ख) भाषा-शिक्षण ☐

(ग) व्यवसाय में वृद्धि ☐ (घ) प्रचार-प्रसार ☐

3. पाठकों के पत्रों को अख़बार में क्यों शामिल किया जाता है?

(क) प्रचार के लिए ☐ (ख) पाठकों की भागीदारी के लिए ☐

(ग) प्रतियोगिता के लिए ☐ (घ) समाचार देने के लिए ☐

4. नीचे दिए गए वाक्यों में से सही वाक्य के सामने सही (√) का निशान तथा गलत वाक्य के सामने गलत (X) का निशान लगाइए :

(क) समाचारों पर आधारित कार्टून प्रायः सिंगिल बॉक्स के होते हैं। ( )

(ख) बड़े विज्ञापनों को प्रायः वर्गीकृत विज्ञापन के अंतर्गत प्रकाशित किया जाता है। ( )

(ग) बाज़ार भाव से ग्राहकों को कोई लाभ नहीं होता। ( )

(घ) विज्ञापन लाभ का एक चक्रीय क्रम तैयार करते हैं। ( )

9.3 समाचारों की भाषा

समाचारों की भाषा सरल होती है। अख़बार, रेडियो और टेलीविज़न के माध्यम से हम समाचारों से अवगत होते हैं। अख़बार पढ़कर, रेडियो सुनकर और टेलीविजन देख-सुनकर हम समाचार की जानकारी प्राप्त करते हैं। माध्यम अलग-अलग होने के बावजूद समाचारों के मामले में एक समानता यह होती है कि उनकी भाषा सरल, सुबोध और तुरंत समझ में आने वाली होती है।

आप अलग-अलग अख़बारों को पढ़ें। आप महसूस करेंगे कि इनमें कठिन शब्दों के प्रयोग से बचा जाता है। परंतु अलग-अलग प्रकार के समाचारों में अलग-अलग प्रकार की शब्दावलियों का प्रयोग किया जाता है। इसी प्रकार, अलग-अलग समाचार-पत्रों की भाषा शैली अलग-अलग होती है। स्थानीय अख़बारों में स्थानीय शब्दों का भी इस्तेमाल किया जाता है। उद्देश्य एक ही है—पाठक को समाचार बिना किसी दिक्कत के समझ में आ जाए।

आपने ध्यान दिया होगा कि फ़ैशन और फ़िल्मी दुनिया के समाचारों अथवा लेखों में हिंदी के साथ-साथ अंग्रेज़ी और उर्दू के शब्दों का भी बड़ी आज़ादी के साथ प्रयोग होता है—जैसे, जरी, मिररवर्क, प्रिंट, मूड, मूवी, मुहूरत आदि। खेल-संबंधी समाचारों में फ़ॉलोऑन, चैंपियन आदि शब्दों को देख सकते हैं। इसी तरह क्रिकेट में विकेट, लेगबाई, हिट

विकेट, स्ट्रेट ड्राइव आदि शब्दों का प्रयोग होता है। बाज़ार अथवा व्यापार-संबंधी समाचारों की भाषा बिल्कुल अलग होती है। उनमें गढ़े हुए शब्दों का प्रयोग अब इतना होने लगा है कि व्यापार की भाषा ही अलग हो गई है।

बाज़ार से संबंधित समाचारों में 'जीरा टूटा', 'तस्करी आवक', 'सोने में नरमी', 'बिकवाली' आदि शब्दों का प्रयोग किया जाता है। इनका प्रयोग प्रायः अन्य स्थानों पर नहीं होता। इसी तरह आपने पढ़ा होगा 'चना उछला, 'उड़द लुढ़की' या 'सरसों के दाम खड़े'।

इसी तरह, राजनीतिक समाचारों की भी अपनी अलग भाषा होती है। आप स्थानीय समाचारों के साथ तुलना करके देखें, तो राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय राजनीति के समाचारों की भाषा अलग होती है। राजनीतिक समाचारों में कुछ मुहावरे प्रचलित हैं, जैसे–ठीकरा दूसरे के सिर फोड़ना, सेहरा बाँधना आदि। लेकिन इन समाचारों में प्रायः व्यापार और खेल–जगत के समाचारों की भाषा की तरह गढ़े हुए शब्द नहीं होते। अंग्रेज़ी के शब्दों के प्रयोग भी प्रायः कम ही देखने को मिलते हैं।

समाचारों की भाषा चूँकि सूचनापरक होती है, इसलिए इसमें सहजता, सरलता और प्रवाह का होना आवश्यक होता है। समाचारों की भाषा में यह ध्यान रखना आवश्यक होता है कि वह सर्वसाधारण की समझ में आ सके। इसलिए समाचारों की भाषा आम बोलचाल की भाषा होती है। ख़बर अनजानों को भी जोड़ देती है।

9.4 इलेक्ट्रॉनिक अख़बार : अख़बार का एक नया रूप

इलैक्ट्रॉनिक अख़बारों का प्रचलन इन दिनों काफ़ी बढ़ा है। कागज़ पर छपने वाले अख़बार से इसका स्वरूप थोड़ा भिन्न होता है। इसे केवल कंप्यूटर पर इन्टरनेट के द्वारा ही पढ़ा जा सकता है। इसलिए इसका लाभ सिर्फ़ वे लोग ही उठा सकते हैं, जिनके पास कंप्यूटर है और वह कंप्यूटर इन्टरनेट से जुड़ा हुआ है। इलैक्ट्रॉनिक अख़बार आम अख़बार के मुकाबले अधिक महँगा साबित होता है, किंतु इसकी विशेषता यह है कि आम अख़बार के मुकाबले इसकी पहुँच अथवा प्रसार व्यापक होता है। इलैक्ट्रॉनिक अख़बार को दुनिया के किसी भी कोने में पढ़ा जा सकता है। अमेरिका में प्रकाशित होने वाले अख़बार को भारत के किसी गाँव में बैठे व्यक्ति तक पहुँचाने में कई दिन का समय लग सकता है, जबकि यदि उसी अख़बार को इलैक्ट्रॉनिक माध्यम से प्रस्तुत किया जाता है, तो वह पलक झपकते ही पहुँच जाता है। आज जिस तरह से लोगों में पल-पल की सूचनाओं के प्रति जिज्ञासा तेजी से बढ़ती जा रही है, उसमें इलैक्ट्रॉनिक अख़बार बहुत तेज़ी से लोकप्रिय हो रहे हैं।

इलैक्ट्रॉनिक अख़बारों में भी समाचारों की चयन-प्रक्रिया और प्रस्तुत करने के तरीके कागज़ पर प्रकाशित होने वाले अख़बारों की तरह ही होते हैं। उनमें भी संवाददाता, संपादक, फ़ोटो, ग्राफ़िक, कार्टून आदि की भूमिका उतनी ही महत्त्वपूर्ण होती है।

टिप्पणी

पाठगत प्रश्न-9.4

सर्वाधिक उपयुक्त विकल्प चुनकर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

1. व्यापार-जगत के समाचारों की भाषा में बनावटी शब्दों का प्रयोग—

   (क) बिल्कुल नहीं होता। ☐ (ख) अधिक होता है। ☐

   (ग) कम होता है। ☐ (घ) कभी कम कभी अधिक होता है। ☐

2. समाचारों की भाषा में उदाहरण की गुंजाइश—

   (क) होती है। ☐ (ख) नहीं होती। ☐

   (ग) अधिक होती है। ☐ (घ) कम होती है। ☐

3. इलैक्ट्रॉनिक अख़बारों को पढ़ा जा सकता है सिर्फ़—

   (क) टेलीविजन पर ☐ (ख) कंप्यूटर पर ☐

   (ग) कागज़ पर ☐ (घ) रेडियो पर ☐

4. निम्नलिखित वाक्यों में सही के सामने सही (√) का तथा गलत के सामने गलत (X) का निशान लगाइए :

   (क) समाचारों की भाषा में व्यंग्य का प्रयोग किया जाता है। ( )

   (ख) समाचारों की भाषा मुहावरेदार नहीं हो सकती। ( )

   (ग) समाचार पुस्तकों में लिखी बातें ही बताते हैं। ( )

   (घ) समाचार पाठक को शिक्षित भी करते हैं। ( )

   (च) अलग-अलग विषयों के समाचारों की भाषा अलग-अलग हो सकती है। ( )

आपने क्या सीखा

- अख़बार के अंग होते हैं— समाचार, संपादकीय, फ़ोटो, फ़ीचर, लेख, साक्षात्कार, कार्टून, विज्ञापन, पत्र, मौसम तथा बाज़ार-भाव।
- समाचार अख़बार का मुख्य आकर्षण होते है। समाचार के विषय मुख्यत: होते हैं— राजनीतिक, सामाजिक, व्यापार अथवा अर्थ जगत, खेल जगत तथा विविध। ये तीन प्रकार के होते हैं— राष्ट्रीय, अंतरराष्ट्रीय तथा स्थानीय। विविध समाचारों के अंतर्गत साहित्य, संस्कृति, विज्ञान, पर्यावरण, अपराध आदि से संबंधित समाचार आते हैं।
- समाचारों का चयन उनके महत्त्व और उपयोगिता के अनुसार किया जाता है।

टिप्पणी

- समाचार के अंग मुख्य रूप से होते हैं— मेन हेडिंग (मुख्य शीर्षक), सब-हेडिंग (उप-शीर्षक), समाचार—स्रोत, इंट्रो, ब्यौरा।
- समाचारों में किसी भी घटना से जुड़े सभी प्रमुख तथ्यों को प्रस्तुत करने की कोशिश की जाती है। इसकी प्रस्तुति में संवाददाता को अपने विचार व्यक्त करने की छूट नहीं होती।
- समाचारों अथवा घटनाक्रम पर संपादक के विचारों को संपादकीय कहते हैं। इसमें संपादक को अपने विचार व्यक्त करने की पूरी छूट होती है।
- अख़बारों में प्रकाशित होने वाले फ़ोटो भी एक प्रकार से समाचार का काम करते हैं। ये अपने आप में संपूर्ण समाचार भी होते हैं और समाचारों के पूरक भी।
- फ़ीचर बहुत सारी विधाओं का मिला-जुला रूप होता है। इसकी मुख्य विशेषता है— सूचना देना।
- अख़बारों में प्रायः दो प्रकार के लेख प्रकाशित किए जाते हैं— एक वे, जो समाचारों पर आधारित होते हैं और दूसरे वे, जो विविध विषयों पर केंद्रित होते हैं। समाचारों पर आधारित लेख प्रायः संपादकीय पृष्ठ पर और विविध विषयों से जुड़े लेख फ़ीचर वाले पृष्ठों पर प्रकाशित किए जाते हैं।
- किसी विषय पर जानकारी लेने अथवा किसी प्रसिद्ध व्यक्ति से उसके बारे में जानने के लिए की गई बातचीत को साक्षात्कार कहते हैं।
- किसी भी उत्पाद अथवा योजना की जानकारी देने के उद्देश्य से सरल और रोचक भाषा में आकर्षक ढंग से प्रस्तुत की गई सूचनाओं को विज्ञापन कहते हैं।

पाठांत प्रश्न

1. अख़बार के मुख्य रूप से कितने अंग होते हैं? किसी एक प्रमुख अंग की विशेषता बताइए।
2. समाचारों के कितने प्रकार होते हैं? ख़ाका तैयार कीजिए।
3. समाचारों के चयन में मुख्य रूप से कौन-कौन सी सावधानियाँ बरतनी पड़ती हैं?
4. समाचार स्रोत का क्या अभिप्राय है— विस्तार से समझाइए।
5. संपादकीय और फ़ीचर में क्या अंतर होता है— स्पष्ट कीजिए।
6. समाचारों पर आधारित लेखों और फ़ीचर के लेखों में क्या भिन्नताएँ होती हैं?
7. विज्ञापन के आवश्यक गुण क्या हैं?
8. समाचारों की भाषा की विशेषताएँ बताइए।

9. अख़बार तथा पत्रिकाओं से प्रसिद्ध व्यक्तियों, इमारतों और स्थानों के चित्र एकत्रित कीजिए तथा उनके विषय में आवश्यक और महत्त्वपूर्ण जानकारियाँ देते हुए एक परियोजना तैयार कीजिए।
10. किसी समसामयिक घटना पर एक फीचर लिखिए।
11. किसी अखबार का एक प्रारूप तैयार कर उसके विभिन्न प्रकारों को रेखांकित कीजिए।

उत्तरमाला

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

9.1 1. (घ), 2. (घ), 3. (ख)

9.2 1. (ख), 2. (ग), 3. (क), 4. (ग)

5. (क) √, (ख) X, (ग) √, (घ) √, (ङ) X।

9.3 1. (क), 2. (ख), 3. (ख),

4. (क) √, (ख) X, (ग) X, (घ) √।

9.4 1. (ख), 2. (ख), 3. (ख), 4. (क) X, (ख) √, (ग) X, (घ) √, (च) √।

टिप्पणी

10

पढ़ें कैसे

अपने छोटे भाई-बहनों को या दूसरे बच्चों को आपने प्रारंभिक पढ़ाई करते देखा होगा। कमल का फूल देखकर वे देवनागरी लिपि का 'क', खरगोश का चित्र देखकर वे 'ख' और इसी तरह से धीरे-धीरे पूरी वर्णमाला सीखते हैं। अक्षरों के बाद शब्द की बारी आती है। बच्चा वर्णों को जोड़-जोड़ कर पढ़ता है-'क-म-ल = कमल'। इसके बाद बच्चा पूरा वाक्य पढ़ने का अभ्यास करता है-''यह कमल का फूल है।'' अनुच्छेद, पाठ, कई पाठ, बाद में तो किताबों, पत्रिकाओं के कई पृष्ठ और उसके बाद पूरी किताब पढ़ जाते हैं। किंतु केवल साक्षर हो जाना या फिर शब्द या वाक्य या किताब के कई पन्ने पढ़ जाना ही पर्याप्त नहीं है। उन्हें समझना भी आना चाहिए।

किसी भी चीज़ को समझते हुए पढ़ना भी एक कौशल है। इसके कई चरण और स्तर हैं। इसे रोचक और बेहतर कैसे बनाया जा सकता है? इस पाठ में हम ये सभी कौशल सीखेंगे।

उद्देश्य

इस पाठ को पढ़ने के बाद आप–

पढ़ने के कौशल की जानकारी प्राप्त कर उनका प्रयोग कर सकेंगे;

- आस-पास बिखरी विविध प्रकार की उपलब्ध पठन सामग्री में से उपयोगी सामग्री का चयन कर उनका विश्लेषण कर सकेंगे;
- पठित और अपठित सामग्री में अंतर स्पष्ट कर सकेंगे;
- विविध प्रकार की पठित-अपठित सामग्री में से प्रमुख उपयोगी बिंदु, सार या केंद्रीय भाव निकाल कर प्रस्तुत कर सकेंगे;
- पठित सामग्री का विश्लेषण कर सकेंगे तथा उसका मूल्यांकन कर सकेंगे।

टिप्पणी

10.1 अक्षर से अनुच्छेद तक

अमेरिका में रहने वाला कोई बच्चा हिंदी पढ़ना सीख रहा है। उसकी पुस्तक में लिखा है-ई+ख=ईख और क+म+ल=कमल। अपनी माँ या किसी और की सहायता से वह बच्चा ई, ख, क, म, ल अक्षर पहचान लेता है। इसके बाद वह ईख और कमल को पढ़ लेता है। इन अक्षरों की पहचान के सहारे 'कम', 'कलम', 'कई', 'मकई'-जैसे शब्द भी पढ़ लेता है। क्या इसे हम कहेंगे कि बच्चे ने पढ़ना सीख लिया? हाँ, कम-से-कम इन शब्दों को पढ़ना तो उसे आता है। पढ़ने का पहला चरण है– भाषा के अक्षरों की पहचान तथा उनसे बने शब्दों की पहचान।

बालक ने अक्षर और उनसे बने शब्द तो पहचान लिए, किंतु कठिनाई तब होती है जब उसने अपने घर में इन शब्दों को कभी सुना न हो। अतः वह शब्दों को पढ़ तो लेता है, किंतु इनका अर्थ नहीं समझता। विद्यार्थी की मुश्किल आसान करने के लिए ही पुस्तक में लेखक इन शब्दों के साथ 'ईख' और 'कमल' का चित्र बना देता। अब ये दो शब्द विद्यार्थी के लिए केवल शब्द नहीं रहते। 'ईख' और 'कमल' का मूर्त रूप भी उसकी आँखों के सामने आ जाता है। वह जान जाता है कि कमल फूल का नाम है और ईख वही है जिसे 'गन्ना' कहते हैं। अब वह बालक चूँकि इन दो चीज़ों के रंग-रूप को पहचान गया है, इसलिए इन दोनों शब्दों के अर्थ भी उसकी समझ में आ गए। ये शब्द उसके लिए सार्थक हो गए।

अब आप जान गए हैं कि पढ़ने के कौशल का दूसरा चरण है **शब्दों के अर्थ जानना।** दूसरे चरण के बिना पहला चरण अधूरा है। पढ़ने का कौशल सीखने के लिए एक तीसरी बात और भी है, वह है– **पढ़ने की गति**। शब्द की पहचान और उसके अर्थ के ज्ञान के बाद हम एक बार में ही कई शब्दों के समूह को पहचान लेते हैं, पढ़ लेते हैं। यह पढ़ना थोड़ी तेज़ गति से होना चाहिए। अर्थ समझने के लिए उचित गति से पढ़ना ज़रूरी है। यदि आप बहुत धीरे-धीरे पढ़ते हैं, यदि आप एक-एक शब्द को रुक-रुक कर, अटक-अटक कर पढ़ रहे हैं तो पूरे अनुच्छेद का अर्थ आपकी पकड़ में नहीं आएगा। इसके लिए आपको शब्दों को पहचानने की शक्ति का विकास करना होगा। कई लोग बोल-बोलकर, होठों में बुदबुदाते हुए या होठ हिलाते हुए पढ़ते हैं। इससे भी पढ़ने की गति में बाधा पहुँचती है। अतः पढ़ते समय पाठ्य सामग्री का समुचित गति से मौन वाचन, मन-मन में अर्थ समझते हुए पढ़ने का अभ्यास कीजिए। आपको पढ़ने में आनंद आने लगेगा।

अब आप गति के साथ पढ़ लेते हैं, यह ठीक है, किंतु जो पढ़ते हैं क्या उसे समझते भी हैं? हाँ, आप समझ रहे हैं, यही कहा न आपने! यह समझना क्या होता है? पढ़कर समझने का मतलब क्या है? आइए, जानें। जैसे एक-एक शब्द को पहचानना काफ़ी नहीं होता। वाक्यांश और पूरे वाक्य समुचित गति से पहचानने होते हैं। वैसे ही पढ़कर समझने में शब्दों के प्रसंग के अनुसार अर्थ को समझना होता है। जो कुछ हम पढ़ रहे हैं, उसका अर्थ समझने के अतिरिक्त, उसमें कही गई बातें, घटनाएँ आदि का एक-दूसरे से संबंध समझना भी शामिल है। आप जानते हैं कि शब्दों से मिलकर वाक्यांश बनते हैं, वाक्यांशों से मिलकर

वाक्य बनते हैं, इन वाक्यों से मिलकर अनुच्छेद बनते हैं और कई अनुच्छेदों के मिलने से कोई भी रचना तैयार होती है-जैसे लेख, कहानी, समाचार आदि। पढ़ने का अभ्यास हो जाने पर आप एक-एक शब्द अलग-अलग नहीं पढ़ते। उसे एक ही प्रवाह में पढ़ते चले जाते हैं। किसी भी सूचना, संदेश, विचार, घटना, लेख, कहानी को पढ़ने के साथ-साथ आप उसका अर्थ भी समझते चलते हैं। पढ़ने की प्रक्रिया में सदा **समझना** शामिल रहता है। बिना समझे-बूझे पढ़ने का कोई मतलब नहीं होता। यह पढ़ने की प्रक्रिया का चौथा चरण है। अब आपने सचमुच पढ़ना सीख लिया।

पाठगत प्रश्न-10.1

सर्वाधिक उपयुक्त विकल्प चुनकर सही (√) का निशान लगाइए :

1. पढ़ने का अभ्यास हो जाने पर हम-

   (क) एक-एक अक्षर अलग-अलग पढ़ते हैं ☐

   (ख) कई अक्षर एक साथ पढ़ते हैं ☐

   (ग) कई शब्द प्रवाह के साथ पढ़ते हैं ☐

   (घ) कई वाक्यांश एक साथ पढ़ते हैं ☐

2. असली पढ़ना कहलाता है, सामग्री में दिए गए-

   (क) शब्दों को समझना ☐

   (ख) अक्षरों को पहचानना ☐

   (ग) वाक्यांशों को पढ़ना ☐

   (घ) दिए गए विचार को समझना

3. पढ़ने के कौशल के इन चरणों को सही क्रम में लगाइए-

   (i) शब्दों के अर्थ जानना।

   (ii) कही गई बात पर विचार कर केंद्रीय भाव ग्रहण करना।

   (iii) अक्षरों तथा उनसे बने शब्दों को पहचानना।

   (iv) पाठ्य सामग्री को तीव्र गति से मन-ही-मन पढ़ना।

   (v) पढ़ने के साथ-साथ उसका अर्थ भी समझते चलना।

10.2 शब्द-ज्ञान से अर्थ-ज्ञान तक

आइए, पढ़ने के कौशल के संबंध में जो बातें हमने सीखीं उन पर और विचार करते हैं। अब आपको क्या लगता है, ठीक तरह से पढ़ने के लिए क्या शब्दों की पहचान ही काफ़ी है? नहीं। ऐसी पहचान निरर्थक होती है। हमें शब्दों के अर्थ भी आने चाहिए। इसी बात को

टिप्पणी

ध्यान में रखते हुए आपकी सुविधा के लिए आपकी पाठ्य सामग्री के प्रत्येक पाठ में आए कठिन शब्दों के अर्थ हाशिए पर दिए गए हैं। आप इनका लाभ अवश्य उठाइएगा। ये पाठ को समझने में सहायक सिद्ध होंगे। पाठ पढ़कर हमें उसका अर्थ भी तो समझना होता है। आइए उदाहरण रूप में एक अनुच्छेद पढ़ते हैं–

अनुच्छेद-1

आकाश में काले बादल छाए हुए थे। अचानक ही वे बादल छमाछम बरसने लगे। दरवाज़े पर घंटी बजी। आठ साल की रितु छमाछम करती हुई गई और उसने दरवाज़ा खोल दिया। उसका दस साल का भाई सुंदरेश सामने खड़ा था। वह अंदर आया। वह सिर से पाँव तक पूरी तरह से भीगा हुआ था। यह देखकर उसकी माँ एकदम से उस पर बरस पड़ीं।

इस अनुच्छेद में **'बादलों के संदर्भ'** में 'बरसना' शब्द का अर्थ है-आकाश से पानी का गिरना, **'माँ के संदर्भ'** में 'बरसना' शब्द का अर्थ है-उसका गुस्से से डाँट लगाना। इसी तरह से वर्षा के संदर्भ में 'छमाछम' का अर्थ है-बारिश की बूँदों के तेज़ी से गिरने से होने वाली आवाज़, जबकि ऋतु के संदर्भ में छमाछम उसके पैरों की पाजेब की आवाज़ है।

इस अनुच्छेद को पढ़कर आप निम्नलिखित घटनाएँ और तथ्य जान जाते हैं-

1. वर्षा अचानक होने लगी थी
2. सुंदरेश घर के बाहर था
3. वह वर्षा में भीग गया
4. वह घर आया
5. उसे खूब डाँट पड़ी

उक्त अनुच्छेद को पढ़ते समय आपने और भी कई बातें जानी होंगी, जो इस अनुच्छेद में कही नहीं गई हैं, जैसे– यह घटना बरसात के मौसम की है। वर्षा बहुत तेज़ थी। सुंदरेश को घर के बाहर खेलने की आदत है। सुंदरेश काफ़ी खेलने वाला लड़का है। जिस समय वर्षा आरंभ हुई, घर का दरवाज़ा भीतर से बंद था। सुंदरेश की माँ को उसके स्वास्थ्य की बहुत चिंता रहती है।

आप इन तथ्यों और घटनाओं से नीचे लिखे पारस्परिक तथा कार्य-कारण संबंध भी जान जाते हैं–

1. जिस समय वर्षा आई, सुंदरेश घर के बाहर था।
2. वह घर लौटा। वर्षा बहुत तेज़ थी, इसलिए वह पूरी तरह भीग गया था।
3. माँ बहुत नाराज़ हुईं, क्योंकि वह पूरी तरह से भीगा हुआ था और माँ को चिंता हुई कि कहीं वह बीमार न पड़ जाए।

इस तरह से शब्दों का प्रसंग के अनुकूल अर्थ समझना और पठन-सामग्री में निहित तथ्यों-घटनाओं आदि का पूर्वापर तथा पारस्परिक संबंध समझना पढ़ने के कौशल के लिए ज़रूरी है।

इस तरह से पढ़ने के बाद आपने कुछ निष्कर्ष निकाले होंगे, है न? आपने सुंदरेश की आदत और उसकी माँ के स्वभाव का मूल्यांकन किया। संभव है, यह सब कुछ पढ़ते हुए आपको इसी प्रकार का कोई व्यक्तिगत अनुभव याद आया हो, जिससे सुंदरेश की स्थिति पर आप हँस पड़े हों और पूरी घटना को पढ़कर आपने आनंद लिया हो। यह एकदम स्वाभाविक है कि आप जो कुछ पढ़ते हैं, समझते हैं उसका अपने पूर्व ज्ञान के आधार पर मूल्यांकन करते हैं, उससे निष्कर्ष निकालते हैं और उसका आनंद उठाते हैं। यह निष्कर्ष, यह मूल्यांकन, यह आनंद उठाना, पढ़ने और पढ़े हुए अंश का अर्थ समझने की प्रक्रिया का पाँचवाँ और अंतिम चरण है। इस क्रम में आप उन बातों को भी समझ लेते हैं, जो रचना में साफ़-साफ़ नहीं कही गई हैं, किंतु उनमें छिपी हुई हैं, निहित हैं।

शब्दार्थ

विवेचना = लिखी हुई बातों पर खूब सोच-विचार
मौन-वाचन = चुप रहकर पढ़ना, मन ही मन में पढ़ना,

इसका अर्थ यह हुआ कि ठीक से और पूरी तरह से पढ़ना तभी होगा जब आप पढ़ी हुई सामग्री में कही गई बातों, विचारों या भावनाओं और घटनाओं की विवेचना करके उनका आनंद लेंगे। उन बातों को अपने मन में बिठा लेंगे, अपने ज्ञान और अनुभव का हिस्सा बना लेंगे। आइए, पढ़ने के पाँचों अंगों को फिर से समझ लें–

पारस्परिक = एक दूसरे से संबंधित
कार्य-कारण संबंध = कोई काम किस कारण से हुआ यह संबंध

- शब्दों और उनसे बने वाक्यांशों को पहचानना;
- शब्दों के अर्थ जानना;
- तीव्र गति से पाठ्य सामग्री का मौन वाचन करना;
- पठित सामग्री में दिए गए तथ्यों, घटनाओं, विचारों आदि को जानना;
- पठित सामग्री में दिए गए तथ्यों, घटनाओं, विचारों आदि का पारस्परिक संबंध समझना, उनका मूल्यांकन करना तथा निष्कर्ष निकालना।

अब हम यह मान लेते हैं कि पढ़ने के कौशल के पाँचों अंग आपको याद हो गए? ठीक है न! तो अब यह देखें कि पठन-कौशल के इन चरणों पर अधिकार प्राप्त करने के लिए हमें क्या करना चाहिए।

इस संबंध में एक बात और। आप और हम ढेर सारी पुस्तकें पढ़ते हैं। हम समाचार-पत्र पढ़ते हैं, कहानी, व्यंग्य, वैचारिक लेख पढ़ते हैं और कविताएँ भी पढ़ते हैं। इन सबकी भाषा तो हिंदी ही होती है, किंतु शब्दों के अर्थ विभिन्न संदर्भों के अनुसार होते हैं, उनके प्रयोग भिन्न होते हैं, उनकी शैली भिन्न होती है और उन्हें सही प्रकार से पढ़ने-समझने के लिए विभिन्न स्तर के पठन-कौशल की आवश्यकता होती है। विभिन्न प्रकार और विभिन्न स्तर की अधिक-से-अधिक सामग्री को पढ़ने-समझने योग्य बनाने के लिए पढ़ने का अभ्यास होना चाहिए। इस अभ्यास के लिए ही विभिन्न प्रकार की सामग्री इस पुस्तक में आप पढ़ेंगे–कहानियाँ, कविताएँ, दोहे, लेख, व्यंग्य आदि। यहाँ तरह-तरह की सामग्री देने का

टिप्पणी

उद्देश्य आपको पठन-कौशल में सक्षम बनाना है, जिससे आप भावी जीवन में जो कुछ पढ़ें, उसे बिना किसी सहायता के पढ़ सकें।

पाठगत प्रश्न-10.2

दिए गए विकल्पों में से सही विकल्प चुनकर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

1. सामग्री पढ़ते समय निम्नलिखित में से क्या आवश्यक नहीं है–

   (क) शब्दों से नए शब्द बनाना

   (ख) निष्कर्ष निकालना

   (ग) तथ्यों-घटनाओं का आपसी संबंध पहचानना

   (घ) वाक्यांशों को एक साथ पहचानना

2. निम्नलिखित कहानी को ध्यानपूर्वक पढ़िए और दिए गए कथनों के सामने सही (√) और गलत (X) का निशान लगाइए।

   दोपहर का खाना खाकर किसान ने अपने बर्तन धोए। वहाँ एक अजनबी घुड़सवार आया। वह उसके गाँव की ओर जा रहा था। उसने सोचा क्यों न ये बर्तन इस घुड़सवार के हाथों घर भेज दूँ। मुझे इन्हें ढोना नहीं पड़ेगा। उसने घुड़सवार से निवेदन किया, ''आप मेरे गाँव से गुज़र रहे हैं। क्यों न आप ही ये बर्तन मेरे घर छोड़ दें।'' घुड़सवार ने मना कर दिया। कहा–''मेरे पास घर ढूँढ़ने का समय नहीं है।'' और आगे बढ़ गया। आधे मील की दूरी पर पहुँचकर वह सोचने लगा–'गलती हो गई, मुझे तो मुफ़्त में ही बर्तन मिल रहे थे। न मैं उसे जानता हूँ न वह मुझे। बर्तन अपने घर तो ले ही जा सकता हूँ।' यह सोच कर वह वापस आया और किसान से बोला, ''क्या फ़र्क पड़ता है, आपके गाँव से गुज़र तो रहा ही हूँ। आप मुझे बर्तन दे दीजिए।''

   किसान ने मुसकुराते हुए कहा, ''जो तुमने सोचा वही मैंने भी सोचा।''

   (क) एक किसान ने भोजन शाम को खाया था। ☐

   (ख) घुड़सवार से उसकी अच्छी जान पहचान थी। ☐

   (ग) किसान बर्तन अपने घर भिजवाना चाहता था। ☐

   (घ) घुड़सवार ने पहले मना कर दिया, क्योंकि वह किसान के घर का पता नहीं जानता था। ☐

   (ङ) आधे रास्ते पहुँचकर घुड़सवार ने सोचा कि सेवा करने में कोई हर्ज़ नहीं है, पता ढूँढ़ा जा सकता है। ☐

   (च) घुड़सवार कुछ सोचकर अपने घर चला गया। ☐

टिप्पणी

(छ) किसान ने बर्तन अंततः घुड़सवार को दे दिए। ☐

(ज) किसान ने सोचा ऐसे अनजाने व्यक्ति को बर्तन नहीं देने चाहिए। ☐

10.3 अर्थज्ञान से पढ़ने की कुशलता तक

आइए, पढ़ने की कुशलता पर कुछ और बातें करें।

इस पुस्तक के पाठों में आए अधिकांश शब्दों से आप परिचित होंगे। बहुत सारे शब्द तो आपने दिन-प्रतिदिन के जीवन में अपने आस-पास सुने होंगे। आपने अन्य विषयों की बहुत-सी पुस्तकें तथा इससे पहले भी हिंदी की पुस्तकें पढ़ी होंगी। फिर भी प्रत्येक पाठ में कुछ शब्द ऐसे आ जाते हैं, जो हमारे लिए अपरिचित होते हैं। किंतु प्रसंग के अनुसार उनके अर्थ का अनुमान लगाया जा सकता है और जाना जा सकता है कि लेखक क्या कहना चाहता है। जब ऐसे शब्द विभिन्न संदर्भों में बार-बार आते हैं तो हम उनका अर्थ निश्चित रूप से जान जाते हैं। फिर भी यदि कोई अस्पष्टता रह जाए तो ऐसे शब्दों के अर्थ शब्दकोश में देखकर अपने अनुमान को पक्का कर लेना चाहिए।

पाठ्य-सामग्री में तीसरे प्रकार के वे शब्द होते हैं, जो बिल्कुल ही अपरिचित होते हैं और संदर्भ के आधार पर भी उनका अर्थ समझना कठिन हो जाता है। दो उदाहरण देखिए- *'कारगिल युद्ध की **विभीषिका**[1] **वर्णनातीत**[2] है। इस घटना की **विश्वव्यापी**[3] स्तर पर निन्दा हुई।'*

उपर्युक्त तीन शब्दों में से दूसरे और तीसरे शब्द का अर्थ प्रसंग के अनुसार जानना ही संभव होगा, किंतु पहले शब्द के लिए शब्दकोश देखना आवश्यक हो जाएगा। शब्दों के अर्थ जानने के संबंध में एक बात याद रखिए। शब्द से अधिक महत्त्वपूर्ण अनुच्छेद या लेख में कही जा रही बात का मुख्य भाव है। लेखक के भाव, विचार, संदेश आदि समझना ही वास्तविक रूप से पढ़ना है। भाव, विचार आदि शब्दों द्वारा ही प्रकट होते हैं, अतः अधिक-से-अधिक शब्दों को उनके सही अर्थों सहित जानना, 'पढ़ना' कौशल पर अधिकार पाने के लिए आवश्यक है।

आप जान चुके हैं, पढ़कर समझने की पहली शर्त है– गतिपूर्वक पढ़ना। जब तक समुचित गति से नहीं पढ़ा जाएगा, तब तक तथ्यों, विचारों, भावों आदि के आपसी संबंधों को अच्छी तरह से समझने में कठिनाई होगी। अतः सबसे पहले गति से पढ़ने का अभ्यास कीजिए। गतिपूर्वक पढ़ने के लिए शब्दों को अलग-अलग देखना आवश्यक नहीं है। हम एक ही नज़र में पूरा वाक्य अथवा वाक्यांश पढ़ लेते हैं। पठन की गति बढ़ाने का अभ्यास करने का एक तरीका है कि पठन सामग्री की दाहिनी ओर पृष्ठ पर सबसे ऊपर अँगुली रखकर, धीरे-धीरे आगे की ओर बढ़ाते चलिए और अंगुली के फिसलने की गति से ही पंक्तियों को पढ़ने का प्रयत्न कीजिए। अभ्यास करने पर आपकी पठन गति अवश्य बढ़ेगी। इसके लिए आप घड़ी रखकर देखिए कि एक मिनट में आप कितने शब्द पढ़ पाते

हैं। आप पाएँगे कि कुछ दिन अभ्यास के बाद आप कम समय में अधिक शब्द पढ़ लेते हैं। निरंतर अभ्यास करते रहने पर अपनी पढ़ने की गति में सुधार कर सकते हैं। एक बात का अवश्य ध्यान रखिए—यदि सामग्री में नए अथवा कठिन शब्द आएँ तो उनका प्रसंगानुकूल अर्थ समझने का प्रयत्न कीजिए और उन्हें अपने पठन में बाधक न बनने दें। किंतु यदि ऐसे शब्द संख्या में काफी हैं और उनसे अर्थ-बोध में बाधा पड़ रही है, तो उन्हें अलग किसी कागज़ पर लिखते चलिए। पूरा पाठ पढ़ लेने के बाद इन शब्दों को शब्दकोश में देखिए और प्रत्येक के सामने उसका अर्थ लिख लीजिए। अब आप पाठ दुबारा पढ़ जाइए। तब तक पढ़िए जब तक स्पष्ट न हो जाए।

शब्दों के अर्थ जान लेने के पश्चात्, अनुच्छेद में प्रकट विचारों और तथ्यों को समझना अधिक कठिन नहीं होगा। किसी अनुच्छेद को पढ़ते समय आप निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर ढूँढने का प्रयास कीजिए—

1. अनुच्छेद में कौन-कौन से तथ्य दिए गए हैं?
2. अनुच्छेद में कौन-कौन से विचार आए हैं?
3. इनमें से कौन-से तथ्य तथा विचार मुख्य हैं?
4. इस अनुच्छेद में कही गई बातें कहाँ तक सही हैं, इत्यादि।

जब तक आप ऐसे प्रश्नों का उत्तर नहीं दे पाएँगे, समझिए आपने अनुच्छेद का अर्थबोध नहीं किया, अर्थात् आपका पढ़ना, न पढ़ना समान ही रहा।

पढ़ी हुई सामग्री को पूरी तरह समझने के लिए ज़रूरी है कि जो बात कही गई है, उसका मनन करें अर्थात् उस पर मन ही मन सोच-विचार करें। कोई घटना क्यों घटी, अमुक पात्र का स्वभाव कैसा था, लेखक का संदेश क्या था, उसने वह संदेश कितनी अच्छी तरह से दिया है, जो बात कही गई है, वह कहाँ तक सही है, इत्यादि। इस प्रकार सोचने-विचारने से पढ़ी-समझी बात आपके ज्ञान और अनुभव का अंग बन जाएगी। तब आपको कुछ रटने की ज़रूरत नहीं पड़ेगी। पढ़ी-समझी बातें जीवन में आपके काम आएँगी और नई सामग्री को पढ़ने-समझने में सहायता प्रदान करेंगी।

हाँ, एक बात और यह भी जानने की कोशिश भी कीजिए कि सही उत्तर वही क्यों है? यदि यह सब कुछ आप सफलतापूर्वक कर पाएँगे तो आप सच्चे अर्थों में पढ़ना जान जाएँगे। पर एक बात याद रखिए, किसी एक अनुच्छेद, लेख अथवा कहानी को पढ़ और समझ लेने पर यह नहीं मान लेना चाहिए कि आप पढ़ने में पूर्णतया कुशल हो गए हैं। जैसा कि हम पहले बता चुके हैं कि पठन सामग्री भिन्न-भिन्न विषयों और स्तरों की होती है, अतः अपनी आवश्यकता और रुचि की सामग्री को पढ़ने और समझने के लिए आवश्यक है कि आप विभिन्न प्रकार की सामग्री को पढ़कर समझने का अभ्यास करें। पढ़ने में गति भी अभ्यास से ही आती है और अर्थबोध का विकास भी विभिन्न प्रकार की सामग्री को बार-बार पढ़ने से ही होता है।

पाठगत प्रश्न-10.3

निम्नलिखित अनुच्छेद को ध्यानपूर्वक पढ़िए और पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

जनसंख्या की वृद्धि भारत के लिए आज एक विकट समस्या बन गई है। यह समाज की सुख-संपन्नता के लिए एक भयंकर चुनौती है। महानगरों में कीड़े-मकोड़ों की भाँति अस्वास्थ्यकर घोंसलों में आदमी भरा पड़ा है- न धूप, न हवा, न पानी, न दवा, पीले-दुर्बल, निराश चेहरे। यह संकट अनायास नहीं आया है। संतान को ईश्वरीय विधान और वरदान माननेवाला भारतीय समाज ही इस रक्तबीजी संस्कृति के लिए जिम्मेदार है। चाहे खिलाने को रोटी और पहनाने को वस्त्र न हों, शिक्षा को शुल्क और रहने को छप्पर न हो, लेकिन अधभूखे, अधनंगे बच्चों की कतार खड़ी करना हर भारतीय अपना जन्मसिद्ध अधिकार समझता है। यही कारण है कि प्रतिवर्ष एक ऑस्ट्रेलिया यहाँ की जनसंख्या में जुड़ता चला जा रहा है। यदि इस जनवृद्धि पर नियंत्रण न हो सका तो हमारे सारे प्रयोजन और आयोजन व्यर्थ हो जाएँगे। धरती पर पैर रखने की जगह नहीं बचेगी। भारत की जनसंख्या इसी गति से बढ़कर सन् 2000 में एक अरब तक जा पहुँची।

(क) जनसंख्या वृद्धि भारत के विकास के लिए चुनौती क्यों है?

(ख) समाज की सुख संपन्नता जनसंख्या पर कैसे आश्रित है?

(ग) भारतीय जनसंख्या की तुलना आस्ट्रेलिया से क्यों की गई?

(घ) इस अनुच्छेद का सार एक तिहाई शब्दों में लिखिए।

(ङ) इस अनुच्छेद का उचित शीर्षक लिखिए।

(च) निम्नलिखित शब्दों के अर्थ शब्दकोश से देखकर लिखिए-विकट, चुनौती, अनायास, अधिकार, प्रयोजन

(छ) निम्नलिखित शब्दों से उचित उपसर्ग और प्रत्यय अलग कीजिए–
अस्वास्थ्यकर, भारतीय, प्रतिवर्ष, प्रयोजन

10.4 अपठित कविता कैसे पढ़ें

आइए, एक उदाहरण कविता का भी देख लें। कविता का पठन और अर्थबोध गद्य-सामग्री के पठन और अर्थबोध से भिन्न होता है। गद्य-सामग्री का पठन द्रुतगति से और मौन रहकर करना होता है, किंतु कविता के वाचन में उचित विराम और लय के साथ सस्वर पाठ करने की आवश्यकता होती है। जब तक सस्वर और उचित लय के साथ नहीं पढ़ेंगे, उसे पढ़ने का आनंद नहीं आएगा, न ही उसका अर्थ खुलेगा।

पढ़ें कैसे

दूसरी बात यह है कि गद्य की भाँति कविता में सूचनाओं और ज्ञान का भंडार नहीं होता और न ही हम उसका वाचन ज्ञान ग्रहण करने के लिए करते हैं। गद्य की भाँति हम कविता के दस-पंद्रह पृष्ठ एक साथ नहीं पढ़ते। कविता तो भावों से परिपूर्ण होती है, उसमें प्रवाह होता है, संगति होती है और कई बार शब्दों के दोहरे अर्थ होते हैं। अतः कविता धीरे-धीरे, लयपूर्वक, सस्वर पढ़नी चाहिए, जिससे आप कवि के भावों को स्वयं अनुभव कर सकें और उसके संदेश को समझ सकें।

आप जान गए हैं कि कविता की भाषा गद्य की भाषा से भिन्न होती है। उसमें भारी-भरकम शब्द नहीं होते। इसके अतिरिक्त, उसमें यदि कोई नया शब्द होता भी है तो ज़रूरी नहीं कि कवि ने उसको बिलकुल उसी अर्थ में लिखा हो, जो शब्दकोश में दिया गया है। नीचे दिए गए उदाहरण से बात स्पष्ट हो जाएगी।

अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध' की यह कविता आपने कभी पढ़ी है ? नहीं, तो ज़रा इसे सस्वर और लयपूर्वक पढ़िए:

एक बूँद

ज्यों निकल कर बादलों की गोद से,
थी अभी एक बूँद कुछ आगे बढ़ी।
सोचने फिर-फिर यही जी में लगी,
आह, क्यों घर छोड़कर मैं यों कढ़ी।
दैव मेरे भाग्य में है क्या बदा,
मैं बचूँगी या मिलूँगी धूल में।
गिर पडूँगी चू अँगारे पर किसी,
या गिरूँगी मैं कमल के फूल में।

बह गई उस काल कुछ ऐसी हवा,
वह समंदर ओर आई अनमनी।
एक सुंदर सीप का मुँह था खुला,
वह उसी में जा गिरी मोती बनी।

लोग यों ही हैं झिझकते-सोचते,
जबकि उनको छोड़ना पड़ता है घर।
किंतु अक्सर छोड़ना घर का उन्हें,
बूँद-सा कुछ और ही देता है कर।

कढ़ी = बाहर निकली
अनमनी = उदास, बेमन
धूल में मिलना = नष्ट होना

इस कविता में आपको किसी शब्द का अर्थ समझने में कठिनाई हुई? नहीं हुई न! किंतु 'ज्यों' शब्द जरा नया-सा है। है न? 'ज्यों' का अर्थ है **'जैसा'** किंतु शब्दकोश देखे बिना संदर्भ से आप इसका अर्थ ज़रूर समझ गए होंगे और यह भी समझ गए होंगे कि कवि क्या कहना चाह रहा है।

पाठगत प्रश्न-10.4

सही कथन पर (√) का और गलत कथन पर (X) का निशान लगाइए :

1. यह कविता बादलों के बारे में है।
2. यह कविता बूँद के बारे में है।
3. यह कविता बूँद के भयभीत होने के बारे में है।
4. यह कविता बूँद के भाग्य के बारे में है।
5. कवि कहना चाहता है कि हमें नई स्थितियों में ढलना चाहिए।
6. कवि कहना चाहता है कि हमें साहसी होना चाहिए।
7. कवि कहना चाहता है कि भाग्य के भरोसे नहीं रहना चाहिए।
8. यह कविता उद्यमी और साहसी लोगों के बारे में है।
9. यह कविता डरपोक लोगों के बारे में है।
10. यह कविता भाग्यवादी लोगों के बारे में है।

10.5 इन बातों का ध्यान रखिए

अब आप समझ कर पढ़ने का आसान-सा तरीका जान गए हैं। आप गद्य और कविता को अधिक-से-अधिक पढ़ने का अभ्यास कीजिए। इसके लिए इस पुस्तक में दिए पाठों को ध्यानपूर्वक पढ़िए। आपकी सहायता के लिए प्रत्येक पाठ में आए कठिन शब्द और उनके अर्थ साथ में दिए गए हैं। हर सामग्री पर विस्तार से चर्चा की गई है। इसके अतिरिक्त पाठों के विभिन्न अंशों पर प्रश्न भी पूछे गए हैं, जिनका उत्तर देने पर आप जान पाएँगे कि आपने पाठ को पढ़कर कितना समझा है। इस सामग्री का पूरा-पूरा लाभ उठाने के लिए आपको पढ़ने-समझने का अभ्यास करना आवश्यक है। उसके लिए निम्नलिखित कार्य कीजिए:

1. सामग्री को द्रुत गति से, मौन रहकर, समझकर पढ़ने की कोशिश कीजिए।
2. कविताओं को सस्वर पढ़िए और उसकी लय तथा झंकार का आनंद उठाइए और भाव ग्रहण करने का प्रयास कीजिए।
3. कठिन शब्दों के अर्थ शब्दकोश की सहायता से जानिए।
4. मूल पाठ को बार-बार पढ़िए और उसमें समाहित घटनाओं, विचारों आदि को नोट कर लीजिए। ऐसे शब्दों पर विशेष ध्यान दीजिए जो पाठ के केंद्र-बिंदु से जुड़े हैं।
5. पाठगत प्रश्नों के उत्तर दीजिए। इन उत्तरों को दिए गए उत्तरों से मिलाइए। यदि गलत हों तो पुनः अंश पढ़कर सवालों के जवाब देने का प्रयास कीजिए।

6. पाठांत प्रश्नों के उत्तर लिखकर देखिए जिससे आपको लिखने का अभ्यास हो सके और आप परीक्षा में भी तीव्र गति से लिखकर प्रश्नों के उत्तर दे सकें।
7. जब तक आपको सारे प्रश्नों के उत्तर पूरी तरह समझ में न आ जाएँ, उपर्युक्त सभी कार्य बार-बार कीजिए। ऐसा करने पर आपको प्रश्नों के उत्तर रटने की ज़रूरत नहीं पड़ेगी। सारी सामग्री आपकी समझ, ज्ञान और अनुभव का अंग बन जाएगी।

इस पाठ्य सामग्री के अतिरिक्त आपके अभ्यास के लिए पाठांत प्रश्नों के रूप में कुछ अपठित सामग्री भी दे रहे हैं। यह सामग्री अर्थबोध का अभ्यास कराने में आपकी मदद करेगी।

हमें पूरा विश्वास है कि इन दोनों प्रकार की सामग्रियों की सहायता से आप पढ़ने की कुशलता का समुचित विकास कर पाएँगे।

आइए, आपको ऐसी सामग्री पढ़ने के तरीके बताते हैं जो आपने कभी नहीं पढ़ी, जो आपके लिए बिल्कुल नई है यानी अपठित है। यह गद्य अर्थात् निबंध, कहानी, लेख, समाचार आदि या कविता भी हो सकती है। जब आप किसी नई पठन सामग्री को पढ़ना शुरू करें तो उससे पहले उस पर एक नज़र ऊपर से नीचे तक डालें। आपको देखते ही कुछ मोटी-मोटी-सी चीज़ें समझ में आ जाएँगी। जैसे-पठन सामग्री का शीर्षक क्या है, किसके बारे में है, उसके मुख्य बिंदु क्या हैं, यदि कोई चित्र या आँकड़ा या तालिका दी गई है तो उसे ध्यान से देखें, उपशीर्षक पर ध्यान दें। कुछ बातें उभार कर लिखी जाती हैं यानी टेढ़े छपे अक्षर, शब्द या वाक्य में होंगी। उन्हें ध्यान से पढ़िए।

10.6 कुछ और बातें

अब आप पूरे लेख को शुरू से लेकर अंत तक पढ़ने का प्रयास कीजिए। आपने ध्यान दिया होगा कि इस बार आप पूरे अनुच्छेद को अधिक तेज़ी से पढ़ गए हैं। चीज़ें कुछ जानी पहचानी लग रही हैं। आपको ऐसी ही कोई और स्थिति ध्यान में आ रही है? ऐसे में आप अख़बार या पुस्तक बेहतर तरीके से समझ पाएँगे। जितना अधिक-से-अधिक पढ़ेंगे उतनी ही तेज़ी पठन में आप बना पाएँगे। इसके लिए पुस्तकालय जाकर अपनी पसंद की पुस्तकें चुनिए और अधिक-से-अधिक पढ़ने का अभ्यास कीजिए। आपको एक बात और बताते हैं–यदि पढ़ते समय कोई अपरिचित शब्द आता है तो आप सर्वप्रथम संदर्भ से ही अर्थ समझने का प्रयास करें। यह आप इसी पाठ में पढ़ चुके हैं। यदि फिर भी न समझ में आए तो आप उस शब्द का संरचनात्मक विश्लेषण करने का प्रयास कीजिए, उदाहरण के लिए मान लीजिए कि आपके सामने एक शब्द आया-'दिग्विजय'। इस शब्द का विश्लेषण करना चाहेंगे तो आपको पढ़ने से 'विजय' शब्द साफ़ समझ आ रहा होगा परंतु आगे 'दिग्' लग जाने से शब्द अनजाना-सा लग रहा होगा। यह 'दिग्' शब्द वास्तव में 'दिक्' है जिसका अर्थ है-'दिशा' और 'दिक्' शब्द 'विजय' से पूर्व लगने और संधि के नियम के कारण 'दिग्' बन गया और पूरा शब्द बना 'दिग्विजय'। इसी प्रकार अपरिचित शब्दों के मूल शब्द को पहचानने का प्रयास कीजिए फिर उस शब्द के आगे और पीछे लगे उपसर्ग-प्रत्यय को

पहचानिए। साथ ही इनके लगने से बने शब्द में आए बदलाव को पहचानने का प्रयास कीजिए।

आपने क्या सीखा

- पठन कौशल को विकसित करने के लिए इसके अनेक चरण हैं।
- सामग्री को पढ़ने की कला का विकास करने के लिए पढ़ने में रुचि जगानी बहुत आवश्यक है।
- पठन में गति बढ़ाने के लिए अधिक से अधिक सामग्री प्रतिदिन पढ़ना और घड़ी रखकर पढ़ना ज़रूरी है। इससे आप एक मिनट में पढ़े गए शब्दों की संख्या गिनिए और उन्हें बढ़ाने का प्रयास कीजिए।
- अपरिचित या अपठित सामग्री को पढ़ने से पहले उस पर एक दृष्टि डालना आवश्यक है, जिससे उसके शीर्षक, उपशीर्षक, चित्र, आँकड़े आदि का सामान्य बोध हो सके। तत्पश्चात्, उसे शुरू से अंत तक गंभीरतापूर्वक पढ़ना चाहिए।
- गद्य पढ़ते समय विचारों के क्रम पर ध्यान देना आवश्यक होता है। इसी प्रकार कविता पढ़ते समय भाव ग्रहण करने के लिए उसे लय के साथ पढ़ना आवश्यक होता है।
- पढ़ते समय कोई अपरिचित और कठिन शब्द आने पर उसे एक कागज़ की चिट पर लिख लेना चाहिए और शब्दकोश में उसका अर्थ देखकर याद कर लेना चाहिए।

योग्यता विस्तार

कुशलता से पढ़ने के जीवन में बहुत लाभ हैं–इसके लिए शांतचित्त होकर पढ़ने का अभ्यास कीजिए।

- कागज़ पेंसिल लेकर पढ़िए–मुख्य बिंदुओं को लिख लीजिए, उन्हें याद रखने का प्रयास कीजिए।
- समय का सदुपयोग करना सीखिए।
- प्राथमिकता सुनिश्चित कर पढ़ाई कीजिए।
- क्या पढ़ना है, क्या नहीं, निर्णय लेना स्वयं सीखिए।
- क्या पढ़ना है, क्यों पढ़ना है, कैसे पढ़ना है? आदि प्रश्न सदा स्वयं से करते रहिए। उनके उत्तर ढूँढने का प्रयास कीजिए।
- पढ़ने में गति बढ़ाने का निरंतर प्रयास करते रहिए।
- नहीं पढ़ने वाली चीज़ें अलग हटाकर रखिए।

टिप्पणी

- पढ़ने वाली उपयोगी चीज़ों को व्यवस्थित कर संभाल कर रखिए।
- पढ़ना अपनी आदत बना लीजिए-लाभकारी रहेगी।

पाठांत प्रश्न

1. निम्नलिखित अनुच्छेदों को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए–

(क) भारत जैसा सुंदर और महान देश दूसरा कौन-सा है, जिसके उत्तर में हिमालय जैसा विश्व प्रसिद्ध विशाल पर्वत है। इस पर्वत को हम देवताओं का स्वर्ग कहें, ऋषियों का तपोवन कहें, प्राकृतिक सुषमा का भंडार कहें, पवित्र निर्मल जलाशयों का आगार कहें, हिम का मुकुट कहें, उत्तर का प्रहरी कहें या संसार का सौंदर्य कहें या जो कुछ भी कहें, वह पूर्ण रूप से सत्य होगा। इस पुण्यभूमि का भारत के इतिहास से गहरा संबंध है। भूगोल का यह मानदंड है। मंदिरों का यह क्षेत्र है। तीर्थ यात्रियों के लिए यह धर्म भूमि है और सैलानियों के लिए स्वर्ग।

विशाल हिमालय पर्वत की श्रेणियाँ कश्मीर से असम तक फैली हुई हैं। इन श्रेणियों में अमरनाथ, बदरीनाथ, केदारनाथ, गंगोत्तरी, यमुनोत्तरी आदि अनेक तीर्थ स्थान हैं, जिनके दर्शन के लिए देश के विभिन्न प्रदेशों के निवासी लालायित रहते हैं। इसी पर्वत श्रेणी में कश्मीर है, जो पृथ्वी का स्वर्ग कहलाता है।

प्रश्न

1. हिमालय को प्राकृतिक सुषमा का भंडार क्यों माना गया है?
2. कश्मीर को पृथ्वी का स्वर्ग क्यों कहा गया है?
3. भारत की सुंदरता और महानता का श्रेय हिमालय को क्यों दिया गया है।
4. इस अनुच्छेद का एक तिहाई शब्दों में सार लिखिए।
5. इस अनुच्छेद का उचित शीर्षक लिखिए।

2. निम्नलिखित कविता की पंक्तियों को ध्यानपूर्वक पढ़िए।

फूलों से नित हँसना सीखो, भौंरों से नित गाना।
तरु की झुकी डालियों से नित, सीखो शीश झुकाना।
सूरज की किरणों से सीखो, जगना और जगाना।
लता और पेड़ों से सीखो, सबको गले लगाना।
दीपक से सीखो जितना हो सके अँधेरा हरना।
पृथ्वी से सीखो जीवों की सच्ची सेवा करना।
जलधारा से सीखो आगे, जीवन-पथ पर बढ़ना।

और धुएँ से सीखो हरदम, ऊँचे ही पर चढ़ना।
सत्पुरुषों के जीवन से सीखो चरित्र निज गढ़ना।
अपने गुरु से सीखो बच्चो, उत्तम विद्या पढ़ना।

अब निम्नलिखित प्रश्नों के एक या दो वाक्यों में उत्तर लिखिए–

1. वृक्ष की झुकी हुई डालियाँ हमें क्या सिखाती हैं?
2. दीपक किसका प्रतीक है?
3. अंधेरा किसका प्रतीक है?
4. अपने गुरुओं से हमें क्या सीखना चाहिए?
5. वृक्ष की झुकी हुई डालियाँ, हमें क्या संदेश देती हैं और इस संदेश का हमारे जीवन में क्या महत्त्व है?
6. जलधार हमें क्या संदेश देती है? इस संदेश को प्राप्त कर हम अपने जीवन में कैसे आगे बढ़ सकते हैं?
7. गुरु जीवन में ज्ञान का प्रकाश फैलाता है। कैसे?
8. निम्नलिखित पंक्ति का आशय स्पष्ट कीजिए–

   (क) 'दीपक से सीखो जितना हो सके अँधेरा हरना।'

   (ख) 'सत्पुरुषों के जीवन से सीखो निज चरित्र गढ़ना।

उत्तरमाला

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

10.1 1. (ग) 2. (घ) 3. iii, i, v, iv, ii

10.2 1. (क) 2. (क) X (ख) X (ग) √ (घ) √ (ङ) X (च) X (छ) X (ज) √

10.3 (क) विकास के साधन सीमित हैं, और जनसंख्या असीमित। अतः जनसंख्या वृद्धि विकास के लिए चुनौती बन गई है।

(ख) अच्छा भोजन, घर, पहनने के लिए वस्त्र, शिक्षा सुविधाएँ आदि सुख-संपन्नता के आधार हैं। ये सबको तभी मिल सकते हैं, जब जनसंख्या नियंत्रित हो।

(ग) भारत में प्रत्येक वर्ष उतनी जनसंख्या वृद्धि होती है, जितनी ऑस्ट्रेलिया देश की कुल जनसंख्या है। अतः भारत की जनसंख्या की वृद्धि की तीव्रता को बताने के लिए इसकी तुलना आस्ट्रेलिया से की गई है।

टिप्पणी

(घ) स्वयं कीजिए

(ङ) 'जनसंख्या वृद्धि', 'भारत देश की बढ़ती जनसंख्या', 'भारत की जनसंख्या-विकट समस्या', 'एक अरब: बस कर अब' आदि जैसे उपयुक्त शीर्षक।

(च) स्वयं कीजिए

(छ) उपसर्ग - अ, प्रति, प्र

प्रत्यय - कर, ईय

10.4 1. X 2. √ 3. √ 4. √ 5. √ 6. √ 7. √ 8. × 9. √ 10. √

11

सार-लेखन

विचारों को भाषा में अभिव्यक्त करने की अनंत संभावनाएँ छिपी होती हैं। कई बार हम छोटी-से-छोटी बात का वर्णन बहुत विस्तार से करते हैं, तो कई बार बहुत लंबी-चौड़ी विस्तृत बात को एकदम थोड़े शब्दों में व्यक्त कर लेते हैं। जिस प्रकार, छोटी-सी बात को विस्तार देना एक कला है, उसी प्रकार, विस्तार से कही गई बात को कम शब्दों में व्यक्त कर देना भी एक कला है। विस्तार से कही गई बात को कम शब्दों में व्यक्त करना ही सार-लेखन कहलाता है। आइए, इस पाठ में हम इस कला का अभ्यास करें।

उद्देश्य

इस पाठ को पढ़ने के बाद आप–

- सार के अर्थ और उसकी उपयोगिता का उल्लेख कर सकेंगे;
- सार और भाव-पल्लवन में अंतर बता सकेंगे;
- सार-लेखन के विभिन्न रूपों का उल्लेख कर सकेंगे;
- सार-लेखन की प्रक्रिया का वर्णन कर सकेंगे;
- उपयुक्त भाषा-शैली में सार-लेखन कर सकेंगे।

11.1 सार-लेखन का अर्थ और उपयोगिता

आइए, हम समझें कि सार-लेखन क्या होता है और हमारे लिए उसकी क्या उपयोगिता है। यह तो आप जानते ही हैं कि हमारे जीवन में व्यस्तताएँ निरंतर बढ़ती ही जा रही हैं और समय का अभाव होता जा रहा है। आप यह भी जानते हैं कि मनुष्य के सारे क्रियाकलापों में भाषा की महत्त्वपूर्ण भूमिका होती है। आपने बहुतों को यह कहते सुना होगा – ''जा-जा, काम करने दे, फ़ालतू बातें मत कर।''

इसका अर्थ हुआ कि फालतू बातें न करके उचित, उपयुक्त और संक्षिप्त बात करने का महत्त्व है। मतलब यह है कि भाषा का ऐसा प्रयोग किया जाना चाहिए, जिससे समय की बचत हो। अगर कम शब्दों का प्रयोग करेंगे, तो समय भी कम ख़र्च होगा और दूसरा आदमी भी हमारी बात ध्यानपूर्वक सुनेगा। इसके अतिरिक्त संचार-क्रांति के इस युग में टेलीफ़ोन, फ़ैक्स आदि पर पैसे भी बचेंगे। कम शब्दों में बात करना या लिखना एक कौशल है। जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में इससे लाभ होता है।

यह तो हुआ कम शब्दों में अपनी बात कहने का भाषाई कौशल। दूसरा एक और काम होता है– किसी दी हुई सामग्री को कम शब्दों में व्यक्त करने की कला; इसी को सार-लेखन कहते हैं। सार-लेखन में किसी दूसरे के द्वारा लिखी गई विस्तृत बात को उसका मूल भाव सुरक्षित रखते हुए कम शब्दों में प्रस्तुत किया जाता है।

कम शब्दों में बात कहने का कौशल सार-लेखन में सहायक होता है और सार-लेखन के अभ्यास से भाषा में हमारी कुशलता बढ़ती है।

विभिन्न क्षेत्रों में सार-लेखन की उपयोगिता है। अख़बारों में जगह के हिसाब से समाचार-संपादक समाचारों का सार-लेखन करते हैं। 'आकाशवाणी' और 'दूरदर्शन' पर समय के हिसाब से यही काम किया जाता है। कई बार लेखों, यहाँ तक कि पुस्तकों तक का सार तैयार किया जाता है। सरकारी कार्यालयों में भी सहायक द्वारा पत्रों और कभी-कभी तो पूरी फ़ाइल का सार-लेखन किया जाता है।

11.2 सार-लेखन और भाव-पल्लवन में अंतर

सार-लेखन और भाव-पल्लवन के अंतर को आगे दिए गए आरेख द्वारा समझा जा सकता है–

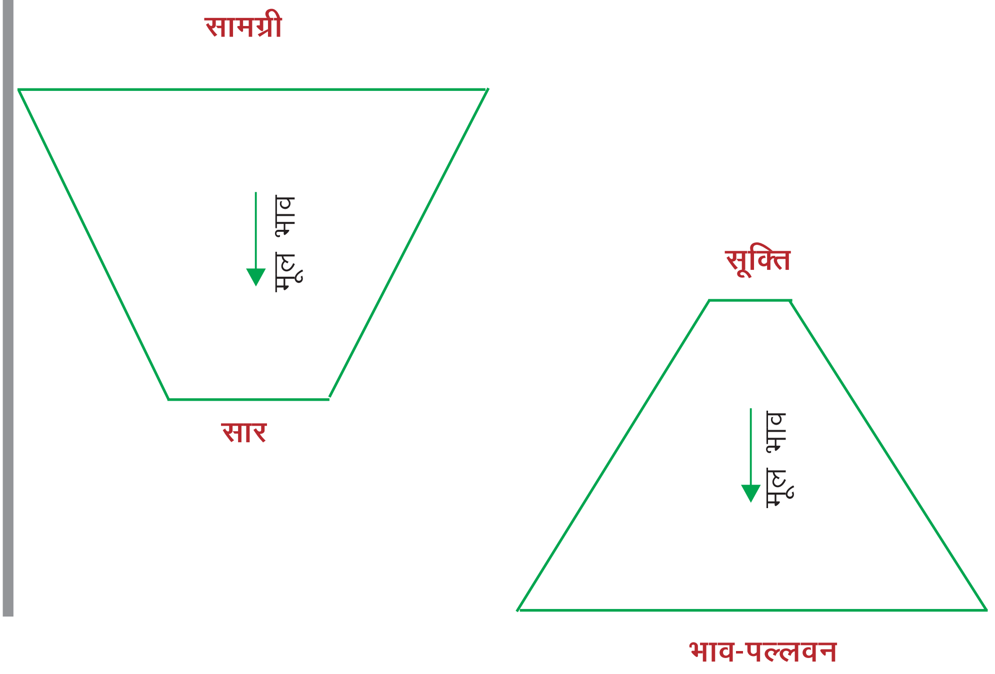

चित्रों से बात स्पष्ट हो गई न ? मूल सामग्री में विस्तार होता है। स्पष्ट है कि समझाने के लिए बातें विस्तार में कही जाती हैं। उसका मूल भाव या सार छोटा होता है और संक्षेप में लिखा जा सकता है। इसीलिए, आरेख में सामग्री वाली लकीर लंबी है, सार वाली लकीर सामग्री वाली लकीर की एक तिहाई है। सार-लेखन प्रायः मूल सामग्री का एक-तिहाई होता है। इसी प्रकार से, दूसरे आरेख में सूक्ति वाली लकीर छोटी है। सूक्ति तो एक-आध पंक्ति की ही होगी न ! जैसे, इसी सूक्ति को लें– 'सत्यमेव जयते' सत्य की ही जीत होती है– यह मूल भाव है। भाव-पल्लवन में इस मूल भाव को ही स्पष्ट करना होता है। कई उदाहरण आदि के द्वारा या कई तरह से कह कर इस सूक्ति को स्पष्ट करते हैं। यह मूल भाव को फैलाना या पल्लवित करना हुआ। अतः भाव-पल्लवन वाली लकीर लंबी है। आप आरेखों में यह भी देख रहे होंगे कि सूक्ति या भाव–पल्लवन के विषय वाली पंक्ति, सार वाली पंक्ति से भी छोटी है। जैसा हमने देखा, सार तो फिर भी मूल सामग्री का एक तिहाई होता है, किंतु सूक्ति एक वाक्य की या वाक्यांश वाली भी हो सकती है।

11.3 सार-लेखन के रूप

आप जान चुके हैं कि विभिन्न क्षेत्रों में सार-लेखन की क्या उपयोगिता है। अलग-अलग क्षेत्रों, विषयों या कामों के लिए, सार-लेखन के कई अलग-अलग रूपों का प्रयोग किया जाता है। आइए, उनमें से कुछ के विषय में जानकारी प्राप्त करते हैं :

1. अधिक शब्दों में लिखी बात को कम शब्दों में व्यक्त करने की आवश्यकता समाचार-लेखन में होती है, या फ़ैक्स करने में होती है, आदि-आदि। ऐसा प्रायः भाषा में अनेक शब्दों या वाक्यांशों के लिए एक शब्द का प्रयोग करके, शब्दों के दुहराव या अनावश्यक शब्दों को छाँट कर तथा वाक्य-विन्यास की शिथिलता को दूर करके किया जाता है।

2. विस्तृत लेख को संक्षिप्त रूप में प्रस्तुत करते समय पहले उसके मूल भाव या विचार-बिंदु तथा उसे पुष्ट करने वाले संबंधित बिंदुओं को नोट कर लेते हैं। फिर ऊपर वाली विधि की सहायता से उसे संक्षेप में व्यक्त कर देते हैं।

3. उपर्युक्त सभी स्थितियों में सार-लेखक मूल सामग्री को प्रायः कई बार गौर से पढ़ कर **अपनी भाषा में** उसका सार प्रस्तुत कर देता है। किंतु, साहित्यिक रचनाओं – उपन्यास, कहानी आदि का सार प्रस्तुत करते समय यह प्रयास किया जाता है कि लेखक की भाषा और शैली भी यथासंभव बची रहे।

11.4 अनेक शब्दों के लिए एक शब्द

अभी आपने पढ़ा कि अभिव्यक्ति में कसावट लाने के लिए अनेक शब्दों अथवा वाक्यांशों के लिए एक शब्द का प्रयोग किया जाता है। हिंदी में ऐसे असंख्य शब्द हैं, जिनका

प्रयोग करके पूरे-पूरे वाक्यांशों को एक शब्द में अभिव्यक्त किया जा सकता है। आइए, हम इनमें से कुछ पर नजर डालें :

वाक्यांश	शब्द
भले-बुरे का विचार न रखने वाला	अविवेकी
जिसे क्षमा न किया जा सके	अक्षम्य
जिसे कोई जीत न सके	अजेय
ऐसे स्थान पर रहना, जिसका कोई पता न पा सके	अज्ञातवास
बहुत बढ़ा-चढ़ा कर कही गई बात	अत्युक्ति
जिसके समान कोई दूसरा न हो	अद्‌वितीय
जो निंदा के योग्य न हो	अनिंद्‌य
जिसके बिना काम न चल सके	अनिवार्य
वह नियम, जो व्यापक नियम के विरुद्‌ध हो	अपवाद
जिसका विवाह न हुआ हो	अविवाहित
जिस पर अभियोग चलाया जाए	अभियुक्त
जिस पर विश्वास किया जा सके	विश्वसनीय
जो पहले कभी न हुआ हो	अभूतपूर्व/अपूर्व
ईश्वर में विश्वास करने वाला	आस्तिक
जड़ सहित नष्ट कर देना	उन्मूलन
जिस मिट्‌टी में प्रचुर मात्रा में पैदावार होती हो	उपजाऊ
जो काम से जी चुराता हो	कामचोर
किसी वस्तु को देखने या बात को जानने की प्रबल इच्छा	कुतूहल
उपकार को मानने वाला	कृतज्ञ
उपकार/एहसान को न मानने वाला	कृतघ्न
किसी टूटे या गिरे हुए मकान या इमारत का बचा हुआ भाग	खंडहर/भग्नावशेष
वह मनुष्य, जिसने किसी घटना को साक्षात्‌ देखा हो	गवाह/साक्षी
जो दया का पात्र हो	दयनीय
बहुत दूर तक की बात सोचने वाला	दूरदर्शी
स्थल का वह भाग, जो चारों ओर से जल से घिरा हो	द्‌वीप
किसी रास्ते से कहीं घुसने या जाने की रुकावट	नाकाबंदी
जिससे हानि या अनर्थ की आशंका न हो	निरापद
वह स्थान जहाँ कोई मनुष्य न हो	निर्जन

जिस पर कोई विवाद न हो	निर्विवाद
जिसके हाथ में कोई शस्त्र न हो	निहत्था/निःशस्त्र
साफ़ या शुद्ध किया हुआ	परिष्कृत
दूसरों के साथ भलाई का व्यवहार करने वाला	परोपकारी
जिसके आर-पार दिखाई दे सके	पारदर्शी
एक बार कही गई बात को फिर से कहना	पुनरुक्ति
पहले जैसा ही	पूर्ववत
किसी लिखी हुई चीज़ की नकल	प्रतिलिपि
किसी काम में दूसरे से आगे बढ़ जाने की होड़	प्रतिस्पद्र्धा
जिसे देखकर भय होता हो	भयानक
जो कम खर्च में काम चलाता हो	मितव्ययी
जिस पर कुछ विचार करने की आवश्यकता हो	विचारणीय
वह जो वेतन लेकर काम करता हो	वेतनभोगी
मेहनत करके पेट पालने वाला व्यक्ति	श्रमजीवी/मेहनतकश
जिसके बेढंगेपन पर लोग हँसी उड़ाएँ	हास्यास्पद
हित या भला चाहने वाला	हितैषी
किसी के रूप-रंग आदि का विवरण	हुलिया

11.5 सार-लेखन की प्रक्रिया

सार-लेखन करते समय कुछ बातों को ध्यान में रखना आवश्यक है। इन्हें नीचे दिया गया है :

सार लेखन के चरण

1. मूल बिंदु का चयन
2. संबंधित बिंदुओं का चयन
3. मूल और संबंधित बिंदुओं को क्रम देना
4. अनावश्यक सामग्री को छोड़ना
5. उपयुक्त आकार में सार लिखना

आइए, हम एक-एक करके इन पर विचार करें:

1. आप किसी भी गद्यांश को पढ़ने पर पाएँगे कि लेखक उसमें विशिष्ट रूप से किसी बात पर पाठक का ध्यान केंद्रित करना चाहता है, यही उस गद्यांश का मूल भाव होता है। गद्यांश को दो-तीन बार पढ़कर उसके मूल भाव को समझा जा सकता है।

टिप्पणी

2. इस मूल भाव को स्थापित करने के लिए उससे संबंधित कुछ बातें और लिखी जाती हैं, जिनसे मूल भाव की पुष्टि होती है। ये संबंधित बिंदु कहे जाते हैं।

3. सार-लेखक को मूल भाव और उसको पुष्ट करने वाले संबंधित बिंदुओं को पहचान कर उन्हें अपने लिए एक क्रम देना होता है।

4. अपने लेख को स्पष्ट और प्रभावपूर्ण बनाने के लिए और लेख के मूल भाव को स्पष्ट करने के लिए लेखक उसकी व्याख्या करता है तथा अनेक उदाहरण देता है। आवश्यकता पड़ने पर वह उस भाव को दोहराता भी है। मूल भाव की पहचान के साथ-साथ हमें उन सब बातों को भी पहचानना होता है, जिन्हें लेखक अपने मूल भाव को स्पष्ट करने के लिए प्रयुक्त करता है। ये हैं :

   (क) व्याख्या

   (ख) उदाहरण

   (ग) दोहराव

सार-लेखक के लिए ये बातें अनावश्यक सामग्री होती हैं। श्रेष्ठ सार-लेखन के लिए इन्हें पहचानना भी अत्यंत आवश्यक है।

आइए, एक उदाहरण से हम इस बात को समझने की कोशिश करें :

भारत का काव्य–रूपी आकाश–मंडल अगणित प्रभापूर्ण जुगनुओं से देदीप्यमान है, पर तुलसीदास का तेज, उज्ज्वलता और चमत्कार तथा उनकी प्रदीप्त कांति और कीर्ति सबसे बढ़–चढ़ कर है। वे इस आकाश–मंडल के असंख्य तारों के बीच मध्याह्नकालीन प्रचंड मार्तंड के समान प्रकाशमान हैं। किसी ने कहा भी है कि तुलसीदास हमारे ही नहीं, हमारी आगामी संतानों के लिए भी एक अनुकरणीय और अनुपम आदर्श हैं। जो स्थान अंग्रेज़ी साहित्य में शेक्सपीयर का है, उससे कहीं ऊँचा स्थान हम हिंदी साहित्य में तुलसीदास को देते हैं। और क्यों न दें, ये कोरे कवि नहीं थे, वरन् ये तो एक अद्‌वितीय चरित्र वाले कवि–सम्राट, परमोच्च श्रेणी के संत, राम के अनन्य भक्त, धर्म और नीति के पथ–प्रदर्शक, दार्शनिक, गंभीर तत्त्वों को सरल–सरस शब्दावली में समझाने वाले उपदेशक और भविष्य के गर्भ में निहित घटनाओं को बताने वाले महात्मा भी थे।

आइए, पहले हम इस अनुच्छेद के मूल भाव को समझने का प्रयास करें। हम यह कैसे करेंगे?

इस गद्‌यांश के मूल भाव को समझकर यहाँ लिखिए –

....

....

....

- आपने ठीक समझा, इस गद्यांश का मूल भाव है – **कवि तुलसीदास की महत्ता।**
- इस मूल भाव को पुष्ट करने वाले संबंधित बिंदु हैं :

  (क) भारत में असंख्य श्रेष्ठ कवि हैं।

  (ख) तुलसीदास उनमें अधिक श्रेष्ठ हैं।

  (ग) वे कोरे कवि ही नहीं, बल्कि चरित्रवान, रामभक्त, महात्मा, दार्शनिक, पथ-प्रदर्शक, सरल भाषा में गूढ़ार्थ बताने वाले उपदेशक और भविष्य-द्रष्टा भी थे।
- ऊपर इन बिंदुओं को व्यवस्थित क्रम भी दे दिया गया है।
- आइए, देखें कि उक्त गद्यांश के कौन-कौन से अंश व्याख्या, उदाहरण और दोहराव की कोटि में आते हैं:

– वे इस आकाश-मंडल के असंख्य तारों में मध्याह्नकालीन मार्तंड के समान प्रकाशमान हैं – यहाँ तक इसी बात की व्याख्या की गई है कि तुलसी का तेज काव्य-रूपी आकाश-मंडल में सर्वाधिक बढ़-चढ़ कर है।

– अपनी बात को स्पष्ट करने के लिए लेखक ने शेक्सपीयर का उदाहरण दिया है।

– वे अद्वितीय चरित्र वाले कवि-सम्राट, परमोच्च श्रेणी के महात्मा थे – इससे आगे इसी भाव की व्याख्या है और ऊपर आए भाव को दोहराया गया है।

सार-लेखन करते समय हम ऊपर की बातों को छोड़ सकते हैं।

- अपनी बात को प्रभावशाली बनाने के लिए लेखक निम्नलिखित भाषाई कौशलों का प्रयोग भी करता है :

1. मुहावरे-लोकोक्तियाँ
2. कथाएँ
3. अलंकार
4. सूक्तियाँ और उदाहरण
5. विशेष शैली

उक्त गद्यांश में 'बढ़-चढ़कर होना' मुहावरा है। 'काव्य-रूपी आकाश' में रूपक अलंकार है। 'किसी ने कहा है' वाक्य में उदाहरण है। 'अगणित प्रभापूर्ण जुगनुओं'...... वाक्य में दो विशेषण हैं और बहुत–सी संज्ञाएँ। 'क्यों न दें' विशेष शैली का प्रयोग है।

सार-लेखन करते समय हम ऐसी बातों को भी छोड़ देंगे।

अब हम उक्त गद्यांश का सार लिखने के लिए तैयार हैं, लेकिन एक बात का ध्यान रखना है। सार लिखते समय भाव तो लेखक का रखना होता है, किंतु भाषा अपनी रखनी होती है। लेखक की भाषा लेने पर उपयुक्त सार-लेखन बहुत कठिन हो जाता है।

इन सब बातों को ध्यान में रखते हुए हम उक्त गद्यांश का सार इस रूप में कर सकते हैं :

भारत में असंख्य श्रेष्ठ कवि हैं, पर तुलसीदास उनमें अत्यधिक महत्त्वपूर्ण हैं; क्योंकि वे कोरे कवि ही नहीं, बल्कि चरित्रवान, रामभक्त, महात्मा, दार्शनिक, पथप्रदर्शक, सरल भाषा में गूढ़ार्थ बताने वाले उपदेशक और भविष्यद्रष्टा भी थे।

आपने देखा, कि यह सार मूल गद्यांश का लगभग एक तिहाई है। सार लिखने के बाद यह भी अवश्य देख लेना चाहिए कि कोई महत्त्वपूर्ण बिंदु छूट तो नहीं गया और कोई अनावश्यक बात तो नहीं लिखी गई। अपनी भाषा भी चुस्त-दुरुस्त कर लेनी चाहिए।

क्रियाकलाप-11.1

1. निम्नलिखित गद्यांश को ध्यान से पढ़िए :

लोगों ने धर्म को धोखे की दुकान बना रखा है। वे उसकी आड़ में स्वार्थ सिद्ध करते हैं। बात यह है कि लोग धर्म को छोड़कर संप्रदाय के जाल में फँसे हैं। संप्रदाय बाह्य कृत्यों पर ज़ोर देते हैं। वे चिह्नों को अपनाकर धर्म के सार–तत्त्व को मसल देते हैं। धर्म मनुष्य को आत्म–साक्षात्कार कराता है, उसके हृदय के किवाड़ों को खोलता है, उसकी आत्मा को विशाल, मन को उदार तथा चरित्र को उन्नत बनाता है। संप्रदाय संकीर्णता सिखाते हैं। ये हमें जात–पाँत, रूप–रंग तथा ऊँच–नीच के भेद–भावों से ऊपर नहीं उठने देते।

अब निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

(क) इस गद्यांश का मूल भाव क्या है ? सही उत्तर पर (√) तथा गलत पर (X) का निशान लगाइए :

i) धर्म की व्याख्या करना ☐

ii) संप्रदाय की व्याख्या करना ☐

iii) धर्म और संप्रदाय का अंतर स्पष्ट करना ☐

iv) धर्म और संप्रदाय दोनों को एक बताना ☐

v) धर्म से संप्रदाय को श्रेष्ठ सिद्ध करना ☐

vi) संप्रदाय से धर्म को अच्छा बताना ☐

(ख) जिन वाक्यों में व्याख्या है, उनके आगे (√) का निशान लगाइए :

i) लोगों ने धर्म को धोखे की दुकान बना रखा है। ☐

ii) संप्रदाय बाह्य कृत्यों पर ज़ोर देते हैं और धर्म मनुष्य को आत्म-साक्षात्कार कराता है। ☐

iii) बात यह है कि लोग धर्म को छोड़कर संप्रदाय के जाल में फँस रहे हैं। ☐

iv) वे धर्म के सार-तत्त्व को मसल देते हैं। ☐

(ग) जिन वाक्यों में भाव को दोहराया गया है, उनके आगे (×) का निशान लगाइए:

i) धर्म की आड़ में लोग स्वार्थ सिद्ध करते हैं। ☐

ii) लोगों ने धर्म को धोखे की दुकान बना दिया है। ☐

iii) धर्म मनुष्य को आत्म-साक्षात्कार कराता है, उसके चरित्र को उन्नत करता है। ☐

11.6 सार-लेखन के कुछ नमूने

आइए, अब हम सार-लेखन के कुछ उदाहरण देखें :

गद्यांश-1

कहा जाता है कि मानव का आरंभिक जीवन अधिक लचीला और प्रशिक्षण के लिए विशेषकर अनुकूल होता है। यदि माता-पिता, अध्यापक और सरकार – तीनों मिलकर प्रयास करें, तो वे बालक को जैसा चाहें, वैसा वातावरण देकर उसकी जीवन-दिशा का निर्धारण कर सकते हैं। जीवन का यह समय मिट्टी के उस कच्चे घड़े के समान होता है, जिसके विकारों को मनचाहे ढंग से ठीक किया जा सकता है। लेकिन जिस तरह पके हुए घड़ों में पाए जाने वाले दोषों में सुधार करना असंभव है, उसी तरह यौवन की दहलीज़ को पार कर बीस-पच्चीस वर्ष के युवक के अंदर आमूल परिवर्तन लाना यदि असंभव नहीं, तो कठिन अवश्य है। कच्ची मिट्टी किसी भी साँचे में ढालकर किसी भी नए रूप में बदली जा सकती है, लेकिन जब वह एक बार, एक प्रकार की बन गयी, तब उसमें परिवर्तन लाने का प्रयास बहुत ही कम सफल हो पाता है। किसी लड़के या लड़की के व्यक्तित्व के निर्माण का मुख्य उत्तरदायित्व हमारे समाज, हमारी सरकार और स्वयं माता-पिता पर है तथा बहुत कुछ स्वयं लड़के या लड़की पर भी। कोई भी व्यक्ति अपने ध्येय में तभी सफल हो सकता है, जब वह अपने जीवन के आरंभिक दिनों में भी वैसा करने का प्रयास करे। इस दृष्टि से विद्याध्ययन का समय ही मानव-जीवन के लिए विशेष महत्त्व रखता है। हम सभी का और स्वयं विद्यार्थियों का भी यही कर्त्तव्य है कि सभी इस तथ्य को हमेशा अपने सामने रखें।

टिप्पणी

सार

बाल्य–काल मानव की वह अवस्था है, जिसमें उसके जीवन को मनचाहे ढंग से मोड़ा जा सकता है। युवावस्था प्राप्ति के बाद, उसकी जीवन–दिशा को बदलना असंभव नहीं तो कठिन अवश्य है। कच्ची मिट्टी से इच्छा के अनुसार आकृति बना सकते हैं, पक जाने पर उसका रूप–परिवर्तन असंभव है। बालक हो या बालिका, उसके जीवन–निर्माण का उत्तरदायित्व सरकार, समाज और माता–पिता के कंधों पर है। उसके अपने प्रयास भी महत्त्वपूर्ण हैं। प्रारंभ से उस दिशा में प्रयत्न करने पर ही सफलता मिलती है।

गद्यांश-2

हमारे देश में अशिक्षित प्रौढ़ों की संख्या करोड़ों में है। यदि हम किसी प्रकार इनके मानस-मंदिरों में शिक्षा की ज्योति जगा सकें, तो सबसे महान धर्म और सबसे पवित्र कर्त्तव्य का पालन होगा। रेलगाड़ी और बिजली की बत्ती से भी अपरिचित लोगों का होना हमारी प्रगति पर कलंक है। प्रौढ़-शिक्षा योजना इनको प्रबुद्ध नागरिक बनाने की दिशा में क्रियाशील है। इस योजना से गाँवों में एक सीमा तक आत्मनिर्भरता आएगी। हर बात के लिए शहरों की ओर ताकने की प्रवृत्ति समाप्त होगी। निरर्थक रूढ़ियों और अंधविश्वासों में फँसे हुए और अपनी गाढ़े पसीने की कमाई को नगरों की भेंट चढ़ाने वाले ये हमारे भाई प्रौढ़ शिक्षा से निश्चित ही सचेत और विवेकी बनेंगे। स्वास्थ्य, सफ़ाई, उन्नति, कृषि तथा आपसी सद्भावना के प्रति प्रौढ़ शिक्षा इनको जागरूक बना सकती है। इससे इनकी मेहनत की कमाई डॉक्टरों की जेबों में जाने से और कचहरियों में लुटने से बचेगी। सबसे बड़ा लाभ तो प्रौढ़ शिक्षा द्वारा यह होगा कि करोड़ों लोग नए ढंग से देखने, सुनने और समझने के साथ-साथ अच्छा आचरण करने में समर्थ होंगे।

हमारे करोड़ों देशवासी आज भी अशिक्षित और पिछड़े हुए हैं। सारे संसार के सामने हम इस कलंक को सिर झुकाए सह रहे हैं। भारत की उन्नति चंद नगरों को जगमग कर देने से नहीं होगी, उसकी सच्ची उन्नति का पैमाना तो यही ग्राम-समुदाय है जिसकी पढ़ने की आयु निकल चुकी, जो स्वयं पढ़ने के महत्त्व से अपरिचित हैं, जिसका तन-मन-धन नगरीय सभ्यता शताब्दियों से लूटती चली आ रही है। ऐसे अज्ञान और अशिक्षा के अंधकार में जीवन बिताने वाले करोड़ों भाइयों-बहनों के प्रति यदि हम आज सचेत और उत्तरदायी बनने की बात सोच रहे हैं, तो देश का बड़ा सौभाग्य है।

सार

अशिक्षित व्यक्ति समाज के लिए कलंक है। प्रौढ़–शिक्षा के माध्यम से व्यक्ति अपने अधिकार और कर्त्तव्यों के प्रति जागरूक होंगे, नई दृष्टि से सोचने–समझने की शक्ति भी उनमें उत्पन्न होगी। साथ ही, वे शोषण के शिकार भी नहीं बनेंगे।

भारत की उन्नति का अर्थ है –गाँवों की उन्नति। यह तभी संभव है, जब वहाँ के अधिक–से–अधिक नागरिक शिक्षित हों। प्रौढ़–शिक्षा कार्यक्रम ही इसका एकमात्र उपचार है। इसे सफल बनाना हम सबका कर्त्तव्य है। इससे देश का गौरव बढ़ेगा।

क्रियाकलाप-11.2

ऊपर दिए गए दोनों गद्यांशों और उनके सार को ध्यानपूर्वक पढ़िए। गद्यांश का सार लिखते हुए जिन चरणों का उल्लेख किया गया है, वे यहाँ नहीं है। आप इन गद्यांशों के सार-लेखन के चरणों को यहाँ लिखिएः

गद्यांश -1

मूल भाव...

संबंधित बिंदु..

क्रम..

अनावश्यक सामग्री..

(व्याख्या, दोहराव आदि)

गद्यांश -2

मूल भाव...

संबंधित बिंदु..

क्रम..

अनावश्यक सामग्री..

(व्याख्या, दोहराव आदि)

11.7 सरकारी कार्यालयों में सार-लेखन

आप जानते हैं कि सरकारी कामकाज में हर फ़ाइल में कागज़ों का ढेर बढ़ता जाता है। एक फ़ाइल में कागज़ों का निपटारा कई सीटों/डेस्कों/काउंटरों से गुज़र कर, कई अधिकारियों के हस्ताक्षरों से और कभी-कभी तो कई विभागों तक घूम कर हो पाता है। अतः समय को बचाने के लिए सहायक द्वारा पत्रों का सार तैयार कर दिया जाता है, ताकि आगे की कार्रवाई के लिए सभी पत्रों को अनिवार्य रूप से न पढ़ना पड़े। फ़ाइल पुरानी हो जाने पर प्रायः पूरी फाइल के महत्त्वपूर्ण बिंदु भी सबसे ऊपर लिख दिए जाते हैं।

सरकारी पत्रों का सार-लेखन करते समय भी मोटे तौर पर सार-लेखन के चरणों का पालन किया जाता है, साथ ही सबसे पहले क्रम-सं., अधिकारी का पद-नाम, संबधित विभाग/मंत्रालय, पत्र सं. तथा दिनांक का उल्लेख भी कर दिया जाता है।

आइए, सरकारी पत्र के सार का एक नमूना देखें :

मूल पत्र

पत्र-संख्या 520/15–20/11
मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार
(शिक्षा विभाग)

नई दिल्ली, दिनांक 20 नवंबर, 2011

प्रेषक

श्री आर.एस. मल्होत्रा
उप-निदेशक, हिंदी शिक्षण विभाग
गृह मंत्रालय (भारत सरकार)
नई दिल्ली – 110001

सेवा में,
अवर सचिव,
संघ लोक सेवा आयोग,
नई दिल्ली।

विषय : अध्यापक द्वारा 'हिंदी आलेखन तथा टिप्पण कला' का विक्रय।

महोदय,

मुझे निर्देश हुआ है कि मैं आपसे यह ज्ञात करूँ कि आपके कार्यालय में कार्य करने वाले अध्यापक श्री सेवाराम शर्मा, जिनका अभी-अभी इस केंद्र से अन्यत्र स्थानांतरण हुआ है, ने आपके यहाँ स्वयं लिखित पुस्तक 'हिंदी आलेखन तथा टिप्पण कला' की प्रतियाँ उन छात्र-पदाधिकारियों को बेची हैं, जो उस समय हिंदी शिक्षा प्राप्त कर रहे थे, जो राजकीय नियमों के विरुद्ध है। यह भी ज्ञात हुआ है कि ये प्रतियाँ सौ-सौ रुपए में बेची गई थीं। अतः इस मामले की छानबीन कर शीघ्र ही लिख भेजने की कृपा करें, जिससे अध्यापक से शीघ्र ही उत्तर माँगा जा सके।

भवदीय
ह०/–
(आर.एस. मल्होत्रा)
उप-निदेशक

सार

क्रम–संख्या 25 – उप–निदेशक, शिक्षा मंत्रालय का पत्र–संख्या 520/15-20/11 दिनांक 20.11.11

1. *उप–निदेशक ने अपने पत्र में इस हिंदी केंद्र के अध्यापक श्री सेवाराम शर्मा के संबंध में लिखा है कि उन्होंने स्वयंलिखित पुस्तक 'हिंदी आलेखन तथा टिप्पण कला' को सौ रुपए प्रति पुस्तक के मूल्य पर बेचा है।*

2. *आपने बताया है कि स्वयं लिखित पुस्तकों को छात्रों में बेचना राजकीय नियमों के विरुद्ध है।*

3. *छानबीन कर शीघ्र उत्तर देने की अपेक्षा की गई है।*

आपने क्या सीखा

- सार-लेखन में किसी दूसरे के द्वारा लिखी गई विस्तृत बात को उसका मूल भाव सुरक्षित रखते हुए एक तिहाई शब्दों में प्रस्तुत किया जाता है।

- सार-लेखन की उपयोगिता जीवन के कई क्षेत्रों में है। अखबारों में पृष्ठ पर उपलब्ध स्थान के अनुसार समाचार-संपादक समाचारों का सार-लेखन करता है। आकाशवाणी, दूरदर्शन में भी चूँकि समय की पाबंदी होती है, इसलिए सार-लेखन की ज़रूरत पड़ती है। लेखों, पुस्तकों का भी सार-लेखन किया जाता है। कार्यालयों में पत्रों या फाइलों में सिमटे पूरे पत्राचार का सार-लेखन करना पड़ता है। ऐसे और भी कई क्षेत्र हो सकते हैं।

- सार-लेखन के मुख्य चरण ये हैं :

  – मूल सामग्री को दो-तीन बार ध्यान से पढ़ना

  – मूल बिंदु का चयन

  – संबंधित बिंदुओं का चयन

  – मूल और संबंधित बिंदुओं को क्रम देना

  – अनावश्यक सामग्री को छोड़ना और एक-तिहाई आकार में सार-लेखन।

- सार-लेखन में मुहावरों-लोकोक्तियों, कथाओं, अलंकारों, उदाहरणों आदि का प्रयोग नहीं किया जाता। कोई विशेष शैली नहीं अपनाई जाती।

- सरकारी पत्रों का सार लिखते समय भी मोटे तौर पर सार-लेखन के चरणों का पालन किया जाता है। अंतर केवल इतना है कि इनमें सबसे पहले क्रम-संख्या, अधिकारी के पद-नाम, संबंधित विभाग/मंत्रालय, पत्र-संख्या तथा दिनांक का भी उल्लेख कर दिया जाता है।

योग्यता विस्तार

1. आप अख़बार तो पढ़ते ही होंगे। ज़रा उसमें से कुछ समाचारों की कटिंग निकाल लीजिए। अब सोचिए कि अगर आप समाचार-संपादक होते और इन समाचारों के लिए आपके पास एक-तिहाई स्थान ही होता तो आप उस समाचार को किस तरह लिखते और लिख भी डालिए।

2. अगर इन्हीं समाचारों के लिए दूरदर्शन में आपके पास 45-45 सेकंड का समय है, तो इन समाचारों को आप कैसे लिखेंगे? लिखकर देखिए।

3. व्याकरण की जो भी पुस्तकें उपलब्ध हो सकें, उनमें से 'अनेक शब्दों के लिए एक शब्द' वाली सूची पढ़ें और उन्हें याद करें।

पाठांत प्रश्न

निम्नलिखित अंशों का सार-लेखन एक तिहाई शब्दों में कीजिए :

1. सभ्यता और संस्कृति के विकास में धर्म और विज्ञान का हाथ रहता है। धर्म ने मनुष्य के मन में सुधार किया है और विज्ञान ने संस्कृति को जीता है। धर्म हमारे मन को बल देता है और सत्य, अहिंसा, परोपकार, संयम आदि सभी अच्छे गुण धर्म के कारण हैं। धर्म हृदय में पैदा होता है। विज्ञान प्रकृति को जीतता है जबकि धर्म सत्य, अहिंसा, परोपकार आदि से मन को जीतता है। इसीलिए यदि धर्म और विज्ञान मिलकर काम करें, तो वह दिन दूर नहीं, जब हम केवल राज्यों और देशों से अपने को जोड़ने की संकुचित प्रवृत्ति को छोड़ देंगे और समस्त संसार को अपना समझने लगेंगे।

2. आज की भारतीय शिक्षित नारी को अच्छी गृहिणी के रूप में न देख पाना पुरुषों की एकांगी दृष्टि का परिणाम है। विवाह के बाद उसकी बदली हुई मनःस्थिति तथा परिस्थितियों की कठिनाइयों पर ध्यान नहीं दिया जाता। उसकी रुचियों और भावनाओं की उपेक्षा की जाती है। पुरुष यदि अपने सुख के लिए पत्नी के सुख का ध्यान रखे, तो वह अच्छी गृहिणी हो सकती है। पत्नी और पति का कर्त्तव्य है कि वे एक दूसरे के कार्य में हाथ बटाएँ और एक-दूसरे की भावनाओं, इच्छाओं और रुचियों का ध्यान रखें। आख़िर नारी भी तो मनुष्य है। उसकी अपनी ज़रूरतें भी हैं और वह भी परिवार में, पड़ोस में तथा समाज में सम्मान पाना चाहती है। यदि नारी त्याग की मूर्ति है, तो पुरुष को बलिदानी होना चाहिए।

3. जो राष्ट्र अपनी मानसिक संपत्ति की उचित रक्षा करता है तथा उसे उन्नत बनाने के लिए प्रयत्न करता है, केवल वही राष्ट्र मान, उत्साह तथा स्वतंत्रता के साथ इस संसार में जीवित रह सकता है। राष्ट्र के बालक-बालिकाएँ राष्ट्र की मानसिक और

नैतिक संपत्ति हैं, जो प्राकृतिक संपत्ति से अधिक मूल्यवान और महत्त्वपूर्ण हैं। जो राष्ट्र इस धन की उचित रक्षा और उन्नति नहीं करता, वह उन्नति के पथ से हट कर अवनति के गड्ढे की ओर फिसलने लगता है।

4. निम्नलिखित पत्रों के कथ्य को सार के रूप में लिखिए :

(क)

सं. 102/न–3/8–03 दिनांक : 18 अगस्त, 2011

प्रेषक :

ज़िलाधिकारी

देहरादून

सेवा में,

अवर सचिव
ग्राम पंचायत विभाग
उत्तराखंड सरकार
देहरादून

विषय : ग्राम पंचायत कार्यालय के कर्मचारियों के लिए पर्वतीय भत्ते की स्वीकृति के संबंध में।

महोदय,

इस ज़िले के लिए स्वीकृत वर्ष 2010–11 के बजट में पर्वतीय भत्ते के लिए प्रावधान नहीं रखा गया है। पर्वतीय क्षेत्रों में अन्य स्थानों की अपेक्षा महँगाई अधिक है। इसी वजह से उत्तराखंड के पर्वतीय क्षेत्रों में कार्यरत समस्त सरकारी कर्मचारियों को पर्वतीय भत्ता दिया जाता है। पर्वतीय भत्ता देने का प्रावधान इस जिले पर भी लागू होता है। इस संबंध में सरकार से अनुरोध है कि वर्ष 2010–11 के बजट में ग्राम पंचायत कर्मचारियों को पर्वतीय भत्ते का भुगतान करने हेतु इस मद में रु. 15,00,000/– (रुपए पंद्रह लाख मात्र) की व्यवस्था की जाए और पिछले साल खर्च हुई राशि के लिए कार्य हो जाने के पश्चात् मंजूरी प्रदान की जाए।

टिप्पणी

12

इसे जगाओ

सपना वह नहीं होता जो नींद में आए, बल्कि वह होता है, जिसे पूरा किए बिना नींद न आए। अब आप ही तय कीजिए कि सपना पूरा करने के लिए आप नींद में पड़े रहना पसंद करेंगे या जागकर, सजग होकर, सतर्क होकर सपने को पूरा करेंगे? यह भी सोचिए कि क्या बिना जागे कोई काम पूरा हो सकेगा? यदि नहीं, तो फिर आलस्य क्यों? नींद क्यों? तंद्रा क्यों? क्यों न जागें और सजग होकर इस कविता का आनंद लें। क्या हम उन पक्षियों से कुछ सीखेंगे नहीं, जो भोर में हमारे द्वार हमें जगाने आए हैं?

उद्देश्य

इस पाठ को पढ़ने के बाद आप–

- समय पर सजग रहने का महत्त्व स्पष्ट कर सकेंगे;
- सोकर पड़े रहने और जागने वाले व्यक्तियों के व्यवहार पर विश्लेषणात्मक चिंतन कर अंतर स्पष्ट कर सकेंगे;
- किसी विपत्ति से घबराकर भागने और लक्ष्य को ध्यान में रखकर चलने में अंतर के बारे में उल्लेख सकेंगे;
- जीवन में समय-नियोजन के महत्त्व का वर्णन कर सकेंगे;
- कविता का काव्य-सौंदर्य स्पष्ट कर सकेंगे।
- कविता की भाषा पर टिप्पणी कर सकेंगे।

क्रियाकलाप-12.1

नींद में रहने को 'सोना' और नींद से उठने को 'जागना' क्यों कहते हैं? आम तौर पर 'जागने' का लक्षण है- हरकत में आना, काम में लग जाना अथवा सावधान होना। इसीलिए

टिप्पणी

इसे जगाओ

कविता और गीतों में व्यक्ति, समाज या देश को जगाने के लिए आह्वान किया जाता है, देखिए–

उठ जाग मुसाफ़िर भोर भई, अब रैन कहाँ जो सोवत है।
जो सोवत है सो खोवत है, जो जागत है सो पावत है।

इसी प्रकार के किसी गीत या कविता की पंक्तियाँ आप भी यहाँ लिखिए :

....

....

'जागना' की तरह ही 'चलना' का प्रयोग भी मनुष्य को गतिशील बने रहने, कुछ कर गुज़रने की प्रेरणा देने के लिए होता है, देखिए :

वीर तुम बढ़े चलो, धीर तुम बढ़े चलो।
सामने पहाड़ हो, सिंह की दहाड़ हो
तुम निडर डरो नहीं, तुम अमर मरो नहीं
वीर तुम बढ़े चलो, धीर तुम बढ़े चलो।

किसी दूसरे गीत या कविता की ऐसी ही पंक्तियाँ याद करके यहाँ लिखिए :

....

....

12.1 मूल पाठ

आइए एक बार इस कविता को पढ़ लें :

भई, सूरज
ज़रा इस आदमी को जगाओ
भई, पवन
ज़रा इस आदमी को हिलाओ,
यह आदमी जो सोया पड़ा है,
जो सच से बेख़बर
सपनों में खोया पड़ा है।
भई, पंछी
इसके कानों पर चिल्लाओ !
भई, सूरज ! ज़रा इस आदमी को जगाओ !

वक़्त पर जगाओ,
नहीं तो जब बेवक़्त जागेगा यह

शब्दार्थ

पवन = हवा, वायु
बेख़बर = अनजान
वक़्त = समय
बेवक़्त = असमय, अवसर बीत जाने पर

तो जो आगे निकल गए हैं
उन्हें पाने
घबरा के भागेगा यह ।

घबरा के भागना अलग है
क्षिप्र गति अलग है
क्षिप्र तो वह है
जो सही क्षण में सजग है
सूरज, इसे जगाओ,
पवन, इसे हिलाओ,
पंछी, इसके कानों पर चिल्लाओ ।

–भवानीप्रसाद मिश्र

टिप्पणी

शब्दार्थ
क्षिप्र = तेज़
सजग = जागा हुआ, चौकन्ना, सावधान

12.2 आइए समझें

12.2.1 अंश-1

आइए, अब हम कविता के अर्थ पर विचार करें। इसे समझने से पहले कविता की प्रथम दस पंक्तियों को पुनः ध्यानपूर्वक पढ़ लेते हैं।

इन पंक्तियों में सूरज, हवा और पक्षी– इन तीनों को संबोधित किया गया है। संबोधन का तरीका बड़ा ही आत्मीय है, जैसे हम घर के भीतर ही परिवार के किसी सदस्य से बात कर रहे हों–भई, सूरज, भई, पवन, भई, पंछी।

आप जानते हैं कि सूरज ज़िंदगी देने वाला है, वह हमें प्रकाश तो देता ही है, ऊष्मा भी देता है, जो इस संसार को प्राणवान बनाए रखने के लिए अनिवार्य है। सूरज के निकलने पर ही मनुष्य और पशु-पक्षी जागते हैं और रोज़मर्रा के कामों में जुट जाते हैं।

जीवन को सुचारु रूप से चलाने के लिए प्रकृति का दूसरा अति आवश्यक तत्त्व है–हवा। हवा लगातार कभी तेज़, कभी हल्की और कभी बहुत हल्की चलती ही रहती है। हवा हमेशा गतिशील रहती है, सक्रिय रहती है। प्रकृति के जीवंत होने का एक और महत्त्वपूर्ण लक्षण है–पक्षियों का कलरव यानी पक्षियों का चहचहाना और उनकी अन्य आकर्षक गतिविधियाँ।

अब ज़रा बताइए कि अगर कोई आदमी सोया हुआ है, तो उसे जगाने के लिए आप क्या करेंगे? आप उसे हिलाएँगे, उसे आवाज़ देंगे, उसके कानों पर चिल्लाएँगे।

इस कविता में एक सोए हुए आदमी का चित्र है। मगर यह जो सोया हुआ आदमी है वह नींद में सोया हुआ नहीं है; बल्कि जैसे सोने वाला आदमी आस-पास के वातावरण से बेख़बर रहता है, उसी तरह यह आदमी इस अर्थ में सोया हुआ है कि उसके इर्द-गिर्द

की दुनिया में क्या कुछ घटित हो रहा है, इससे वह अनजान है। यह आदमी वक़्त को ठीक से नहीं पहचान रहा। दुनिया और समाज का आज का सच क्या है उसे पता नहीं है। वह इस सबसे बेख़बर सपनों में खोया हुआ है। क्या आप सपने देखने और सपनों में खोए रहने में अंतर बता सकते हैं? जी हाँ! सपने देखना और सपनों में खोए रहना-ये दो अलग-अलग स्थितियाँ हैं। सपने देखना आदमी की ज़िंदगी का महत्त्वपूर्ण अंग है। हम भविष्य के लिए सपने बुनते भी हैं और सपनों को साकार करने के लिए प्रयत्न भी करते हैं। लेकिन, सपनों में खोए रहने का अर्थ है- केवल कल्पना में डूबे रहना, जीवन में निष्क्रिय होना। जो आदमी सपनों में खोया रहता है, वह सपने के सच को पाने के लिए प्रयास करने का समय खो देता है और तंद्रा टूटने पर ख़ुद को वहीं का वहीं खड़ा पाता है।

अब आप समझ गए होंगे कि कवि ने किस ख़ूबसूरती से आम शब्दों का प्रयोग किया है। ऐसी सावधानी से कि बात तो विशेष है, किंतु शब्द आसान। तो आइए, कविता की इन पंक्तियों पर फिर से विचार करें।

भई, सूरज
ज़रा इस आदमी को जगाओ
भई, पवन
ज़रा इस आदमी को हिलाओ,
यह आदमी जो सोया पड़ा है,
जो सच से बेख़बर
सपनों में खोया पड़ा है।
भई, पंछी
इसके कानों पर चिल्लाओ!
भई, सूरज ! ज़रा इस आदमी
को जगाओ !

चित्र 12.1

हमारे आसपास ऐसे बहुत से लोग हैं, जो समय के सच को न पहचान कर, उसके साथ न चलते हुए अपने हवाई किले बनाते रहते हैं। दरअसल, वे लोग आँखें खुली होते हुए भी सोए हुए व्यक्ति के समान हैं। इस तरह की अनेक कहानियाँ आपने बचपन में पढ़ी या सुनी होंगी। शेख़चिल्ली की कहानी तो आपने अवश्य सुनी होगी, जिसमें शेख़चिल्ली सपनों में खोया रहता है और अपना सर्वस्व गँवा देता है। इसी प्रकार आपने टेलीविज़न पर 'मुंगेरीलाल के हसीन सपने' सीरियल देखा होगा, जिसमें मुख्य पात्र सपनों में ही खोया रहता है, उसे कुछ हासिल नहीं होता। कवि सूरज से ऐसे व्यक्ति को जगाने के लिए कहता है, उसके भीतर क्रियाशीलता की गरमी भर देने के लिए कहता है। वह हवा से कहता

है कि वह उसे हिलाकर उसकी नींद को भंग कर दे, उसके अंदर हरकत पैदा कर दे, ताकि वह उठे और समय के साथ कदम मिलाकर चल पड़े। कवि पक्षी से कहता है कि वह उस व्यक्ति के कानों पर चिल्लाए, ताकि उसका ध्यान अपने सपनों की दुनिया से निकलकर जीवन की वास्तविक दुनिया की ओर आए। वह वर्तमान के सच को पहचान कर अपनी सही भूमिका सही समय पर तय कर सके और लक्ष्य की प्राप्ति में जुट जाए।

टिप्पणी:

1. कवि ने सूरज, हवा और पक्षी-प्रकृति के इन तीन उपादानों को मुनष्य की तरह आत्मीय भाव से संबोधित करते हुए उनसे आग्रह किया है कि वे समय के साथ न चल पाने वाले आदमी का सच्चाई से परिचय कराएँ और उसके अंदर जागृति पैदा करें। यह प्रयोग बहुत सुंदर है। ये तीनों मानव-जीवन के आरंभ से ही उसके सबसे अधिक निकट के साथी हैं।
2. जगाना, हिलाना और चिल्लाना सोए हुए व्यक्ति को जगाने के तरीके हैं तथा इनके लिए क्रमशः सूर्य, वायु और पक्षी से अनुरोध करना, कविता के सौंदर्य को बढ़ाता है।
3. सूर्य, पवन, पक्षी प्रकृति के अंग हैं और मनुष्य के साथी भी। प्रकृति सोए हुए मनुष्य को जगाती है। जीवन में सोए हुए प्राणी को जागने की प्रेरणा देने में कवि प्रकृति को आधार बनाता है।

क्रियाकलाप-12.2

आपने पक्षी शब्द पढ़ा, जिसे पंछी भी कहा गया है। क्या आप जानते हैं कि पक्षी उसे कहते जिसके पक्ष (पर) हों? पक्षी को 'खग' भी कहा जाता है। 'ख' का अर्थ होता है–आकाश, उसमें जो गमन करता है वह 'खग' कहलाता है। पक्षी को 'विहग' भी कहा जाता है, यह भी इसीलिए कि वह आसमान में गमन करता है। एक ही अर्थ का बोध कराने वाले शब्दों को समानार्थी या पर्यायवाची शब्द कहते हैं।

अपने इस अंश के बारे में पढ़ते हुए हवा के कुछ पर्यायवाचियों पर जरूर ध्यान दिया होगा। जी हाँ, टिप्पणी-2 में वायु और टिप्पणी-3 में पवन। हवा के अन्य पर्यायवाची हैं- अनिल, समीर, मारूत, वात आदि।

इसी तरह सूरज के भी अनेक समानार्थी शब्द हैं- दिनकर, भास्कर, सूर्य, मार्तंड, दिवाकर आदि।

- निम्नलिखित सूचियों को ध्यान से देखिए और सूची 'एक' के शब्दों का सूची 'दो' के समानार्थी शब्दों से मिलान कीजिए:

- **सूची-एक** — **सूची-दो**

आग	पुष्प, सुमन, कुसुम
फूल	जल, वारि, अंबु
कपड़ा	पट, वस्त्र, चीर
बेटा	द्रुम, विटप, वृक्ष
पानी	पावक, अग्नि
आकाश	सुत, तनय, पुत्र
पेड़	नभ, गगन, व्योम

- इन शब्दों के और भी पर्यायवाची ढूँढिए और यहाँ लिखिए :

पुष्प –	जल –
वस्त्र –	वृक्ष –
अग्नि –	पुत्र –
आकाश –	

निम्नलिखित शब्दों में से पर्यायवाची-युग्म तलाश कीजिए:

विष्णु, शिव, स्त्री, हरि, मार्ग, नारी, पथ, जलज, भवन, गंगा, महेश, अरविंद, इमारत, लता, पृथ्वी, वसुधा, बेल।

12.2.2 अंश - 2

आइए कविता की आगे की पाँच पंक्तियाँ फिर से पढ़ लेते हैं और कवि क्या कहना चाहता है, समझने का प्रयास करते हैं।

वक्त पर जगाओ,
नहीं तो जब बेवक़्त जागेगा यह
तो जो आगे निकल गए हैं
उन्हें पाने
घबरा के भागेगा यह !

आप यह तो जान ही चुके हैं कि इस कविता में कवि ने सूर्य, पवन और पंछी का आह्वान किया है कि वे सच से बेख़बर सोए और सपनों की दुनिया में खोए हुए आदमी को जगाएँ। इसी क्रम में कवि आगे कहता है कि इसे केवल जगाओ भर नहीं बल्कि समय पर जगाओ। अगर यह समय पर नहीं, जागा, तो इसके साथ के लोग आगे निकल जाएंगे अर्थात् दूसरे लोग तरक्की कर जाएँगे और यह पिछड़ जाएगा। समय बीत जाने पर जब इसे पिछड़ने का बोध होगा, तो यह उनकी बराबरी करने के लिए घबरा कर भागेगा यानी हड़बड़ाहट में कुछ करने का प्रयास करेगा और कुछ कर नहीं पाएगा। परिणाम यह होगा कि उसे क्रोध आएगा, मानसिक

चित्र 12.2

तनाव रहेगा, वह खुद से लड़ता रहेगा और परिणामस्वरूप वह जीवन में असफल होता चला जाएगा।

आप अच्छी तरह जानते हैं कि जो लोग किन्हीं कारणों से जब किसी काम को टालते रहते हैं, तो ऐन वक़्त पर उन्हें घबराहट होने लगती है। आप परीक्षा को ही लीजिए। कुछ विद्यार्थी साल भर मन लगाकर पढ़ते रहते हैं, थोड़ी-थोड़ी मेहनत करते रहते हैं, उनका पूरा पाठ्यक्रम तैयार हो जाता है। ऐसे विद्यार्थी परीक्षा के दिनों में भी सहज और शांत रहते हैं और उनका परीक्षाफल भी अच्छा रहता है। इसके विपरीत कुछ विद्यार्थी ऐसे होते हैं, जो साल भर के समय को बहुत अधिक मानते हुए कहीं और व्यस्त रहते हैं। वे तब जागते हैं, जब परीक्षा के दिन नज़दीक आ जाते हैं। घबराहट में वे अपने आगे के समय का भी ठीक से उपयोग नहीं कर पाते। परीक्षा के समय तक उनको धुक-धुकी लगी रहती है, स्मरण शक्ति भी ठीक से काम नहीं करती। अक्सर इसका परिणाम यह होता है कि उन्हें जो थोड़ा-बहुत आता है, उसे भी वे ठीक से नहीं लिख पाते।

पाठगत प्रश्न-12.1

सर्वाधिक उपयुक्त विकल्प चुनकर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

1. 'भई, सूरज' में 'भई' संबोधन किस प्रकार का है-

   (क) औपचारिक (ख) आदरसूचक

   (ग) श्रद्धासूचक (घ) आत्मीय

2. इस कविता में किसे जगाने के लिए कहा गया है-

   (क) जो थककर सो गया है (ग) जिसे सपने देखना अच्छा लगता है

   (ग) जो बैठा-बैठा ऊँघता है (घ) जो सच से बेख़बर है

3. निम्नलिखित में से सही जोड़ों पर (√) तथा गलत पर (X) का निशान लगाइए-

   (क) पंछी - जगाना ( ) (ख) हवा - हिलाना ( )

   (ग) हवा - चिल्लाना ( ) (घ) सूरज - जगाना ( )

4. कवि ने सही वक्त पर जगाने की बात क्यों कही है,

   (क) दिन का समय गुज़र जाएगा

   (ख) फिर उसके जागने का फायदा नहीं होगा

   (ग) वह दुनिया के मुकाबले में पिछड़ जाएगा

   (घ) वह आलसी बन जाएगा

टिप्पणी

12.2.3 अंश–3

आइए, कविता की शेष पंक्तियों को पुन: ध्यानपूर्वक पढ़ते हैं और समझने का प्रयास करते हैं।

घबरा के भागना अलग है
क्षिप्र गति अलग है
क्षिप्र तो वह है
जो सही क्षण में सजग है

सूरज, इसे जगाओ,
पवन, इसे हिलाओ,
पंछी, इसके कानों पर चिल्लाओ !

आप पढ़ चुके हैं कि कवि ने सच से बेख़बर सोए हुए आदमी को समय पर जगाने का अनुरोध सूर्य, पवन और पक्षी से किया है। यह भी सही है कि सही समय पर अगर आदमी सचेत न हो तो वह हड़बड़ाने लगता है। कवि इसी बात को और अधिक स्पष्ट करते हुए कहता है कि घबरा कर भागने और क्षिप्र गति अर्थात् तेज़ गति से चलने में फ़र्क होता है। तेज़ गति का अर्थ तो सही अवसर पर सचेत होना है, सही मौके पर न चूकना है। जो सही अवसर का भरपूर उपयोग करते हैं, वे ही प्रगति करते हैं और जो सही अवसर पर चूक जाते हैं, वे लाख उठा- पटक और माथापच्ची करने पर भी प्रगति नहीं कर पाते। सही क्षण में सजग व्यक्ति ही लक्ष्य प्राप्त करता है। इसलिए कवि एक बार फिर सूरज, पवन और पक्षी से अनुरोध करता है कि वे समय के सच को न पहचान सकने वाले व्यक्ति को सच से परिचित कराकर उसके अंदर जागृति पैदा कर उसे क्रियाशील बनाएँ, यानी उसे सक्रिय करें।

आपने एक दिवसीय क्रिकेट मैच देखे होंगे। जब कोई टीम निर्धारित लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए शुरू से ही रन औसत पर अपनी पकड़ बना कर चलती है, तो प्राय: कुछ ओवरों या बॉलों के शेष रहते हुए ही विजय प्राप्त कर लेती है। दूसरी ओर शुरू में बहुत धीमे खेलने वाली टीम पर जब रन औसत का दबाव बढ़ने लगता है, तो उसके कई अच्छे खिलाड़ी भी खराब शॉट खेलने के कारण कैच आउट या फिर रन आउट हो जाते हैं। ऐसे में अक्सर वह टीम मैच में पराजय की ओर बढ़ जाती है।

टिप्पणी

1. घबराकर भागने और क्षिप्र गति में अंतर बताकर कवि ने समय और अवसर पर सचेत रहने के महत्त्व को बड़ी सरलता से स्पष्ट कर दिया है।
2. बातचीत के लहजे में तथा कम और आसान शब्दों में गंभीर बात कहने की कला बहुत समर्थ कवियों में ही पाई जाती है। इस कविता में यह कला देखी जा सकती है।

क्रियाकलाप-12.3

आपने यह पाठ पढ़ लिया है। इसमें निरंतर प्रयत्नशील रहने पर सफलता पाने वाले दो उदाहरण- क्रिकेट मैच और परीक्षा की तैयारी के दिए गए हैं। आपके अपने या आस-पास के जीवन में ऐसे बहुत से उदाहरण होंगे। उनमें से किसी एक के विषय में यहाँ लिखिए:

....

....

....

12.3 भाव-सौंदर्य

आपने 'इसे जगाओ' कविता को पढ़ा, समझा और उसका आनंद लिया। इस कविता में भवानीप्रसाद मिश्र ने प्रकृति के उन उपादानों से व्यक्ति के अंदर जागृति का भाव पैदा करने का आग्रह किया है, जो सृष्टि के आरंभ से ही स्वयं क्रियाशील हैं। सूरज रोज़ उदित और अस्त होता है। वह संसार को जीवन-ऊर्जा प्रदान करता है और प्रकाश देता है। जीवन की समस्त हलचल का वह स्रोत है। हवा निरंतर चलती रहती है। वह भी संसार को जीवन प्रदान करती है। यह तो आप जानते ही हैं कि पक्षियों का कलरव प्रात:काल से ही जीवन के गीत सुनाता है। इस तरह सोए हुए या समय की गति न पहचानने वाले आदमी को जगाने और क्रियाशील होने का संदेश देने के लिए ये उचित माध्यम हैं। कवि ने यहाँ अपनी कल्पना और जीवन-जगत् के गहरे अनुभव का प्रयोग किया है। ज़रा सोचिए, मात्र इतना कह देने भर में वह सौंदर्य कहाँ है कि 'सोते मत रहो, जागो' या 'सपनों की दुनिया से निकलो और कर्म में लगो!' क्या इस कविता को पढ़कर आपने भी ऐसा ही महसूस किया है?

कवि ने प्रगति का अर्थ भी बहुत सुंदर ढंग से व्यक्त किया है। प्रगति हड़बड़ाहट में भागने से नहीं होती, बल्कि विचारपूर्वक स्थितियों को समझकर, उनका आकलन करते हुए सही दिशा में प्रयास करने से होती है। इसके लिए आदमी को निरंतर सजग और सक्रिय रहने की आवश्यकता है।

भवानीप्रसाद मिश्र ने इसी तरह आम जन-जीवन की रोज़मर्रा की ज़िंदगी की अनेकानेक साधारण-सी लगने वाली बातों को अपनी कविता का विषय बनाया है, वे सहज मानवीय संवेदनाओं के कवि हैं।

12.4 भाषा-सौंदर्य

'इसे जगाओ' कविता को पढ़ते हुए आपने अनुभव किया होगा कि इसमें आम बोलचाल की भाषा का प्रयोग किया गया है। अन्य कविताओं से तुलना करने पर हम पाते हैं कि भवानीप्रसाद मिश्र कविता में चमत्कार पैदा करने के लिए अप्रचलित या संस्कृतनिष्ठ शब्दों का प्रयोग नहीं करते। प्रचलित शब्दों और मुहावरों के प्रयोग से ही वे बड़ी से बड़ी बात कह देते हैं। उनकी एक कविता में कवि को संबोधित करते हुए कहा गया है :

जिस तरह मैं बोलता हूँ उस तरह तू लिख
और उसके बाद भी मुझसे बड़ा तू दिख।

टिप्पणी

इसे जगाओ

जिस तरह आम आदमी बोलता है, उस तरह की भाषा में उच्च कोटि की कविता करना अत्यंत कठिन काम है। भवानीप्रसाद मिश्र ने इस चुनौती को स्वीकार किया और वे निरंतर आम बोलचाल की भाषा में ही जनता की संवेदनाओं और भावों को व्यक्त करते रहे। वे भाषा की सादगी के समर्थ कवि हैं।

आपने इस कविता में संबोधन पर ध्यान दिया है ?

'भई, सूरज इसे जगाओ'– लगता है जैसे कवि अपने किसी बहुत ही आत्मीय से बात कर रहा हो। 'भई' के साथ संबोधन हिंदी बोलने वाली जनता की आम शैली है। जैसे– 'भई, खाना हो गया क्या? 'भई, तुम भी तो कर सकते थे?'

कवि ने सूरज के पर्यायों दिनकर, मार्तंड, सविता आदि का प्रयोग न करके 'सूरज' ही लिखा है, जो आम बोलचाल की भाषा है। इसी प्रकार पंछी आदि भी आम बोलचाल के शब्द हैं।

कविता में बातचीत की शैली अपनाई गई है। कवि मानो सूरज, हवा और पंछी से, जो उसके नितांत अपने हैं, अपने ही साथी को जगाने का अनुरोध कर रहा हो और फ़ौरन जगाने का कारण बताकर उन्हें तर्कसंगत ढंग से समझा रहा हो।

पाठगत प्रश्न-12.2

सर्वाधिक उपयुक्त विकल्प चुनकर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

1. कविता में 'क्षिप्र' किसे बताया गया है :
   - (क) जो घबरा कर भागता है ☐
   - (ख) जो तेज़ रफ़्तार से चलता है ☐
   - (ग) जो अवसर को नहीं चूकता ☐
   - (घ) जो क्षण भर को सजग रहता है ☐

2. सही कथन के आगे (√) और गलत कथन के आगे (×) चिह्न अंकित कीजिए :
   - (क) घबरा कर भागने और क्षिप्र गति में अंतर है। ☐
   - (ख) जो सही क्षण में सजग है, उसे घबराहट होती है। ☐
   - (ग) जो सही क्षण में सजग है, वही क्षिप्र है। ☐
   - (घ) घबरा कर भागने वाला व्यक्ति वास्तव में क्षिप्र नहीं होता। ☐

3. कवि ने जगाने का अनुरोध सूर्य, पवन और पक्षी से किया है, क्योंकि वे
   - (क) प्राकृतिक हैं ☐ (ख) क्रियाशील हैं ☐
   - (ग) प्रगतिशील हैं ☐ (घ) अनुभवी हैं ☐

टिप्पणी

4. 'इसे जगाओ' कविता में कवि ने कैसे शब्दों का प्रयोग किया है :

   (क) संस्कृतनिष्ठ ☐ (ख) चमत्कारिक ☐

   (ग) आलंकारिक ☐ (घ) बोलचाल के ☐

5. इस कविता में कवि ने किस शैली का प्रयोग किया है :

   (क) वार्तालाप ☐ (ख) समास ☐

   (ग) विवरणात्मक ☐ (घ) आत्मकथात्मक ☐

आपने क्या सीखा

1. इस कविता में आदमी को जागरूक बने रहने का संदेश दिया गया है।
2. सपनों में खोए रहने वाले आदमी को वास्तविकता से परिचित कराने की आवश्यकता बताई गई है।
3. दिशाहीन भटकने की अपेक्षा सोच-समझ कर प्रयास करने को महत्त्व दिया गया है।
4. इन विचारों को व्यक्त करने के लिए प्रकृति के उपादानों का इस्तेमाल किया गया है।
5. भवानीप्रसाद मिश्र सहज मानवीय संवेदना के कवि हैं।
6. उन्होंने अपनी कविता में आम बोलचाल की भाषा का प्रयोग किया है।
7. कविता साधारण शब्दों और आम भाषा में गंभीर विचारों को व्यक्त करने में समर्थ है।
8. कविता में बातचीत की शैली का सुंदर प्रयोग हुआ है।

योग्यता विस्तार

कवि परिचय

भवानीप्रसाद मिश्र का जन्म 1914 ई. में हुआ था। इन्होंने 'कल्पना' नामक पत्रिका का संपादन किया और आकाशवाणी में सेवारत रहे। ये गांधी जी के अहिंसावादी विचारों से बहुत प्रभावित थे। नौकरी से अवकाश पाने के बाद इन्होंने गांधी-साहित्य के संपादक मंडल के सदस्य के रूप में भी काम किया। सन् 1985 ई. में इनका निधन हो गया।

भवानीप्रसाद मिश्र का जीवन सादगीपूर्ण था। उन्होंने कविता में भी सहज, सरल और बोलचाल की भाषा का प्रयोग किया है। आम बोलचाल की भाषा में बातचीत के अंदाज में कविता करने के लिए वे 'नयी कविता' के विशिष्ट कवि के रूप में जाने जाते हैं। लयात्मकता उनकी कविता की प्रमुख विशेषता है।

गीत फरोश, 'बुनी हुई रस्सी', 'त्रिकाल संध्या', 'चकित है दुख', खुशबू के शिलालेख' और 'कालजयी' इनकी प्रमुख काव्य पुस्तकें हैं।

भवानी प्रसाद मिश्र की अन्य कविताएँ – सतपुड़ा के जंगल, गीत फरोश पढ़िए।

पाठांत प्रश्न

1. इस कविता में कवि ने किस-किस से सोए हुए आदमी को जगाने का आग्रह किया है? और क्यों?
2. 'बेवक्त जागने' का परिणाम क्या होता है?
3. 'जो सच से बेख़बर, सपनों में खोया पड़ा है' पंक्ति का अर्थ स्पष्ट कीजिए।
4. निम्नलिखित पंक्तियों का आशय स्पष्ट कीजिए :

   क्षिप्र तो वह है
   जो सही क्षण में सजग है।

5. इस कविता का मूल संदेश अपने शब्दों में लिखिए।
6. भवानीप्रसाद मिश्र की भाषा पर टिप्पणी लिखिए।
7. 'इसे जगाओ' में क्या कवि यह कहना चाहता है कि आदमी सपने न देखे? तर्क सहित उत्तर दीजिए।
8. 'इसे जगाओ' कविता में कवि सोए हुए को जगाने का अनुरोध क्यों करता है ?
9. निम्नलिखित कविता को पढ़िए और पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

   देखता कोई नहीं है
   निर्बलों की यह निशानी
   लोचनों के बीच आँसू
   औ पगों के बीच छाले
   उठ, समय से तू मोरचा ले!

   (क) कवि का 'लोचनों के बीच आँसू' से क्या तात्पर्य है?

   (ख) 'पगों के बीच छाले' के पीछे कवि की क्या भावना है?

   (ग) इस कविता का आशय क्या है?

   (घ) इस कविता में कवि किसकी ओर संकेत करता है?

(i) रोने वालों की

(ii) घायल व्यक्तियों की

(iii) समाज के कमजोर लोगों की

(iv) स्वयं की

उत्तरमाला

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

12.1 1. (घ), 2. (घ), 3. क (×), ख (√), ग (×), घ (√), 4. (ग)

12.2 1. (ग), 2. (क) (√), (ख) (×), (ग) (√), (घ) (√)

3. (ख), 4. (घ), 5. (क)

13

सुखी राजकुमार

मानव-सभ्यता के विकास-क्रम में मनुष्य ने अपने लिए सुख-सुविधाओं का विस्तार किया और समाज में रहना भी सीखा। बुद्धि के विकास ने सिर्फ़ उसके लिए सुख की ही सृष्टि नहीं की, वरन् उसकी भावनात्मक दुनिया को भी प्रभावित किया, उसे अन्य प्राणि-जगत से अधिक संवेदनशील बनाया। सभ्यता और समाज के विकास के साथ यह संवेदनशीलता दूसरों के सुख में सुखी और दूसरों के दुख में दुखी होने की क्षमता में विकसित होती गई और मनुष्यता के सर्वोच्च गुणों में गिनी जाने लगी।

अपने लिए जीने और दूसरों के लिए सोचने-करने की इन प्रवृत्तियों के बीच के द्वंद्व से मनुष्य-समाज लगातार घिरा रहता है। इन्हीं प्रवृत्तियों का सुंदर चित्रण करने वाली है अंग्रेज़ी लेखक ऑस्कर वाइल्ड की यह कहानी–सुखी राजकुमार।

उद्देश्य

इस पाठ को पढ़ने के बाद आप–

- मानव-मन पर सीमित और व्यापक अनुभव के प्रभाव का अंतर स्पष्ट कर सकेंगे;
- अपरिचय और परिचय की स्थितियों में मानव-व्यवहार की तुलना कर सकेंगे;
- अच्छी संगत से सद्गुणों का विकास होता है, इस विचार पर टिप्पणी लिख सकेंगे;
- धनी और निर्धन वर्ग की जीवन-स्थितियों की तुलना कर सकेंगे;
- राजनीतिक प्रतिनिधियों की स्वार्थपरता और असंवेदनशीलता का उल्लेख कर सकेंगे;
- रूप और कर्म के सौंदर्य पर अपने विचारों की अभिव्यक्ति कर सकेंगे;
- कहानी के मार्मिक स्थलों की सराहना और कहानी की भाषा-शैली पर टिप्पणी कर सकेंगे।

टिप्पणी

13.1 मूल पाठ

आइए, अब हम ऑस्कर वाइल्ड की कहानी 'सुखी राजकुमार' का ध्यानपूर्वक पाठ करें और उसका आनंद लें। आपकी सुविधा के लिए कठिन शब्दों के अर्थ हाशिए पर दिए जा रहे हैं।

सुखी राजकुमार

नगर में उत्तर की ओर एक ऊँचे से स्तंभ पर सुखी राजकुमार की प्रतिमा स्थापित थी। मूर्ति पर हल्का स्वर्ण-पत्र मढ़ा था, आँखों के स्थान पर दो चमकदार नीलम थे और तलवार की मूठ में एक बड़ा-सा लाल जड़ा था।

लोग उस प्रतिमा के सौंदर्य की बड़ी प्रशंसा करते थे।

दिन भर उड़ने के बाद एक गौरेया रात को नगर के समीप पहुँची।

"मैं ठहरूँ कहाँ?" उसने सोचा, "मैं समझ रही थी कि शहर मेरा स्वागत करेगा!"

इतने में उसने स्तंभासीन मूर्ति देखी।

"आहा! मैं यहीं ठहरूँगी! यह बहुत अच्छा स्थान है। यहाँ काफ़ी साफ़ हवा आ रही है।"

और वह मूर्ति के पैरों के पास उतर पड़ी।

उसने चारों ओर देखकर कहा- "मेरा शयनागार सोने का है" और वह पंखों में मुँह छिपाकर सोने जा रही थी कि एक पानी की बड़ी-सी बूँद टप से उस पर गिर पड़ी।

"ताज्जुब है," उसने कहा, "आकाश में एक भी बादल नहीं है- तारे साफ़ चमक रह हैं- फिर भी पानी बरस रहा है!"

इतने में दूसरी बूँद गिरी।

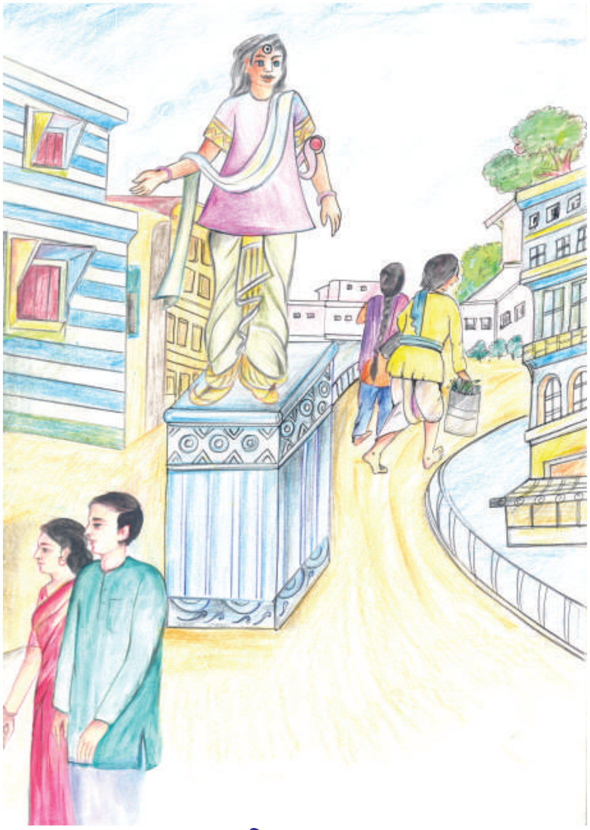

चित्र 13.1

शब्दार्थ

स्तंभ- खंभा

प्रतिमा- मूर्ति

स्वर्ण-पत्र- सोने के पत्तर

नीलम- नीले रंग का कीमती पत्थर

लाल- लाल रंग का कीमती पत्थर

स्तंभासीन- खंभे पर आसीन

शयनागर- सोने का स्थान (कक्ष)

ताज्जुब- आश्चर्य

इस प्रतिमा से फ़ायदा क्या, अगर यह वर्षा भी नहीं रोक सकती,'' उसने कहा, ''चलो कोई दूसरा आश्रय-स्थान ढूँढें।''

उसने पंख खोले और तीसरी बूँद गिर पड़ी।

उसने ऊपर देखा। राजकुमार की आँखें डबडबा रही थीं और उसके सुनहले गाल पर आँसू ढुलक रहे थे। उसका चेहरा इतना भोला था कि गौरेया को दया आ गई।

''तुम कौन हो?'' उसने पूछा।

''मैं सुखी राजकुमार हूँ।''

''फिर तुम रो क्यों रहे हो?'' पंख फड़फड़ाकर गौरैया ने कहा, ''तुमने तो मुझे बिलकुल भिगो दिया है!''

''जब मैं जीवित था''- मूर्ति ने उत्तर दिया- ''और मेरे वक्ष में मनुष्य का हृदय धड़कता था, तब मेरा आँसुओं से परिचय नहीं हुआ था। मैं आनंद-महल में रहता था, जहाँ दुख को प्रवेश करने की इज़ाजत नहीं थी। दिन में मैं अपने उद्यान में विलास करता था और रात को नृत्य में लगा रहता था। मेरे उद्यान के चारों ओर एक प्राचीर थी, किंतु मेरे चारों ओर इतना सौंदर्य था कि मैंने कभी बाहर देखने का प्रयत्न नहीं किया। मैं जीता रहा और मर गया। आज जब मैं मर गया हूँ, तो उन्होंने मुझे इतने ऊँचे पर स्थापित कर दिया है कि मैं संसार की सारी कुरूपता और दुख-दर्द देख सकता हूँ। मेरे ही नगर में इतना दुख है कि यद्यपि मेरा हृदय जस्ते का है, मगर फिर भी फटा जा रहा है।''

''अच्छा, तो राजकुमार ठोस सोने का नहीं है!'' गौरैया ने सोचा, मगर वह इतनी शिष्ट थी कि उसने यह बात ज़ोर से नहीं कही।

''दूर, बहुत दूर'', मूर्ति अपनी सुनहली आवाज़ में कहती रही, ''एक गंदी-सी गली में टूटा-फूटा मकान है, उसकी एक खिड़की खुली है.... उसके अंदर एक चौकी पर एक स्त्री बैठी है। उसका चेहरा दुबला और थका हुआ है और उसके हाथ सुई के घावों से क्षत-विक्षत हैं। वह रानी की सर्वसुंदरी अंगरक्षिका के नृत्य-वसन पर फूल काढ़ रही है। एक कोने में उसका बच्चा बीमार पड़ा है। उसे ज्वर है और वह फल माँग रहा है। गौरैया, नन्हीं गौरैया, क्या तुम मेरी तलवार की मूठ में जगमगाता हुआ लाल निकालकर उसे नहीं दे आओगी... मेरे पैर तो इस स्तंभ में जड़े हैं और मैं चल नहीं सकता।''

''दक्षिण देश में लोग मेरी प्रतीक्षा कर रहे हैं। वे नील नदी पर उड़ रहे होंगे और कमल के फूलों से वार्तालाप करने के बाद राजाओं के मकबरों में सोते होंगे। राजा रंगीन ताबूत में सो रहा होगा। वह पीले वस्त्र में लिपटा होगा और मसालों से उसका अंग-लेपन किया गया होगा। उसकी गर्दन में पुखराज का हार होगा और उसके हाथ सूखी पत्तियों की तरह होंगे!'' गौरैया ने कहा।

डबडबाना- आँखों में आँसू उमड़ आना

सुनहले- सोने की आभा वाले

वक्ष-छाती, सीना

इज़ाजत- अनुमति

उद्यान- बाग, उपवन

विलास- क्रीड़ा, सुख का उपभोग, आनंद करना

प्राचीर-परकोटा, दीवार

यद्यपि- हालाँकि

जस्ता- ख़ाकी रंग की एक धातु, जिसमें ताँबा मिलाकर पीतल बनता है

क्षत-विक्षत- लहूलुहान, घायल

सर्व सुंदरी- सबसे अधिक सुंदर स्त्री

अंगरक्षिका- शरीर की रक्षा के लिए नियुक्त स्त्री, बॉडीगार्ड

नृत्य-वसन- नाचते समय पहने जाने वाली पोशाक

ज्वर-बुखार

नील नदी- पश्चिम एशिया की एक नदी, जो दुनिया में सबसे बड़ी है

मकबरा- महत्त्वपूर्ण व्यक्तियों (प्राय: राजाओं) के दफ़नाए जाने के स्थान पर बनी इमारत

ताबूत- शव को रखने वाला बक्स

अंग-लेपन- शरीर पर मलना

पुखराज- सुनहरे (पीले) रंग का कीमती पत्थर

''गौरैया! गौरैया! सिर्फ़ आज रात को तुम मेरा काम कर दो। बच्चा प्यासा है– उदास भी है!''

''उँह! मुझे बच्चों से ज़रा भी स्नेह नहीं है!'' गौरैया ने कहा, ''पिछले वसंत में दो बच्चे रोज़ आकर मुझे ढेले मारा करते थे। यद्यपि मुझे चोट नहीं लगी, मैं बहुत तेज़ उड़ती हूँ, किंतु यह बड़ी ही अपमानजनक बात है।''

मगर, राजकुमार इतना उदास था कि गौरैया को दया आ गई।

''यहाँ बहुत सर्दी पड़ने लगी, लेकिन कोई बात नहीं, मैं आज तुम्हारा काम कर दूँगी।''

''धन्यवाद, नन्हीं गौरैया!'' राजकुमार ने कहा।

गौरैया ने राजकुमार की तलवार की मूठ से लाल निकाला और उसे अपनी चोंच में दबाकर उड़ चली। उड़ते वक्त वह गिरजाघर के शिखर के पास से गुज़री, जहाँ श्वेत संगमरमर से देवदूतों की मूर्तियाँ बनी थीं। वह उच्च प्रासाद के समीप से गुज़री और उसने नाच की आवाज़ सुनी। छज्जे पर एक सुंदर किशोरी अपने प्रेमी के कंधे पर हाथ रक्खे हुए आई।

''आह! तारे कितने सुंदर हैं, प्रेम की शक्ति भी कितनी अद्भुत है,'' उसने भावोन्मेष में कहा, ''मैं समझती हूँ कि अगले नृत्य के लिए मेरे वस्त्र तैयार हो जाएँगे। मैंने उन पर फूल कढ़वाने की आज्ञा दी है। मगर ये लोग देर कितनी लगाते हैं!''

वह नदी पर से गुज़री और जहाज़ के शिखरों पर लटकते हुए आकाशदीप देखे। अंत में वह उस टूटे-फूटे मकान के समीप पहुँची और भीतर झाँका। बच्चा बुखार के कारण बिस्तर पर तड़प रहा था। वह फुदककर भीतर पहुँची और उसने उस स्त्री के पास की मेज़ पर लाल रख दिया। माँ थककर सो गई थी। वह बच्चे के सिरहाने उड़कर पंखों से हवा करने लगी।

चित्र 13.2

''आह, कैसा अच्छा लग रहा है!'' बच्चे ने कहा, ''अब शायद मैं अच्छा हो रहा हूँ!'' और वह सो गया।

वसंत– सारी ऋतुओं में वातावरण की दृष्टि से सबसे उपयुक्त (प्रियकर) ऋतु,

श्वेत-सफेद, संगमरमर– एक प्रकार का अत्यधिक चिकना पत्थर

प्रासाद-महल

छज्जा– बालकनी

भावोन्मेष– भाव का उदय (यहाँ भाव के आवेग में)

शिखर– सबसे ऊँचा हिस्सा

आकाशदीप– बाँस के सिरे पर बाँधकर जलाया जाने वाला दीया या लालटेन

मिस्र– उत्तर-पूर्वी अफ़्रीका का एक देश, जिसकी गिनती विश्व की प्राचीनतम सभ्यताओं में होती है

गिरजाघर– ईसाई धर्म का प्रार्थना-स्थल

टिप्पणी

गौरैया उड़कर राजकुमार के पास वापस आ गई और उसने उसे सब हाल बताकर कहा– ''आश्चर्य है, यद्यपि इतनी ठंडक है, लेकिन मुझे ज़रा भी ठंड नहीं लग रही है!''

''इसलिए कि तुमने आज एक भलाई की है,'' राजकुमार ने कहा।

गौरैया सोचने लगी और सो गई। सोचने में उसे सदा झपकी आ जाती थी।

जब दिन उगा, तो वह नदी में गई और नहाई।

''अच्छा, आज रात को मैं मिस्र देश जाऊँगी!'' उसने सोचा। वह आज उमंग से भरी थी। उसने शहर की सभी इमारतें घूम डालीं और वह गिरजाघर के शिखर पर बहुत देर तक बैठी रही।

जब चाँद उगा तो वह राजकुमार के पास गई और बोली– ''तुम्हें मिस्र में किसी से कुछ कहलाना तो नहीं है– मैं अभी-अभी जाने के लिए तैयार हूँ।''

''गौरैया! गौरैया! नन्ही गौरैया! क्या तुम आज रात को और नहीं ठहर सकतीं,'' मूर्ति ने कहा, ''शहर में, दूर एक सीली हुई कोठरी में मुझे एक तरुण कलाकार दीख रहा है। वह अपनी कागज़ों से लदी मेज़ पर झुका है और उसके बगल में एक पात्र में सूखे हुए फूल लगे हैं। उसके बाल भूरे और सुनहले हैं, उसके होंठ अनार के फूल की तरह लाल हैं, उसकी आँखें बड़ी सपनीली हैं, वह रंगमंच के लिए नया नाटक लिख रहा है, मगर ठंड के कारण उसकी अँगुलियाँ नहीं चल रही हैं। अँगीठी में एक भी कोयला नहीं है और भूख से उसकी आँखों के सपने टूट रहे हैं।''

''मिस्र में सब मेरी प्रतीक्षा कर रहे होंगे। कल मेरे सब साथी दूसरे प्रपात तक उड़ जाएँगे, जहाँ नरकुल की झाड़ियों में दरियाई घोड़े सोते हैं और संगमूसा की शिला पर मेम्नान का देवता बैठा है। रात भर वह तारों की ओर देखता है। भोर का तारा जब डूबने लगता है, तो वह खुशी से चीख़ पड़ता है और फिर चुप हो जाता है। दोपहर के समय वहाँ शेर आते हैं, जिनकी आँखें हरे रत्नों की तरह चमकती हैं और जिनकी गरज में प्रपात का स्वर डूब जाता है।''

मेम्नान– ग्रीक मिथक में इथोपिया का राजा। ट्रोजन राज परिवार के टिथोनस और इओस (उषा) का पुत्र। अपने चाचा प्रियम (Priam) की ओर से ग्रीक के विरुद्ध बहादुरी से लड़ा और एथाइलस के हाथों मारा गया। इओस के आँसुओं को देखकर ज्यूस ने उसे अमरत्व प्रदान किया। उसके साथी, जो पक्षियों में बदल गये, प्रतिवर्ष उसकी समाधि पर लड़ने और विलाप करने के लिए आते थे। मिस्र में उसका नाम थेबे के निकट अमेनहोतेप तृतीय की पत्थर की विशाल मूर्तियों के साथ जुड़ा है। उषाकालीन सूर्यकिरणें जब इन मूर्तियों का स्पर्श करती हैं, तो इनसे वीणा की झंकार सी ध्वनि निकलती है– इस ध्वनि के बारे में ऐसा विश्वास किया जाता है कि यह अपनी माँ की शुभकामनाओं के प्रति मेम्नान का प्रत्युत्तर है।

''लेकिन, केवल आज रात के लिए भी तुम न रुकोगी?''

सीली– सीलन भरी

तरुण– नौजवान

पात्र– जिसमें कुछ रखा जा सके (बर्तन, गमला फूलदान वगैरह)

सपनीली– सपने देखने वाली (आँखें)

रंगमंच– नाटक खेलने का स्थान

प्रपात– झरना

नरकुल– पतली लंबी पत्तियों तथा पतले गाँठदार डँठल वाला एक पौधा, जो कलम, चटाई आदि बनाने के काम आता है

संगमूसा– एक तरह का काला पत्थर

भोर– सुबह

गरज–गर्जना

टिप्पणी

ईंधन– ऊर्जा प्राप्त करने के लिए जलाया जाने वाला पदार्थ (कोयला, लकड़ी, डीजल, पेट्रोल आदि)

आँकना– मूल्य निर्धारित करना/तय करना

बंदरगाह– पानी के जहाज़ों के आगमन और प्रस्थान का स्थान

मस्तूल– जहाज़ के बीच में गाड़ा हुआ लंबा लट्ठा, जिसमें पाल बाँधा जाता है

कुंज– लताओं आदि से घिरा या ढँका हुआ स्थान

सौदा– ख़रीदे-बेचे जाने वाला सामान

''अच्छा! आज मैं और रुक जाऊँगी, क्या दूसरा लाल उसे दे आऊँ?'' गौरैया ने पूछा।

''अफ़सोस! मेरे पास अब कोई दूसरा लाल नहीं है। मेरे पास मेरी आँखें हैं, जो नीलम से बनी हैं, जो हज़ारों वर्ष पहले भारत से लाए गये थे। एक निकालकर उसे दे आओ। वह उसे बेचकर ईंधन और खाना ख़रीद लेगा।''

''प्यारे राजकुमार'', गौरैया ने सिसकते हुए कहा, ''यह तो मुझसे नहीं होगा और वह फूट-फूट कर रोने लगी।

''गौरैया! प्यारी गौरैया!'' राजकुमार बोला, ''तुम्हें मेरी बात माननी चाहिए।''

गौरैया ने उसकी आँख का नीलम निकाल लिया और कोठरी की ओर उड़ चली। एक छेद से वह अंदर घुस गई। कलाकार सिर झुकाए बैठा था, अतः उसने उसके पंखों की आवाज़ नहीं सुनी। जब उसने सिर उठाया, तो देखा कि मुर्झाए हुए फूलों पर बड़ा-सा नीलम रखा था।

''ओह, मालूम होता है, मेरा मोल लोग आँक रहे हैं। यह शायद किसी बड़े भारी प्रशंसक ने भेजा है। अब मैं अपना नाटक समाप्त कर लूँगा।''

गौरैया बंदरगाह की ओर जाकर एक जहाज़ के मस्तूल पर बैठ गई। वहाँ कुछ मज़दूर अपने सीने पर रस्सियाँ बाँधे नाँवें खींच रहे थे।

जब चाँद उगा, तो वह राजकुमार के पास आकर बोली– ''मैं तुमसे विदा माँगने आई हूँ!''

''गौरैया, प्यारी गौरैया! क्या आज रात को और नहीं ठहरोगी?''

''देखो, अब जाड़ा पड़ने लगा है। मिस्र में हरे-भरे खजूर के कुंजों पर गर्म धूप छाई होगी। मेरे साथी एक पुराने मंदिर में घोंसला बना रहे होंगे। प्यारे राजकुमार, मैं जा रही हूँ, मगर मैं तुम्हें भूल नहीं सकती। अगले वसंत में जब मैं लौटूँगी, तो तुम्हारे लिए एक लाल और एक नीलम लेती आऊँगी।''

''नीचे गली में'', राजकुमार ने कहा, ''एक लड़की खड़ी है। उसका सौदा नाली में गिर गया है और वह रो रही है। यदि वह खाली हाथ घर जाएगी, तो उसका पिता उसे मारेगा। उसके पैरों में जूता नहीं है, उसका सिर नंगा है। मेरी दूसरी आँख निकालकर उसे दे दो, तो वह मार से बच जाएगी।''

''कहो तो मैं आज रात भर और रुक जाऊँ, मगर मैं तुम्हारी आँख नहीं निकालूँगी। फिर तो तुम बिलकुल ही अंधे हो जाओगे!''

''गौरैया! प्यारी गौरैया!'' राजकुमार ने कहा– ''मैं जो कुछ कहता हूँ, उसे करो।''

उसने उसकी आँख निकाल ली और रोती हुई लड़की के हाथ में वह नीलम रख दिया। ''वाह कैसा रंगीन काँच है!'' लड़की ने कहा और हँसकर घर की ओर भागी।

गौरैया वापस आई।

''अब तुम अंधे हो'', उसने कहा, ''इसलिए मैं हमेशा तुम्हारे साथ रहूँगी।''

''नहीं-नहीं, गौरैया, अब तुम मिस्र देश को जाओ।''

''मैं तुम्हें नहीं छोड़ूँगी,'' गौरैया ने कहा और उसके पैरों पर सिर रखकर सो गई।

अगले दिन वह राजकुमार के कंधों पर बैठकर भाँति-भाँति की कहानियाँ सुनाने लगी- लाल बगुलों की कहानी, जो नील नदी के किनारे कतार में खड़े रहते हैं और मौका पाते ही झपटकर सुनहली मछलियाँ चोंच में दबाकर उड़ जाते हैं; स्फिन्क्स की मूर्ति की कहानी, जो रेगिस्तान में रहती है और सर्वज्ञ है; चंद्रमा की घाटियों के राजा की कहानी, जो बड़े-से संगमरमर की पूजा करता है और उस हरे साँप की कहानी, जो डालियों में लिपटा रहता है और बीस पुरोहित उसे दूध पिलाते हैं।

''प्यारी गौरैया, तुमने मुझे इतनी आश्चर्यजनक वस्तुएँ बताईं, लेकिन इनसे भी ज़्यादा आश्चर्यजनक है- मनुष्य का दुख-दर्द, दुख से बड़ा कोई रहस्य नहीं! जाओ, मेरे नगर को देखकर बताओ कि वहाँ क्या हो रहा है?''

गौरैया शहर पर उड़ने लगी। अमीर अपने महलों में रंगरलियाँ मना रहे थे और गरीब हाथ फैलाए भीख माँग रहे थे। वह अँधेरी गलियों पर से उड़ी और उसने देखा कि भूखे बच्चे ज़र्द चेहरे लटकाए हुए सूनी निगाहों से देख रहे हैं। एक पुलिया के नीचे दो बच्चे सिकुड़े हुए बैठे हैं- ''भागो यहाँ से!'' चौकीदार बोला और वे बारिश में भीगते हुए चल दिए।

वह वापस आ गई और उसने राजकुमार को यह सब हाल बताया।

''मैं सोने से मढ़ा हूँ'', राजकुमार बोला, ''इसमें से स्वर्ण-पत्र निकालकर मेरी निर्धन प्रजा में बाँट दो।''

गौरैया एक के बाद एक स्वर्ण-पत्र निकालकर बाँटती रही। अंत में राजकुमार बिल्कुल मटमैला और मनहूस दीखने लगा, लेकिन बच्चों के चेहरे पर गुलाबी किरणें झलक आईं

चित्र 13.3

टिप्पणी

कतार-पंक्ति, लाइन

पुरोहित- पूजा-अर्चना कराने वाला व्यक्ति

रंगरलियाँ-मज़े के लिए किए जाने वाले क्रियाकलाप

ज़र्द-पीला

मटमैला- मिट्टी के रंग का (यहाँ भद्दा)

मनहूस- उदासी भरा, अशुभ

टिप्पणी

पाला- हिम, तुषार, बर्फ़

फ़र- रोएँ, रोएँदार खाल

मेयर- नगर-प्रमुख

भट्ठी- बड़ा चूल्हा या अँगीठी

कॉरपोरेशन- निगम

देवदूत- फ़रिश्ता

मूल्यवान- कीमती

विहार करना- आनंद के लिए सैर करना, क्रीड़ा करना

और वे गलियों में खेलने लगे।

उसके बाद ओले गिरे और फिर पाला पड़ने लगा। सड़कें चमकदार बर्फ़ से ढँककर चाँदी की मालूम होने लगीं। छज्जों से बड़े-बड़े बर्फ़ के टुकड़े लटकने लगे। सभी फ़र के ओवरकोट पहनकर निकलने लगे।

बेचारी नन्हीं गौरैया ठंड से अकड़ने लगी; लेकिन वह उसे इतना प्यार करती थी कि उसे वह छोड़ नहीं सकती थी। अंत में उसे लगा कि अब उसके दिन करीब है। अब उसके परों में केवल इतनी शक्ति शेष थी कि वह राजकुमार के कंधों तक एक बार उड़ सकती थी।

"अलविदा राजकुमार!" वह बोली, "क्या तुम मुझे अपना हाथ चूमने दोगे?"

"ओहो!" बड़ी ख़ुशी हुई सुनकर कि आख़िर तुम अब मिस्र देश जाने के लिए तैयार हो।"

"मिस्र नहीं, मैं मृत्यु के देश जाने की तैयारी कर रही हूँ।"

और उसने राजकुमार को चूमा और मरकर उसके पैरों के पास गिर पड़ी।

इसी समय मूर्ति के अंदर से कुछ आवाज़ हुई, जैसे कुछ टूट गया हो। वास्तव में, मूर्ति के अंदर का जस्ते का दिल चटख़ गया था। इस समय पाला गज़ब का था।

दूसरे दिन मेयर अन्य सदस्यों के साथ टहल रहा था। जब वे वहाँ से गुज़रे, तो मेयर ने उसकी ओर देखा और कहा- "कितनी भद्दी लग रही है यह प्रतिमा!"

"हाँ, कितनी भद्दी है," सदस्यों ने कहा, जो हमेशा मेयर की हाँ-में-हाँ मिलाते थे।

"उसकी तलवार से लाल गिर गया है, उसकी आँखें गायब हैं और उसका सोना उतर गया है। यह तो बिलकुल पत्थर का भिखारी मालूम देता है!"

"बिल्कुल! बिल्कुल पत्थर का भिखारी!" सदस्यों ने कहा।

"लो, उसके पैर पर एक चिड़िया भी मरी पड़ी है," मेयर ने कहा, "कल घोषणा करवा दो कि यहाँ चिड़ियाँ न मरने पाएँ।"

सदस्यों ने फ़ौरन नोट कर लिया। और, उसके बाद उन्होंने मूर्ति हटा ली।

"चूँकि अब वह सुंदर नहीं, अत: उसका कोई उपयोग नहीं हैं," नगर के एक सुप्रसिद्ध कलाविज्ञ ने कहा।

उसके बाद उन्होंने मूर्ति भट्टी में गलाई और कॉरपोरेशन की बैठक में यह प्रश्न उठा कि इसका क्या किया जाए!

''यहाँ पर एक दूसरी मूर्ति होनी चाहिए,'' मेयर ने कहा, ''मैं समझता हूँ, मेरी मूर्ति ठीक रहेगी।''

''नहीं, मैं समझता हूँ मेरी!'' हरेक सदस्य ने कहा, और वे बराबर झगड़ते रहे।

लोहा गलाने के कारखाने में मिस्त्री ने कहा– ''कैसा अचरज है, यह टूटा हुआ जस्ते का दिल भट्‌टी में पिघल ही नहीं रहा है।''

उसने एक कूड़ेखाने में उसे फेंक दिया। वहीं गौरैया की लाश भी पड़ी थी।

ईश्वर ने अपने देवदूत से कहा– ''मेरे लिए नगर की दो सबसे मूल्यवान वस्तुएँ ले आओ।''

देवदूत वह जस्ते का दिल और गौरैया की लाश ले आया।

''ठीक, बिलकुल ठीक!'' ईश्वर ने कहा– ''मेरे स्वर्ग की डालों पर यह गौरैया सदा चहकेगी और मेरे उपवन में राजकुमार सदा विहार करेगा।''

13.2 आइए समझें

आप इस पुस्तक में दो और कहानियाँ पढ़ रहे हैं। कहानी को समझने के आधारभूत तत्त्वों से आप परिचित हैं। आइए, अब हम इस कहानी को समझने का प्रयास करें।

13.2.1 कथावस्तु

यह कहानी अन्य दोनों कहानियों– 'बहादुर' और 'शतरंज के खिलाड़ी' से आकार में छोटी है। इसे पढ़ने में आपको 20 से 25 मिनट का समय लगा होगा। इस तौर पर यह कहानी कथानक के लिए आदर्श माने जाने वाली समय-सीमा का निर्वाह करती है। कथानक भी बहुत संक्षिप्त है।

'शतरंज के खिलाड़ी' कहानी में प्रेमचंद ने शुरू में एक 'भूमिका' द्वारा अपनी बात की प्रस्तावना की है। यहाँ ऑस्कर वाइल्ड ने कहानी के आख़िर में अपनी बात को स्पष्ट करने के लिए जैसे 'उपसंहार' प्रस्तुत किया है। नगर के मेयर और उसके साथियों के माध्यम से उन्होंने व्यवस्था के कर्णधारों की असंवेदनशीलता और स्वार्थपरता को उजागर किया है, जो अपनी-अपनी मूर्ति स्थापित करवाने के फेर में प्रतिमा को गलवाने और गौरैया की लाश को कूड़े में फिंकवाने का आदेश देते हैं। निर्धन और दुखी जनता के दर्द से हर क्षण पिघलते रहने वाला 'सुखी राजकुमार' का जस्ते का दिल भट्‌टी की तेज़ आग में भी नहीं पिघलता। ईश्वर के आदेश पर उसके देवदूत नगर की सबसे मूल्यवान वस्तुओं के रूप में राजकुमार के दिल और गौरैया के शव को ले जाते हैं। ईश्वर इन दोनों से बहुत प्रसन्न है और राजकुमार व गौरैया को अपना आशीर्वाद प्रदान करता है।

सुखी राजकुमार

आइए देखें कि इस कहानी की कथावस्तु क्या है? यानी लेखक हमसे क्या कहना चाहता है? क्या बाँटना चाहता है? वह हमारे समाने किन बिंदुओं को उद्घाटित करना चाहता है?

सबसे पहले लेखक हमें बताता है कि नगर में एक सुखी राजकुमार की प्रतिमा थी। यह प्रतिमा सोने से मढ़ी थी तथा इसमें नीलम और लाल जड़े थे। लोग इसके सौंदर्य की बड़ी प्रशंसा करते थे। तीन वाक्यों में यह वर्णन है, जिससे संकेत मिलता है कि प्रतिमा के सौंदर्य की चर्चा का आधार संभवत: सोना, नीलम और लाल थे। अंत में इसकी पुष्टि भी होती है, जब इन चीज़ों के न रहने पर मेयर, सभासद और सुप्रसिद्ध कलाविज्ञ उस प्रतिमा की निंदा करते हैं। यानी, लेखक कहना चाहता है कि लोग सौंदर्य की तलाश प्राय: उसकी कीमत और उसके वैभव से करते हैं।

इसी क्रम में एक गौरैया का भी ज़िक्र आता है, जो उस नगर के ऊपर से उड़कर मिस्र देश की ओर जा रही है, लेकिन रात्रि हो जाने के कारण आश्रय की तलाश में उस मूर्ति तक पहुँच जाती है।

लेखक हमें बताता है कि यह प्रतिमा वास्तव में एक सुखी राजकुमार की थी। एक ऐसे राजकुमार की, जो आनंद-महल में रहता था और जिसका कभी भी दुख से सामना नहीं हुआ था, क्योंकि उसके चारों ओर केवल ऐश्वर्य और वैभव था। इसी ऐश्वर्य और वैभव, इन्हीं सुख-सुविधाओं में डूबा वह अपने में मग्न रहता था और इसके परे की वास्तविकताओं को जानना भी नहीं चाहता था। लेखक ने राजकुमार के बयान में संकेतों से काम लिया है। पहला संकेत 'वक्ष में मनुष्य का हृदय धड़कने' में है, यानी जब तक वह मनुष्य था- भोग कर सकता था, तब तक वह आत्मकेंद्रित रहा, उसने दुख के बारे में सोचा तक नहीं; लेकिन अब, जबकि वह मूर्ति बन गया, तो उसे दूसरों के दुख दीखने लगे। एकाएक यह बात उलटी मालूम होती है, पर लेखक इस विडंबना के ज़रिए मनुष्य के स्वभाव पर टिप्पणी कर रहा है कि मनुष्य अपनी मौज-मस्ती में डूबा रहता है और मानवीय गुणों-करुणा, सहानुभूति, समानुभूति - से दूर रहता है। दूसरा संकेत 'उद्यान के चारों ओर की प्राचीर' में है। यह प्राचीर यानी दीवार दरअसल ईंट-पत्थर की नहीं है, बल्कि मनुष्य की अपनी खींची गई दीवार है, जो सुख-सुविधाओं को न खोने की इच्छा की है। तीसरा संकेत 'चारों ओर इतना सौंदर्य' में है; यहाँ भी रूप, सुख, वैभव, ऐश्वर्य को ही सौंदर्य माना गया है। इसकी चर्चा पहले की जा चुकी है।

राजकुमार के अनुभव-क्षेत्र का जब विस्तार होता है, तो उसकी अपने आप में डूबे रहने की प्रवृत्ति भी टूटती है। उसकी संवेदना का भी विस्तार होता है। मन में करुणा की भावना जागती है और वह दूसरों के दुख से दुखी होने लगता है। उनका दुख उसे अपना दुख लगने लगता है। इस भाव-स्थिति को हम समानुभूति कहते हैं। राजकुमार चूँकि अब प्रतिमा के रूप में है और वह चल-फिर नहीं सकता, इसलिए वह गौरैया से आग्रह करता है कि वह उसकी भावना को कार्यरूप दे। इस क्रम में वह एक स्त्री, जिसका बच्चा बीमार है; एक तरुण कलाकार, भूख से जिसके सपने टूट रहे हैं और एक लड़की, जिसके पैसे नाली में गिर गए हैं तथा जिसे पिता की डाँट का डर है- का ज़िक्र करता है और उन्हें अपनी तलवार की मूठ का लाल और आँखों के नीलम दे आने का आग्रह करता है। लेखक इनमें से

एक या दो बातों से काम चला सकता था, मगर उसने तीनों बातों को कथानक में स्थान दिया। जानते हैं क्यों? क्योंकि लेखक हम तक कुछ और भी पहुँचाना चाहता है। वह 'कुछ' यह है कि जब तक हम किसी व्यक्ति या विषय के बारे में कुछ जानते नहीं है, हम उसमें रुचि नहीं लेते, लेकिन जब हम धीरे-धीरे उसके बारे में जानने लगते हैं, तो हमारे भीतर उस व्यक्ति या काम के प्रति लगाव पैदा होता है, जो बाद में निष्ठा और समर्पण में बदल जाता है। गौरैया जब नगर में आती है, तो मूर्ति को अपना आश्रय-स्थल बनाती है, क्योंकि वह सोने की है और वहाँ साफ़ हवा आती है। मगर, जैसे ही पानी की बूँद उस पर गिरती है, तो वह उस स्थान को छोड़ने का फ़ैसला करती है। फिर राजकुमार की आँखों में आँसू और उसके चेहरे का भोलापन उसमें थोड़ी दया पैदा करते हैं। और फिर जैसे-जैसे वह राजकुमार के गुणों- दया, करुणा, प्रेम, समानुभूति, त्याग, बलिदान आदि- से परिचित होती जाती है, वह दक्षिण देश जाने के अपने कार्यक्रम को छोड़कर उसी के सान्निध्य में (साथ) रहने का निर्णय लेती है।

यह तो हुई व्यक्ति की बात, अब देखें कि राजकुमार के कामों में उसकी दिलचस्पी का क्या हाल है?

जब राजकुमार मेहनत से फूल काढ़ने वाली स्त्री और बीमार बच्चे के लिए लाल पहुँचाने का आग्रह करता है, तो गौरैया पहले तो अपने कार्यक्रम का और फिर बच्चों के प्रति अपनी चिढ़ का ज़िक्र करके इस काम में अपनी अरुचि प्रकट करती है। मगर, राजकुमार के प्रति विकसित हुए लगाव के कारण वह तैयार हो जाती है। दूसरी बार, जब राजकुमार तरुण कलाकार को नीलम दे आने का आग्रह करता है, तो गौरैया फिर मिस्र जाने की अपनी उमंग और उल्लास में डूब जाती है, पर काम करने के लिए तैयार हो जाती है। मगर, राजकुमार की आँख निकालने की सोचकर वह विह्वल हो उठती है। इस बार काम न करने का बहाना नहीं है, बल्कि राजकुमार के प्रति उसके प्रेम का प्रगाढ़ होना है, जो राजकुमार की त्याग की भावना के कारण है। फिर भी, राजकुमार का ही ख़्याल करके वह यह काम कर डालती है। तीसरी बार, गौरैया दूसरी आँख निकालने से इन्कार करती है, पर अपने कार्यक्रम को रद्द कर देने को तैयार है। यह राजकुमार के प्रति उसके प्रेम का प्रमाण है। राजकुमार के पुनः आग्रह पर वह दूसरा नीलम उस लड़की को दे तो आती है, पर राजकुमार के अंधे हो जाने के कारण मिस्र जाने का कार्यक्रम त्याग देती है। राजकुमार द्वारा चले जाने का आग्रह करने पर भी वह नहीं जाती। उसका प्रेम यहाँ समर्पण में बदल जाता है। वह उसका मन लगाने के लिए उसे तरह-तरह की कहानियाँ सुनाती है, नगर का हाल-चाल बताती है और मूर्ति से स्वर्ण-पत्र ले जाकर निर्धन प्रजा में बाँटती रहती है। यहीं आकर वह स्वयं भी समानुभूति का अनुभव करने लगती है। यानी, अब व्यक्ति के साथ-साथ उसका विषय से भी जुड़ाव हो जाता है, उसमें कर्म के प्रति निष्ठा जाग जाती है। यहाँ तक कि ठंड बढ़ती जाती है, पर गौरैया नगर को छोड़कर नहीं जाती और अपने प्राण त्याग देती है। इस तरह परिचय बढ़ते जाने के साथ-साथ क्रमशः गौरैया के भीतर उन्हीं सद्गुणों का विकास होता जाता है, जो राजकुमार के भीतर विकसित हुए थे।

'सुखी राजकुमार' के कथानक को बुनते समय लेखक ने बड़े ही कौशल से समाज के धनी और निर्धन वर्ग के जीवन और व्यवहार की विषमताओं को भी उभारा है। पहला संदर्भ तो राजकुमार के मनुष्य-जीवन और प्रतिमा के रूप में स्थापित होने का है, जिसके विषय में आप जान चुके हैं। दूसरा संदर्भ राजकुमारी की सर्वसुंदरी अंगरक्षिका का है। कहानीकार उसकी पोशाक पर फूल काढ़ने वाली स्त्री के श्रम (सुई से हाथ का क्षत-विक्षत होना, चेहरा दुबला और थका होना, थककर सो जाना) और उसकी जीवन-स्थितियों (बच्चे का बुखार से तड़पना, बच्चे के लिए फल न ला सकना) का ज़िक्र करता है, तो गौरैया को उसके घर तक पहुँचाने से पहले उस ऊँचे महल के छज्जे के ऊपर से भी गुज़ारता है, जहाँ वह सुंदरी अंगरक्षिका प्रेमी के कंधे पर हाथ रखे प्रेम की बात करती है और श्रम करने वाली स्त्री के बारे में नाराज़गी के स्वर में कहती है- ''मगर ये लोग कितनी देर लगाते हैं।'' इसी तरह बड़े-बड़े जहाज़ों के साथ-साथ मज़दूरों के सीने पर रस्सियाँ बाँधकर नाव खींचने का ज़िक्र, अमीरों के महलों में रंगरलियाँ मनाने के साथ-साथ गरीबों के हाथ फैलाकर भीख माँगने का ज़िक्र भी इसी वैषम्य को उजागर करने के लिए है।

इस कहानी में लेखक ने सौंदर्य पर कई दृष्टियों का उद्घाटन किया है। आरंभ में हम राजकुमार की सौंदर्य-दृष्टि और उसकी प्रतिमा को सुंदर मानने वालों के बारे में पढ़ चुके हैं। राजकुमार सुख-सुविधाओं, ऐश्वर्य-विलास आदि में सुंदरता तलाशता है, तो लोग उसकी प्रतिमा के रूप और कीमत में। सौंदर्य का एक और रूप है, वह है- रहस्य और रोमांच में, अद्भुत होने में। गौरैया मिस्र देश के संदर्भ में अपनी जिन कल्पनाओं की चर्चा करती है, उनमें ऐश्वर्य के साथ-साथ अद्भुत और रहस्यमयी चीज़ों का उल्लेख है। इसी तरह गौरैया राजकुमार को लाल बगुले, स्फ़िन्क्स की मूर्ति, चंद्रमा की घाटियों के राजा, हरे साँप आदि अनोखे प्राणियों और वस्तुओं की कहानियाँ सुनाती है। इसके विपरीत लेखक राजकुमार की प्रतिमा से कहलवाता है- ''प्यारी गौरैया, तुमने मुझे इतनी आश्चर्यजनक वस्तुएँ बताईं, लेकिन इनसे भी ज़्यादा आश्चर्यजनक है- मनुष्य का दुख-दर्द। दुख से बड़ा कोई रहस्य नहीं।'' इस तरह लेखक सौंदर्य के 'अद्भुत' या 'सामान्य' में होने की दृष्टियों का उल्लेख करता है और पूरी कहानी पढ़ने से पता लगता है कि उसका झुकाव 'सामान्य' में सौंदर्य देखने की ओर है।

कहानी के अंत में मेयर और उसके सभासद तथा नगर का कलाविज्ञ- सभी की दृष्टि 'रूप' में सौंदर्य को तलाशने की है। उनको अब सुखी राजकुमार 'पत्थर का भिखारी' मालूम होता है, क्योंकि उसके स्वर्ण-पत्र (त्वचा की कांति), नीलम (आँखें) और लाल (शानोशौकत) अब गायब हो चुके हैं और वह मटमैला और मनहूस दिखाई देने लगा है। लेकिन, ईश्वर की दृष्टि में वह अब सुंदर है, क्योंकि उसका सौंदर्य उसके कर्मों में निहित है। तो, इस तरह सौंदर्य रूप में निहित है या कर्म में- यह प्रश्न भी लेखक हमारे सामने रखता है। इसकी पुष्टि राजकुमार के प्रति गौरैया के व्यवहार से भी होती है। जैसे-जैसे राजकुमार की प्रतिमा कुरूपता की तरफ़ बढ़ती है, गौरैया का उसके प्रति प्रेम, निष्ठा और समर्पण बढ़ता जाता है; क्योंकि उसके रूप-सौंदर्य के कम होने के पीछे उसके

कर्म-सौंदर्य का विकसित होना है, जिसमें वह भी भागीदार है। गौरैया की यह भागीदारी भी ईश्वर द्वारा सराही जाती है और वह कूड़े के ढेर से उठकर स्वर्ग की डालियों की हकदार बनती है।

मेयर और सभासदों के ज़रिए लेखक ने आज की व्यवस्था और राजनेताओं की असंवेदनशीलता और स्वार्थपरता पर तीखा व्यंग्य किया है। जिस तरह 'अंधेर नगरी' में नगर देखने में सुंदर लगता है, पर वहाँ व्यवस्था सुचारु नहीं है। राजा विलास में डूबा है और मंत्री आदि उसकी चापलूसी में। उसी तरह, यहाँ मेयर भी अविवेकी और स्वार्थतत्पर है और सभासद 'हाँ-हाँ' करने वाले। वहाँ राजा भी वैकुंठ जाना चाहता है और उसके दरबारी भी, यहाँ मेयर अपनी मूर्ति लगवाना चाहता है और उसके सभासद भी। हम अपने परिवेश में भी ऐसी स्थितियाँ देखते हैं और समझते हैं कि ये हमें आगे चलकर किसी भयानक संकट की ओर ले जा सकती हैं, सोचिए और अपने विचार यहाँ लिखिए:

पाठगत प्रश्न-13.1

सर्वाधिक उपयुक्त विकल्प चुनकर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

1. नगर के लोग राजकुमार की प्रतिमा की तारीफ़ करते थे, क्योंकि-

    (क) जब वह जीवित था, तो लोगों की सहायता करता था। ☐

    (ख) उसकी प्रतिमा में बहुमूल्य वस्तुएँ लगी थीं। ☐

    (ग) मूर्ति बनने पर राजकुमार का आत्म-विस्तार हो गया था। ☐

    (घ) प्रतिमा में विश्व-भर के कलाकारों की प्रतिभा लगी थी। ☐

2. मनुष्यों को नहीं, एक मूर्ति को दूसरों के दुख दिखते हैं- इसमें क्या है?

    (क) विडंबना ☐ (ख) मनुष्य का स्वभाव ☐

    (ग) चमत्कार ☐ (घ) मनुष्य-विरोधी भाव ☐

13.2.2 चरित्र-चित्रण

आप यह तो समझ ही चुके हैं कि कहानी की जान उसकी कथावस्तु होती है और कथानक उसका ढाँचा। इस ढाँचे को सजीवता प्रदान करते हैं उसके पात्र या चरित्र। उन्हीं के द्वारा कथानक आगे बढ़ता है और हम उसे महसूस कर पाते हैं। कहानी की समय-सीमा कम होती है, अतः पात्र भी सीमित होते हैं। इस कहानी में तो सिर्फ़ दो ही मुख्य पात्र हैं। एक राजकुमार की मूर्ति और दूसरी गौरैया। इनके अतिरिक्त प्रसंगवश कुछ पात्र और आ जाते हैं, जिनकी भूमिका सिर्फ़ उस हिस्से को या कही जाने वाली बात को

टिप्पणी

थोड़ा उजागर कर देने की है। ये गौण पात्र हैं! इन पर हम 'वातावरण' शीर्षक के अंतर्गत चर्चा करेंगे।

सुखी राजकुमार

सुखी राजकुमार की प्रतिमा इस कहानी का केंद्र-बिंदु है। इसलिए हम उसे कहानी का मुख्य पात्र मान सकते हैं। अब आप कहेंगे कि प्रतिमा भी भला कहीं कहानी की मुख्य पात्र हो सकती है। पात्र होने के लिए उसे मनुष्य या कम-से-कम जीवित प्राणी तो होना ही चाहिए न ! यहाँ यह जान लेना ज़रूरी है कि विश्व-भर में कहानी की परंपराओं के विकास-क्रम में मानवेतर यानी मनुष्य के अलावा अन्य प्राणी कहानियों के पात्र बनते रहे हैं। अपने यहाँ भी 'पंचतंत्र' और 'हितोपदेश' में पशु-पक्षी कहानियों के पात्र हैं। इनके अतिरिक्त 'सिंहासन बत्तीसी' में पुतली भी पात्र है। 'विक्रम और बेताल' की कहानियाँ भी आपने सुनी-पढ़ी होंगी। इनमें बेताल (जो जीवित मनुष्य नहीं है) प्रमुख पात्र है। दरअसल, कहानीकार विशेष प्रयोजन से अपने पात्रों का चुनाव करता है।

'सुखी राजकुमार' कहानी में प्रतिमा को पात्र बनाने का विशिष्ट उद्देश्य है। कहानीकार समाज में मानवीय संवेदनाओं के तार-तार हो जाने की ओर हमारा ध्यान आकर्षित करना चाहता है और उनके ही सर्वोपरि होने का संदेश देना चाहता है। इसके लिए वह प्रतिमा को केंद्रीय पात्र के रूप में प्रस्तुत करता है तथा इसे और अधिक प्रभावी बनाने के लिए सुखी राजकुमार के जीवन-काल का भी ज़िक्र करता है। जीवित राजकुमार और प्रतिमा के रूप में स्थापित राजकुमार की जीवन-दृष्टि में अद्भुत कन्ट्रास्ट (वैषम्य) है। जीवित रहते हुए वह भोग-विलास में डूबा रहता है और अपने से बाहर की दुनिया के बारे में अनजान बना रहता है, किंतु प्रतिमा के रूप में स्थापित होने पर उसे अपने नगर में चारों ओर दुख के दर्शन होते हैं और अब यद्यपि उसका 'हृदय जस्ते का है, पर फटा जाता है।' उसमें मानवीय संवेदनाओं का ज्वार आने लगता है। उसकी इन संवेदनाओं को कार्यरूप में परिणत करने का काम भी एक मानवेतर प्राणी (नन्हीं गौरैया) द्वारा ही होता है। यहाँ पर यह भी महत्त्वपूर्ण है कि वह जिन मनुष्यों-नृत्य-वसन पर फूल टाँकने वाली स्त्री और उसका बीमार बच्चा, तरुण कलाकार, सौदा नाली में गिरा चुकी लड़की आदि के लिए अपना सर्वस्व अर्पित करता है, वे भी उस संवेदना को महसूस नहीं करते। वे या तो अनजान रहते हैं, या अपने उद्यम की उपलब्धि समझते हैं, या फिर कौतूहल मात्र से ग्रस्त होते हैं। बाद में, मेयर और उसके साथियों के व्यवहार के माध्यम से इस वैषम्य को और ज़्यादा उभारा गया है।

कहानी के आरंभ में हम एक सुखी राजकुमार की प्रतिमा से रू-ब-रू होते हैं, जिसका शरीर 'सोने के पत्तरों से मढ़ा था, आँखों के स्थान पर दो चमकदार नीलम थे और तलवार की मूठ में एक बड़ा-सा लाल जड़ा था' और 'लोग उस प्रतिमा के सौंदर्य की बड़ी प्रशंसा करते थे।' हमें लगता है कि अपने वैभवपूर्ण सौंदर्य की प्रशंसा के कारण यह राजकुमार 'सुखी' होगा, लेकिन अगले ही क्षण हमें पता लगता है कि यह राजकुमार सुखी नहीं है, क्योंकि उसकी उन सुंदर आँखों से आँसू की बूँदें गिर रही हैं। कदाचित् यह इसलिए है

कि उसके अकेलेपन और दुख को बाँटने वाला कोई दूसरा (नन्हीं गौरैया) अब उसके पास है। वह गौरैया को बताता है कि जब वह जीवित था, तो आनंद-महल में रहता था, सुख-सुविधाओं और भोग-विलास में डूबा रहता था, उसने कभी दुख का साक्षात्कार नहीं किया था, क्योंकि उसके चारों और इतना सौंदर्य था कि उसने कभी बाहर देखने का प्रयत्न ही नहीं किया। यानी, जीवित रहते वह अपने आप में मस्त रहने वाला प्राणी था। लेकिन, मूर्ति के रूप में ऊँचे स्थान पर स्थापित हो जाने पर उसे उस आत्मबद्धता से मुक्ति मिली और नगर में रहने वाले लोगों के हालचाल पता लगने लगे। उसने पाया कि नगर की अधिकांश जनता बहुत बुरे हाल में जी रही है। रोग, निर्धनता, भुखमरी से ग्रस्त है। कुछ लोग ज़रूर ऐशोआराम की ज़िंदगी जी रहे हैं, पर वे अन्य अभावग्रस्त लोगों की वास्तविकता के प्रति उपेक्षा का भाव रखते हैं। उसका हृदय, जो अब मनुष्य का संवेदनशील कोमल हृदय नहीं, बल्कि ठोस धातु जस्ते का बना है, इस दुखी समाज को देखकर फटने लगता है। उसमें मानवीय संवेदनाओं का संचार होता है। व्यापक जनता का दुख उसका अपना सुख बन जाता है और वह अपने वैभव को त्यागकर, अपने अंगों का भी प्रतिदान करके उनके दुखों को दूर करना चाहता है। वह गौरैया से बहुत मार्मिक शब्दों में बार-बार आग्रह करके अपनी संवेदनाओं को कार्यरूप में परिणत करता है। यहाँ तक कि वह अब अपनी 'सुखी राजकुमार' वाली पहचान से 'पत्थर के भिखारी' वाली पहचान तक पहुँच जाता है। मगर, अब उसे पूरे तौर पर संतोष है और वह वास्तविक रूप में सुखी है। यानी असली सुख अपने शरीर के लिए भोग-विलास में नहीं, बल्कि अपने तन-मन-धन को लुटाकर भी मानवता का भाव अनुभव करने में है। वास्तविक सौंदर्य रूप-रंग, वेशभूषा, आभूषण-अलंकार में नहीं, बल्कि मानवता के लिए समर्पित आत्मा के सौंदर्य में है। इसकी पुष्टि कहानी के अंत में ईश्वर द्वारा उसे स्वर्ग के उद्यान में स्थान देने से भी होती है।

राजकुमार के हृदय में मानवता का भाव जागता है, तो उसकी भाषा भी मानवीय कोमलता और प्रेम से भर उठती है। इसीलिए तो वह गौरैया से अत्यधिक विनम्रता और अनुरोध के स्वर में अपनी बात कहता है। उसके आग्रह में आदेश का नहीं, याचना का भाव रहता है। उसकी संवेदना चूँकि वास्तविक हैं, इसीलिए वह अपना सर्वस्व अर्पित करने तक तो गौरैया को रोकने की भरसक कोशिश करता है, पर सब कुछ लुटा देने के बाद उसे अपने साथ भर के लिए नहीं रोकना चाहता। अब वह उससे आग्रह करने लगता है कि वह अपने पूर्व-निर्धारित कार्यक्रम के अनुसार अपने साथियों के पास दक्षिण दिशा को रवाना हो जाए।

इस पात्र पर विचार करते हुए एक बात बहुत महत्त्वपूर्ण मालूम होती है, वह यह कि दुखों को देखकर पिघलने वाला हृदय लोहा गलाने के कारखाने की भट्टी में भी नहीं पिघलता। आख़िर ऐसा क्यों ? ज़रूर कहानी-लेखक हम से कुछ और कहना चाहता है, लेकिन वह सीधे न कहकर हमें सोचने के लिए मौका देता है। आप सोचिए कि इसका क्या आशय होगा ? क्या वह हमें यह संकेत करता है कि हृदय मानवीय संवेदनाओं से द्रवीभूत हो सकता है, पर दूसरों के स्वार्थों की पूर्ति के अनुरूप ढलने को तैयार नहीं है अर्थात् सच्ची

मानवीय भावनाओं से पूर्ण हृदय में दूसरों के दुखों के प्रति कोमलता होती है, पर ऐसी कोमलता नहीं कि दूसरे उसे अपने विचारों और हितों के लिए इस्तेमाल कर ले जाएँ। यानी, दूसरों के काम आने का अर्थ है– उनके दुख-दर्द में काम आना, न कि उनकी स्वार्थसिद्धि का साधन बनना। एक और संकेतार्थ हो सकता है कि एक बार सच्ची मानवता को समर्पित हुए हृदय को किसी और रास्ते पर नहीं डाला जा सकता।

गौरैया

राजकुमार के विषय में आप जान चुके हैं कि उसके भीतर मानवीय संवेदनाओं का उद्रेक तब होता है, जब वह अपने परिवेश और उसमें व्याप्त दुखों से परिचित होता है; मगर गौरैया के भीतर दूसरों के प्रति ममता का सोता फूटने का कारण राजकुमार का साथ है, उसका व्यवहार है। यानी दूसरों के प्रति सहानुभूति के भाव तक पहुँचने के दो कारण इस कहानी में हैं, पहला–दुख का साक्षात्कार और दूसरा-मानवीय गुणों से परिपूर्ण व्यक्ति के संपर्क में आना अर्थात् सत्संग।

इस कहानी में जब गौरैया से हमारा साक्षात्कार होता है, तो वह हमें नकचढ़ी और अभिमानी मालूम होती है। उसका पहला ही संवाद है–''मैं समझ रही थी कि यह शहर मेरा स्वागत करेगा।'' वह मूर्ति के पास उतरती है और संतोष प्रकट करती है कि उसका 'शयनागार सोने का है।' राजकुमार के यह कहने पर कि उसका हृदय जस्ते का है, वह निराश होती है–'अच्छा, तो यह राजकुमार ठोस सोने का नहीं है।' राजकुमार जब उससे आग्रह करता है कि वह उसकी तलवार की मूठ में लगा लाल बीमार बच्चे और उसकी श्रमिक माँ को दे आए, तो व उस पचड़े में नहीं पड़ना चाहती, क्योंकि वह तो अपनी कल्पनाओं की दुनिया में खोई है, जहाँ नदी है, कमल के फूल हैं, राजाओं के मकबरे हैं, रत्न हैं। वह इतनी आत्म-सीमित है कि दुबारा आग्रह करने और बच्चे के उदास और प्यासे होने के बारे में बताने पर भी इन्कार ही करती है–''उँह ! मुझे बच्चों से ज़रा भी स्नेह नहीं है.......पिछले वसंत में दो बच्चे रोज़ आकर मुझे ढेले मारा करते थे। यद्यपि मुझे चोट नहीं लगी, मैं बहुत तेज़ उड़ती हूँ, किंतु यह बड़ी ही अपमानजनक बात है।'' लेकिन, सोने से मढ़े और रत्नों से जड़े राजकुमार को उदास देखकर उसे 'दया' आ जाती है। आप जानते ही होंगे कि दया या तरस के भाव में हम दूसरे के समान अनुभव नहीं करते, बल्कि हम उससे भिन्न और अक्सर अधिक सक्षम या बड़े होते हैं, तो वह गौरैया राजकुमार पर तरस खाकर उसका काम करने को तैयार होती है। मगर यह क्या ? वह तो सिर्फ़ लाल पहुँचाने गई थी, फिर बीमार बच्चे के ऊपर अपने पंखों से हवा क्यों करने लगी ? दरअसल, वह गई तो थी राजकुमार की उदासी पर तरस खाकर, लेकिन बच्चे को बुखार से तड़पते देख उसे भी दुख का अनुभव हुआ और वह बच्चे के प्रति सहानुभूति महसूस करने लगी। उसके इस काम ने उसके मन-मस्तिष्क को अपने प्रभाव में ले लिया। इसी भावना के उद्रेक के कारण उसे उस दिन ठंड भी नहीं लग रही थी। दूसरों की भलाई, उनके साथ संबंध की गरमी ने उसे ठंड का अनुभव नहीं होने दिया। मगर, गौरैया की अनोखेपन की तलाश, सुखमय जीवन का सपना और प्रकृति के सौंदर्य के प्रति कुतूहल अभी मौजूद था, इसीलिए वह राजकुमार के अगले आग्रह पर पहले तो

अपने कार्यक्रम के बारे में बताती है, लेकिन पिछले दिन के अनुभव के तहत उससे दूसरा लाल दे आने के लिए पूछती है। किंतु, राजकुमार द्वारा की गई अपनी आँख निकालकर दे आने की बात से उसके त्याग के स्तर को महसूस कर उसका हृदय फट पड़ता है और वह रोने लगती है तथा इस काम को करने से इन्कार कर देती है। आपने गौर किया कि गौरैया के पहले इन्कार और इस इन्कार में फ़र्क है ! हाँ, पहली बार वह अपनी दुनिया में मगन होने के कारण इन्कार करती है, पर इस बार के इन्कार में राजकुमार के प्रति प्रेम की भावना है और साथ ही, त्याग की उस भावना से अभिभूत होना भी है, जो मनुष्य के दूसरों के लिए खुद को अर्पित कर देने से पैदा होती है। तीसरी बार फिर गौरैया अपने सपनों की दुनिया में जाने की चर्चा करती है, पर इस बार वह राजकुमार के आग्रह पर सिरे से इन्कार नहीं करती। वह कहती है कि "कहो तो मैं आज रात-भर और रुक जाऊँ, मगर मैं तुम्हारी आँख नहीं निकालूँगी। फिर तो तुम बिल्कुल ही अंधे हो जाओगे !" राजकुमार के फिर भी आग्रह करने पर वह उसकी दूसरी आँख उस लड़की को दे तो ज़रूर आती है, पर अपने सपनों के देश जाने के कार्यक्रम को रद्द कर देती है। वही गौरैया, जो अभावग्रस्त लोगों को कुछ दे आने के राजकुमार के आग्रह पर अपनी इच्छाओं-आकांक्षाओं-कल्पनाओं का हवाला देने लगती थी, अब राजकुमार के मिस्र देश चले जाने के आग्रह पर भी इन्कार कर देती है और उसी के साथ रहने का फ़ैसला करती है।

गौरैया राजकुमार को दुनिया की आश्चर्यजनक वस्तुओं और घटनाओं की कहानियाँ सुनाती है। मगर, राजकुमार अब जान चुका है कि रहस्य, रोमांच, आश्चर्य चीज़ों के अनोखेपन में नहीं, बल्कि इन्सान के दुख-दर्द में है। वह गौरैया को प्रेरित करता है और वही गौरैया, जो बच्चों से चिढ़ती थी, अब उनकी वास्तविक ज़िंदगी के मर्म को पहचानती है और राजकुमार की मूर्ति के स्वर्ण-पत्र उन बच्चों में बाँटती है, उनके चेहरे पर झलकने वाली गुलाबी किरणों से संतुष्ट होती है। याद रखें कि अब बच्चों के दुख-दर्द को राजकुमार नहीं देख सकता था, क्योंकि वह अंधा हो चुका था; गौरैया ही अब उनकी तकलीफ़ों से व्यथित हो रही थी। उनके दुख-दर्दों में भागीदारी करती गौरैया, राजकुमार के गुणों से अभिभूत गौरैया, प्रेम की उदात्त भावना से पूर्ण गौरैया स्वयं अपने प्राण न्योछावर कर देती है। गौरैया के इस प्रेम, समर्पण और त्याग की भावना की पुष्टि कहानी के अंत में ईश्वर द्वारा स्वर्ग की डालों पर उसे स्थान देने से होती है, यद्यपि नगर का प्रभु वर्ग-मेयर और उसके साथी- उसे कूड़ेखाने में फेंकने लायक समझता है।

इस तरह, गौरैया के चरित्रांकन में लेखक इस बात को हमारे समक्ष रखता है कि सज्जनों के साथ से व्यक्ति के सोचने-समझने के नज़रिए में अंतर आता है और यथार्थ को देखकर उसके अंतःकरण की आँखें खुलती हैं तथा वह भी उन सद्गुणों से युक्त हो जाता है। केवल दुर्गुण ही संक्रामक नहीं होते, बल्कि सद्गुण भी एक से दूसरे और दूसरे से तीसरे तक फैलते हैं; आत्मा को मानवता के उच्च शिखरों तक ले जाते हैं।

टिप्पणी

पाठगत प्रश्न-13.2

सर्वाधिक उपयुक्त विकल्प चुनकर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

1. सुखी राजकुमार का हृदय भट्ठी में न गलने का अभिप्राय है :

(क) भ्रष्ट अधिकारियों के कारण जस्ते में मिलावट होना ☐

(ख) दान करते हुए राजकुमार की संवेदनाओं का चुक जाना ☐

(ग) गौरैया का साथ पाने के लिए कूड़ेदान में फेंके जाने का यत्न ☐

(घ) संवेदनाओं को स्वार्थ-सिद्धि का साधन न बनने देना ☐

2. गौरैया सुखी राजकुमार के सान्निध्य में क्या सीखती है ?

(क) तरस खाना ☐ (ख) निस्वार्थ प्रेम ☐

(ग) दया करना ☐ (घ) आत्म-विश्लेषण ☐

3. मिस्र देश का बार-बार ज़िक्र करने से गौरैया के चरित्र की किस बात का पता लगता है ?

(क) बात को टालने की प्रवृत्ति का ☐

(ख) साथियों के प्रति अटूट लगाव का ☐

(ग) पर्यटन के प्रति उन्माद का ☐

(घ) अनोखेपन और ऐश्वर्य के प्रति लगाव का ☐

3.2.3 संवाद

आपने देखा कि किस तरह कहानी के पात्र उसके कथानक को विस्तार देते हैं और कथावस्तु को हमारे सामने उद्घाटित करते हैं। पात्रों को प्रस्तुत करने के प्रायः दो तरीके होते हैं– या तो लेखक स्वयं पात्रों के विषय में जानकारी देता है या फिर उनके संवादों के माध्यम से उनकी चारित्रिक विशेषताओं का उद्घाटन करता है। कहानी-कला के विकास के साथ-साथ लेखक द्वारा अपने पात्रों और कथावस्तु के बारे में स्वयं ब्यौरे देना बहुत अच्छा नहीं समझा जाता। इसीलिए, कहानीकार संवादों और स्थितियों के द्वारा अपने पात्रों और कथावस्तु को हमारे समक्ष प्रस्तुत करता है।

टिप्पणी

'सुखी राजकुमार' कहानी में भी कहानीकार वर्णन कम-से-कम करता है और संवादों तथा स्थितियों के माध्यम से कहानी कहता है। यानी, इस कहानी में नेरेशन (वर्णन) बहुत कम है। पूरी कहानी संवादों के ज़रिए आगे बढ़ती है। इस कारण कहानी के कथानक में बहुत चुस्ती आ गई है। एक भी शब्द हमें फ़ालतू नहीं लगता। राजकुमार के आरंभिक संवाद से हमें उसके अतीत और वर्तमान की जीवन-स्थितियों, मनोदशा और वैचारिक परिवर्तन का पता कुछ ही वाक्यों में मिल जाता है। साथ ही, उसके विषय में यह भी पता लग जाता है कि वह सुखी समझा जाता है, पर सुखी है नहीं। इसके अलावा इसी संवाद से कहानी अपने मुख्य विषय पर आ जाती है।

जिस तरह राजकुमार के चरित्र में परिवर्तन होता है, वैसे ही गौरैया के चरित्र का भी विकास होता है। आरंभ की नकचढ़ी और आत्म-सीमित गौरैया कहानी के अंत में उदात्त चरित्र वाली दिखाई पड़ती है। कहानीकार गौरैया के चरित्र के इस परिवर्तन के विषय में अपनी ओर से कोई टिप्पणी नहीं करता, उसके संवादों के माध्यम से पाठक खुद इस निष्कर्ष तक पहुँचता है। आइए, ज़रा इन संवादों पर ध्यान दें:

- मैं समझ रही थी कि शहर मेरा स्वागत करेगा।
- इस प्रतिमा से क्या फ़ायदा, अगर यह वर्षा भी नहीं रोक सकती!
- उँह! मुझे बच्चों से ज़रा भी स्नेह नहीं है।
- अच्छा, आज मैं और रुक जाऊँगी, क्या दूसरा लाल उसे दे आऊँ?
- प्यारे राजकुमार, ... यह तो मुझसे न होगा....
- अब तुम अंधे हो.... इसलिए मैं हमेशा तुम्हारे पास रहूँगी।

गौरैया की तरह ही राजकुमार के हृदय की विशालता और उसकी सोच-समझ के विषय में भी उसके संवादों से ही पता लगता है। कहानी के अंत में मेयर एवं उसके साथी सभासदों के संवादों से उनकी क्षुद्र मानसिकता और स्वार्थपरता का तथा राजकुमार एवं गौरैया के त्याग, बलिदान और उच्चादर्श की वास्तविक कीमत का अंदाज़ा ईश्वर के संवाद से होता है।

कहानी में आम लोगों के दुखों के प्रति अभिजात वर्ग के उपेक्षापूर्ण रवैये को भी संवादों से ही उभारा गया है। सुखी राजकुमार के आरंभिक कथन में उसके जीवन-काल का उल्लेख; राजकुमारी की अंगरक्षिका का कहना ''मगर ये लोग कितनी देर लगाते हैं'; बारिश में चौकीदार का पुलिया के नीचे सिकुड़े बैठे बच्चों से कहना– ''भागो यहाँ से'' और मेयर का बड़ी हिकारत से मूर्ति के विषय में कथन- ''यह तो बिलकुल पत्थर का भिखारी मालूम देता है'; सदस्यों की सहमति- ''बिल्कुल-बिल्कुल पत्थर का भिखारी!''– ये सभी इस संदर्भ में द्रष्टव्य हैं।

राजकुमार के परदुखकातर (दूसरों के दुख से दुखी होने का गुण) हृदय की कोमलता उसके संवादों में मौजूद है। उसके संवादों में आदेश का स्वर नहीं, बल्कि अनुरोध की

विनम्रता और आग्रह की आत्मीयता है। वह गौरैया से किस तरह पेश आता है और किस तरह लोगों के जीवन में सुख का संचार करने वाले काम कराता है- इस पर गौर कीजिए:

- गौरैया! गौरैया! सिर्फ़ आज रात को तुम मेरा काम कर दो। बच्चा प्यासा है- उदास भी है!
- गौरैया! गौरैया! नन्हीं गौरैया! क्या तुम आज रात को और नहीं ठहर सकतीं...
- लेकिन, केवल आज रात के लिए भी तुम न रुकोगी?
- गौरैया! प्यारी गौरैया!.... तुम्हें मेरी बात माननी चाहिए।
- नहीं-नहीं गौरैया! अब तुम मिस्र देश को जाओ।

इस प्रकार 'सुखी राजकुमार' कहानी के संवाद छोटे-छोटे, चुस्त-दुरुस्त, सहज, सरल, रोचक और भावानुकूल हैं। वे कथानक को आगे बढ़ाने का काम करते हैं, पात्रों के चरित्र की विशेषताओं को उजागर करते हैं और कथावस्तु के मुख्य बिंदुओं का उद्घाटन करते हैं। इसके साथ-साथ वातावरण की सृष्टि भी करते हैं और उस पर टिप्पणी भी।

क्रियाकलाप-13.2

इस कहानी को पढ़ते हुए आपने राजकुमार के संवादों पर ध्यान दिया? राजकुमार के प्रायः सभी संवाद गौरैया से हैं। वह गौरैया से परोपकार के काम कराना चाहता है। इसके लिए वह उसे आदेश तो दे नहीं सकता, लेकिन वह उसके आगे गिड़गिड़ाता भी नहीं है। एक ही तरीका है कि वह उससे आग्रह करे, और यह आग्रह भी आत्मीयतापूर्ण हो, ताकि ठुकराया न जा सके। आप देखते हैं कि राजकुमार गौरैया से आत्मीय संबोधन करता है- 'प्यारी गौरैया', 'नन्हीं गौरैया', 'गौरैया-गौरैया' आदि। इसी के साथ उसके वाक्य-विन्यास में आग्रह का स्वर है-

1. "सिर्फ़ आज रात तुम मेरा काम कर दो। बच्चा प्यासा है- उदास भी।"
2. "क्या तुम आज रात को और नहीं ठहर सकतीं?"
3. "लेकिन, केवल आज रात के लिए भी तुम न रुकोगी?"

उपर्युक्त तीनों वाक्यों पर ध्यान दीजिए। पहली बार 'सिर्फ आज... कर दो' कहकर अनुनय किया गया है, दूसरी बार चूँकि साधारण अनुनय किया जा चुका है, इसलिए 'और नहीं ठहर सकतीं?" की याचना है। पहले वाक्य में अपनी बात कही गई है, दूसरे में निर्णय दूसरे पर छोड़ते हुए अपने पक्ष में निर्णय लेने का आग्रह है। तीसरी बार में खुद को बिल्कुल महत्त्व न देते हुए गौरैया के निर्णय को सर्वोच्च रखा गया है और उसकी संवेदनशीलता जगाते हुए आग्रह किया गया है।

आइए, अब विभिन्न स्थितियों में प्रयोग किए जाने वाले वाक्यों के निर्माण का अभ्यास करें:

(क) अगर आपको भूकंप अथवा बाढ़ जैसी आपदाओं में लोगों की मदद के लिए सहयोग माँगना हो, तो आप किस-किस तरह से अपनी बात कह सकते हैं?

(i) ....

(ii) ....

(iii) ....

(ख) आपकी साइकिल या स्कूटर दूसरे से टकरा गया है और वह तैश में है। आप किस तरह उसे शांत करेंगे?

(i) ....

(ii) ....

(iii) ....

13.2.4 वातावरण

जैसा कि हम जान चुके हैं, 'सुखी राजकुमार' कहानी की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि इसमें कहानीकार स्वयं कुछ नहीं कहता, अपितु अपने पात्रों, उनके क्रियाकलापों, उनके व्यवहार के तरीकों से अपनी बात हम तक पहुँचाता है। मुख्य कथावस्तु और चरित्रों के विषय में तो बहुत से कहानीकार ऐसा करते हैं, पर वे भी देश, काल और वातावरण का वर्णन प्रायः अपनी ज़बान से करने लगते हैं। किंतु, इस कहानी में कहानीकार की ख़ूबी यह है कि वह वातावरण को भी अपने पात्रों और उनके जीवनानुभवों के द्वारा ही अभिव्यक्त करता है। देश और काल यानी स्थान और कहानी के घटना-समय का उल्लेख न करके वह कहानी को सार्वदेशिक और सार्वकालिक बना देता है। कहानी कहाँ की है? इसका उत्तर कहानी में मिलेगा- एक नगर की। किस नगर की? कोई उल्लेख नहीं। कहानी कब की है?- कोई उल्लेख नहीं। अब कहानी को पूरा पढ़ जाइए- लगेगा कि यह तो हमारे अपने यहाँ की-सी है, हमारे अपने ही समय की है! यानी कहानी में जो स्थितियाँ हैं, जो चरित्र हैं, जो मानव-स्वभाव और व्यवहार-प्रणाली है, जो मुद्दे हैं, जो प्रश्न हैं- वे हमारे अपने परिवेश के हैं, यद्यपि यह कहानी इंग्लैन्ड में लगभग सवा सौ साल पहले लिखी गई थी। इसका एक और कारण यह भी है कि कहानी का विषय मानव-सभ्यता के विकास-क्रम का वह दुर्भाग्यपूर्ण सोपान है, जिसमें मनुष्य आर्थिक आधार पर वर्गों में बँट चुका है। कुछ लोगों के ऐय्याशीपूर्ण जीवन जीने की ललक ने बड़े मानव-समूह को कंगाली, बदहाली और भुखमरी तक पहुँचा दिया है। इसी वर्ग ने सुंदरता और सुख की धन-वैभव आधारित परिभाषाएँ गढ़ ली हैं। कहानीकार पूरी कहानी में स्थितियों के वैषम्य (कन्ट्रास्ट) के ज़रिए इस प्रश्न को हमारे सामने उभारता चलता है और

हमारी संवेदनाओं को झकझोर कर हमारे भीतर वैचारिक प्रेरणा पैदा कर देता है। कुछ उदारहण लीजिए:

1. राजकुमार की जीवन-काल की जीवन-दृष्टि और मूर्ति-रूप में स्थापित होने के बाद की जीवन-दृष्टि।

2. गौरैया का आरंभिक व्यवहार, विशेषत: तब का, जब राजकुमार दुखी और परेशान लोगों के विषय में बताता है और गौरैया मिस्र देश की सुखद तथा वैचित्र्यपूर्ण कल्पनाओं का बयान करती है।

3. गौरैया राजकुमार के भलाई के कामों के लिए जब नगर पर उड़ान भरती है, तो गिरजे और देवदूतों की मूर्तियों का ज़िक्र है। यानी, नगर का धनी वर्ग धर्म के कर्मकांडों और शास्त्र पर तो आस्था रखता है, पर उसके व्यावहारिक पक्ष, जैसे- सत्य, परोपकार, समानता आदि पर नहीं सोचता।

4. महल के छज्जे पर किशोरी प्रेम की अद्‌भुत शक्ति ज़िक्र करती है, पर उसके लिए प्रेम का अर्थ सिर्फ स्त्री-पुरुष संबंध या बाहरी सौंदर्य तक सीमित है, तभी तो वह फूल काढ़ने वाली स्त्री से ख़फ़ा है। अभिजात-वर्ग पर यहाँ स्वत: ही टिप्पणी हो जाती है।

5. राजकुमार द्‌वारा नगर का हाल जानने के लिए गौरैया को भेजने पर गौरैया का यथार्थ-अवलोकन : ''अमीर अपने महलों में रंगरलियाँ मना रहे थे और गरीब हाथ फैलाए भीख माँग रहे थे। वह अँधेरी गलियों पर से उड़ी और उसने देखा कि भूखे बच्चे ज़र्द चेहरे लटकाए हुए सूनी निगाहों से देख रहे हैं। एक पुलिया के नीचे दो बच्चे सिकुड़े हुए बैठे हैं। ''भागो यहाँ से!'' चौकीदार बोला और वे बारिश में भीगते हुए चल दिए।''

कहानी में गौण पात्रों का सृजन परिवेश को चित्रित करने के लिए ही किया गया है। आइए, ज़रा इन पात्रों पर भी ध्यान दीजिए:

1. **राजकुमारी की अंगरक्षिका,** जो मेहनतकश लोगों के विषय में अभिजात-वर्ग के रवैये को अभिव्यक्त करती है- ''मगर ये लोग कितनी देर लगाते हैं।''

2. **बीमार बच्चा,** जो गौरैया द्‌वारा अपने पंखों से हवा करने पर स्वस्थ महसूस करता है। यह पात्र सिर्फ़ गौरैया के भीतर आ रहे परिवर्तन को स्पष्ट करने के लिए है।

3. **तरुण कलाकार,** जो रंगमंच के लिए नाटक लिख रहा है। वह निर्धन है, पर उसकी आँखों में भविष्य के सपने हैं और है- महत्त्वाकांक्षा। कलाकार की महत्त्वाकांक्षा और उसकी आत्ममुग्धता की अभिव्यक्ति उसके कथन द्‌वारा होती है- ''ओह, मालूम होता है, मेरा मोल लोग आँक रहे हैं। यह शायद किसी बड़े भारी प्रशंसक ने भेजा है। अब मैं अपना नाटक समाप्त कर सकूँगा।''

4. **रोती हुई लड़की,** जिसका सौदा नाली में गिर गया है और जिसे अपने पिता से पिटने का डर है। यह सरल हृदय निर्धन बालिका नीलम को सिर्फ़ रंगीन काँच का टुकड़ा समझती है। उसका यह समझना गरीब लोगों की सरलता और गरीबी की भीषणता को (वे इतने गरीब हैं कि चीज़ों की कीमत को भी नहीं जानते) उजागर करता है।

   उपर्युक्त चारों पात्रों की योजना का एक और उद्देश्य मालूम होता है, वह यह कि चारों ही पात्र यह नहीं जानते कि कौन उनके लिए उत्सर्ग (बलिदान) कर रहा है।

5. **वे बच्चे,** जिनके चेहरे पीले पड़ गए हैं, जो वर्षा से बचने के लिए पुलिया के नीचे बैठे हैं, पर चौकीदार उन्हें वहाँ से भी भगा देता है। इन पात्रों की योजना व्यापक जनता के दुख-दर्दों की भयावहता को स्पष्ट करने और अभिजात वर्ग के लिए काम करने वाले मामूली आदमियों के भी असंवेदनशील बन जाने को उजागर करती है। इसके अतिरिक्त इनके ज़रिए राजकुमार की उदारता की चरम सीमा (स्वर्ण-पत्रों के रूप में अपनी खाल को भी उधड़वा देना) और गौरैया के अंदर समानुभुति का विकास (क्योंकि इनके विषय में राजकुमार ने नहीं, बल्कि खुद गौरैया ने महसूस किया है) भी सूचित होता है।

6. **मेयर,** जिसके ऊपर नगर की व्यवस्था की ज़िम्मेदारी है, जिसे नगर की जनता के दुख-दर्द और उनकी गरीबी नहीं दिखती, पर मूर्ति का भद्दापन दीख जाता है, क्योंकि दरअसल वह स्वार्थ में अंधा और आत्मकेंद्रित है। उसकी नज़र राजकुमार की जगह अपनी मूर्ति लगवाने पर है। उसके सभासद भी चाटुकार और स्वार्थी हैं। वे सभी बातों पर मेयर की हाँ-में-हाँ मिलाते हैं, जनता के मुद्दों पर बहस नहीं करते; पर अपनी मूर्ति लगवाने के लिए मेयर के विरुद्ध भी जाते हैं और आपस में झगड़ते भी हैं। ये पात्र आज की असंवेदनशील, आत्मकेंद्रित और स्वार्थ-तत्पर शासन-व्यवस्था की ओर संकेत करते हैं।

7. **कलाविज्ञ,** जो रूप-सौंदर्य को ही महत्त्वपूर्ण समझता है और उसी को उपयोगी भी। यह पात्र कलाकारों के उस वर्ग की ओर संकेत करता है, जो कला के वास्तविक मर्म को नहीं समझते।

8. **ईश्वर और उसका देवदूत,** जो कहानी के वास्तविक उद्देश्य को हमारे समक्ष रखते हैं। यह उद्देश्य है– मनुष्य के दुख-दर्दों के प्रति समानुभूति की भावना और उसके लिए कर्मशील होने की ज़रूरत। लेखक कहना चाहता है कि वास्तविक सौंदर्य मनुष्यता की भावना और कर्मशीलता में निहित है।

पाठगत प्रश्न-13.3

सर्वाधिक उपयुक्त विकल्प चुनकर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए:

1. निम्नलिखित में से मुहावरा कौन-सा है?

(क) बूँद टप-से गिरना ☐ (ख) विहार करना ☐

(ग) हाँ-में-हाँ मिलाना ☐ (घ) मार से बच जाना ☐

2. 'मैं इसी जगह पर ठहरूँगी' अर्थ को ठीक तरह से व्यक्त करने वाला उपयुक्त वाक्य है-

(क) मैं यहाँ ठहरूँगी ☐ (ख) मैं यहाँ ही ठहरूँगी ☐

(ग) मैं यहीं ही ठहरूँगी ☐ (घ) मैं यहीं ठहरूँगी ☐

3. मानवीय गुणों को मानवेतर प्राणियों द्वारा व्यक्त करने में है-

(क) चमत्कार ☐ (ख) विषमता ☐

(ग) विसंगति ☐ (घ) विडंबना ☐

13.2.5 भाषा-शैली

जैसा कि आप जान चुके हैं यह कहानी आयरिश लेखक ऑस्कर वाइल्ड द्वारा मूल रूप से अंग्रेज़ी भाषा में लिखी गई है। आप यह भी जान चुके हैं कि कहानी में घटना-स्थान और घटना-समय का उल्लेख न होने से यह कहानी किसी भी जगह और किसी भी वक्त की कहानी बन गई है। इसीलिए इस कहानी का अनुवाद करते हुए हिंदी के ख्यातिप्राप्त कवि-कथाकार-नाटककार-आलोचक-संपादक धर्मवीर भारती ने ऐसी भाषा-शैली का उपयोग किया है कि हमें यह कहानी अपने ही देश की और अपने ही समय की लगती है। उन्होंने अंग्रेज़ी के शब्द-प्रयोग, मुहावरों और विशिष्ट अभिव्यक्तियों को हिंदी भाषा और संस्कृति के अनुकूल ढाल दिया है। आइए कुछ पर ध्यान दें:

(क) शब्द-प्रयोग: स्वर्ण पत्र, स्तंभासीन, टप-से, डबडबाना, ढुलकना, फड़फड़ाना, क्षत-विक्षत, नृत्य-वसन, अंग-लेपन, ढेले, तड़पना, फुदककर, ठंडक, सपनीली, कुंज, पुरोहित, रंगरलियाँ, छज्जा, गज़ब का, कलाविज्ञ, कूड़ेखाना, चहकना, विहार करना आदि।

(ख) मुहावरे: हृदय फटा जाना, मोल आँकना, रंगरलियाँ मनाना, चेहरे लटकना, सूनी निगाहों से देखना, दिन करीब होना, हाँ-में-हाँ मिलाना आदि।

(ग) विशिष्ट अभिव्यक्तियाँ: पंखों में मुँह छिपाकर सोना, बूँद टप-से गिरना, आँखें डबडबाना, गाल पर आँसू ढुलकना, झपकी आना, दिन उगना, चाँद उगना, सपने टूटना, भोर का तारा डूबना, फूट-फूट कर रोना, खाली हाथ घर जाना, चेहरे पर गुलाबी किरणें झलक आना, ठंड से अकड़ना आदि।

(घ) वाक्य-विन्यास: मैं ठहरूँ कहाँ?/मैं यहीं ठहरूँगी/तुमने तो मुझे बिलकुल भिगो दिया/मुझे बच्चों से ज़रा भी स्नेह नहीं हैं/ लेकिन कोई बात नहीं, मैं आज तुम्हारा काम कर दूँगी/तो वह मार से बच जाएगी आदि।

इन वाक्यों में रेखांकित हिस्सों पर विशेष ध्यान दीजिए। आप इस पाठ में 'संवाद' और 'क्रियाकलाप' के अंतर्गत भी वाक्य-विन्यास पर ध्यान दे चुके हैं।

इस कहानी को पढ़ते समय कई जगह आपको लगा होगा कि कहानी की स्थितियाँ आपके सामने मानो सचमुच उपस्थित हो रही हैं। अर्थात्, इस कहानी में चित्रात्मकता की विशेषता मिलती है। लेखक ने यह चित्रात्मकता दो तरह से उपस्थित की है। 1. जहाँ वह स्थितियों अथवा व्यक्ति-विशेष की दशा को बताने के लिए ब्यौरे देता है। याद कीजिए कहानी की आरंभिक पंक्तियाँ या उस स्त्री का वर्णन, जिसकी उँगलियाँ सुई के घाव से क्षत-विक्षत हैं। टूटे-फूटे मकान में बुखार से तड़पता बच्चे का शब्द-चित्र तथा तरुण कलाकार का वर्णन भी इसके उदाहरण हैं। ब्यौरों के माध्यम से बनाए गए अन्य शब्द-चित्रों को आप भी ढूँढ सकते हैं। 2. ख़ास तरह के शब्दों के चुनाव से भी इस कहानी में चित्रात्मकता लाई गई है। टप-से, डबडबाना, ढुलकना, फड़फड़ाना आदि शब्द ध्वनियों के माध्यम से चित्र उपस्थित करते हैं। ये ऐसे शब्द हैं, जिनका हम भाषा को प्रभावशाली बनाने के लिए अक्सर उपयोग करते हैं। अर्थात्, लेखक ने जानी-बूझी स्थितियों को पाठक के सामने प्रकट करने के लिए जानी-बूझी शब्दावली का उपयोग किया है।

आपने यह भी महसूस किया होगा कि इस कहानी में भाषा की मितव्ययिता मिलती है अर्थात् एक भी शब्द अनावश्यक नहीं है। शायद इसीलिए कहानी में लेखक अपनी ओर से बहुत कम टिप्पणी करता है। यह कहानी संवादों से या बातचीत की शैली से ही आगे बढ़ती है। इसके विषय में आप पहले ही विस्तार से पढ़ चुके हैं। कम शब्दों में अधिक व्यक्त करने के कारण इस कहानी में सांकेतिकता का गुण भी आ गया है। इसी से कहानी की भाषा चुस्त-दुरुस्त हो गयी है।

आपने पाठ में जो वाक्य पढ़े हैं, उनमें कुछ वाक्यों में एक ही क्रिया है और कुछ वाक्यों में एकाधिक क्रियाएँ हैं। इस आधार पर वाक्यों के दो भेद होते हैं- सरल वाक्य और जटिल वाक्य। सरल वाक्य में एक उद्देश्य और एक ही विधेय होता है तथा ऐसे वाक्य से समापिका क्रिया होती है, जैसे- (i) मोहन जाता है, (ii) राम का बेटा मोहन जाता है, (iii) राम का बेटा मोहन स्कूल जाता है।

उक्त तीनों वाक्यों में समापिका क्रिया एक ही है, अत: ऐसे वाक्य सरल वाक्य कहलाते हैं। कुछ और उदाहरण देखिए: (i) 'नगर में ...... स्थापित थी।' (ii) 'लोग उस प्रतिमा की बड़ी प्रशंसा करते थे।' (iii) दिन भर उड़ने के बाद एक गौरेया रात को नगर के समीप पहुँची।

जटिल वाक्य दो तरह के होते हैं। एक संयुक्त वाक्य और दूसरे मिश्र वाक्य। संयुक्त वाक्य दो समानांतर वाक्यों से बना होता है तथा वह समुच्चयबोधक अव्ययों- और, तथा, एवं,

किंतु, परंतु आदि से जुड़ा होता है, जैसे- (i) पिता जी घर आए और चाचा जी चले गए। (ii) मैं बाजार गया और जलेबी लाया। (iii) या तो तुम इस काम को कर दो, वर्ना मुझे स्वयं करना पड़ेगा।

पाठ से कुछ उदाहरण और देखिए–

(i) वह पीले वस्त्र में लिपटा होगा और मसालों से उसका अंग-लेपन किया गया होगा।

(ii) उसकी गर्दन में पुखराज का हार होगा और उसके हाथ सूखी पत्तियों की तरह होंगे।

मिश्र वाक्य भी दो या दो से अधिक वाक्यों से बना होता है, लेकिन उसमें एक उप वाक्य प्रधान होता है तथा दूसरा आश्रित उप वाक्य होता है, जैसे–

(i) माँ ने कहा कि सोहन नहीं आएगा।

(ii) जो लड़का मुझे मिला था, वही प्रथम आया है।

(iii) जहाँ भी तुम जाओगे, मैं वहीं आ जाऊँगा।

13.2.6 उद्देश्य

इस कहानी को पढ़ने के बाद आप समझ चुके होंगे कि कहानी के माध्यम से लेखक हमसे क्या कहना चाहता है। जी हाँ, ठीक ही समझा आपने। इस कहानी में स्थान और समय का उल्लेख न करके कहानीकार ने उस हर जगह और हर वक्त की बात की है, जहाँ नगर धनी और निर्धन वर्ग में बँटे हैं और जहाँ राजनीतिज्ञ स्वार्थी, कलाविज्ञ रूप-सौंदर्य देखने वाले, आम लोग कीमत से चीज़ों का मूल्यांकन करने वाले, अभिजात और धनी लोग आत्मकेंद्रित और कर्मचारी लोग अपने मालिकों के अनुसार व्यवहार करने वाले हैं। ऐसे किसी भी स्थान पर व्यापक जनता गरीबी, बीमारी, भुखमरी और बदहाली की शिकार होती है और उनमें भी सबसे बदतर स्थिति बच्चों की होती है- उन बच्चों की, जो वहाँ का भविष्य हैं। यानी कथाकार बार-बार बच्चों का ज़िक्र करके ऐसी व्यवस्था के भविष्य की भयावहता को भी व्यक्त करता है।

कहानीकार इस विडंबना को मनुष्य के बाह्य एवं आंतरिक सौंदर्य से जोड़ता है। आमतौर पर देखने में सुंदर यानी रूपवान की और कीमती चीज़ों की प्रशंसा की जाती है, जबकि कहानीकार आंतरिक यानी मानवीय गुणों और कर्म के सौंदर्य को सराहने के लिए हमें प्रेरित करता है। कहानी के प्रारंभ में राजकुमार की प्रतिमा की सभी सराहना करते हैं, पर अंत में मेयर, सभासद और कलाविज्ञ उसे मटमैला और मनहूस समझकर वहाँ से हटाना चाहते हैं। लेकिन, गौरैया राजकुमार के कुरूप होने की प्रक्रिया में उसके कर्म-सौंदर्य को देखते हुए उससे और ज़्यादा प्रेम करने लगती है, यहाँ तक कि ठंड में प्राण त्याग देती है। ईश्वर द्वारा ऐसे राजकुमार और ऐसी गौरैया को स्वर्ग में स्थान दिलाकर कहानीकार एक विडंबना को उजागर करता है। वह विडंबना है– मानव-समाज में मानवीय गुणों की उपेक्षा का भाव। इसी विडंबना को इससे भी समझा जा सकता है कि पत्थर की मूर्ति,

जिसका दिल जस्ते का है, उसमें मानवीय संवेदनाओं का ज्वार है और इसको समझने वाला भी प्रायः उपेक्षित एक मानवेतर प्राणी यानी गौरैया है। इस विडंबना को अनेक प्रकार से उभारकर कहानीकार मनुष्य-समाज में व्याप्त संवेदनहीनता की स्थिति को तोड़ना चाहता है।

आपने क्या सीखा

- जब हम अपने से बाहर देखते हैं, तो हमारे अनुभव हमें संवदेनशील बनाते हैं और समाज के हित में सक्रिय करते हैं।
- गौरैया के व्यक्तित्व-परिवर्तन से हमें पता लगता है कि अच्छे लोगों की संगत से व्यक्तित्व उदार और अधिक सामाजिक बनता है।
- समाज में धनी और निर्धन वर्ग की जीवन-स्थितियों में बड़ी विषमता है। धनी वर्ग प्रायः आत्मकेंद्रित हो जाता है।
- कुछ लोगों तक धन, वैभव, और अधिकार सीमित होने के कारण व्यापक मनुष्य-समाज की मूलभूत आवश्यकताएँ भी पूरी नहीं हो पातीं। इनके प्रति समानुभूति ही सच्ची मनुष्यता है।
- बाह्य सौंदर्य (रूप-सौंदर्य) से आंतरिक सौंदर्य (कर्म-सौंदर्य) अधिक महत्त्वपूर्ण है- वही हमें श्रेष्ठ मनुष्य बनाता है।
- कहानी में कथावस्तु और पात्रों का चरित्र-चित्रण वर्णन के द्वारा नहीं, बल्कि संवादों के ज़रिए किया गया है।
- कहानी की भाषा में चित्रात्मकता, सांकेतिकता और मितव्ययिता के गुण हैं।

योग्यता-विस्तार

नाटककार, कवि और लेखक ऑस्कर वाइल्ड (1854-1900) का जन्म डबलिन आयरलैंड में हुआ था। उनकी आरंभिक शिक्षा डबलिन में हुई। उनकी माँ एक राजनीतिक लेखिका और पिता एक सफल नेत्र-चिकित्सक थे। जब ऑस्कर वाइल्ड किशोर ही थे, उनका परिवार लंदन चला गया, अतः उनकी आगे की शिक्षा ऑक्सफ़ोर्ड विश्वविद्यालय में हुई। विश्वविद्यालय में उन्होंने कवि और लेखक के रूप में अपनी अलग पहचान बना ली। इस दौरान उनकी एक कविता पर उन्हें पुरस्कृत भी किया गया।

उनके लेखन की मुख्य विशेषता वाक्-चातुर्य और हास्य-व्यंग्य है। उन्होंने बच्चों के लिए कविताएँ, नाटक और कहानियाँ लिखीं, किंतु उनके नाटक अधिक लोकप्रिय हुए। उनकी प्रमुख रचनाएँ इस प्रकार हैं :

कविताएँ (1881)- कविताएँ

सुखी राजकुमार और अन्य कहानियाँ (1888)- कहानियाँ

द पिक्चर ऑफ़ डोरियन ग्रे (1890)- उपन्यास

ए वूमेन ऑफ़ नो इम्पोर्टेन्स (1893)- नाटक

द इम्पोर्टेन्स ऑफ़ बीइंग अर्नेस्ट (1895)- नाटक

1893 में जब वे बच्चों के लिए परी-कथाएँ लिख रहे थे और 'वीमेन वर्ल्ड' नामक पत्रिका के संपादन में संलग्न थे, तब उन्होंने 'सुखी राजकुमार और अन्य कहानियाँ' लिखीं।

पाठांत प्रश्न

1. राजकुमार के जीवन-काल और प्रतिमा बनने के बाद के राजकुमार के व्यक्तित्व की तुलना कीजिए और बताइए कि आपको कौन-सा रूप पसंद है और क्यों?
2. गौरैया के व्यक्तित्व में आने वाले परिवर्तन पर अपनी टिप्पणी लिखिए।
3. 'सुखी राजकुमार' कहानी में चित्रित नगर से अपने परिवेश की तुलना कीजिए।
4. 'सुखी राजकुमार' कहानी में बच्चों की स्थिति का मूल्यांकन कीजिए और स्थिति को बेहतर बनाने के लिए अपने सुझाव लिखिए।
5. 'सुखी राजकुमार' कहानी का सबसे मार्मिक स्थल कौन-सा है और क्यों?
6. 'सुखी राजकुमार' कहानी के संवादों की विशेषताएँ लिखिए।
7. कहानी में विरोधी स्थितियों के वर्णन के पीछे कहानीकार का क्या उद्देश्य है? स्पष्ट कीजिए।
8. ईश्वर द्वारा राजकुमार और गौरैया को स्वर्ग में स्थान देने की बात से कहानीकार क्या संदेश देना चाहता है?
9. राजकुमार की आँख का नीलम पाकर तरुण कलाकार कहता है- ''ओह, मालूम होता है, लोग मेरा मोल आँक रहे हैं। यह शायद किसी बड़े भारी प्रशंसक ने भेजा

है।'' यदि आप इस कलाकार से कुछ कह पाते, तो क्या कहते और क्यों? विस्तार से लिखिए।

10. सरल संयुक्त और मिश्र वाक्यों का एक-एक उदाहरण लिखिए।

उत्तरमाला

पाठगत प्रश्न

13.1 1. (ख) 2. (क)

13.2 1. (घ), 2. (ख), 3. (घ)

13.3 1. (ग), 2. (घ), 3. (घ)

14

बूढ़ी पृथ्वी का दुख

आपने एक पूर्व पाठ में प्रकृति की सुंदरता के बारे में पढ़ा। यह सच है कि स्वच्छ जल, स्वच्छ वायु और हरा-भरा वातावरण हमारे दिल-दिमाग को तरोताज़ा कर देता है। सुंदर प्राकृतिक दृश्य हमारे मन को खुशी से भर देते हैं। लेकिन आज स्वच्छ जल, स्वच्छ वायु और सुंदर प्राकृतिक दृश्य कम होते जा रहे हैं। जानते हैं क्यों? क्योंकि मनुष्य इनका उपयोग बड़ी बेहरहमी से कर रहा है। क्या पेड़ों को काटे जाने पर उनके रोने की आवाज़ आपने सुनी है? चौंक गए न? पर चौंकिए मत, आज प्रकृति अपने संरक्षण के लिए हमें पुकार रही है। इस पुकार को हमें भी उसी तरह सुनना चाहिए जैसे एक कवयित्री ने इस कविता में सुना है, आइए इसे पढ़ते हैं।

उद्देश्य

इस पाठ को पढ़ने के बाद आप–

- मानव-जीवन में प्रकृति की भूमिका का उल्लेख कर सकेंगे;
- प्रकृति के प्रति मनुष्य के कर्तव्य का वर्णन कर सकेंगे;
- सामाजिक तथा सृजनात्मक चिंतन के लिए संवदेनशीलता तथा समानुभूति का महत्त्व समझा सकेंगे;
- पर्यावरण-संरक्षण में अपनी भूमिका निर्धारित कर सकेंगे;
- उपभोक्तावाद की हानियों की व्याख्या कर सकेंगे;
- प्रकृति के मानवीकरण की सराहना कर सकेंगे;
- कविता के काव्य-सौंदर्य पर टिप्पणी कर सकेंगे।

14.1 मूल पाठ

टिप्पणी

आइए, इस कविता को एक बार ध्यान से पढ़ लेते हैं।

क्या तुमने कभी सुनी है
सपनों में चमकती कुल्हाड़ियों के भय से
पेड़ों की चीत्कार?

कुल्हाड़ियों के वार सहते
किसी पेड़ की हिलती टहनियों में
दिखाई पड़े हैं तुम्हें
बचाव के लिए पुकारते हज़ारों-हज़ार हाथ?

क्या, होती है तुम्हारे भीतर धमस
कटकर गिरता है जब कोई पेड़ धरती पर?

सुना है कभी
रात के सन्नाटे में अँधेरे से मुँह ढाँप
किस कदर रोती हैं नदियाँ?

इस घाट अपने कपड़े और मवेशी धोते
सोचा है कभी कि उस घाट
पी रहा होगा कोई प्यासा पानी
या कोई स्त्री चढ़ा रही होगी किसी देवता को अर्घ्य?

कभी महसूस किया कि किस कदर दहलता है
मौन समाधि लिए बैठे पहाड़ का सीना
विस्फोट से टूटकर जब छिटकता दूर तक, कोई पत्थर?

सुनाई पड़ी है कभी भरी दुपहरिया में
हथौड़ों की चोट से टूटकर बिखरते पत्थरों की चीख़?

ख़ून की उल्टियाँ करते
देखा है कभी हवा को, अपने घर के पिछवाड़े?

थोड़ा-सा वक्त चुराकर बतियाया है कभी
कभी शिकायत न करने वाली
गुमसुम बूढ़ी पृथ्वी से उसका दुख?

अगर नहीं, तो क्षमा करना!
मुझे तुम्हारे आदमी होने पर संदेह है!!

-निर्मला पुतुल

शब्दार्थ

चीत्कार	= कष्ट या पीड़ा में चिल्लाने की आवाज़
धमस	= चोट, आघात (किसी आघात की गूँज)
किस कदर	= कितना अधिक
घाट	= नदी किनारे का वह स्थान, जहाँ लोग नहाते-धोते हैं
मवेशी	= पालतू पशु
अर्घ्य	= जल या दूध आदि देवता को अर्पित करना
समाधि	= ध्यान की मुद्रा
गुमसुम	= चुपचाप, विचारों में खोई, स्तब्ध

टिप्पणी

14.2 आइए समझें

यह तो आप जानते ही हैं कि सभी प्राणियों में मनुष्य ही ऐसा है, जिसमें बुद्धि, विवेक और कल्पना-शक्ति है। इसीलिए, वह दूसरों में अपनी तरह प्राण देखता है, जड़-चेतन में दुख-सुख की कल्पना करके, उनके दुख को अपना मानकर उसे दूर करने का उपाय करता है। 'बूढ़ी पृथ्वी का दुख' एक ऐसी कविता है, जिसमें पेड़, नदी, पहाड़, हवा और पृथ्वी को मनुष्य के रूप में चित्रित किया गया है। साहित्य की भाषा में इसे 'मानवीकरण' कहते हैं, अर्थात् जो मानव नहीं है, जड़ है- कल्पना-शक्ति से उसे मानव जैसा व्यवहार करते दिखाना। आप एक अन्य कविता पढ़ रहे है:- 'बीती विभावरी जाग री!' उस कविता में प्राकृतिक सौंदर्य के विषय में बताने के लिए मानवीकरण किया गया है। इसी तरह, 'चंद्रगहना से लौटती बेर' में विवाह-समारोह के दृश्य के रूप में प्रकृति का चित्रण है। लेकिन, 'बूढ़ी पृथ्वी का दुख' कविता में मानवीकरण सौंदर्य-वर्णन के लिए नहीं किया गया है। इसमें प्रकृति तथा पृथ्वी के दुख का अहसास कराने के लिए मानवीकरण किया गया है।

चित्र 14.1

पेड़, नदी, पहाड़ और हवा हमसे अलग नहीं हैं, हमारे साथी हैं। हम इन पर निर्भर हैं। इनके बिना हमारा होना ही ख़तरे में है। इसलिए इनका दुख हमारा दुख है। आप जानते ही हैं कि पेड़, नदी, पहाड़, हवा आदि को मिलाकर पर्यावरण बनता है। 'पर्यावरण' शब्द 'परि' और 'आवरण' से बना है, जिसका अर्थ है- हमारे आस-पास की प्राकृतिक स्थिति। पर्यावरण प्रकृति का अमूल्य उपहार है। अपनी संतुलित ज़िंदगी के लिए मनुष्य पेड़-पौधों, जल, वायु, जीव-जंतुओं, पर्वत आदि पर निर्भर है, फिर भी ज़्यादा-से-ज़्यादा सुविधाओं के भोग के लालच में वह इनका अंधाधुंध दोहन अर्थात् अनावश्यक उपयोग करता आ रहा है। ऐसा करके वह प्राकृतिक आपदाओं, जैसे– बाढ़, भूकंप, सूखा आदि को न्योता देता है।

ऐसा नहीं है कि सभी लोग प्रकृति का दोहन ही कर रहे हैं। हममें से कुछ लोग ऐसे भी हैं, जो प्रकृति के कष्ट को महसूस करते हैं। वे सही अर्थों में मनुष्य हैं। आपने जो कविता

अभी पढ़ी, उसमें प्रकृति के कष्टों और उसके भय का चित्रण किया गया है। आवश्यकता है कि इस कष्ट और भय को हम सभी महसूस कर सकें।

आइए, अब हम कविता की आरंभिक नौ पंक्तियों का भाव समझने के लिए इन्हें एक बार फिर से पढ़ लें।

14.2.1 अंश-1

कवयित्री कल्पना करती है कि मनुष्य की तरह पेड़ भी भयभीत होते हैं। वे भय से चीख़ते-चिल्लाते भी हैं। वे भी बचाव के लिए पुकारते हैं। जैसे हम भयानक सपने देखते हैं, तो डर से चिल्ला पड़ते हैं, वैसे ही पेड़ों को भी सपने आते हैं। वे सपने बड़े भयानक हैं। उनके सपनों में चमकती हुई कुल्हाड़ियाँ पेड़ों को काटने के लिए तत्पर हैं और पेड़ इन कुल्हाड़ियों के डर से चीख़ रहे हैं। कविता की इन पंक्तियों में कुछ प्रश्न पूछे गए हैं। कवयित्री पेड़ों के पक्ष में ये सवाल पूछ रही है। उसके सवाल उस 'सभ्य समाज' से है, जो पेड़ों के साथ नहीं जीता, बल्कि पेड़ों को अपने उपयोग के लिए नष्ट करता है। ये प्रश्न हम सबसे भी किए गए हैं।

कविता में इस दृश्य की कल्पना की गई है, लेकिन वास्तविकता में यह केवल कल्पना नहीं, बल्कि सच है। इन पंक्तियों में एक बहुत बड़ी चिंता व्यक्त की गई है। वह चिंता है- घटते हुए वृक्ष, घटती हुई हरियाली और मानव-जीवन पर इसका विनाशकारी प्रभाव। सोचिए कि इस स्थिति का ज़िम्मेदार कौन है? इसके ज़िम्मेदार हम सभी हैं। हमें भय से चीत्कार करते पेड़ों के कष्ट से कोई सरोकार नहीं। हम बस अपने स्वार्थ में अंधे हैं। भविष्य और दूसरों की चिंता किए बिना चीज़ों को ज़्यादा-से-ज़्यादा भोग लेने की उपभोक्तावादी प्रवृत्ति आजकल इन्सानों में बढ़ती जा रही है। इस आदत का कुप्रभाव प्रकृति पर भी पड़ता है। यह प्रकृति-विरोधी रवैया पूरी तरह से स्वार्थ पर आधारित है।

सही मायने में मनुष्य वह है, जो अपने स्वार्थ को छोड़कर भय से चीख़ते पेड़ों के दुख को महसूस करे और इन्हें बचाने का प्रयास करे। इसीलिए, कवयित्री प्रश्न करती है- 'क्या तुमने कभी सुनी है, सपनों में चमकती कुल्हाड़ियों के भय से पेड़ों की चीत्कार?' आप समझ गए होंगे कि यह वास्तव में प्रश्न नहीं, उत्तर भी है। कई बार हम किसी बात के आग्रह के लिए उसे प्रश्न के रूप में रखते हैं। कवयित्री का आग्रह है कि हमें भयभीत पेड़ों की चीत्कार महसूस करनी चाहिए। वैसे भी पेड़ों पर आया संकट मनुष्यता पर घिरा संकट है और इस तरह पेड़ों का भय वास्तव में मनुष्य का ही भय है। आख़िर पेड़ नहीं रहेंगे, तो मनुष्य रहेगा क्या?

कवयित्री ने पेड़ के अंगों में मानव-अंगों की कल्पना की है। कविता में की गयी कल्पना हमें दूसरों के दुख से जोड़ती है, हमें दूसरों से समानुभूति रखना सिखाती है और अधिक संवेदनशील बनाती है। यह कविता हमें प्रकृति के दुख से जोड़कर अधिक सजग और उदार मनुष्य बनाती है।

क्या तुमने कभी सुनी है
सपनों में चमकती कुल्हाड़ियों के भय
से पेड़ों की चीत्कार?

कुल्हाड़ियों के वार सहते
किसी पेड़ की हिलती टहनियों में
दिखाई पड़े हैं तुम्हें
बचाव के लिए पुकारते हज़ारों-हज़ार
हाथ?

क्या, होती है तुम्हारे भीतर धमस
कटकर गिरता है जब कोई पेड़ धरती
पर?

आपने यह महसूस किया होगा कि जब वर्षा होती है, तो पेड़ साफ़-सुथरे, हरे-भरे हो जाते हैं। जब हवा चलती है, तो पेड़ प्रसन्न होकर झूमने लगते हैं। क्या आपने पेड़ों में मनुष्य की कल्पना नहीं की? क्या कभी ऐसा नहीं हुआ कि पेड़ों की टहनियाँ आपको उनके हाथों-सी लगी हों? कवयित्री ने इन पंक्तियों में बहुत ही मार्मिक यानी मन को छू लेने वाली कल्पना की है। पेड़ कुल्हाड़ी की चोट की आशंका से भयभीत होकर बचाव के लिए पुकारने लगता है। पेड़ की काँपती हुई टहनियाँ मानो बचाव के लिए पुकारते उसके हजारों हाथ हैं। मानो वे हमारी ओर उठे हैं कि हम पेड़ को बचाएँ। कवयित्री चाहती है कि हम पेड़ों के प्रति संवेदनशील हों और उन्हें कटने से बचाएँ।

जब हमारा कोई आत्मीय छोड़कर चला जाता है तो बेहद पीड़ा होती है वैसी ही पीड़ा किसी पेड़ के कटने पर भी होनी चाहिए, क्योंकि उनपर हमारा जीवन निर्भर है, वे हमारी जीवनी शक्ति हैं। उनमें भी जीवन होता है। अतएव किसी पेड़ के कटकर धरती पर गिरने पर उसकी आवाज़ उसी तरह ठेस पहुँचाएगी, मानो हमारा ही कोई हिस्सा कटकर गिर गया हो। धरती पर मज़बूती से खड़ा, हवा के स्पर्श से झूमता हुआ पेड़ कितना अच्छा लगता है! लेकिन, वही पेड़ जब धरती पर गिर जाए, तो हमें कितना आघात पहुँचाता है। क्या हम सभी के लिए इस चोट को महसूस करना ज़रूरी नहीं है?

यह भी जानिए

प्रकृति का आवश्यकता से अधिक उपभोग करने वालों और प्रकृति को हानि पहुँचाने वालों के विरोध का लंबा इतिहास हमारे देश में रहा है। आइए, इससे संबंधित कुछ बातें जानें :

'चिपको आंदोलन' का नाम तो आपने सुना ही होगा। क्या आप जानते हैं कि यह आंदोलन हिमालय पर स्थित गढ़वाल क्षेत्र के चमोली ज़िले के एक गाँव रैंणी से शुरू हुआ था। इस गाँव की एक साधारण-सी दिखने वाली महिला गौरा देवी ने वनों के महत्त्व और प्रकृति की पीड़ा को समझ लिया था। ठेकेदार के आदमी नीलाम हुए 2451 पेड़ों को काटने आए थे। गौरा देवी ने उनसे कहा कि यह जंगल और ये पेड़ हमारे देवता हैं। इन पर हमारा जीवन आश्रित है, इसलिए हम इन्हें नहीं काटने देंगे। यह कहकर गौरा देवी और उनकी सहेलियाँ पेड़ों से चिपककर खड़ी हो गईं। यही चिपकना 'चिपको आंदोलन' बन गया। इस आंदोलन का नारा है-

क्या हैं जंगल के उपकार- मिट्टी, पानी और बयार।
मिट्टी, पानी और बयार- ज़िंदा रहने के आधार।।

सन् 1987 में इस आंदोलन को 'सम्यक जीविका पुरस्कार' (Right Livelihood Award) प्रदान किया गया।

'चिपको आंदोलन' को लोकप्रिय बनाने के लिए सुंदरलाल बहुगुणा विश्व-भर में 'वृक्षमित्र' के नाम से प्रसिद्ध हुए।

टिप्पणी

क्रियाकलाप-14.1

वृक्षों को बचाने के लिए किए जा रहे प्रयासों के विषय में आपने पढ़ा। अपने आस-पास पेड़ों के साथ किए जा रहे व्यवहार को ध्यान से देखिए। इसके बाद पेड़ों की रक्षा के लिए कम-से-कम तीन ऐसे उपाय लिखिए, जिन्हें आप अपनाना चाहेंगे:

उपाय-1 :..

....

उपाय-2 :..

....

उपाय-3 :..

....

पेड़ों के लाभ-

- ऑक्सीज़न के बड़ स्रोत होते हैं।
- वर्षा में ज़मीन की उपजाऊ परत को कटने से बचाते हैं।
- भू-जल के स्तर बनाए रखने में सहायक होते हैं।
- जल-चक्र के नियमन में सहायक होते हैं।
- फूल फल देते हैं।
- जैव-विविधता बनाए रखते हैं।
- छाया और ठंडक देते हैं।
- जड़ी-बूटियों, दवाइयों के स्रोत होते हैं।
- वातावरण को धूल, प्रदूषण आदि से बचाते हैं।
- इनकी सूखकर गिरी टहनियाँ ईंधन के रूप में काम आती हैं।
- धरती का सौंदर्य बढ़ाते हैं।

14.2.2 अंश-2

आइए, अब 'बूढ़ी पृथ्वी का दुख' कविता का दूसरा अंश फिर से पढ़ें। यह अंश किसके दुख को व्यक्त करता है? जी हाँ, हमारी धरती की जीवन-रेखा अर्थात् नदियों के दुख को। जिस तरह पेड़ अपने फल दूसरों को दे देते हैं, वैसे ही नदियाँ भी अपना जल दूसरों को सौंप देती हैं। वे अपने जल के रूप में हमें जीवन देती हैं, पर हम उन्हें ही बरबाद कर रहे हैं। आपने देखा होगा कि बड़े-बड़े कारखानों का गंदा पानी नदियों में गिराया जाता है। कूड़ा भी नदियों में डाल दिया जाता है। श्रद्धा तथा धर्म के नाम पर लोग नदियों में ऐसी चीज़ें बहाते हैं, जिनसे नदियाँ गंदगी से भर जाती हैं। प्रतिबंध के बाद भी साबुन लगाकर नहाते हैं। जो नदियाँ कभी स्वच्छ पानी को लेकर कल-कल करती बहती थीं, आज वे गंदे नाले बनकर रह गई हैं। कवयित्री इसी बात से दुखी है।

चित्र 14.2

वह हम सबसे पूछती

टिप्पणी

सुना है कभी
रात के सन्नाटे में अँधेरे से मुँह ढाँप
किस कदर रोती हैं नदियाँ?

इस घाट अपने कपड़े और मवेशी धोते
सोचा है कभी कि उस घाट
पी रहा होगा कोई प्यासा पानी
या कोई स्त्री चढ़ा रही होगी किसी देवता को अर्घ्य?

है 'सुना है कभी रात के सन्नाटे में अँधेरे से मुँह ढाँप किस कदर रोती हैं नदियाँ?' ऐसा लगता है कि कवयित्री ने नदी का रोना सुना है। नदी के साथ वह खुद भी रोती है। जिनका जीवन नदियों, पेड़ों और वनस्पतियों पर सीधे-सीधे निर्भर है, वे इनकी दुर्दशा पर दु:खी होते हैं। कवयित्री उसी दुख का बोध शहरी लोगों और शिक्षित नागरिकों को कराना चाहती है। यहाँ पर पेड़ की तरह नदी का भी मानवीकरण किया गया है। मनुष्य जब किसी गहरी पीड़ा से ग्रस्त होता है और उसके दुख को समझने वाला कोई नहीं होता, तो वह एकांत में सिसक-सिसक कर रोता है। नदी भी ऐसा ही करती है। वह मुँह ढाँपकर रोती है। नदी भी तो आंतरिक रूप से पीड़ित है। उसकी पीड़ा यह है कि वह हमें जीवन देने के लिए अपना जल हमें दे देती है और हम हैं कि उसे नष्ट कर रहे हैं। यहाँ पर नदियों के घटते पानी, उनमें बढ़ते प्रदूषण को लेकर दुख प्रकट किया है।

कविता के इस अंश में नदी के दो किनारों का चित्रण किया गया है। एक किनारा वह है, जहाँ पर कोई स्वार्थी व्यक्ति अपने मवेशी अर्थात् आजीविका के लिए पाले जाने वाले पशुओं को नहला रहा है और कोई साबुन से अपने मैले कपड़े धो रहा है और इस प्रकार वे दोनों नदी के जल को गंदा कर रहे हैं। दूसरे किनारे पर कोई प्यासा पानी पी रहा है और कोई स्त्री किसी देवता को अर्घ्य दे रही है अर्थात् देवता को जल चढ़ाकर पूजा कर रही है। आप जानते ही हैं कि पीने के लिए साफ़ पानी की ज़रूरत है। देवता को चढ़ाए जाने वाला जल भी स्वच्छ एवं पवित्र होना चाहिए। किंतु, ऐसा प्रदूषित जल पीना हानिकारक होगा और भला देवता को भी गंदा जल कैसे चढ़ाया जा सकता है? इसलिए पानी को प्रदूषित करने वाले लोगों को इस बात पर विचार करना चाहिए कि नदियों अथवा पानी के साथ उनके द्वारा किए गए व्यवहार से दूसरों पर क्या प्रभाव पड़ेगा। कवयित्री ऐसे लोगों से प्रश्न पूछकर उन्हें पानी के साथ किए गए व्यवहार के लिए शर्मिंदा करना चाहती है।

यह कविता हमें कई बातों पर सोचने के लिए प्रेरित करती है। कभी-कभी हम ऐसी चीज़ों का दुरुपयोग करते हैं, जिन पर दूसरों का भी अधिकार है। क्या आप जानते हैं कि हमें सदैव इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि एक के अधिकारों के साथ दूसरों के भी अधिकार जुड़े होते हैं। इसलिए अधिकार कुछ कर्तव्यों की भी माँग करते हैं। इस बात को आप 'आज़ादी' नामक कविता में भी पढ़ रहे हैं। उसमें आज़ादी का वास्तविक अर्थ समझाया गया है।

आप समझ गए न कि जो चीज़ें हमें प्रकृति ने दी हैं, उन पर केवल हमारा ही अधिकार नहीं है, आने वाली पीढ़ियों का भी है। हो सके, तो प्रकृति द्वारा दी गई संपत्ति में बढ़ोत्तरी ही करनी चाहिए। इससे आने वाली पीढ़ियाँ हमें याद करके खुश होंगी और वे भी प्रकृति के साथ वही व्यवहार करेंगी।

कविता के इस अंश के माध्यम से कवयित्री हमें अपने कर्त्तव्यों की याद दिलाती है। हमारा कर्त्तव्य है कि हम नदियों को साफ़ रखें, उन्हें सूखने से बचाएँ, जल के अन्य स्रोतों,

टिप्पणी

जैसे–तालाब, झील, कुएँ आदि को बढ़ावा दें, ताकि नदियों पर निर्भरता थोड़ी कम हो सके और उनमें पानी बना रहे। हम जब भी पानी का उपयोग करें, तो यह याद रखें कि इसकी ज़रूरत औरों को भी है। संसार की बहुत बड़ी आबादी प्रदूषित पानी का उपयोग करने के लिए विवश है। विश्व में प्रतिदिन लगभग पच्चीस हज़ार लोग पानी से होने वाले रोगों से मर जाते हैं।

पाठगत प्रश्न–14.1

सर्वाधिक उपयुक्त विकल्प चुनकर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

1. मानवीकरण का अर्थ है–

(क) जो मानव नहीं, उसे मानव के रूप में कल्पित करना ☐

(ख) दूसरों के सुख-दुख को अपना सुख-दुख मानना ☐

(ग) पेड़, पहाड़, नदी आदि के प्रति चिंता प्रकट करना ☐

(घ) सच्चा मनुष्य बनने की क्रिया ☐

2. पर्यावरण का अर्थ है-

(क) मनुष्य के लिए अनिवार्य आस-पास की प्राकृतिक स्थिति ☐

(ख) प्राकृतिक आपदाएँ, जैसे- भूकंप, बाढ़, सूखा आदि ☐

(ग) वृक्षों, नदियों, पहाड़ों को मनुष्य के रूप में चित्रित करना ☐

(घ) प्रकृति को सूक्ष्मता के साथ देखने की क्षमता ☐

3. कविता में पेड़ों के हज़ारों हज़ार हाथों के हिलने से अभिप्राय है–

(क) खुशी से झूम उठना ☐ (ग) तूफ़ान से काँपना ☐

(ख) रक्षा की गुहार लगाना ☐ (घ) हवा से थिरकना ☐

4. निम्नलिखित कथनों में से सही के आगे (√) और गलत के आगे (X) का निशान लगाइए :

(क) 'नदियाँ मुँह ढाँपकर रोती हैं' का अर्थ है– उनकी पीड़ा को कोई समझ नहीं रहा। ☐

(ख) 'नदियाँ मुँह ढाँपकर रोती हैं' में मानवीकरण है। ☐

(ग) प्राकृतिक संसाधनों का मनमाना उपयोग हमारा अधिकार है। ☐

(घ) 'सोचा है कभी कि उस घाट...' प्रश्न के द्वारा कवयित्री घाट की सराहना करना चाहती है। ☐

टिप्पणी

कभी महसूस किया कि किस कदर दहलता है
मौन समाधि लिए बैठे पहाड़ का सीना
विस्फोट से टूटकर जब छिटकता दूर तक कोई पत्थर
सुनाई पड़ी है कभी भरी दुपहरिया में
हथौड़ों की चोट से टूटकर
बिखरते पत्थरों की चीख़?

14.2.3 अंश-3

आपने पेड़ों, नदियों और पर्वतों से संबंधित अनेक कथाएँ सुनी होंगी। बहुत पहले से ही हमारी कथाओं में इनका मानवीकरण किया जाता रहा है। पर्वतों के बारे में तो यह कल्पना भी की गई है कि उनके पंख होते थे। वे इधर-उधर उड़ते फिरते थे। 'बूढ़ी पृथ्वी का दुख' में पहाड़ के मानवीकरण का उद्देश्य अलग ही है। आइए, इसे समझें।

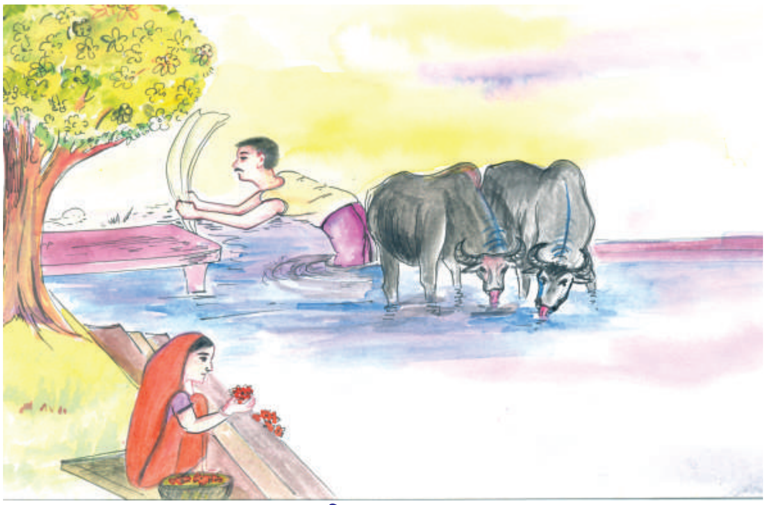

चित्र 14.3

जिस तरह कविता में पहले कुछ सुनने, कुछ देखने और कुछ सोचने का आग्रह किया गया है, वैसे ही कुछ महसूस करने पर भी बल दिया गया है। गिरते हुए पेड़ की धमस के संदर्भ में भी महसूस करने का एक रूप आ चुका है। इस अंश में पहाड़ की भयंकर यातना को महसूस करने का आग्रह किया गया है। आपने मनुष्य के लिए तो 'दिल दहलना' का प्रयोग सुना ही होगा। जब कोई भयानक स्थिति या विपत्ति आती है तो उसे देखकर या उसका सामना करते हुए व्यक्ति का दिल दहलता है अर्थात् वह भीतर तक हिल जाता है या काँप जाता है।

पहाड़ मौन समाधि लिए बैठा है अर्थात् विशाल पहाड़ की स्थिरता को देखकर लगता है, जैसे वह मौन समाधि में बैठा हो। अनेक चित्रों में आपने ऋषि-मुनियों को इस तरह बैठे देखा होगा। पहाड़ भी इस मुद्रा में बैठे दिखते हैं न? कवयित्री की इस सुंदर कल्पना को असुंदर बनाता है– मनुष्य का पहाड़ के साथ किया गया व्यवहार। मनुष्य एक तरफ़ निर्माण करता है, तो दूसरी तरफ़ विनाश भी करता है। मनुष्य ऊँची-ऊँची इमारतें बनाने के लिए पत्थर, सीमेंट आदि पाने को पहाड़ में डाइनामाइट लगाकर उसमें विस्फोट करता है। जब पहाड़ विस्फोट से टूटता है, तो ऐसा लगता है, मानो मनुष्य के इस व्यवहार से उसका सीना दहल गया हो। कोई ठोस चीज़ बहुत तेज़ आघात या चोट से टूटती है, तो उसके कुछ टुकड़े तेज़ गति से बहुत दूर तक इधर-उधर जा गिरते हैं। इसे इन टुकड़ों का छिटकना कहते हैं। पहाड़ के सीने पर मनुष्य तेज आघात करता है, इससे उसके पत्थर छिटककर दूर गिरते हैं। कविता की इन पंक्तियों में पहाड़ के प्रति मनुष्य के क्रूर व्यवहार की ओर संकेत किया गया है।

पिछले अंश में कवयित्री ने नदियों की रुलाई सुनने का आग्रह किया है, तो इस अंश में हथौड़ों की चोट से टूटकर बिखरते पत्थरों की चीख़ को सुनने का।

यह भी जानिए

- क्या आप जानते हैं कि पौधारोपण करके बंजर हुई धरती को फिर से हरा-भरा बना सकते हैं। वर्षा के जल का संरक्षण करके और तालाब-बावड़ियाँ बनाकर या उन्हें बचाकर पानी की कमी को दूर कर सकते हैं। लेकिन, यदि पहाड़ एक बार नष्ट हो गए, तो उन्हें फिर से उत्पन्न नहीं किया जा सकता।
- पहाड़ को प्राचीन समय में ही 'भूधर' नाम दे दिया गया था। भूधर का अर्थ है- भूमि को धारण करने वाला। यदि पहाड़ न हों, तो धरती के भीतर होने वाली हलचलें, गतिविधियाँ, गैसें आदि धरती को नष्ट कर सकती हैं। पहाड़ इन आंतरिक हलचलों से धरती की रक्षा करते हैं। वे इन विनाशकारी हलचलों को ज्वालामुखी तथा अपने शिखरों के माध्यम से बाहर निकाल देते हैं, इसलिए उन्हें 'भूधर' कहा जाता है।
- पहाड़ों के जंगल से लकड़ी के साथ-साथ बहुमूल्य खनिज पदार्थ भी मिलते हैं।

क्रियाकलाप-14.2

पर्वत मनुष्य के लिए प्रेरणा का स्रोत है। विशालता, महानता और हौसले के लिए पर्वत जैसी उपमा किसी और से नहीं दी जा सकती। ऊँचाई और बड़प्पन के संदर्भ में भी पर्वत की बात की जाती है, कुछ मुहावरे देखिए:

- पहाड़ टूटना
- पहाड़ से टक्कर लेना
- खोदा पहाड़ निकली चुहिया

कम-से-कम तीन ऐसे मुहावरे लिखिए, जिनमें पहाड़ या पर्वत की विशालता का उल्लेख हो।

1.................................2.......................................3................................

14.2.4 अंश-4

आपने सुना होगा कि ख़ून की उल्टियाँ एक भयंकर रोग का लक्षण होती हैं। वह भयंकर रोग है- टी.बी.। अर्थात् ट्यूबर क्लोसिस। इसे क्षय रोग, यक्ष्मा या तपेदिक भी कहते हैं। यह प्राय: फेफड़ों का रोग है और तब होता है, जब फेफड़ों को स्वच्छ वायु न मिले।

खून की उल्टियाँ करते
देखा है कभी हवा को, अपने
घर के पिछवाड़े

वायु-प्रदूषण का कारण क्या है? बड़े-बड़े कारखाने, उनमें बड़ी-बड़ी मशीनें, धुआँ उगलती चिमनियाँ, सड़कों पर वाहनों की लंबी-लंबी कतारें। वायु-प्रदूषण से खुद वायु ही रोगी हो जाती है, इसीलिए कवयित्री ने हवा को खून की उल्टियाँ करते दिखाया है।

कविता के इस अंश में एक शब्द आया है- पिछवाड़े। यहाँ पर इस शब्द का प्रयोग विशेष उद्देश्य से किया गया है। आप इस शब्द का अर्थ तो जानते ही होंगे, जी हाँ- घर के पीछे का हिस्सा। हमारा सारा ध्यान मुख्य द्वार की सजावट और सफ़ाई पर रहता है। पिछवाड़े की हम चिंता नहीं करते। वहाँ कूड़ा फेंकते हैं। इससे गंदगी-बदबू फैलती है। इसी प्रकार, मनुष्य विकास के बड़े-बड़े दावे करता है। अपनी उपलब्धियाँ गिनाता है। जो सुविधाएँ उसने प्राप्त की हैं, उनको बढ़ा-चढ़ाकर दिखाता है। लेकिन, दीखना एक बात है और होना कुछ और। कबूतर के आँख मूँदने से जैसे बिल्ली उसे खाना नहीं छोड़ देती, वैसे ही बाहर की सफ़ाई भीतर की गंदगी को कम नहीं कर सकती और उसके दुष्परिणामों से हमें बचा नहीं सकती। इन पंक्तियों में विकास-कार्यों से फैलने वाली गंदगी अर्थात् प्रदूषण की आलोचना की गई है। प्रदूषित हवा गंभीर रोगों का कारण बनती है। इसीलिए, यहाँ हवा को प्रदूषित होने से बचाने का आग्रह है।

पाठगत प्रश्न-14.2

सर्वाधिक उपयुक्त विकल्प चुनकर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

1. हृदय-विदारक का अर्थ देने वाला मुहावरा कौन-सा है-

   (क) सीने पर पहाड़ रखा होना ☐ (ख) छाती पर साँप लोटना ☐

   (ग) दिल दहलना ☐ (घ) कलेजे पर पत्थर रखना ☐

2. 'खून की उल्टियाँ करते... अपने घर के पिछवाड़े' पंक्तियों के माध्यम से कवयित्री-

   (क) चंद लोगों के विकास की यातना झेलने वाले वर्ग की पीड़ा का संकेत करती है। ☐

   (ख) घर के पिछले भागों को साफ़-सुथरा रखने का आग्रह करती है। ☐

   (ग) प्रकृति पर मनुष्य की विजय का उद्घोष करती है। ☐

   (घ) (क) और (ग) दोनों ☐

3. निम्नलिखित कथनों में से सही के आगे (√) और गलत के आगे (X) का निशान लगाइए :

   (क) हमें जल का उपयोग करते हुए भावी पीढ़ी का ध्यान रखना चाहिए। ☐

टिप्पणी

(ख) कवयित्री ने विकास के लिए पहाड़ों को विस्फोट से उड़ाना मनुष्य की मजबूरी बताया है। ☐

(ग) पहाड़ पृथ्वी की रक्षा के लिए आवश्यक हैं, इसलिए इन्हें 'भूधर' भी कहते हैं। ☐

(घ) व्यक्तिगत स्वार्थ प्राकृतिक संसाधनों का सबसे बड़ा दुश्मन है। ☐

14.2.5 अंश-5

आइए, कविता की अंतिम पाँच पंक्तियाँ फिर से पढ़ लेते हैं।

थोड़ा-सा वक्त चुराकर बतियाया है कभी
कभी शिकायत न करने वाली
गुमसुम बूढ़ी पृथ्वी से उसका दुख?
अगर नहीं, तो क्षमा करना!
मुझे तुम्हारे आदमी होने पर संदेह है!!

इन पंक्तियों में कवयित्री ने पृथ्वी को बूढ़ी औरत के रूप में प्रस्तुत करते हुए उसके दुख को प्रकट किया है। साथ ही मनुष्य होने का वास्तविक अर्थ भी बताया है।

हम देखते हैं कि आजकल अधिकतर लोग ज़्यादा से ज़्यादा सुविधाएँ प्राप्त करने की होड़ में व्यस्त हैं। इसी के चलते उन लोगों ने अपने लिए अनेक उलझनें खड़ी कर ली हैं। अब उनके पास मानवीय तथा बेहद ज़रूरी कार्यों के लिए भी समय नहीं है। इसका प्रभाव पूरे परिवार पर पड़ता है। अपने आस-पास के कुछ घरों में बुज़ुर्गों को देखें- उन्होंने अपनी संतान को पाल-पोस कर बड़ा किया और अब उनकी संतान के पास इतना भी समय नहीं है कि वह उनकी देखभाल और सेवा कर सके, उनसे बात करके उनका दुख-सुख पूछे। ऐसे में ये बड़े-बूढ़े बहुत उदास, चुप तथा दुखी रहते हैं। इन बुज़ुर्गों की तरह ही हमारी पृथ्वी की स्थिति हो गयी है।

इस कविता का शीर्षक ही है- 'बूढ़ी पृथ्वी का दुख।' सवाल उठता है कि पृथ्वी को यहाँ पर बूढ़ी क्यों कहा गया है? इसलिए कि यदि पेड़-पौधे कम हो रहे हों, नदियाँ सूख रही हों, पहाड़ों को नष्ट किया जा रहा हो, पानी गंदा हो रहा हो, हवा प्रदूषित हो रही हो तो पृथ्वी कैसी लगेगी? बूढ़ी ही लगेगी न? वास्तव में, मुँह ढाँपकर रोने और पिछवाड़े खाँसने वाली भी यही 'बूढ़ी' है, क्योंकि नदी, पेड़, हवा आदि इसी पृथ्वी के अंग हैं। हम देखते हैं कि शरीर का ध्यान न रखने से बुढ़ापे में दाँत गिर जाते हैं, शरीर पर झुर्रियाँ पड़ जाती हैं, केश सफ़ेद हो जाते हैं, शरीर रोगी हो जाता है। इसी प्रकार हरियाली, शुद्ध पानी, स्वच्छ हवा, विशाल पर्वतों के बिना धरती भी बंजर, रूखी और रोगी हो जाती है। मनुष्य अपने आपको चुस्त-दुरुस्त और स्वस्थ बनाए रखने के लिए अनेक उपाय करता है। वह सुबह-शाम सैर करता है, व्यायाम करता है और खान-पान का ध्यान रखता है। क्या उसे इतना ही ध्यान धरती का भी नहीं रखना चाहिए? मनुष्य चाहे तो धरती को असमय के बुढ़ापे से बचा सकता है अर्थात् हरा-भरा और प्राकृतिक संसाधनों से संपन्न बना सकता है।

टिप्पणी

क्रियाकलाप-14.3

वायु-प्रदूषण के कुछ कारणों के विषय में आप जान चुके हैं। इनके अतिरिक्त और भी अनेक कारण हो सकते हैं, जिन्हें आप अपने आस-पास देखते हैं। इनमें से किन्हीं दो का उल्लेख करते हुए उन्हें रोकने के लिए पोस्टर तैयार कीजिए।

....

....

....

14.3 भाव-सौंदर्य

आइए, एक बार पूरी कविता को एक साथ पढ़कर उस पर विचार करें। इस कविता में अनेक प्रश्न हैं। इन प्रश्नों को एक बार फिर से याद कीजिए। इन प्रश्नों के माध्यम से कुछ सुनने, देखने, महसूस करने, सोचने और थोड़ा-सा समय निकालकर बतियाने का आग्रह किया गया है। भला किनके बारे में? ज़ाहिर है कि पेड़, नदी, पहाड़, हवा के बारे में और मूल रूप से उस पृथ्वी के बारे में, जिसके ये सब अवयव / अंग हैं। पेड़ विपत्ति में हैं, नदी ... पहाड़ धैर्यवान सज्जन के रूप में हैं, हवा रोगी है, तो पृथ्वी बूढ़ी। आप जानते हैं कि मनुष्य को प्रकृति की सर्वोत्तम रचना माना जाता है। क्यों? इसलिए कि मनुष्य के पास बुद्धि है, विवेक है, और है संवेदनशीलता। इसी संवेदनशीलता के चलते मानव-मूल्यों का निर्माण हुआ है। विपत्ति में पड़े हुए, सज्जन, रोगी और बुज़ुर्ग की रक्षा करना, उनकी सेवा करना मानव-धर्म है। कवयित्री कहती है कि यदि तुमने यह सब नहीं किया, तो क्षमा करना, मुझे तुम्हारे आदमी होने पर संदेह है! जानते हैं ऐसा कवयित्री ने क्यों कहा? क्योंकि मनुष्य से ही आशा की जाती है कि वह पृथ्वी का दुख समझे। ऐसी संवेदनशीलता मनुष्य में ही होती है।

लेकिन, यह संदेह कवयित्री ने बड़ी ही विनम्रता से, समझाने के अंदाज़ में किया है। वह क्षमा माँगते हुए यह बात कहती है कि वह यह बात कहना तो नहीं चाहती, पर धरती पर आए संकट के कारण उसे विवश होकर यह कहना पड़ रहा है।

14.4 भाषा-सौंदर्य

इस कविता में भावों को कहने के लिए कम-से-कम शब्दों का उपयोग किया गया है। आपने यह भी देखा कि आरंभ से अंत तक बातचीत की शैली है। कवयित्री अपने पाठक को संबोधित करती है। वह पाठक से अनेक प्रश्न पूछती है। अर्थात्, कविता प्रश्न-शैली में है। लेकिन क्या आप जानते हैं कि ये सामान्य ढंग के प्रश्न नहीं हैं। प्रश्नों को पूछने की शैली ऐसी है कि इनमें कवयित्री का सुझाव निहित है। वह अपने पाठकों से चाहती है कि वे कुछ करें। वह कुछ क्या है, यह आप समझ ही चुके हैं।

कभी-कभी बातचीत करते हुए आप भी सुनने वाले के सामने प्रश्न के माध्यम से किसी कार्य को करने का प्रस्ताव रखते होंगे। जैसे, आप किसी से कहें- 'क्या तुमने ताजमहल देखा है?' तो आपकी इच्छा यह होती है कि सुनने वाला ताजमहल देखे। 'क्या तुम शाम को आ सकते हो?' 'क्या तुम पटना जा सकते हो?', 'क्या आपके पास पेन है?' आदि वाक्य ऐसे ही हैं। कवयित्री ने इस शैली का उपयोग पूरी कविता में किया है। इस शैली से कविता का प्रभाव और सौंदर्य बढ़ गया है। यह शैली कविता के उद्देश्य को व्यक्त करने में भी सहायक है।

आपने यह भी ध्यान दिया होगा कि इस कविता में दृश्यात्मकता है अर्थात् इसकी पंक्तियाँ चित्रों का काम करती हैं। जैसे- कुल्हाड़ियों के भय से चीत्कार करते पेड़, पेड़ की हिलती टहनियों में बचाव के लिए पुकारते हज़ारों-हज़ार हाथ, मुँह ढाँपकर रोती नदी, मौन समाधि लिए बैठे पहाड़ का सीना, ख़ून की उल्टियाँ करती हवा और गुमसुम बूढ़ी पृथ्वी। इस चित्रात्मकता का बहुत बड़ा कारण इन स्थलों पर प्रयुक्त मानवीकरण भी है।

कविता के अंतिम अंश में कवयित्री ने क्षमा माँगी है। आपको लग सकता है कि कवयित्री ने तो ऐसा कोई काम किया नहीं कि क्षमा माँगनी पड़े। वास्तव में यह सुनने वाले की आलोचना करने, उसकी कमी बताने और उसे नसीहत या शिक्षा देने का एक ढंग है। जब आप अपने से बड़े और छोटे तथा बराबर वाले से सहमत नहीं होते, तो ऐसे प्रयोग करते हैं, जैसे-

क्षमा कीजिएगा! आपकी यह बात ठीक नहीं। (बड़े से)

क्षमा करना! तुम यह ठीक नहीं कर रहे। (बराबर वाले या छोटे से)

'बूढ़ी पृथ्वी का दुख' में कवयित्री ने भावों के अनुकूल भाषा-प्रयोग किया है। जैसा कि आप पढ़ चुके हैं- चीत्कार, पुकारते, धमस, रात का सन्नाटा, दहलना, चीख़, गुमसुम आदि भाव-विशेष की अभिव्यक्ति करते हैं। एक शब्द है–'बतियाना'। 'बात' संज्ञा शब्द है। इस 'बात' से 'बतियाना' बना है। संज्ञा को 'नाम' भी कहते हैं। यहाँ संज्ञा शब्द बात का प्रयोग क्रिया की 'धातु' के रूप में हुआ है, अतः यह 'नाम धातु क्रिया' है। ऐसे ही अन्य शब्दों पर गौर करें :

धकियाना (धक्का से), लतियाना (लात से), हथियाना (हाथ से) आदि।

पाठगत प्रश्न-14.3

सर्वाधिक उपयुक्त विकल्प चुनकर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

1. 'बूढ़ी पृथ्वी का दुख' कविता में कौन-सी विशेषता नहीं मिलती?

   (क) मानवीकरण   (ख) प्रश्न शैली

   (ग) दृश्यात्मकता   (घ) ओजस्विता

टिप्पणी

2. मानवीकरण नहीं है–

(क) पेड़ों का चीत्कार (ख) नदियों का रोना

(ग) मौन समाधि लिए बैठा पहाड़ (घ) पेड़ की हिलती टहनियाँ

आपने क्या सीखा

- पर्यावरण मानव-जीवन के लिए अनिवार्य है। पर्यावरण के असुंतलित होने से मानव-जीवन पर अनेक रूपों में संकट आता है।
- पेड़-पौधों, नदियों, पर्वतों और हवा को नष्ट एवं प्रदूषित होने से बचाना मनुष्य का कर्तव्य है। इस कर्तव्य का पालन करके ही मानव सहित सभी प्राणियों की रक्षा की जा सकती है और पृथ्वी के सौंदर्य को बचाया जा सकता है।
- साहित्य में सवंदेनशीलता तथा समानुभूति का बहुत महत्त्व है। इस कविता में पाठकों को प्रकृति के प्रति संवेदनशील बनाकर पर्यावरण-रक्षा के प्रति जागरूकता पैदा की गई है।
- उपभोक्तावाद तथा व्यक्तिगत स्वार्थ मानव-विरोधी भाव हैं। कविता में इनका विरोध करके बहुसंख्यक मानव की रक्षा की भावना मार्मिकता से व्यक्त की गई है।
- जो मानव नहीं है या जड़ है, उसे मनुष्य के रूप में दिखाना मानवीकरण है। इस कविता के उद्देश्य को पूरा करने में मानवीकरण की बहुत बड़ी भूमिका है।
- कविता में उपयुक्त वाक्य-विधान, प्रश्न-शैली, दृश्यात्मकता एवं भावानुकूल भाषा-प्रयोग है।

योग्यता विस्तार

'बूढ़ी पृथ्वी का दुख' कविता की लेखिका निर्मला पुतुल हैं। उनका जन्म 1972 में एक संथाली आदिवासी परिवार में हुआ। निर्मला पुतुल अपनी कविताओं में उस आदिवासी लोक की रचना करती हैं, जो प्रकृति के सबसे अधिक निकट रहता है, उससे आत्मीयता का अनुभव करता है और जो प्रकृति के महत्त्व को सबसे अधिक समझता है। इस प्रकार अपनी कविताओं के माध्यम से निर्मला पुतुल आदिवासी समाज और प्रकृति के अस्तित्त्व को बचाने का प्रयास करती हैं। आज वैश्विक सभ्यता तथा उपभोक्तावाद के दौर में ये दोनों ही संकटग्रस्त हैं। निर्मला पुतुल हमारे एकांगी राष्ट्रीय विकास पर प्रश्नचिह्न लगाकर सभी के लिए विकास की माँग करती हैं। निर्मला पुतुल ने स्त्री-प्रश्नों पर भी कविताएँ लिखी हैं। उनके कविता-संग्रह का नाम है- 'नगाड़े की तरह बजते शब्द'।

पाठांत प्रश्न

1. पर्यावरण का अर्थ लिखिए। हमें पर्यावरण की रक्षा करने का दायित्व क्यों निभाना चाहिए?

2. प्राकृतिक संसाधनों के अत्यधिक उपयोग से होने वाली हानियों का उल्लेख कीजिए।

3. संवेदनशीलता का विस्तार करने में कवियों की क्या भूमिका है- 'बूढ़ी पृथ्वी का दुख' कविता के आधार पर स्पष्ट कीजिए। आप किस माध्यम से यह कार्य कर सकते हैं- यह भी लिखिए।

4. पानी के प्रदूषण के प्रमुख कारणों का उल्लेख कीजिए। उन कारणों के निदान के बारे में टिप्पणी कीजिए।

5. 'बूढ़ी पृथ्वी का दुख' कविता में मानवीकरण किस प्रकार किया गया है- उल्लेख कीजिए।

6. मनुष्य के प्रकृति-विरोधी व्यवहार को मानव-विरोधी व्यवहार क्यों कहा जा सकता है- उल्लेख कीजिए।

7. 'दिल दहलना', 'हृदय विदारक' और 'छिटकना' का उचित प्रयोग करते हुए दो-दो वाक्य लिखिए।

8. उपयुक्त मिलान कीजिए :

सुनना	बूढ़ी पृथ्वी का दुख
देखना	हवा का ख़ून की उल्टियाँ करना
महसूस करना	नदियों का मुँह ढाँपकर रोना
बतियाना	पहाड़ का सीना दहलना

9. संज्ञा शब्द वे शब्द हैं, जो किसी व्यक्ति, प्राणी, वस्तु, स्थान, भाव आदि के नाम के लिए प्रयुक्त होते हैं। संज्ञा की विशेषता बताने वाले रूप को विशेषण कहते हैं। क्रिया से किसी कार्य को करने का या किसी स्थिति में होने का बोध होता है। कभी-कभी कार्य अथवा कार्य करने की रीति भी संज्ञा के विशेषण के रूप में होती है। निम्नलिखित में से किस विकल्प में कार्य करने की रीति संज्ञा के विशेषण के रूप में नहीं है-

   (क) कुल्हाड़ियों के वार सहते पेड़

   (ख) बचाव के लिए पुकारते हज़ारों-हज़ार हाथ

   (ग) मौन समाधि के लिए बैठे पहाड़ का सीना।

   (घ) हवा घर के पिछवाड़े ख़ून की उल्टियाँ करती है।

टिप्पणी

उत्तरमाला

पाठगत प्रश्न

14.1

1. (क), 2. (क), 3. (ख), 4. (क) (√), (ख) (√), (ग) (×), (घ) (×)

14.2

1. (क), 2. (क), 3. (क), (√), (ख) (×), (ग) (√), (घ) (√)

14.3

1. (घ), 2. (घ)

15

अंधेर नगरी

अब तक के पाठों में आप साहित्य की अनेक विधाओं के विषय में जान चुके हैं, जैसे– कहानी, कविता, रेखाचित्र, रिपोर्ताज़ आदि। आइए, अब एक नाटक पढ़ते हैं।

सुबह सूरज निकलता है, पक्षी चहचहाते हैं, धीरे-धीरे अंधकार दूर होता है और प्रकाश फैलता है। मनुष्य-समाज भी सक्रिय हो उठता है जिस प्रकार प्रकृति की एक व्यवस्था है, वैसे ही मनुष्य ने भी एक व्यवस्था बनाई है, जिससे उसके सारे कार्य सुचारू रूप से हो सकें। कल्पना कीजिए, यदि प्रातः काल सूरज न निकले, पक्षी न चहचहाएँ, नदियाँ उलटी दिशा में बहने लगें, तो? और यदि मनुष्य-समाज में भी कोई व्यवस्था न रहे, चारों तरफ अराजकता हो, कुछ स्वार्थी लोग ही देश को चलाने लगें, वे जनता को अपना न समझें, उन्हें देश की जनता की दशा का ज्ञान ही न हो, तो? आइए, इस पाठ के माध्यम से इन बातों को समझने का प्रयास करें।

उद्देश्य

इस नाटक को पढ़ने के बाद आप–

- नाटक में चित्रित शासन-व्यवस्था का आज के संदर्भ में वर्णन कर सकेंगे;
- राजा-प्रजा के पारस्परिक संबंधों का विश्लेषण कर सकेंगे;
- न्यायपूर्ण व्यवस्था के बारे में अपने विचार प्रस्तुत कर सकेंगे;
- नाटक में निहित व्यंग्य को समझकर उसका उल्लेख कर सकेंगे;
- लोक-संस्कृति और लोक-भाषा के कुछ प्रमुख पक्षों की व्याख्या कर सकेंगे;
- एक विधा के रूप में 'नाटक' की प्रमुख विशेषताएँ बता सकेंगे।

15.1 मूल पाठ

आइए, इस नाटक को एक बार ध्यान से पढ़ लेते हैं।

अंधेर नगरी

पहला दृश्य

बाह्य प्रांत

(महंत जी दो चेलों के साथ गाते हुए आते हैं)

महंत—बच्चा नारायणदास! यह नगर तो दूर से बड़ा सुंदर दिखाई पड़ता है! देख, कुछ भिच्छा-उच्छा मिले, तो ठाकुर जी को भोग लगै। और क्या!

नारायणदास—गुरु जी महाराज! नगर तो नारायण के आसरे से बहुत ही सुंदर है, जो है सो, पर भिच्छा सुंदर मिलै, तो बड़ा आनंद होय।

महंत—बच्चा गोबरधनदास! तू पच्छिम की ओर जा और नारायणदास पूरब की ओर जाएगा। देख जो कुछ सीधा-सामग्री मिले, तो श्री शालिग्राम जी का बालभोग सिद्ध हो।

गोबरधनदास—गुरु जी! मैं बहुत-सी भिच्छा लाता हूँ। यहाँ के लोग तो बड़े मालदार दिखाई पड़ते हैं। आप कुछ चिंता मत कीजिए।

महंत—बच्चा, बहुत लोभ मत करना। देखना, हाँ—

लोभ पाप को मूल है, लोभ मिटावत मान।
लोभ कभी नहिं कीजिए, या में नरक निदान।

(गाते हुए सब जाते हैं)

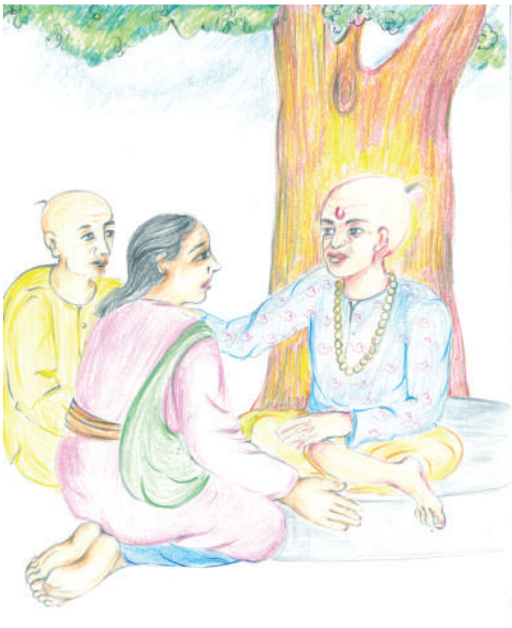

चित्र 15.1

शब्दार्थ

भिच्छा – भिक्षा, भीख
भोग – भगवान को अर्पित किया जाने वाला भोजन
शालिग्राम – काले रंग का छोटा गोल पत्थर, जिसे विष्णु मानकर पूजा जाता है।
लोभ – लालच
निदान – परिणाम
हाकिम – अफ़सर
टिकस – टैक्स, कर
मूल – जड़
सेर – एक पुरानी तोल (आज के लगभग 800 ग्राम के बराबर)
सीधा – बाह्मणों को दी जाने वाली कच्ची खाद्य-सामग्री
टका – दो पैसे का सिक्का
मिटावत – मिटाता है
मान – मर्यादा, प्रतिष्ठा, सम्मान
या मैं – इसमें

दूसरा दृश्य

स्थान—बाज़ार

घासीराम—चना जोर गरम—

चने बनावैं घासीराम। जिनकी झोली में दूकान।।
चना चुरमुर-चुरमुर बोलै। बाबू खाने को मुँह खोलें।।
चना खायँ गफ़ूरन, मुन्ना। बोलैं और नहीं कुछ सुन्ना।।
चना हाकिम सब जो खाते। सब पर दूना टिकस लगाते।।
चना जोर गरम—टके सेर।

हलवाई—जलेबियाँ गरमागरम। घी में गरक, चीनी में तरातर, चासनी में चभाचभ। ले भूर का लड्डू। जो खाय सो भी पछताय, जो न खाय सो भी पछताय। रेवड़ी कड़ाका। पापड़ पड़ाका। ऐसी जात हलवाई, जिसके छत्तिस कौम हैं भाई। सब सामान ताजा। खाजा ले खाजा। टके सेर खाजा।

पाचकवाला—

मेरा चूरन जो कोई खाय। मुझको छोड़ कहीं नहिं जाय।।
चूरन जब से हिंद में आया। इसका धन बल सभी घटाया।।
चूरन अमले सब जो खावैं। दूनी रिश्वत तुरत पचावैं।।
चूरन सभी महाजन खाते। जिससे जमा हजम कर जाते।।
चूरन खाते लाला लोग। जिनको अकिल अजीरन रोग।।
चूरन खावै एडिटर जात। जिनके पेट पचै नहिं बात।।
चूरन साहेब लोग जो खाता। सारा हिंद हजम कर जाता।।
चूरन पुलिस वाले खाते। सब कानून हजम कर जाते।।
ले चूरन का ढेर, बेचा टके सेर।

बनियाँ—आटा, दाल, लकड़ी, नमक, घी, चीनी, मसाला, चावल ले टके सेर।

(बाबा जी का चेला गोबरधनदास आता है और सब बेचने वालों की आवाज़ सुन-सुनकर खाने के आनंद में बड़ा प्रसन्न होता है।)

गोबरधनदास—क्यों भाई बनिए, आटा कितने सेर?

बनियाँ—टके सेर।

गोबरधनदास—और चावल?

बनियाँ—टके सेर।

गोबरधनदास—और चीनी?

बनियाँ—टके सेर।

गोबरधनदास—और घी?

बनियाँ—टके सेर।

गोबरधनदास—सब टके सेर! सचमुच?

बनियाँ—हाँ महाराज, क्या झूठ बोलूँगा?

गोबरधनदास—(कुँजड़िन के पास जाकर) क्यों माई, भाजी क्या भाव?

कुँजड़िन—बाबा जी टके सेर। निनुआ, मुरई, धनियाँ, मिरचा, साग—सब टके सेर।

गोबरधनदास—सब भाजी टके सेर! वाह-वाह! बड़ा आनंद है! यहाँ सभी चीज़ टके सेर। (हलवाई के पास जाकर) क्यों भाई हलवाई! मिठाई कितने सेर?

टिप्पणी

भूर – बेसन
खाजा – खजला (मैदे से बनी एक प्रकार की मिठाई)
अमला – कर्मचारी वर्ग
अकिल – अक्ल/समझ
अजीरन – अजीर्ण, अपच रोग
एडिटर – संपादक
कुँजड़िन – सब्जी बेचने वाली
मुरई – मूली
निनुआ – तोरी, तुरई

टिप्पणी

हलवाई—बाबा जी! लडुआ, जलेबी, गुलाबजामुन, खाजा सब टके सेर।

गोबरधनदास—वाह! वाह!! बड़ा आनंद है। क्यों बच्चा, मुझसे मसखरी तो नहीं करता? सचमुच सब टके सेर?

हलवाई—हाँ बाबा जी, सचमुच सब टके सेर। इस नगरी की चाल ही यही है। यहाँ सब चीज़ टके सेर बिकती है।

गोबरधनदास—क्यों बच्चा! इस नगरी का नाम क्या है?

हलवाई—अंधेर नगरी।

गोबरधनदास—और राजा का क्या नाम है?

हलवाई—चौपट्ट राजा।

गोबरधनदास—वाह! वाह! अंधेर नगरी, चौपट्ट राजा, टका सेर भाजी, टका सेर खाजा। (यही गाता है और आनंद से बगल बजाता है)

मसखरी – मज़ाक

छक जाना – तृप्त हो जाना

हलवाई—तो बाबा जी, कुछ लेना-देना हो, तो लो-दो।

गोबरधनदास—बच्चा, भिक्षा माँगकर सात पैसे लाया हूँ, साढ़े तीन सेर मिठाई दे दे, गुरु-चेले सब आनंदपूर्वक इतने में छक जाएँगे।

(हलवाई मिठाई तोलता है—बाबा जी मिठाई लेकर खाते हुए और अंधेर नगरी का गीत गाते हुए जाते हैं)

(पटाक्षेप)

तीसरा दृश्य

स्थान—जंगल

(महंत जी और नारायणदास एक ओर से 'राम भजो' इत्यादि गाते हुए आते हैं और दूसरी ओर से गोबरधनदास 'अंधेर नगरी' गाते हुए आते हैं)

महंत—बच्चा गोबरधनदास! कह, क्या भिक्षा लाया? गठरी तो भारी मालूम पड़ती है।

गोबरधनदास—बाबा जी महाराज! बड़ा माल लाया हूँ, साढ़े तीन सेर मिठाई है।

महंत—देखूँ बच्चा! (मिठाई की झोली अपने सामने रखकर खोलकर देखता है) वाह! वाह! बच्चा! इतनी मिठाई कहाँ से लाया? किस धर्मात्मा से भेंट हुई?

चित्र 15.2

चित्र 15.3

गोबरधनदास—गुरु जी महाराज! सात पैसे भीख में मिले थे, उसी से इतनी मिठाई मोल ली है।

महंत—बच्चा! नारायणदास ने मुझसे कहा था कि यहाँ सब चीज़ टके सेर मिलती है, मैंने इसकी बात का विश्वास नहीं किया। बच्चा, यह कौन-सी नगरी है और इसका कौन राजा है, जहाँ टके सेर भाजी और टके सेर खाजा है?

गोबरधनदास—अंधेर नगरी, चौपट्ट राजा, टके सेर भाजी, टके सेर खाजा।

महंत—तो बच्चा! ऐसी नगरी में रहना उचित नहीं है, जहाँ टके सेर भाजी और टके ही सेर खाजा हो। सो बच्चा चलो यहाँ से। ऐसी अंधेर नगरी में हज़ार मन मिठाई मुफ़्त की मिले, तो किस काम की? यहाँ एक छन नहीं रहना।

गोबरधनदास—गुरु जी, ऐसा तो संसार-भर में कोई देस ही नहीं है। दो पैसा पास रहने ही से मज़े में पेट भरता है। मैं तो इस नगरी को छोड़कर नहीं जाऊँगा। और जगह दिन-भर माँगो, तो भी पेट नहीं भरता। बाजे-बाजे दिन उपास करना पड़ता है। सो मैं तो यहीं रहूँगा।

महंत—देख बच्चा, पीछे पछताएगा।

गोबरधनदास—आपकी कृपा से कोई दुख न होगा, मैं तो यही कहता हूँ कि आप भी यहीं रहिए।

महंत—मैं तो इस नगरी में अब एक क्षण भी नहीं रहूँगा। देख मेरी बात मान, नहीं पीछे पछताएगा। मैं तो जाता हूँ। पर इतना कहे देता हूँ कि कभी संकट पड़े तो हमारा स्मरण करना।

गोबरधनदास—प्रणाम गुरु जी, मैं आपका नित्य ही स्मरण करूँगा। मैं तो फिर भी कहता हूँ कि आप भी यहीं रहिए।

(महंत जी नारायणदास के साथ जाते हैं, गोबरधनदास बैठकर मिठाई खाता है)

(पटाक्षेप)

चौथा दृश्य

स्थान—राजसभा

(राजा-मंत्री और नौकर लोग यथास्थान स्थित हैं)

टिप्पणी

छन – क्षण
बाजे-बाजे—किसी-किसी
उपास – उपवास, व्रत
स्मरण – याद

नौकर—(एक सुराही में से एक गिलास में शराब उँड़ेलकर देता है) लीजिए महाराज! पीजिए महाराज!

राजा—(मुँह बना-बनाकर पीता है) और दे।

(नेपथ्य में 'दुहाई है दुहाई'—का शब्द होता है)

कौन चिल्लाता है—पकड़ लाओ।

(दो नौकर एक फ़रियादी को पकड़ लाते हैं)

फ़रियादी—दोहाई है महाराज, दोहाई है। हमारा न्याव होय।

राजा—चुप रहो। तुम्हारा न्याव यहाँ ऐसा होगा कि जैसा यम के यहाँ भी न होगा— बोलो क्या हुआ?

फ़रियादी—महाराज! कल्लू बनियाँ की दीवार गिर पड़ी, सो मेरी बकरी उसके नीचे दब गई। दोहाई है महाराज, न्याव हो।

राजा—(नौकर से) कल्लू बनिए की दीवार को अभी पकड़ लाओ।

मंत्री—महाराज, दीवार नहीं लाई जा सकती।

राजा—अच्छा, उसका भाई, लड़का, दोस्त, आशना, जो भी हो उसको पकड़ लाओ।

मंत्री—महाराज! दीवार ईंट-चूने की होती है, उसको भाई-बेटा नहीं होता।

राजा—अच्छा, कल्लू बनिए को पकड़ लाओ।

(नौकर लोग दौड़कर बाहर से बनिए को पकड़ लाते हैं)

क्यों बे बनिए! इसकी लरकी, नहीं बरकी क्यों दबकर मर गई?

मंत्री—बरकी नहीं महाराज, बकरी।

राजा—हाँ-हाँ, बकरी क्यों मर गई— बोल, नहीं अभी फाँसी देता हूँ।

कल्लू—महाराज! मेरा कुछ दोष नहीं। कारीगर ने ऐसे दीवार बनाई कि गिर पड़ी।

राजा—अच्छा, इस मल्लू को छोड़ दो, कारीगर को पकड़ लाओ।

(कल्लू जाता है, लोग कारीगर को पकड़कर लाते हैं)

क्यों बे कारीगर! इसकी बकरी किस तरह मर गई?

कारीगर—महाराज, मेरा कुछ कसूर नहीं, चूने वाले ने ऐसा बोदा चूना बनाया कि दीवार गिर पड़ी।

राजा—अच्छा, इस कारीगर को बुलाओ, नहीं-नहीं निकालो, उस चूने वाले को बुलाओ।

(कारीगर निकाला जाता है, चूने वाला पकड़कर लाया जाता है)

फरियादी—प्रार्थी/गुहार लगाने वाला
नेपथ्य – पर्दे के पीछे
न्याव – न्याय
बोदा – कमज़ोर
आशना – प्रिय

क्यों बे, खैर-सोपाड़ी-चूने वाले! इसकी बकरी कैसे मर गई?

चूने वाला—महाराज! मेरा कुछ दोष नहीं, भिश्ती ने चूने में पानी ढेर दे दिया, इसी से चूना कमज़ोर हो गया होगा।

राजा—अच्छा, चुन्नीलाल को निकालो, भिश्ती को पकड़ो।

(चूने वाला निकाला जाता है, भिश्ती लाया जाता है) क्यों बे भिश्ती! गंगा-जमुना की किश्ती! इतना पानी क्यों दिया कि इसकी बकरी गिर पड़ी और दीवार दब गई?

भिश्ती—महाराज! गुलाम का कोई कसूर नहीं, कसाई ने मशक इतनी बड़ी बनाई कि उसमें पानी जादे आ गया।

राजा—अच्छा, कसाई को लाओ, भिश्ती निकालो।

(लोग भिश्ती को निकालते हैं, कसाई को लाते हैं)

क्यों बे कसाई, मशक ऐसी क्यों बनाई कि दीवार लगाई बकरी दबाई?

कसाई—महाराज! गड़रिया ने टके पर ऐसी बड़ी भेड़ मेरे हाथ बेची कि उसकी मशक बड़ी बन गई।

राजा—अच्छा, कस्साई को निकालो, गड़रिए को लाओ!

(कस्साई निकाला जाता है, गड़रिया आता है) क्यों बे गड़रिए, ऐसी बड़ी भेड़ क्यों बेची कि बकरी मर गई?

चित्र 15.4

गड़रिया—महाराज! उधर से कोतवाल साहब की सवारी आ गई, तो उसको देखने में मैंने छोटी-बड़ी भेड़ का ख़्याल नहीं किया, मेरा कुछ कसूर नहीं।

राजा—अच्छा, इसको निकालो, कोतवाल को अभी पकड़ लाओ।

(गड़रिया निकाला जाता है, कोतवाल पकड़ा जाता है)

टिप्पणी

भिश्ती – पानी वाला

मशक – पानी भरने का चमड़े का थैला

दरबार बरख़ास्त – सभा समाप्त

ढेर – बहुत सारा

सवारी – जुलूस की शक्ल में निकलना

टिप्पणी

क्यों बे कोतवाल! तैंने सवारी ऐसी धूम से क्यों निकाली कि गड़रिए ने घबड़ाकर बड़ी भेड़ बेची, जिससे बकरी गिरकर कल्लू बनियाँ दब गया?

कोतवाल—महाराज! महाराज! मैंने तो कोई कसूर नहीं किया, मैं तो शहर के इंतज़ाम के वास्ते जाता था।

मंत्री—(आप ही आप) यह तो बड़ा गज़ब हुआ, ऐसा न हो कि यह बेवकूफ़ इस बात पर सारे नगर को फूँक दे या फाँसी दे दे।

(कोतवाल से) यह नहीं, तुमने ऐसे धूम से सवारी क्यों निकाली?

राजा—हाँ-हाँ, यह नहीं, तुमने ऐसे धूम से सवारी क्यों निकाली कि उसकी बकरी दबी?

कोतवाल—महाराज-महाराज...

राजा—कुछ नहीं, महाराज-महाराज, ले जाओ, कोतवाल को अभी फाँसी दो। दरबार बरख़ास्त।

(लोग एक तरफ़ कोतवाल को पकड़कर ले जाते हैं, दूसरी ओर से मंत्री को पकड़कर राजा जाते हैं)

धूम से – शान से
इंतज़ाम के वास्ते – प्रबंध करने के लिए
बरख़ास्त – समाप्त
अरण्य – जंगल, वन
साँचे – सच्चे व्यक्ति
छली – छल करने वाले
पनही – जूती
एका – एकता

(पटाक्षेप)

पाँचवा दृश्य

स्थान—अरण्य

(गोबरधनदास गाते हुए आते हैं)

अंधेर नगरी अनबूझ राजा।
टका सेर भाजी टका सेर खाजा।।
साँचे मारे-मारे डोलैं ।
छली दुष्ट सिर चढ़ि-चढ़ि बोलैं।।
प्रगट सभ्य अंतर छलधारी ।
सोई राजसभा बल भारी।।
साँच कहैं ते पनही खावैं ।
झूठे बहु विधि पदबी पावैं।।
छलियन के एका के आगे ।
लाख कहो एकहु नहिं लागे।।
अंधाधुंध मच्यौ सब देसा ।
मानहुँ राजा रहत विदेसा।।
अंधेर नगरी अनबूझ राजा ।
टका सेर भाजी टका सेर खाजा।।

टिप्पणी

(बैठकर मिठाई खाता है)

गुरु जी ने हमको नाहक यहाँ रहने से मना किया था। माना कि देस बहुत बुरा है, पर अपना क्या? अपन किसी राजकाज में थोड़े हैं कि कुछ डर है, रोज़ मिठाई चाभना, मज़े में आनंद से रामभजन करना।

(मिठाई खाता है)

(चार प्यादे चार ओर से आकर उसको पकड़ लेते हैं)

प्यादा– 1—चल बे चल, बहुत मिठाई खाकर मुटाया है। आज पूरी हो गई।

प्यादा– 2—बाबा जी चलिए, नमोनारायन कीजिए।

गोबरधनदास—(घबड़ाकर) हैं! यह आफ़त कहाँ से आई! अरे भाई, मैंने तुम्हारा क्या बिगाड़ा है, जो मुझको पकड़ते हो?

प्यादा– 1—आपने बिगाड़ा है या बनाया है, इससे क्या मतलब, अब चलिए। फाँसी चढ़िए।

गोबरधनदास—फाँसी! अरे बाप-रे-बाप फाँसी! मैंने किसकी जमा लूटी है कि मुझको फाँसी! मैंने किसके प्राण मारे कि मुझको फाँसी!

प्यादा– 2—आप बड़े मोटे हैं, इस वास्ते फाँसी होती है।

गोबरधनदास—मोटे होने से फाँसी? यह कहाँ का न्याय है! अरे, हँसी फकीरों से नहीं करनी होती।

प्यादा– 1—बात यह है कि कल कोतवाल को फाँसी का हुक्म हुआ था। जब फाँसी देने को उनको ले गए, तो फाँसी का फंदा बड़ा हुआ, क्योंकि कोतवाल साहब दुबले हैं। हम लोगों ने महाराज से अर्ज़ किया, इस पर हुकुम हुआ कि एक मोटा आदमी पकड़कर फाँसी दे दो, क्योंकि बकरी मारने के अपराध में किसी-न-किसी को सज़ा होनी ज़रूर है, नहीं तो न्याव न होगा। इसी वास्ते तुमको ले जाते हैं कि कोतवाल के बदले तुमको फाँसी दें।

गोबरधनदास—तो क्या और कोई मोटा आदमी इस नगर-भर में नहीं मिलता, जो मुझ अनाथ फ़कीर को फाँसी देते हैं?

प्यादा– 1—इसमें दो बातें हैं– एक तो नगर-भर में राजा के न्याव के डर से कोई मुटाता ही नहीं, दूसरे और किसी को पकड़ें, तो वह न जाने क्या बात बनाए और फिर इस राज में साधू-महात्मा इन्हीं लोगों की तो दुर्दशा है, इससे तुम्हीं को फाँसी देंगे।

गोबरधनदास—दुहाई परमेश्वर की, अरे मैं नाहक मारा जाता हूँ। अरे यहाँ बड़ा ही अंधेर है, अरे गुरु जी महाराज का कहा मैंने न माना, उसका फल मुझको भोगना पड़ा। गुरु जी कहाँ हो! आओ, मेरे प्राण बचाओ, अरे मैं बेअपराध मारा जाता हूँ। गुरु जी, गुरु जी....

(गोबरधनदास चिल्लाता है, प्यादे उसको पकड़कर ले जाते हैं)

नाहक – व्यर्थ में
चाभना – चबाना
प्यादा – पैदल सिपाही
दुर्दशा – बुरी स्थिति

टिप्पणी

(पटाक्षेप)

छठा दृश्य

स्थान–श्मशान

(गोबरधनदास को पकड़े हुए चार सिपाहियों का प्रवेश)

गोबरधनदास–हाय! मैंने गुरु जी का कहना न माना, उसी का फल है। गुरु जी कहाँ हो? बचाओ-बचाओ! गुरु जी- गुरु जी...!

(रोता है, सिपाही लोग उसे घसीटते हुए ले चलते हैं। गुरु जी और नारायणदास आते हैं)

गुरु–अरे बच्चा गोबरधनदास! तेरी यह क्या दशा है?

गोबरधनदास–(गुरु जी को हाथ जोड़कर) गुरु जी! दीवार के नीचे बकरी दब गई, सो इसके लिए मुझे फाँसी देते हैं, गुरु जी बचाओ।

गुरु–अरे बच्चा! मैंने तो पहिले ही कहा था कि ऐसे नगर में रहना ठीक नहीं, तैंने मेरा कहना नहीं सुना... कोई चिंता नहीं, नारायण सब समर्थ हैं।

(भौं चढ़ाकर सिपाहियों से)

सुनो, मुझको अपने शिष्य को अंतिम उपदेश देने दो, तुम लोग तनिक किनारे हो जाओ, देखो मेरा कहना न मानोगे, तो तुम्हारा भला न होगा।

सिपाही–नहीं महाराज, हम लोग हट जाते हैं। आप बेशक उपदेश दीजिए।

(सिपाही हट जाते हैं। गुरु जी चेले के कान में कुछ समझाते हैं)

गोबरधनदास–(प्रगट) तब तो गुरु जी हम फाँसी चढ़ेंगे।

महंत–नहीं बच्चा, मुझको चढ़ने दे।

गोबरधनदास–नहीं गुरु जी, हम फाँसी चढ़ेंगे।

महंत–नहीं बच्चा हम। इतना समझाया, नहीं मानता, हम बूढ़े भये, हमको जाने दे।

गोबरधनदास–स्वर्ग जाने में बूढ़ा-जवान क्या? आप तो सिद्ध हैं, आपको गति-अगति से क्या? मैं फाँसी चढ़ूँगा।

(इसी प्रकार दोनों हुज्जत करते हैं। सिपाही लोग चकित होते हैं)

सिपाही–1–भाई! यह क्या माजरा है, कुछ समझ में नहीं पड़ता।

सिपाही–2–हम भी नहीं समझ सकते कि यह कैसी गड़बड़ है।

(राजा, मंत्री, कोतवाल आते हैं)

अर्ज़ करना – निवेदन करना
माजरा – मामला
साइत – मुहूर्त, शुभ घड़ी
हुकुम – आदेश
आफ़त – संकट
हुज्जत – बहस करना

राजा—यह क्या गोलमाल है?

सिपाही 1—महाराज! चेला कहता है, मैं फाँसी पड़ूँगा। गुरु कहता है, मैं पड़ूँगा, कुछ मालूम नहीं पड़ता कि क्या बात है!

राजा—(गुरु से) बाबा जी! बोलो। काहे को आप फाँसी चढ़ते हैं?

महंत—राजा! इस समय ऐसी साइत है कि जो मरेगा, सीधा बैकुंठ जाएगा।

मंत्री—तब तो हमीं फाँसी चढ़ेंगे।

गोबरधनदास—हम-हम। हमको तो हुकुम है।

कोतवाल—हम लटकेंगे। हमारे सबब तो दीवार गिरी।

राजा—चुप रहो सब लोग। राजा के रहते और कौन बैकुंठ जा सकता है। हमको फाँसी चढ़ाओ—जल्दी, जल्दी।

महंत—

जहाँ न धर्म न बुद्धि नहिं नीति न सुजन समाज।

ते ऐसेहि आपुहिं नसैं, जैसे चौपट राज।

(राजा को लोग टिकठी पर खड़ा करते हैं)

टिप्पणी

सबब – कारण
बैकुंठ – स्वर्ग
सुजन – सज्जन
आपुहिं – अपने आप
नसै – नष्ट होते हैं
चौपट राज – मूर्ख और अयोग्य राज
टिकठी – फाँसी का तख़्ता

बोध-प्रश्न

सर्वाधिक उपयुक्त विकल्प चुनकर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए:

1. अंधेर नगरी के बारे में क्या सच नहीं है—

   क) हर व्यक्ति अपनी बला दूसरे पर टालता है। ☐

   ख) राजा के अधिकारी चापलूस और मूर्ख हैं। ☐

   ग) गुणों की कोई कद्र नहीं है। ☐

   घ) राजा बहुत न्यायप्रिय है। ☐

2. गोबरधनदास को पकड़कर ले जाया गया, क्योंकि—

   क) उसने अपने गुरु का कहना नहीं माना ☐

   ख) वह भीख माँगकर मिठाई खा रहा था। ☐

   ग) किसी–न–किसी को फाँसी लगानी ही थी। ☐

   घ) उस मुहूर्त में मरने वाला सीधे स्वर्ग जाता। ☐

टिप्पणी

15.2 आइए समझें

आइए, नाटक और उसके तत्त्वों के आधार पर पाठ को अच्छी तरह से समझने की कोशिश करें।

आप जब कोई कहानी, उपन्यास, निबंध और नाटक पढ़ते होंगे, तब एक फ़र्क नाटक और दूसरी विधाओं के बीच अवश्य महसूस करते होंगे। वह फ़र्क है दृश्य का। दृश्य का संबंध मंच से है, यानी नाटक मंच पर खेला जाता है। यह तत्त्व नाटक को अन्य साहित्यिक विधाओं से अलग करता है।

'अंधेर नगरी' व्यंग्य और हास्य प्रधान नाटक है। सवाल यह है कि 'व्यंग्य' क्या है? किसी रचना में जब रचनाकार वस्तु या परिस्थिति की असंगति और अटपटेपन को उजागर करता है और उसे पढ़ते-सुनते हुए थोड़ी-बहुत हँसी भी आती है तो उसे व्यंग्य-रचना कह सकते हैं। अच्छे व्यंग्य के लिए उस परिस्थति विशेष के सही रूप की जानकारी ज़रूरी है जिस पर चोट की जाती है। व्यंग्य के माध्यम से झूठे आडंबरों या कुरीतियों पर चोट की जाती है।

15.2.1 कथावस्तु

कथावस्तु नाटक का महत्त्वपूर्ण तत्त्व है। कथावस्तु का संबंध नाटक में वर्णित विषय से होता है। कथावस्तु को स्पष्ट करने के लिए घटनाओं, स्थितियों और पात्रों की रचना की जाती है। इस तरह से जो आरंभ, मध्य और अंत वाला कथा-रूप बनता है, उसे कथानक कहते हैं। जैसे–इस नाटक की कथावस्तु है – एक ऐसे नगर की विसंगतियों का चित्रण, जहाँ न्याय-अन्याय में फ़र्क नहीं किया जाता। कथानक है–महंत, गोबरधनदास, नारायणदास, हलवाई, फ़रियादी, कल्लू बनिया, कारीगर, कोतवाल, मंत्री और राजा आदि पात्रों के और बकरी के मर जाने तथा उसके लिए दोषी व्यक्ति को सज़ा सुनाने की घटना के ज़रिए कथा का विकास।

आपने नाटक पढ़ने के बाद उसमें वर्णित कथा को भी समझ लिया होगा। महंत अपने दो चेलों के साथ जिस 'अंधेर नगरी' में पहुँचता है, वहाँ हर वस्तु का भाव समान है। हर वस्तु टके सेर बेची जा रही है। यह देखकर गुरु (महंत) को हैरत होती है और अनहोनी की आशंका

चित्र 15.5

भी। वह अपने चेलों को तुरंत नगर छोड़ देने की सलाह देता है। पर, चेला गोबरधनदास गुरु की राय न मानकर उसी नगर में रह जाता है। दूसरी तरफ़ एक दुर्घटना (दीवार से दब कर बकरी का मर जाना) के बाद फ़रियादी राजा के पास न्याय की आशा लेकर पहुँचता है। राजा के हुक्म के बाद बकरी के मरने के लिए ज़िम्मेदार के रूप में क्रमशः कल्लू बनिए, कारीगर, चूने वाले, भिश्ती, कसाई, गड़रिए और कोतवाल को पकड़कर लाया जाता है, क्योंकि हरेक व्यक्ति किसी दूसरे को ज़िम्मेदार बनाकर ख़ुद छूटता जाता है। अंततः गोबरधनदास को पकड़ लिया जाता है। गोबरधनदास को फाँसी की सज़ा महज़ इसलिए दी जाती है कि उसकी गर्दन मोटी है। फाँसी के पहले चेला गोबरधनदास अपने गुरु को पुकारता है। गुरु यानी महंत आकर गोबरधनदास से गुप्त मंत्रणा करता है। फिर गुरु-चेले में वाद-विवाद होने लगता है। कारण पूछने पर महंत बताता है कि इस शुभ मुहूर्त में जो फाँसी चढ़ेगा, उसे बैकुंठ मिलेगा। अब राजा का फ़रमान फिर जारी होता है और बैकुंठ पर अपना पहला हक जताते हुए वह फाँसी के फंदे पर झूल जाता है।

पाठगत प्रश्न-15.1

1. निम्नलिखित कथनों में से सही के आगे (√) का और गलत के आगे (X) का निशान लगाइए—

   (क) अभिनेयता का तत्त्व नाटक को अन्य साहित्यिक विधाओं से अलग करता है। ☐

   (ख) निबंध में दृश्य प्रमुख होता है और नाटक में भाव या विचार। ☐

   (ग) सही मायने में व्यंग्यकार वही है जो समाज-हित को ध्यान में रखता हो। ☐

   (घ) यदि कोतवाल की गर्दन में फाँसी का फंदा आ भी जाता तो उसे फाँसी न दी जाती। ☐

   (ङ) शुभ मुहूर्त में फाँसी चढ़कर राजा अवश्य ही बैकुंठ गया होगा। ☐

2. सर्वाधिक उपयुक्त विकल्प चुनकर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

   गोबरधनदास द्वारा अपने गुरु जी को पुकारने का उद्देश्य था—

   (क) राजा को फाँसी पर चढ़वाना ☐

   (ख) राजा से प्रजा की रक्षा करवाना ☐

   (ग) शुभ मुहूर्त का पता लगाना ☐

   (घ) ख़ुद को फाँसी से बचाना ☐

15.2.2 चरित्र-चित्रण

अंधेर नगरी के अनेक पात्रों में महंत गोबरधनदास, राजा और मंत्री महत्त्वपूर्ण हैं। **महंत** या **गुरु** का चरित्र विवेक का प्रतीक है। वह इस सच का संदेश देता है कि जहाँ व्यक्ति और वस्तु के गुणों की कद्र न हो और हर घटना, वस्तु या चरित्र के मूल्यांकन के लिए एक ही पैमाना अपनाया जाता हो, ऐसी शासन-व्यवस्था में रहना विपत्ति का कारण बन सकता है। आपने देखा कि गुरु द्वारा समझाए जाने पर भी गोबरधनदास अंधेर नगरी को नहीं छोड़ता। वह लोभ में पड़ जाता है। इसी का परिणाम है कि उसे फाँसी देने के लिए पकड़ लिया जाता है। नाटक के आरंभ में ही महंत अपने शिष्य से कहता है कि, 'यह नगर तो दूर से बड़ा सुंदर दिखाई देता है', पर साथ ही वह सावधान भी करता है कि 'लोभ मत करना', क्योंकि लोभ से 'मान' यानी इज़्ज़त या स्वाभिमान मिट जाता है। इस तरह, वह शुरू में ही 'दूर से दिखने' और 'वास्तविकता' में अंतर स्पष्ट कर देता है और लोभ या लालच में पड़कर स्वाभिमान की भावना के नष्ट होने का भी उपदेश देता है।

नाटक के अंत में महंत पुनः उपस्थित होता है और फाँसी की सज़ा पाए अपने शिष्य गोबरधनदास को बचाने तथा अविवेकी राजा को मृत्यु के मुँह में धकेलने का उपाय करता है। वह नाटक के अंत में यह स्पष्ट संदेश देता है कि ऐसा राज, जो धर्म और बुद्धि पर आधारित नहीं होता, जहाँ नीति और सज्जनों को स्थान नहीं मिलता— वह अपने आप ही नष्ट हो जाता है, जैसे कि चौपट राज समाप्त हो गया। इस प्रकार महंत के चरित्र के माध्यम से लेखक बुद्धि और विवेक का इस्तेमाल करके अपनी स्वाधीनता बचाने और छोटी-मोटी सुविधाओं में न पड़कर अपने स्वाभिमान की रक्षा करने का संदेश देता है।

गोबरधनदास एक ऐसा चरित्र है, जो लालच का शिकार हो जाता है। इसका दुखद फल भी उसे मिलता है। राजा के द्वारा उसे मृत्युदंड की सज़ा दी जाती है। गोबरधनदास सुख की ख़ातिर गुरु के उपदेश की अवहेलना करता है और अंधेर नगरी में ही रहने का निर्णय लेता है। वह आम भारतीयों की उस मानसिकता का प्रतिनिधि है, जो अपने छोटे-छोटे सुखों की ख़ातिर व्यवस्था की मनमानी और विवेकहीनता तथा अन्याय की ओर से आँखें मूँद लेते हैं। वे भूल जाते हैं कि आप जिस व्यवस्था में जी रहे हैं, अंततः उसका ख़ामियाज़ा आपको भी भुगतना पड़ता है।

राजा के बारे में नाटक बताता है कि वह चौपट है। वह सिर्फ़ भोग-विलास में डूबा रहता है। हर समय नशे में धुत्त रहने के संकेत से यह बात स्पष्ट होती है। यहाँ शराब का तो ज़िक्र है ही, साथ ही यह भी इशारा है कि वह आत्मकेंद्रित है और उसे अपने मूल कर्त्तव्य यानी जनता के दुख-सुख की भी चिंता नहीं है। वह अपनी जनता के प्रति संवेदनशील नहीं है। इसी कारण उसके राज में सच्चे लोग तो मारे जाते हैं और धूर्त तथा दुष्ट लोगों का वर्चस्व है। उसके राज में उन लोगों की बन आई है, जो ऊपरी तौर पर सभ्य होने का दिखावा करते हैं, पर भीतर-ही-भीतर कुचक्र चलाते रहते हैं। यहाँ सज्जनों को सज़ा मिलती है और झूठे लोग उपाधियों से नवाज़े जाते हैं, सम्मानित होते हैं। सारे देश में अंधाधुंध मचा हुआ है और ऐसा लगता है जैसे राजा यहाँ न होकर विदेश

टिप्पणी

में रहता हो। यह अंग्रेज़ी राज पर तो टिप्पणी है ही, क्या आज के संदर्भ में भी यह टिप्पणी उपयुक्त नहीं लगती? स्वाधीन भारत का शासक-वर्ग भी सीधे तौर पर तो विदेश से नियंत्रित नहीं होता, पर विदेशी कंपनियों के लिए रास्ता खोलने का काम करता हुआ ज़रूर लगता है। 'अंधेर नगरी' के 'चौपट्ट राजा' के लिए न्याय नहीं, उसका दिखावा महत्त्वपूर्ण है। राजा के इस संवाद पर ध्यान दीजिए– ''तुम्हारा न्याय यहाँ ऐसा होगा कि जैसा यम के यहाँ भी न होगा।'' नाटक के अंत में बहुत ही सुंदर ढंग से आत्मकेंद्रिकता और विवेकहीनता को भी दिखाया गया है, जब राजा कहता है कि, ''राजा के रहते और कौन बैकुंठ जा सकता है। हमको फाँसी चढ़ाओ– जल्दी, जल्दी।''

'अंधेर नगरी' का अंतिम महत्त्वपूर्ण पात्र है– **मंत्री।** मंत्री के ऊपर शासन-व्यवस्था को सुचारु रूप से चलाने की ज़िम्मेदारी होती है, लेकिन यहाँ जो मंत्री है, वह यह जानते हुए भी कि राजा ठीक नहीं कर रहा है, उसकी चापलूसी करने में जुटा रहता है। इस प्रकार, वह उस वर्ग का प्रतिनिधि पात्र है, जो औसत से अधिक समझ तो रखता है, पर सत्ता से नज़दीकी पाने और स्वार्थ पूरा करने के लिए अपनी बुद्धि और विवेक को गिरवी रख देता है। उसकी समझ का संकेत तब मिलता है, जब कोतवाल अपनी सवारी 'शहर के इंतज़ाम के वास्ते' निकालने की बात कहता है। वह सोचता है– ''यह तो बड़ा गज़ब हुआ, ऐसा न हो कि यह बेवकूफ़ (राजा) इस पर सारे नगर को फूँक दे या फाँसी दे दे।'' मगर, फाँसी किसी भी एक बेकसूर को मिल जाए– यह उसकी चिंता का विषय नहीं है। विवेकहीनता की यह स्थिति उसे भी बैकुंठ के लालच में डालने से नहीं चूकती और नाटक के अंत में वह भी फाँसी के दावेदारों में शामिल हो जाता है।

अन्य पात्रों में फ़रियादी, कुँजड़िन, हलवाई, मंत्री, कल्लू बनिया, कारीगर, चूनेवाला, भिश्ती, कसाई, गड़रिया, कोतवाल, प्यादे और सिपाही हैं। ये पात्र प्रसंगानुकूल कथा-विकास में अपना योगदान देते हैं। ऐसे पात्रों को गौण पात्र कहते हैं।

15.2.3 संवाद-योजना

नाटक में संवादों का विशेष महत्त्व होता है। 'अंधेर नगरी' नाटक के संवादों पर आपने ध्यान दिया होगा। ये संवाद नाटक के पात्रों के व्यक्तित्व की विशेषताओं को हमारे सामने स्पष्ट कर देते हैं। साथ ही, हास्य की रचना करते हुए व्यवस्था पर व्यंग्य करते हैं। आपने यह भी देखा होगा कि इन संवादों के प्रभावशाली होने का बहुत बड़ा कारण इनका संक्षिप्त या छोटा होना है। आइए, कुछ उदाहरणों के माध्यम से इस नाटक के संवादों की विशेषताओं को समझने का प्रयास करते हैं।

यह तो हम देख ही चुके हैं कि नाटक में महंत, गोबरधनदास, राजा और मंत्री– मुख्य पात्र हैं। यदि संवादों की दृष्टि से देखा जाए तो ये पात्र बातचीत में सबसे अधिक हिस्सा लेते हैं। ये जो कुछ बोलते हैं, उससे, अर्थात् इनके संवादों से इन पात्रों का व्यक्तित्व हमारे सामने स्पष्ट हो जाता है। महंत स्थितियों की असलियत को पहचान लेनेवाला और स्वाभिमान, स्वाधीनता के महत्त्व को जानने वाला विवेकवान पात्र है। उनकी इन विशेषताओं की बात संवादों से ही पता चलती है। वह अपने शिष्य से कहता है– ''बच्चा,

बहुत लोभ मत करना।'' वह शिष्य को फिर से सावधान करता है– ''तो बच्चा! ऐसी नगरी में रहना उचित नहीं है, जहाँ टके सेर भाजी और टके ही सेर खाजा हो।'' स्पष्ट है कि महंत का यह संवाद बहुत अर्थपूर्ण है। उसका आशय यह है कि जिस राज्य में असमान वस्तुओं में, सज्जनों और दुष्टों में अंतर ही नहीं किया जाता, उस राज्य में बसना विपत्ति का कारण हो सकता है। 'अंधेर नगरी' के संवादों की यह विशेषता हमें अनेक स्थलों पर मिलती है। इसी क्षमता के कारण यह नाटक सटीक और अचूक व्यंग्य रचने में समर्थ हुआ है।

गोबरधनदास के विषय में हमने पढ़ा कि वह अविवेक के कारण लोभ में फँसता है। लोभ के कारण वह अपने तक ही केंद्रित हो जाता है, फिर अपने को संकट में डालता है। निम्नलिखित संवाद उसकी इस विशेषता को प्रकट करता है–

'गुरु जी ने हमको नाहक यहाँ रहने से मना किया था। माना कि देश बहुत बुरा है, पर अपना क्या? अपन किसी राजकाज में थोड़े हैं कि कुछ डर है, रोज़ मिठाई चाभना, मज़े में आनंद से रामभजन करना।''

राजा के संवादों पर आपका ध्यान विशेष रूप से गया होगा। उसके संवादों में कोई तरतीब नहीं है। वह प्रत्येक से– चाहे उसका कोतवाल ही क्यों न हो, 'क्यों बे!' कहकर बात शुरू करता है। कुछ उदाहरण देखिए:

– कल्लू बनिए की दीवार को अभी पकड़ लाओ।

– अच्छा उसका भाई, लड़का, दोस्त, आशना, जो भी हो उसको पकड़ लाओ।

– क्यों बे बनिए! इसकी लरकी, नहीं बरकी क्यों दबकर मर गई?

उपर्युक्त संवादों से पता चलता है कि राजा का वास्तविक स्थितियों से कोई सरोकार नहीं है।

'अंधेर नगरी' के संवाद छोटे-छोटे हैं। जहाँ भी वे थोड़े बड़े हुए हैं, वहाँ उनमें तुक अथवा काव्यात्मकता आ गई है। ऐसी स्थिति में वे व्यंग्यात्मक गए हैं। लेकिन जो संवाद छोटे हैं, उनमें भी सार्थकता तथा व्यंग्य का पूरा निर्वाह है। कहीं-कहीं एक ही बात को बार-बार कहकर, उस पर बल देकर व्यंग्य की सृष्टि की गई है। जैसे–'टके सेर' पद संवादों में बार-बार आता है। इसे बार-बार कहने का अभिप्राय यह है कि अंधेर नगरी में सब कुछ टके सेर है, अर्थात् गुण के अनुसार मूल्य नहीं–सब कुछ टके सेर।

छोटे संवादों के एक और महत्त्व की ओर आपका ध्यान गया होगा। जब संवाद छोटे होते हैं तो बोलने वाले पात्र जल्दी-जल्दी बदलते रहते हैं और नाटक में रोचकता आती है। इससे घटना का विकास भी गति से होता है। साथ ही, ये अभिनेयता में भी सहायक होते हैं।

टिप्पणी

पाठगत प्रश्न-15.2

1. निम्नलिखित कथनों में से सही के आगे सही (√) तथा गलत के आगे गलत (X) का निशान लगाइए—

   (क) महंत लोभी नहीं, अवसरानुकूल निर्णय लेने वाला विवेकवान व्यक्ति था। ☐

   (ख) गोबरधनदास समझदार था, इसलिए महंत के साथ नगर से नहीं गया। ☐

   (ग) अंधेर नगरी में हलवाई प्रमुख पात्र नहीं है। ☐

   (घ) लंबे संवाद नाटक के प्रभाव में वृद्धि करते हैं। ☐

   (ङ) छोटे संवाद कथानक के विकास में बाधा बनते हैं। ☐

2. सर्वाधिक उपयुक्त विकल्प चुनकर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

   राजा ने स्वयं फाँसी चढ़ने का निर्णय क्यों लिया?

   (क) अपने को अपराधी मानकर ☐

   (ख) साधुओं को दंड न देने की भावना से ☐

   (ग) अपनी गर्दन फंदे के उपयुक्त मानकर ☐

   (घ) स्वयं मुक्ति पाने की लालसा में ☐

3. महंत ने वह नगर छोड़कर जाने का निर्णय क्यों लिया?

   (क) सभी वस्तु टके सेर मिलने के कारण ☐

   (ख) पुलिस द्वारा रिश्वत लेने के कारण ☐

   (ग) भावी संकट की आशंका के कारण ☐

   (घ) गोबरधनदास द्वारा निंदा के कारण ☐

15.2.4 परिवेश

परिवेश नाटक का एक महत्त्वपूर्ण तत्त्व है। इसे देशकाल और वातावरण भी कहते हैं। जब हम 'अंधेर नगरी' को पढ़ते हैं तो इसके दृश्यों और पात्रों के संवादों के माध्यम से हमें कुछ ऐसी सूचनाएँ मिलती हैं, जिनसे हमारे सामने नाटक में व्यक्त वातावरण उभर आता है। इस नाटक में कुल छह दृश्य हैं। इनमें बाज़ार, जंगल और राजसभा के दृश्य प्रमुख हैं। बाज़ार के दृश्य के माध्यम से तत्कालीन लोक-संस्कृति का पता चलता है। आपने ध्यान दिया होगा कि इस दृश्य में अधिकतर लोग साधारण स्थिति के हैं, जिन्हें

हम आम जनता का प्रतिनिधित्व करने वाले लोग कह सकते हैं। जब साहित्य में आम लोगों का चित्रण होता है, तो उनकी संस्कृति को भी अभिव्यक्त किया जाता है, इसे लोक-संस्कृति भी कह सकते हैं। 'अंधेर नंगरी' में बाज़ार के दृश्य को पढ़कर हम सामान्य लोगों के सोचने-विचारने के तरीके, उनकी व्यंग्य-क्षमता, भाषाई विशेषताओं आदि से परिचित होते हैं। कुल मिलाकर इसे लोक-संस्कृति कहा जा सकता है।

यह तो आप जान ही चुके हैं कि इस नाटक को लिखने का उद्देश्य अंग्रेज़ी शासन के कारण भारत की दुर्दशा को चित्रित करना है। भारतेंदु कहना चाहते हैं कि अंग्रेज़ों ने अपनी नीतियों से भारत को अंधेर नगरी बना दिया, न यहाँ पर किसी नियम का पालन किया जाता है, न ही कोई न्याय-व्यवस्था है। देश की जनता अंग्रेज़ी व्यवस्था के कुचक्र में फँसी हुई है। इसी वातावरण के संकेत इस नाटक के प्रत्येक दृश्य में हैं। बाज़ार के दृश्य में घासीराम चनेवाला, हलवाई, चूरनवाला, बनिया—ये सब संवादों के माध्यम से स्थितियों पर व्यंग्य करते हैं। कहने को तो सब आवाज़ लगा-लगाकर अपना सामान बेच रहे हैं, लेकिन बीच-बीच में उन सब पर व्यंग्य करते हैं, जो निकम्मी शासन-व्यवस्था के अंग हैं।

नाटक में दिखाया गया है कि जो नगर दूर से सुंदर दिखता है, वह भीतर से कितना कुरूप हो रहा है। जिस नगर के लोग ऊपर-ऊपर से मालदार लगते हैं, वे भीतर-भीतर से निर्धन हो रहे हैं। इन सबकी ज़िम्मेदार गुलाम बना लेने वाली व्यवस्था है। लेखक के अनुसार जब भारत अंग्रेज़ों का गुलाम था तब ऐसी ही अव्यवस्था थी। इस व्यवस्था में सब चीज़ें टके सेर मिलती हैं। यह अंधेर नगरी है अर्थात् इसमें कोई कानून-व्यवस्था नहीं। इसका राजा चौपट है अर्थात् संवेदनहीन, कुछ भी न समझने-बूझने वाला। ऐसी अंधेर नगरी की असलियत को, इसमें रहने के जोखिम को महंत जानता है। वह जानता है कि ऐसी व्यवस्था में जहाँ हरेक चीज़ का मोल एक ही है, अर्थात् शरीफ़ और बदमाश में कोई भेद नहीं किया जाता, वहाँ किसी के जुर्म की सज़ा किसी को भी मिल सकती है। नाटक के अंत में हम ऐसा होते हुए देख भी सकते हैं। इसीलिए महंत गोबरधनदास से पहले ही कह देता है— ''ऐसी अंधेर नगरी में हज़ार मन मिठाई मुफ़्त की मिले तो किस काम की? यहाँ एक क्षण नहीं रहना।'' इस अंधेर नगरी की न्याय-प्रक्रिया के आडंबर को नाटक में बहुत ही मनोरंजक तरीके से चित्रित किया गया है।

15.2.5 भाषा-शैली

इस नाटक को पढ़ते समय आपका ध्यान इसकी भाषागत विशेषताओं की ओर अवश्य गया होगा। नाटक में आए संवाद में लगै, मिलै, होय आदि अभिव्यक्तियों पर ध्यान दीजिए। यदि इन्हें हम खड़ी बोली हिन्दी में कहें तो ये—लगे, मिले, हो आदि हो जाएँगे। भारतेन्दु ने इन अभिव्यक्तियों का प्रयोग क्यों किया? इसलिए कि भारतेन्दु के समय तक साहित्य की भाषा ब्रजभाषा थी। 'अंधेर नगरी' की भाषा पर ब्रजभाषा का असर है।

इस नाटक की भाषा एक विशेष प्रकार के वातावरण को हमारे सामने सजीव कर देती है। महंत और उसके शिष्यों के बीच बातचीत, बाज़ार के दृश्य में अपना-अपना सामान बेचने वाले दुकानदारों द्वारा सामान बेचने के तरीके और दरबार के दृश्यों पर ध्यान दीजिए, लगेगा जैसे हम स्वयं उस वातावरण में उपस्थित होकर उसे साक्षात देख रहे

हैं। इस नाटक में यह कार्य भाषा के माध्यम से किया गया है। क्या आप जानते हैं कि भाषा के माध्यम से वातावरण निर्माण कैसे होता है? आइए, 'अंधेर नगरी' की भाषा के कुछ नमूनों से इस बात को समझने का प्रयास करते हैं। सबसे पहले महंत और उसके चेलों के नाम और उनकी भाषा पर ध्यान दीजिए। महंत के चेलों के नाम हैं— नारायणदास और गोबरधनदास। इन नामों को सुनते ही आपके सामने साधुओं के शिष्यों की तस्वीर उभर आती होगी। इसके साथ ही बच्चा, भिच्छा-उच्छा, ठाकुरजी, भोग, गुरुजी महाराज!, आनंद होय, सीधा-सामग्री, श्री शालिग्राम जी का बालभोग जैसी शब्दावली साधु-संतों और महंतों की शब्दावली है, जिसे लेखक जानता है और जिसका प्रयोग करता है। साधु-संत बात-बात में नीतिपरक दोहों का भी प्रयोग करते हैं। महंत के संवादों में ये दोहे आते हैं। जैसे—

> लोभ पाप को मूल है, लोभ मिटावत मान।
> लोभ कभी नहीं कीजिये, या में नरक निदान।।

घासीराम आदि दुकानदारों के संवादों में बाबू, हाकिम, महाजन, लाला, एडीटर, साहेब, पुलिस आदि की करतूतों पर व्यंग्य करके तत्कालीन वातावरण की ओर संकेत किया गया है। इनके साथ-साथ चना खाने वालों में अगर मुन्ना है तो गफ़ूर भी है। आप जानते हैं— मुन्ना और गफ़ूर को एक साथ रखने का क्या महत्त्व है? यहाँ पर भारतेन्दु भारत की सांस्कृतिक स्थिति का परिचय देते हैं। उस समय भारत की स्थिति का चित्रण करने वाला कोई भी नाटक इस सांस्कृतिक स्थिति का चित्रण किए बिना महत्त्वपूर्ण नहीं हो सकता था। आप जानते ही हैं कि अंग्रेज़ी शासन में भारत के हिंदू और मुसलमान सभी पिस रहे थे। सभी को मुक्ति की ज़रूरत थी। इसीलिए 1857 में ये दोनों मिलकर अंग्रेजों के विरुद्ध लड़े थे।

'अंधेर नगरी' की भाषा में हिंदी के तत्सम, तद्भव, देशज शब्दों के साथ-साथ आगत शब्दों के फ़ारसी, अंग्रेजी शब्दों का भी अवसरानुकूल प्रयोग किया गया है। भारतेन्दु ने इस बात का पूरा ध्यान रखा है कि जैसा पात्र है, उसी के स्वभाव एवं आचरण के अनुकूल उसकी भाषा हो। यहाँ भाषा पात्रों की नाटकीयता को भी पूरी तरह से अभिव्यक्त करने में सक्षम है अर्थात् नाटक को पढ़ते समय हमारे सामने पात्र अपने अभिनय के साथ उपस्थित होते हैं। भाषा की यह क्षमता किसी भी प्रभावशाली रचना में आवश्यक होती है। इसकी ज़रूरत अन्य विधाओं में भी होती हैं, लेकिन इसकी सबसे अधिक अपेक्षा नाटक में होती है।

'अंधेर नगरी' की भाषा-शैली में व्यंग्यात्मक अभिव्यक्तियों का बहुत महत्त्व है। नाटककार भारतेन्दु ने बाज़ार में सामान बेचने वाले घासीराम, पाचक वाले बनिया, हलवाई आदि के संवादों में दो काम एक साथ किए हैं। एक तो वे अपना सामान बेचने के लिए क्षेत्रीय अभिव्यक्तियों, लोक-काव्य, तुक का प्रयोग करते हैं। दूसरे उनकी इन अभिव्यक्तियों में कुशासन पर संकेत रूप में चोट भी की गई है। ये अभिव्यक्तियाँ अराजकता के वातावरण को भी सजीव रूप में हमारे सामने रखती हैं। घासीराम चने की विशेषताएँ तो बताता ही है, यह भी कहता है कि— "चना हाकिम सब जो खाते। सब पर दूना टिकस लगाते।" हलवाई के संवाद में जलेबी, रेवड़ी, पापड़ की विशेषताएँ ध्वन्यात्मक

रूप में प्रकट हुई हैं, जैसे— जलेबियाँ गरमागरम। घी में गरम..., रेवड़ी कड़ाका, पापड़ पड़ाका।

'अंधेर नगरी' में राजा की प्रजा के रूप में अनेक प्रकार का काम करने वाली सामान्य प्रजा और उसकी दुर्दशा का वर्णन किया गया है। भाषा में भी इस सामान्य लोगों के व्यवसाय से संबंधित शब्दावली का उल्लेख है। कारीगर है तो चूना भी है, भिश्ती है तो मशक भी है, कसाई गडरिया है तो भेड़ भी है।

पाठगत प्रश्न-15.3

सर्वाधिक उपयुक्त विकल्प चुनकर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

1. घासीराम अफसरों के बारे में व्यंग्य करता है कि वे—

(क)	निकम्मे होते हैं	☐	(ख)	चाव से चने खाते हैं	☐
(ग)	मुफ्त में चने खाते हैं	☐	(घ)	टैक्स बढ़ा देते हैं	☐

2. 'अंधेरी नगरी' की भाषा पर निम्नलिखित में से किसका प्रभाव अधिक है—

(क)	राजस्थानी	☐	(ख)	ब्रज	☐
(ग)	हरियाणवी	☐	(घ)	मैथिली	☐

3. निम्नलिखित में से कौन-सा शब्द किसी आगत शब्द का परिवर्तित रूप नहीं है—

(क)	टिकस	☐	(ख)	कसूर	☐
(ग)	हजम	☐	(घ)	लडुआ	☐

क्रियाकलाप-15.1

आपने नाटक पढ़ा। आप जान चुके हैं कि यह नाटक आत्मकेंद्रित, स्वार्थी और अविवेकी व अन्यायी शासन-व्यवस्था में आम जनता की समस्या पर लिखा गया है। इसका उद्देश्य भी शासन-व्यवस्था (ब्रिटिश) की ऊपरी सुनहली परत के भीतर मौजूद विसंगतियों के प्रति आम लोगों को जागरूक बनाना है। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए भारतेंदु ने भाषा के लोक-रूप का प्रयोग किया है यानी स्थानीय स्तर पर लोग जिस तरह के शब्दों, संबोधनों, मुहावरों, अभिव्यक्तियों आदि का प्रयोग करते हैं, उनका बहुतायत में प्रयोग किया है, कुछ उदाहरण देखिए और निर्देशानुसार अभ्यास कीजिए :

टिप्पणी

शब्द: भिच्छा, टिकस, मुरइ अजीरन, छन, बाजे-बाजे, उपास, न्याव, सोपाड़ी, चाभना, तैंने, दोहाई साइत

उपयुक्त शब्दों के लिए मानक हिंदी में प्रयुक्त शब्द लिखिए।

(i)	(ii)	(iii)	(iv)
(v)	(vi)	(vii)	(viii)
(ix)	(x)	(xi)	(xii)

संबोधन :

इन संबोधनों से किस स्थिति का पता लगता है– सम्मान, वत्सलता, आत्मीयता, औपाचारिकता, अधिकार :

(i) बच्चा
(ii) गुरु जी महाराज
(iii) भाई बनिए
(iv) भाई
(v) बाबा जी
(vi) महाराज
(vii) क्यों बे

मुहावरे

निम्नलिखित पंक्तियों से मुहावरे छाँटकर यहाँ लिखिए :

(i) चूरन खावै एडिटर जात। जिनके पेट पचै नहिं बात।।

मु. पेट में बात न पचना

(ii) चूरन साहेब लोग जो खाता। सारा हिंद हजम कर जाता।।

मु. ....

(iii) साढ़े तीन सेर मिठाई दे दे, गुरु-चेले सब आनंदपूर्वक इतने में छक जाएँगे।

मु. ....

(iv) साँचे मारे-मारे डोलें। छली दुष्ट सिर चढ़ि-चढ़ि बोलें।।

मु. – (क) ....

(ख) ....

15.2.6 उद्देश्य

आप इस बात से परिचित होंगे कि प्रत्येक रचना के पीछे रचनाकार का कोई-न-कोई उद्देश्य अवश्य होता है। जानते हैं कि 'अंधेर नगरी' लिखने के पीछे भारतेंदु हरिश्चंद्र

का उद्‌देश्य क्या था? 'अंधेर नगरी' एक व्यंग्यात्मक नाटक है। इसके शीर्षक और संवादों में जगह-जगह व्यंग्योक्तियाँ मिलती हैं। व्यंग्य क्या है— यह आप पढ़ ही चुके हैं। 'अंधेरी नगरी' का उद्‌देश्य व्यंग्य के माध्यम से अन्यायी शासन-व्यवस्था की विसंगतियों—कमियों को हमारे सामने उजागर करना है। इस नाटक में राजा अन्यायी शासन—व्यवस्था का प्रतीक है। इसीलिए उसे चौपट्ट राजा और उसकी नगरी को अंधेर नगरी कहा गया है। इस चौपट राजा के शासन में सब कुछ टके सेर है यानी गुणी और गुणहीन का एक ही मोल है अर्थात्, उनके साथ एक जैसा व्यवहार किया जाता है। भारतेन्दु का उद्‌देश्य केवल इतना नहीं है कि वे किसी अन्यायी राजा की कल्पना करके उस पर चोट करें। वे इस अन्यायी राजा के माध्यम से अंग्रेज़ी राज-व्यवस्था की कमियों पर चोट करते हैं। भारतेंदु के समय में भारत अंग्रेज़ों का गुलाम था। अंग्रेजी शासन की आलोचना सीधे-सीधे नहीं की जा सकती थी। उस समय के रचनाकारों ने अनेक प्रकार की ऐतिहासिक-काल्पनिक कथाओं एवं कहावतों का प्रतीकात्मक उपयोग करके व्यंग्य-रूप में तत्कालीन शासन-व्यवस्था की आलोचना की। 'अंधेरी नगरी' भी इसी प्रकार का नाटक है। इस नाटक से यह भी अभिव्यक्त होता है कि जब शासन-व्यवस्था ही भ्रष्ट हो तो उसके सभी सहायक अर्थात् मंत्री, सेठ, अधिकारी, पुलिस आदि भी भ्रष्ट हो जाते हैं। इन सब बातों के साथ यह नाटक हमें भी वह दृष्टि देता है, जिसके आधार पर हम अपने समय की शासन-व्यवस्था की आलोचना कर सकते हैं।

15.2.7 अभिनेयता

अभिनेयता का अर्थ है— मंच पर अभिनय किए जाने की क्षमता। किसी भी नाटक को सफल बनाने के लिए यह अनिवार्य तत्त्व है। यदि किसी नाटक में अभिनेयता का गुण न हो तो उस नाटक को मंच पर प्रस्तुत नहीं किया जा सकता। आप कल्पना कीजिए कि आपको 'अंधेर नगरी' का मंचन करना है अर्थात् उसे खेलना है। इसके लिए आपको एक अलग दृष्टि से इस नाटक का अध्ययन करना होगा। यह विचार करना होगा कि इसे खेलने में क्या बाधाएँ हैं और इसे लिखते समय उन बाधाओं को दूर करने का कितना ध्यान भारतेन्दु ने रखा है। मंचन के लिए ही भारतेंदु ने 'अंधेर नगरी' को कुछ दृश्यों में बाँटा है— बताया है कि वे दृश्य कहाँ-कहाँ के हैं। इसके साथ ही पात्र कैसे प्रवेश करेंगे, किस भाव तथा मुद्रा में बोलेंगे, कैसे आएँगे-जाएँगे आदि को भी जगह-जगह स्पष्ट कर दिया गया है। नाटक की आलोचना की शब्दावली में इन्हें 'रंग-निर्देश' कहते हैं। रंग-निर्देश इसलिए आवश्यक हैं कि यदि कोई इस नाटक की अभिनय-योजना तैयार करे तो उसे आसानी हो। आप यह देखेंगे कि इस नाटक में कोई भी दृश्य या स्थिति ऐसी नहीं है जिसका अनुकरण न किया जा सके या जिसे मंच पर प्रस्तुत न किया जा सके। इस नाटक के प्रस्तुतिकरण के लिए बहुत अधिक साधनों की आवश्यकता नहीं है। इन सभी गुणों के कारण 'अंधेर नगरी' बहुत बार मंचित हुआ।

पाठगत प्रश्न-15.4

सर्वाधिक उपयुक्त विकल्प चुनकर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए:

1. 'टके सेर भाजी टके सेर खाजा' में निहित व्यंग्यार्थ है—
   (क) सभी चीज़ें बहुत सस्ती हैं ☐
   (ख) एक टके की एक सेर भाजी खाओ ☐
   (ग) गुणों और मूल्यों की कदर नहीं है ☐
   (घ) सभी नागरिकों को समान महत्त्व मिले ☐
2. इस नाटक में 'अंधेर नगरी और चौपट्ट राजा' की कल्पना का कारण क्या है?
   (क) ब्रिटिश शासन की सीधे तौर पर आलोचना न कर पाने की स्थिति ☐
   (ख) दर्शकों के लिए हास्य-रस का वातावरण बनाने का प्रयास ☐
   (ग) इतिहास के प्रसंगों की नयी व्याख्या प्रस्तुत करने का उपाय ☐
   (घ) ब्रिटिश शासन की न्यायप्रियता को उभारने का दृष्टिकोण ☐
3. निम्नलिखित विकल्पों में से सही के आगे (√) और गलत के आगे (X) का निशान लगाइए—
   (क) मंच के अनुकूल होना नाटक की सफलता के लिए आवश्यक है। ☐
   (ख) 'अंधेर नगरी' के मंचन में अनावश्यक पात्रों का होना बड़ी बाधा है। ☐
   (ग) भारतेन्दु ने 'अंधेर नगरी' में पर्याप्त रंग-निर्देश दिए हैं। ☐
   (घ) 'अंधेर नगरी' के मंचन के लिए बहुत-से मंचीय साधनों की ज़रूरत है। ☐

आपने क्या सीखा

- 'अंधेर नगरी' एक व्यंग्य नाटक है, जिसमें शासन-व्यवस्था की विसंगतियों का उद्‌घाटन किया गया है।
- 'अंधेर नगरी' का आशय है—ऐसी नगरी जहाँ तानाशाह की सत्ता है, न्याय का आडंबर होता है और जनता का शोषण किया जाता है। ऐसी नगरी में गुणवान और गुणहीन लोगों में कोई भेद नहीं किया जाता।
- इस नाटक में एक राजा की कहानी के माध्यम से अंग्रेज़ी शासन-व्यवस्था पर करारी चोट की गई है।

- नाटक में यह संदेश दिया गया है कि लोभ में पड़कर देशहित को नहीं भूलना चाहिए। व्यक्ति एवं देशहित के लिए स्वाभिमान तथा स्वाधीनता का बहुत महत्त्व है।
- इस नाटक के संवाद संक्षिप्त हैं और व्यंग्य को उभारने में पूरी तरह सफल हुए हैं।
- नाटक की भाषा तत्कालीन वातावरण को सजीव रूप में प्रस्तुत करने में सक्षम है। साथ ही इसकी भाषा में व्यंग्यात्मकता तथा नाटकीयता है।
- नाटक में लोक-भाषा तथा स्थानीय शब्दावली का प्रयोग है, जिससे नाटक में जीवतंता और प्रवाहमयता आ गई है। इसकी भाषा खड़ी बोली है लेकिन ब्रजभाषा का भी स्पष्ट प्रभाव है दिखता है।
- 'अंधेर नगरी' रंगमंचीयता की दृष्टि से सफल नाटक है।

योग्यता विस्तार

भारतेंदु हरिश्चंद्र का जन्म 1850 ई. में बनारस में हुआ था। महज़ 35 वर्ष की आयु में ही भारतेंदु का निधन हो गया। उनका रचना-संसार आश्चर्यजनक रूप से विस्तृत है। वे हिन्दी साहित्य में आधुनिक-युग के प्रवर्तक हैं। देशभक्ति से संपन्न उनकी रचनाओं में अंग्रेज़ी शासन-व्यवस्था का विरोध तो है ही, अंधविश्वास और धार्मिक पाखंडों पर भी प्रहार है। आर्थिक-विषमता, स्वाधीनता तथा हिन्दी भाषा पर उनके लेखन को व्यापक लोकप्रियता प्राप्त हुई। उन्होंने नारी-शिक्षा और स्वाभिमान को भी अपने साहित्य-संसार का हिस्सा बनाया, 'बाला-बोधिनी' का संपादन इसका प्रमाण है। इसके अलावा उन्होंने 'कविवचन सुधा' 'हरिश्चंद्र मैगजीन' (बाद में 'हरिश्चंद्र चंद्रिका') नाम की पत्रिकाओं का संपादन किया। उनके मौलिक नाटक हैं— 'वैदिकी हिंसा हिंसा न भवति', 'चंद्रावली', 'विषस्य विषमौषधम्,' 'भारत दुर्दशा,' 'नील देवी', 'प्रेम योगिनी', 'सती प्रताप'। उनके अनूदित नाटक हैं— 'विद्यासुंदर', 'पाखंड विडंबन' 'धनंजय विजय', 'कर्पूर-मंजरी' 'सत्य हरिश्चंद्र' आदि। उन्होंने ब्रजभाषा और खड़ी बोली दोनों में काव्य—रचना की। भारतेंदु नयी चेतना के प्रतीक साहित्यकार के रूप में याद किये जाते हैं। उनका सबसे बड़ा योगदान यह है कि उन्होंने साहित्य को मनोरंजन के कठघरे से निकालकर सामाजिक चेतना से जोड़ा। भारतेंदु से पहले जो नाटक लिखे जाते थे उनका देश की गुलामी और सामाजिक समस्याओं से कोई सरोकार न था, लेकिन भारतेंदु के नाटक इन समस्याओं को उठाकर जनता की चेतना को जागृत करते हैं।

टिप्पणी

पाठांत प्रश्न

1. आपने यह नाटक अच्छी तरह पढ़ लिया होगा। इस नाटक में आपको कौन-सा पात्र सबसे अच्छा लगा और क्यों?
2. भारतेंदु ने इस नाटक के माध्यम से अपने समय की शासन-व्यस्था पर करारा व्यंग्य किया है– स्पष्ट कीजिए।
3. मूल्यवान वस्तुएँ सस्ती होने पर भी महंत ने अंधेर नगरी में रहने के लिए मना क्यों किया?
4. 'अंधेर नगरी' नाटक में फेरीवालों की बातों से किस प्रकार का वातावरण अभिव्यक्त हुआ है– उल्लेख कीजिए।
5. अंधेर नगरी नाटक को लिखने के पीछे भारतेंदु का उद्देश्य क्या था– स्पष्ट कीजिए।
6. व्यंग्य-शैली शासन-व्यवस्था की आलोचना के लिए सर्वाधिक उपयुक्त शैली है– इस कथन पर अपने विचार 40-50 शब्दों में लिखिए।
7. 'अंधेर नगरी' की भाषा-शैली पर एक टिप्पणी लिखिए।
8. 'लोभ पाप का मूल है', लोभ मिटावत मान।

   लोभ कभी नहिं कीजिए, या में नरक निदान।।'

   महंत का यह कथन जितना 'अंधेर नगरी' नाटक के संदर्भ में प्रासंगिक है, क्या उतना ही हमारे जीवन में भी है— पक्ष या विपक्ष में तर्कसहित लिखिए।
9. अगर आपके हाथ में देश की शासन-व्यवस्था सौंप दी जाए तो आपकी प्राथमिकताएँ क्या होंगी— 40-50 शब्दों में लिखिए।
10. 'अंधेर नगरी' नाटक में पाचनवाला अपना चूरन बेचते हुए किन-किन लोगों का व्यंग्य करता है? उन लोगों पर व्यंग्य का असली लक्ष्य क्या है?

उत्तरमाला

बोध-प्रश्न

1. (घ) 2. (ग)

पाठगत प्रश्न

15.1 1. (क) (√), (ख) (X), (ग) (√), (घ) (X), (ङ) (X), 2. (घ)

15.2 (क) (√), (ख) (X), (ग) (√), (घ) (X), (ङ) (X), 2. (घ) 3. (ग)

टिप्पणी

16

अपना–पराया

जब कोई व्यक्ति हमारे घर का दरवाज़ा खटखटाता है, तो हम उसको पहचानने का प्रयास करते हैं। यदि हम उसे जानते हैं, तो हम उसका स्वागत करते हैं। यदि नहीं, तो दरवाज़ा ही नहीं खोलते। वह पराया होता है, इसीलिए उसे अंदर नहीं आने देते। इसी प्रकार, बाज़ार से जब हम कोई चीज़ ख़रीदकर घर ले आते हैं, तो वह हमारी हो जाती है, बाकी सब परायी। इसी प्रकार क्या आप जानते हैं कि हमारा शरीर-तंत्र भी अपने-पराए की पहचान करता है ? हाँ, करता तो है, लेकिन कैसे? कुछ अलग ढंग से। आइए, इस पाठ में हम इस पहचान करने की शरीर-तंत्र की क्षमता और उसके व्यवहार के ढंग को जानें।

एलर्जी = (चिकित्सा-विज्ञान का शब्द है) किसी विशेष वस्तु या स्थिति का शरीर पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ना। किसी पदार्थ (जैसे फूल का पराग या धूल आदि) के प्रति शरीर की अति संवेदनशील प्रतिक्रिया।

उद्देश्य

इस पाठ को पढ़ने के बाद आप—

- शरीर में होने वाले कुछ विकारों के वैज्ञानिक कारण बता सकेंगे;
- रोगाणुओं के हमले और उनके बचाव के लिए शरीर की सुरक्षा-व्यवस्था का उल्लेख कर सकेंगे;
- रोगों से बचाव में टीकों के महत्त्व को रेखांकित कर सकेंगे;
- एड्स जैसी घातक बीमारियों और उनसे बचाव के उपायों का विश्लेषण कर सकेंगे;
- ज्ञानेंद्रियों के द्वारा होने वाले संक्रमणों के बारे में जानकारी प्राप्त कर बचाव के लिए उपाय लिख सकेंगे;
- साहित्यिक और वैज्ञानिक भाषा में अंतर स्पष्ट कर सकेंगे।

16.1 मूल पाठ

अपना-पराया

आपकी उँगली में कभी कोई काँटा अवश्य गड़ा होगा। उस काँटे को आप अपनी चुटकी, चिमटी अथवा सुई से निकाल देते हैं। यदि काँटे का कुछ अंश त्वचा में ही गड़ा रह जाए, तो वहाँ गाँठ-सी बन जाती है। यह गाँठ प्रायः सूखकर निकल जाया करती है और उसी के साथ काँटा भी निकल जाता है। कभी-कभी त्वचा में रह गए काँटे के स्थान पर फोड़ा बन जाता है, जिसके फूटने पर मवाद के साथ काँटे से छुटकारा मिल जाता है।

आपकी आँख में कभी धूल अथवा कोयले का कण चला गया होगा। ऐसी स्थिति में आपकी आँखों से आँसू निकलने लगते हैं, जो उस कण को बहाकर बाहर निकाल देने का प्रयास करते हैं। यदि इस प्रकार भी कण आँख से नहीं निकलता, तो चिकित्सक की सहायता लेनी पड़ती है, क्योंकि कण की चुभन चैन से नहीं बैठने देती।

छींकें सभी को आती हैं। स्वस्थ अवस्था में भी दिन में एक-दो छींकें आ जाना कोई विचित्र बात नहीं। नाक के भीतर ज़रा-सी उत्तेजना हुई नहीं कि छींक आई। रसोई में मसालों के भुनने से छींक आ जाती है। कुछ व्यक्तियों को इत्र अथवा ख़ुशबूदार तेलों से भी छींक आ जाती है। यही नहीं, छींकों के साथ-साथ कभी-कभी आँख और नाक से पानी भी बहने लगता है।

चित्र 16.1

छींक आना और नाक से पानी का बहना शरीर की स्वाभाविक प्रतिरक्षात्मक प्रक्रियाएँ हैं। इनके द्वारा शरीर उन तमाम बेमेल और हानिकर पदार्थों को बाहर निकाल फेंकने की चेष्टा करता है, जो वायु द्वारा नाक के भीतर चले जाते हैं। हमारे शरीर की यह सुरक्षा-व्यवस्था हमें विभिन्न प्रकार की बीमारियों और कष्टों से बचाती है।

मुख के भीतर जीभ एक द्वारपाल जैसा कार्य करती है। खाने-पीने के प्रत्येक पदार्थ का स्वाद लेकर वह उसे परख लेती है। कड़वे और दुःस्वाद पदार्थ को हमारी जीभ प्रायः भीतर ले जाने से इनकार कर देती है। भोजन के ग्रास में भूल से आया हुआ कोई बाल अथवा कंकड़-पत्थर प्रायः जीभ की पहुँच से बच नहीं पाता।

खाई हुई प्रत्येक वस्तु तब तक शरीर का अंश नहीं बनती, जब तक आमाशय और अंतड़ी उसे पचाकर रक्त में नहीं पहुँचा देते। कभी-कभी खाई हुई वस्तु को आमाशय स्वीकार नहीं करता और उसे उल्टी के रूप में शरीर से बाहर निकाल फेंकता है। इस तरह पेट अथवा आमाशय भी एक प्रकार से द्वारपाल है।

शब्दार्थ

त्वचा = खाल, शरीर की सबसे ऊपरी परत
मवाद = फोड़े से निकलने वाला स्राव
चिकित्सक = चिकित्सा करने वाला; डॉक्टर
विचित्र =अनोखी
उत्तेजना = सुरसुराहट
इत्र = ख़ुशबूदार द्रव, सेंट,
स्वाभाविक = आदतन होने वाली
प्रतिरक्षात्मक = अपना बचाव करने वाली
प्रक्रियाएँ = कार्य करने का प्रकार
हानिकर = नुकसान पहुँचाने वाले
चेष्टा = प्रयास, कोशिश
कष्ट = तकलीफ़
द्वारपाल = वह व्यक्ति, जो दरवाज़े पर रहकर आने-जाने वालों पर निगाह रखे; पहरेदार; गेटकीपर
दुःस्वाद = बुरे स्वाद वाले
ग्रास = कौर

टिप्पणी

प्रतिक्रिया = किसी कार्य के जवाब में हुआ कार्य
सुरक्षात्मक = बचाव करने वाली
अवशोषित होना = घुल-मिल जाना, सोख लिया जाना
अवांछित = अनचाही
प्रविष्ट = घुसना

असंख्य = अनगिनत
रोगाणु = रोग के अणु; वे सूक्ष्म जीवाणु, जो बीमारी का कारण होते हैं
आश्रय = रहने/ठहरने की जगह
ऊतक = एक जैसा काम करने वाली कोशिकाओं (सेलों) के समूह से बने पिंड; टिश्यू
प्रजनन = संतान की उत्पत्ति; अपने जैसे जीवों को पैदा करना

देह = शरीर
दुर्ग = किला
घात लगाना = हमला करने के लिए तैयार होना
सूक्ष्म = बहुत छोटे
श्लेष्मा = चिपचिपा लसदार पदार्थ, जो नाक से बहकर निकलता है
वायु नली = साँस की नली

शरीर में होने वाली जिन प्रतिक्रियाओं का ऊपर उल्लेख हुआ है, वे किसी-न-किसी रूप में शरीर की सुरक्षात्मक प्रतिक्रियाएँ हैं। ये प्रतिक्रियाएँ बाहरी बेमेल अथवा हानिकर पदार्थों को शरीर में अवशोषित होने से रोकती हैं। शरीर का प्रयास होता है कि अवांछित वस्तु को भीतर प्रविष्ट न होने दे और यदि किसी प्रकार भीतर चली भी जाए, तो उसे शरीर से बाहर निकाल फेंके।

वातावरण में असंख्य रोगाणु होते हैं। ये हमारे शरीर में प्रवेश पाने का प्रयत्न करते हैं, ताकि इन्हें आश्रय के साथ-साथ भोजन भी मिल सके। शरीर के ऊतकों को खा-खाकर ये पनपते-बढ़ते और प्रजनन करते हैं। इनके प्रभाव से भाँति-भाँति के रोग उत्पन्न हो जाते हैं। शरीर इन रोगाणुओं को भीतर प्रविष्ट होने से रोकने का प्रयत्न करता है और उनसे अनेक रूप से लड़ता-भिड़ता है।

त्वचा, देह रूपी दुर्ग की बाहरी दीवार है। यह दीवार शरीर की मुख्यतः दो प्रकार से रक्षा करती है। प्रथम, यह शरीर की नमी को भाप बनकर उड़ जाने से रोकती है। दूसरे, वायु और वस्त्रादि के स्पर्श से अपने ऊपर आकर जमने वाले असंख्य रोगाणुओं को यह बाहर ही रोके रहती है। परंतु, ये रोगाणु भी घात लगाए बैठे रहते हैं कि कब कहीं त्वचा कटे या फटे और ये भीतर घुसें। मल-मलकर नहाते समय हम अनजाने ही इन सूक्ष्म रोगाणुओं को धो-धोकर त्वचा से हटाते रहते हैं।

चित्र 16.2

साँस लेते समय वायु के साथ भाँति-भाँति के रोगाणु हमारी नाक द्वारा भीतर जाते हैं। इनमें से कुछ को तो नाक के बाल ही भीतर जाने से रोक देते हैं। कुछ रोगाणु नाक के भीतर के श्लेष्मा (लसदार स्राव) में चिपककर फँस जाते हैं। ऐसा ही श्लेष्मा फेफड़ों के भीतर की वायुनलियों में भी होता है और वायु द्वारा आए हुए कुछ रोगाणु इसमें चिपक जाते हैं। बलगम के रूप में फेफड़ों से बाहर निकलने वाला यही श्लेष्मा अपने साथ रोगाणुओं को भी बाहर निकाल फेंकता है।

हमारे भोजन, दूध, पानी आदि में लुक-छिपकर अनेक प्रकार के रोगाणु पहले मुँह में और फिर मुँह से आगे आहार-नली में पहुँच जाते हैं। मुँह में बनने वाली लार अन्य कई कार्य करने के साथ-साथ कुछ हद तक रोगाणुओं को भी नष्ट करती है। जो रोगाणु आगे पहुँच जाते हैं, उन्हें आमाशय अपने अम्ल से नष्ट कर देता है। इस अम्ल का अनुभव कदाचित् आपको तब हुआ होगा, जब भरा पेट दब जाने से भोजन का कुछ अंश उल्टा चलकर मुँह में आ जाता है और उल्टी हो जाती है।

हमने देखा है कि शरीर की सुरक्षा में पहला योगदान त्वचा द्वारा और नाक, फेफड़े, मुँह और आहार-नली की भीतरी परतों द्वारा होता है, जो रोगाणुओं को ऊतकों में प्रवेश

करने से रोकती हैं। इन परतों के कटने-फटने पर अथवा इनके कमज़ोर हो जाने पर रोगाणु शरीर के ऊतकों में पहुँच जाते हैं। अतिसूक्ष्म विषाणु (वाइरस) तो पतली त्वचा तथा भीतरी समूची परतों को भी भेदकर घुस जाते हैं। पर, जो भी हो, इनका मुकाबला करने के लिए शरीर की सुरक्षा- व्यवस्थाएँ भी सक्रिय हो जाती हैं।

अनेक संक्रमण पूरे शरीर में न फैलकर स्थानीय होते हैं। कल्पना कीजिए कि आपके हाथ की खाल कहीं कट गई है या आपने बहुत ज़्यादा खुजला लिया है। तब पहले से ही त्वचा पर जमे अथवा वायु आदि के स्पर्श से आए हुए रोगाणु भीतर प्रवेश कर जाते हैं। अब ये ऊतकों को खा-खाकर पनपने और बढ़ने लगते हैं। हमारा शरीर भी इनके प्रति निष्क्रिय नहीं होता। रक्त की श्वेत कणिकाओं की सेना सतर्क हो जाती है और रोगाणुओं में से निकले कुछ रासायनिक पदार्थों का सुराग पाकर यह उसी ओर धावा बोल देती है। इस सेना को रोगाणुओं के संक्रमण-स्थल पर जल्दी से पहुँचाने के लिए आसपास की रक्त-नलियाँ फूल जाती हैं, ताकि ज़्यादा रक्त पहुँचे। ज़्यादा रक्त पहुँचने से संक्रमण-स्थल अधिक लाल, कुछ सूजा हुआ और छूने पर गर्म मालूम पड़ता है। श्वेत-कणिकाएँ रक्त-नलिकाओं की दीवारों में से निकलकर आक्रमणकारियों की ओर बढ़ती हैं और उन्हें खा-खाकर नष्ट करने लगती हैं। इस युद्ध में दोनों पक्षों के सदस्य हताहत होते हैं। उनकी मृत देहों का मलबा तथा टूटे-फूटे ऊतक मवाद बन जाते हैं, जो घटनास्थल पर बने फोड़े-फुंसी के फूटने पर बाहर निकल जाते हैं।

चित्र 16.3

यदि प्रथम आक्रमण-स्थल पर ही रोगाणुओं का दमन न हो पाया, तो वे विजयी होकर आगे बढ़ते हैं। अब वे ऊतकों के तरल में पहुँच जाते हैं। ऊतक-तरल पहले तो अपनी ही विशेष नलियों में बहता है और फिर अंततः रक्त में जा मिलता है। अतः ऊतक-तरल में से होकर रक्त में पहुँचने से पहले हमारे शरीर को इन रोगाणुओं के विरुद्ध एक और मोर्चा बनाना होता है। इस मोर्चे का अनुभव कदाचित् आपको हुआ होगा। कभी-कभी काँख में या जाँघ में गिलटी फूल जाती है, जो दर्द करती है। यह गिलटी तभी बनती है जब हाथ या पैर में कोई फोड़े-फुंसी जैसा संक्रमण हो। गले की टॉन्सिलें भी ऐसी ही गिलटियाँ हैं, जो गले में संक्रमण के कारण फूल जाती हैं। इस प्रकार की सभी गिलटियाँ मानो हमारे शरीर की सुरक्षा-सेना की चौकियाँ हैं। इनके भीतर विशेष प्रकार की भक्षक-कोशिकाएँ होती हैं, जो रक्त की ओर बढ़ते हुए रोगाणुओं को नष्ट करती हैं। जब रोगाणु इन स्थानों पर भी विजयी होकर और आगे बढ़ते हैं, तब वे रक्त में पहुँच जाते हैं। अब रोगी की अवस्था गंभीर हो जाती है और इससे निबटने के लिए शरीर की कुछ अन्य सुरक्षा-व्यवस्थाएँ सक्रिय हो जाती हैं।

टिप्पणी

बलगम = कफ़

आहार नली = भोजन को आमाशय में पहुँचाने वाली नली

विषाणु = वायरस; रोग के विषैले अणु

सक्रिय = क्रियाशील; काम में लगे होना

संक्रमण = एक से दूसरे तक पहुँचना; रोगाणुओं का शरीर में पहुँचना; इन्फ़ैक्शन

स्थानीय = स्थान विशेष तक सीमित; एक ही जगह पर

निष्क्रिय = काम न करने वाला; क्रियाशील न होना

श्वेत कणिकाएँ = ख़ून में मौजूद रोग से लड़ने वाले सफ़ेद कण

सुराग पाकर = पता लगते ही; पता पाकर

धावा बोलना = टूट पड़ना; हमला करना

आक्रमणकारी = हमला करने वाली

हताहत = (हत और आहत) मरे हुए और घायल

मलबा = टूटी-फूटी चीज़ों का ढेर

ऊतक तरल = ऊतक के भीतर रहने वाला द्रव (तरल पदार्थ)

मोर्चा = किसी उद्देश्य या लक्ष्य के लिए एकजुटता

टॉन्सिल = गले की एक ग्रंथि

भक्षक कोशिकाएँ = रोगाणुओं को खा जाने वाली कोशिकाएँ

काँख = बगल

टिप्पणी

जीवाणु = आँखों से न दिखने वाले सूक्ष्म सजीव अणु
टॉक्सिन = विषैले पदार्थ
प्रतिपिंड = विशेष रोगाणुओं से लड़ने के लिए शरीर के भीतर बनने वाले पिंड
लसिका ग्रंथि = प्रतिपिंड बनाने वाली कोशिकाओं की ग्रंथि
इन्फ़्लूएंजा = फ़्लू; विषाणुओं द्वारा फैलने वाला बुखार
चेचक = एक बीमारी, जिसमें शरीर पर फफोले से उठते हैं
तत्काल = तुरंत; फ़ौरन; उसी समय
स्मरण-शक्ति = याद रखने की क्षमता
टीका = किसी विशेष बीमारी से बचाव के लिए शरीर के भीतर पहुँचाए जाने वाला पदार्थ; वैक्सीन
पोलियो = एक बीमारी, जिसमें प्रायः हाथ या पैरों में लकवा मार जाता है
टिटेनेस = एक प्राणलेवा बीमारी, जिसमें शरीर का तंत्रिका-तंत्र बेकार हो जाता है
डिफ़्थीरिया = एक घातक बीमारी, जिसमें गला जकड़ जाता है और साँस रुकने लगती है
हैजा = उल्टी-दस्त की बीमारी
टाइफ़ाइड = मियादी बुखार
क्षय रोग = यक्ष्मा, टी.बी.
प्रविष्ट कराना = अंदर घुसाना या पहुँचाना

कई प्रकार के रोगाणुओं के प्रति भक्षक कोशिकाओं की सेना भी पर्याप्त नहीं होती। विषाणुओं (वाइरस) का तो ये भक्षक कोशिकाएँ कुछ भी नहीं बिगाड़ सकतीं। इन विषाणुओं के अतिरिक्त जीवाणुओं (बैक्टीरिया) से जो विष (टॉक्सिन) निकला करते हैं, वे भी भक्षक कोशिकाओं के प्रभाव से मुक्त होते हैं। अतः इन विषाणुओं तथा टॉक्सिनों से टक्कर लेने के लिए शरीर में कुछ विशेष रासायनिक अणु कार्य करते हैं, जिन्हें प्रतिपिंड (ऐंटीबाडी) कहते हैं। ये प्रतिपिंड मुख्यतः गिलटियों (लसिका ग्रंथियों) की कोशिकाओं से बनते हैं। प्रतिपिंडों की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि ये अपने अनुरूप केवल एक ही प्रकार के रोगाणु अथवा रोग-विष से टक्कर ले सकते हैं। अतः प्रत्येक रोगाणु और रोग-विष के लिए शरीर में पृथक् प्रकार के प्रतिपिंड चाहिए।

अधिकतर प्रतिपिंड शरीर में पहले से मौजूद नहीं होते। एक बार कोई रोगाणु अथवा रोग-विष शरीर में प्रविष्ट हो जाए और उससे प्रभावित होकर शरीर कम या ज़्यादा बीमार होकर ठीक हो जाए, तब शरीर में उस रोग से टक्कर ले सकने वाले प्रतिपिंड कुछ ही सप्ताह तक बने रह सकते हैं, जैसे इन्फ़्लूएंजा के। कुछ रोगों के प्रतिपिंड 10-15 वर्ष तक बने रह सकते हैं, जैसे चेचक के। जब उस रोग-विशेष का आक्रमण होता है, तब ये प्रतिपिंड तत्काल शरीर की रक्षा करके हमें उस रोग से बचाते हैं। हमारे शरीर की स्मरण-शक्ति ऐसी विचित्र है कि वह रोगाणु को लंबे अरसे के बाद भी पहचान लेती है।

रोगों के बचाव-टीकों में यही सिद्धांत काम में लाया जाता है। आज बीसियों प्रकार के टीके बन चुके हैं, जैसे – चेचक, पोलियो, टिटेनेस, डिफ़्थीरिया, हैजा, टाइफ़ाइड, क्षय रोग आदि से बचाव करने वाले। इन सबमें एक ही सिद्धांत है। दुर्बल किए गए रोगाणु अथवा उनका हल्का किया गया विष जान-बूझकर व्यक्ति के शरीर में प्रविष्ट कराया जाता है। तब व्यक्ति का शरीर उन रोगाणुओं अथवा उस विष से जूझता है और उसके प्रतिपिंड बनाने लग जाता है। तदुपरांत, जब कभी रोग का वास्तविक संक्रमण होता है, तब पहले से ही मौजूद ये प्रतिपिंड रूपी रासायनिक हथियार शरीर को रोग से बचा लेते हैं।

कुछ लोगों को इत्र, धूल आदि से छींकें आती हैं और आँख-नाक से पानी बहने लगता है। कुछ ऐसे भी लोग होते हैं, जिन्हें दूध पीने या अंडा खाने से भी परेशानी होने लगती

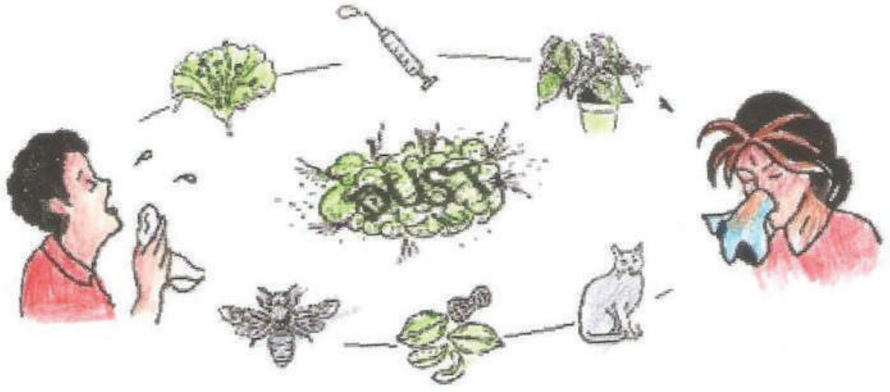

चित्र 16.3 : एलर्जी के कारक

है। इसी प्रकार, कुछ व्यक्तियों के लिए पेंसिलीन जैसी जीवनदायिनी औषधि भी जानलेवा सिद्ध हो सकती है। ऐसी परिस्थितियों में हम कहते हैं कि व्यक्ति को अमुक वस्तु माफ़िक नहीं आती अथवा उस पदार्थ से उसे एलर्जी है। एलर्जी पैदा करने वाले पदार्थ अधिकतर ऐसे प्रोटीन होते हैं, जो शरीर के लिए सदा पराए बने रहते हैं। रक्त या ऊतकों में पहुँचने पर इन बेमेल प्रोटीनों को हमारा शरीर किसी प्रकार बाहर निकाल फेंकने का प्रयत्न करता है। इस प्रयत्न में शरीर उनके निराकरण के लिए प्रतिपिंड बनाता है, लेकिन ये प्रतिपिंड रोगाणुओं के प्रतिपिंडों से कुछ भिन्न होते हैं। इन पराए प्रोटीनों से शरीर के पहले संपर्क पर प्रतिपिंड बनने लग जाते हैं। कुछ समय बाद जब ये पराए प्रोटीन पुनः ऊतकों के संपर्क में आते हैं, तब प्रतिपिंडों और उनके बीच एक तीव्र प्रतिक्रिया होती है, जो रोग का रूप भी ले लेती है। शरीर में पित्ती (छपाकी) निकलना, सूजन आ जाना, साँस फूलना, दमा हो जाना – ये सब एलर्जी के ही उदाहरण हैं। मच्छर के काटने के स्थान पर दाफड़-ददोरा पड़ना, खुजली होना और लाल हो जाना भी एक प्रकार की एलर्जी ही है। जो भी हो, एलर्जी के मामले में हर व्यक्ति अलग है। वही पदार्थ एक व्यक्ति के लिए अपना कहा जा सकता है और दूसरे के लिए सर्वथा पराया। हमारे शरीर में इक्की-दुक्की कोशिकाएँ रोज़ ही कुछ ऐसे बदलती रहती हैं, जो अपनी होते हुई भी पराई बन जाती हैं और शरीर-द्रोही हो जाती हैं। विशेष प्रकार के प्रतिपिंड इन शरीर-द्रोही कोशिकाओं का दमन करके हमें सुरक्षित रखने का प्रयत्न करते हैं। किंतु, जब कभी बागी कोशिकाएँ हद से ज़्यादा बढ़ जाती हैं, तब वे कैंसर का रूप ले सकती हैं। इस प्रकार, हमने देखा कि यदि हम और हमारी जाति जीवित है, तो उसका बहुत बड़ा श्रेय अपने-पराए की पहचान को ही जाता है। इस अपने-पराए की पहचान करने और उससे जूझने के मोर्चे शरीर में जितनी ज़्यादा संख्या में हैं, उतने ही ज़्यादा वे विस्मयकारी भी हैं।

–हरसरन सिंह विश्नोई

16.2 आइए समझें

आपने यह पाठ पढ़ा, कैसा लगा ? पाठ में बताई गई बहुत-सी बातों को आप रोज़ देखते–महसूस करते हैं, लेकिन उनके कारणों को उतना नहीं जानते। विज्ञान का मूल काम यही है कि वह किसी भी कार्य के होने के कारण को तलाश करता है। इसे कार्य-कारण-संबंध कहते हैं। दुनिया में होने वाले हर कार्य का कोई-न-कोई कारण होता है। कुछ कार्य-कारण-संबंधों को हम जानते हैं, कुछ को नहीं। विज्ञान हमारी जानकारी के क्षेत्र का विस्तार करता है। विज्ञान की अनेक शाखाएँ हैं; जैसे–भौतिक विज्ञान (फ़िज़िक्स), रसायन विज्ञान (कैमिस्ट्री), जीव विज्ञान (बायोलॉजी) आदि। विज्ञान की ऐसी ही एक विशेष शाखा है–आयुर्विज्ञान, जिसे आप मेडीकल साइंस के नाम से भी जानते हैं। जीव-विज्ञान हमें प्राणियों की शारीरिक संरचना, व्यवहार आदि के विषय में बताता है, जबकि आयुर्विज्ञान रोग, रोग के कारण, रोग के लक्षण, रोग के उपचार

टिप्पणी

तदुपरांत = उसके बाद
एलर्जी = किसी पदार्थ का शरीर के माफ़िक (अनुकूल) न होना
प्रोटीन = भोजन का एक आवश्यक और मूलभूत तत्त्व
निराकरण = दूर करना; निवारण
तीव्र = तेज़
पित्ती = शरीर पर लाल रंग के ददोरे या चकत्ते पड़ना
दमा = साँस की बीमारी
शरीर-द्रोही = शरीर के प्रति विद्रोह करने वाली; शरीर को नुकसान पहुँचाने वाली
बागी = विद्रोही
कैंसर = शरीर की कोशिकाओं की असंतुलित वृद्धि से उत्पन्न लाइलाज बीमारी
विस्मयकारी = आश्चर्यजनक

(इलाज) आदि के विषय में जानकारी देता है। इस पाठ में हम कुछ शारीरिक व्यवस्थाओं और रोगों से लड़ने की क्षमताओं का परिचय पाते हैं। आइए, अब हम इनके बारे में थोड़ा विस्तार से समझें। समझने की सुविधा के लिए इस पाठ को पाँच अंशों में बाँटा गया है।

16.2.1 अंश -1 आपकी उँगली में .... बाहर निकाल फेंके

इस अंश में शरीर के कुछ अंगों और बाहरी वस्तुओं के प्रति उनके व्यवहार के विषय में बताया गया है। इन अंगों में त्वचा, आँख, नाक, जीभ, आमाशय और आँत शामिल हैं। पहले चार अंग शरीर के बाहरी भाग हैं, जबकि आमाशय और आँत शरीर के भीतरी अंग हैं। आइए, पहले हम शरीर के बाहरी अंगों के विषय में कुछ बातें जान लें।

आप जानते हैं कि दुनिया की सारी चीज़ें (पिंड) मुख्य रूप से दो प्रकार की होती हैं–**सजीव** यानी जिनमें जीवन है और **निर्जीव** यानी जिनमें जीवन नहीं है। विज्ञान की भाषा में हम इन्हें **चेतन** (सजीव) और **जड़** (निर्जीव) कहते हैं। आपको पता है कि चेतन और जड़ में मुख्य अंतर क्या होता है ? आइए, जान लें कि चेतन और जड़ पिंडों में मूल अंतर दो ही हैं :

1. चेतन पिंड वे होते हैं, जो बाहरी वातावरण से अपने लिए कुछ ग्रहण करते हैं और बदले में कुछ निस्सृत करते हैं अर्थात् निकालते हैं।
2. ये बाहरी वातावरण से अपनी सुरक्षा का प्रयत्न भी करते हैं।

   चेतन पिंडों के ये दोनों लक्षण जड़ पिंडों में नहीं पाए जाते।

व्यापक रूप में मनुष्य, पशु, पक्षी, कीड़े, मकोड़े आदि समस्त प्राणी और सारी वनस्पतियाँ (पेड़, पौधे, झाड़ियाँ, घास आदि) चेतन हैं और इनके अतिरिक्त दुनिया की प्रत्येक वस्तु जड़ है।

अब हम समझ ही गए कि चेतन या सजीव पिंड का एक प्रमुख लक्षण होता है – बाहरी वातावरण से अपनी सुरक्षा का प्रयत्न। मनुष्य का शरीर भी चेतन पिंड है, इसलिए इसकी संरचना भी कुछ इस तरह की है कि यह अपने लिए हानिकर चीज़ों से अपनी रक्षा का प्रयत्न करता है। इस प्रयत्न को हम शरीर की सुरक्षात्मक प्रतिक्रियाएँ कहते हैं। लेखक ने इस बात को सहज रूप से समझाने के लिए कहा है कि शरीर जानता है कि क्या अपना है अर्थात् कौन-कौन-सी चीज़ें उसके लिए लाभकारी हैं और क्या

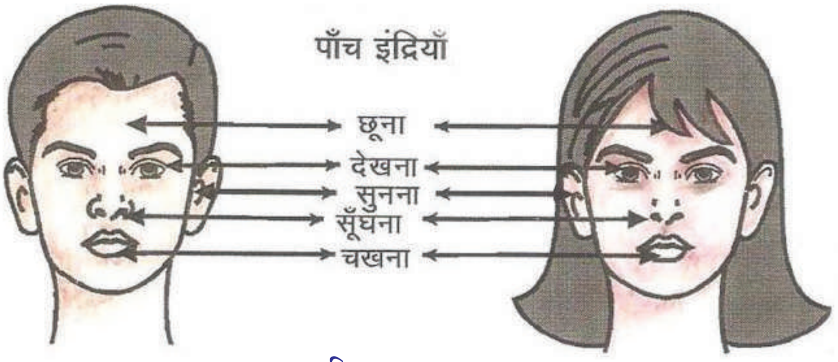

चित्र 16.5

पराया है अर्थात् कौन-सी चीज़ें उसके लिए हानिकारक हैं। शरीर के लिए इस अपने-पराए का निर्णय करने का काम मस्तिष्क (दिमाग) का होता है।

ऊपर आपने शरीर के चार बाहरी अंगों के बारे में पढ़ा है, इनमें कान को और जोड़ लीजिए। तो कुल हुए पाँच – त्वचा, आँख, नाक, कान और जीभ। ये हमारे शरीर के अन्य अंगों से विशिष्ट हैं। इस विशिष्टता के कारण इन्हें मात्र अंग न कहकर इंद्रियाँ कहा जाता है। इंद्रियाँ दो प्रकार की होती हैं–ज्ञानेंद्रियाँ और कर्मेंद्रियाँ। ज्ञानेंद्रियाँ, जो हमें ज्ञान कराएँ और कर्मेंद्रियाँ, जिनके द्वारा हम कर्म करते हैं। उल्लिखित पाँचों इंद्रियाँ ज्ञानेंद्रियाँ हैं। त्वचा से हम ठंडे-गर्म, गीले-भीगे-सूखे, गोल-चौकोर आदि का ज्ञान प्राप्त करते हैं। आँख से रूप, रंग और आकार का बोध होता है। नाक से गंध (सुगंध और दुर्गंध या ख़ुशबू और बदबू) का पता चलता है। जीभ से हमें किसी पदार्थ के स्वाद यानी मीठे, नमकीन, कड़वे आदि होने का बोध होता है। कान हमें स्वर और शब्द की पहचान कराते हैं। ये पाँचों इंद्रियाँ ढेर सारी छोटी-बड़ी तंत्रिकाओं (बहुत ही बारीक नसों) द्वारा मस्तिष्क से जुड़ी होती हैं। इन तंत्रिकाओं को संवेदन-तंत्रिकाएँ कहते हैं। जैसे ही हम किसी बाहरी वस्तु के संपर्क में आते हैं, हमारी ये इंद्रियाँ अपने-अपने संदेश इन संवेदन-तंत्रिकाओं द्वारा मस्तिष्क को भेज देती हैं। मस्तिष्क बहुत तेज़ी से एक साथ कई काम करता है। वह इन संदेशों को समझता है, उन्हें स्मृति में रख लेता है, पहले के संदेशों के आधार पर उनका विश्लेषण करता है और 'क्या करना है' का निर्णय लेकर तंत्रिका-तंत्र के माध्यम से उचित कर्मेंद्रियों को आदेश भेजता है। इस आदेश का पालन हमारी कर्मेंद्रियाँ (हाथ, पैर, मुँह आदि) तुरंत करती हैं और वापस मस्तिष्क को सूचना भेजती रहती हैं। जिन पर, अगर आवश्यक हुआ तो, मस्तिष्क नया आदेश भेजता है, वरना उस अनुभव को भी अपने स्मृति-कोष में रख लेता है।

त्वचा में काँटा गड़ने पर गाँठ के द्वारा उसका वहीं घिर जाना और बाद में सूखकर निकलना, आँख में कण के जाने पर आँसू द्वारा उसे बहाकर फेंकना, नाक में कुछ जाने पर छींकों के द्वारा तेज़ हवा से उसे बाहर निकाल फेंकना, जीभ का स्वाद के आधार पर उसे अस्वीकार कर थूक देना– इन सभी प्रतिक्रियाओं को आप इस संदर्भ से आसानी से समझ सकते हैं। ये प्रतिक्रियाएँ केवल उन्हीं चीज़ों के लिए होती हैं, जो हमारे इस शरीर को नुकसान पहुँचा सकती हैं। लाभकारी चीज़ों को तो स्वीकार कर ही लिया जाता है।

अब शरीर के भीतरी अंगों की बात करें। मुख्यतः दो तरह से हम अपने जीवन को चलाने का काम करते हैं। एक, साँस लेकर यानी वातावरण में मौजूद वायु में से जीवनदायिनी ऑक्सीजन गैस को ग्रहण करके व कार्बन डाई ऑक्साइड जैसी हानिकर गैस को बाहर करके। दूसरे कुछ खा-पीकर यानी शरीर के स्वस्थ बने रहने के लिए आवश्यक प्रोटीन, कार्बोहाईड्रेट, वसा (फ़ैट), खनिज लवण आदि पदार्थों

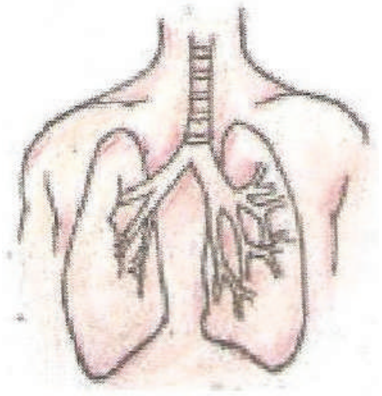

चित्र 16.6

टिप्पणी

टिप्पणी

को ग्रहण करके व शेष को मल-मूत्र-त्याग द्वारा बाहर करके। साँस, नाक से होकर वायुनली द्वारा फेफड़ों तक पहुँचती है और उल्टे क्रम में वापस नाक से बाहर निकल जाती है। भोजन, मुँह से भोजन-नली द्वारा आमाशय(पेट) तक पहुँचता है। यहाँ शरीर के कई अंग, जैसे – यकृत (लिवर), पित्ताशय (गॉल ब्लैडर), आँतें, गुर्दा (किडनी) आदि अपने-अपने काम को अंजाम देते हैं। भोजन में से ऊपर बताए गए आवश्यक और लाभदायक पदार्थों को छाँटकर अलग कर लिया जाता है और उनसे रक्त आदि के निर्माण का काम शुरू हो जाता है। कई बार जब हम आवश्यकता से अधिक खाते हैं या भोजन में कुछ अनचाहे और नुकसानदायक पदार्थ शामिल हों, तो हमारा पेट उसे जल्दी-से-जल्दी बाहर फेंकने में लग जाता है। उल्टी और दस्त होने का यही कारण है। इसीलिए, लेखक ने जीभ और आमाशय को द्वारपाल कहा है, जैसे चौकीदार परिचित या सज्जन व्यक्ति को आदर सहित घर के अंदर आने देता है और चोर-उचक्कों-उठाईगीरों को भगाकर घर को सुरक्षित रखता है। इसी कारण, इन शारीरिक प्रतिक्रियाओं को सुरक्षात्मक प्रतिक्रियाएँ कहा गया है। ये बाहरी, बेमेल और हानिकारक तत्त्वों से शरीर की सुरक्षा करती हैं, उन्हें शरीर में घुल-मिल जाने से रोकती हैं।

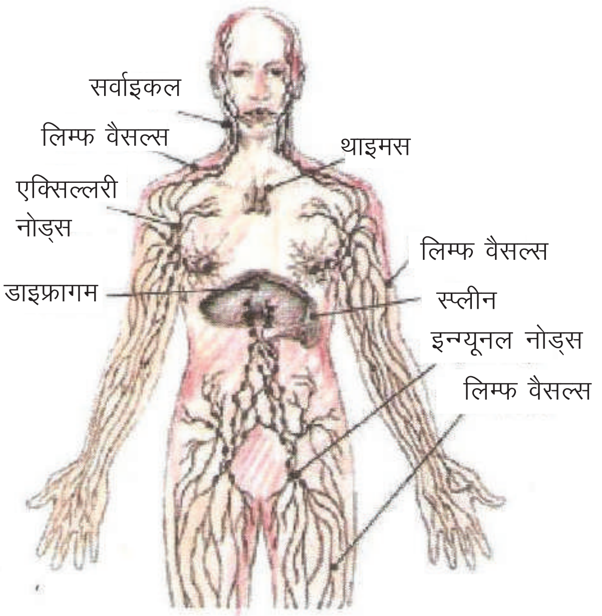

चित्र 16.7

पाठगत प्रश्न-16.1

सर्वाधिक उपयुक्त विकल्प चुनकर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

1. अभी आपने पाँच ज्ञानेंद्रियों की जानकारी प्राप्त की। निम्नलिखित में से कौन-सा कार्य ज्ञानेंद्रियाँ नहीं कर सकतीं :

(क) सूँघना ☐ (ख) खाना ☐

(ग) सुनना ☐ (घ) देखना ☐

टिप्पणी

2. शरीर में अपनी अनेक सुरक्षा व्यवस्थाएँ हैं, तो बताइए कि छींक आने और नाक से पानी बहने से हमें–

(क) हानिकर पदार्थों से मुक्ति मिलने की संभावना होती है ☐

(ख) नाक में तकलीफ़ और जलन होती है ☐

(ग) कहीं बाहर जाने पर अपशकुन होता है ☐

(घ) मौसम के बदलने की सूचना मिलती है ☐

3. मस्तिष्क का कार्य नहीं है –

(क) पूर्व सूचनाओं के आधार पर नई जानकारी का विश्लेषण ☐

(ख) नई सूचनाओं को स्मृति-कोष में सुरक्षित करना ☐

(ग) शरीर के लिए आवश्यक ऑक्सीजन का अवशोषण करना ☐

(घ) कर्मेंद्रियों को स्थिति के अनुरूप कार्य करने का आदेश देना ☐

क्रियाकलाप-16.1

(क) हाथ हम धोएँ ज़रूर बीमारी रहे कोसों दूर
– इस स्लोगन में निहित संदेश को वैज्ञानिक तरीके से समझाइए:

....

....

....

चित्र 16.8

16.2.2 अंश - 2 *वातावरण में असंख्य रोगाणु ... सक्रिय हो जाती हैं*

यह तो आप जानते ही हैं कि सजीव पिंड आकार में बहुत बड़े से लेकर बहुत छोटे तक होते हैं। कुछ तो इतने छोटे होते हैं कि हम उनको आँख से नहीं देख पाते। इन्हें देखने के लिए सूक्ष्मदर्शी (माइक्रोस्कोप) की आवश्यकता होती है। इस प्रकार के असंख्य छोटे जीवाणु (बैक्टीरिया) हवा में उपस्थित रहते हैं और हमारी साँस और आहार द्वारा ये शरीर में पहुँचते रहते हैं। इन जीवाणुओं में कुछ जीवाणु रोगों को फैलाने वाले होते हैं, जिन्हें 'रोगाणु' कहा जाता है। कुछ विषैले रोगाणु 'वाइरस' या 'विषाणु' भी कहलाते हैं। कुछ जीवाणु शरीर के लिए फ़ायदेमंद भी होते हैं, जैसे दही के जीवाणु। आप जानते

ही होंगे कि दूध में विशिष्ट प्रकार के जीवाणुओं की वृद्धि से ही दही बनता है।

चूँकि, यह तय करना मुश्किल है कि कौन-सा जीवाणु शरीर के लिए घातक सिद्ध हो सकता है, इसलिए साफ़ हवा में साँस लें, साफ़ पानी पिएँ और भोजन में खाई जाने वाली कच्ची वस्तुओं को अच्छी तरह से साफ़ पानी से धो लें या फिर उबाल लें। अधिकांश जीवाणु तेज़ ताप को सह नहीं पाते। अतः कोई भी उबली हुई चीज़ प्रायः संक्रमण-रहित होती है, यानी उसके द्वारा रोग के घुस बैठने या फैलने की संभावना नहीं रहती।

आपने पढ़ा कि वातावरण में मौजूद ये रोगाणु अनेक प्रकार से हमारे शरीर में घुसने की कोशिश करते हैं। हमारे शरीर में असंख्य कोशिकाएँ (सेल) होती हैं। एक प्रकार की अनेक कोशिकाएँ मिलकर ऊतक बनाती हैं। शरीर में ऊतकों की संख्या भी अनगिनत होती है। शरीर में पहुँचे रोगाणु इन कोशिकाओं और ऊतकों को खाना शुरू कर देते हैं और खा-पीकर प्रजनन द्वारा, यानी संतान उत्पन्न करके ये अपनी संख्या भी बढ़ाने लगते हैं। रोगाणुओं के संक्रमण से शरीर रोगग्रस्त हो जाता है आदमी बीमार पड़ जाता है।

लेकिन, रोगाणुओं का शरीर में घुस आना इतना आसान भी नहीं है। हमारी शारीरिक संरचना कुछ-कुछ किले जैसी है। लेखक ने इस अंश में और आगे के अंशों में भी शरीर को एक किले के रूप में और रोगाणुओं को शत्रु-सेना के रूप में प्रस्तुत करके इस जटिल विषय को आसान बना दिया है। सबसे पहले त्वचा को देखें। हमारी त्वचा मुख्यतः दो काम करती है। एक तो यह हमारे शरीर में नमी बनाए रखती है। दूसरे, वातावरण में मौजूद इन रोगाणुओं को शरीर के भीतर कोशिकाओं तक पहुँचने से रोके रखती है। रोगाणु त्वचा पर चिपककर रह जाते हैं, जो नहाते समय साबुन में मौजूद तत्त्वों से मर जाते हैं और पानी के साथ बह जाते हैं। कई बार, साबुन न होने पर हम राख या साफ़ मिटटी से रगड़कर भी हाथ धोते हैं। उससे भी पूरी तरह न सही, लेकिन बड़ी संख्या में ये रोगाणु त्वचा से हट जाते हैं। इस तरह देखें, तो त्वचा किले की बाहरी दीवार का काम करती है, यानी शत्रु-सेना को भीतर प्रवेश नहीं करने देती।

जैसे किले में कई द्वार होते हैं और उन द्वारों पर पहरेदार रहते हैं, ऐसे ही हमारे शरीर में भी नाक और मुँह होते हैं। नाक से साँस का आना-जाना होता है और मुँह से भोजन-पानी का। ये दो मुख्य प्रवेश-द्वार हैं। रोगाणु इनके द्वारा यदि शरीर में प्रवेश पाना चाहें, तो उसके लिए भी कुछ प्रतिरक्षात्मक (बचाव करने वाली) व्यवस्थाएँ हैं। प्रत्येक देश दुश्मन की फ़ौजों के लिए अपनी सीमाओं पर चौकसी रखता है, जिसे प्रतिरक्षा कहते हैं। देश की तरह ही शरीर भी प्रतिरक्षा के मामले में ख़ासा चौकस होता है। सबसे पहले नाक की बनावट को देखें। फेफड़ों तक हवा को एक सुरंग जैसे रास्ते से जाना होता है, जिसे हम नासिका-छिद्र के नाम से जानते हैं। आम भाषा में इन्हें नथुने कहते हैं। नासिका-छिद्र में ढेर सारे बाल होते हैं। इसकी आकृति लगभग त्रिभुजाकार होने के कारण, ये बाल हवा में मौजूद धूल के कणों या जीवाणुओं को ऐसे ही रोक देते हैं, जैसे छलनी चाय की पत्ती को या फ़िल्टर पेट्रोल की अशुद्धियों को।

बालों के अतिरिक्त नाक से लेकर साँस की नली और फेफड़ों तक एक लसलसा (चिपचिपा) पदार्थ मौजूद रहता है। विज्ञान की भाषा में इसे श्लेष्मा कहा जाता है। इस चिपचिपे श्लेष्मा में रोगाणु चिपक जाते हैं, जिन्हें हम नाक साफ़ करते समय बाहर कर देते हैं अथवा नाक अपने आप हवा के झटके के साथ इसे बाहर फेंक देती है, जिसे छींक आना कहते हैं। खाँसी के साथ बलगम (कफ़) का बाहर आना भी इसी प्रक्रिया का एक हिस्सा है।

नाक की ही तरह मुँह से प्रवेश करने वाले रोगाणुओं के लिए भी कुछ प्रतिरक्षात्मक व्यवस्थाएँ हैं। मुँह में बनने वाली लार भोजन को सुपाच्य बनाने के साथ-साथ इन रोगाणुओं को भी कुछ हद तक समाप्त कर देती है। इसकी पकड़ में न आ पाने वाले रोगाणुओं को आमाशय में मौजूद अम्ल (एसिड) मार डालता है। शेष बचे रोगाणुओं को हमारे पेट में मौजूद पानी अपने घेरे में लेकर मूत्र के रूप में बाहर कर देता है। इसीलिए बड़े-बुजुर्ग और चिकित्सक(डॉक्टर) हमें ख़ूब पानी पीने की सलाह देते हैं। अधिक मात्रा में साफ़ पानी पीकर हम अपने शरीर रूपी किले को बिना नुकसान पहुँचाए रोगाणुओं को बाहर का रास्ता दिखा देते हैं। इसलिए, पेशाब की जगह को साफ़ और सूखा रखना भी अति आवश्यक है। शौचालय के प्रयोग के पश्चात गुप्तांगों को स्वच्छ पानी से धोकर अच्छी तरह सुखा लें, इसके पश्चात् अपने हाथों को साबुन या राख से अच्छी तरह धो लें। किसी भी प्रकार की कोताही होने पर मल एवं मूत्र से निष्कासित रोगाणु जननांगों को संक्रमित कर सकते हैं।

तो, इस तरह हमने पाया कि हमारे शरीर की प्रतिरक्षा-व्यवस्था काफ़ी ठीक-ठाक है और जहाँ तक संभव होता है, रोगाणुओं को ऊतकों के संपर्क में नहीं आने देती। लेकिन, त्वचा के कटने-फटने या भीतरी अंगों में किसी परत के कट-फट जाने पर ये रोगाणु ऊतकों के संपर्क में आ सकते हैं। विषाणु (वाइरस) तो खुद ही इतने समर्थ होते हैं कि उन्हें कटने-फटने की प्रतीक्षा नहीं करनी होती। वे समस्त परतों को भेदते हुए भीतर घुस जाते हैं। यहाँ से हमारे शरीर की दूसरे स्तर की प्रतिरक्षा-व्यवस्थाएँ सक्रिय हो उठती हैं, जैसे देश में आतंकवादियों के आ जाने पर रेड अलर्ट हो जाता है।

पाठगत प्रश्न-16.2

1. निम्नलिखित कथनों के सामने सही (√) और गलत (×) का निशान लगाइए :

   (क) लार भोजन को सुपाच्य तो बनाती ही है, रोगाणुओं को भी समाप्त कर देती है। ☐

   (ख) हमारी त्वचा पसीने द्वारा शरीर की नमी को नष्ट कर देती है। ☐

   (ग) बहुत-सी कोशिकाएँ मिलकर ऊतकों का निर्माण करती हैं। ☐

   (घ) नाक में रहने वाले श्लेष्मा के सहारे रोगाणु हमारे शरीर में प्रवेश कर जाते हैं। ☐

टिप्पणी

(ङ) पानी पीने से शरीर में रोगाणुओं की उपस्थिति कम हो जाती है। ☐

(च) शौचालय जाने के बाद गुप्तांगों को साफ़ पानी से धोकर सुखाने से संक्रमण से बचा जा सकता है। ☐

16.2.3 अंश - 3 *"अनेक संक्रमण......... व्यवस्थाएँ सक्रिय हो जाती हैं"*

आपने देखा होगा कि अगर किसी चोट वगैरह से या छुरी आदि से हमारी त्वचा कट जाती है, तो सामान्यतः दो-तीन दिन में वहाँ त्वचा की नई परत बन जाती है। इस बीच हमें उस स्थान को रोगाणुओं से बचाकर रखना होता है। इसलिए, त्वचा के कट-फट जाने पर हम उसे धूल के कणों, वायु और पानी से बचाते हैं; उसे ढँककर रखते हैं। कई बार सावधानी बरतने के लिए हम कोई एंटीसेप्टिक क्रीम अथवा उसके उपलब्ध न होने पर देशी घी वगैरह लगा लेते हैं। यदि त्वचा की इस परत पर, चोट की जगह रोगाणुओं का प्रवेश हो जाए, तो फिर शरीर की प्रतिरक्षा-व्यवस्था अपना काम शुरू कर देती है।

आप जानते ही हैं कि हमारे शरीर के सभी हिस्सों में रक्त का संचरण (ख़ून का दौरा) होता रहता है। रक्त में रोगों से लड़ने की क्षमता रखने वाली श्वेत कणिकाएँ मौजूद होती हैं। शरीर के किसी भाग में रोगाणुओं का पता चलते ही उस तरफ़ रक्त का प्रवाह बढ़ जाता है। अधिक संख्या में श्वेत कणिकाओं को पहुँचाने के लिए ही ऐसा होता है। ये श्वेत कणिकाएँ रोगाणुओं को घेर लेती हैं और उनसे युद्ध आरंभ कर देती हैं। रोगाणुओं और श्वेत कणिकाओं के इस युद्ध में दोनों कम या अधिक मात्रा में नष्ट होते हैं और किसी एक की जीत होती है। अगर जीत श्वेत कणिकाओं की होती है, तो नष्ट हुए रोगाणु, श्वेत कणिकाएँ और उस स्थान के ऊतक मवाद के रूप में बाहर निकल जाते हैं और संक्रमण वाले स्थान पर नई त्वचा आ जाती है। अगर यह लड़ाई लंबी चलती है और हार-जीत का फ़ैसला नहीं हो पाता, तो मवाद बढ़ने लगता है और मवाद की लगातार मौजूदगी के कारण उस स्थान पर नई त्वचा नहीं आ पाती और हमें श्वेत कणिकाओं की मदद के लिए बाहर से मदद लेनी पड़ती है। यह मदद एंटीसेप्टिक मरहम (क्रीम) या एंटीबायटिक दवाओं या दोनों के रूप में लेनी होती है।

लेकिन, यदि हम यह काम समय से नहीं करते और रोगाणु अधिक ताकतवर होते हैं, तो वे श्वेत कणिकाओं को नष्ट करके आगे बढ़ने लगते हैं और ऊतक-तरल में घुस जाते हैं। आप पढ़ चुके हैं कि एक ही प्रकार की कोशिकाओं से ऊतक बनते हैं। इन ऊतकों में एक तरल पदार्थ रहता है, जिसे ऊतक-तरल कहते हैं। नसों की दीवार इन ऊतकों से बनी होती है। ऊतक-तरल पहले तो अपनी ही बारीक-बारीक नलियों(नसों) में बहता है, फिर अंततः रक्त में मिल जाता है। रोगाणुओं के ऊतक-तरल से रक्त में पहुँचने से पहले शरीर की एक और प्रतिरक्षात्मक व्यवस्था सक्रिय हो जाती है। हाथ में कहीं पर भी फोड़ा-फुँसी हो या चोट लगे, तो बगल में; पैर में होने पर जाँघ में और गले

में किसी संक्रमण के होने पर गले में कुछ गिलटियाँ फूल जाती हैं। इन गिलटियों में कुछ ऐसी कोशिकाएँ होती हैं, जो ऊतक-तरल से रक्त की ओर बढ़ने वाले रोगाणुओं को खा जाती हैं। इसी खा जाने के गुण के कारण लेखक ने उन्हें भक्षक कोशिकाएँ कहा है। अगर रोगाणु इन भक्षक कोशिकाओं के काबू में भी नहीं आते, तो वे रक्त में प्रवेश कर जाते हैं। चूँकि, रक्त हमारे सारे शरीर में संचरण करता है, इसलिए ये रोगाणु भी सारे शरीर में फैल जाते हैं और ऊतकों को खा-खाकर अपनी ताकत और संख्या बढ़ाते जाते हैं और फिर अधिक ऊतकों को चट करने लगते हैं। ऐसी स्थिति में रोगी की दशा गंभीर होने लगती है। इसीलिए, गिलटी फूलने तक तो हमें किसी डॉक्टर तक अवश्य ही पहुँच जाना चाहिए। वैसे तो शरीर के किसी भी असामान्य लक्षण को देखते या महसूस करते ही हमें किसी चिकित्सक से परामर्श लेना चाहिए।

पाठगत प्रश्न-16.3

सर्वाधिक उपयुक्त विकल्प चुनकर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

1. नसों की दीवार बनी होती है–

   (क) कोशिकाओं से ☐ (ख) तरल त्वचा से ☐

   (ग) कच्चे माँस से ☐ (घ) तरल ऊतकों से ☐

2. रक्त की श्वेत कणिकाएँ–

   (क) रोगाणुओं का भोजन बन जाती हैं ☐ (ख) रोगाणुओं को ऊतक तरल तक पहुँचाती हैं ☐

   (ग) रोगाणुओं से लड़ती हैं ☐ (घ) निष्क्रिय रहती हैं ☐

16.2.4 अंश - 4 *कई प्रकार के रोगाणुओं के प्रति .... रोग से बचा लेते है।*

पिछले अंश में आपने पढ़ा कि ऊतक-तरल से रोगाणुओं के रक्त की ओर बढ़ने पर भक्षक कोशिकाएँ उनका संहार करती हैं, लेकिन कुछ रोगाणु इतने प्रबल होते हैं कि भक्षक कोशिकाएँ उनका कुछ भी नहीं बिगाड़ पातीं। ये रोगाणु विषैले होते हैं। इनमें से जो विष निकलता है, वह उल्टे भक्षक कोशिकाओं को ही नष्ट कर डालता है। इन विषैले रोगाणुओं को 'विषाणु' या 'वाइरस' कहते हैं और इनके संक्रमण को आयुर्विज्ञान की भाषा में विषाणु-संक्रमण या 'वाइरल इन्फ़ैक्शन' कहा जाता है। इनके विष को टॉक्सिन कहते हैं। शरीर की प्रतिरक्षा-व्यवस्था अब अपनी अंतिम लड़ाई लड़ती है। इन विषाणुओं का निर्माण कर लेती है। विज्ञान की भाषा में ये रासायनिक अणु 'प्रतिपिंड' या 'एंटीबॉडी' कहलाते हैं। जैसाकि नाम से ही स्पष्ट है, ये किसी पिंड के प्रतिपक्ष में बनने वाले पिंड होते हैं अर्थात् किसी ख़ास किस्म के विषाणुओं के विरुद्ध मोर्चा बनाने वाले पिंड। इसीलिए, इन प्रतिपिंडों में सिर्फ़ एक ही प्रकार के विषाणुओं से लड़ने का सामर्थ्य होता है। आसान भाषा में कहें,

तो एक किस्म के प्रतिपिंड एक ही बीमारी से लड़ सकते हैं, जिनके विरुद्ध उनका निर्माण हुआ हो। इसलिए, हर बीमारी के लिए अलग-अलग किस्म के प्रतिपिंडों की आवश्यकता होती है। हमारे शरीर में अनेक ग्रंथियाँ (ग्लैन्ड्स) होती हैं। इन्हीं में से एक प्रकार की ग्रंथि लसिका-ग्रंथि होती है। इस लसिका-ग्रंथि की कोशिकाओं से ही प्रतिपिंडों का निर्माण होता है।

अब आप समझ गए होंगे कि शरीर में प्रतिपिंड तैयार अवस्था में नहीं होते। अधिकांश प्रतिपिंड रोग का संक्रमण होने पर ही तैयार होते हैं। अगर, हम थोड़े या ज़्यादा बीमार होकर फिर स्वस्थ हो जाते हैं, तो ये प्रतिपिंड हमारे शरीर में अलग-अलग समय तक के लिए बने रहते हैं। पुनः संक्रमण होने की स्थिति में ये तुरंत सक्रिय हो जाते हैं और विषाणुओं से टक्कर लेकर उन्हें मार डालते हैं। प्रत्येक रोग के प्रतिपिंड के शरीर में बने रहने की समयावधि अलग-अलग होती है। फ़्लू या वाइरल बुखार के प्रतिपिंड कुछ सप्ताह तक ही रह पाते हैं, चेचक या माता के प्रतिपिंड दस से पंद्रह वर्ष तक बने रहते हैं, जबकि क्षय रोग या टी.बी. के प्रतिपिंड सारी उम्र बने रहते हैं। हैं न कमाल के ये प्रतिपिंड। इतना लंबा समय बीतने पर भी अपने दुश्मन विषाणु को तुरंत पहचान लेते हैं !

राष्ट्रीय टीकाकरण योजना

टीके	आयु				
	जन्म	6 सप्ताह	10 सप्ताह	14 सप्ताह	9-12 महीने
प्रांरभिक टीके					
बीसीजी	✓				
पोलियो दवा	✓	✓	✓	✓	
डीपीटी		✓	✓	✓	
हेपेटाइसिस बी		✓	✓	✓	
हैजा					✓
बूस्टर दवा					
डीपीटी, पोलियो दवा	16 से 24 माह				
डीटी	5 वर्ष				
टेटिनस टॉक्साइड (टीटी)	10 वर्ष एवं पुनः 16 वर्ष				
विटामिन ए	9, 18, 24, 30 और 36 महीने				
गर्भवती महिला					
टेटिनस टॉक्साइड : पहला	गर्भधारण के बाद यथाशीघ्र				
टेटिनस टॉक्साइड : दूसरा	पहली बार के 1 महीने बाद				
बूस्टर	3 महीने का अंतर				

यह भी जानें

आइए, अब कुछ बात की जाए इन प्रतिपिंडों की जानकारी से हुए आयुर्विज्ञान के विकास पर। प्रतिपिंडों के इस सिद्धांत के आधार पर चिकित्साशास्त्रियों ने विभिन्न रोगों से बचाव के लिए टीके (वैक्सीन) तैयार कर लिए हैं। इन टीकों के द्वारा शरीर में संबंधित रोग के कमज़ोर किए गए रोगाणु अथवा रोगाणुओं के विष को हल्का करके शरीर में पहुँचा दिया जाता है। हमारा शरीर उस विष से लड़ने के लिए प्रतिपिंड बनाने लगता है। इन रोगाणुओं को समाप्त कर चुकने के बाद भी प्रतिपिंड शरीर में मौजूद रहते हैं और जब वास्तव में इन रोगों का संक्रमण होता है, तब ये प्रतिपिंड उनसे लड़कर हमारे शरीर को रोग से बचा लेते हैं। आज अनेक रोगों के टीके विकसित किए जा चुके हैं। आइए एक तालिका के माध्यम से जानें कि कौन-सा टीका कब लगना चाहिए:

पाठगत प्रश्न-16.4

दिए गए विकल्पों में से उचित विकल्प चुनकर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

1. टीकों के माध्यम से शरीर में पहुँचाए जाते हैं–

(क) एंटीबायटिक ☐ (ख) रोगाणुओं के विष ☐

(ग) विटामिन ☐ (घ) प्रतिपिंड ☐

2. डिफ़्थीरिया रोग शरीर के किस अंग में होता है :

(क) आँख में ☐ (ख) नाक में ☐

(ग) कान में ☐ (घ) गले में ☐

3. एड्स में–

(क) शरीर पर बड़े-बड़े रिसने वाले ज़ख़्म हो जाते हैं।

(ख) शरीर की प्रतिरक्षात्मक व्यवस्था कमज़ोर होने लगती है।

(ग) शरीर में प्रतिपिंडों की अधिकता हो जाती है।

(घ) शरीर की कोशिकाओं में असामान्य वृद्धि हो जाती है।

टिप्पणी

16.2.5 अंश - 5

हमने पाठ के शुरू में पढ़ा है कि बहुत-सी वस्तुओं से शरीर की सुरक्षा-व्यवस्थाएँ सक्रिय हो जाती हैं। इन बहुत-सी वस्तुओं में से अधिकांश के प्रति तो सभी मनुष्य-शरीर एक-सा व्यवहार करते हैं। कुछ वस्तुएँ ऐसी होती हैं, जो आमतौर पर मानव-शरीर द्वारा ग्रहण कर ली जाती हैं, पर कुछ व्यक्तियों के शरीर उन्हें ग्रहण नहीं करते। आमतौर पर, भोजन और दवाओं में कुछ ऐसी चीज़ें भी होती हैं, जिन्हें एक शरीर आसानी से अवशोषित कर लेता है, जबकि दूसरा उसे अपना हिस्सा नहीं बना पाता। जैसे, अधिकांश लोगों को दूध या अंडा सेहतमंद बनाता है, जबकि कुछ लोगों को इससे भी परेशानी होती है, उनको या तो उल्टी आ जाती है या पेट में दर्द होने लगता है या फिर दस्त लग जाते हैं। इसी तरह, कुछ लोगों को बैंगन, मसूर की दाल, फल अथवा कोई सामान्य-सी अन्य वस्तु परेशान करती है। ऐसी ही परेशानी कुछ लोगों को एनलजीन, पेंसिलीन या कुछ अन्य विशिष्ट दवाओं से भी होती है। साधारण भाषा में हम इसे उस खाद्य पदार्थ या दवा का माफ़िक न आना कहते हैं। विज्ञान की भाषा में माफ़िक न आने की इस विशेषता को **एलर्जी** कहा जाता है।

आप यह तो जानते ही हैं कि हमारे भोजन में प्रोटीन एक आवश्यक तत्त्व है, पर क्या आप यह जानते हैं कि सभी पदार्थों में एक-सा प्रोटीन नहीं होता, यानी अलग-अलग पदार्थों में अलग-अलग प्रकार के प्रोटीन होते हैं। कुछ प्रोटीन ऐसे भी होते हैं, जिन्हें किसी-किसी व्यक्ति का शरीर स्वीकार नहीं करता। ये प्रोटीन उसके लिए सदा पराए बने रहते हैं। पहली बार इन प्रोटीनों के संपर्क में आने पर शरीर उन्हें निकाल फेंकने की कोशिश करता है। इस कोशिश में शरीर उन प्रोटीनों के विरुद्ध रोग के प्रतिपिंडों से कुछ भिन्न प्रकार का प्रतिपिंड बनाता है। जब ये प्रोटीन फिर से हमारे शरीर के ऊतकों तक पहुँचते हैं, तो इन प्रतिपिंडों और प्रोटीनों के बीच तेज़ लड़ाई होती है, जो कभी-कभी रोग का रूप भी ले लेती है। शरीर में पित्ती उछलना, ददोरे पड़ जाना, सूजन आना, साँस फूलना, दमा हो जाना इस एलर्जी के ही लक्षण हैं। भोजन और दवा के अतिरिक्त मच्छरों या दूसरे कीड़ों के काटने पर भी एलर्जी हो जाती है। जैसा कि हम जान चुके हैं, एलर्जी व्यक्ति-विशेष के शरीर का मामला है। प्रत्येक व्यक्ति का शरीर एलर्जी के मामले में दूसरे से भिन्न होता है।

आपने पढ़ा है कि हमारे शरीर में कोशिकाएँ नियमित रूप से बनती रहती हैं। इस प्रक्रिया में कई बार कुछ ऐसी कोशिकाएँ भी बन जाती हैं या कुछ कोशिकाएँ इस रूप में भी परिवर्तित हो जाती हैं, जो शरीर का अंग होते हुए भी शरीर-विरोधी होती हैं। यानी, वे अपनी होते हुए भी विद्रोही होने के कारण बिल्कुल पराई बन जाती हैं। इनके विद्रोही स्वभाव के विरुद्ध भी शरीर विशेष प्रकार के प्रतिपिंड बना लेता है और उनके द्वारा इन विद्रोही कोशिकाओं को नष्ट करके स्वयं को सुरक्षित कर लेता है। लेकिन, कभी-कभी ये विद्रोही कोशिकाएँ असामान्य रूप से विकसित हो जाती हैं और शरीर

इनसे लड़ने में असमर्थ होने लगता है। ऐसी स्थिति में ये कैंसर का रूप भी धारण कर सकती हैं। जैसे पान, बीड़ी, सिगरेट, गुटखा आदि में ऐसे पदार्थ होते हैं, जो शरीर के लिए अनचाहे होते हैं और जब शरीर इनसे लड़ने में असमर्थ हो जाता है, तो विद्रोही कोशिकाएँ पैदा हो जाती हैं और ये गाँठ या रसौली का रूप धारण कर कैंसर को जन्म देती हैं।

निष्कर्ष

इस पाठ को पढ़ने के बाद हम इस निष्कर्ष तक पहुँचते हैं कि हमारे शरीर की अपने-पराए की पहचान करने की शक्ति असीमित है। इसी शक्ति के कारण यह शरीर बाहरी वातावरण से हमारी सुरक्षा करता है। यद्यपि हमारा शरीर आश्चर्यजनक रूप से अपने बलबूते ही अपनी सुरक्षा का प्रयत्न करता है, फिर भी हमें रोगों से लड़ने के लिए इन प्रतिरक्षा-व्यवस्थाओं पर ही निर्भर नहीं रहना चाहिए। मनुष्य के पास चूँकि मस्तिष्क है, जिससे उसने न सिर्फ़ अपने शरीर के सामर्थ्य को पहचान लिया है और रोगों की पहचान कर ली है; बल्कि उसने अपने शरीर की सीमाओं को भी पहचाना है, उसके सामर्थ्य को बढ़ाने के तरीके भी विकसित किए हैं और रोगों का उपचार करना भी सीखा है। अतः, अपने शरीर के सामर्थ्य का ज्ञान हासिल करने के साथ-साथ हमें मानव-मस्तिष्क की आयुर्विज्ञान-संबंधी उपलब्धियों यानी चिकित्सा का भी भरपूर उपयोग करना चाहिए। रोग के लक्षण महसूस होते ही चिकित्सक से परामर्श लेना चाहिए, उसके निर्देशानुसार नियमित रूप से दवाएँ खानी चाहिए और परहेज़ करना चाहिए।

अंततः, यह कहना ही उचित होगा कि मनुष्य को अपने मन और शरीर को दृढ़ बनाये रखने के उपाय लगातार करते रहना चाहिए। एक पुरानी कहावत है कि 'तन सुखी तो मन सुखी, पहला सुख नीरोगी काया।' जहाँ यह सही है कि स्वस्थ शरीर में स्वस्थ मस्तिष्क निवास करता है, वहीं यह कहना भी उचित होगा कि स्वस्थ मन शरीर को भी नीरोग बनाये रखने में मददगार होता है। मन का स्वास्थ्य तभी बना रह सकता है, जब हम और हमारे आसपास के लोग; वातावरण और खाद्य-पदार्थ स्वच्छ, असंक्रमित और आनंददायी हों। इसलिए, 'सबकी मुक्ति में अपनी मुक्ति' की युक्ति ही सबसे कारगर है।

पाठगत प्रश्न-16.5

सर्वाधिक उपयुक्त विकल्प चुनकर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

1. शरीर में ददोरे पड़ जाने पर आप –

   (क) अधिक मात्रा में पानी का सेवन करेंगे ☐

   (ख) प्रोटीन को बढ़ाने की कोशिश करेंगे ☐

टिप्पणी

(ग) एलर्जी के लिए डॉक्टर से सपंर्क करेंगे ☐

(घ) नष्ट होने का इंतजार करेंगे ☐

2. निम्नलिलिखित में से सही और गलत कथन छाँटिए:

(क) शरीर कुछ प्रोटीन ग्रहण नहीं कर पाता ☐

(ख) एलर्जी हर किसी को एक जैसी होती है ☐

(ग) शरीर में कुछ विद्रोही कोशिकाएँ भी पैदा हो जाती हैं ☐

(घ) रोगों से लड़ने के लिए शरीर की प्रतिरक्षात्मक व्यवस्था पर भरोसा करना चाहिए ☐

16.3 व्यावहारिक भाषा प्रयोग

आपने इस पाठ को पढ़ा। आपने महसूस किया होगा कि पुस्तक के अन्य पाठों की अपेक्षा इसकी भाषा भिन्न है। हाँ, ठीक ही महसूस किया। यह पाठ साहित्यिक पाठ नहीं है। यह विज्ञान विषय से संबंधित है। जैसे आम बोलचाल की भाषा से साहित्यिक और राजकाज की भाषा भिन्न होती है, वैसे ही विज्ञान-संबंधी विषय की भाषा भी भिन्न होती है। साहित्य की भाषा में कल्पना और सृजन की सुंदरता होती है, जबकि विज्ञान की भाषा तर्क और प्रयोग पर आधारित होती है। विज्ञान की भाषा में पारिभाषिक शब्दों का अनेक बार प्रयोग किया जाता है। इस तरह की भाषा को वैज्ञानिक भाषा भी कहते हैं।

आपने पाठ के शुरू में पढ़ा था कि विज्ञान में किसी भी काम का कोई-न-कोई कारण होता है। यदि एक क्रिया है, तो उसकी प्रतिक्रिया होना स्वाभाविक है। इसलिए, विज्ञान की भाषा में वाक्य-संरचनाओं में भी कार्य-कारण संबंध होता है। आपने इस प्रकार के कई वाक्य इस पाठ में पढ़े हैं। उदाहरण के लिए–''छींक आना और नाक से पानी बहना शरीर की स्वाभाविक प्रतिरक्षात्मक प्रक्रियाएँ हैं'' ''जो रोगाणु आगे पहुँच जाते हैं, उन्हें आमाशय अपने अम्ल से नष्ट कर देता है'' ''कभी-कभी काँख या जाँघ में गिलटी बन जाती है, यह तभी बनती है, जब हाथ या पैर में कोई फोड़े-फुंसी जैसा संक्रमण हो।''

उक्त सभी वाक्यों में किसी-न-किसी कार्य का कोई-न-कोई कारण है। छींक आना या नाक से पानी बहने की प्रक्रिया परिणाम है– प्रतिरक्षात्मक प्रक्रिया का। इसी प्रकार, दूसरे वाक्य में "कुछ रोगाणु यदि आमाशय में पहुँचते हैं, तो वहाँ उपस्थित अम्ल उन्हें नष्ट कर डालता है", यानी समाप्त कर देता है।

यूँ तो, किसी भी विषय पर बोलते या लिखते समय उस विषय की आवश्यकता के अनुसार भाषा के रूप में कुछ परिवर्तन आ जाता है, पर विज्ञान के विषय का विश्लेषण करने के लिए हमें विज्ञान-संबंधी वस्तुओं, संकल्पनाओं, परिभाषाओं और अवधारणाओं के लिए विशेष प्रकार के शब्दों का प्रयोग करना पड़ता है। विषय-संबंधी इन अवधारणापरक

शब्दों को **पारिभाषिक शब्द** कहते हैं। प्रायः पारिभाषिक शब्दों का प्रयोग उसी विषय या उससे संबंधित मिलते-जुलते विषयों में ही किया जाता है। इस पाठ में विज्ञान और आयुर्विज्ञान या चिकित्साशास्त्र के अनेक पारिभाषिक शब्दों का प्रयोग हुआ है, उदाहरण के लिए :

आमाशय, अवशोषित, रोगाणु, वायुनली, बलगम, आहारनली, विषाणु, श्वेत-कणिकाएँ, ऊतक-तरल, टान्सिल, भक्षक कोशिकाएँ, जीवाणु, टॉक्सिन, प्रतिपिंड, लसिका-ग्रंथि, इन्फ़्लूएंजा, चेचक, टीका, पोलियो, टिटेनेस, डिफ़्थीरिया, हैजा, टाइफ़ाइड, क्षय रोग, एलर्जी, प्रोटीन, पित्ती, दमा, कैंसर आदि।

कुछ वैज्ञानिक शब्दावली आपने पढ़ी, अब कुछ पारिभाषिक शब्दावली देखिए :

ऊतक – एक जैसा काम करने वाली कोशिकाओं के समूह से बने पिंड

प्रजनन – अपने जैसे जीवों को जन्म देने की प्रक्रिया

श्लेष्मा – चिपचिपा लसदार पदार्थ, जो नाक से बहकर निकलता है

प्रतिपिंड – विशेष प्रकार के रोगाणुओं से लड़ने के लिए शरीर में बने पिंड

आप भी इसी प्रकार के पारिभाषिक शब्द पाठ में से चुनिए और यहाँ लिखिए:

....

....

....

....

....

आप ऊपर के शब्दों पर विचार करें, तो पाएँगे कि इनमें अधिकांश शब्द सामान्यतः विज्ञान या चिकित्साशास्त्र के अतिरिक्त अन्य विषयों में प्रयुक्त नहीं होते या फिर होते भी हैं, तो भिन्न अर्थों में होते हैं। जैसे 'टीका' शब्द का अर्थ चिकित्साशास्त्र में रोग से बचाव करने वाला वैक्सीन है, जबकि आमतौर पर 'टीका' का अर्थ माथे पर लगा तिलक या सगाई-समारोह होता है और साहित्य में तथा आम भाषा में इसका अर्थ आलोचना भी होता है।

चूँकि, आज़ादी से पहले हमारे देश की राजभाषा और शिक्षा तथा अनुसंधान की भाषा अंग्रेज़ी थी, इसलिए हिंदी भाषा में पारिभाषिक शब्दों का प्रायः अभाव था। आज़ादी के बाद हिंदी को ज्ञान-विज्ञान तथा राजकाज की समर्थ भाषा बनाने के सरकारी और गैर-सरकारी तौर पर प्रयास हुए। इन प्रयासों में विभिन्न विषयों के लिए पारिभाषिक शब्दों का चुनाव किया गया, साथ ही, नए पारिभाषिक शब्दों का निर्माण भी किया गया।

टिप्पणी

हिंदी में अधिकतर अंग्रेज़ी के शब्दों के स्थान पर हिंदी शब्द खोजे और बनाए गए। हिंदी में प्रचलित शब्दों के साथ-साथ संस्कृत तथा अन्य भारतीय भाषाओं से शब्दों को खोजा गया। इनके अभाव में उपसर्ग तथा प्रत्ययों के प्रयोग से भी अनेक शब्द बनाए गए। एक धारणा यह भी रही कि अंग्रेज़ी के अधिक प्रचलित शब्दों को ज्यों का त्यों ग्रहण कर लिया जाए। जैसे–ऑक्सीजन, कार्बन डाईऑक्साइड, प्रोटीन, कार्बोहाइड्रेट आदि।

आपने क्या सीखा

- हमारे शरीर की कुछ सामान्य सुरक्षा-व्यवस्थाएँ हैं, जो पहले स्तर पर ही अनचाही और हानिकर वस्तुओं अथवा रोगाणुओं को भगाकर उनसे अपनी सुरक्षा कर लेती हैं।
- रोगाणुओं से स्वयं को बचाने के लिए हमें स्वच्छ हवा, साफ़ पानी तथा अच्छी तरह धोकर या पकाकर ही खाद्य-सामग्री का प्रयोग करना चाहिए। नित्य अच्छी तरह नहाना चाहिए तथा कुछ खाने-पीने से पहले अच्छी तरह हाथ धो लेने चाहिए।
- हमारे रक्त में श्वेत-कणिकाएँ होती हैं, जो रोगाणुओं से लड़ती हैं। श्वेत कणिकाओं की कमी होने पर रोग बढ़ जाता है।
- बगल(काँख) और जाँघ में बन जाने वाली गिलटियाँ तथा गले की टॉन्सिलें रोगाणु को रक्त तक पहुँचने से रोकने वाली भक्षक कोशिकाओं को जन्म देती हैं; साथ ही, यह भी बताती हैं कि रोग अधिक गंभीर हो सकता है, अतः चिकित्सक से परामर्श लेना चाहिए।
- थोड़े बीमार होकर ठीक हो जाने पर हमारे शरीर में उस रोग से लड़ने के प्रतिपिंड तैयार हो जाते हैं, जो पुनः उस रोग का संक्रमण होने पर उसका मुकाबला करते हैं।
- प्रतिपिंड बनने के सिद्धांत पर टीकों का निर्माण किया जाता है। टीके हमारे शरीर में उस रोग से लड़ने के लिए प्रतिपिंड तैयार कर देते हैं। आज अनेक रोगों से बचाव के टीके बन चुके हैं। बच्चे के जन्म के फ़ौरन बाद से ही हमें उसको टीके अवश्य लगवाने चाहिए।
- कुछ बीमारियाँ ऐसी भी होती हैं, जिनके अभी न टीके हैं, न उनको पूरी तरह समाप्त करने वाला इलाज। 'एड्स' ऐसी ही बीमारी है, जिसमें रोगी के शरीर की प्रतिरोध-क्षमता धीरे-धीरे समाप्त होती जाती है। एड्स एच०आई०वी० वायरस के संक्रमण से होता है। यह संक्रमण संक्रमित व्यक्ति के ख़ून या उससे यौन-संबंधों के ज़रिये दूसरे तक पहुँचता है। एड्स रोगी के प्रति समाज को प्रेम और सहानुभूति का भाव रखना चाहिए।

- किसी वस्तु (खाद्य-पदार्थ या दवा आदि) के प्रति शरीर की अरुचि या अस्वीकार्यता को एलर्जी कहते हैं। एलर्जी के लक्षण हैं–पित्ती उछलना, ददोरे पड़ना, लाल-लाल निशान पड़ना, सूजन हो जाना, दर्द होने लगना, साँस फूलना आदि।
- हमारा बाह्य वस्तुओं से संपर्क जल, वायु, मिट्टी और खाद्य-पदार्थों के माध्यम से होता है, अतः ये ही संक्रमण के माध्यम भी बनते हैं, इसलिए हमें अपने पर्यावरण को स्वच्छ रखना चाहिए व उसे प्रदूषणरहित बनाये रखने का हर प्रयत्न करना चाहिए।
- आम बोलचाल की भाषा तथा अन्य भाषा-रूपों से विज्ञान की भाषा भिन्न होती है। विज्ञान की भाषा में सीधे, स्पष्ट, सहज शब्दों और कार्य-कारण संबंध को स्पष्ट करने वाली वाक्य-संरचना का प्रयोग किया जाता है।
- किसी विषय-विशेष में प्रयोग होने वाले अवधारणापरक या संकल्पनात्मक शब्दों को पारिभाषिक शब्द कहते हैं। जैसे– श्लेष्मा, ऊतक, ऊतक-तरल, पिंड आदि।

योग्यता विस्तार

आजकल काली खाँसी, खसरा, हेपेटाइटिस-ए, हेपेटाइटिस-बी आदि के टीके उपलब्ध हैं और नए-नए टीके विकसित किए जा रहे हैं। बच्चे के जन्म के समय प्रायः डॉक्टर टीकों की एक तालिका माँ-बाप को देते हैं, जिसमें टीकों का नाम और लगवाने के समय का उल्लेख होता है, जिसे चित्र द्वारा समझाया गया है। अपने नज़दीक के किसी डॉक्टर से इसे प्राप्त कीजिए और उसका अध्ययन कीजिए। समझने में कठिनाई होने पर उचित व्यक्ति/विद्वान से जानकारी लीजिए। पत्र-पत्रिकाओं के स्वास्थ्य- स्तंभों/विशेषांकों का नियमित अध्ययन कीजिए।

पाठांत प्रश्न

1. ज्ञानेंद्रियों से क्या अभिप्राय है ?
2. कुछ खाने-पीने से पहले हाथों को अच्छी तरह क्यों धोना चाहिए ?
3. 'श्लेष्मा' किसे कहते हैं और इसका क्या काम होता है ?
4. 'अपना पराया' पाठ में शरीर रूपी दुर्ग की बाहरी दीवार किसे कहा गया है और क्यों ?
5. बगल (काँख) या जाँघ में गिलटियाँ क्यों फूल जाती हैं ?
6. वाइरस से लड़ते/लड़ती हैं–

   (क) श्वेत कोशिकाएँ   (ग) प्रतिपिंड

   (ख) ऊतक   (घ) टॉक्सिन

7. एच॰आई॰वी॰ संक्रमित व्यक्ति को–

   (क) समाज से प्रेम की आवश्यकता है।

   (ख) समाज से दूर रहना चाहिए।

   (ग) अपने पाप की सज़ा मिलती है।

   (घ) अन्य लोगों को नहीं छूना चाहिए।

8. टीके किस सिद्धांत पर कार्य करते हैं, कुछ वाक्यों में समझाइए।

9. 'टीके' लगवाना क्यों ज़रूरी है ? ऐसे आठ रोगों के नाम लिखिए, जिनके टीके उपलब्ध हैं।

10. एड्स किस वायरस से और कैसे संक्रमित होता है?

11. पारिभाषिक शब्दावली से आप क्या समझते हैं ?

12. 'अपना-पराया' पाठ में प्रयुक्त किन्हीं आठ पारिभाषिक शब्दों का उल्लेख कीजिए।

उत्तरमाला

बोध प्रश्न

(1) ग (2) ग (3) क

पाठगत प्रश्न

16.1 – (1) ग (2) क (3) ग

16.2 – (1) (क) सही (ख) गलत (ग) सही (घ) गलत (ङ) सही (च) सही

16.3 – (1) घ (2) ग

16.4 – (1) (ख) (2) (घ) (3) (ख)

16.5 – (1) (ग) (2) (क) सही (ख) गलत (ग) सही (घ) गलत

टिप्पणी

17

बीती विभावरी जाग री

जयशंकर प्रसाद हिंदी साहित्य के एक सुप्रसिद्ध कवि हैं जिन्होंने प्रकृति के सौंदर्य पर आधारित अनेक कविताएँ लिखी हैं। उन्होंने प्रकृति को मानव की तरह व्यवहार करते भी दिखाया है। इसी तरह की उनकी एक सुंदर कविता है—'बीती विभावरी जाग री।' आप कविता के उस रूप से खूब परिचित हैं, जिसे सस्वर गाया जाता है। जी हाँ, कविता के इस रूप को 'गीत' कहते हैं। यह कविता भी एक गीत है। इस पाठ में हम उनकी इसी कविता को पढ़ेंगे।

उद्देश्य

इस कविता को पढ़ने के बाद आप –

- कविता का भावार्थ स्पष्ट कर सकेंगे;
- कविता में निहित सौंदर्य-बिंदुओं का विश्लेषण कर सकेंगे;
- काव्यांशों की व्याख्या तथा सराहना कर सकेंगे;
- मनुष्य और प्रकृति के पारस्परिक संबंधों पर सृजनात्मक चिंतन कर उसका उल्लेख कर सकेंगे;
- कविता की भाषा-शैली पर टिप्पणी कर सकेंगे;
- रूपक अलंकार की पहचान कर उसका वर्णन सकेंगे।

17.1 मूल पाठ

आइए, हम कविता को एक बार ध्यान से पढ़ लेते हैं।

टिप्पणी

विभावरी – रात्रि
अंबर-पनघट–आकाश रूपी पनघट
तारा-घट–तारे रूपी घड़े
उषा–प्रातःवेला, सुबह
नागरी–स्त्री
खग-कुल–पक्षियों का समूह
कुल-कुल–पक्षियों का कलख/ चहचहाहट
किसलय–कोपलें (नए-नए पत्ते)
लतिका–लता, बेल
मुकुल–अधखिला फूल
नवल–नया
गागरी–गगरी
अधरों–होंठों
राग–लगाव, प्रेम-रस, भारतीय शास्त्रीय संगीत में गाने का आधार (राग अनेक प्रकार के होते हैं)
विहाग–एक राग का नाम, जो रात्रि के समय गाया जाता है।
अमंद–कम नहीं होने वाला, जो मंद न हो
अलकों–केशों
मलयज–सुवासित पवन, सुगंधित वायु
आली–सखी

बीती विभावरी जाग री

बीती विभावरी जाग री।
अंबर-पनघट में डुबो रही–
तारा-घट ऊषा-नागरी।

खग-कुल कुल-कुल-सा बोल रहा,
किसलय का अंचल डोल रहा,
लो यह लतिका भी भर लाई–
मधु-मुकुल नवल रस गागरी।

अधरों में राग अमंद पिए,
अलकों में मलयज बंद किए,
तू अब तक सोई है आली !
आँखों में भरे विहाग री !

– जयशंकर प्रसाद

17.2 आइए समझें

यह कविता जयशंकर प्रसाद के काव्य-संग्रह 'लहर' से ली गई है। इस कविता में एक सखी दूसरी को संबोधित करते हुए कह रही है कि प्रकृति अपने समस्त सौंदर्य और संगीत के साथ जाग गई है, तब तुम्हीं क्यों अपने सौंदर्य और माधुर्य को लेकर सो रही हो?

कविता एक अन्य अर्थ की ओर भी संकेत करती है। यह कविता जिन दिनों लिखी गई, उन दिनों भारत में अंग्रेज़ों का राज्य था और आज़ादी के लिए संघर्ष चल रहा था। राजनीतिक और सामाजिक कार्यकर्ताओं के साथ-साथ कवि-लेखक-रचनाकार भी जन-जागरण के प्रयास कर रहे थे। प्रसाद जी ने अपने नाटकों में भारतवासियों में जागृति लाने के लिए भारत के उस गौरवपूर्ण अतीत का वर्णन किया है, जिसमें लोग अपनी आज़ादी बचाए रखने के लिए संघर्ष करते हैं। इस कविता में भी हमें यह संकेत दिखाई पड़ता है। अंतिम पक्तियों में अधरों में अमंद राग और केशों में बंद मलयज से इन्हीं बातों का संकेत मिलता है। कवि ने आह्वान किया है कि सभी सामर्थ्य होते हुए भी सोए रहने का क्या मतलब, जबकि सारे संसार में हलचल हो रही है? तो फिर सोओ मत, जागो।

17.2.1 अंश-1

आइए, इन पंक्तियों का अर्थ-सौंदर्य समझने से पहले कुछ बातें जान लें–

टिप्पणी

- आप जानते ही होंगे कि पहले अधिकांश गाँवों में पानी लेने के लिए घर से दूर कुएँ, नदी, तालाब आदि तक जाना पड़ता था। इधर पौ फटी, सुबह हुई, उधर स्त्रियाँ घड़े लिए पानी भरने को निकलीं। वह स्थान जहाँ स्त्रियाँ पानी भरती हैं, पनघट कहलाता है।

- आपने कभी रात के अंतिम पहर में दिन के उजाले को धीरे-धीरे फैलते देखा है? अभी सूरज निकला नहीं है, पर उजाला होने लगा है (आकाश की कालिमा हल्की होते-होते आसमानी हो गई है, धीमी-धीमी हवा चल रही है) चिड़ियाँ चहचहाने लगी हैं। लोग जाग कर अपना काम शुरू कर रहे हैं। सूरज निकलने से पहले के इस समय को उषा या उषाकाल कहते हैं।

- 'काल' के लिए 'वेला' शब्द का प्रयोग भी होता है, जिसे आम बोल–चाल में बेला भी कहते हैं। 'काल' पुल्लिंग शब्द है और वेला स्त्रीलिंग। चूँकि यहाँ उषा (स्त्रीलिंग) के विषय में बताया गया है, इसलिए 'प्रातःकाल' के स्थान पर 'प्रातःवेला' का प्रयोग अधिक उपयुक्त होगा।

- कविता में अक्सर किसी के सौंदर्य-वर्णन के लिए किसी दूसरी वस्तु से उसकी समानता बताई जाती है। जिसकी समानता बताई जाती है, उसे उपमेय तथा जिससे समानता बताई जाती है, उसे उपमान कहते हैं। अगर उपमेय और उपमान की यह समानता तुलना के रूप में आती है, तो वहाँ उपमा अलंकार होता है। जब दोनों के बीच कोई भेद ही नहीं रहता, तो वहाँ रूपक अलंकार होता है। इन पंक्तियों में अंबर, तारा और उषा से क्रमशः पनघट, घड़ा व नागरी (स्त्री) का इस तरह संबंध स्थापित किया गया है कि उनके बीच कोई भेद ही नहीं रह गया है। इसी को उपमेय में उपमान का आरोप कहते हैं। अगर हम इनकी अलग-अलग सारणी बनाएँ, तो इस तरह होगी :

उपमेय		उपमान
अंबर (आकाश)	–	पनघट
तारा	–	घट (घड़ा)
ऊषा (प्रातःवेला)	–	नागरी (स्त्री)

टिप्पणी

अब कविता की प्रारंभिक तीन पंक्तियों पर विचार करने से पहले इन्हें एक बार पुनः पढ़ लीजिए।

इन पंक्तियों से एक दृश्य हमारे सामने उभरता है–

एक स्त्री पनघट पर पहुँचकर घड़ा डुबो रही है। स्त्री है–उषा, पनघट है–आकाश, और घड़ा है–तारा। अर्थात् उषा आकाश में, तारों को डुबो रही है। अर्थ हुआ– सुबह हो रही है, आकाश में तारे डूब रहे हैं।

अब हम हाशिए पर दी गई पंक्तियों के अर्थ को उनके सौंदर्य के साथ समझने का प्रयास करते हैं :

बीती विभावरी जाग री!
अंबर-पनघट में डुबो रही–
तारा-घट ऊषा नागरी।

एक सखी दूसरी से कहती है कि हे सखी उठ, अब रात बीत चुकी है और उषा रूपी स्त्री आकाश-रूपी पनघट में तारे रूपी घड़े को डुबो रही है। अर्थ हुआ–उषाकाल हो गया है, आकाश से रात की कालिमा दूर हो गई है और आसमानी रंग दीखने लगा है। आप जानते ही हैं कि पानी का रंग भी आसमानी ही दीखता है। इसीलिए यहाँ आकाश की कल्पना पानी भरने के घाट (पनघट) के रूप में की गई है। आकाश का रंग बदल रहा है और तारों की झिलमिलाहट भी हल्की होते-होते लुप्त होती जा रही है, जैसे घड़ा दीखते-दीखते गुडुप से पानी के अंदर डूब जाता है।

इन पंक्तियों का सौंदर्य इस बात में निहित है कि सुबह के दृश्य का वर्णन आम जन-जीवन के कार्यों से जोड़ते हुए किया गया है। सुबह-सुबह नदी, तालाब या कुएँ पर जाकर पानी लाना ग्राम-जीवन में एक आम क्रियाकलाप रहा है।

टिप्पणियाँ

1. इन पंक्तियों में प्रकृति का मानवीकरण किया गया है अर्थात् प्रकृति को मानव के रूप में व्यवहार करते दिखाया गया है। उदाहरण के लिए भोर के समय उषा के उदय और तारों के छिपने का वर्णन करने के लिए उषा को एक स्त्री माना गया है, जो आकाश रूपी पनघट में तारों के घड़े डुबोती जा रही है।
2. 'अंबर-पनघट....नागरी' में रूपक अलंकार है, क्योंकि अंबर में पनघट का, तारों में घड़ों का और उषा में स्त्री का आरोप किया गया है।
3. प्रातःकालीन मानवीय गतिविधियों के आधार पर सुबह होने के दृश्य का चित्रण सराहनीय है।

क्रियाकलाप-17.1

1. कवि अपने आसपास की घटनाओं को देखकर कुछ नवीन कल्पनाएँ करते हैं। इसे उनका 'सृजन-कौशल' भी कहा जाता है। जैसे इस कविता में आकाश को पनघट

टिप्पणी

मानकर उसमें तारों को डुबोने की कल्पना, पानी भरती नारी के रूप में उषा को देखना आदि। आप भी चाँदनी रात के बारे में सृजनात्मक चिंतन करते हुए प्राकृतिक सौंदर्य का चित्रण कीजिए :

....

....

....

....

....

....

17.2.2 अंश-2

खग-कुल कुल-कुल-सा बोल रहा,
किसलय का अंचल डोल रहा,
लो यह लतिका भी भर लाई—
मधु-मुकुल नवल रस गागरी।

प्रातःकाल हो गया है, इस तथ्य पर बल देते हुए सखी कहती है कि पक्षियों के कलरव (चहचहाने) का स्वर सुनाई दे रहा है और कोंपल के आँचल में थिरकन हो रही है, अर्थात् धीमी-धीमी हवा से कोंपलें थिरकने लगी हैं। और सुनो, यह लता भी अपने अधखिले फूल रूपी गगरी में नया रस भर लाई है। कली से फूल बनने की प्रक्रिया में अधखिले फूल की आकृति कलश यानी गगरी जैसी होती है और बीच में ताज़ा रस से पूर्ण पराग होता है। अतः यहाँ अधखिले फूल और रस से भरी गगरी की समानता के आधार पर सुंदर रूपक बन पड़ा है। आइए, एक बार फिर से इस अंश के सौंदर्य को देखें।

आपने देखा होगा कि सुबह होते ही पक्षी चहचहाने लग जाते हैं, मंद-मंद हवा बहने लगती है और उससे पेड़-पौधों, फूलों में हलचल पैदा हो जाती है। इसी दृश्य का वर्णन कवि ने इन पंक्तियों में किया है।

पक्षियों के चहचहाने को कलरव कहते हैं—'कल-कल' का रव यानी कल-कल की आवाज़। इसी 'कल-कल' को यहाँ 'कुल-कुल' कहा गया है। कुल का एक और अर्थ होता है समूह। खग-कुल यानी पक्षियों का समूह कुल-कुल-सा बोल रहा है अर्थात् पक्षी कलरव कर रहे हैं।

इतनी-सी बात को कवि ने बड़ी सुंदरता से उपमानों के सहारे व्यक्त किया है। 'कुल-कुल-सा' पर ध्यान दें। उषा नागरी अंबर रूपी पनघट में तारा-घट डुबो रही है। पानी में डुबो कर घड़ा भरते समय जो 'कुल-कुल' की आवाज़ होती है, वह खग-कुल अर्थात् पक्षी-समूह के कलरव से व्यक्त हो रही है। इसलिए कहा है—खग-कुल कुल-कुल-सा बोल रहा। घड़ा भरने के बाद उसे कमर पर रखे है लतिका। लतिका नए रस से भरी गागर लेकर चली आ रही है।

टिप्पणी

टिप्पणियाँ

1. 'लो यह लतिका भी भर लाई......' में लता को उषा के ही समान स्त्री रूप में प्रस्तुत किया गया है, अतः यहाँ **मानवीकरण अलंकार** है।

2. 'मधु-मुकुल नवल रस गागरी' में **रूपक अलंकार** है, क्योंकि मुकुल में (अधखिले फूलों में) रस की छोटी-छोटी गगरियों का आरोप किया गया है।

3. 'खग-कुल कुल-कुल-सा' में 'कुल' की बार-बार आवृत्ति होने से **अनुप्रास अलंकार** है।

   'खग-कुल' में 'कुल' शब्द का अर्थ है- समूह या परिवार और 'कुल-कुल' का अर्थ है- कलरव। जहाँ एक शब्द का एक से अधिक बार प्रयोग हो और हर बार अलग अर्थ हो वहाँ **यमक अलंकार** होता है। इसलिए यहाँ **यमक अलंकार** भी है।

पाठगत प्रश्न-17.1

1. निम्नलिखित कथनों में से सही के आगे (√) और गलत के आगे (X) का निशान लगाइए :

   (क) कविता में भोर के चित्रण के माध्यम से सखी को जागने के लिए कहा गया। ☐

   (ख) सुबह पानी भरने वाली स्त्री है, आकाश घड़ा है और तारा पनघट है। ☐

   (ग) लताओं में लगे अधखिले फूल पराग-रस से भरे कलश हैं। ☐

   (घ) उषा रूपी नागरी सो रही है, कविता में उसे जगाने का प्रयास है। ☐

   (ङ) सखी सोई है, इसलिए उसकी केशराशि ने सुगंधित वायु को बंदी बना रखा है। ☐

2. दूसरे कॉलम के शब्दों का पहले कॉलम के शब्दों से संबंध के आधार पर मिलान कीजिए :

अंबर	घट
तारा	नारी
उषा	पनघट
अधर	विहाग
अलक	राग
आँख	मलयज

17.2.3 अंश-3

आइए, कविता की शेष पंक्तियाँ फिर से पढ़ लेते हैं। प्रातःकाल होने की सूचना देने के साथ-साथ सखी को संबोधित करते हुए कहा गया है कि हे सखी! सुबह हो गई है और सारा संसार अपने क्रिया-व्यापारों में लगा हुआ है, पर तू अपने होठों में कभी मंद न पड़ने वाला राग लिए हुए और अपने केशों में सुगंधित वायु को समेटे तथा आँखों में रात की खुमारी (राग विहाग की खुमारी) लिए अभी तक सोई हुई है। तात्पर्य है कि तेरे होठों पर वह राग (प्रेम) है, जो कभी कम नहीं होता, सुवासित वायु तेरी केशराशि की बंदी है, फिर भी तू अपनी अलसाई आँखें लिए निद्रामग्न है। अगर तू उठे, तो प्रकृति का सौंदर्य मानवीय उमंग और उल्लास से और अधिक निखर उठे।

'राग' का एक अर्थ प्रेम भी है, इसलिए अर्थ यह भी हो सकता है कि तेरे अधरों पर प्रेम से भरी, कभी हल्की न पड़ने वाली मुस्कान है, दूसरी ओर प्रातःकाल बहने वाली सुगंधित वायु को तुमने अपनी अलकों (केशों) में बाँधा हुआ है। इस प्रकार तुम मानो सुबह के प्रमुख लक्षणों को ही बाँधे हुए हो और अब तक अलसाई हुई सो रही हो। उन्हें मुक्त करो और सुबह होने दो।

टिप्पणियाँ

1. 'राग' का अर्थ संगीत में प्रयुक्त राग भी होता है और 'अनुराग', 'प्रीति', प्रेम आदि भाव भी।
2. 'विहाग' एक राग का नाम है, जो रात्रि में गाया जाता है। 'आँखों में भरे विहाग री' से तात्पर्य है–आँखों में रात की (आलस्य से भरी हुई) खुमारी लिए हुए।

टिप्पणी

अधरों में राग अमंद पिए,
अलकों में मलयज बंद किए,
तू अब तक सोई है आली!
आँखों में भरे विहाग री!

क्रियाकलाप-17.2

आप जानते हैं कि विशेषता बताने वाले शब्दों को विशेषण कहते हैं। विशेषण जिसकी विशेषता बताते हैं, वे शब्द विशेष्य कहलाते हैं। कविता में विशेषता बताने का तरीका थोड़ा भिन्न होता है। वहाँ यह काम उपमा द्वारा किया जाता है। इसलिए, वहाँ जिससे उपमा दी जाती है, उसे उपमान और जिसके लिए उपमान का प्रयोग किया जाए, उसे उपमेय कहते हैं।

उपमेय और उपमान के इस संबंध को कवि कई रूपों में प्रस्तुत करते हैं। आइए, थोड़ा–सा जानें:

(i) उपमेय की उपमान से तुलना – उपमा अलंकार

पीपर पात सरिस मन डोला
(पीपल के पत्ते **की तरह** मन डोला)

टिप्पणी

(ii) उपमेय में उपमान की संभावना – उत्प्रेक्षा अलंकार

नील परिधान बीच सुकुमार खिल रहा मृदुल अधखुला अंग
खिला **हो ज्यों** बिजली का फूल मेघ वन बीच गुलाबी रंग

(नीले वस्त्रों के बीच अधखुला कोमल अंग इस प्रकार सुशोभित हो रहा था मानो नीले बादलों के वन में बिजली का गुलाबी फूल खिला हो)

- संभावना को व्यक्त करने वाले शब्द हैं– मनु, मानो, जनु, जानो जैसे आदि।

(iii) उपमेय में उपमान का आरोप

(उपमेय और उपमान का भेद समाप्त होना)– रूपक अलंकार

अंबर-पनघट में डुबो रही **तारा-घट ऊषा-नागरी**।

निम्नलिखित काव्य–पंक्तियों में उपमेय और उपमान का उल्लेख करते हुए अलंकार बताइए :

काव्य पंक्ति	*उपमेय*	*उपमान*	*अलंकार*
(क) लट लटकानि मनु मत्त मधुपगन मादक मधुहि पिए	लट	—	—
(ख) वधु–वसुधा पुलकित अंग–अंग	—	वधु	—
(ग) घिर रहे थे घुँघराले बाल, अंस अवलंबित मुख के पास नील घन शावक से सुकुमार, सुधा भरने को विधु के पास	—	—	उपमा
(घ) चरण–कमल बंदौं हरिराई			

17.3 भाव-सौंदर्य

आपने गीत के भावार्थ को तीन अंशों में समझा है। पहला अंश 'बीती... उषा–नागरी' गीत का मुखड़ा है और शेष दोनों अंश – 'खग–कुल.... रस–गागरी' तथा 'अधरों में ...... विहाग री' – गीत के दो बंद हैं। आइए इस गीत के भाव को समग्रता में समझने का प्रयास करते हैं।

दरअसल, इस गीत की पहली पंक्ति सिर्फ़ एक कथन है– 'रात बीत चुकी है, जाग।' आप देखेंगे कि पहले वाक्यांश में प्रकृति है और दूसरे में मनुष्य (यहाँ सखी) के लिए उद्‌बोधन। इस पूरे गीत में प्रकृति और सखी (या आली) की परस्पर स्थिति का अंकन है और सखी को प्रकृति के अनुकूल सक्रिय होने की प्रेरणा। ज़रा बॉक्स में दी गई तुलनात्मक स्थिति पर ध्यान दें। एक ओर प्रकृति है, दूसरी ओर सखी और बीच में तुलना के बिंदु या स्थितियाँ।

टिप्पणी

प्रकृति		सखी (मनुष्य)
• बीती विभावरी	अंधकार → प्रकाश	जाग री
• अंबर पनघट.... ऊषा–नागरी	निष्क्रियता → सक्रियता	तू अब तक सोई है आली
• खग–कुल... बोल रहा	सन्नाटा → स्वर	अधरों में राग अमंद पिए
• किसलय..... डोल रहा	स्थिरता → गति	अलकों में मलयज बंद किए
• लो यह.... रस–गागरी	रिक्तता → रसमयता	आखों में भरे विहाग री

गीत के पहले बंद में प्रातः वेला का अर्थात् सुबह के सौंदर्य तथा उसकी हलचल का चित्रण है। गीत में किस प्रकार प्रकृति का मानवीकरण किया गया है, यह आप पढ़ ही चुके हैं। इसके साथ–साथ रूपक अलंकार का उपयोग भी कविता को प्रभावशाली बनाता है। हम सब जानते हैं कि प्रकृति की गतिविधियाँ अटल हैं। गीत में सुबह होते ही तारों के आकाश में डूबने, पक्षियों के चहचहाने, मंद–मंद पवन के बहने, लताओं में पुष्पों की रसयुक्तता को बताने के लिए मानवीकरण का उपयोग किया गया है। प्रकृति के ये क्रियाकलाप हमें अंधकार से प्रकाश, निष्क्रियता से सक्रियता, सन्नाटे से स्वर, स्थिरता से गति और रिक्तता से रसमयता की ओर जाने का संदेश देते हैं। दूसरे बंद में आली अर्थात् सखी से यह कहा गया है कि प्रकृति के इस संदेश को जानो और उठो, प्रकृति की तरह तुम भी सक्रिय बनो। तुम्हारी आँखों की खुमारी में जो रसमयता है, अलकों में जो सुगंधित वायु यानी गतिमयता है, अधरों में जो स्वर है– ये सब तुम्हारे सोने के कारण बंदी है, जागकर इन्हें उन्मुक्त करो और जगत में अपनी सक्रियता के सौंदर्य से प्रकाश फैला दो। प्रस्तुत गीत में प्रकृति से प्रेरणा लेने के लिए उद्बोधन किया गया है, लेकिन उद्बोधन के साथ–साथ प्रकृति और स्त्री के सौंदर्य और इन दोनों के सौंदर्य का संबंध चित्रित है।

17.4 भाषा-सौंदर्य

यह कविता खड़ी बोली में लिखी गई है जो आज हिंदी की मानक भाषा है। इसी भाषा में आज हिंदी के प्रमुख कवि, उपन्यासकार, कहानीकार, निबंधकार और नाटककार अपना साहित्य रच रहे हैं।

इस कविता में तत्सम शब्दों का बाहुल्य है। यह शुद्ध साहित्यिक भाषा में रची गई है। कवि ने मानवीकरण, रूपक, अनुप्रास और यमक अलंकारों के सार्थक, सहज और प्रभावी प्रयोग से कविता को इतना हृदयग्राही बना दिया है कि संस्कृतनिष्ठ भाषा होने पर भी कहीं दुरूहता और जटिलता नहीं आ पाई है। इसके विपरीत समासयुक्त शब्दों के प्रयोग से अर्थ में गंभीरता आ गई है।

कविता में निम्नलिखित अलंकारों का सार्थक और सहज प्रयोग हुआ है—

i) *'अंबर–पनघट में डुबो रही तारा–घट ऊषा–नागरी'* (रूपक अलंकार)

ii) *'खग–कुल कुल–कुल–सा बोल रहा'* (अनुप्रास और यमक अलंकार)

iii) *'मधु–मुकुल नवल रस–गागरी'* (अनुप्रास और रूपक अलंकार)

कविता में अद्‌भुत संगीतात्मकता है, इसलिए इसे गाया जा सकता है, ठीक वैसे ही जैसे आप गाने गाते हैं।

पाठगत प्रश्न-17.2

सर्वाधिक उपयुक्त विकल्प चुनकर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

1. इस कविता की भाषा

   (क) संस्कृतनिष्ठ है ☐ (ख) उर्दू है ☐

   (ग) सरल है ☐ (घ) मिली-जुली है ☐

2. कविता में मुख्य रूप से किसके सौंदर्य का वर्णन है?

   (क) प्रेयसी के ☐ (ख) पक्षी के ☐

   (ग) प्रकृति के ☐ (घ) पनघट के ☐

आपने क्या सीखा

1. 'बीती विभावरी जाग री' भोर के सौंदर्य पर रचित एक कोमल रागात्मक कविता है, जिसमें कवि ने प्रकृति का सुंदर मानवीकरण किया है।
2. कविता में प्रकृति-चित्रण के माध्यम से राष्ट्रीय जागरण के लिए उद्‌बोधन किया गया है।
3. कविता में कवि ने मानवीकरण, यमक, रूपक और अनुप्रास अलंकारों का अत्यंत सुंदर प्रयोग किया है। 'अंबर-पनघट', 'तारा-घट', 'ऊषा-नागरी', 'मधु-मुकुल नवल रस-गागरी' में रूपक का और 'खग-कुल कुल-कुल-सा' में अनुप्रास तथा यमक का सौंदर्य है। उषा को नागरी के रूप में कार्य करते हुए चित्रित करने से मानवीकरण है।
4. उपमा, उत्प्रेक्षा और रूपक अलंकार की पहचान उपमेय और उपमान के संबंध के आधार पर होती है।

टिप्पणी

योग्यता-विस्तार

जयशंकर प्रसाद (1889–1937 ई.) का जन्म काशी के प्रसिद्ध सुँघनी साहू परिवार में हुआ। बचपन में ही पिता का देहावसान हो जाने और बहुत-सी विपरीत घरेलू परिस्थितियों के कारण उनकी शिक्षा मुख्यतः घर पर ही हुई। यद्यपि उनका बचपन धन-वैभव के विलासपूर्ण वातावरण में बीता, किंतु बाद में उनके परिवार की आर्थिक स्थिति बिगड़ गई। विविध आर्थिक-पारिवारिक संघर्षों के बीच धैर्यपूर्वक सभी पारिवारिक ज़िम्मेदारियों को निभाते हुए उन्होंने उच्च कोटि के काव्य, नाटक और कथा-साहित्य से हिंदी को समृद्ध किया।

प्रसाद जी पहले ब्रजभाषा में लिखते थे। ब्रजभाषा में रचित उनकी रचनाएँ 'चित्राधार' में संगृहीत हैं। खड़ी बोली में रचित उनकी प्रमुख काव्य-कृतियाँ हैं—'झरना', 'आँसू', 'लहर', और 'कामायनी'। प्रथम कोटि के कवि होने के साथ-साथ प्रसाद जी उच्च कोटि के नाटककार और उपन्यासकार भी थे। 'चंद्रगुप्त', 'स्कंदगुप्त', ध्रुवस्वामिनी, 'अजातशत्रु' 'जनमेजय का नागयज्ञ' आदि उनके नाटक हैं और प्रमुख उपन्यास है– 'तितली'।

प्रसाद जी ने 'कामायनी' में भी उषा का सुंदर मानवीकरण किया है :

उषा सुनहले तीर बरसती
जयलक्ष्मी–सी उदित हुई
उधर पराजित काल रात्रि भी
जल में अंतर्निहित हुई।

पाठांत प्रश्न

1. इस कविता में 'जाग री' किसके लिए आया है? कवि उसे क्यों जगाना चाहता है?
2. भोर के समय तारों के डूबने और पक्षियों के कलरव को लेकर कवि ने क्या कल्पना की है?
3. नायिका और प्रकृति में कवि क्या देखता है? उसकी सौंदर्य-दृष्टि आपको कितना प्रभावित करती है?
4. 'आँखों में भरे विहाग री' का विश्लेषण करते हुए इसका सौंदर्य स्पष्ट कीजिए।
5. प्रस्तुत कविता राष्ट्रीय संदर्भ में क्या संकेत करती है? इसके राष्ट्रीय पक्ष को प्रस्तुत कीजिए।
6. अधखिले फूल और रस-भरी गगरी की समानता पर अपने विचार लिखिए।
7. इस कविता में क्या प्रमुख है– प्रकृति-चित्रण या राष्ट्रीय उद्‌बोधन? तर्क सहित विचार प्रस्तुत कीजिए।

8. निम्नलिखित उदाहरणों में बताइए कि कौन-सा अलंकार है और क्यों?

(क) चारु चंद्र की चंचल किरणें

(ख) कंकन किंकिनि नूपुर धुनि सुनि

(ग) चारु कपोल लोल लोचन गोरोचन तिलक दिए

(घ) चरण कमल बंदौं हरिराई

(ङ) कनक कनक ते सौ गुनी मादकता अधिकाय।
या खाये बौराय जग वा पाए बौराए।।

उत्तरमाला

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

17.1 1. (क) (√) (ख) (×) (ग) (√) (घ) (×) (ङ) (√)

2. अंबर–पनघट, तारा–घट, उषा–नारी, अधर–राग, अलक–मलयज, आँखें–विहाग

17.2 1. (क) 2. (ख)

18

नाखून क्यों बढ़ते हैं?

आपने देखा होगा कि बरसात के बाद बगीचे में घास-पतवार बहुत बढ़ जाती है। बरसात समाप्त होते ही माली उसे काट-छाँटकर सही रूप प्रदान करता है। अगर माली घास न काटे, तो सोचिए बगीचे का क्या हो? उसमें हमारा चलना-फिरना भी दूभर हो जाए। है न ऐसा ही!

इसी तरह, हमारे मन में भी अच्छे विचार तो आते ही हैं पर उनके साथ-साथ कभी-कभी बुरे विचारों की खर-पतवार उग आती है, जिसे काटकर हम अपने मन को शुद्ध और सुसंस्कृत बनाते हैं। इसे ही मन को संस्कारित करना कहते हैं। यह मनुष्यता का आदर्श भी है। आइए, इस पाठ के माध्यम से हम इन्हीं बातों को समझने का प्रयास करें।

उद्देश्य

इस पाठ को पढ़ने के बाद आप—

- मनुष्य द्वारा पशुता को दबाने के लिए किए गए प्रयासों का उल्लेख कर सकेंगे;
- संयम और अनुशासन जैसे गुणों का महत्त्व स्पष्ट कर सकेंगे;
- परिस्थितियों के अनुसार उचित और अनुचित का भेद समझकर उनका वर्णन कर सकेंगे;
- मानव-सभ्यता के क्रमिक विकास के संदर्भ में मानवीय प्रवृत्तियों का विश्लेषण कर सकेंगे;
- समस्या के विविध पहलुओं पर विचार करके समाधान के तरीकों का उल्लेख कर सकेंगे;
- सफलता और सार्थकता में अंतर स्पष्ट कर सकेंगे।

टिप्पणी

18.1 मूल पाठ

नाखून क्यों बढ़ते हैं?

बच्चे कभी-कभी चक्कर में डाल देने वाले प्रश्न कर बैठते हैं। अल्पज्ञ पिता बड़ा दयनीय जीव होता है। मेरी छोटी लड़की ने जब उस दिन पूछ दिया कि आदमी के नाखून क्यों बढ़ते हैं, तो मैं कुछ सोच ही नहीं सका। हर तीसरे दिन नाखून बढ़ जाते हैं, बच्चे कुछ दिन तक अगर उन्हें बढ़ने दें, तो माँ-बाप अक्सर उन्हें डाँटा करते हैं। पर कोई नहीं जानता कि ये अभागे नाखून क्यों इस प्रकार बढ़ा करते हैं। काट दीजिए, वे चुपचाप दंड स्वीकार कर लेंगे; पर निर्लज्ज अपराधी की भाँति फिर छूटते ही सेंध पर हाज़िर! आख़िर ये इतने बेहया क्यों हैं?

कुछ लाख ही वर्षों की बात है, जब मनुष्य जंगली था; वनमानुष जैसा। उसे नाखून की ज़रूरत थी। उसकी जीवन-रक्षा के लिए नाखून बहुत ज़रूरी थे। असल में वही उसके अस्त्र थे। दाँत भी थे, पर नाखून के बाद ही उनका स्थान था। उन दिनों उसे जूझना पड़ता था, प्रतिद्वंदियों को पछाड़ना पड़ता था, नाखून उसके लिए आवश्यक अंग था। फिर धीरे-धीरे वह अपने अंग से बाहर की वस्तुओं का सहारा लेने लगा। पत्थर के ढेले और पेड़ की डालें काम में लाने लगा (रामचंद्र जी की वानरी सेना के पास ऐसे ही अस्त्र थे)। उसने हड्डियों के भी हथियार बनाये। इन हड्डी के हथियारों में सबसे मज़बूत और सबसे ऐतिहासिक था- देवताओं के राजा का वज्र, जो दधीचि मुनि की हड्डियों से बना था। मनुष्य और आगे बढ़ा। उसने धातु के हथियार बनाये। जिनके पास लोहे के अस्त्र और शस्त्र थे, वे विजयी हुए। देवताओं के राजा तक को मनुष्यों के राजा से इसलिए सहायता लेनी पड़ती थी कि मनुष्यों के राजा के पास लोहे के अस्त्र थे। असुरों के पास अनेक विद्याएँ थीं, पर लोहे के अस्त्र नहीं थे, शायद घोड़े भी नहीं थे। आर्यों के पास ये दोनों चीज़ें थीं। आर्य विजयी हुए। फिर इतिहास अपनी गति से बढ़ता गया। नाग हारे, सुपर्ण हारे, यक्ष हारे, गंधर्व हारे, असुर हारे, राक्षस हारे। लोहे के अस्त्रों ने बाज़ी मार ली। इतिहास आगे बढ़ा। पलीते वाली बंदूकों ने, कारतूसों ने, तोपों ने, बमों ने, बमवर्षक वायुयानों ने इतिहास को किस कीचड़-भरे घाट तक घसीटा है, यह सबको मालूम है। नख-धर मनुष्य एटम-बम पर भरोसा करके आगे की ओर चल पड़ा है। पर उसके नाखून अब भी बढ़ रहे हैं। अब भी प्रकृति मनुष्य को उसके भीतर वाले अस्त्र से वंचित नहीं कर रही है, आज भी वह याद दिला देती है कि तुम्हारे नाखून को भुलाया नहीं जा सकता। तुम वही लाखों वर्ष पहले के नखदंतावलंबी जीव हो—पशु के साथ एक ही सतह पर विचरने वाले, चरने वाले।

ततः किम्! मैं हैरान होकर सोचता हूँ कि मनुष्य आज अपने बच्चों को नाखून न काटने के लिए डाँटता है। किसी दिन—कुछ थोड़े लाख वर्ष पूर्व—वह अपने बच्चों को नाखून नष्ट करने पर डाँटता रहा होगा। लेकिन, प्रकृति है कि वह अब भी नाखून को जिलाए जा रही है और मनुष्य है कि वह अब भी उसे काटे जा रहा है। वे कमबख़्त रोज़ बढ़ते

शब्दार्थ

अल्पज्ञ – कम जानने वाला

दयनीय – दया के योग्य, कमज़ोर

दंड – सज़ा

निर्लज्ज – लज्जा रहित, बेशर्म

सेंध – चोरी के लिए दीवार में किया गया छेद

बेहया – बेशर्म, निर्लज्ज

अस्त्र – हथियार

प्रतिद्वंद्वी – सामने आकर लड़ने वाला या विरोध करने वाला, मुकाबला करने वाला

देवताओं के राजा – इंद्र

वज्र – दधीचि की हड्डियों से बना इंद्र का अस्त्र

पलीता – बारूद लगी हुई डोरी

नखधर – नाखून वाला

वंचित – रहित

नखदंतावलंबी – नाखून और दाँत पर निर्भर रहने वाला

ततः किम् – तो क्या (तब क्या, फिर क्या)

हैं, क्योंकि वे अंधे हैं, नहीं जानते कि मनुष्य को इससे कोटि-कोटि गुना शक्तिशाली हथियार मिल चुका है। मुझे ऐसा लगता है कि मनुष्य अब नाखून को नहीं चाहता। उसके भीतर बर्बर-युग का कोई अवशेष रह जाय, यह उसे असह्य है। लेकिन यह कैसे कहूँ। नाखून काटने से क्या होता है? मनुष्य की बर्बरता घटी कहाँ है, वह तो बढ़ती जा रही है। मनुष्य के इतिहास में हिरोशिमा का हत्याकांड बार-बार थोड़े ही हुआ है? यह तो उसका नवीन रूप है! मैं मनुष्य के नाखून की ओर देखता हूँ, तो कभी-कभी निराश हो जाता हूँ। ये उसकी भयंकर पाशवी वृत्ति के जीवंत प्रतीक हैं। मनुष्य की पशुता को जितनी बार काट दो, वह मरना नहीं जानती।

चित्र 18.1

कुछ हज़ार साल पहले मनुष्य ने नाखून को सुकुमार विनोदों के लिए उपयोग में लाना शुरु किया था। वात्स्यायन के 'कामसूत्र' से पता चलता है कि आज से दो हज़ार वर्ष पहले का भारतवासी नाखूनों को जम के सँवारता था। उनके काटने की कला काफ़ी मनोरंजक बतायी गयी है। त्रिकोण, वर्तुलाकार, चंद्राकार, दंतुल आदि विविध आकृतियों के नाखून उन दिनों विलासी नागरिकों के न जाने किस काम आया करते थे। उनको सिक्थक (मोम) और अलक्तक (आलता)से यत्नपूर्वक रगड़ कर लाल और चिकना बनाया जाता था। गौड़ देश के लोग उन दिनों बड़े-बड़े नखों को पसंद करते थे और दाक्षिणात्य लोग छोटे नखों को। अपनी-अपनी रुचि है, देश की भी और काल की भी। लेकिन, समस्त अधोगामिनी वृत्तियों को और नीचे खींचने वाली वस्तुओं को भारतवर्ष ने मनुष्योचित बनाया है, यह बात चाहूँ भी तो भूल नहीं सकता।

चित्र 18.2

मानव-शरीर का अध्ययन करने वाले प्राणि-विज्ञानियों का निश्चित मत है कि मानव-चित्त की भाँति मानव-शरीर में भी बहुत-सी अभ्यासजन्य सहज वृत्तियाँ रह गई हैं। दीर्घकाल तक उनकी आवश्यकता रही है। अतएव शरीर ने अपने भीतर एक ऐसा गुण पैदा कर लिया है कि वे वृत्तियाँ अनायास ही, और शरीर के अनजान में भी, अपने-आप

कोटि–कोटि – करोड़ों

बर्बर युग – जंगली युग, सभ्यता पूर्व युग

अवशेष – बचा हुआ

पाशवी वृत्ति – जानवरों जैसी भावना

जीवंत – जीते-जागते, आनंदपूर्ण

विनोद – आनंद

वर्तुलाकार – गोल

दंतुल – दाँत के आकार का

विलासी – सुख-सुविधा में जीने वाला

गौड़ देश – बंगाल का एक भाग

दाक्षिणात्य – दक्षिण के निवासी

अधोगामिनी – नीचे जाने वाली

मनुष्योचित – मनुष्य के लिए उपयुक्त, मानवीय

काम करती हैं। नाखून का बढ़ना उसमें से एक है, केश का बढ़ना दूसरा है, दाँत का दुबारा उठना तीसरा है, पलकों का गिरना चौथा है। और असल में सहजात वृत्तियाँ अनजान की स्मृतियों को ही कहते हैं। हमारी भाषा में भी इसके उदाहरण मिलते हैं। अगर आदमी अपने शरीर की, मन की और वाक् की अनायास घटने वाली वृत्तियों के विषय में विचार करे, तो उसे अपनी वास्तविक प्रवृत्ति पहचानने में बहुत सहायता मिले। पर कौन सोचता है? सोचना तो क्या, उसे इतना भी पता नहीं चलता कि उसके भीतर नख बढ़ा लेने की जो सहजात वृत्ति है, वह उसके पशुत्व का प्रमाण है। उन्हें काटने की जो प्रवृत्ति है, वह उसकी मनुष्यता की निशानी है और यद्यपि पशुत्व के चिह्न उसके भीतर रह गए हैं, पर वह पशुत्व को छोड़ चुका है। पशु बनकर वह आगे नहीं बढ़ सकता। उसे कोई और रास्ता खोजना चाहिए। अस्त्र बढ़ाने की प्रवृत्ति मनुष्यता की विरोधिनी है।

सहजात वृत्तियाँ – जन्म के साथ उत्पन्न होने वाली विशेषताएँ या गुण

स्मृति – याद

वाक् – बोलना, वाणी, भाषा

निर्बोध – मासूम

व्यवहृत – व्यवहार या कार्य में लाई गई

अनुवर्तिता – पीछे चलने का भाव, अनुकरण

मेरा मन पूछता है—किस ओर? मनुष्य किस ओर बढ़ रहा है? पशुता की ओर या मनुष्यता की ओर? अस्त्र बढ़ाने की ओर या अस्त्र काटने की ओर? मेरी निर्बोध बालिका ने मानो मनुष्य-जाति से ही प्रश्न किया है—जानते हो, नाखून क्यों बढ़ते हैं? यह हमारी पशुता के अवशेष हैं। मैं भी पूछता हूँ—जानते हो, ये अस्त्र-शस्त्र क्यों बढ़ रहे हैं?—ये हमारी पशुता की निशानी हैं। भारतीय भाषाओं में प्रायः ही अंग्रेज़ी के 'इन्डिपेन्डेन्स' शब्द का समानार्थक शब्द नहीं व्यवहृत होता। 15 अगस्त को जब अंग्रेज़ी भाषा के पत्र 'इन्डिपेन्डेन्स' की घोषणा कर रहे थे, देशी भाषा के पत्र 'स्वाधीनता दिवस' की चर्चा कर रहे थे। 'इन्डिपेन्डेन्स' का अर्थ है- अनधीनता या किसी की अधीनता का अभाव, पर 'स्वाधीनता' शब्द का अर्थ है अपने ही अधीन रहना। अंग्रेज़ी में कहना हो, तो 'सेल्फ़डिपेन्डेन्स' कह सकते हैं। मैं कभी-कभी सोचता हूँ कि इतने दिनों तक अंग्रेज़ी की अनुवर्तिता करने के बाद भी भारतवर्ष 'इन्डिपेन्डेन्स' को अनधीनता क्यों नहीं कह सका? उसने अपनी आज़ादी के जितने भी नामकरण किए—स्वतंत्रता, स्वराज्य, स्वाधीनता—उन सबमें 'स्व' का बंधन अवश्य रखा। यह क्या संयोग की बात है या हमारी समूची परंपरा ही अनजान में, हमारी भाषा के द्वारा प्रकट होती रही है? मुझे प्राणि-विज्ञानी की बात फिर याद आती है—सहजात वृत्ति अनजानी स्मृतियों का ही नाम है। स्वराज होने के बाद स्वभावतः ही हमारे नेता और विचारशील नागरिक सोचने लगे हैं कि इस देश को सच्चे अर्थ में सुखी कैसे बनाया जाय। हमारे देश के लोग पहली बार यह सब सोचने लगे हों, ऐसी बात नहीं है। हमारा इतिहास बहुत पुराना है, हमारे शास्त्रों में इस समस्या को नाना भावों और नाना पहलुओं से विचारा गया है। हम कोई नौसिखुए नहीं हैं, जो रातों-रात अनजान जंगल में पहुँचाकर अरक्षित छोड़ दिए गए हों। हमारी परंपरा महिमामयी, उत्तराधिकार विपुल और संस्कार उज्ज्वल हैं। हमारे अनजान में भी ये बातें हमें एक ख़ास दिशा में सोचने की प्रेरणा देती हैं। यह ज़रूर है कि परिस्थितियाँ बदल गयी हैं। उपकरण नये हो गये हैं और उलझनों की मात्रा भी बहुत बढ़ गयी है, पर मूल समस्याएँ बहुत अधिक नहीं बदली हैं। भारतीय चित्त जो आज भी 'अनधीनता' के रूप में न सोचकर 'स्वाधीनता' के रूप में सोचता है, वह हमारे दीर्घकालीन संस्कारों का फल है। वह 'स्व' के बंधन को आसानी से नहीं छोड़ सकता।

अपने आप पर अपने-आपके द्वारा लगाया हुआ बंधन हमारी संस्कृति की बड़ी भारी विशेषता है। मैं ऐसा तो नहीं मानता कि जो कुछ हमारा पुराना है, जो कुछ हमारा विशेष है, उससे हम चिपटे ही रहें। पुराने का 'मोह' सब समय वांछनीय ही नहीं होता। मरे बच्चे को गोद में दबाये रहने वाली 'बंदरिया' मनुष्य का आदर्श नहीं बन सकती। परंतु मैं ऐसा भी नहीं सोच सकता कि हम नई अनुसंधित्सा के नशे में चूर होकर अपना सरबस खो दें। कालिदास ने कहा था कि सब पुराने अच्छे नहीं होते, सब नए ख़राब ही नहीं होते। भले लोग दोनों की जाँच कर लेते हैं, जो हितकर होता है, उसे ग्रहण करते हैं, और मूढ़ लोग दूसरों के इशारे पर भटकते रहते हैं। सो, हमें परीक्षा करके हितकर बात सोच लेनी होगी और अगर हमारे पूर्व संचित भंडार में वह हितकर वस्तु निकल आए, तो इससे बढ़कर और क्या हो सकता है?

जातियाँ इस देश में अनेक आई हैं। लड़ती-झगड़ती भी रही हैं, फिर प्रेम-पूर्वक बस भी गयी हैं। सभ्यता की नाना सीढ़ियों पर खड़ी और नाना ओर मुख करके चलने वाली इन जातियों के लिए एक सामान्य धर्म खोज निकालना कोई सहज बात नहीं थी। भारतवर्ष के ऋषियों ने अनेक प्रकार से इस समस्या को सुलझाने की कोशिश की थी। पर एक बात उन्होंने लक्ष्य की थी। समस्त वर्णों और समस्त जातियों का एक सामान्य आदर्श भी है। वह है– अपने ही बंधनों से अपने को बाँधना। मनुष्य पशु से किस बात में भिन्न है आहार-निद्रा आदि पशु-सुलभ स्वभाव उसके ठीक वैसे ही हैं, जैसे अन्य प्राणियों के। लेकिन वह फिर भी पशु से भिन्न है। उसमें संयम है, दूसरे के सुख-दुःख के प्रति समवेदना है, श्रद्धा है, तप है, त्याग है। ये मनुष्य के स्वयं के उद्भावित बंधन हैं। इसीलिए मनुष्य झगड़े-टन्टे को अपना आदर्श नहीं मानता, गुस्से में आकर चढ़ दौड़ने वाले अविवेकी को बुरा समझता है एवं वचन, मन एवं शरीर से किए गए असत्याचरण को गलत आचरण मानता है। यह किसी भी जाति या वर्ण या समुदाय का धर्म नहीं है, यह मनुष्य मात्र का धर्म है। 'महाभारत' में इसीलिए निर्वैर भाव, सत्य और अक्रोध को सब वर्णों का सामान्य धर्म कहा है।

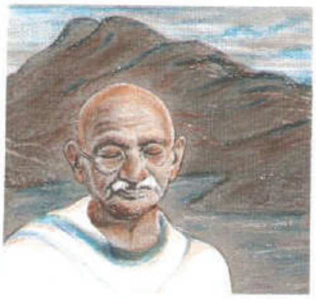

चित्र 18.3

टिप्पणी

नौसिखुए – किसी विषय को सीख रहे

अरक्षित – असुरक्षित

उत्तराधिकार – विरासत से प्राप्त अधिकार

विपुल – अधिक मात्रा में

उज्ज्वल– उजला

दीर्घकालीन – लंबे समय के

वांछनीय – चाहा हुआ, इच्छित

अनुसंधित्सा – खोजने की ललक, अनुसंधान की इच्छा

सरबस – सर्वस्व, सब कुछ

मूढ़ – मूर्ख

हितकर – कल्याणकारी

पूर्वसंचित – पहले से संग्रहीत, पहले से इकट्ठे किए

नाना – अनेक प्रकार के

वर्ण – ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र – ये विभाजन

संयम – आत्म-नियंत्रण, आत्म-अनुशासन

उद्भावित – प्रकट

अविवेकी – सही-गलत की पहचान न रखने वाला

टिप्पणी

आत्म-निर्मित – स्वयं द्वारा बनाया हुआ
उत्स – मूल
लोहा लेना – सामना या मुकाबला करना
कमर कसना – तैयार होना
मिथ्या – झूठ
द्वेष – वैर भाव
आत्म-तोषण – अपनी संतुष्टि
उच्छृंखलता – मनमानापन
पैठकर – गहराई में जाकर
चरितार्थता – सार्थकता
लुप्त होना – ख़त्म होना, गायब होना
मारणास्त्र – मारने वाले/विनाशकारी हथियार
बृहत्तर – व्यापक
तकाज़ा – माँग (यहाँ ज़रूरत)
अनायास – बिना प्रयास के
द्योतक – सूचक
संयत – नियंत्रित
महिमा – महत्त्व, बड़प्पन
संचयन – संग्रह
बाहुल्य – अधिकता
आडंबर – ढोंग, दिखावा
मंगल – कल्याण, भलाई
नि:शेष – कुछ भी शेष न बचे, संपूर्ण

नाखून क्यों बढ़ते हैं?

गौतम ने ठीक ही कहा था कि मनुष्य की मनुष्यता यही है कि वह सबके दुख-सुख को सहानुभूति के साथ देखता है। यह आत्म-निर्मित बंधन ही मनुष्य को मनुष्य बनाता है। अहिंसा, सत्य और अक्रोधमूलक धर्म का मूल उत्स यही है। मुझे आश्चर्य होता है कि अनजाने में भी हमारी भाषा में यह भाव कैसे रह गया है! लेकिन, मुझे नाखून के बढ़ने पर आश्चर्य हुआ था। अज्ञान सर्वत्र आदमी को पछाड़ता है। और आदमी है कि सदा उससे लोहा लेने को कमर कसे है।

मनुष्य को सुख कैसे मिलेगा? बड़े-बड़े नेता कहते हैं– वस्तुओं की कमी है, और मशीन बैठाओ, और उत्पादन बढ़ाओ, और धन की वृद्धि करो, और बाह्य उपकरणों की ताकत बढ़ाओ। एक बूढ़ा था। उसने कहा था—बाहर नहीं, भीतर की ओर देखो। हिंसा को मन से दूर करो, मिथ्या को हटाओ, क्रोध और द्वेष को दूर करो, लोक के लिए कष्ट सहो, आराम की बात मत सोचो, प्रेम की बात सोचो; आत्म-तोषण की बात सोचो, काम करने की बात सोचो। उसने कहा—प्रेम ही बड़ी चीज़ है, क्योंकि वह हमारे भीतर है। उच्छृंखलता पशु की प्रवृत्ति है, 'स्व' का बंधन मनुष्य का स्वभाव है। बूढ़े की बात अच्छी लगी या नहीं, पता नहीं। उसे गोली मार दी गई; आदमी के नाखून बढ़ने की प्रवृत्ति ही हावी हुई। मैं हैरान होकर सोचता हूँ—बूढ़े ने कितनी गहराई में पैठकर मनुष्य की वास्तविक चरितार्थता का पता लगाया था।

ऐसा कोई दिन आ सकता है, जबकि मनुष्य के नाखूनों का बढ़ना बंद हो जाएगा। प्राणि-शास्त्रियों का ऐसा अनुमान है कि मनुष्य का अनावश्यक अंग उसी प्रकार झड़ जाएगा, जिस प्रकार उसकी पूँछ झड़ गयी है। उस दिन मनुष्य की पशुता भी लुप्त हो जाएगी। शायद उस दिन वह मारणास्त्रों का प्रयोग भी बंद कर देगा। तब तक इस बात से छोटे बच्चों को परिचित करा देना वांछनीय जान पड़ता है कि नाखून का बढ़ना मनुष्य के भीतर की पशुता की निशानी है और उसे नहीं बढ़ने देना मनुष्य की अपनी इच्छा है, अपना आदर्श है। बृहत्तर जीवन में अस्त्र-शस्त्रों को बढ़ने देना मनुष्य की पशुता की निशानी है और उनकी बाढ़ को रोकना मनुष्यत्व का तकाज़ा है। मनुष्य में जो घृणा है, जो अनायास—बिना सिखाये—आ जाती है, वह पशुत्व की द्योतक है और अपने को संयत रखना, दूसरे के मनोभावों का आदर करना मनुष्य का स्वधर्म है। बच्चे यह जानें तो अच्छा हो कि अभ्यास और तप से प्राप्त वस्तुएँ मनुष्य की महिमा को सूचित करती हैं।

सफलता और चरितार्थता में अंतर है। मनुष्य मारणास्त्रों के संचयन से, बाह्य उपकरणों के बाहुल्य से उस वस्तु को पा भी सकता है, जिसे उसने बड़े आडम्बर के साथ सफलता का नाम दे रखा है। परंतु मनुष्य की चरितार्थता प्रेम में है, मैत्री में है, त्याग में है, अपने को सबके मंगल के

चित्र 18.4

टिप्पणी

लिए निःशेष भाव से दे देने में है। नाखूनों का बढ़ना मनुष्य की उस अंध सहजात वृत्ति का परिणाम है, जो उसके जीवन में सफलता ले आना चाहती है, उसको काट देना उस स्व-निर्धारित, आत्म-बन्धन का फल है, जो उसे चरितार्थता की ओर ले जाता है।

नाखून बढ़ते हैं तो बढ़ें, मनुष्य उन्हें बढ़ने नहीं देगा।

—हजारी प्रसाद द्विवेदी

बोध प्रश्न

सर्वाधिक उपयुक्त विकल्प चुनकर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

1. कुछ लाख वर्ष पूर्व नाखून मनुष्य के लिए क्या थे?

   (क) उपयोगी हथियार ☐ (ख) सौंदर्य के प्रतीक ☐

   (ग) मनुष्यता की पहचान ☐ (घ) अनावश्यक अंग ☐

2. 'स्वाधीनता' शब्द का अर्थ है—

   (क) अनधीनता ☐ (ख) उच्छृंखलता ☐

   (ग) अपनी अधीनता ☐ (घ) मुक्ति ☐

3. पशुता से आशय है—

   (क) पशु की विशेषता ☐ (ख) पशु का व्यवहार ☐

   (ग) पशु के प्रति दृष्टिकोण ☐ (घ) बुरी प्रवृत्तियाँ ☐

18.2 आइए समझें

आपने यह पाठ पढ़ा? बहुत रोचक है यह पाठ। जानते हैं क्यों? क्योंकि इस पाठ का आरंभ एक मासूम बच्ची की ऐसी जिज्ञासा से हुआ है, जिसका हमसे भी संबंध है। नाखून हमारे भी बढ़ते हैं, हम भी उन्हें निरंतर काटते रहते हैं। बच्ची के प्रश्न का उत्तर ढूँढने के प्रयास में लेखक ने मनुष्यता की विकास—प्रक्रिया का और मनुष्यता तथा पशुता के संघर्ष को हमारे सामने प्रस्तुत कर दिया है।

इस पाठ को ठीक से समझने के लिए इसे पाँच अंशों में बाँटा गया है।

18.2.1 अंश—1

बच्चे कभी-कभी चक्कर में................. नहीं जानती।

आइए, पाठ के पहले अंश को फिर से पढ़ते हैं। इस अंश में निबंधकार ने बच्ची की ऐसी जिज्ञासा को सामने रखा है जिसका समाधान तुरंत करना मुश्किल है। लेखक बच्ची के

प्रश्न के उत्तर के रूप में एक विचार–प्रक्रिया से गुजरता है और उसे हमारे सामने प्रस्तुत करता है। वह कुछ लाखों वर्ष पूर्व की बात करता है, जब नाखून मनुष्य की जीवन–रक्षा के उपाय थे– वे उसके लिए अनिवार्य थे। धीरे–धीरे ये अनेक प्रकार के हथियारों के विकसित होने से मनुष्य में बर्बरता के चिह्न के रूप में बच गए। आज के समय में लेखक ने इन्हें भयंकर पशुता की प्रवृति के रूप में देखा है।

क्या आपने कभी सोचा है कि आज से लाखों साल पहले आदिम युग में जब मनुष्य और पशु में बहुत अंतर नहीं था, आदमी धरती पर कैसे रहता होगा? वह भी जानवरों की तरह गुफाओं में रहता होगा। पेड़ों से फल तोड़कर खाता होगा। झगड़ा होने पर जीवन–रक्षा के लिए नाखूनों से, दाँतों से दूसरों पर हमला करता होगा। किसी समय नाखून हथियार की तरह काम आते थे। तब नाखून बढ़ाना मनुष्य की ज़रूरत रही होगी। दाँत भोजन को काटने के लिए ही नहीं, एक-दूसरे को काटने के काम भी आते होंगे। फिर धीरे-धीरे आदमी ने अपने शरीर के अंगों के अतिरिक्त बाहरी चीज़ों की सहायता लेनी शुरू की। पेड़ की डालें, टहनियाँ, छोटे-बड़े पत्थर उसके हथियार बने। 'रामायण' में राम की वानर-सेना ने भी रावण की सेना पर पेड़ की डालों, पत्थरों से हमला किया था। अपने दाँतों और नाखूनों से भी राक्षसी सेना को नोचने का काम किया था। धीरे-धीरे इंसान ने हड्डियों से हथियार बनाने आरम्भ किए। महर्षि दधीचि ने अपनी हड्डियों का दान दिया था। उन हड्डियों से देवताओं ने वज्र नामक एक अस्त्र बनाया, जिससे देवताओं के राजा इंद्र ने वृत्रासुर का वध किया था। हड्डियों से बने हथियार बहुत मज़बूत होते थे।

लेकिन आदमी को चैन कहाँ? द्विवेदी जी कहते हैं कि मनुष्य ने लोहे से हथियार बनाने शुरू किए। तीर जिनके अगले भाग पर नुकीला लोहा लगा होता था; भारी गदा; तलवार; कृपाण आदि अस्त्र-शस्त्रों का निर्माण किया। पुराणों में ऐसा वर्णन आया है कि धातु के इन्हीं हथियारों के कारण देवता भी आदमी के पास सहायता माँगने आते थे। अनार्यों (यानी जो आर्य नहीं थे) के पास शायद प्रशिक्षित घोड़े और धातु के हथियार नहीं थे। आर्य जाति ने इनको बहुत विकसित कर लिया था। इसलिए उनकी जीत होती रही। इस प्रकार नाग, सुपर्ण, यक्ष, गंधर्व, असुर, राक्षस–सभी जातियाँ आर्यों से हारती चली गईं। इतिहास आगे बढ़ता गया और मनुष्य ने नए-नए हथियार बनाना सीख लिया। अपने हवाई जहाज़ों से वह दुश्मन देशों पर बम गिराने लगा, जैसे द्वितीय विश्वयुद्ध में अमेरिका ने जापान के हिरोशिमा और नागासाकी नगरों पर बम गिराकर लाखों लोगों को मौत के घाट उतार दिया था। आज भी पूरा विश्व इस घटना को याद करके सहम जाता है। आप समझ ही गए होंगे कि एक समय जहाँ जीवन–रक्षा के लिए नाखून काम आते थे अब उनकी जगह आधुनिक हथियारों ने ले ली है। अब ये दूसरों पर प्रभुत्व जमाने, शोषण करने के साधन बन गए। इन हथियारों के बल पर मनुष्य ने मनुष्यता पर कलंक लगाया है, उसे पशुता से ऊपर नहीं उठने दिया है। उसके नाखून उसे याद दिला रहे हैं कि जब तक हथियारों के बल पर दूसरों का नाश करते रहोगे तब तक तुम विकसित मनुष्य नहीं निरे पशु ही रहोगे और हम बार-बार बढ़कर तुम्हें यह याद दिलाते रहेंगे।

टिप्पणी

नाखून बढ़ जाएँ तो माता-पिता या बड़े-बुजुर्ग कितनी बार नाखून काटने के लिए टोकते हैं, क्यों? क्योंकि वे जानते हैं कि ये नाखून हमारे अंदर की पशुता की निशानी हैं। यह बार-बार बढ़ते रहेंगे और हम इन्हें बार-बार काटते रहेंगे, तभी तो इनकी वृद्धि पर अंकुश लगा सकेंगे। सच ही है कभी किसी ज़माने में बड़े नाखून काटने पर डाँटते होंगे, क्योंकि तब वे हमारे जीवन-रक्षा के उपाय थे। आज हमें इनकी हथियार के रूप में आवश्यकता नहीं है। हमारे पास अति आधुनिक और प्रभावशाली हथियार हैं। मनुष्य यह समझता है कि नाखून काट देने मात्र से वह सभ्य, मानवीय, सुसंस्कृत हो जाएगा, लेकिन लेखक के अनुसार जब तक हम हथियारों के बल पर दूसरों को मौत के घाट उतारते रहेंगे, तब तक निरे पशु ही रहेंगे, ऐसे में नाखून काटने से कुछ नहीं होगा। मनुष्य इस बात को समझ नहीं पा रहा है, इसलिए लेखक को दुख होता है और वह निराश होता है। उसे नाखूनों का बढ़ना यह याद दिलाता है कि मनुष्य अभी तक उतना सभ्य, मानवीय और सुसंस्कृत नहीं हुआ है जितना उसे होना चाहिए था। लेखक को लगता है कि नाखून का बढ़ना मनुष्य में पशुता का बढ़ना है। उसके अंदर बुराइयाँ-लोभ, लालच, क्रोध, वैर, ईर्ष्या-द्वेष नाखूनों के रूप में उसको उकसा रही हैं। नाखून काट कर मानो हम इन सब बुराइयों पर विजय पाने की कोशिश कर रहे हैं। पशुता अपने आप न तो घटती है, न मिटती है। आदमी को उसे काटने के लिए स्वयं ही कोशिश करनी पड़ती है और अपनी संतान को भी इन बुराइयों पर विजय पाने के लिए प्रशिक्षण देना पड़ता है।

क्रियाकलाप-18.2

जिस प्रकार संज्ञा और सर्वनाम की विशेषता बतलाने वाले शब्द विशेषण कहलाते हैं उसी प्रकार क्रिया की विशेषता बतलाने वाले शब्द क्रिया विशेषण कहलाते हैं। ये क्रिया विशेषण चार प्रकार के होते हैं 1. कालवाचक, 2. स्थानवाचक, 3. रीतिवाचक, 4. परिमाण वाचक

निम्नलिखित वाक्यों को पढ़िए

(i)	वह परसों जाएगा।	(कब जाएगा? – परसों)
(ii)	शीला इधर–उधर देख रही है।	(कहाँ देख रही है? – इधर–उधर)
(iii)	प्रगीत धीर–धीरे आ रहा है।	(कैसे आ रहा है? – धीरे–धीरे)
(iv)	वह बहुत खाता है	(कितना खाता है? – बहुत)

ऊपर के वाक्यों में कब, कहाँ कैसे तथा कितना/कितने/कितनी आदि शब्दों से बने प्रश्नों के (इधर-उधर, धीरे-धीरे, बहुत) में जो शब्द आए हैं वे क्रमशः काल, स्थान, रीति तथा परिमाण वाचक क्रिया विशेषण हैं।

पाठ में आए निम्नलिखित वाक्यों को पढ़िए और उनके सामने क्रिया विशेषणों के भेद लिखिए:–

टिप्पणी

(i) आगे बढ़ा।

(ii) रोज बढ़ते हैं।

(iii) जितनी बार काट दो।

(iv) जातियाँ इस देश में अनेक आईं।

(v) समस्या को सुलझाने की अनेक प्रकार से कोशिशें कीं।

(vi) उस दिन मनुष्य की पशुता भी लुप्त हो जाएगी।

18.2.2 अंश–2

कुछ हज़ार साल पहले......................................मनुष्यता की विरोधिनी है।

आइए, अब हम दूसरे अंश पर विचार करते हैं। इस अंश में लेखक ने नाखूनों की उपयोगिता पर विचार किया है। 'कामसूत्र' के हवाले से वह बताता है कि किसी समय नाखूनों को अनेक प्रकार से सजाने–सँवारने का प्रचलन था। इसके बाद लेखक प्राणी–विज्ञानियों के मत का उल्लेख करते हुए नाखूनों को उन वृतियों में शामिल करता है जो हमारे शरीर में अपने आप अनजाने काम करती रहती हैं। इनमें से नाखूनों को लेखक ने पशुत्व का संकेत माना है।

द्विवेदी जी के अनुसार वास्तव में मनुष्य बड़ा ही कला-प्रेमी, मनोरंजन प्रेमी और शांत स्वभाव का है। हर वस्तु में वह आनंद को खोजता है। जहाँ एक ओर नाखून हमारे अंदर पशुता को बढ़ाते हैं, वहीं दूसरी ओर इतिहास में ऐसा वर्णन आया है कि पुराने समय में लोग अपने नाखूनों पर तरह-तरह की चित्रकारी करते थे। संस्कृत का प्रसिद्ध ग्रंथ है– 'कामसूत्र'। उसमें नाखूनों को अलग-अलग आकारों में काटने का वर्णन मिलता है। कोई उन्हें गोल आकार में काटता था, कोई अर्ध चन्द्रमा के, तो कोई दाँतों के आकार में काटता था। इसका अर्थ यह हुआ कि प्राचीन काल में भी आदमी अपने को तरह-तरह से सजाता–सँवारता था। लोग अपने नाखूनों को मोम से चिकना करते थे और फिर उन पर महावर, (लाल रंग का एक द्रव पदार्थ) लगाते थे। कहते हैं गौड़ देश (बंगाल का एक भाग) के लोग बड़े-बड़े नाखून रखते थे तो दक्षिण भारत के लोग छोटे नाखून पसंद करते थे। है न मज़ेदार बात, हमारे पुरखे कम कला-प्रेमी नहीं थे। प्रत्येक अंग-प्रत्यंग का शृंगार करना उन्हें आता था। वास्तविक बात यह है कि हमारी भारतीय संस्कृति में छोटी-से-छोटी और तुच्छ-से-तुच्छ वस्तु को भी मानवीय स्पर्श देकर महान बना दिया गया है। कहाँ वे नाखून जिनका बार-बार सिर काट दिया जाता था, कहाँ इनका इतना कलायुक्त रूप! आज भी नाखूनों को नेल पॉलिश लगाकर सजाया जाता है। लम्बे नाखून रखना फैशन है।

विभिन्न परिस्थितियों में प्राणियों की शारीरिक अवस्थाओं का अध्ययन करने वाले प्राणिविज्ञानी कहलाते हैं। लेखक के अनुसार उन्होंने यह पता लगाया है कि मनुष्य के मन की तरह मनुष्य के शरीर में भी कुछ प्रक्रियाएँ अपने आप चलती रहती हैं। हमारे

शरीर में एक ऐसा गुण भी है जो हमारे नियंत्रण के बिना अपना काम करता रहता है। जैसे एक आयु तक शरीर और उसमें शक्ति का बढ़ना, जैसे— सांस का चलना, दिल का धड़कना और भोजन का पचना इत्यादि। यह सब अपने आप चलता रहता है। इसी प्रकार नाखूनों का बढ़ना, बालों का बढ़ना, दाँतों का टूटकर दुबारा आना, पलकों के बालों का गिरना-ये सभी कार्य हमारे वश में नहीं हैं। स्वयं ही ये होती हैं ये सभी प्रवृत्तियाँ हमारे जन्म के साथ उत्पन्न होती हैं। इसलिए इन्हें सहजात वृत्तियाँ कहते है। नाखून बढ़ना भी जन्मजात प्रवृत्ति है। नाखूने के बढ़ने पर हमारा वश नहीं। अधिक-से-अधिक हम उन्हें काट सकते हैं। लेखक ने विचार करते हुए नाखूनों के बढ़ने में एक संकेत की कल्पना की है। लेखक की यह कल्पना मानवीय एवं समाज के हित में है। नाखूनों का बढ़ना पशुता की प्रवृत्ति का सिर उठाना है और उन्हें काटना पशुता को दबाकर वास्तविक मनुष्य होना है। दुःख दूर कर बेहतर जीवन की परिकल्पना के उद्देश्य से मनुष्य ने कई महत्वपूर्ण आविष्कार किए। मनुष्य ने प्रगति और विकास के नित नए कीर्तिमान स्थापित किए हैं। अब आप समझे, नाखून काटना क्यों आवश्यक है? हमारी सभ्यता, शिष्टता, संस्कृति, संपत्ति सब मनुष्य जाति के कल्याण के लिए है। हथियारों की होड़ मनुष्यता की विरोधी है।

पाठगत प्रश्न-18.2

सर्वाधिक उपयुक्त विकल्प चुनकर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

1. निम्नलिखित में से कौन-सा विकल्प गलत है—

   (क) लाखों वर्ष पूर्व का मनुष्य – दाँत और नाखून ☐

   (ख) रामचन्द्रजी की वानरी सेना – पत्थर के ढेले और पेड़ की डालें ☐

   (ग) नाग, सुपर्ण, यक्ष, गंधर्व – लोहे के अस्त्र और घोड़े ☐

   (घ) देवताओं का राजा इंद्र – दधीचिं मुनि की हड्डियों से बना वज्र ☐

2. लेखक निराश क्यों होता है?

   (क) नाखून बढ़ने के कारण ☐

   (ख) नाखून काटने के कारण ☐

   (ग) मनुष्य द्वारा पशुता को जीत न पाने के कारण ☐

   (घ) नाखूनों के हथियार न रह जाने के कारण ☐

3. सहजात वृत्तियाँ क्या होती हैं?

   (क) औपचारिक रूप से सीखी हुई प्रवृत्तियाँ ☐

   (ख) नकल करके प्राप्त की गई प्रवृत्तियाँ ☐

   (ग) जन्म के साथ उत्पन्न होने वाली प्रवृत्तियाँ ☐

   (घ) समाज में साथ रहने से आने वाली प्रवृत्तियाँ ☐

18.2.3 अंश-3

'मेरा मन पूछता है – किस ओर...तो इससे बढ़कर और क्या हो सकता है'?

इस अंश में लेखक स्पष्ट रूप से कहता है कि नाखून बढ़ना पशुता की निशानी है। इस पशुता का ही परिणाम है कि मनुष्य विनाशक अस्त्र-शस्त्र बढ़ा रहा है। लेखक यह भी कहता है कि सहजात वृत्तियाँ केवल नकारात्मक भूमिका नहीं निभातीं। हमारी पुरानी संस्कृति में बहुत कुछ ऐसा भी है जो हमें संयम सिखाकर मानवीय मूल्यों से युक्त बनाता है।

द्विवेदी जी कहते हैं कि न तो हमारे शरीर में नाखून का बढ़ना बंद होता है, न दुनिया में हथियारों की वृद्धि। हमारे अंदर की पशुता मरने के बजाय लगातार फल-फूल रही है। ऐसा इसलिए भी हुआ है कि हम अपनी प्राचीन संस्कृति में जो कुछ मूल्यवान वाक्य रचना है– उसे पहचान कर अपने जीवन में नहीं उतारते। लेखक ने भारतीय संस्कृति से उदाहरण देकर इसे स्पष्ट किया है। 15 अगस्त 1947 को जब हमें आज़ादी मिली, तब अंग्रेजी के समाचार-पत्रों में 'इंडिपेंडेंस' शब्द लिखा था और हिन्दी समाचार-पत्रों में 'स्वाधीनता दिवस' लिखा हुआ था। लेखक का कहना है कि 'इंडिपेंडेंस' का अनुवाद अनधीनता अर्थात किसी के भी अधीन न होना है, स्वाधीनता नहीं। तो सभी समाचार-पत्रों ने हिन्दी में 'स्वाधीनता', या 'स्वतंत्रता दिवस' क्यों लिखा? आप जानते हैं हर भाषा एक संस्कृति विशेष से जन्म लेती है। भारतीय संस्कृति में अनुशासन बाहर से थोपा गया अनुशासन नहीं है। हमने अपने व्यवहार को उत्कृष्ट एवं अनुशासित रखने के लिए स्वयं का बंधन स्वीकार किया है। इसीलिए स्वतंत्रता, स्वाधीनता, स्वराज्य जैसे शब्दों का प्रयोग हम करते हैं। 'इन्डिपेन्डेन्स'–अनधीनता अर्थात् किसी की अधीनता का अभाव में उच्छृंखला की प्रवृत्ति मौजूद है जबकि स्वतंत्रता, स्वाधीनता, स्वराज्य में 'स्व' का बंधन मौजूद है। भारतीय संस्कृति में उच्छृंखलता को अच्छा नहीं माना जाता। यहाँ समाज के हित में 'स्व' का अंकुश आवश्यक है। यहाँ मनुष्य के प्रत्येक व्यवहार का मूल्य इस आधार पर आँका जाता है कि वह समाज के हित में कितना है। लेखक के अनुसार यह स्व का बंधन हमारी भाषा में अनायास इसीलिए आ गया है कि यह हमारी संस्कृति का अभिन्न अंग था। यह संस्कार रूप में हमारे भीतर बसा था। स्वाधीनता के बाद हमारे देश के नेता और विचारशील लोग निरंतर सत्ता के विकेन्द्रीकरण अर्थात् शासन में हर स्तर पर जनता की भागीदारी को महत्व देते हैं। इसमें भी सामूहिकता, सामाजिकता तथा अधिक-से-अधिक लोगों को सुखी देखने की कामना निहित थी। लेखक के अनुसार यह कामना भी भारतीय परंपरा का अभिन्न अंग रही है। बहुत से लोग यह मानते हैं कि जो कुछ श्रेष्ठ है, वह पश्चिम से मिला है, लेकिन इसमें लेखक इस बात का खंडन करते हुए कहता है कि हम कोई नौसिखिए नहीं हैं, हमारी परंपरा में भी बहुत पहले से अनेक श्रेष्ठ गुण हैं जिनमें से एक स्व का बंधन है। इसके साथ ही लेखक सावधान भी करता है कि पुराना सब कुछ अच्छा ही नहीं होता, इसलिए पुराने से चिपटे रहना बुद्धिमानी नहीं है लेकिन जो कुछ पुराना है– वह सब व्यर्थ है, ऐसा सोचना भी विवेकहीनता है।

टिप्पणी

मतलब यह है कि अच्छी तरह सोच समझकर, परखकर हमें किसी वस्तु या पद्धति को अपनाना चाहिए। द्विवेदी जी ने बंदरिया का उदाहरण दिया है, आपने सुना होगा कि बंदरिया अपने बच्चे के मर जाने के बाद भी उसे छाती से चिपकाए रहती है। परंतु उसकी यह अंधी ममता मनुष्य का आदर्श नहीं बन सकती। न हमें किसी का अंधानुकरण करना है, न अपनी चीज़ों की भलाई-बुराई के प्रति आँखें मूँदनी हैं। वैज्ञानिक सोच से उनका निरीक्षण-परीक्षण कर उन्हें अपनाना चाहिए। अगर हमारी भारतीय संस्कृति की कुछ बातें वैज्ञानिक दृष्टिकोण से भी सही सिद्ध होती हैं तो हमें उन्हें उदारतापूर्वक व सम्मानपूर्वक अपनाना चाहिए। अब तो आप समझ गए न!

18.2.4 अंश–4

जातियाँ इस देश में ....चरितार्थता का पता लगाया था।

पाठ के इस अंश में द्विवेदीजी इतिहास एवं परंपरा के उदाहरण देकर सिद्ध करते हैं कि स्व का बंधन भारतवासियों का पुराना संस्कार है। यह स्व का बंधन ही भारत के लोगों को दूसरों के सुख–दुख के प्रति संवेदनशील बनाता है। इसके साथ–साथ यह भी हुआ है कि आज मनुष्य में पशुओं की प्रवृत्ति हावी हो गई है, पर वह उसका सामना भी कर रहा है।

आप जानते ही होंगे कि प्राचीन काल से ही भारत में अनेक जातियाँ बाहर से आती रही हैं। इनमें से कुछ मारकाट-लूटपाट करने वाले थे। बहुसंख्यक ऐसे थे जो कालांतर में भारतीय संस्कृति में घुल-मिल गए। अपरिचय के भाव को मिटाने के लिए अनेक महापुरुषों ने प्रयत्न किए। यह बात हमारे महापुरुष, ऋषिगण अच्छी तरह समझ चुके थे कि धर्म अलग-अलग होते हुए भी सभी भारतीयों में कुछ समान मूल्य हैं। उनके आदर्श, परम्परा, रीति-रिवाज एक से हैं। जब हम एक स्थान पर लम्बे समय तक रहते हैं तो कुछ बातें हम सब में एक सी आने लगती हैं। सब एक संस्कृति की डोर से बंध जाते हैं। यह डोर है आदर्शों की, मूल्यों की। हमारी भारतीय संस्कृति की सबसे बड़ी विशेषता है कि हमने अपने लिए स्वयं नियम बनाए हैं जिनका पालन करने में हम गर्व का अनुभव करते हैं।

क्या आप जानते हैं कि पशु और मनुष्य में मुख्य अंतर क्या है? पशु की जब जो इच्छा होती है, वह उसे उसी समय पूरी करता है। परंतु मनुष्य अपनी इच्छाओं को नियंत्रण में रखता है। इसीलिए वह पशु से श्रेष्ठ है। मनुष्य में संयम है और वह दूसरों के सुख-दुख को अपने हृदय में अनुभव करता है। वह दूसरों के गुणों का सम्मान करता है, उन पर श्रद्धा और विश्वास रखता है। मनुष्य में तपस्या, साधना और परिश्रम करने की क्षमता है। यही नहीं, मनुष्य में दूसरों के लिए अपने सुख को त्यागने की विशेषता भी है। इन सभी बंधनों को, आत्म-संयम के साधनों को मनुष्य ने स्वयं बनाया है। यह उस पर थोपे नहीं गए। इसी प्रकार इंसान लड़ने-झगड़ने, बिना कारण क्रोध करने आदि

बातों को अच्छा नहीं समझता। कोई भी ऐसी बात जो सत्य के विरुद्ध है, उसे मनुष्य न मन से सोचता है और न अपने किसी कर्म अथवा वचन से उसका समर्थन करता है। सत्य का पालन करना ही प्रत्येक मनुष्य का धर्म अथवा कर्त्तव्य है।

लेखक महात्मा बुद्ध के हवाले से भी कहता है कि दूसरों के दुख को अपना दुख समझकर उसके प्रति समानुभूति रखना, यही मानव मात्र का धर्म है। ये सभी नियम मनुष्य ने अपने आचरण और व्यवहार को नियंत्रित रखने के लिए स्वयं बनाए हैं ताकि वह रास्ता न भटक जाए, इंसानियत के रास्ते को छोड़कर कहीं पशुता के मार्ग पर न चला जाए। है न सुखद आश्चर्य की बात कि हमारी संस्कृति में मनुष्य को सभ्य और शिष्ट बनाने के कैसे सहज और सरल प्रयास किए गए हैं। पर हमारे नाखून आज भी बढ़ रहे हैं। आज भी पशुता, जंगलीपन हमारा पीछा नहीं छोड़ रहे हैं। परन्तु मनुष्य इस पशुता को मिटाने के लिए निरंतर संघर्षरत है।

सुख पाने के लिए आदमी ज़िंदगी भर दौड़ता रहता है। सुखों को जुटाने के लिए कितने परिश्रम और लगन की ज़रूरत है। आम जनता को सुखों की प्राप्ति के लिए कठोर परिश्रम करना पड़ता है। सत्ताधारी जनता को सुख-सुविधाएँ उपलब्ध कराने के लिए देश में वस्तुओं का अभाव बताते हैं। वे कहते हैं जब तक और कारखाने और मशीनें नहीं लगाई जाएँगी, जब तक उत्पादन पहले से कई गुना ज्यादा नहीं होगा, तब तक जनता को सुखी नहीं बनाया जा सकता। परन्तु महात्मा गांधी कहते थे कि हमें बाहरी सुखों पर कम, आंतरिक सुखों पर ज्यादा ध्यान देना चाहिए। महात्मा गांधी का कहना था कि मनुष्य को अपनी आत्मा में झाँकना चाहिए, झूठ और दिखावे से दूर रहना चाहिए। क्रोध, ईर्ष्या, जलन आदि भावों को मन से दूर रखना चाहिए। वे कहते थे कि मनुष्य को परिश्रम की बात सोचनी चाहिए। आत्मा के संतोष की बात सोचनी चाहिए। जब तक मनुष्य के मन में संतोष नहीं होगा, तब तक मनुष्य के मन में सुख नहीं आएगा। हमें परस्पर प्रेम-भाव से रहना चाहिए। हमें स्वयं पर संयम व नियंत्रण रखना चाहिए। मनमानापन पशुओं का गुण है। मनुष्य तो सोच-समझकर देश और काल के अनुसार आचरण करता है। आप जानते हैं द्विवेदी जी ने बूढ़ा किसे कहा? नहीं, जरा सोचिए तो सही उस समय हमारे स्वतंत्रता-आंदोलन के नेताओं में सबसे बड़ा और आदरणीय कौन था? समझे आप, हाँ। बिल्कुल ठीक समझे। यहाँ द्विवेदी जी ने पूरे आदर के साथ गांधी जी को वह बूढ़ा बताया है? महात्मा गाँधी की ये बातें लोगों को बहुत भाईं। वे उनके बताए सत्य और अहिंसा के रास्ते पर निडर होकर चलने लगे। परन्तु बहुत सारे लोग ऐसे भी थे जो उनके विचारों से प्रभावित नहीं थे इसलिए उनकी बातों को समझ नहीं पाते थे, उनके विचारों से भिन्न मत रखते थे। महात्मा गांधी को गोली मारकर उनकी हत्या कर दी गई। इस उदाहरण ने सिद्ध कर दिया कि हमारी पशुता मरी नहीं है वह आज भी ज़िंदा है। तभी तो हत्या, मारकाट और विनाश आज भी समाज में जीवित है। महात्मा गांधी ने अपनी विचारधारा से यह सिद्ध कर दिया कि जब तक हम अपने मन से अहिंसा व सत्य को नहीं अपनाएंगे तब तक मनुष्य जीवन सार्थक नहीं है। गांधीजी के बताए रास्ते को अपने जीवन में उतारना मनुष्यता का पर्याय है।

टिप्पणी

पाठगत प्रश्न-18.2

सर्वाधिक उपयुक्त विकल्प चुनकर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

1. नए-पुराने में से बेहतर को चुनने के लिए क्या करना पड़ता है?

   (क) जाँच-परख ☐ (ख) देख-रेख ☐

   (ग) माप-तौल ☐ (घ) काट-छाँट ☐

2. 'मरे हुए बच्चे को गोद में दबाए रखने वाली बंदरिया' का उदाहरण देने का उद्देश्य है?

   (क) मोह-ममता को बनाए रखना ☐ (ख) परंपराओं का पालन करना ☐

   (ग) रूढ़ियों का मोह त्यागना ☐ (घ) नए को शंका की दृष्टि से देखना ☐

3. मनुष्य पशु से किस बात में भिन्न है?

   (क) आहार ☐ (ख) निद्रा ☐

   (ग) संयम ☐ (घ) भय ☐

4. महात्मा गांधी ने किस बात पर अधिक बल दिया?

   (क) उन्मुक्तता पर ☐ (ख) बड़े उद्योगों पर ☐

   (ग) भौतिकता पर ☐ (घ) आत्मतोष पर ☐

18.2.5 अंश-5

ऐसा कोई दिन आ सकता है........ मनुष्य उन्हें बढ़ने नहीं देगा।

पाठ के इस अंतिम अंश में लेखक ने आशा प्रकट की है कि एक दिन ऐसा आएगा जब मनुष्य पूर्ण मनुष्य हो जाएगा अर्थात् वह अहंकार, उच्छृंखलता की प्रवृत्ति को छोड़कर प्रेम, मैत्री, त्याग जैसे सद्गुणों से युक्त होगा। वह सफल होने में नहीं चरितार्थ होने में विश्वास रखेगा।

प्राणिविज्ञानियों ने कहा है कि मानव शरीर के जिन अंगों की लम्बे समय से जरूरत नहीं पड़ी वे अंग धीरे-धीरे झड़ जाते हैं, जैसे एक दिन आदमी की पूँछ झड़ गई। प्राणिविज्ञानियों की इस स्थापना के आधार पर 'नाखून क्यों बढ़ते हैं?' के बारे में लेखक एक सुखद कल्पना करता है। उसे मानव पर भरोसा है। वह मानता है कि मानव एक दिन अपनी सभी बुराइयाँ त्याग देगा। उसे लगता है कि किसी दिन मनुष्य के नाखून बढ़ने बंद हो जाएँगे, तब शायद उसके अंदर की पशुता भी समाप्त हो जाएगी। उस दिन सारी दुनिया में शांति और प्रेम का साम्राज्य होगा। तब मनुष्य अस्त्रों का निर्माण बंद

कर देगा। पर यह है एक संभावना, ऐसा होगा या नहीं, इस बारे में कोई निश्चित घोषणा नहीं की जा सकती। जब तक ऐसा नहीं होता, तब तक यह आवश्यक है कि हम बच्चों को समझा दें कि वे अपने नाखून अवश्य काटते रहें और ये समझकर कि वे अंदर की पशुता का सिर काटकर उसे आगे बढ़ने से रोक सकें।

द्विवेदी जी ने कहा है कि विश्व की शांति के लिए आवश्यक है कि अस्त्र-शस्त्रों के बढ़ावे को रोका जाए, क्योंकि अगर अस्त्र होंगे तो लड़ाई भी अवश्य होगी। मानवता की विजय के लिए अस्त्र-शस्त्र के निर्माण को रोकना होगा। आज मनुष्य जाति के पास जो भयानक बम हैं उनके प्रयोग से सम्पूर्ण मानवता लुंज-पुंज अर्थात् अपाहिज़ हो जाएगी। मनुष्य के मन में जो नफ़रत का ज़हर भरा है वह उसे तो जलाता ही है दूसरों का भी विनाश करता है। इसलिए अपने ऊपर संयम रखते हुए हमें इस नफरत पर, घृणा पर काबू पाना है। दूसरों के विचारों, धर्मों, संस्कृतियों, रीति-रिवाजों आदि का हमें सम्मान करना चाहिए। हमारी भावी पीढ़ी, हमारे नन्हें दोस्तों के लिए यह जानना बहुत आवश्यक है कि दूसरों से छीनी हुई वस्तुएँ कभी स्थायी नहीं होती। अपने परिश्रम, अपनी मेहनत के बल पर जिन वस्तुओं को हम प्राप्त करते हैं, उन्हीं से हमारी उपलब्धियों का पता चलता है। वे मनुष्य द्वारा किए गए संघर्ष की पहचान हैं। मेहनत के फल का आनंद सबसे मीठा होता है। मनुष्य का संघर्ष सदैव अविरोधी होता है अर्थात् उसमें अपना और दूसरों का भला निहित होता है, किसी की हानि नहीं होती, इसलिए मेहनत का ही दूसरा नाम तपस्या है। तपस्या से ही वरदान मिलता है। इसलिए अपनी मेहनत से ही प्राप्त करो। दूसरों से छीनना, लूटना पशुता की निशानी है।

सफलता और चरितार्थता में अत्यंत सूक्ष्म अंतर है। सफलता का अर्थ है— व्यक्तिगत, केवल अपना या कुछ ही लोगों का लाभ, किसी वस्तु विशेष की प्राप्ति। चरितार्थता का अर्थ है— ऐसी सार्थकता, जो सम्पूर्ण मानवता के लाभ के लिए हो। मनुष्य जीवन की असली चरितार्थता उसके प्रेम भाव, मैत्री-भाव व त्याग-भाव व सहयोग में है। संपूर्ण मानव जाति की भलाई के लिए कुछ भी त्याग करना पड़े, कम है। नाखून बढ़कर हमारी जन्मजात वृत्ति पशुता के मार्ग से जीत पाना चाहते हैं। परन्तु मनुष्य अपने संयम, आत्म-नियंत्रण से नाखून का सिर काटकर अपनी चरितार्थता, अर्थात् सच्ची जीत सिद्ध करता है। अंत में लेखक मनुष्य में भरोसा प्रकट करते हुए कहता है—चाहे जो हो जाए हमें नाखूनों की बढ़त को काट-काटकर उसे अपने वश में रखना है। पशुता कभी भी मनुष्यता को हरा नहीं सकती अर्थात् संसार में केवल पशुता ही नहीं है, मनुष्यता भी है। जैसे ही पशुता सिर उठाती है, मनुष्यता उसका सामना करते हुए उसे परास्त कर देती है। यह हमेशा होता रहेगा।

पाठगत प्रश्न-18.3

सर्वाधिक उपयुक्त विकल्प चुनकर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

1. आदमी की पूँछ झड़ गई क्योंकि वह—
   - (क) कम उपयोगी थी
   - (ख) अनुपयोगी थी
   - (ग) असुविधाजनक थी
   - (घ) पशुता की निशानी थी
2. शस्त्रों की बढ़त को रोकना क्यों आवश्यक है?
   - (क) देश-हित के लिए
   - (ख) महत्त्वाकांक्षा के लिए
   - (ग) मानव-कल्याण के लिए
   - (घ) आत्मकल्याण के लिए
3. अभ्यास और तप से प्राप्त वस्तुएँ मनुष्य की महिमा को सूचित करती है, क्योंकि—
   - (क) ये मनुष्य को अधिकाधिक सफल बनाती है।
   - (ख) उनसे अधिक-से-अधिक उत्पादन बढ़ाया जा सकता है।
   - (ग) उनसे मनुष्य बहुत शक्तिशाली बनता है।
   - (घ) उनसे मनुष्य का संघर्ष व्यक्त होता है।

18.2.6 संदेश

अब तक तो आप समझ ही गए होंगे कि प्रस्तुत पाठ में लेखक क्या कहना चाहता है। एक प्रश्न का उत्तर ढूँढ़ने के क्रम में लेखक मनुष्य की अब तक की विकास यात्रा को हमारे सामने स्पष्ट कर देता है। इस यात्रा में अनेक उतार-चढ़ाव हैं, संघर्ष की प्रक्रिया है। एक तरफ मनुष्य में पशुता तथा बर्बरता के लक्षण मिलते हैं, तो दूसरी तरफ इनसे मुक्ति के प्रयास भी मिलते हैं। द्विवेदी जी ऐसे मनुष्य का पक्ष लेते हैं जो मानवीय मूल्यों से युक्त, सामाजिक हो, वही मनुष्य जीवन को चरितार्थ करने वाला मनुष्य होगा। ऐसे मनुष्य की उपस्थिति हमारे इतिहास और हमारी संस्कृति तथा परंपरा में बहुत पुराने समय से रही है। महात्मा बुद्ध से लेकर गांधी तक के उदाहरण हमारे सामने हैं। द्विवेदी जी चाहते हैं कि हम ऐसे महात्माओं से प्रेरणा ले सार्थक मनुष्य हो सकते हैं।

18.2.7 भाषा-शैली

द्विवेदी जी की भाषा में तत्सम शब्दों की प्रधानता भी मिलती है। जैसे— वृहत्तर, आत्मतोषण, सहजात वृत्ति, वर्तुलाकार, नखदंतावलबी, अधोगामनी आदि। दूसरी ओर आम बोलचाल के शब्दों के प्रयोग से उन्होंने विषय को सरल, सहज एवं स्पष्ट बना दिया है। जैसे—झगड़े-टंटे, पछाड़ना, अभागे, बेहया। उसी तरह उनकी भाषा में मुहावरों और लोकोक्तियों के भी सुंदर प्रयोग हुए हैं। जैसे—लोहा लेना, कमर कसना, कीचड़ में घसीटना इत्यादि। लेखक निबंध में अनेक स्थानों पर छोटे-छोटे प्रश्न पूछकर हमारी जिज्ञासा और उत्सुकता को निरंतर बनाए रखता है। जैसे— मेरा मन पूछता है किस ओर? और उनके उत्तर विषय को आगे ही नहीं बढ़ाते बल्कि समस्या का समाधान भी

टिप्पणी

करते हैं। लेखक शब्दों के प्रयोग में अत्यंत सिद्धहस्त है। उसके कहने का ढंग अनोखा एवं निराला है।

आपने देखा निबंध में द्विवेदी जी ने एक बार भी 'महात्मा गांधी' शब्द का प्रयोग नहीं किया, फिर भी उनकी विचारधारा का गहरा प्रभाव पाठ में दिखाई देता है। कैसे? लेखक ने एक स्थान पर लिखा है– 'एक बूढ़ा था'। बस यही एक शब्द गांधी की उपस्थिति और उसके प्रति आत्मीय श्रद्धा को व्यक्त करने के लिए पर्याप्त है। द्विवेदी जी जैसे भाषा-शिल्पी ही इस प्रकार का प्रयोग कर सकते हैं। लेखक छोटे-छोटे वाक्य लिखकर अपने विचारों को व्यक्त करता है, जैसे–'अल्पज्ञ पिता बड़ा दयनीय जीव होता है', तो दूसरी ओर विषय की विवेचना करते हुए लंबे-लंबे वाक्य भी मिलते हैं। जैसे–'मनुष्य की पशुता को जितनी बार भी काट दो, वह मरना नहीं जानती।' कहीं पारिभाषिक शब्दों के संदर्भ में लेखक सूत्रात्मक शैली का प्रयोग करता है। जैसे–'सहजात वृत्तियाँ अनजान की स्मृतियों को ही कहते हैं।' लेखक की दृष्टि अत्यंत पैनी तथा गहरी है। भारतीय संस्कृति का बड़ी गहराई से उन्होंने अध्ययन किया है। जैसे– 'भारतीय चित्त आज भी 'अनधीनता' के रूप में न सोचकर 'स्वाधीनता' के रूप में सोचता है, वह हमारे दीर्घकालीन संस्कारों का फल है।' शब्दों का सटीक चयन और उनके सांकेतिक अर्थ को स्पष्ट करना द्विवेजी जी की विशेषता है। जैसे-गांधी जी की हत्या के संदर्भ में कहना कि– 'बूढ़े की बात अच्छी लगी या नहीं, पता नहीं। उसे गोली मार दी गई।'

आपने कितने ही निबन्ध पढ़े होंगे। उनमें आपको विषय का क्रमबद्ध विवरण मिलता है। सामान्यतः निबंध वर्णनात्मक, विश्लेषणात्मक और समस्या-प्रधान होते हैं। किन्तु निबंधों का एक प्रकार **ललित निबंध** भी है। इन निबंधों में कहानी जैसा आनंद आता है। इन निबंधों की शैली बहुत सहज, अनौपचारिक और आत्मीय होती है। ललित निबंध सृजनात्मक साहित्य की कोटि में आते हैं।

क्रियाकलाप-18.4

इस निबंध को पढ़ते हुए आपने गौर किया होगा कि इसकी भाषा और दूसरे पाठों से कुछ अलग तरह की है। किस तरह अलग है आप भाषा-शैली के अंतर्गत जान चुके हैं। इस निबंध की भाषा की एक मुख्य विशेषता यह है कि थोड़े शब्दों में अधिक बात कही गई है। यानी इसमें ऐसे शब्द हैं, जो पूरे–पूरे वाक्यांशों (अनेक शब्दों) के बदले प्रयुक्त हुए हैं। कुछ उदाहरण इस प्रकार हैं :

अल्पज्ञ – बहुत कम जानने वाला

दयनीय – दया करने के योग्य

निर्लज्ज – जिसे लज्जा न आती हो

नखदंतावलंबी – नाखून और दाँतों पर आश्रित

नीचे कुछ ऐसे वाक्यांश या अनेक शब्द दिए जा रहे हैं, जिनके लिए इस पाठ में एक–एक शब्द का प्रयोग हुआ है, पाठ से ऐसे कुछ शब्द छाँटकर नीचे कोष्ठक में दिए गए है। उपयुक्त शब्दों का चुनाव कर वाक्यांशों के शब्द छाँटकर आगे लिखिए :

(i) जिसे सही–गलत, उचित–अनुचित की पहचान न हो ....

(ii) वे हथियार जो किसी को मारने के काम आएँ ....

(iii) बिना किसी कोशिश के ....

(iv) जिन्होंने अभी सीखना शुरू किया हो ....

(v) किसी के भी अधीन न होना ....

(vi) जन्म के साथ ही उत्पन्न होने वाला/वाली ....

(उद्‌भावित, अविवेकी, नौसिखुए, आत्म–तोषण, स्वाधीनता, सहजात, उच्छृंखलता, अवशेष, अनायास, अनधीनता, मारणास्त्र)

आपने क्या सीखा

- लेखक की यह सजीव कल्पना कि नाखूनों का बढ़ना मनुष्य की आदिम पशुवत जीवन की निशानी है और उन्हें काटना मानवीय, सभ्य एवं संस्कारित होना है।
- अधिकाधिक और विकसित अस्त्र-शस्त्रों का निर्माण मनुष्य का ऐसा आचरण है जिसके मूल में पाशविक वृत्ति है।
- पशुता को हराने के लिए 'स्व' का बंधन आवश्यक है। इसीलिए भारतीय परंपरा में 'इंडिपेंडेंस' का पर्याय 'अनधीनता' न होकर स्वाधीनता, स्वतंत्रता या स्वराज्य है।
- संयम एवं दूसरों के दुख–सुख के प्रति संवेदनशील होना ही मनुष्य को पशु से श्रेष्ठ बनाता है।
- महात्मा गांधी ने बाहरी सुख एवं सफलता को छोड़कर भीतरी सुख यानी प्रेम और शांति पर बल दिया था।
- 'विश्व शांति और मानव मात्र का कल्याण हमारा लक्ष्य होना चाहिए।
- सफलता का अर्थ व्यक्तिगत उपलब्धि है जबकि चरितार्थता का तात्पर्य ऐसी सार्थकता जो दूसरों की हित–चिंता के लिए प्रेरित करती है।
- निबंध की भाषा में तत्सम शब्दों की प्रधानता होते हुए भी एक सहजता है और वह पाठक से सीधा संवाद स्थापित करती है।

टिप्पणी

योग्यता विस्तार

हजारीप्रसाद द्विवेदी का जन्म 1907 में ज़िला बलिया (उ. प्र.) में हुआ था। संस्कृत महाविद्यालय, काशी से शास्त्री परीक्षा उत्तीर्ण करने के बाद उन्होंने सन् 1930 में काशी हिंदू विश्वविद्यालय से ज्योतिषाचार्य की उपाधि प्राप्त की।

सन् 1940-50 तक द्विवेदी जी हिन्दी भवन, शांतिनिकेतन के निदेशक रहे। वहाँ उन्हें गुरुदेव रवींद्रनाथ टैगोर और आचार्य क्षितिमोहन सेन का सान्निध्य प्राप्त हुआ। 1950 में वे काशी आए और काशी हिंदू विश्वविद्यालय में हिंदी विभाग के अध्यक्ष रहे। 1960 में उन्होंने पंजाब विश्वविद्यालय, चंडीगढ़ में हिन्दी विभागाध्यक्ष का पद ग्रहण किया।

द्विवेदी जी के लेखन की आधारभूत विशेषता है- जिजीविषा। वे अपने लेखन में उपेक्षित परंपराओं, सांस्कृतिक चेतना और जातीय परंपरा की सार्थकता को ख़ासतौर पर रेखांकित करते हैं।

उनकी महत्त्वपूर्ण रचनाएँ हैं– अशोक के फूल, विचार और वितर्क, कल्पलता, कुटज, आलोक पर्व (निबंध संकलन); बाणभट्ट की आत्मकथा, चारुचंद्रलेख, पुनर्नवा, अनामदास का पोथा(उपन्यास), सूर साहित्य, कबीर, हिन्दी साहित्य की भूमिका, कालिदास की लालित्य योजना (आलोचनात्मक ग्रंथ) आदि।

पाठांत प्रश्न

1. लेखक के अनुसार प्राचीन काल में नाखून का बढ़ना अच्छा माना जाता होगा और अब नाखून का काटना अच्छा माना जाता है– आपकी दृष्टि में इस अंतर का कम से कम एक कारण क्या है?
2. अस्त्र-शस्त्रों के बढ़ते हुए प्रयोग ने आम आदमी के जीवन को प्रभावित किया है– इस संबंध में अपने विचार लगभग सौ शब्दों में लिखिए।
3. भारतीय संस्कृति में 'स्व' के बंधन को क्यों आवश्यक माना गया है? एक उदाहरण देते हुए अपने विचारों की पुष्टि कीजिए।
4. (क) गांधी जी किस प्रकार के सुखों को मानव-जाति के लिए श्रेष्ठ मानते थे?

   (ख) क्या आप उनसे समहत हैं, तर्क सहित उत्तर दीजिए।
5. आप ऐसे कौन से दो मानवीय मूल्य को अपनाना चाहेंगे जिससे आपका भविष्य निर्मित हो। वर्णन कीजिए।
6. पाठ में आए निम्नलिखित मुहावरों का वाक्यों में इस प्रकार प्रयोग कीजिए कि उनका अर्थ स्पष्ट हो जाए–

   (i) लोहा लेना (ii) कीचड़ में घसीटना (iii) कमर कसना

7. 'त्व' तथा 'ता' प्रत्यय वाले चार-चार शब्द लिखिए।

8. पाठ से उदाहरण देते हुए हजारीप्रसाद द्विवेदी की भाषा-शैली पर एक संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए।

उत्तरमाला

बोध प्रश्न

1. क, 2. ग, 3. घ,

पाठगत प्रश्न

18.1 1. ग, 2. ग, 3. ग

18.2 1. क, 2. ग, 3. ग, 4. घ

18.3 1. ख, 2. ग, 3. घ

19

शतरंज के खिलाड़ी

आप अच्छी तरह से जानते हैं कि मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। अकेले रहना, समूह में रहना और समाज बनाकर रहना– हमारी दुनिया में ये ही तीन स्थितियाँ हैं। इन स्थितियों में से तीसरी यानी समाज बनाकर रहने की स्थिति सिर्फ़ मनुष्य की है, इसीलिए उसे सभी प्राणियों में श्रेष्ठतम प्राणी होने का गौरव प्राप्त है। मनुष्य को देश और समाज से अनेक रूपों में बहुत कुछ मिलता है, इसलिए उसका भी यह कर्त्तव्य है कि वह तन, मन और धन सभी तरीकों से इस ऋण से मुक्त होने का प्रयास करे। लेकिन बहुत से मनुष्य अपने इस कर्तव्य का पालन करने में रुचि नहीं दिखाते और अपना पेट भरने, अपने शौक पूरे करने और अपनी सुख-सुविधाओं का आनंद लेने में लगे रहते हैं। जब किसी देश की शासन-व्यवस्था से जुड़े लोग ऐसा करते हैं तो यह बीमारी जनता तक भी पहुँच जाती है और देश बरबाद या पराधीन हो जाता है। ऐसे ही विषय पर हमें सोचने को मजबूर करती है यह कहानी– 'शतरंज के खिलाड़ी'।

उद्देश्य

इस कहानी को पढ़ने के बाद आप–

- शासक वर्ग की विलासिता से होने वाले परिणामों का विवेचन कर सकेंगे;
- देश और समाज के प्रति कर्त्तव्य-पालन की आवश्यकता पर विचार व्यक्त कर सकेंगे;
- पात्रों के चरित्र की विशेषताओं का उल्लेख कर सकेंगे;
- कहानी के परिवेश को स्पष्ट कर सकेंगे;
- हिंदी भाषा के हिंदुस्तानी स्वरूप की विशेषताएँ बता सकेंगे;
- हिंदी के मुहावरों का अपने लेखन में प्रयोग कर सकेंगे;
- कहानी के मूल संदेश का उल्लेख कर सकेंगे।

19.1 मूल पाठ

आइए, एक बार इस कहानी को ध्यानपूर्वक पढ़ लेते हैं।

शतरंज के खिलाड़ी

वाजिदअली शाह का समय था। लखनऊ विलासिता के रंग में डूबा हुआ था। छोटे-बड़े, गरीब-अमीर सभी विलासिता में डूबे हुए थे। कोई नृत्य और गान की मजलिस सजाता था, तो कोई अफ़ीम की पिनक ही में मज़े लेता था। जीवन के प्रत्येक विभाग में आमोद-प्रमोद का प्राधान्य था। शासन-विभाग में, साहित्य-क्षेत्र में, सामाजिक अवस्था में, कला-कौशल में, उद्योग-धंधों में, आहार-व्यवहार में सर्वत्र विलासिता व्याप्त हो रही थी। राजकर्मचारी विषय-वासना में, कविगण प्रेम और विरह के वर्णन में, कारीगर कलाबत्तू और चिकन बनाने में, व्यवसायी सुरमे, इत्र, मिस्सी और उबटन का रोज़गार करने में लिप्त थे। सभी की आँखों में विलासिता का मद छाया हुआ था। संसार में क्या हो रहा है, इसकी किसी को ख़बर न थी। बटेर लड़ रहे हैं। तीतरों की लड़ाई के लिए पाली बदी जा रही है। कहीं चौसर बिछी हुई है; पौ-बारह का शोर मचा हुआ है। कही शतरंज का घोर संग्राम छिड़ा हुआ है। राजा से लेकर रंक तक इसी धुन में मस्त थे। यहाँ तक कि फ़कीरों को पैसे मिलते, तो वे रोटियाँ न लेकर अफ़ीम खाते या मदक पीते। शतरंज, ताश, गंजीफ़ा खेलने से बुद्धि तीव्र होती है, विचार-शक्ति का विकास होता है, पेचीदा मसलों को सुलझाने की आदत पड़ती है– ये दलीलें/ज़ोरों के साथ पेश की जाती थीं (इस सम्प्रदाय के लोगों से दुनिया अब भी खाली नहीं है)। इसलिए, अगर मिरज़ा सज्जाद अली और मीर रौशनअली अपना अधिकांश समय बुद्धि तीव्र करने में व्यतीत करते थे, तो किसी विचारशील पुरुष को क्या आपत्ति हो सकती थी? दोनों के पास मौरूसी जागीरें थीं; जीविका की कोई चिंता न थी; घर में बैठे चख़ौतियाँ करते थे। आख़िर और करते ही क्या? प्रात:काल दोनों मित्र नाश्ता करके बिसात बिछा कर बैठ जाते, मुहरे सज जाते और लड़ाई के दाव-पेंच होने लगते। फिर ख़बर न होती थी कि कब दोपहर हुई, कब तीसरा पहर, कब शाम! घर के भीतर से बार-बार बुलावा आता कि खाना तैयार है। यहाँ से जवाब मिलता–चलो, आते हैं, दस्तरख़्वान बिछाओ। यहाँ तक कि बावरची विवश होकर कमरे ही में खाना रख जाता था, और दोनों मित्र दोनों काम साथ-साथ करते थे। मिरज़ा सज्जाद अली के घर में कोई बड़ा-बूढ़ा न था, इसलिए उन्हीं के दीवानखाने में बाज़ियां होती थीं। मगर यह बात न थी कि मिरज़ा के घर के और लोग उनके इस व्यवहार से खुश हों। घरवालों का तो कहना ही क्या, मुहल्लेवाले, घर के नौकर-चाकर तक नित्य द्वेषपूर्ण टिप्पणियाँ किया करते थे–बड़ा मनहूस खेल है। घर को तबाह कर देता है। खुदा न करे, किसी को इसकी चाट पड़े, आदमी दीन-दुनिया किसी के काम का नहीं रहता– न घर का, न घाट का। बुरा रोग है। यहाँ तक कि मिरज़ा की बेगम को इससे इतना द्वेष था कि अवसर खोज-खोज कर पति को लताड़ती थीं। पर उनको इसका अवसर मुश्किल से मिलता था। वह सोती रहती थीं, तब तक बाजी बिछ जाती थी और रात को जब सो

शब्दार्थ

विलासिता-शानो-शौकत

आमोद-प्रमोद-मौज-मस्ती

पिनक-नशा

मजलिस-सभा, महफ़िल

कलाबत्तू-रेशम के साथ बटा हुआ सोने-चाँदी का तार

चिकन-लखनऊ का प्रसिद्ध कढ़ाई वाला कपड़ा

मिस्सी-मसूढ़ों को रँगने के लिए काम आने वाला पदार्थ

उबटन-हल्दी, सरसों आदि से बना हुआ अंग-लेप

चौसर-चौपड़, चौकोर खानों वाला, किंतु पासों द्वारा खेला जाने वाला खेल

गंजीफ़ा-एक प्रकार का खेल, जो आठ रंग की 96 पत्तियों से खेला जाता है।

पेचीदा-जटिल

मौरूसी-पैतृक

चख़ौतियाँ-मनोरंजन, हँसी-मज़ाक

बिसात-वह जिस पर शतरंज खेलते हैं

दस्तरख़्वान-खाने के लिए बिछाया जाने वाला कपड़ा

टिप्पणी

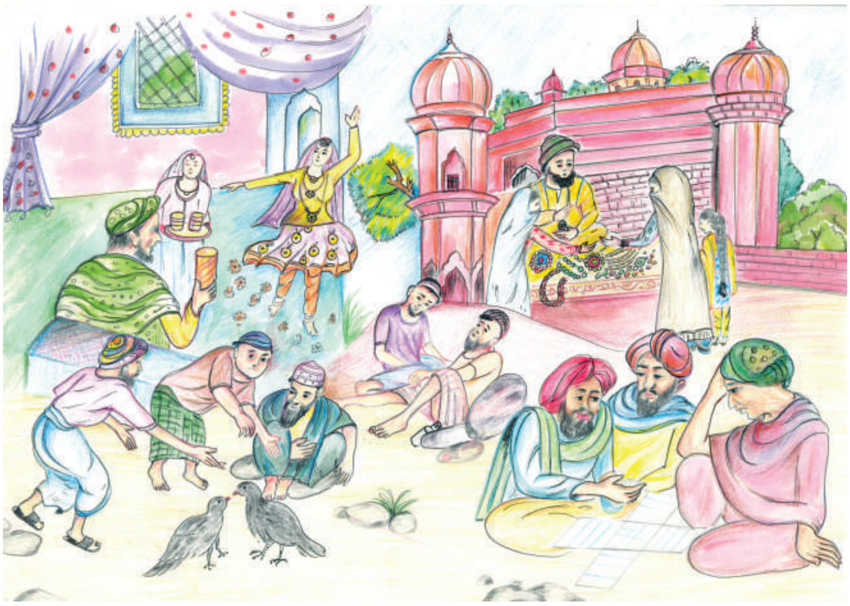

चित्र 19.1

जाती थीं, तब कही मिरज़ा जी घर में आते थे। हाँ, नौकरों पर वह अपना गुस्सा उतारती रहती थीं–क्या पान माँगे हैं? कह दो, आ कर ले जाएँ। खाने की फ़ुरसत नहीं है? ले जा कर खाना सिर पर पटक दो, खाएँ चाहे कुत्ते को खिलाएँ। पर, रूबरू वे भी कुछ न कह सकती थीं। उनको अपने पति से उतना मलाल न था, जितना मीर साहब से। उन्होंने उनका, नाम मीर बिगाड़ू रख छोड़ा था। शायद मिरज़ा जी अपनी सफ़ाई देने के लिए सारा इलज़ाम मीर साहब ही के सर थोप देते थे।

एक दिन बेगम साहबा के सिर में दर्द होने लगा। उन्होंने लौंडी से कहा– जाकर मिरज़ा साहब को बुला ला। किसी हकीम के यहाँ से दवा लाएँ। दौड़, जल्दी कर। लौंडी गई, तो मिरजा जी ने कहा–चल, अभी आते हैं। बेगम साहब का मिज़ाज गरम था। इतनी ताब कहाँ कि उनके सिर में दर्द हो और पति शतरंज खेलता रहे। चेहरा सुर्ख़ हो गया। लौंडी से कहा–जाकर कह, अभी चलिए, नहीं तो वो आप ही हकीम के यहाँ चली जाएँगी। मिरज़ा जी बड़ी दिलचस्प बाजी खेल रहे थे, दो ही किस्तों में मीर साहब की मात हुई जाती थी। झुँझलाकर बोले–क्या ऐसा दम लबों पर है? ज़रा सब्र नहीं होता?

मीर–अरे, तो जाकर सुन ही आइए न। औरतें नाजुक-मिज़ाज होती ही हैं।

मिरज़ा–जी हाँ, चला क्यों न जाऊँ! दो किस्तों में आपकी मात होती है।

मीर–जनाब, इस भरोसे न रहिएगा। वह चाल सोची है कि आपके मुहरे धरे रहें और मात हो जाय। पर जाइए, सुन आइए। क्यों खामख़्वाह उनका दिल दुखाइएगा?

मिरज़ा–इसी बात पर मात ही करके जाऊँगा।

मीर–मैं खेलूँगा ही नहीं। आप जा कर सुन आइए।

रूबरू-आमने-सामने

ताब-धैर्य

इलज़ाम-आरोप

मलाल-दुख, अफ़सोस

महीन बुनना-कसीदाकारी

लौंडी-दासी

सुर्ख़-लाल

किस्त-चाल, शतरंज के खेल में राजा को घेरने के लिए किसी मोहरे द्वारा दी गई चुनौती

लब-होंठ

सब्र-धैर्य

नाजुक-मिज़ाज-कोमल स्वभाव वाली

ख़ामख़्वाह-व्यर्थ में, बेकार में

मिरज़ा–अरे यार, जाना पड़ेगा हकीम के यहाँ। सिर-दर्द ख़ाक नहीं है, मुझे परेशान करने का बहाना है।

मीर–कुछ भी हो, उनकी ख़ातिर तो करनी ही पड़ेगी।

मिरज़ा–अच्छा, एक चाल और चल लूँ।

मीर–हरगिज़ नहीं, जब तक आप सुन न आएँगे, मैं मुहरे में हाथ ही न लगाऊँगा। मिरज़ा साहब मजबूर होकर अंदर गए तो बेगम साहबा ने त्योरियाँ बदलकर, लेकिन कराहते हुए कहा–तुम्हें निगोड़ी शतरंज इतनी प्यारी है। चाहे कोई मर ही जाय, पर उठने का नाम नहीं लेते। नौज, कोई तुम जैसा आदमी हो।

मिरज़ा–क्या कहूँ, मीर साहब मानते ही न थे। बड़ी मुश्किल से पीछा छुड़ाकर आया हूँ।

बेगम–क्या जैसे वह खुद निखट्टू हैं, वैसे ही सबको समझते हैं। उनके भी तो बाल-बच्चे हैं; या सबका सफ़ाया कर डाला?

मिरजा–बड़ा लती आदमी है। जब आ जाता है, तब मजबूर होकर मुझे भी खेलना पड़ता है।

बेगम–दुत्कार क्यों नहीं देते?

मिरज़ा–बराबर के आदमी हैं; उम्र में, दर्जे में मुझसे दो अंगुल ऊँचे। मुलाहिज़ा करना ही पड़ता है।

चित्र 19.2

बेगम– तो मैं ही दुत्कारे देती हूँ। नाराज़ हो जाएँ, हो जाएँ। कौन किसी की रोटियाँ खिला देता है। रानी रूठेंगी, अपना सुहाग लेंगी। हरिया जा, बाहर से शतरंज उठा ला। मीर साहब से कहना, मियाँ अब न खेलेंगे; आप तशरीफ़ ले जाइए।

मिरज़ा–हाँ-हाँ, कहीं ऐसा गज़ब भी न करना। ज़लील करना चाहती हो क्या? ठहर हरिया, कहाँ जाती है।

बेगम–जाने क्यों नहीं देते? मेरा ही खून पिए, जो उसे रोके। अच्छा, उसे रोका, मुझे रोको, तो जानूँ?

यह कहकर बेगम साहबा झल्लाई हुई दीवानख़ाने की तरफ़ चलीं। मिरज़ा बेचारे का रंग उड़ गया। बीबी की मिन्नतें करने लगे–खुदा के लिए, तुम्हें हज़रत हुसैन की कसम है।

टिप्पणी

निगोड़ी–स्त्रियों के लिए प्रयुक्त एक गाली (यहाँ प्यार-भरा संबोधन)

नौज–ईश्वर न करे

मुलाहिजा–लिहाज़

ज़लील–अपमानित

हज़रत हुसैन–पैगबंर मोहम्मद साहब के नवासे (धेवते) (शिया समुदाय में सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण व्यक्तित्व)

मेरी ही मैयत देखे, जो उधर जाय। लेकिन बेगम ने एक न मानी। दीवानख़ाने के द्वार तक गईं, पर एकाएक पर-पुरुष के सामने जाते हुए पाँव बँध-से गए। भीतर झाँका, संयोग से कमरा खाली था। मीर साहब ने दो-एक मुहरे इधर-उधर कर दिये थे, और अपनी सफ़ाई जताने के लिए बाहर टहल रहे थे। फिर क्या था, बेगम ने अंदर पहुँच कर बाज़ी उलट दी, मुहरे कुछ तख़्त के नीचे फेंक दिए, कुछ बाहर और किवाड़ अंदर से बंद करके कुंडी लगा दी। मीर साहब दरवाज़े पर तो थे ही, मुहरे बाहर फेंके जाते देखे, चूड़ियों की झनक भी कान में पड़ीं। फिर दरवाज़ा बंद हुआ, तो समझ गये, बेगम साहिबा बिगड़ गईं। चुपके से घर की राह ली।

मैयत-लाश, अरथी, शवयात्रा

लौ-लपट, किंतु यहाँ अर्थ है– ईश्वर से संबंध

ताम्मुल-हिचकिचाहट

गुस्सेवर-क्रोधवाली

मुनासिब-ठीक, उचित

सरोकार-संबंध

फ़रियाद - प्रार्थना

भाँड़-राजाओं-अमीरों की प्रशंसा गाने वाले

मिरज़ा ने कहा—तुमने गज़ब किया!

बेगम—अब मीर साहब इधर आए, तो खड़े-खड़े निकलवा दूँगी। इतनी लौ खुदा से लगाते, तो वली हो जाते। आप तो शतरंज खेलें, और मैं यहाँ चूल्हे-चक्की की फ़िक्र में सिर खपाऊँ! जाते हो हकीम साहब के यहाँ कि अब भी ताम्मुल है।

चित्र 19.3

मिरज़ा घर से निकले, तो हकीम के घर जाने के बदले मीर साहब के घर पहुँचे और सारा वृत्तांत कहा। मीर साहब बोले—मैंने तो जब मुहरे बाहर आते देखे, तभी ताड़ गया। फ़ौरन भागा। बड़ी गुस्सेवर मालूम होती हैं। मगर, आपने उन्हें यो सिर चढ़ा रखा है, यह मुनासिब नहीं। उन्हें इससे क्या मतलब कि आप बाहर क्या करते हैं। घर का इंतज़ाम करना उनका काम है; दूसरी बातों से उन्हें क्या सरोकार?

मिरज़ा—ख़ैर, यह तो बताइए अब कहाँ जमाव होगा?

मीर—इसका क्या ग़म है। इतना बड़ा घर पड़ा हुआ है। बस यहीं जमे।

मिरज़ा—लेकिन बेगम साहिबा को कैसे मनाऊँगा? घर पर बैठा रहता था तब तो इतना बिगड़ती थीं; यहाँ बैठक होगी, तो शायद ज़िंदा न छोड़ेंगी।

मीर—अजी बकने भी दीजिए, दो-चार रोज़ में आप ही ठीक हो जाएँगी। हाँ, आप इतना कीजिए कि आज से ज़रा तन जाइए।

राज्य में हाहाकार मचा हुआ था। प्रजा दिन-दहाड़े लूटी जाती थी। कोई फ़रियाद सुनने वाला न था। देहातों की सारी दौलत लखनऊ में खिंची आती थी और वह वेश्याओं में, भाँडों में और विलासिता के अन्य अंगों की पूर्ति में उड़ जाती थी। अंग्रेज़ कम्पनी का ऋण दिन-दिन बढ़ता जाता था। कमली दिन-दिन भीगकर भारी होती जाती थी। देश में

सुव्यवस्था न होने के कारण वार्षिक कर भी वसूल न होता था। रेजीडेंट बार-बार चेतावनी देता था, पर यहाँ तो लोग विलासिता के नशे में चूर थे, किसी के कानों पर जूँ न रेंगती थी।

ख़ैर, मीर साहब के दीवानखाने में शतरंज होते कई महीने गुज़र गए। नए-नए नक्शे हल किए जाते; नए-नए किले बनाए जाते; नित्य नई व्यूह-रचना होती; कभी-कभी खेलते-खेलते झौड़ हो जाती; तू-तू-मैं-मैं की नौबत आ जाती; पर शीघ्र की दोनों मित्रो में मेल हो जाता। कभी-कभी ऐसा भी होता कि बाज़ी उठा दी जाती; मिरज़ा जी रूठकर अपने घर चले जाते। मीर साहब अपने घर में जा बैठते। पर, रात भर की निद्रा के साथ सारा मनोमालिन्य शांत हो जाता था। प्रातःकाल दोनों मित्र दीवानखाने में आ पहुँचते थे।

एक दिन दोनों मित्र बैठे हुए शतरंज की दल-दल में गोते खा रहे थे कि इतने में घोड़े पर सवार एक बादशाही फ़ौज का अफ़सर मीर साहब का नाम पूछता हुआ आ पहुँचा। मीर साहब के होश उड़ गए। यह क्या बला सिर पर आई। यह तलबी किसलिए हुई है? अब ख़ैरियत नहीं नजर आती। घर के दरवाज़े बंद कर लिए। नौकरों से बोले-कह दो, घर में नहीं हैं।

सवार- घर में नहीं, तो कहाँ हैं?

नौकर-यह मैं नहीं जानता। क्या काम है?

सवार-काम तुझे क्या बताऊँगा? हुज़ूर में तलबी है। शायद फौज़ के लिए कुछ सिपाही माँगे गए हैं। जागीरदार हैं कि दिल्लगी! मोरचे पर जाना पड़ेगा तो आटे-दाल का भाव मालूम हो जाएगा।

नौकर-अच्छा, तो जाइए, कह दिया जाएगा?

सवार-कहने की बात नहीं है। मैं कल खुद आऊँगा, साथ ले जाने का हुक्म हुआ है।

सवार चला गया। मीर साहब की आत्मा काँप उठी। मिरजा जी से बोले-कहिए जनाब, अब क्या होगा?

मिरज़ा-बड़ी मुसीबत है। कहीं मेरी तलबी भी न हो।

मीर-कम्बख़्त कल फिर आने को कह गया है।

मिरजा-आफ़त है, और क्या? कहीं मोरचे पर जाना पड़ा, तो बेमौत मरे।

मीर-बस, यही एक तदबीर है कि घर

चित्र 19.4

टिप्पणी

कमली-कंबल

रेज़ीडेंट-ब्रिटिश सरकार का अफ़सर

व्यूह-रचना - अपने बचाव और दुश्मन को फँसाने की युक्ति

झौड़-झड़प

मनोमालिन्य-मन मैला होना

बला-आफ़त, विपत्ति

तलबी-आदेशपूर्वक बुलाना

खैरियत-कुशलता

दिल्लगी-हँसी-मज़ाक

मोरचा-युद्ध

तदबीर-उपाय

वल्लाह-क्या ख़ूब!

मुँह अँधेरे-प्रात:काल होने से पूर्व, तड़के

गिलौरियाँ-पान के बीड़े

वीरान-सुनसान

चिलम-तंबाकू पीने का मिट्टी का पात्र

संग्राम-क्षेत्र-लड़ाई का मैदान

मुलाज़िम-कर्मचारी

आफ़त-विपत्ति

ख़ौफ़-भय, डर

चकमा देना-चतुराईपूर्वक ध्यान हटाना

पर मिलो ही नहीं। कल गोमती पर कहीं वीराने में नक्शा जमे। वहाँ किसे खबर होगी। हज़रत आ कर आप लौट जाएँगे।

मिरज़ा–वल्लाह, आपको ख़ूब सूझी! इसके सिवाय और कोई तदबीर ही नहीं है।

दूसरे दिन से दोनों मित्र मुँह अँधेरे घर से निकल खड़े होते। बगल में एक छोटी-सी दरी दबाए डिब्बे में गिलौरियाँ भरे गोमती पार की एक पुरानी वीरान मसजिद में चले जाते, जिसे शायद नवाब आसिफ़उद्दौला ने बनवाया था। रास्ते में तम्बाकू, चिलम और मदरिया ले लेते, और मसजिद में पहुँच, दरी बिछा, हुक्का भरकर शतरंज खेलते बैठ जाते थे। फिर उन्हें दीन-दुनिया की फिक्र न रहती थी। किश्त, शह आदि दो-एक शब्दों के सिवा उनके मुँह से और कोई वाक्य नहीं निकलता था। कोई योगी भी समाधि में इतना एकाग्र न होता होगा! दोपहर को जब भूख मालूम होती तो दोनों मित्र किसी नानबाई की दूकान पर जाकर खाना खाते, और एक चिलम हुक्का पीकर फिर संग्राम-क्षेत्र में डट जाते। कभी-कभी तो उन्हें भोजन का भी ख़्याल न रहता था।

इधर देश की राजनीतिक दशा भयंकर होती जा रही थी। कम्पनी की फ़ौजें लखनऊ की तरफ बढ़ी चली आती थीं। शहर में हलचल मची हुई थी। लोग बाल-बच्चों को लेकर देहातों में भाग रहे थे। पर, हमारे दोनों खिलाड़ियों को इसकी ज़रा भी फिक्र न थी। वे घर से आते, तो गलियों में होकर। डर था कि कहीं किसी बादशाही मुलाजिम की निगाह न पड़ जाय, जो बेकार में पकड़े जाएँ। हज़ारों रुपये सालाना की जागीर मुफ़्त ही हजम करना चाहते थे।

एक दिन दोनों मित्र मसजिद के खडंहर में बैठे हुए शतरंज खेल रहे थे। मीर की बाजी कुछ कमज़ोर थी। मिरज़ा साहब उन्हें किश्त-पर-किश्त दे रहे थे। इतने में कम्पनी के सैनिक आते हुए दिखाई दिए। वह गोरों की फ़ौज थी, जो लखनऊ पर अधिकार जमाने के लिए आ रही थी।

मीर साहब बोले–अंग्रेजी फ़ौज आ रही है; खुदा ख़ैर करे।

मिरज़ा–आने दीजिए, किश्त बचाइए। यह किश्त।

मीर–ज़रा देखना चाहिए, यहीं आड़ में खड़े हो जाएँ!

मिरज़ा–देख लीजिएगा, जल्दी क्या है, फिर किश्त!

मीर–तोपख़ाना भी है। कोई पाँच हज़ार आदमी होंगे, कैसे-कैसे जवान हैं। लाल बन्दरों के -से मुँह। सूरत देख कर ख़ौफ़ मालूम होता है।

मिरज़ा–जनाब, हीले न कीजिए। ये चकमे किसी और को दीजिएगा। यह किश्त...

मीर–आप भी अजीब आदमी हैं। यहाँ तो शहर पर आफत आई हुई है और आपको किश्त की सूझी है। कुछ इसकी भी खबर है कि शहर घिर गया तो घर कैसे चलेंगे?

मिरज़ा–जब घर चलने का वक्त आयेगा, तो देखा जाएगा–यह किश्त! बस अब की शह में मात है।

फ़ौज निकल गई। दस बजे का समय था। फिर बाज़ी बिछ गई।

मिरज़ा–आज खाने की कैसे ठहरेगी?

मीर–अजी, आज तो रोज़ा है। क्या आपको ज़्यादा भूख मालूम होती है?

मिरज़ा–जी नहीं। शहर में न जाने क्या हो रहा है!

मीर–शहर में कुछ न हो रहा होगा। लोग खाना खा-खाकर आराम से सो रहे होंगे। हुज़ूर नवाब साहब भी ऐशगाह में होंगे।

दोनों सज्जन फिर जो खेलने बैठे, तो तीन बज गए। अब की मिरज़ा जी की बाज़ी कमजोर थी। चार का गजर बज ही रहा था कि फ़ौज की वापसी की आहट मिली। नवाब वाजिदअली पकड़ लिए गए थे और सेना उन्हें किसी अज्ञात स्थान को लिए जा रही थी। शहर में न कोई हलचल थी, न मार-काट। एक बूँद भी ख़ून नहीं गिरा था। आज तक किसी स्वाधीन देश के राजा की पराजय इतनी शांति से, इस तरह ख़ून बहे बिना न हुई होगी। यह वह अहिंसा न थी, जिस पर देवगण प्रसन्न होते हैं। यह वह कायरपन था, जिस पर बड़े-बड़े कायर भी आँसू बहाते हैं। अवध के विशाल देश का नवाब बन्दी चला जाता था और लखनऊ ऐश की नींद में मस्त था। यह राजनीतिक अध:पतन की चरम सीमा थी।

मिरज़ा ने कहा–हुज़ूर नवाब साहब को ज़ालिमों ने कैद कर लिया है।

मीर–होगा, यह लीजिए शह।

मिरज़ा–जनाब ज़रा ठहरिए। इस वक्त इधर तबीयत नहीं लगती। बेचारे नवाब साहब इस वक्त ख़ून के आँसू रो रहे होंगे।

मीर–रोया ही चाहें। यह ऐश वहाँ कहाँ नसीब होगा। यह किश्त।

मिरजा–किसी के दिन बराबर नहीं जाते। कितनी दर्दनाक हालत है।

मीर–हाँ, सो तो है ही–यह लो, फिर किश्त । बस, अब की किश्त में मात है, बच नहीं सकते।

मिरज़ा–खुदा की कसम, आप बड़े बेदर्द हैं। इतना बड़ा हादसा देख कर भी आपको दुख नहीं होता। हाय, गरीब वाजिदअली शाह!

मीर–पहले अपने बादशाह को तो बचाइए फिर नवाब साहब का मातम कीजिएगा। यह किश्त और यह मात! लाना हाथ!

बादशाह को लिए हुए सेना सामने से निकल गई। उनके जाते ही मिरज़ा ने फिर बाज़ी

टिप्पणी

रोज़ा–उपवास (मुसलमानों द्वारा रमज़ान के महीने में इबादत के लिए सूर्योदय से सूर्यास्त तक अन्न-जल का त्याग)

वली - सिद्ध पुरुष

ऐशगाह–मौज़-मस्ती का स्थान

गजर–घड़ी का घंटा

हीले–बहाने

अध:पतन–गिरावट

जालिम–अत्याचारी

हादसा–दुर्घटना

मातम–शोक

मरसिया-शोकगीत

अबाबील-एक पक्षी

सूरमा- वीर

बेढब- बिना ढंग का

प्रतिकार- बदला

उग्र होना- बढ़ना, तेज होना

दाद- तारीफ, वाहवाही, प्रशंसा

सनद- प्रमाण

कयामत-दुनिया के समाप्त होने का समय, प्रलय

बिछा दी। हार की चोट बुरी होती है। मीर ने कहा–आइए, नवाब साहब के मातम में एक मरसिया कह डालें। लेकिन, मिरज़ा की राजभक्ति अपनी हार के साथ लुप्त हो चुकी थी। वे हार का बदला चुकाने के लिए अधीर हो रहे थे।

शाम हो गई। खंडहर में चमगादड़ों ने चीखना शुरू किया। अबाबीलें आ-आ कर अपने-अपने घोंसलों में चिमटीं। पर दोनों खिलाड़ी डटे हुए थे, मानो दो खून के प्यासे सूरमा आपस में लड़ रहे हों। मिरज़ा दो-तीन बाज़ियाँ लगातार हार चुके थे; इस चौथी बाज़ी का रंग भी अच्छा न था। वो बार-बार जीतने का दृढ़ निश्चय कर सँभलकर खेलते थे, लेकिन एक न एक चाल ऐसी बेढब आ पड़ती थी, जिससे बाज़ी खराब हो जाती थी। हर बार हार के साथ प्रतिकार की भावना और भी उग्र होती थी। उधर मीर साहब मारे उमंग के गज़लें गाते थे, चुटकियाँ लेते थे, मानो कोई गुप्त धन पा गए हों। मिरज़ा जी सुन-सुन कर झुँझलाते और हार की झेंप को मिटाने के लिए उनकी दाद देते थे। पर ज्यों-ज्यों बाज़ी कमज़ोर पड़ती थी, धैर्य हाथ से निकल जाता था। यहां तक कि वो बात-बात पर झुँझलाने लगे–जनाब, आप चाल बदला न कीजिए। यह क्या कि एक चाल चले, और फिर उसे बदल दिया। जो कुछ चलना हो, एक बार चल दीजिए यह आप मुहरे पर हाथ क्यों रखते हैं? मुहरे को छोड़ दीजिए। जब तक आपको चाल न सूझे, मुहरा छुइए ही नहीं। आप एक-एक चाल आधे घंटे में चलते हैं। इसकी सनद नहीं। जिसे एक चाल चलने में पाँच मिनट से ज़्यादा लगे, उसकी मात समझी जाय। फिर आपने चाल बदली। चुपके से मुहरा वहीं रख दीजिए।

मीर साहब का फ़रज़ी पिटता था। बोले–मैंने चाल चली ही कब थी?

मिरज़ा–आप चाल चल चुके हैं। मुहरा वहीं रख दीजिए–उसी घर में!

मीर–उस घर में क्यों रखूँ? मैंने हाथ से मुहरा छोड़ा ही कब था?

मिरज़ा–मुहरा आप कयामत तक न छोड़ें, तो क्या चाल ही न होगी? फरज़ी पिटते देखा तो धाँधली करने लगे।

मीर–धाँधली आप करते हैं। हार-जीत तकदीर से होती है, धाँधली करने से कोई नहीं जीतता?

चित्र 19.5

मिरज़ा–तो इस बाज़ी में तो आपकी मात हो गई।

टिप्पणी

मीर–मुझे क्यों मात होने लगी?

मिरज़ा–तो आप मुहरा उसी घर में रख दीजिए, जहाँ पहले रक्खा था।

मीर–वहाँ क्यों रखूँ? नहीं रखता।

मिरज़ा–क्यों न रखिएगा? आपको रखना होगा।

तकरार बढ़ने लगी। दोनों अपनी-अपनी टेक पर अड़े थे। न यह दबता था न वह। अप्रासंगिक बातें होने लगीं, मिरज़ा बोले–किसी ने खानदान में शतरंज खेली होती, तब तो इसके कायदे जानते। वे हमेशा, घास छीला करते थे, आप शतरंज क्या खेलिएगा। रियासत और ही चीज़ है, जागीर मिल जाने से ही कोई रईस नहीं हो जाता।

मीर–क्या? घास आपके अब्बाजान छीलते होंगे। यहाँ तो पीढ़ियों से शतरंज खेलते चले आ रहे हैं।

मिरज़ा–अजी, जाइए भी, गाज़ीउद्दीन हैदर के यहाँ बावरची का काम करते-करते उम्र गुज़र गई, आज रईस बनने चले हैं! रईस बनना कुछ दिल्लगी नहीं है।

मीर–क्यों अपने बुज़ुर्गों के मुँह में कालिख लगाते हो–वे ही बावरची का काम करते होंगे। यहाँ तो हमेशा बादशाह के दस्तरख़्वान पर खाना खाते चले आए हैं।

मिरजा–अरे चल चरकटे, बहुत बढ़-बढ़कर बातें न कर।

मीर–ज़बान सँभालिए, वरना बुरा होगा। मैं ऐसी बातें सुनने का आदी नहीं हूँ। यहाँ तो किसी ने आँखें दिखाईं कि उसकी आँखें निकाली। है हौसला?

मिरज़ा–आप मेरा हौसला देखना चाहते हैं, तो फिर आइए। आज दो-दो हाथ हो जाए, इधर या उधर।

मीर–तो यहाँ तुमसे दबनेवाला कौन है?

दोनों दोस्तों ने कमर से तलवारें निकाल लीं। नवाबी जमाना था; सभी तलवार, पेशकब्ज़, कटार वगैरह बाँधते थे। दोनों विलासी थे, पर कायर न थे। उनमें राजनीतिक भावों का अध:पतन हो गया था–बादशाह के लिए, बादशाहत के लिए क्यों मरे; पर व्यक्तिगत वीरता का

चित्र 19.6

तकदीर- भाग्य

तकरार- बहस

कायदा- नियम, तरीका

रियासत-राज्य

रईस-अमीर

चरकटे- चिरकुट/कपड़े का टुकड़ा (यहाँ दूसरे को हीन/तुच्छ बताने वाला अपशब्द)

अभाव न था। दोनों जख़्म खा कर गिरे, और दोनों ने वहीं तड़प-तड़प कर जानें दे दीं। अपने बादशाह के लिए जिनकी आँखों से एक बूँद आँसू न निकला, उन्हीं दोनों प्राणियों ने शतरंज के वज़ीर की रक्षा में प्राण दे दिए।

अँधेरा हो चला था। बाज़ी बिछी हुई थी। दोनों बादशाह अपने-अपने सिंहासनों पर बैठे हुए मानो इन दोनों वीरों की मृत्यु पर रो रहे थे।

चारों तरफ़ सन्नाटा छाया हुआ था। खंडहर की टूटी हुई मेहराबें, गिरी हुई दीवारें और धूल-धूसरित मीनारें इन लाशों को देखतीं और सिर धुनती थीं।

–मुंशी प्रेमचंद

वजीर-मंत्री

मेहराब- ईरानी वास्तुकला में भवनों के द्वार की संरचना (चित्र देखें)

धूल-धूसरित-धूल से भरी अँटी हुई

क्रियाकलाप-19.1

निम्नलिखित वाक्यों पर ध्यान दीजिए:

1. भारतीय सैनिक सिर हथेली पर रखकर युद्ध कर रहे हैं।
2. उनके पाँव कब्र में लटके हैं, पर मोह माया के पीछे दौड़ना नहीं छोड़ा।

यह तो आप जानते ही हैं कि सिर को हथेली पर रखकर नहीं लड़ा जा सकता। इसी तरह यदि पाँव कब्र में लटके हुए हैं, तो दौड़ा जा सकता। इसका मतलब यह हुआ कि ये जो बातें कही गई हैं, उनका अर्थ इन शब्दों के प्रचलित अर्थ में नहीं है। जब हम पहले वाक्य पर गौर करते हैं, तो अर्थ निकलता है कि भारतीय सैनिक अपने सिर के कटने यानी जान जाने की परवाह किये बिना लड़ रहे हैं। इसी तरह दूसरे वाक्य में कब्र में पैर लटके होने का अर्थ निकलता है कि व्यक्ति विशेष की उम्र ढल चुकी है।

यदि शब्द अपने प्रचलित अर्थ यानी मुख्यार्थ यानी अभिधा को छोड़कर अन्य अर्थ को प्रकट करें, तो साहित्य में उसे लक्षणा कहते हैं।

मुहावरों में प्रयुक्त शब्दों का मुख्य यानी प्रचलित अर्थ नहीं होता, बल्कि लाक्षणिक अर्थ होता है। दूसरी बात यह है कि मुहावरे का स्वतंत्र प्रयोग नहीं होता, बल्कि किसी वाक्य में ही प्रयोग होता है। तीसरी बात यह कि वह लोगों के मुँह पर इतना चढ़ा होता है कि सुनने वाला मुहावरे के अर्थ को तत्काल समझ लेता है। इन बातों के संदर्भ में उपर्युक्त वाक्यों पर फिर से गौर कीजिए। इनमें प्रयुक्त मुहावरे नीचे दिए जा रहे हैं, उनका अर्थ उनके आगे लिखिए:

सिर हथेली पर रखना – ....

कब्र में पाँव लटका होना – ....

नीचे कुछ ऐसे मुहावरों के अर्थ दिए जा रहे हैं, जो इस पाठ में प्रयुक्त हुए हैं। इन अर्थों के आगे नीचे कोष्ठक में दिए गए मुहावरों में से उपयुक्त मुहावरे लिखिए:

(i) किसी चीज की आदत पड़ना –

(ii) इरादा भाँप जाना –

(iii) कठोरता से पेश आना –

(iv) झगड़ा होना–

(v) बहुत तकलीफ़ में होना–

(vi) किसी बात की चिंता न होना–

(खून के आँसू रोना, ताड़ जाना, लौ लगाना, चाट पड़ना, रंग उड़ना, तन जाना, कमली भारी होना, तू-तू-मैं-मैं होना, दीन-दुनिया की फिक्र न होना)

आइए समझें

'बहादुर' कहानी को पढ़ते हुए आप जान चुके हैं कि कहानी को मुख्यत: कथावस्तु, पात्र और चरित्र-चित्रण, संवाद, भाषा-शैली और परिवेश के आधार पर समझा जाता है। कहानी को इन तत्त्वों के आधार पर समझने की शुरूआत आधुनिक कहानी के आरंभिक दौर में हुई। बाद में जब कहानी विधा का विकास हुआ, तो कहानीकारों ने अपनी बात कहने के अलग-अलग अंदाज़ अपनाए। इसलिए, बाद की कहानियों में इन सभी तत्त्वों में से कभी किसी को तो कभी किसी दूसरे को प्रमुखता मिलती रही। 'बहादुर' कहानी में बहादुर का चरित्र प्रमुख है, तो 'शतरंज के खिलाड़ी' में परिवेश।

आइए, इस कहानी पर विचार करें।

19.2.1 कथावस्तु

आप 'शतरंज के खिलाड़ी' कहानी को ध्यानपूर्वक पढ़ चुके हैं। आपने गौर किया होगा कि कहानी की शुरुआत एक भूमिका से होती है और इस भूमिका के बाद कहानी के मुख्य पात्र मीर और मिरज़ा हमारे सामने आते हैं। दरअसल, यह भूमिका इस कहानी की मूल कथावस्तु को समझने के लिए बहुत आवश्यक है। यहाँ कहानीकार पराधीन भारत के एक प्रमुख सत्ता-केंद्र लखनऊ के सामाजिक-राजनीतिक वातावरण की चर्चा करता है। इस चर्चा में वह शासक-वर्ग से लेकर आम जनता तक को विलासिता यानी अय्याशी में

डूबा दिखाता है। छोटे-बड़े—सभी नाच-गाने, पहनने-ओढ़ने, मनोरंजन-नशे में मस्त हैं। यहाँ तक कि शासन-व्यवस्था से जुड़े अधिकारी, साहित्यकार, कलाकार और व्यापारी-उद्यमी भी विलास-सामग्री के उपभोग, प्रचार और निर्माण में जुटे हैं। शासक-वर्ग से शुरू हुआ यह अय्याशी का जीवन आम जनता को भी लुभा चुका है और उनको अकर्मण्य बना चुका है। दुर्व्यसनों और लतों में सिर से पैर तक डूबे लोग अब उनका औचित्य भी सिद्ध करने लगे हैं। उनके तर्क होते थे कि शतरंज, ताश, गंजीफा खेलने से बुद्धि तीव्र होती है, विचार शक्ति का विकास होता है, पेचीदे मसलों को सुलझाने की आदत पड़ती है। लेखक ने नागरिकों की इस मन:स्थिति का चित्रण करते हुए अपने युग में भी विद्यमान इस प्रवृत्ति पर टिप्पणी करते हुए कहा है कि इस संप्रदाय के लोगों से दुनिया खाली नहीं है। यही नहीं वह आगे कई बार अपनी यह टिप्पणी भी रखता है- ''यह राजनीतिक अध:पतन की चरम सीमा थी।''

प्रेमचंद यह बताना चाहते हैं कि जिस देश का ज़िम्मेदार वर्ग लापरवाह होकर भोग-विलास में डूबा जाता है, उस देश को गुलाम होने से कोई नहीं बचा सकता। इस कहानी का यह संदेश भी है कि यदि देश को दासता से बचाना है तो प्रत्येक व्यक्ति को अपनी-अपनी जिम्मेदारियों का बोध होना चाहिए। मिरज़ा सज्जाद अली और मीर रौशन अली तो कहानी के पात्र मात्र हैं; इनके माध्यम से प्रेमचंद ने एक वर्ग की प्रवृत्तियों की ओर संकेत किया है। ऐसी प्रवृत्तियाँ अंतत: आत्मघाती भी होती हैं। यदि हम देश पर आए संकट के समय जोखिम के डर से स्वार्थी हो जाएँ तो देश का संकट हमारा भी संकट बन जाएगा।

इस कहानी में राजा तथा प्रजा की दु:खद स्थिति का चित्रण भी प्रेमचंद ने किया है। प्रजा, विशेष रूप से गाँवों में रहने वाले किसानों से कर के रूप में वसूला गया धन लखनऊ के नवाबों और दरबारियों की झूठी शानो-शौकत और उनकी विलासिता में खर्च कर दिया जाता था। तत्कालीन नवाबों को अपनी गरीब जनता की कोई फ़िक्र नहीं थी। इसी बात का फायदा अंग्रेजों को मिला।

शासक वर्ग की कर्त्तव्यहीनता की चरम परिणति तब दिखाई पड़ती है, जब लखनऊ के नवाब वाजिदअली शाह को अंग्रेज़ कैद कर लेते हैं। तब भी उनके रहमों-करम पर पलने वाले मीर और मिरज़ा उनके शोक में डूबने के बजाय उनका उपहास उड़ाते हैं। इस अंश में ऐसी पराजय का जिक्र किया गया है, जिसमें न कोई मार-काट थी, न एक बूंद खून गिरा था। यह अहिंसा न थी बल्कि घोर कायरपन था जिसका परिणाम राज्य की प्रजा को भुगताना पड़ा। वास्तव में शासक-वर्ग में जो जोश और उबाल होना चाहिए था वह था ही नहीं। प्रेमचंद ने इस स्थिति पर बड़ा ही मार्मिक व्यंग्य किया है, यह कहकर कि, ''आज तक किसी स्वाधीन देश के राजा की पराजय इतनी शांति से, इस तरह खून बहे बिना न हुई होगी। यह वह अहिंसा न थी, जिस पर देवगण प्रसन्न होते हैं। यह वह कायरपन था, जिस पर बड़े-बड़े कायर भी आँसू बहाते हैं। अवध के विशाल देश का नवाब बंदी चला जाता था और लखनऊ ऐश की नींद में मस्त था। यह राजनीतिक अध:पतन की चरम

सीमा थी।'' जानते हैं इस कहानी के माध्यम से प्रेमचंद क्या कहना चाहते हैं? प्रेमचंद ने इस कहानी के माध्यम से हमारे देश के गुलाम होने की प्रक्रिया और उसके कारणों की ओर संकेत किया है।

क्रियाकलाप-19.2

नीचे 'शतरंज के खिलाड़ी' कहानी से तीन ऐसे वाक्य दिए जा रहे हैं, जिनमें मुहावरों का प्रयोग है। उनमें प्रयुक्त मुहावरे और उनके अर्थ भी दिए जा रहे हैं। इन मुहावरों का प्रयोग करते हुए नए वाक्य बनाइए:

1. यहाँ तो लोग विलासिता के नशे में चूर थे, किसी के कानों पर जूँ न रेंगती थी।

   - कानों पर जूँ न रेंगना- किसी बात पर ध्यान न देना/ किसी बात का असर न होना

     वाक्य-प्रयोग: ....

2. मिरजा दो-तीन बाज़ियाँ लगातार हार चुके थे, इस चौथी बाजी का रंग भी अच्छा न था।

   - रंग अच्छा न होना- असफलता, अकुशलता आदि की आशंका

     वाक्य-प्रयोग :..

3. खंडहर की टूटी हुई मेहराबें, गिरी हुई दीवारें और धूल-धूसरित मीनारें इन लाशों को देखती और सिर धुनती थीं।

   - सिर धुनना- शोक प्रकट करना/दुखी होना/शोक मनाना

     वाक्य-प्रयोग:..

नीचे कुछ मुहावरें और उनके अर्थ दिए गए हैं। इन मुहावरों का अपने वाक्यों में प्रयोग कीजिए:

- दाँतों तले उँगली दबाना- आश्चर्यचकित हो जाना

  वाक्य-प्रयोग:

- कान का कच्चा होना- सुनी हुई बात पर बिना सोचे-समझे यकीन करना

  वाक्य-प्रयोग: ....

- दिन-रात एक करना- बहुत परिश्रम करना/किसी काम में जुटे रहना

  वाक्य-प्रयोग: ....

टिप्पणी

19.2.2 पात्र और चरित्र-चित्रण

आइए, अब इस कहानी के प्रमुख पात्रों के कार्यों के आधार पर उनके व्यक्तित्व की विशेषताओं को समझने का प्रयास करते हैं। देखते हैं कि लेखक ने उनका चरित्र-चित्रण किस प्रकार किया है।

कहानी के मुख्य पात्र हैं- मिरज़ा साहब और मीर साहब। इन दोनों के व्यक्तित्व में अनेक समानताएँ हैं, क्योंकि ये एक ही वर्ग के हैं। प्रेमचंद ने इन दोनों की समान प्रवृत्तियों के आधार पर तत्कालीन वातावरण को भी चित्रित करने का प्रयास किया है। वातावरण में जो विलासिता फैली थी, उससे ये भी ग्रस्त थे। इनके अतिरिक्त कहानी के अन्य पात्र हैं– मिरज़ा साहब की बेगम, बादशाही सवार और नौकरानी हरिया आदि। सबसे पहले हम मिरज़ा साहब के व्यक्तित्व की विशेषताओं को समझते हैं।

मिरज़ा साहब का पूरा नाम मिरज़ा सज्जाद अली था। वे लखनऊ के नवाब वाजिदअली शाह के एक जागीरदार थे। उन्हें अपनी जीविका चलाने की कोई चिंता नहीं थी, क्योंकि उनके पास पैतृक संपत्ति थी। उन्हें शतरंज खेलने का बेहद शौक था या कहें कि बुरी लत थी। वे बेहद आलसी और कामचोर इंसान थे। उनकी शतरंज खेलने की आदत के बारे में उनके आस-पास के लोग नौकर और चाकर भी अच्छी राय नहीं रखते तथा उनकी बुराई करते रहते हैं। मिरज़ा साहब शतरंज के खेल में इतने डूब जाते कि घर की चिंता करना भी छोड़ देते। इसलिए उनकी बेगम भी उनसे परेशान रहती थी और हमेशा मिरज़ा साहब को लताड़ती रहती थी। वे यह बताना चाहते हैं कि जिस देश का जिम्मेदार वर्ग लापरवाह होकर विलास में डूब जाता है, उस देश को गुलाम होने से कोई नहीं बचा सकता।

'शतरंज के खिलाड़ी' एक विशिष्ट प्रकार के ऐतिहासिक परिवेश को व्यक्त करने वाली कहानी है इसलिए इसमें पात्रों की अधिक संख्या पर बल नहीं है। इसीलिए आप यह पाएंगे कि मिर्जा और मीर अली अलग-अलग पात्र होते हुए भी एक ही वर्ग और एक ही तरह के प्रवृत्तियों को व्यक्त करने वाले पात्र हैं। इनमें समानताएँ अधिक हैं, अंतर कम।

यह तो आप जानते ही होंगे कि निर्भीकता और स्वाभिमान का संबंध श्रम और संघर्ष से है। मिरज़ा और मीर दोनों ही बाप-दादाओं को मिली जागीरों पर ज़िंदा हैं, उन्हें आजीविका की कोई चिंता नहीं बल्कि पैतृक संपत्ति ने इन्हें कामचोर, विलासी, कायर और डरपोक बना दिया है। इसलिए मिरज़ा बेगम से भी डरते हैं और बादशाही फौजों से भी, साथ ही अंग्रेज़ी सेना से भी। बेगम के सामने मिरज़ा झूठ तक बोलते हैं। यह दिखाते हैं मानो वे स्वयं तो शतरंज नहीं खेलना चाहते, मीर अली ही उन्हें विवश करते हैं।

मिरजा जिस प्रकार से परिवार की चिंता नहीं करते उसी प्रकार पूरे लखनऊ की भी चिंता नहीं करते। उन्हें इस बात की कोई परवाह नहीं कि लखनऊ के बादशाह को बंदी बना लिया गया है। वे सुविधाओं को छोड़ने का जोखिम नहीं उठा सकते। वे सुख-विलास के बिना रह नहीं सकते। उनकी इस आदत ने उन्हें कायर बना दिया है। प्रेमचंद मिरज़ा और मीर के शतरंज-प्रेम की कथा कहते हुए बीच-बीच में लखनऊ की त्रासद स्थिति का

वर्णन करते हैं। वे यह बताना चाहते हैं कि ऐसी स्थिति में भी मिरजा और मीर के कानों पर जूँ तक नहीं रेंगती। वे अपनी लत में डूबे हुए हैं। कहीं-कहीं उनकी इस लत पर प्रेमचंद व्यंग्य करते हुए कहते हैं– ''कोई योगी भी समाधि में इतना एकाग्र न होता होगा।''

गोरों की फौज ने जब नवाब वाजिद अली को बंदी बना लिया तो मिरज़ा, मीर अली से कहते हैं– 'खुदा की कसम, आप बड़े बेदर्द हैं। इतना बड़ा हादसा देखकर भी आपको दुख नहीं होता। हाय, गरीब वाजिद अली शाह।' पर इससे यह न समझिए कि मिरज़ा को नवाब के गिरफ्तार होने पर दुख है, बल्कि मिरज़ा शतरंज में मीर अली से हार रहे हैं और उनका ध्यान भटकाने के लिए ऐसा कह रहे हैं। यह भी उनके शतरंज-प्रेम में डूबे होने का संकेत करता है, राजभक्ति की ओर नहीं। लेखक ने इस विषय में स्पष्ट लिखा है, ''मिरज़ा की राजभक्ति अपनी हार के साथ लुप्त हो चुकी थी। वे हार का बदला चुकाने के लिए अधीर हो रहे थे।''

मिरज़ा देश की हार देख सकते थे, शतरंज की हार नहीं। वे उस वक्त झुँझलाते, परेशान होते हैं जब शतरंज में मीर अली से हारते हैं। उन्हें देश के गुलाम होने पर भी क्रोध नहीं आता, तब आता है जब उनके पुरखों के विषय में मीर अली इधर-उधर की बातें करते हैं। अर्थात् विलासी जीवन झूठी शानो-शौकत के बल पर चलता है, यदि इस शानो-शौकत पर कहीं से आँच आती है तो बर्दाश्त नहीं हो पाता। व्यक्तिगत वीरता जाग उठती है। लेकिन वह व्यक्तिगत वीरता किस काम की जो देश के काम न आए और आत्मघाती बन जाए। मिरज़ा के व्यवहार को इसी आधार पर देखा जा सकता है। वस्तुतः इस शानो-शौकत के मूल में कायरता ही है, ऐसी कायरता, जिसके विषय में प्रेमचंद ने लिखा– ''यह वह कायरपन था, जिस पर बड़े-बड़े कायर भी आँसू बहाते हैं।''

मीर साहब का पूरा नाम मीर रौशन अली है। इनके पास भी मिरज़ा साहब की तरह पैतृक जागीरदारी है। इन्हें भी अपनी जीविका चलाने की कोई चिंता नहीं। हमेशा शतरंज खेलना तथा पान, हुक्का, चिलम जैसे मादक पदार्थों का सेवन करना इनकी आदत है। इनकी इस आदत ने इनके स्वाभिमान को नष्ट कर दिया है। मिरज़ा साहब की पत्नी इनसे बेहद नफरत करती हैं फिर भी ये मिरज़ा साहब वे घर जाना नहीं छोड़ा। मीर साहब को मिरज़ा की बेगम का बोलना बुरा लगता है, इसलिए वे मिरज़ा साहब को बेगम के सामने तनकर रहने की नसीहत देते हैं।

मीर साहब बहुत डरपोक और कायर इंसान हैं। मिरज़ा की बेगम के गुस्से के डर से वे भाग जाते हैं। एक बार जब बादशाही फौज का अफसर इनका नाम पूछता हुआ आता है तो इनके होश उड़ जाते हैं। भागने में ही ये अपनी भलाई समझते हैं। घर के दरवाज़े बंद करके नौकर को बोलते हैं कि उन्हें कह दो कि घर में नहीं हैं। अर्थात झूठ बोलना इन्हें भी आता है। शतरंज खेलने में बेईमानी भी करते हैं। यही बेईमानी और झूठी अकड़ मिरज़ा की तरह उनकी भी मृत्यु का कारण बनती है।

टिप्पणी

पाठगत प्रश्न-19.1

सर्वाधिक उपयुक्त विकल्प चुनकर प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

1. 'शतरंज के खिलाड़ी' के माध्यम से दिखाया गया है:

   (क) अंग्रेज शासकों का दमन ☐ (ख) भारतीय शासकों का पतन ☐

   (ग) शतरंज के खेल का महत्त्व ☐ (घ) हारने वाले खिलाड़ी का द्वेष ☐

2. मिरज़ा साहब में मीर साहब के प्रति प्रतिकार की भावना आती जा रही थी क्योंकि–

   (क) वे उनके कट्टर शत्रु थे। ☐

   (ख) वे शतरंज में लगातार हार रहे थे। ☐

   (ग) उनकी बेगम ने उन्हें भड़काया था। ☐

   (घ) उन्हें सिपाही उकसाते थे। ☐

3. वाजिदअली शाह के बंदी बनाए जाने का मिरज़ा और मीर को कोई मलाल नहीं था, क्योंकि–

   (क) वे उससे ईर्ष्या करते थे ☐

   (ख) वे अंग्रेज़ों के समर्थक थे। ☐

   (ग) शतरंज का बादशाह अधिक महत्त्वपूर्ण था ☐

   (घ) उन्हें अंग्रेज़ी फौज से डर लगता था। ☐

19.2.3 संवाद-योजना

'बहादुर' पाठ में आप जान ही चुके हैं कि पात्रों की बातचीत को संवाद कहा जाता है। संवाद कहानी के घटनाक्रम को आगे बढ़ाते हैं, चरित्रों के व्यक्तित्व की विशेषताएँ बताते हैं और कहानी में नाटकीयता का गुण उत्पन्न करते हैं। कहानी को रोचक बनाने में भी संवादों की बड़ी भूमिका होती है।

यों तो 'शतरंज के खिलाड़ी' कहानी में प्रेमचंद ने सीधे-सीधे तत्कालीन वातावरण का वर्णन किया है, पर इस कहानी में संवाद भी कम नहीं हैं। प्रेमचंद ने संवादों का उपयोग आवश्यकतानुसार किया है। जब वे पात्रों की चारित्रिक विशेषताएँ बताना चाहते हैं, तो बीच-बीच में संवादों का भी सहारा लेते हैं, उदाहरण के लिए एक स्थान पर जब बेगम साहिबा कहती हैं कि- ''क्या पान माँगें हैं? कह दो, आकर ले जाएँ। खाने की फुरसत नहीं है, ले जाकर खाना सिर पर पटक दो, खाएँ चाहें कुत्ते को खिलाएँ।'' इस संवाद से बेगम साहिबा की मन:स्थिति का बोध होता है जिसमें क्रोध और झल्लाहट है।

एक अन्य स्थान पर मिरज़ा साहब कहते हैं- ''खुदा के लिए, तुम्हें हज़रत हुसैन की कसम है। मेरी मैयत ही देखे, जो उधर जाए।'' यह संवाद मिरज़ा साहब के अपमानित होने के डर को व्यक्त करता है।

आपने कहानी पढ़ते समय ध्यान दिया होगा कि मीर साहब बेगम साहिबा के प्रति कैसा सोच रखते हैं। मीर साहब का कथन- ''बड़ी गुस्सेवर मालूम होती हैं। मगर आपने उन्हें यों सिर चढ़ा रखा है, यह मुनासिब नहीं। उन्हें इससे क्या मतलब कि आप बाहर क्या करते हैं। घर का इंतजाम करना उनका काम है; दूसरी बातों से उन्हें क्या सरोकार?'' से पता चलता है कि वे बेगम और अन्य औरतों के प्रति क्या राय रखते हैं। उनकी नज़र में घर की औरतों का काम सिर्फ घर तक ही सीमित है। उन्हें वे सम्मान नहीं देते।

इसी प्रकार जब मिरज़ा मीर को बताते हैं कि नवाब वाजिद अली शाह को अंग्रेजों ने कैद कर लिया है तो मीर की बेफ़िक्री और मिरज़ा की झूठी सहानुभूति निम्नलिखित संवादों से प्रकट होती है।

मिरज़ा-किसी के दिन बराबर नहीं जाते। कितनी दर्दनाक हालत है।

मीर-हाँ सो तो है ही- यह लो, फिर किश्त! बस अब की किश्त में मात है, बच नहीं सकते।

मिरज़ा-खुदा की कसम, आप बड़े बेदर्द हैं। इतना बड़ा हादसा देखकर भी आपको दुख नहीं होता। हाय, गरीब वाजिद अली शाह।

यहाँ मिरजा का कहना **'हाय, गरीब वाजिदअली शाह'** एक गहरे व्यंग्य को प्रकट करता है। उनकी चापलूसी और झूठी सहानुभूति इसी एक वाक्य से प्रकट हो जाती है।

इस कहानी में जहाँ भी संवादों का प्रयोग हुआ है, वहाँ अधिक शब्द उर्दू अथवा फारसी शैली के हैं। इनसे कहानी में जीवंतता आ गई है तथा तत्कालीन लखनऊ के सामंती जीवन शैली तथा उनकी भाषा का बोध होता है। इन संवादों से हमें पात्रों की मन: स्थिति एवं उनके उद्देश्यों का सरलता से पता चलता है। कहानी में प्रयुक्त ऐसे संवादों से कहानी का स्वाभाविक विकास होता चला गया है। अत: इस कहानी का एक अति महत्वपूर्ण पक्ष है- इसकी संवाद-योजना, जो कहीं से कृत्रिम नहीं लगती और स्वाभाविक वातावरण का निर्माण करती है। संवाद पात्रानुकूल है। उनमें चुटीलापन है, भावानुकूलता है (क्रोध आदि की) सहजता है, और स्वाभाविकता है।

क्रियाकलाप-19.3

आप कुछ मुहावरों और उनके अर्थों से परिचित हो चुके हैं। कुछ मुहावरे ऐसे भी होते हैं, जो कुछ-कुछ मिलते-जुलते से अर्थ रखते हैं। आगे ऐसे ही कुछ मुहावरे दिए जा रहे हैं, इन पर ध्यान दीजिए:

टिप्पणी

- किसी बात का असर न होना
  - (i) कान पर जूँ न रेंगना
  - (ii) चिकना घड़ा होना
  - (iii) कान में तेल डालकर बैठना
- भागकर ओझल हो जाना
  - (i) नौ दो ग्यारह होना
  - (ii) रफू-चक्कर होना
  - (iii) सिर पर पैर रखकर भागना

अब नीचे कुछ अर्थ दिए जा रहे हैं, इन अर्थों के लिए उपयुक्त तीन-तीन मुहावरे कोष्ठक में से छाँटकर लिखिए:

1. आश्चर्यचकित रह जाना
   (i)
   (ii)
   (iii)
2. बहुत परिश्रम करना
   (i)
   (ii)
   (iii)
3. दुश्मन को परास्त करना
   (i)
   (ii)
   (iii)
4. बरबाद करना
   (i)
   (ii)
   (iii)
5. अत्यधिक प्रिय होना
   (i)
   (ii)
   (iii)

(आँख का तारा होना, एड़ी-चोटी का ज़ोर लगाना, दाँतों तले उंगली दबाना, ठगे से रह जाना, दाँत खट्टे करना, तहस-नहस करना, जान से प्यारा होना, नामोनिशान मिटा देना, धूल चटाना, मुट्ठी में कर लेना, दिन-रात एक करना, लोहा मनवाना, कलेजे का टुकड़ा होना, साध लेना, आँखे फटी रह जाना, मटियामेट कर देना, पसीना बहाना, कहीं का न रहना।)

19.2.4 देशकाल और वातावरण

आप यह पहले ही जान चुके हैं कि 'शतरंज के खिलाड़ी' एक वातावरण प्रधान कहानी है। इस तरह की कहानियों में केन्द्र के वातावरण होता है। कहानी के अन्य तत्त्व भी वातावरण की ही अभिव्यक्ति करते हैं। इस कहानी में जितनी भी घटनाएँ है, वे अवध की हैं। अवध राज्य का वातावरण इसमें अभिव्यक्त हुआ है। कहानी में जिस समय का वर्णन है, वह 1857 के आस-पास का है। आप जानते ही हैं कि भारतीय इतिहास में 1857 का क्या महत्त्व है। सन् 1857 में हमारा पहला स्वाधीनता-आंदोलन हुआ था। यह आंदोलन सफल न हो पाया और भारत अंग्रेजों का पूरी तरह से गुलाम हो गया। इस कहानी में भारत के राज्यों में से एक अवध के पतन की प्रक्रिया का चित्रण है।

कहानी के आरंभ में ही कहानी के मूल उद्‌देश्य के अनुसार वातावरण निर्मित किया गया है। लेखक ने स्पष्ट रूप से कहानी के देशकाल का उल्लेख किया है– "वाजिद अली शाह का समय था। लखनऊ विलासिता के रंग में डूबा हुआ था।" यहाँ पर लखनऊ से तात्पर्य लखनऊ की समस्त जनता और शासकों से है। लेखक ने लिखा है कि अमीर और गरीब सभी किसी-न-किसी लत तथा विलासिता में डूबे थे। जीवन का कोई भी क्षेत्र इससे छूटा न था। सभी एक-दूसरे से निरपेक्ष थे। संसार में क्या हो रहा है। इसे जानने में किसी की दिलचस्पी न थी। फकीरों को पैसे मिलते, तो वे भी रोटियाँ न लेकर अफ़ीम खाते या शराब पीते।

क्या आप जानते हैं कि ऐसी स्थिति कब होती है? जी हाँ, जब शासक-वर्ग के लोग पूरी तरह से निकम्मे हो जाएँ और विलास में डूब जाएँ। हमारे देश में जैसे-जैसे अंग्रेज़ों का प्रभाव बढ़ता जा रहा था वैसे-वैसे यहाँ के शासक संघर्ष का रास्ता छोड़कर, समर्पण का रास्ता अपनाकर व्यक्तिगत राग-रंग में डूब रहे थे। कभी-कभी शासक-वर्ग अपनी इस विलासिता को नैतिक ठहराने का भी प्रयास करता है। जब समाज के जिम्मेदार वर्ग की यह मानसिकता हो जाती है तो निचले वर्ग पर भी इसका प्रभाव पड़ता है। शतरंज के खिलाड़ी में ऐसी ही स्थिति को अभिव्यक्त किया गया है।

'शंतरंज के खिलाड़ी' में एक स्थान पर लखनऊ में बढ़ी आती गोरों की फ़ौज का वर्णन है। इस फ़ौज का कहीं कोई विरोध नहीं होता। यहाँ तक कि नवाब वाजिदअली शाह के बारे में मीर रोशन अली कहते हैं, "शहर में कुछ न हो रहा होगा। लोग खाना खा-खाकर आराम से सो रहे होंगे। हजूर साहब भी ऐशगाह में होंगे।" यह वह वातावरण है जिसमें न नवाबों को जनता की चिंता है, न पराजय की; न जनता को किसी की चिंता है। सब एक-दूसरे से अलग, टूटे हैं। इसी के लिए तुलसीदास ने लिखा था– प्रजा पतित पाखण्ड पापरत अपने-अपने रंग रई है। इस वातावरण की तुलना हम अंधेर नगरी के वातावरण से कर सकते है। संघर्ष के लिए गुलामी से बचने के लिए सामूहिक-एकता की जरूरत होती है, जो उस समय के वातावरण में नहीं है, जिस समय के वातावरण पर यह कहानी लिखी गई है। प्रेमचंद लिखते हैं:

"शहर में न कोई हलचल थी, न मार-काट। एक बूँद भी खून नहीं गिरा था। आज तक किसी स्वाधीन देश के राजा की पराजय इतनी शांति से, इस तरह खून बहे बिना न हुई होगी। यह वह अहिंसा न थी, जिस पर देवगण प्रसन्न होते है। यह वह कायरपन था, जिस पर बड़े-बड़े कायर भी आँसू बहाते हैं। अवध के विशाल देश का नवाब बंदी चला जाता था और लखनऊ ऐश की नींद में मस्त था। यह राजनीतिक अध:पतन की चरम सीमा था।"

इस अवसर पर प्रेमचंद ने यह भी स्पष्ट कर दिया कि अहिंसा और कायरता में बहुत अंतर है। बिना संघर्ष किए गुलाम हो जाना या बने रहना कायरता है, अहिंसा नहीं। अहिंसा संघर्ष की विरोधी नहीं समर्थक है। इस तरह एक समय के वातावरण-चित्रण के माध्यम से प्रेमचंद अपने समय के लोगों का स्वाधीनता के लिए आह्वान कर रहे थे और प्रत्येक समय में रहनेवाली जनता को यह समझा रहे थे कि स्वाधीनता को बचाने के लिए सामूहिकता, संघर्ष और एकता आवश्यक है।

मिरज़ा और मीर मौत के डर के कारण संघर्ष से बच रहे थे। क्या वे बच पाए? नहीं। व्यक्तिगत स्वार्थ का रास्ता मौत से बचा नहीं सकता। इससे अच्छा तो तब होता जब उनके जैसे लोग एकजुट होकर अंग्रेज़ों की फौज का सामना करते। तब यदि देश गुलाम भी हो जाता और वे मारे भी जाते तो उनकी मौत पर जनता रोती, शतरंज के मोहरे नहीं। कहानी के अंत में एक चित्र है-

"चारों तरफ सन्नाटा छाया हुआ था। खंडहर की टूटी हुई मेहराबें, गिरी हुई दीवारें और धूल-धूसरित मीनारें इन लाशों को देखतीं और सिर धुनती थीं।

यह चित्र उस अवध का है, जो गुलाम बन चुका है। सन्नाटा, खंडहर, टूटी मेहराबें, गिरी दीवारें, धूल-धूसरित मीनारें दासता से ग्रस्त, खंडित देश की तस्वीर है। इसका ज़िम्मेदार कौन है? जी हाँ मीर और मिरज़ा जैसे लोग, जिनकी आदतों के कारण ऐसी स्थिति आई। प्रेमचंद ने कहानी के इस अंतिम अंश में बड़ा ही मार्मिक व्यंग्य किया है।

पाठगत प्रश्न-19.2

सर्वाधिक उपयुक्त उपयुक्त विकल्प चुनकर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए:

1. 'घास तो आपके अब्बाजान छीलते होंगे। यहाँ तो पीढ़ियों से शतरंज खेलते चले आ रहे हैं। यह कथन किस ओर संकेत करता है-

   (क) मीर की दिल्लगी ☐ (ख) मीर की प्रतिकार-भावना ☐

   (ग) मिरजा की हार ☐ (घ) मिरज़ा की जीत ☐

2. 'ले जाकर खाना सिर पर पटक दो, खाएँ या कुत्तों को खिलाएँ'- इस संवाद से बेगम साहिबा की किस विशेषता का पता चलता है?

(क) घृणा ☐ (ख) निराशा ☐

(ग) बौखलाहट ☐ (घ) क्रोध ☐

3. नवाब वाजिद अली शाह के बंदी बनाए जाने की घटना पर लखनऊवासियों के व्यवहार को लेखक कहता है–

(क) अहिंसा की भावना ☐ (ख) कर्तव्यनिष्ठा ☐

(ग) प्रतिकार का धैर्य ☐ (घ) कायरता ☐

19.2.5 भाषा-शैली

आपने इस कहानी की भाषा पर ध्यान दिया है? हाँ, यह कहानी भाषा की दृष्टि से अन्य कहानियों से भिन्न है। इसमें अरबी-फारसी के शब्दों का प्रवाहमय प्रयोग किया गया है, साथ ही तत्सम और तद्भव शब्दों का भी इस्तेमाल हैं। कहीं-कहीं अंग्रेज़ी के शब्द भी हैं। इस कहानी में हिन्दी भाषा का एक भिन्न रूप है, जिसे -हिंदुस्तानी' कहा जाता है। 'हिंदुस्तानी' भाषा का वह रूप है जो हिंदी और अरबी-फ़ारसी के लोक प्रचलित, सरल शब्दों के आधार पर बनी है। इसके साथ ही भाषा का यह रूप भारत की मिली-जुली संस्कृति को भी अभिव्यक्त करता है। भारत में हिंदी और उर्दू का विवाद बड़े लंबे समय तक चलता रहा। कुछ लोग हिंदी का पक्ष लेने के बहाने उर्दू का विरोध करते थे और कुछ लोग उर्दू के बहाने हिंदी का। हिंदी-उर्दू के विवाद के उस दौर में राजनीतिक क्षेत्र में गांधी जी ने और साहित्य-क्षेत्र में प्रेमचंद ने भाषा के इस मिले-जुले रूप की वकालत की थी, जो तत्कालीन समाज में आम लोगों की भाषा थी।

आइए, अब हम कहानी की भाषा की विशेषताओं का उल्लेख करते हैं। कहानी को ध्यान से पढ़ने पर आपने देखा होगा कि कहानी में बहुत सारे अरबी-फ़ारसी शब्दों का प्रयोग किया गया है। वस्तुत: यह कहानी की माँग है, क्योंकि कहानी की पृष्ठभूमि और वातावरण के रूप में जिस स्थान और समय को चित्रित किया गया है, वह है– लखनऊ और वाजिदअली शाह का ज़माना। तब लखनऊ में अधिकांश लोग उर्दूभाषी थे तथा राज-काज की भाषा भी फ़ारसी थी। अत: कहानीकार के लिए यह स्वाभाविक था कि तत्कालीन परिवेश के अनुसार भाषा का प्रयोग किया जाए। इससे कहानी में सजीवता एवं रोचकता का समावेश होता है तथा कहीं से बनावटीपन या कृत्रिमता नहीं झलकती है। इस कहानी की भाषा पात्रानुकूल और भावानुकूल है अर्थात् पात्रों के व्यक्तित्व और उनके भावों के अनुकूल है। सभी पात्रों के संवादों से उनके व्यक्तित्व एवं उनकी सोच के बारे में पता चलता है। लखनऊ में जब वाजिदअली शाह को कैद कर लिया जाता है और मिरज़ा साहब जब यह बात मीर साहब को बताते हैं तो उनका यह कथन कि पहले अपने बादशाह को बचाइए फिर नवाब साहब का मातम कीजिएगा। न केवल उनके बादशाह के प्रति नजरिए को इंगित करता है बल्कि शतरंज के खेल की शब्दावली का भी बढ़िया प्रयोग हैं।

लखनऊ के नवाब और रईस जिस प्रकार की भाषा का प्रयोग करते थे वही प्रयोग कहानीकार ने मिरज़ा साहब और मीर साहब के संवादों में किया है। इससे कहानी का स्वाभाविक विकास होता चला गया है। कई स्थानों पर व्यंग्यात्मक भाषा का भी इस्तेमाल किया गया है। जब हम किसी के दोषों पर चोट करते हैं तो भाषा में व्यंग्य आ जाता है। उदाहरण के लिए देखिए-खुदा की कसम, आप बड़े बेदर्द हैं। इतना बड़ा हादसा देखकर भी आपको दुख नहीं होता। हाय, गरीब वाजिद अली शाह!

हमारी बोलचाल की भाषा की यह विशेषता होती है कि उसमें तत्सम, तद्‌भव, क्षेत्रीय और अनेक भाषाओं के शब्द चले आते हैं। उसमें हम मुहावरों, लोकोक्तियों और दो वस्तुओं की समानता बताने के लिए विभिन्न उपमाओं का भी प्रयोग करते हैं। इस कहानी में ये सभी बातें मिलती हैं, जैसे-

तत्सम शब्द- नृत्य, विचारशील, ऋण, व्यूह-रचना, मनोमालिन्य, वृत्तांत, आत्मा, योगी, समाधि, संग्राम-क्षेत्र, प्राणी, स्वाधीन, अहिंसा धूलि-धूसरित आदि।

तद्‌भव शब्द- गान, राजा, रात, सुहाग, रानी, घोड़ा, आँसू, चाल, आँख आदि।

क्षेत्रीय (देशज) शब्द- उबटन, चौसर, लौंडी, निखट्टू, कमली, निगोड़ी, चिलम, हुक्का, चरकटे आदि।

आगत शब्द- मौरूसी, जागीर, बिसात, मुलाहिजा, ज़लील, मैयत, वली, दस्तरख़ान, दीवानखाना, मनहूस, बेगम, हकीम, ख़ामख़्वाह, नाजुक, मिजाज, खाक, मुहरा, मिन्नत, गुस्सेवर, रोज़, नौबत, तलब, मोर्चा, बेमौत, हज़रत, तदबीर, फ़ौज, आफत, रोज़ा, ऐशगाह, जालिम, नसीब, नवाब, खुदा, बादशाह, कयामत, खानदान, रियासत, बावर्ची, पेशकब्ज़, वज़ीर, मेहराब, आदि।

मुहावरे- इनके विषय में आप क्रियाकलापों में पढ़ चुके हैं।

लोकोक्ति- रानी रूठेंगी, अपना सुहाग लेंगी।

19.2.6 उद्देश्य

आपने 'शतरंज के खिलाड़ी' कहानी पढ़ी। क्या आप जानते हैं कि इस कहानी को लिखने के पीछे प्रेमचंद का क्या उद्देश्य था? शतरंज खेल का एक प्रकार है। इस कहानी का नाम है शतरंज के खिलाड़ी। शतरंज के खेल में बहुत बुद्धि लगानी पड़ती है। जिस प्रकार युद्ध के मैदान में बचाव और आक्रमण का महत्व होता है, वैसे ही शतरंज के खेल में भी। प्रेमचंद इस कहानी के माध्यम से यह कहना चाहते हैं कि मिरज़ा और मीर जैसे लोग यदि अपना दिमाग देश के बचाव में लगाते तो गुलामी से बचा जा सकता था।

स्वाधीनता-आंदोलन के समय की अनेक रचनाओं में इतिहास से सबक लेने की बात कही जा रही थी। प्रेमचंद ने इस कहानी में भी स्वाधीनता-आंदोलन में लगे नेताओं और

टिप्पणी

उनके पीछे चलने वाली जनता को यह सीख दी कि देश और स्वाधीनता के हित में हमें आराम तथा विलास को छोड़ देना चाहिए और अपनी ज़िम्मेदारियों को निभाना चाहिए। लेकिन 'शतरंज के खिलाड़ी' के दोनों खिलाड़ी देश और समाज की उपेक्षा करके शतरंज में ही व्यस्त रहते हैं। वे अपनी बुरी आदतों के पक्ष में समाधान करते हुए कहते हैं कि शतरंज खेलने से बुद्धि तीक्ष्ण होती है। लेकिन उनकी तीक्ष्ण बुद्धि का कोई सामाजिक उपयोग कहानी में दिखा? नहीं न? स्पष्ट है कि किसी व्यक्ति का कोई भी पक्ष तब तक सकारात्मक नहीं बन पाता, जब तक कि उसका संबंध समूह के हित से न हो। इस कहानी में शतरंज, मीर और मिरज़ा- ये सब अपने आप में महत्वपूर्ण नहीं बल्कि इनके माध्यम से कही गई बात महत्वपूर्ण है। वही प्रेमचंद का उद्देश्य भी है। प्रेमचंद देश को गुलामी से मुक्त देखना चाहते थे, इसलिए उन्होंने गुलाम बनाने वाली स्थितियों का चित्रण करके पाठकों को आगाह किया है। इसके साथ-साथ यह भी बताया है कि मानसिक प्रवृत्तियों का भी संक्रमण होता है, अर्थात् एक वर्ग की बुरी आदतें, दूसरे वर्ग तक पहुँचती है। कहानी में नवाब, मीर, मिरज़ा सब निष्क्रिय, विलासी और सुख-सुविधाओं में डूबे हैं। वे संघर्ष करने से बचते हैं। इन बातों का असर जनता पर भी पड़ता है। इसलिए समाज का प्रत्येक व्यक्ति एक-दूसरे से टूटा, व्यक्तिगत राग-रंग में डूबा है। इसका परिणाम यह होता है कि न तो देश बचता है, न ही व्यक्ति। नवाब बंदी हो गए और मीर और मिरज़ा व्यक्तिगत झूठी शान के कारण एक-दूसरे की हत्या कर देते हैं। बचते हैं– खण्डहर, टूटी दीवारें, धूल-धूसरित मीनारें ये सब मिलकर मिरज़ा और मीर पर रोते हैं।

पाठगत प्रश्न-19.3

सर्वाधिक उपयुक्त विकल्प चुनकर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

1. 'मगर आपने उन्हें सिर चढ़ा रखा है, यह मुनासिब नहीं है। इस वाक्य में प्रयुक्त मुहावरे का अर्थ है-

   (क) बहुत लाड़-प्यार से बिगाड़ देना। ☐

   (ख) सिर पर उठा लेना। ☐

   (ग) दिमाग खराब करना। ☐

   (घ) हाँ में हाँ मिलाना। ☐

2. 'निखट्टू' शब्द है–

   (क) तत्सम ☐ (ख) तद्भव ☐

   (ग) देशज ☐ (घ) आगत ☐

3. 'शतरंज के खिलाड़ी' का उद्देश्य है–

   (क) शतरंज के खेल के प्रति विरक्ति प्रकट करना ☐

टिप्पणी

(ख) मीर और मिरज़ा के प्रति नाराजगी प्रकट करना ☐

(ग) गुलामी के कारणों के प्रति सचेत करना ☐

(ग) व्यक्तिगत स्वार्थों का चित्रण करना ☐

आपने क्या सीखा

- कहानी में नवाब वाजिद अली शाह के समय में लखनऊ के वातावरण के माध्यम से पतनशील सामंती प्रवृत्तियों का चित्रण किया गया है।
- प्रेमचंद ने यह कहानी लिखकर अपने समय की जनता और नेतृत्वशील वर्ग को आलस्य तथा विलास त्यागने तथा एकजुट होकर संघर्ष करने का संदेश दिया है।
- यह कहानी आज भी प्रासंगिक है, क्योंकि हमें किसी भी प्रकार की गुलामी से बचने का रास्ता दिखाती है।
- नवाबों की अकर्मण्यता के कारण लखनऊ अंग्रेज़ों के कब्जे में चला गया।
- प्रेमचंद की कहानियों में मुहावरों का भरपूर प्रयोग मिलता है।
- हिंदी भाषा के हिंदुस्तानी रूप का उपयोग किया गया है।

योग्यता-विस्तार

प्रेमचंद का जन्म उत्तर प्रदेश में वाराणसी के निकट लमही नामक गाँव में सन् 1880 में हुआ था। उनका वास्तविक नाम धनपतराय था। प्रारंभ में वे उर्दू में लिखते थे, लेकिन बाद में उन्होंने हिंदी को अपनाया।

हिंदी साहित्य के संदर्भ में जो प्रसिद्धि और लोकप्रियता प्रेमचंद को मिली, वह किसी और साहित्यकार को आज तक नहीं मिल पाई। इसका कारण प्रेमचंद के साहित्य के व्यापक सरोकार है। उनके समय में जितनी भी राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक तथा सांस्कृतिक समस्याएँ भी उन सब पर केन्द्रित साहित्य उन्होंने लिखा। प्रेमचंद की सहानुभूति देश के मामूली-से-मामूली आदमी के प्रति थी। उन्होंने किसानों, दलितों तथा स्त्रियों के पक्ष में साहित्य लिखा। उनके साहित्य को पढ़कर हम न केवल अपने देश की तत्कालीन परिस्थितियों का सच्चा चित्र बना सकते हैं, बल्कि अपने देश के लोगों के स्वभाव, रहन-सहन, भाषा और संस्कृति का ज्ञान प्राप्त कर सकते हैं। उनकी कहानियाँ और उपन्यास अपने समय की बात ही नहीं कहते, वे आज भी हमारे लिए पठनीय और प्रासंगिक हैं। ऐसी रचनाओं को ही कालजयी रचनाओं का दर्जा दिया जाता है। उनके साहित्य की इन्हीं विशेषताओं के कारण यदि उन्हें भारत का सांस्कृतिक राजदूत कहा जाए तो उचित ही होगा।

प्रेमचंद ने लगभग साढ़े तीन सौ कहानियाँ लिखीं हैं जो 'मानसरोवर' नाम से आठ खंडों में प्रकाशित हैं। उन्हें उपन्यास-सम्राट भी कहा जाता है। उनके महत्वपूर्ण उपन्यास हैं- सेवासदन, प्रेमाश्रम, निर्मला, रंगभूमि, गबन, कर्मभूमि, गोदान।

उन्होंने अपना एक प्रेस खोला और एक मासिक पत्रिका 'हंस' का प्रकाशन प्रारंभ किया। इस पत्रिका के माध्यम से उन्होंने भारत में प्रगतिशील साहित्य के लेखन और प्रकाशन में महत्वपूर्ण योगदान दिया। सन् 1936 में उनकी मृत्यु हो गई।

पाठांत प्रश्न

1. 'शतरंज के खिलाड़ी' कहानी के शीर्षक की सार्थकता पर विचार कीजिए।
2. मीर और मिरज़ा की मित्रता के सकारात्मक तथा नकारात्मक पक्षों का उल्लेख कीजिए।
3. 'जिसे आजीविका के लिए संघर्ष नहीं करना पड़ता, उसके जीवन में कुछ विकृतियाँ आ जाती हैं'– कहानी के आधार पर इस कथन पर विचार कीजिए।
4. कहानी के उद्देश्य पर विचार प्रस्तुत कीजिए।
5. भारत के स्वाधीनता-आंदोलन के संदर्भ में कहानी के महत्त्व पर विचार कीजिए।
6. कहानी में व्यक्त वातावरण की तुलना आज के वातावरण से करते हुए एक टिप्पणी लिखिए।
7. मिरजा और मीर के चरित्र की विशेषताओं का विश्लेषण कीजिए।

उत्तरमाला

पाठगत प्रश्न

19.1 1. (ख) 2. (ख) 3. (ग)

19.2 1. (ख) 2. (घ) 3. (घ)

19.3 1. (क) 2. (ग) 3. (ग)

20

उनको प्रणाम!

आपने अपने आस-पास ऐसे लोगों को देखा होगा, जिन्होंने अपने जीवन में भरपूर साहस और हौसले के साथ अथक प्रयास और संघर्ष किए, लेकिन किन्हीं कारणों से वे अपने लक्ष्य को प्राप्त नहीं कर सके। ऐसे लोगों को भी देखा होगा, जो बड़े ही ईमानदार, मेहनती, संघर्षशील और सदैव उत्साह से भरकर काम करते हैं। ज़रूरी नहीं कि ये लोग बहुत धनवान या सुविधा संपन्न ही हों, बल्कि कई बार तो लोगों को मामूली सुविधाओं का भी अभाव झेलना पड़ता है। अभावों में रहते हुए भी ये किसी से कोई शिकायत नहीं करते, दूसरों के आगे हाथ नहीं फैलाते, अपने अभावों का दूसरों के सामने रोना नहीं रोते। ऐसे लोग संघर्ष तो पूरी ईमानदारी से और पूरी शक्ति से करते हैं लेकिन हमेशा सफल नहीं होते। सफलता को ही सब कुछ मानने वाले समाज में ऐसे लोगों की उपेक्षा होती है। लेकिन आपके मन में ऐसे लोगों के प्रति श्रद्धा सम्मान का भाव ज़रूर होगा।

इस पाठ में कवि ने ऐसे ही लोगों के प्रति आदर और सम्मान का भाव प्रकट करते हुए उन्हें प्रणाम किया है। आइए, इस पाठ को पढ़ते हैं।

उद्देश्य

इस पाठ को पढ़ने के बाद आप–

- जीवन में साहस, संकल्प और संघर्ष का महत्त्व स्पष्ट कर सकेंगे;
- प्रतिकूल परिस्थितियों में तनाव को नियंत्रित करने के उपाय बता सकेंगे;
- सफलता और असफलता के विभिन्न पक्षों पर विचार प्रस्तुत कर सकेंगे;
- कविता में आए संदर्भों का स्पष्टीकरण कर सकेंगे;
- कविता के मार्मिक अंशों की व्याख्या कर सकेंगे;
- कविता की भाषा-शैली पर टिप्पणी कर सकेंगे।

20.1 मूल पाठ

टिप्पणी

उनको प्रणाम

जो नहीं हो सके पूर्ण–काम
मैं उनको करता हूँ प्रणाम।

कुछ कुंठित औ कुछ लक्ष्य–भ्रष्ट
जिनके अभिमंत्रित तीर हुए;
रण की समाप्ति के पहले ही
जो वीर रिक्त तूणीर हुए!
– उनको प्रणाम!

जो छोटी–सी नैया लेकर
उतरे करने को उदधि–पार;
मन की मन में ही रही, स्वयं
हो गए उसी में निराकार!
– उनको प्रणाम!

जो उच्च शिखर की ओर बढ़े
रह–रह नव–नव उत्साह भरे;
पर कुछ ने ले ली हिम–समाधि
कुछ असफल ही नीचे उतरे!
– उनको प्रणाम!

कृत–कृत्य नहीं जो हो पाए;
प्रत्युत फाँसी पर गए झूल
कुछ ही दिन बीते हैं, फिर भी
यह दुनिया जिनको गई भूल!
– उनको प्रणाम!

दृढ़ व्रत औ दुर्दम साहस के
जो उदाहरण थे मूर्ति–मत;
पर निरवधि बंदी जीवन ने
जिनकी धुन का कर दिया अंत!
– उनको प्रणाम!

शब्दार्थ

पूर्ण–काम	– सफल, वह व्यक्ति जो लक्ष्य प्राप्त कर ले
कुंठित	– भोथरा, जिसमें धार न हो
लक्ष्यभ्रष्ट	– निशाने से चूका हुआ
अभिमंत्रित	– मंत्र द्वारा पवित्र किया हुआ
रण	– युद्ध
रिक्त	– खाली
तूणीर	– तरकस (जिसमें तीर रखे जाते हैं)
नैया	– नाव
उदधि	– समुद्र
निराकार	– जिसका आकार न हो
समाधि	– किसी दिवंगत महापुरुष की स्मृति में निर्मित स्मारक या जहाँ पार्थिव शरीर या अस्थियाँ रखी गई हों,
कृत–कृत्य	– काम पूरा होने से मिलने वाली सार्थकता
प्रत्युत	– बल्कि, इसके विपरीत, वरन
दृढ़	– अटल, विचलित न होने वाला
व्रत	– संकल्प, प्रतिज्ञा
दुर्दम	– जिसे दबाना या वश में करना कठिन हो, प्रबल
मूर्तिमंत	– साकार, साक्षात
निरवधि	– जिसकी कोई निश्चित समय–सीमा न हो
धुन	– लगन, किसी कार्य में बराबर लगे रहने की प्रवृत्ति

टिप्पणी

अतुलनीय	– जिसकी तुलना न की जा सके
प्रतिकूल	– विपरीत
मनोरथ	– मन की कामना, अभिलाषा

उनको प्रणाम!

जिनकी सेवाएँ अतुलनीय
पर विज्ञापन से रहे दूर
प्रतिकूल परिस्थिति ने जिनके
कर दिए मनोरथ चूर-चूर!
– उनको प्रणाम!

–नागार्जुन

क्रियाकलाप-20.1

आपने 'उनको प्रणाम' कविता पढ़ी। इस कविता की 'कुछ कुंठित ... तूणीर हुए' पंक्ति को फिर से पढ़िए। इस पंक्ति में 'कुंठित', 'लक्ष्य-भ्रष्ट' और 'अभिमंत्रित' शब्दों का प्रयोग किसके लिए किया गया है? 'तीर' के लिए न! तो, ये शब्द 'तीर' की विशेषता को बता रहे हैं– कुंठित तीर, लक्ष्यभ्रष्ट तीर और अभिमंत्रित तीर। 'तीर' जैसा कि आप जानते हैं, एक वस्तु का नाम है और नाम को व्याकरण की शब्दावली में 'संज्ञा' कहा जाता है। कैसा तीर? जो शब्द यह बताएँ वे कहलाते हैं–विशेषण। इस तरह कुंठित, लक्ष्य-भ्रष्ट और अभिमंत्रित शब्द हुए विशेषण। ये शब्द जिसकी विशेषता बता रहे हैं यानी 'तीर', वह हुआ विशेष्य। इसी तरह 'साहसी बालक', 'चतुर व्यक्ति', 'काला घोड़ा', 'तीन लड़कियाँ' पर विचार करें। इनमें विशेषण हैं– साहसी, चतुर, काला और तीन। इनके विशेष्य हुए क्रमशः बालक, व्यक्ति, घोड़ा और लड़कियाँ। कविता की शेष पंक्तियों में से कुछ विशेष्य यहाँ दिए गए हैं, उनके लिए कविता में प्रयुक्त विशेषण/विशेषणों का उल्लेख कीजिए:

विशेष्य	विशेषण
नैया	
शिखर	
उत्साह	
समाधि	
व्रत	
साहस	
जीवन	
सेवाएँ	
परिस्थिति	

0.2 आइए समझें

20.2.1 अंश-1

आइए, कविता को ठीक से समझने के लिए पहले अंश को एक बार फिर से पढ़ लेते हैं जो हाशिए पर दिया गया है।

> जो नहीं हो सके पूर्ण-काम
> मैं उनको करता हूँ प्रणाम।
>
> कुछ कुंठित औ कुछ लक्ष्य-भ्रष्ट
> जिनके अभिमंत्रित तीर हुए;
> रण की समाप्ति के पहले ही
> जो वीर रिक्त तूणीर हुए!
> – उनको प्रणाम!

कविता की पहली दो पंक्तियों में कुछ लोगों के प्रति आदर का भाव प्रकट किया गया है। जानते हैं किन लोगों के प्रति? उन लोगों के प्रति जिन्होंने उद्देश्य को प्राप्त करने के लिए परिश्रम और संघर्ष तो बहुत किया, लेकिन जो किन्हीं कारणों से अपना लक्ष्य प्राप्त नहीं कर सके। जीवन में अपने लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए हर व्यक्ति कुछ-न-कुछ प्रयास करता है। कुछ लोग अपने प्रयास में सफल हो जाते हैं और लक्ष्य को प्राप्त कर लेते हैं, लेकिन कुछ ऐसे भी होते हैं, जो प्रयास तो करते हैं लेकिन लक्ष्य प्राप्त नहीं कर पाते। आमतौर पर सफल होने वालों का सम्मान किया जाता है लेकिन कवि ऐसे लोगों के संघर्ष के प्रति आदर का भाव प्रकट करते हुए उन्हें प्रणाम करता है जो सफल नहीं हो सके।

आगे की पंक्तियों में कवि ऐसे वीरों के बारे में बात कर रहा है जो युद्ध के मैदान में पूरी तैयारी और उत्साह के साथ गए थे। जिनके पास अभिमंत्रित तीर थे यानी ऐसे तीर थे जो लक्ष्य को भेदने में पूरी तरह सक्षम थे। मगर जब युद्ध हुआ तो किन्हीं कारणों से उनके तीर लक्ष्य को भेदने में नाकाम हो गए अर्थात् अपना कार्य ठीक से नहीं कर सके, अपने उद्देश्य में सफल नहीं हो सके। जो युद्ध के मैदान में गए तो लड़ने के लिए थे, लेकिन लड़ाई समाप्त होने से पहले ही उनके तरकस खाली हो गए। प्राचीन काल में धनुष और बाण का प्रयोग युद्ध में किया जाता था। बाणों अर्थात् तीरों को रखने के लिए योद्धा तरकस का उपयोग करते थे। कविता की इस पंक्ति में 'तूणीर' शब्द तरकस के लिए आया है। 'रिक्त तूणीर' का आशय तरकस का तीरों से खाली होना है। मान लीजिए कोई योद्धा लड़ाई के मैदान में लड़ने के लिए खड़ा हो और उसके तीर अपने लक्ष्य से निरंतर चूकते रहे, तरकस में एक भी तीर नहीं बचे तो उस समय उस योद्धा के मन की दशा कैसी होगी– इसका कुछ अनुमान आप आसानी से लगा सकते हैं।

आइए, कविता के आशय को एक बार और समझने का प्रयास करें। कवि का उद्देश्य यहाँ युद्ध के मैदान में तीर और तरकस के बारे में बात करना नहीं है। वह इनके माध्यम से लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए निरंतर संघर्षरत लोगों की ओर ध्यान आकर्षित करना चाहता है, जो साधनहीन होने के कारण असफल हो गए पर जिन्होंने अपने हौसले और हिम्मत में कमी नहीं आने दी। कवि हमारे भीतर उनके प्रति आदर का भाव पैदा करना चाहता है। कवि चाहता है कि हम ऐसे लोगों को सम्मान दें, जो सक्षम होने और प्रयास करने के बावजूद संसाधनों के अभाव में अपने लक्ष्य को प्राप्त नहीं कर पाए। कवि की दृष्टि में महत्त्वपूर्ण सफलता नहीं, लक्ष्य के लिए किया गया श्रम और संघर्ष है, उसके लिए अपेक्षित हौसला और हिम्मत है।

टिप्पणी

जो छोटी-सी नैया लेकर
उतरे करने को उदधि-पार;
मन की मन में ही रही, स्वयं
हो गए उसी में निराकार!
- उनको प्रणाम!

20.2.2 अंश- 2

आइए, कविता के दूसरे अंश को फिर से पढ़ें। आपकी सुविधा के लिए यह अंश हाशिए पर दिया गया है।

यहाँ कवि ऐसे लोगों की बात कर रहा है, जो छोटी नौका लेकर समुद्र को पार करने चले थे, लेकिन उनकी मनोकामना पूरी नहीं हो सकी और वे समुद्र में ही समा गए। यहाँ कवि ऐसे लोगों के साहस और प्रयत्नों का आदर करते हुए उन्हें प्रणाम करता है। आप भी ऐसे लोगों को जानते होंगे, जो साधनों के सीमित होने के बावजूद बड़े-से-बड़ा काम करने की ठान लेते हैं, भले ही अंत में वे लक्ष्य को प्राप्त न कर पाएँ। ऐसे लोगों में इतना साहस और ऐसी लगन होती है कि वे अपने प्राणों तक की चिंता नहीं करते।

जानते हैं कवि क्या कहना चाहता है? कवि के मन में बहादुर और साहसी लोगों के प्रति अपार आदर और सम्मान है। 'छोटी नैया' से कवि का आशय है—संसाधनों की कमी। यहाँ कविता में भाव के गांभीर्य और सौंदर्य पर ध्यान दीजिए। पार करना है 'उदधि' यानी विराट समुद्र और साधन है 'छोटी-सी नैया'। विराट समुद्र और छोटी-सी नाव का फर्क (कंट्रास्ट) उस साहस को उजागर करने में समर्थ है, जिसके सहारे जान की बाज़ी लगाकर लोगों ने संघर्ष किया। यह साहस और संघर्ष कवि को आकर्षित करता है, उसके सम्मान का विषय बनता है। एक तरफ़ ऐसे लोग हैं जो सारे साधनों के होने पर भी कोई सार्थक काम नहीं करते क्योंकि उनमें साहस, हिम्मत और लक्ष्य का बोध ही नहीं होता। दूसरी तरफ़ ऐसे लोग हैं जो अत्यंत सीमित, असमर्थ साधनों के होते हुए भी बड़ी-से-बड़ी चुनौती का सामना करने उतर पड़ते हैं, क्योंकि उनमें लक्ष्य का बोध है और साहस, हिम्मत भी है।

आइए, एक उदाहरण से इसे समझते हैं। वास्को-डि-गामा का नाम आपने सुना होगा। उसे पूरी दुनिया जानती है। वास्को-डि-गामा ने एक नौका लेकर समुद्र के रास्ते भारत की खोज की थी। समुद्र में यात्रा करते हुए उसने अपने लक्ष्य को प्राप्त करने में सफलता पा ली। हमें ऐसे लोगों के परिश्रम, उत्साह और उपलब्धियों का आदर करना चाहिए। लेकिन, बहुत से ऐसे नाविक भी रहे होंगे, जिन्होंने समुद्री मार्ग से दुनिया के दूसरे देशों की खोज करने के अथक प्रयास किए होंगे, पर उन्हें सफलता नहीं मिली और वे अथाह पानी में समा गए अर्थात् मृत्यु को प्राप्त हो गए। उनके अनुभवों से सीखते हुए ही वास्को-डि-गामा अपने लक्ष्य को प्राप्त कर सका और दुनिया में अपना नाम रोशन कर सका। आज हम उन तमाम नाविकों का नाम नहीं जानते, लेकिन इससे उनके प्रयास और बहादुरी का महत्त्व कम नहीं हो जाता। इसीलिए कहा जाता है कि परिश्रम और संघर्ष कभी बेकार नहीं जाता, हमें उसका सम्मान करना चाहिए।

तभी तो कवि भी ऐसे ही तमाम गुमनाम नाविकों को आदर के साथ प्रणाम करता है, जो प्रयत्न करने के बाद भी अपने लक्ष्य को प्राप्त करने में सफल नहीं हो सके।

'मन की मन में ही रही' से कवि का आशय है—चाही हुई बात का पूरा न हो पाना, सपनों का साकार न हो पाना।

कवि ने कविता में एक जगह 'निराकार' शब्द का प्रयोग किया है। निराकार का अर्थ होता है–जिसका कोई आकार न हो। यहाँ 'निराकार' होने से कवि का आशय उन अनाम लोगों के जीवन का अंत होने से है, जिन्होंने पूरे साहस के साथ अपने लक्ष्य को पाने की कोशिश की, लेकिन असफल होने के कारण इतिहास में खो गए। उनके साकार रहने का अर्थ है जीते-जागते हुए काम करना और निराकार होने का अर्थ है उनका न रहना, मृत्यु की गोद में सो जाना या इतिहास में खो जाना।

पाठगत प्रश्न-20.2

सर्वाधिक उपयुक्त विकल्प चुनकर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

1. 'रिक्त तूणीर होने' का अभिप्राय है–

   (क) अनुभवहीनता (ख) कुंठित होना

   (ग) विफल होना (घ) साधन की कमी

2. कविता में लक्ष्य-भ्रष्ट प्रयुक्त हुआ है–

   (क) वीर के लिए (ख) तीर के लिए

   (ग) तूणीर के लिए (घ) युद्ध के लिए

3. 'निराकार' शब्द का प्रयोग किस अर्थ में हुआ है–

   (क) भाव का स्पष्ट न हो पाना (ख) सपने साकार न होना

   (ग) इच्छा पूरी न होना (घ) विलीन हो जाना

4. 'छोटी-सी नैया' का कविता में आशय है–

   (क) नाव का छोटा आकार (ख) संसाधनों की कमी

   (ग) कम उत्साह (घ) इच्छा न होना

20.2.3 अंश-3

आइए, अब हाशिए पर दिए गए तीसरे अंश को फिर से पढ़ लेते हैं।

इन पंक्तियों में कवि ने ऐसे उत्साही लोगों का ज़िक्र किया है, जो बर्फ़ानी पहाड़ की सबसे ऊँची चोटी पर पहुँचना चाहते थे। केवल चाहते ही नहीं थे–इसके लिए उन्होंने कोशिश भी की। कोशिश भी एक बार नहीं, अनेक बार, फिर-फिर अपने उत्साह को बटोर कर। पिछली असफलता को भुलाकर फिर नया उत्साह, नया प्रयास! आदर करने लायक ही हैं न ऐसे लोग! कवि भी ऐसे लोगों को प्रणाम कर रहा है, भले ही इनमें से कुछ तो बर्फ़ में दबकर रह गए हों और कुछ ऐसे भी हों जो असफल होकर वापस लौट आये हों।

जो उच्च शिखर की ओर बढ़े
रह-रह नव-नव उत्साह भरे;
पर कुछ ने ले ली हिम-समाधि
कुछ असफल ही नीचे उतरे!
– उनको प्रणाम!

उनको प्रणाम!

हिमालय की सबसे ऊँची चोटी पर चढ़ने वाले तेनज़िंग को पूरी दुनिया जानती है, लेकिन हिमालय के शिखर पर चढ़ने का प्रयास करने वाले तेनज़िंग पहले व्यक्ति नहीं थे। उनसे पहले भी न जाने कितने लोगों ने उस शिखर पर चढ़ने की कोशिश की होगी, लेकिन सफल नहीं हुए। इससे उन तमाम असफल लोगों का प्रयास बेकार नहीं हो जाता, बल्कि उनके अनुभवों से सीख-सीख कर ही तेनज़िंग शिखर पर पहुँचने में सफल हो सके।

कवि इन पंक्तियों में उन लोगों को प्रणाम करने की इच्छा व्यक्त करता है, जो गए तो थे बर्फ़ीले शिखरों पर चढ़ने के लिए, परंतु बर्फ़ खिसक जाने या ऐसी ही किसी विपत्ति के कारण बर्फ़ के नीचे ही दब गए। सामान्य लोग किसी की सफलता और असफलता को देखते हैं और सफलता को महत्त्व देते हैं, लेकिन कवि असफलता के पीछे छिपे प्रयत्नों को भी देखता है। उसके लिए लक्ष्य-प्राप्ति के लिए किए गए प्रयासों का महत्त्व सफलता से कम नहीं अधिक है। ऐसे लोगों को कवि इसीलिए बार-बार प्रणाम करता है।

शिखर का अर्थ होता है– ऊँचाई। यहाँ संकेत है– जीवन के उच्च आदर्श, मानवीय जीवन की ऊँचाइयों पर पहुँचने की आकांक्षा, श्रेष्ठतम मानव-मूल्यों की उपलिब्ध आदि। हिम-समाधि का सामान्य अर्थ आप पढ़ चुके हैं। हिम यानी बर्फ़– ठंडा। हिम या ठंडा पड़ने का भी मानव-व्यवहार में संकेतार्थ होता है। ठंडा पड़ने का अर्थ है– मृतप्राय होना। यहाँ कवि कहना चाहता है कि जिन लोगों ने जोश-खरोश के साथ उच्च जीवनादर्शों के लिए संघर्ष किया किंतु सफल नहीं हो सके, उनका भी बड़ा योगदान है, क्योंकि उन्होंने आदर्शों, मानवीय गरिमा और जीवन-मूल्यों के लिए प्रयास किया।

क्रियाकलाप-20.1

1. आपने इस कविता में 'उदधि' शब्द पढ़ा, जिसका अर्थ है– समुद्र।

   समुद्र के समान अर्थ वाले अन्य शब्द हैं– जलधि, अंबुधि, वारिधि आदि।

   जल, अंबु, वारि–ये पानी के समानार्थक हैं। 'धि' का अर्थ होता है– धारण करने वाला। तो, जलधि का अर्थ हुआ– जल को धारण करने वाला यानी समुद्र। अर्थात् 'जल' के समानार्थक शब्दों में 'धि' जोड़कर समुद्र के पर्यायवाची बनाये जा सकते हैं।

   इसी तरह, एक शब्द है–जलद। इसमें 'जल' के साथ 'द' जुड़ा है। 'द' का अर्थ है– देने वाला। तो, जलद का अर्थ हुआ– जल देने वाला यानी बादल। आपने 'जलज' शब्द भी पढ़ा होगा। 'ज' का अर्थ होता है– उत्पन्न या पैदा होना। जो जल में उत्पन्न हो वह जलज।

   आप यहाँ पानी के समानार्थक शब्दों में 'द' जोड़कर बादल और 'ज' जोड़कर कमल के पर्यायवाची बनाइए:

   ....

टिप्पणी

20.2.4 अंश - 4

आइए, आगे बढ़ने से पहले कविता के अगले अंश को फिर से पढ़ लेते हैं।

इन पंक्तियों के माध्यम से कवि के कहने का आशय यह है कि बहुत से देशभक्त ऐसे थे, जिन्होंने देश को स्वतंत्र कराने के लिए अपने प्राणों की बाज़ी लगा दी, लेकिन जो आज़ादी का सुख नहीं ले पाए। ऐसे त्यागी व्यक्तियों तथा निस्वार्थ भाव से काम करने वालों को हम जल्दी ही भूल गए, जबकि ऐसे लोगों को हमें सदैव याद रखना चाहिए था। कवि यहाँ पर हमारी एक कमी की ओर संकेत कर रहा है, वह यह कि हम सभी अच्छी-बुरी बातें जल्दी ही भूल जाते हैं। हम उन त्यागी-वीरों को भी बहुत जल्दी भूल जाते हैं, जिनके बलिदान के कारण हम आज अस्तित्व में हैं, स्वतंत्र हैं। हमें अच्छी बातों को याद रखकर उनसे प्रेरणा लेनी चाहिए और बुरी बातों को भुलाकर आगे बढ़ना चाहिए। इसमें कवि ने उन लोगों को याद करके प्रणाम किया है, जिनके संघर्ष और बलिदान के कारण ही हम आज स्वतंत्र देश के नागरिक हैं।

कृत-कृत्य नहीं जो हो पाए;
प्रत्युत फाँसी पर गए झूल
कुछ ही दिन बीते हैं, फिर भी
यह दुनिया जिनको गई भूल!
- उनको प्रणाम!

दृढ़ व्रत औ दुर्दम साहस के
जो उदाहरण थे मूर्ति-मंत;
पर निरवधि बंदी जीवन ने
जिनकी धुन का कर दिया अंत!
- उनको प्रणाम!

आप यह जानते हैं कि देश को अंग्रेज़ी शासन से आज़ाद कराने के लिए बहुत से लोगों ने अथक प्रयास किए। चंद्रशेखर आज़ाद, भगत सिंह, राजगुरु, सुखदेव, रामप्रसाद बिस्मिल, अशफ़ाक उल्ला खाँ, राजेन्द्र सिंह लाहिड़ी, रोशन सिंह आदि का नाम आपने ज़रूर सुना होगा। देश को आज़ाद कराने वाले इन वीर सपूतों को अंग्रेज़ों ने फाँसी पर लटका दिया था। लेकिन, इनके अलावा और भी बहुत से ऐसे लोग थे, जो आज़ादी की लड़ाई लड़ रहे थे। हम उनके नाम तो नहीं जानते, पर उनके प्रयत्न को कम करके नहीं आँका जा सकता।

इन पंक्तियों में कवि उन क्रांतिकारी वीरों को प्रणाम करता है, जो 'कृत-कृत्य' नहीं हो सके अर्थात् अपने किए काम का परिणाम नहीं देख सके।

आगे की पंक्तियों में कवि ने कुछ विशिष्ट शब्दों का प्रयोग किया है, वे शब्द हैं– दृढ़, व्रत, दुर्दम और मूर्तिमंत। यहाँ 'दृढ़' शब्द का अर्थ है– अटल, अर्थात् जिसे टाला न जा सके। 'दृढ़' शब्द का प्रयोग सबल, मज़बूत और कठिन के अर्थ में भी किया जाता है। 'व्रत' शब्द का प्रयोग यहाँ कवि ने संकल्प अर्थात प्रतिज्ञा के अर्थ में किया है। इस प्रकार, दृढ़व्रत का अर्थ हुआ–ऐसा संकल्प जो डिगे नहीं, टूटे नहीं।

'दुर्दम' का अर्थ है– जिसे दबाया न जा सके अर्थात् प्रबल। यहाँ 'दुर्दम साहस' से कवि का आशय ऐसे साहस से है, जिसे दबाया न जा सके।

टिप्पणी

उनको प्रणाम!

इन पंक्तियों में कवि ऐसे लोगों की बात करता है, जो दृढ़व्रती और दुर्दम साहस की जीती–जागती मूर्ति थे।

यहाँ कवि उन लोगों के प्रति भी नतमस्तक है, जो साहस से भरे हुए थे और जिनका संकल्प अटूट था, बल्कि यूँ कहिए कि जो स्वयं साहस और संकल्प की साक्षात प्रतिमा थे। ऐसे लोगों को जेल में डाल दिया गया और वह भी निश्चित दिनों, महीनों, वर्षों के लिए नहीं, बल्कि निरवधि समय के लिए अर्थात् अनंत काल के लिए यानी जीवन भर के लिए। वे लोग आज़ादी को पाने के लिए दीवाने थे। उन्होंने तमाम दुनियादारी को भूलकर आज़ादी पाने को ही अपना परम लक्ष्य मान लिया था। कवि ने इसी के लिए 'धुन' शब्द का प्रयोग किया है। इस अनंत काल के कारावास के कारण उनकी यह इच्छा पूरी नहीं हो सकी।

पाठगत प्रश्न-20.3

सर्वाधिक उपयुक्त विकल्प चुनकर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

1. हिम समाधि का अर्थ है

   (क) बर्फ जैसी सफ़ेद समाधि ☐ (ख) बर्फ़ का चबूतरा ☐

   (ग) बर्फ़ के नीचे दब कर मर जाना ☐ (घ) बर्फ़ीले प्रदेश के कष्टों को झेलना ☐

2. कवि सफलता से अधिक महत्त्व किसे देता है?

   (क) बाधाओं को ☐ (ख) प्रयत्नों को ☐

   (ग) असफलता को ☐ (घ) प्रसिद्धि को ☐

3. यह दुनिया किन्हें भूल गई है:

   (क) प्रसिद्ध स्वतंत्रता सेनानियों को

   (ख) स्वतंत्रता आंदोलन को दबाने वालों को

   (ग) फाँसी पर चढ़े अनाम लोगों को

   (घ) कुछ दिन पहले की घटनाओं को

4. कौन-सा विशेषण 'साहस' के लिए ठीक नहीं है–

   (क) अपूर्व (ख) दुर्दम

   (ग) दृढ़ (घ) असीम

20.2.5 अंश-5

आइए आगे बढ़ते हैं और कविता के अंतिम अंश की पाँच पंक्तियों को एक बार फिर ध्यान से पढ़ लेते हैं।

कविता की इन पंक्तियों में ऐसे लोगों के बारे में बताया गया है, जिनकी सेवाओं की तुलना किसी से नहीं की जा सकती तथा जिन्होंने निस्स्वार्थ, समर्पित भाव से समाज और राष्ट्र की सेवा की। इन लोगों ने अपने कार्यों का कभी प्रचार नहीं किया। आशय यह है कि दिन-रात देश, समाज और राष्ट्र की सेवा में समर्पित ऐसे लोगों ने अपने त्याग और बलिदान को देश के प्रति अपना कर्त्तव्य समझा। उन्होंने श्रेय पाने की चिंता कभी नहीं की। इनका नाम किसी अख़बार या किताब में नहीं छपा।

जिनकी सेवाएँ अतुलनीय
पर विज्ञापन से रहे दूर
प्रतिकूल परिस्थिति ने जिनके
कर दिए मनोरथ चूर-चूर।

—उनको प्रणाम!

आप जानते होंगे कि कई लोग ऐसे होते हैं जो काम कम करते हैं, पर अपना प्रचार बढ़ा-चढ़ाकर करते हैं। ऐसे लोगों को दुनिया जानने लगती है। पर ऐसे भी लोग होते हैं, जो बहुत काम करने पर भी आत्मप्रचार से दूर रहते हैं। कवि ऐसे लोगों को आदर के साथ प्रणाम करता है। वह इन अनाम लोगों की सेवाओं को महत्त्वपूर्ण मानता है। राष्ट्र के निर्माण की नींव में इनकी सेवाओं का महत्त्वपूर्ण योगदान है। कार्य करते हुए ऐसी परिस्थितियाँ भी आती हैं कि किसी के सपने चूर-चूर हो जाएँ, लेकिन इससे सपनों का महत्त्व कम नहीं हो जाता। कवि उन लोगों के महत्त्व पर बार-बार बल देता है जो मानवता और देश के सुखमय भविष्य के सपने देखते हैं और उसके लिए प्रयत्न करते हैं, भले ही वे उन सपनों को पूरा होते न देख सकें। यदि कोई मनुष्य भविष्य के विषय में कोई अच्छा विचार देता है, तो उस विचार पर उसके बाद भी अमल करने वाले लोग पैदा होते हैं और एक न एक दिन उसके विचारों को लेकर समाज आगे बढ़ता है।

टिप्पणी

आइए, दो शब्दों के बीच अंतर को समझें। वे शब्द हैं— सफलता और सार्थकता। इनके बारे में आप 'नाखून क्यों बढ़ते हैं?' पाठ में भी पढ़ रहे हैं।

सफलता व्यक्तिगत या निजी भी हो सकती है, पर सार्थकता सामाजिक होती है। वही कार्य या व्यक्ति सार्थक है जो समाज के भले के लिए हो। कविता के अंतिम अंश में कवि ने सार्थक प्रयासों को प्रणाम किया है।

क्रियाकलाप-20.2

कभी-कभी आपको लगा होगा कि किसी कार्य के पूर्ण हो जाने पर सफलता का श्रेय उन लोगों को नहीं मिल पाता, जिन्हें मिलना चाहिए। ऐसा क्यों होता है? किन्हीं दो उदाहरणों के माध्यम से उल्लेख कीजिए।

टिप्पणी

20.3 भाव-सौंदर्य

आपने 'उनको प्रणाम' कविता को पढ़ और समझ लिया है। आपने यह भी जान लिया है कि कवि उन लोगों के प्रति सम्मान व्यक्त कर रहा है, जो नींव की ईंटों की तरह हैं, जिनके ऊपर पूरी इमारत टिकी होती है। ये लोग कंगूरों की भाँति सबको दिखाई नहीं देते। आम आदमी उन कंगूरों को देखता है और सराहता है, लेकिन उसका ध्यान उन ईंटों की ओर नहीं जाता जो नींव में दबी हैं। कवि ने उन्हीं ईंटों को महत्त्व दिया है, जो पूरी इमारत के वज़न को बर्दाश्त किए हुए हैं।

आम धारणा यह है कि नायक वे ही होते हैं, जो कामयाब हो जाते हैं। कहावत भी है–जो जीता वही सिकंदर। कवि नागार्जुन इस सोच को तोड़कर आम आदमी का ध्यान इस ओर ले जाते हैं कि महानायक वे भी हैं जो बड़े उद्देश्यों को पूरा करने के लिए जीवन-भर जूझते रहे और संकटों के बावजूद जिन्होंने हार नहीं मानी। जीतने वाला राजा बन सकता है, सिकंदर शासक ही था, लेकिन नायक तो वही है जिन्होंने हार नहीं मानी, भले ही साधनों के अभाव, परिस्थितियों की प्रतिकूलता तथा दमन करने वालों ने उनके सपनों को पूरा नहीं होने दिया। कवि फल को नहीं, कर्म को प्रधानता देता है। वह मानता है कि कर्मरत लोगों का संघर्ष व्यर्थ नहीं जाता, क्योंकि आने वाली पीढ़ियाँ इस संघर्ष को आगे ले जाती हैं और अंततः मानव-समाज उनके फल का सुख भोगता है।

इस भाव को व्यक्त करने के लिए कवि ने योद्धाओं, नाविकों, पर्वतारोहियों, आंदोलनकारियों और विचारकों के उदाहरण दिए हैं। इन क्षेत्रों में अपने जीवन में सफलता पाने वाले लोगों के नाम तो इतिहास में दर्ज़ हैं, पर इन कामों को आरंभ करने और आगे बढ़ाने वाले लाखों ऐसे लोग हैं जो गुमनाम रह गए। कवि के अनुसार वे भी उतने ही सम्मान के अधिकारी हैं।

इसीलिए हर चरण के बाद कवि ने 'उनको प्रणाम' दोहराया है। नागार्जुन जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में ऐसे संघर्षशील और सार्थक व्यक्तियों के प्रति हमेशा ध्यान दिखाते रहे जिन्हें उपेक्षा और असफलता का सामना करना पड़ा।

20.4 भाषा-सौंदर्य

नागार्जुन की कविताओं में संस्कृतनिष्ठ शब्दावली भी है और ठेठ देसी शब्द भी नागार्जुन का शब्द-चुनाव भाव दृश्य और परिस्थिति को उकेरने में सक्षम होता है। 'उनको प्रणाम' कविता में संस्कृतनिष्ठ शब्दों तथा अनेक सामासिक पदों का प्रयोग हुआ है, जैसे– पूर्ण-काम, लक्ष्य-भ्रष्ट, उद‍्धि-पार, कृत-कृत्य, हिम-समाधि आदि। ये सामासिक पद अनेक शब्दों के लिए एक शब्द भी हैं। इनका प्रयोग करके कोई भी रचनाकार या लेखक भाषा के अनावश्यक प्रयोग से बच सकता है।

टिप्पणी

आपका भी ध्यान इस बात पर ज़रूर गया होगा कि इस कविता में भावों के अनुकूल भाषा का उपयोग है। इस कविता के अधिकतर शब्द 'तत्सम' हैं– यह हम जान चुके हैं। संस्कृतनिष्ठ शब्दों को 'तत्सम' कहते हैं। कविता में आए कुछ तत्सम शब्द देखिए–

कुंठित, लक्ष्य-भ्रष्ट, अभिमंत्रित, उदधि, नव, दुर्दम, मनोरथ।

लेकिन, साथ ही 'नैया' और 'धुन' जैसे शब्द बोलचाल की भाषा के हैं। 'धुन' संगीत की भी होती है, लेकिन यहाँ धुन का अर्थ है– 'लगन'। जो व्यक्ति किसी कार्य में दृढ़ता से लग जाता है उसे 'धुन का पक्का' कहा जाता है।

इसी प्रकार, छोटी-सी नैया लेकर समुद्र पार करने चल पड़े जो नाविक समुद्र की लहरों में ही समा गये, उन्हें आदर देते हुए कवि ने उनकी मृत्यु को 'निराकार' होना बताया है। वे अपना भौतिक अस्तित्व-साकार रूप खो देते हैं। निराकार का एक अर्थ ब्रह्म होता है। साहसी वीर को 'निराकार' बताकर कवि ने उसकी मृत्यु को गौरव प्रदान किया है। भाषा-प्रयोग द्वारा साधारण तथ्य किस प्रकार गरिमा मंडित होता है, उसका यह उदाहरण है।

पाठगत प्रश्न-20.4

सर्वाधिक उपयुक्त विकल्प चुनकर पूछे गये प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

1. विज्ञापन का अर्थ है–

   (क) सूचना ☐ (ख) ज्ञापन ☐

   (ग) आदेश ☐ (घ) प्रचार ☐

2. 'प्रतिकूल परिस्थिति ने जिनके कर दिए मनोरथ चूर-चूर' का आशय है–

   (क) विपरीत परिस्थितियों ने कामनाओं को पूरा नहीं होने दिया। ☐

   (ख) प्रतिकूल परिस्थितियों पर विजय पा ली गई। ☐

   (ग) परिस्थितियों के अनुकूल स्वयं को ढाल लिया। ☐

   (घ) प्रतिकूल परिस्थितियों में भी अपने लक्ष्य को पा लिया। ☐

3. सपने देखना कब सार्थक है?

   (क) जब वे सच हो सकें ☐

   (ख) जब उनका प्रचार किया जा सके ☐

   (ग) जब उनके लिए प्रयास किए जाएँ ☐

   (घ) जब उनका अनुकरण किया जा सके ☐

टिप्पणी

आपने क्या सीखा

- जीवन में सफलता से अधिक महत्त्व प्रयत्न और संघर्ष का है।
- जिन लोगों ने देश और समाज के पक्ष में संघर्ष किया है, उनके संघर्ष का सम्मान किया जाना चाहिए।
- हमारी उपलब्धियों के पीछे असंख्य-अनाम लोगों का योगदान है। उनका जीवन भले ही सफल न कहा जाय, पर सार्थक ज़रूर कहा जाएगा, क्योंकि हमारी उपलब्धियों के पीछे उनके संघर्ष का बड़ा योगदान होता है।
- सफलता व्यक्तिगत भी हो सकती है, लेकिन वह सार्थक तभी है जब ज़्यादा से ज़्यादा लोगों के भले के लिए हों।
- यह कविता छंद में है और इसकी भाषा तत्सम प्रधान है।

योग्यता विस्तार

नागार्जुन का जन्म 1911 में दरभंगा (बिहार) के तरौनी ग्राम में हुआ था। उनका असली नाम वैद्यनाथ मिश्र था। साहित्य-समाज में उन्हें आदर देने के लिए बाबा नागार्जुन कहा जाता है।

नागार्जुन हिन्दी के एक बड़े व्यंग्यकार हैं। वे प्रगतिवादी काव्यधारा के कवि हैं। उन्होंने अपनी व्यंग्यपरक कविताओं में शोषक-व्यवस्था का कच्चा चिट्ठा खोला है। उनकी कविता में दलितों-शोषितों और उपेक्षितों लिए गहरी सहानुभूति का भाव है। अपने भाव और अनुभव के विस्तार की ही तरह उनकी कविता में भाषा और छंद का भी व्यापक संसार है। उन्होंने तत्सम, तद्भव देशज, और आगत (विदेशी मूल के) शब्दों प्रयोग आवश्यकता के अनुसार किया है। इसी प्रकार उन्होंने संस्कृत के छंदों से लेकर मुक्तछंद और छंदमुक्त छंदों का प्रयोग सफलतापूर्वक किया है। उन्होंने मैथिली, संस्कृत, बांगला और हिंदी भाषाओं में काव्य-रचना की। उन्होंने साहित्य की अनेक विधाओं में लेखन किया उपन्यास है–रतिनाथ की चाची, बलचनमा, बाबा बटेसरनाथ, वरुण के बेटे आदि। हिंदी में प्रकाशित उनके प्रमुख काव्य-संग्रह हैं–'युगधारा', 'प्यासी पथराई आँखें', 'सतरंगे पंखों वाली', 'तालाब की मछलियाँ', 'हज़ार-हज़ार बाँहों वाली', 'पुरानी जूतियों का कोरस', 'तुमने कहा था', 'पका है यह कटहल', 'अपने खेत में' आदि।

मैथिली में वे 'यात्री' उपनाम से लिखते थे। मैथिली में उनका कविता-संग्रह है- 'पत्रहीन नग्न गाछ'।

टिप्पणी

पाठांत प्रश्न

1. 'उनको प्रणाम' शीर्षक की सार्थकता का क्या महत्त्व है? क्या आप इस शीर्षक से सहमत हैं, क्यों? तर्कसहित उत्तर दीजिए।
2. कवि कविता के हर पद के अंत में 'उनको प्रणाम' क्यों कहता है?
3. कविता का मूल भाव क्या है?
4. 'उदधि-पार' करने से कवि का क्या आशय है?
5. कवि इस कविता में किन लोगों के प्रति आदर का भाव प्रकट करता है?
6. जो छोटी-सी नैया लेकर
   उतरे करने को उदधि पार,

   इन पंक्तियों का आशय स्पष्ट कीजिए।
7. 'जिनकी धुन का कर दिया अंत' से कवि का क्या आशय है?
8. यदि देशभक्त अपना बलिदान न देते तो आज हमारी क्या स्थिति होती? तर्क सहित लिखिए।
9. निम्नलिखित कविता को ध्यानपूर्वक पढ़िए और पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए:

   मैं हूँ उनके साथ खड़ी
   जो सीधी रखते अपनी रीढ़।

   कभी नहीं जो तज सकते हैं
   अपना न्यायोचित अधिकार,
   कभी नहीं जो सह सकते हैं
   शीष नवाकर अत्याचार,
   एक अकेले हों या उनके
   साथ खड़ी हो भारी भीड़,

   मैं हूँ उनके साथ खड़ी
   जो सीधी रखते अपनी रीढ़।

   निर्भय होकर घोषित करते
   जो अपने उद्गार-विचार
   उनकी जिह्वा पर होता है
   उनके अंतर का अंगार
   नहीं जिन्हें चुप कर सकती है
   आतताइयों की शमशीर

मैं हूँ उनके साथ खड़ी
जो सीधी रखते अपनी रीढ़।

(क) 'रीढ़ सीधी रखने' क्या का तात्पर्य है?

(ख) क्या दूसरों के साथ मिलकर ही संघर्ष किया जा सकता है? तर्क सहित विचार कीजिए।

(ग) आपके अनुसार कविता में 'मैं' का प्रयोग किसके लिए किया गया है?

(घ) 'जिनकी जिह्वा पर होता है उनके अंतर का अंगार' का आशय स्पष्ट कीजिए।

(ङ) कविता का उचित शीर्षक दीजिए।

उत्तरमाला

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

20.1 1. (घ) 2. (ख) 3. (घ), 4. (ख)

20.2 1. (घ), 2. (ख), 3. (घ), 4. (ग)

20.3 1. (ग), 2. (ख), 3. (ग), 4. (ग)

20.4 1. (घ), 2. (क), 3. (ग)

21

पत्र कैसे लिखें

आजकल जब कोई घर से बाहर जाता है, तो घर वाले कहते हैं कि फ़ोन ज़रूर कर देना कि ठीक-ठाक पहुँच गए। पर, जहाँ फ़ोन की सुविधा न हो तो कोई क्या करे? जी हाँ! पत्र लिखकर अपनी ख़ैरियत घर वालों को बता सकता है। वैसे अपने मन में उठ रहे भावों-विचारों को अपनों तक पहुँचाने के लिए पत्र लिखने और अपनों के लिखे पत्र पढ़ने का आनंद ही कुछ और है। इन्हें कभी भी पढ़ा जा सकता है और कितनी ही बार पढ़ा जा सकता है।

आपने अपने जीवन में पत्र अवश्य लिखे होंगे। जब आप कहीं बाहर गए होंगे, तो अपने दोस्त को चिट्ठी लिखकर वहाँ के बारे में बताया होगा। अपने किसी रिश्तेदार को उसकी चिट्ठी का जवाब दिया होगा या अपने जन्म-दिन पर बुलाने के लिए अपने दोस्तों को निमंत्रण-पत्र भेजा होगा। या फिर कभी-कभी बिजली पानी की शिकायत भी पत्र लिखकर करनी पड़ी होगी। हो सकता है, आपने कभी आवश्यकता पड़ने पर राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान (एन.आई.ओ.एस.) या ऐसी ही किसी और संस्था से पत्र-व्यवहार किया हो। आइए सीखें कि हम अपनी व्यक्तिगत एवं औपचारिक बातों को किस प्रकार पत्र की सहायता से व्यक्त कर सकते हैं।

उद्देश्य

इस पाठ को पढ़ने के बाद आप—

- औपचारिक तथा अनौपचारिक पत्र-लेखन में अंतर बता सकेंगे;
- पत्रों के विभिन्न प्रकार के रूप तथा शैली का उल्लेख कर सकेंगे;
- पत्र-लेखन के समय पत्रों के अलग-अलग अंगों का ठीक प्रकार से प्रयोग कर सकेंगे;
- आवश्यकता के अनुसार उचित विधि से औपचारिक तथा अनौपचारिक पत्र लिख सकेंगे;
- संचार के एक सशक्त माध्यम के रूप पत्र लेखन कर सकेंगे।

टिप्पणी

21.1 पत्र-लेखन के प्रकार

आप जानते होंगे कि आप जिस तरह अपने दोस्तों को पत्र लिखते हैं, अपने समन्वयक को ठीक उसी तरह नहीं लिखते। अपने दोस्त को आप 'प्रिय' से संबोधित करते हैं तथा अपने कार्यक्रम समन्वयक के लिए 'महोदय' संबोधन का प्रयोग करते हैं। इसके अलावा दोस्त को पत्र लिखते समय आप उसके परिवार के लोगों का हाल-चाल पूछते हैं और अपने परिवार के लोगों के बारे में बताते हैं, लेकिन अपने समन्वयक को पत्र लिखते समय उनके परिवार के सदस्यों के बारे में नहीं पूछते, न अपने परिवार का हालचाल बताते हैं। इस तरह की अन्य बहुत-सी बातें हैं, जहाँ हमें अंतर करना होता है। आइए, इस अंतर को समझने से पहले पत्रों के प्रकारों के बारे में जान लें।

हम जितनी भी तरह के पत्र लिखते हैं, उन्हें सुविधा के लिए दो वर्गों में रख सकते हैं।

क) अनौपचारिक पत्र

ख) औपचारिक पत्र

21.1.1 अनौपचारिक पत्र

हम अपने मित्रों को पत्र लिखते हैं, परिवार के सदस्यों को पत्र लिखते हैं तथा अपने किसी परिचित को पत्र लिखते हैं। इन लोगों को लिखे गए पत्र **अनौपचारिक पत्र** होते हैं। 'अनौपचारिक' शब्द से तात्पर्य है– किसी प्रकार की औपचारिकता का न होना अर्थात् कुछ कहने के लिए हमें किसी प्रकार की अनुमति न लेनी पड़े, या कुछ कहने के लिए 'धन्यवाद' जैसे आभार-प्रदर्शन के शब्द न कहने पड़ें। इसका कारण यह है कि इस तरह के अनौपचारिक पत्रों में पत्र लिखने वाले और पत्र पाने वाले के बीच नज़दीकी या घनिष्ठ संबंध होता है। यह संबंध पारिवारिक हो सकता है, दोस्ती का हो सकता है या जान-पहचान का भी हो सकता है। इस तरह के पत्रों को **व्यक्तिगत पत्र** भी कहते हैं।

अनौपचारिक पत्रों को हम इस वृक्ष आरेख द्वारा समझ सकते हैं :

अनौपचारिक पत्र (व्यक्तिगत पत्र)

- **बड़ों को**
  - पिता जी, माता जी
  - बड़े भाई, बड़ी बहन
  - दादा जी, दादी जी, चाचा जी, मामा जी आदि।
- **बराबर वालों को**
  - मित्र
  - सहपाठी
  - परिचित
- **छोटों को**
  - संबंधी
  - परिचित

यह आप जान गए कि अपनों की भावनाओं से भरे हुए पत्र ही व्यक्तिगत पत्र कहलाते हैं। ये भावनाएँ व्यक्ति और सूचनाओं के स्वरूप के साथ बदलती रहती हैं, जैसे कभी ख़ुशी और कभी गम। इसी के साथ पत्र की लेखन-शैली भी बदल जाती है। पत्र-लेखन के शिष्टाचार को ध्यान में रखते हुए इस प्रकार के पत्रों को बधाई-पत्र, धन्यवाद-पत्र, शुभकामना-पत्र, निमंत्रण-पत्र और संवेदना-पत्र में बाँटा जा सकता है।

21.1.2 औपचारिक पत्र

जब दो लोगों के बीच व्यक्तिगत संबंध नहीं होते, कोई निजी जान-पहचान नहीं होती, तो ऐसे संबंधों को औपचारिक कहा जाता है। उदाहरण के लिए, जब आप पुस्तकें मँगवाने के लिए किसी पुस्तक-विक्रेता को पत्र लिखते हैं, तब आप जानते हैं कि उस व्यक्ति के साथ आपके संबंध औपचारिक हैं। उसे आप किसी निश्चित उद्देश्य से पत्र लिखते हैं। इसी प्रकार, जब आप बैंक-मैनेजर को पत्र लिखते हैं या सफ़ाई अधिकारी को पत्र लिखते हैं, तब भी आपका पत्र लिखने का कोई ख़ास उद्देश्य होता है। ऐसी स्थिति में पत्र पाने वाला व्यक्ति महत्त्वपूर्ण नहीं होता, वह पदाधिकारी महत्त्वपूर्ण होता है। वास्तव में, आप किसी सूचना, समस्या या अन्य किसी मुद्दे को लेकर इन्हें पत्र लिखते हैं और सिर्फ़ उसी विषय पर बात करते हैं। ये औपचारिक पत्र या तो कार्यालय के काम-काज से संबंधित होते हैं या व्यावसायिक होते हैं।

दुकानदारों, प्रकाशकों तथा कंपनियों को लिखे जाने वाले पत्र **व्यावसायिक पत्र** कहलाते हैं। ऐसे पत्रों का संबंध व्यक्ति के व्यवसाय से होता है। जो पत्र किसी एक कार्यालय द्वारा किसी अन्य कार्यालय को भेजे जाते हैं, उन्हें **कार्यालयी पत्र** कहते हैं। किसी कार्यालय द्वारा किसी व्यक्ति को या किसी व्यक्ति द्वारा किसी कार्यालय को भेजे गए पत्र भी इसी कोटि में आते हैं।

औपचारिक पत्र

व्यावसायिक पत्र	कार्यालयी पत्र	आवेदन/प्रार्थना पत्र
पुस्तक-विक्रेता, बैंक-मैनेजर आदि को या इनके द्वारा एक-दूसरे को	कार्यालय, संस्था आदि के द्वारा एक-दूसरे को या किसी व्यक्ति को	अधिकारी को

पाठगत प्रश्न-21.1

सर्वाधिक उपयुक्त विकल्प चुनकर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

1. आपके द्‌वारा बैंक के मैनेजर को लिखा जाने वाला पत्र किस प्रकार का होता है?

   (क) औपचारिक (ख) व्यावसायिक

   (ग) अनौपचारिक (घ) कार्यालयी

2. आपके द्‌वारा माताजी को लिखा जाने वाला पत्र किस प्रकार का होता है?

   (क) औपचारिक (ख) कार्यालयी

   (ग) व्यक्तिगत (घ) प्रार्थना-पत्र

21.2 पत्र के अंग

अभी हमने औपचारिक तथा अनौपचारिक पत्रों के बारे में जानकारी प्राप्त की। पत्र औपचारिक हों या अनौपचारिक, दोनों के लिखने में कुछ चरणों का क्रमशः पालन करना आवश्यक होता है। जैसे, पत्र जिसे भेजा जा रहा है उसका नाम– पता, उपयुक्त संबोधन, पत्र की विषय-सामग्री और पत्र की समाप्ति। इन्हें इस प्रकार समझ सकते हैं :

(क) पता और तिथि लिखना (प्रारंभ)

(ख) संबोधन तथा अभिवादन की शब्दावली का प्रयोग करना (संबोधन तथा अभिवादन)

(ग) कही जाने वाली बात को लिखना (पत्र की विषयवस्तु)

(घ) पत्र की समाप्ति तथा हस्ताक्षर करना (समापन)

ऊपर बताए गए पत्र के अंग सभी प्रकार के पत्रों में होते हैं, केवल उन्हें प्रस्तुत करने का ढंग अलग-अलग होता है। आप कोई भी पत्र उठाकर देखिए, ऊपर बताई गई सभी बातें उसमें दिखाई देंगी। आइए, हम पत्र के अलग-अलग अंगों के बारे में थोड़ा विस्तार से जान लें।

(क) पता और तिथि

आपकी पाठ्‌य-पुस्तकें (कक्षा दसवीं) अभी तक आपको नहीं मिलीं इस संदर्भ में आपने राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान को एक पत्र लिखा। पर संस्थान को यह पता नहीं चला कि आप कहाँ रहते हैं और कब आपने पत्र लिखा। अगर पता नहीं होगा तो आपको पुस्तकें कैसे भेजी जाएँगी और यह भी नहीं जान पाएँगे कि किस दिन तक आपको पुस्तकें नहीं मिल पाईं थीं। इसलिए सभी पत्रों में ऊपर दाएँ कोने में पता लिखा जाता है इसके नीचे तारीख लिखी जाती है जैसे–

ए 8/22ए
वसंत विहार
नई दिल्ली – 110057
15.1.2012

जब किसी को पहली बार पत्र लिखा जाता है, तब अपना पूरा पता लिखा जाता है। लेकिन, जब हम परिचित व्यक्ति को पत्र लिखते हैं, तो कभी-कभी पूरा पता नहीं भी लिखते, क्योंकि वह हमारा पता जानता है। फिर भी शहर या ग्राम (स्थान) का उल्लेख अवश्य किया जाता है। इसी प्रकार, जिनसे हम नियमित पत्र-व्यवहार करते हैं, उन्हें भी बार-बार पता लिखने की आवश्यता नहीं होती। हाँ, पता बदल जाने पर नया पता बताने के लिए ऐसा करना पड़ता है। वैसे केवल शहर का नाम ही लिखा जाता है। यदि उसी शहर में पत्र भेजा जा रहा हो, तब केवल तारीख ही लिखना काफ़ी होता है। बहुत हुआ तो तारीख़ के ऊपर स्थानीय लिख देते हैं। इन तीनों स्थितियों को पत्र में इस प्रकार दिखाया जा सकता है:

स्थिति–I	स्थिति–II	स्थिति–III
पता : ए 8/22, वसंत विहार नई दिल्ली – 110057 दिनांक : 15.1.2012	स्थान : नई दिल्ली दिनांक : 15.1.2012	स्थानीय 15.1.2012

(नोटः टाइप की सुविधा के लिए आजकल पता व दिनांक को बायीं ओर लिखने का भी प्रचलन है।)

(ख) संबोधन तथा अभिवादन

संबोधन

जब हम किसी को पत्र लिखना शुरू करते हैं, तो पहला प्रश्न उठता है कि उसे क्या लिखकर संबोधित करें। यह संबोधन पत्र लिखने और पाने वाले के संबंध पर निर्भर करता है। जब हम अपने मित्र को पत्र लिखते हैं, तब उसके लिए अलग संबोधन का प्रयोग करते हैं और जब हम अपने से बड़ों को पत्र लिखते हैं, तो अलग। इसी तरह से अनौपचारिक संबंधों में अलग संबोधन का प्रयोग करते हैं। कुछ नमूने देखिए :

....	....	....
पूज्य पिताजी	प्रिय मीनू	आदरणीय दादा जी
....	....	....

ध्यान दीजिए, दिए गए शब्द 'पूज्य', 'प्रिय', 'आदरणीय', 'महोदय' आदि संबोधन के रूप हैं। संबोधन वाले शब्दों के बारे में हमें कुछ और जानना चाहिए :

1. 'प्रिय' संबोधन का प्रयोग निम्नलिखित अनौपचारिक स्थितियों में किया जाता है:

   - अपने से छोटों के लिए
   - अपने बराबर वालों के लिए
   - घनिष्ठ व्यक्तियों के लिए

   प्रिय + नाम (प्रिय रमेश, प्रिय मीनाक्षी, प्रिय मित्र)

   कभी-कभी औपचारिक स्थिति में भी 'प्रिय' का प्रयोग किया जाता है:

   i) प्रिय + उपनाम (प्रिय जोशी)

   ii) प्रिय + नाम + जी आदि (प्रिय अजय जी)

2. 'पूज्य', 'पूजनीय', 'आदरणीय', 'श्रद्धेय' आदि का प्रयोग अपने से बड़े उन लोगों के लिए किया जाता है, जिन्हें आप आदर देना चाहते हैं। जैसे : पूज्य गुरु जी, पूजनीय माता जी, आदरणीय चाचा जी, श्रद्धेय गुरुवर।

हिंदी में कई बार औपचारिक स्थिति में 'प्रिय' के स्थान पर 'जनाब' का भी प्रयोग किया जाता है। ऐसे में 'जी' का स्थान 'साहब' शब्द ले लेता है :

जनाब सिंह साहब

जनाब अख्तर साहब

'प्रिय' और 'जनाब' के अतिरिक्त भी बहुत से संबोधन हो सकते हैं, जैसे महोदय प्रिय, महोदय आदि।

अभिवादन

संबोधन के तुरंत बाद हमें उस व्यक्ति को संबोधन के ही अनुरूप अभिवादन लिखना होता है। अभिवादन के प्रमुख रूप हैं : चरण-स्पर्श, सादर प्रणाम, नमस्ते, नमस्कार, आदाब आदि। चिरंजीव, आशीर्वाद, ख़ुश रहो, सदा सुखी रहो, प्रसन्न रहो—जैसे शब्द भी अभिवादन के अंतर्गत ही आते हैं। कभी-कभी संबोधन के तुरंत बाद भी पत्र प्रारंभ कर दिया जाता है। ऐसी स्थिति में प्रायः संबोधन और अधिक आत्मीय रूप में दे दिया जाता है, जैसे—प्यारे भैया, मेरी प्यारी माँ आदि। संबोधन वाले शब्द के बाद अल्पविराम का प्रयोग किया जाता है, क्योंकि अगली पंक्ति में हमें अभिवादन या आशीर्वाद का कोई शब्द देना होता है। जब 'नमस्कार', 'नमस्ते', 'प्रणाम' आदाब, सत श्री अकाल —जैसे अभिवादनों का

टिप्पणी

प्रयोग किया जाता है, तो निश्चित रूप से हम अपने से किसी बड़े को पत्र लिख रहे होते हैं। जब 'स्नेह', शुभाशीष', 'आशीर्वाद' जैसे अभिवादनों का प्रयोग किया जाता है, तो हम देखते ही पता लगा लेते हैं कि संबोधित व्यक्ति लिखने वाले से उम्र में छोटा है—

अभिवादन

पूज्य दादा जी,
प्रणाम।

प्रिय विवेक
स्नेह।

औपचारिक पत्रों में संबोधन के रूप में प्रायः महोदय, प्रिय महोदय का प्रयोग किया जाता है। अभिवादन का शब्द लिखने के बाद पूर्ण विराम (।) अथवा संबोधन-चिह्न (!) अवश्य लगाना चाहिए। ऊपर के उदाहरणों में 'प्रणाम' और 'स्नेह' के बाद पूर्ण विराम का चिह्न लगाया गया है— इस पर आपने ध्यान दिया होगा।

क्रियाकलाप-21.1

स्तंभ 'क' में दिए गए लोगों के लिए स्तंभ 'ख' से उपयुक्त संबोधन का मिलान कीजिए :

स्तंभ 'क'	स्तंभ 'ख'
मित्र	पूजनीय
पड़ोसी	प्रियवर
संपादक	प्रिय मित्र
मामी	महोदय
दादा जी	आदरणीय
सहेली	प्रिय सखी
पुलिस-आयुक्त	

(ग) पत्र की विषयवस्तु

पत्र में अभिवादन के बाद पत्र की सामग्री देनी होती है। उस पत्र के माध्यम से हम जो कुछ कहना चाहते हैं या कहने जा रहे हैं – वही पत्र की विषय-वस्तु या सामग्री कहलाती है। दूसरे शब्दों में इसे पत्र का 'संदेश' भी कहा जा सकता है, जिसे हम पत्र पाने वाले तक पहुँचाना चाहते हैं। एक नमूना देखिए :

प्रिय बेटी संयुक्ता, पता
दिनांक

स्नेह।

मैंने कल एक फिल्म देखी तो तुम्हारी बहुत याद आई पर अच्छा होता यदि तुम ....
....
....
....

औपचारिक पत्रों में जहाँ अभिवादन वाले शब्दों का प्रयोग नहीं किया जाता, वहाँ पत्र का संदेश संबोधन के बाद ही प्रारंभ हो जाता है। जैसे :

महोदय, पता
Ramesh को पत्र दिनांक

विषयः— ....

....
....
....

पत्र की सामग्री के संबंध में कुछ बातों का ध्यान रखना आवश्यक है :

- यदि पत्र पहली बार लिखा जा रहा है, तो संदेश का आशय पहले अनुच्छेद में ही स्पष्ट कर दें।
- यदि पत्राचार पहले से चल रहा है, तो पिछले पत्र का उल्लेख अवश्य करें। इसके लिए पिछले पत्र की तारीख़ और संदर्भ का भी उल्लेख करना आवश्यक है। जैसे:

आपका दिनांक 24.10.03 का पत्र मिला। इस संदर्भ में आपको सूचित किया जाता है ....

- यदि कोई सरकारी-पत्र हो तो पत्र-संख्या तथा दिनांक का उल्लेख अवश्य करें। जैसे :

आपके पत्र सं.ई.एच. 13/2/197 दिनांक 26.12.02 के संदर्भ में आपको सूचित किया जाता है कि ....

- यदि कही जाने वाली सामग्री लंबी है, तो दो या तीन अनुच्छेदों में संदेश के कथन को बाँट लें। मुख्य बात से पत्र शुरू करके अगले अनुच्छेद में उसी से जुड़ी बातें दें। नई बात नए अनुच्छेद से शुरू करें, पर विस्तार से बचें।

जब हम पत्र को समाप्त करते हैं तो अंतिम वाक्य के रूप में कोई वाक्यांश या शब्द देते हैं, जो अंतिम अनुच्छेद के बाद स्वतंत्र रूप से आता है। जैसे :

शेष अगले पत्र में, अपना ख्याल रखना, हार्दिक शुभकामनाओं सहित, सधन्यवाद पत्रोत्तर की प्रतीक्षा में आदि।

(घ) समापन-शब्द तथा हस्ताक्षर

पत्र में जब संदेश-कथन समाप्त हो जाता है, तब हम अपना नाम लिखने से पहले समापन शब्द का प्रयोग करते हैं। आपका बेटा, आपका आज्ञाकारी शिष्य, भवदीय/भवदीया, आपकी, तुम्हारी, तुम्हारा मित्र – ये सब समापन-शब्द हैं। इनका प्रयोग भी हम विभिन्न संदर्भों में विभिन्न प्रकार से करते हैं। जैसे - अध्यापक को पत्र लिखते समय 'आपका आज्ञाकारी शिष्य'; मित्र को 'तुम्हारा', 'तुम्हारा मित्र'; माता-पिता को 'आपका बेटा', 'आपकी बेटी' आदि लिखेंगे। बड़े व्यक्ति अपने से छोटों के लिए 'शुभचिंतक', 'शुभेच्छु' आदि लिख सकते हैं। किसी को निमंत्रण देने पर प्रायः 'दर्शनाभिलाषी' लिखा जाता है। औपचारिक पत्रों में सामान्यतः 'भवदीय' लिखा जाता है।

'समापन' शब्द हमेशा संदेश की समाप्ति के बाद नई पंक्ति में लिखा जाता है। इसके बाद अल्पविराम (,) या निर्देश-चिह्न (-) लगाया जाता है। कार्यालय संबंधी तथा व्यावसायिक पत्रों में 'भवदीय' या 'आपका' लिखते हैं। आवेदन-पत्र में 'भवदीय', 'प्रार्थी', 'विनीत', 'निवेदक' आदि लिखा जा सकता है।

समापन-शब्द के नीचे हस्ताक्षर किए जाते हैं। सरकारी तथा औपचारिक पत्रों में हस्ताक्षर के बाद कोष्ठक में पूरा नाम तथा उसके नीचे पदनाम लिखा जाता है, जबकि अनौपचारिक पत्रों में इसकी आवश्यकता नहीं होती। यहाँ ध्यान रखना चाहिए कि अनौपचारिक पत्रों में हम केवल अपना नाम लिखते हैं, जबकि औपचारिक पत्रों में पहले अपने हस्ताक्षर करते हैं, उसके बाद नीचे कोष्ठक में अपना पूरा नाम तथा पदनाम लिखते हैं। जैसे :

अनौपचारिक पत्र	औपचारिक पत्र
आपकी बेटी, रजिंदर कौर	भवदीया– **हस्ताक्षर** (अर्शिया ख़ान)

टिप्पणी

पाठगत प्रश्न-21.2

सर्वाधिक उपयुक्त विकल्प चुनकर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए:

1. अपने से छोटों को पत्र लिखते समय आप संबोधन में क्या लिखेंगे?

   (क) नमस्कार (ख) प्रणाम

   (ग) आशीष (घ) चरण-स्पर्श

2. अपने से बड़ों को पत्र लिखते समय पत्र की समाप्ति पर क्या लिखा जाना चाहिए?

   (क) आपका आज्ञाकारी (ख) आपका अभिन्न

   (ग) आपका शुभचिंतक (घ) सदैव तुम्हारा

3. अपने ही शहर में पत्र लिखते समय क्या लिखना आवश्यक है?

   (क) दिनांक (ख) स्थान

   (ग) दिनांक, स्थान दोनों (घ) अपना पूरा पता।

21.3 कुछ पत्रों के नमूने

आपने घर में समय-समय पर आए कुछ पत्र एकत्रित किए होंगे। उन्हें एक बार पढ़ कर देखिए। वैसे आपकी सहायता के लिए कुछ पत्रों के नमूने हम यहाँ दे रहे हैं। इससे आपको पत्र लिखने की प्रक्रिया का पता चल सकेगा।

पत्र लिखना भी एक कला है। क्या आप जानते हैं कि केवल सूचना देना, हाल-चाल पूछ लेना या बता देना ही, पत्र नहीं है। ऐसे पत्र उबाऊ होते हैं। अच्छे पत्र की महत्त्वपूर्ण विशेषता यह है कि उससे आत्मीयता का अनुभव हो, पाने वाले को लगे कि पत्र उसी के लिए लिखा गया है। ऐसे पत्र दिल पर अपनी छाप छोड़ते हैं और संबंधों को प्रगाढ़ बनाते हैं। आइए देखें :

21.3.1 अनौपचारिक पत्र

बीरगंज, नेपाल।
दिनांक : 10.1.2012

प्रिय संजय,

सप्रेम नमस्ते।

आज से तीसरे दिन तुम्हारा जन्मदिन है, इसकी तुम्हें ढेर सारी बधाई। यह ख़ुशी की बात तो है, पर मुझे अजीब सा लग रहा है। हम दोनों एक-दूसरे के जन्मदिन पर

हमेशा साथ रहे हैं। पहली बार ऐसा होगा कि मैं तुम्हारे जन्मदिन पर उपस्थित नहीं रहूँगा। परसों मामाजी का विवाह है, इसलिए मैं तुम्हारे जन्मदिवस पर चाहकर भी नहीं पहुँच सकता। मैं यहीं से तुम्हें हार्दिक शुभकामनाएँ भेज रहा हूँ। ऐसे शुभ दिन सैकड़ों बार आएँ और हर घड़ी तुम्हारे लिए नए उल्लास, नई उमंगें और नई आशाएँ लिए हुए हों।

हार्दिक शुभकामनाओं सहित,

तुम्हारा अभिन्न,
जॉनी

उपर्युक्त पत्र में जॉनी ने अपने मित्र को जन्मदिन की बधाई भेजी है। आपको सदा ध्यान रहे कि बधाई-पत्र का प्रारंभ सदा ख़ुशी-भरे वाक्य से होना चाहिए और अंत शुभकामनाओं के साथ। बधाई के लिए एक-दो वाक्य ही काफ़ी हैं। जैसे इस पत्र के अंतिम दो वाक्य। किंतु जन्मदिन पर न पहुँच पाने का कारण बताते हुए जॉनी ने याद दिलाया है कि ''दोनों एक-दूसरे के जन्मदिन पर हमेशा साथ रहे हैं। पहली बार ऐसा होगा कि मैं तुम्हारे जन्मदिन पर उपस्थित नहीं हो सकूँगा।'' इन दो वाक्यों से दोनों मित्रों के स्नेह-संबंधों की अंतरंगता व्यक्त हो रही है।

क्रियाकलाप-21.2

अच्छा, अब आप भी कुछ करके देखिए।

बुलंदशहर में रह रहे आपके मित्र मेराज की कपड़े की दुकान में आग लग गई, जिससे उसका भारी नुकसान हो गया। उसे सांत्वना देते हुए एक संवेदना-पत्र लिखिए :

....

....

....

....

....

....

21.3.2 औपचारिक पत्र

जिस प्रकार अंतरंगता अनौपचारिक पत्रों का विशिष्ट गुण है, उसी प्रकार **संक्षिप्तता** और **स्पष्टता** औपचारिक पत्रों की विशेषता होती है। आज के युग में विस्तृत विवरण पढ़ने की फ़ुरसत किसी अधिकारी या व्यवसायी को नहीं होती। इसलिए ऐसे औपचारिक पत्रों

को लिखते समय बिना भूमिका बाँधे सीधे विषय पर आ जाना चाहिए और अंत में स्पष्ट शब्दों में यह उल्लेख कर देना चाहिए कि आप चाहते क्या हैं? उदाहरण के लिए निम्नलिखित पत्र को पढ़िएः

शिकायती पत्र : स्वास्थ्य अधिकारी से गंदगी की शिकायत

सचिव, आवासीय कल्याण समिति,
किदवई नगर, कानपुर

सेवा में,

दिनांक : 19.02.2012

स्वास्थ्य अधिकारी
कानपुर महानगर पालिका,
कानपुर

विषय : गंदगी की समस्या।

महोदय,

बड़े खेद के साथ लिखना पड़ रहा है कि पिछले दस दिनों से हमारी बस्ती में ढंग से सफ़ाई नहीं हो रही है। स्थान-स्थान पर कूड़े के ढेर पड़े हैं। नालियाँ बंद पड़ी हैं। सफ़ाई कर्मचारी दिखाई ही नहीं पड़ते। यदि तुरंत इस समस्या को हल नहीं किया गया, तो महामारी भी फैल सकती है।

मैं किदवई नगर के सभी निवासियों की ओर से आपसे निवेदन कर रहा हूँ कि सफ़ाई का विशेष प्रबंध तुरंत किया जाए।

भवदीय,

हस्ताक्षर

(इरफ़ान बेग)

उक्त पत्र में आपने ध्यान दिया होगा कि श्री इरफान बेग आवासीय कल्याण समिति के सचिव हैं। हो सकता है कि इनके नाम से प्रकाशित शीर्ष पत्र (लैटर हैड) हो, ऐसी स्थिति में उन्हें अपना नाम-पता लिखने की आवश्यकता नहीं होगी। इस पत्र को भेजते समय एक विकल्प यह भी हो सकता है कि इरफ़ान बेग अपना पता हस्ताक्षर के नीचे लिखें। इस प्रकार के औपचारिक पत्रों में संबोधन से पूर्व ही विषय लिखना भी आवश्यक होता है, जिससे संबद्ध अधिकारी को पूरा पत्र पढ़े बिना ही पत्र का विषय समझ में आ जाए और वह शीघ्रातिशीघ्र कार्रवाई कर सके।

क्रियाकलाप-21.3

मान लीजिए, इरफान बेग की उपर्युक्त शिकायत पर स्वास्थ्य विभाग ध्यान नहीं देता और यह समस्या और बढ़ जाती है। इसी समस्या पर इरफ़ान की ओर से किसी दैनिक पत्र के संपादक को पत्र लिखिए :

21.3.3 व्यावसायिक पत्र

अब आप औपचारिक पत्रों में व्यावसायिक पत्र का एक नमूना देखिए। यहाँ पुस्तक विक्रेता को लिखे गए पत्र पर ध्यान दीजिए। यहाँ पता, तिथि, संबोधन आदि औपचारिकताओं के बाद सीधे-सीधे पत्र का प्रयोजन लिख दिया गया है :

टिप्पणी

पुस्तक-विक्रेता को पत्र : पुस्तकें मँगवाने के लिए

सेवा में, दिनांक : 5.1.2011
व्यापार प्रबंधक
नेशनल बुक ट्रस्ट,
5 ए, ग्रीन पार्क,
नई दिल्ली - 110016

विषयः- पुस्तकें मँगवाने के लिए

महोदय,

निम्नलिखित पुस्तकों की एक-एक प्रति मेरे नाम से कूरियर द्वारा निम्नलिखित पते पर यथाशीघ्र भेजने की कृपा करें :

1. पुस्तकें जो अमर हैं–मनोज दास
2. प्रेमचंद – अमृतराय
3. गौतम बुद्ध – लीला जॉर्ज
4. क्रिकेट – विजय मर्चेंट
5. सिस्टर निवेदिता – वसुधा चक्रवर्ती

भवदीय,

भावना सिन्हा

के.वि.क. 9,
वायु सेना स्टेशन
लोहगाँव, पुणे (महाराष्ट्र)

21.3.4 आवेदन-पत्र

आवेदन पत्र भी एक प्रकार के औपचारिक पत्र होते हैं। इस प्रकार के पत्र लिखते समय भी आप उन सभी बातों का विशेष ध्यान रखेंगे, जो किसी भी अन्य औपचारिक पत्र-लेखन के समय रखते हैं। नौकरियों के लिए या पढ़ाई आगे जारी रखने के लिए आवेदन-पत्र भेजने की दो शैलियाँ प्रचलित हैं। आवेदन करने से पहले आपको यह जानना आवश्यक है कि कहीं उनका कोई तैयार प्रपत्र तो नहीं है, यदि है, तो आप उसे मँगा लें या स्वयं जाकर ला सकते हैं, तो ले आएँ।

परंतु, यदि किसी प्रकार का कोई प्रपत्र नहीं है, तो आप एक सादे कागज़ पर विज्ञापन का विस्तृत हवाला देते हुए अपनी योग्यताएँ साफ़-साफ़ लिखकर भेज सकते हैं। और

टिप्पणी

हाँ! आप अपना पता लिखना न भूलें। आप आवदेन-पत्र के निम्नलिखित नमूने से मार्गदर्शन प्राप्त कर सकते हैं :

> सचिव
> पराग टेक्सटाइल लिमिटेड,
> 16/11 महारानी स्ट्रीट,
> इंदौर, म.प्र.
>
> **विषय : लिपिक पद के लिए आवेदन**
>
> महोदय,
>
> पंजाब केसरी समाचार पत्र के विज्ञान संख्या 633 दिनांक 15.2.2012 के अनुसार आपकी कंपनी में लिपिक पद के लिए आवेदन प्रस्तुत करती हूँ।
>
> मैं 20 वर्षीय सुरभि कट्टीमणि, केंद्रीय विद्यालय से प्रथम श्रेणी में दसवीं उत्तीर्ण कर चुकी हूँ। इसके अतिरिक्त मैं कंप्यूटर का प्रयोग जानती हूँ और हिंदी और अंग्रेज़ी में तीव्र गति से सामग्री टाइप कर सकती हूँ (प्रमाण–पत्र संलग्न)। मेरे पास अभी कार्य-अनुभव की कमी है। यदि आप अवसर दें, तो विश्वास दिलाती हूँ कि अपनी मेहनत और लगन से आपको शिकायत का अवसर नहीं दूँगी।
>
> धन्यवाद सहित,
>
> प्रार्थी
> सुरभि कट्टीमणि
> 3/44 प्रताप नगर, बाड़मेर
> राजस्थान

21.4 नई सूचना-तकनीकी और पत्र

पुराने समय में लोग हाथ से लिखे पत्र को विशेष पत्रवाहकों द्वारा भेजा करते थे। फिर डाक-व्यवस्था प्रारंभ हुई और पत्र डाक से भेजे जाने लगे। सुविधा होने पर स्पष्टता और स्वच्छता को ध्यान में रखते हुए प्रायः औपचारिक/कार्यालयी पत्र टंकित किए जाने लगे। वैज्ञानिक तकनीकी में क्रांतिकारी परिवर्तन आने से अब इक्कीसवीं सदी में पत्र लिखने और भेजने की शैली में भी परिवर्तन आया है। यद्यपि पारिवारिक (अनौपचारिक) पत्र आज भी प्रायः हाथ से लिखे जाते हैं, किंतु इन्हें अपने गंतव्य तक (पाने वाले तक) पहुँचने में दो-तीन दिन से लेकर दो-तीन सप्ताह तक का समय लग जाता है। कंप्यूटर और इन्टरनेट के आगमन से ई-मेल और फ़ैक्स प्रणाली ने समय के इस अंतराल को लगभग समाप्त ही कर डाला है।

'ई-पत्र' या 'ई-मेल' कंप्यूटर के माध्यम से होने वाले पत्र-व्यवहार को कहा जाता है। ग्राफिक e-mail के साथ लिखने वाला ई-पत्र का बॉक्स खोलता है और अपने मन की बात उसमें निश्चित व्यक्ति के लिए टाइप करता है और निश्चित पते पर भेज देता है। वह पत्र इंटरनेट द्वारा पलक झपकते ही विश्व के किसी भी कोने में पहुँच जाता है। प्राप्त करने वाला उसे उसी क्षण अपने कंप्यूटर के स्क्रीन पर पढ़ लेता है और चाहे तो उसकी प्रतिलिपि (प्रिंट) भी प्राप्त कर सकता है। ई-मेल के पत्र-लेखन के प्रारूप में और सामान्य पत्र-लेखन के प्रारूप में कोई विशेष अंतर नहीं होता, पर ई-मेल ध्यान रखा जाता है कि पत्र संक्षिप्त हो।

फ़ैक्स एक प्रकार का दूर मुद्रण है। पृथक कागज़ पर हाथ से लिखकर या टंकित पत्र को फ़ैक्स मशीन के द्वारा संसार के किसी भी कोने में दूसरी फ़ैक्स मशीन पर उसी रूप में मुद्रित कराया जा सकता है। यह प्रक्रिया टेलीफ़ोन-प्रणाली से जुड़ी होती है और सैटेलाइट की सहायता से पलक झपकते ही दूसरी फ़ैक्स मशीन पर कागज़ की प्रति प्राप्त हो जाती है।

आजकल छोटे-छोटे से संदेश लिखकर मोबाइल फोन द्वारा लोग अपने प्रिय पात्र के मोबाइल पर संदेश भेज देते हैं। दूसरा व्यक्ति दुनिया के किसी भी कोने में क्यों न बैठा हो, पहला व्यक्ति अपनी जगह से उसे मनचाहा संदेश भेज सकता है। इन्हें एस.एम.एस. कहते हैं। एस.एम.एस. का अर्थ है– Short Message Service (लघु संदेश सेवा)। उदाहरण के लिए संदेशों (एस.एम.एस.) के भेजने का क्रम देखिए :

मो० 1 – नमस्कार! आप कैसे हैं?

मो० 2 – बढ़िया!

मो० 1 – मुझे आपसे बहुत-सी बातें करनी हैं। आप कहाँ हैं?

मो० 2 – मैं अभी कानपुर में एक मीटिंग में बैठी हूँ। क्या बहुत ज़रूरी बात है?

मो० 1 – हाँ! है तो, पर जब आप दिल्ली में होंगी, हम तभी बैठकर बात करेंगे।

मो० 2 – ठीक है, मैं रविवार शाम को दिल्ली पहुँचूँगी।

आपने क्या सीखा

1. अपने मन के भावों को दूर बैठे व्यक्ति तक पहुँचाने के लिए पत्र लिखे जाते हैं। आजकल तकनीकी और संचार क्रांति आ जाने के कारण कंप्यूटर इन्टरनेट द्वारा भी ई-पत्र भेजे जाते हैं। मोबाइल फ़ोन द्वारा बातचीत तो की ही जा सकती है, साथ ही दुनिया के किसी भी कोने में बैठे दूसरे व्यक्ति के मोबाइल फ़ोन पर लिखकर संदेश भी भेजे जा सकते हैं। (एस.एम.एस.) इसके द्वारा आप होली-दीवाली के शुभकामना संदेश अपने दूर बैठे दोस्तों को भेज सकते हैं।

2. पत्र निम्नलिखित प्रकार के होते हैं :

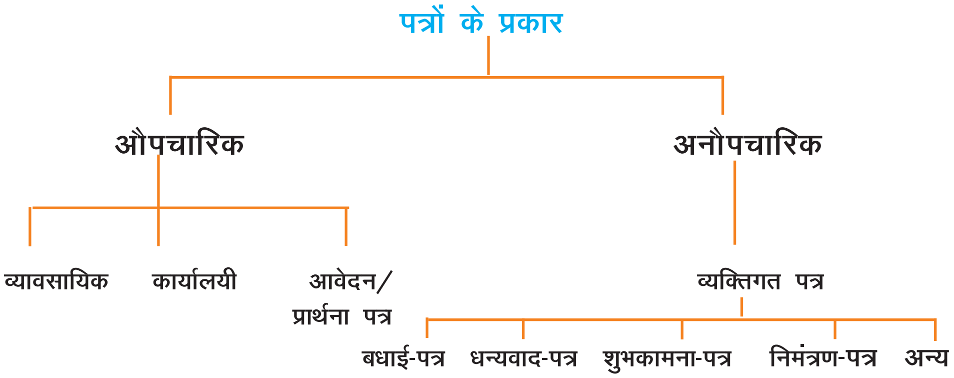

3. प्रार्थना पत्र लिखते समय सभी बातें सम्मानपूर्वक लिखी जानी चाहिए। अंत में कृतज्ञता प्रकट करनी चाहिए।
4. औपचारिक पत्रों में विषय स्पष्ट रूप से लिखना आवश्यक होता है।
5. अनौपचारिक पत्र अपनों को प्रेम भरे भावों से स्वाभाविक बातचीत की शैली में लिखे जाते हैं।
6. संबोधन और अभिवादन में शिष्टाचार का पालन करना आवश्यक होता है।

पाठांत प्रश्न

1. पारिवारिक पत्रों की मुख्य विशेषता क्या होती है ?
2. औपचारिक पत्रों में संक्षिप्तता क्यों आवश्यक है ?
3. अपनी बहन के विवाह के लिए मित्र को पत्र लिखकर निमंत्रित कीजिए।
4. अख़बार के संपादक को पत्र लिखकर बताइए कि आपके शहर में गुंडागर्दी कितनी बढ़ गई है।
5. खेल-सामग्री के विक्रेता को पत्र लिखकर अपने लिए क्रिकेट की खेल-सामग्री मँगवाइए।
6. अपने मित्र के पिता के देहांत पर शोक-संदेश लिखिए।
7. सेक्टर-पाँच, 164 चंडीगढ़ में रहने वाली गुरजीत कौर की ओर से विद्युत अधिकारी को पत्र लिखकर बताइए कि बिजली की कमी के कारण मुहल्ले के लोगों को कितने कष्ट में दिन बिताने पड़ रहे हैं।
8. बी-36, त्यागराज नगर, चेन्नई की जयलक्ष्मी की ओर से दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा, चेन्नई द्वारा हिंदी प्रसार के कार्यों की सराहना करते हुए संपादक, हिंदुस्तान दैनिक, कस्तूरबा गांधी मार्ग, नई दिल्ली - 110001 को पत्र लिखिए।

9. कवि नगर, गाज़ियाबाद के थानाध्यक्ष को पत्र लिखकर अपनी साइकिल की चोरी की घटना का संक्षिप्त विवरण देते हुए सूचना दीजिए।

10. इस बार छुट्टियों में आपने क्या-क्या किया? अपने दोस्त को पत्र लिखकर बताइए।

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

20.1 1. (क) 2. (ग)

20.2 1. (ग) 2. (क) 3. (क)

22

निबंध कैसे लिखें

आप जानते हैं कि जब कभी कोई घटना घटित होती है या हमें किसी नई बात का पता चलता है, तब हम उसे दूसरों को बताना चाहते हैं। यदि कोई दूसरा सामने न हो, तो हम उसे लिखकर अभिव्यक्त करना चाहते हैं। विषय यदि छोटा है, तो हम उसे एक 'अनुच्छेद' में लिखते हैं। यदि विषय बड़ा है और उसके अनेक पक्ष हैं, तब उसे कई अनुच्छेदों में लिखा जाता है। ये अनुच्छेद घटना घटने के क्रम पर आधारित होते हैं। जब किसी बात या घटना को सही क्रम देकर एक से अधिक अनुच्छेदों में लिखा जाता है, तब वह निबंध कहलाता है। आइए, इस पाठ के माध्यम से समझें कि एक अच्छा निबंध कैसे लिखा जाता है।

उद्देश्य

इस पाठ को पढ़ने के बाद आप–

- किसी विषय के विभिन्न पक्षों पर विचार करके उसके प्रमुख बिंदुओं का वर्णन कर सकेंगे;
- किसी विषय को विभिन्न बिंदुओं के आधार पर अनुच्छेदों में बाँट कर उनका उल्लेख कर सकेंगे;
- विचारों या भावों को लिखकर अभिव्यक्त कर सकेंगे;
- लेखन में सरल तथा प्रभावशाली भाषा का प्रयोग कर सकेंगे;
- अच्छा और प्रभावशाली निबंध लिख सकेंगे।

क्रियाकलाप-22.1

आपके मन में ऐसे कुछ विषय अवश्य होंगे, जिन पर लगातार सोचने–समझने की जरूरत महसूस होती हो। यह इच्छा भी होती होगी कि अपने भावों और विचारों को दूसरों से बाँटें। नीचे ऐसे दस विषयों की सूची बनाइए जिन पर आप कुछ लिखना चाहेंगे :

1. .... 2. ....
3. .... 4. ....
5. .... 6. ....
7. .... 8. ....
9. .... 10. ....

22.1 निबंध क्या है?

आइए, सर्वप्रथम जानने का प्रयास करते हैं कि निबंध क्या है? निबंध से तात्पर्य उस रचना से है, जिसे अच्छी तरह से बाँधा जाता है या जिसमें विचारों अथवा घटनाओं को सही क्रम देकर, गूँथ कर लिखा जाता है। निबंध गद्य में लिखा जाता है। उपन्यास, कहानी, संस्मरण आदि के समान यह भी गद्य की एक महत्त्वपूर्ण विधा है।

निबंध आकार में छोटा भी हो सकता है और बड़ा भी। दो-तीन पृष्ठों के निबंध भी लिखे जाते हैं और पच्चीस-तीस पृष्ठों के भी। आपको सामान्यतः तीन-चार पृष्ठों के निबंध लिखने का अभ्यास करना चाहिए। निबंध का विषय कुछ भी हो सकता है। आप किसी भी वस्तु, घटना, विचार अथवा भाव पर निबंध लिख सकते हैं। आवश्यक बात यह है कि उस निबंध में आपके अपने विचार या आपके अपने अनुभव होने चाहिए। यदि आप दूसरों के विचारों को पढ़ते या सुनते भी हैं, तब भी उन्हें अपनी भाषा में प्रस्तुत करें। पढ़ने वाले को ऐसा प्रतीत होना चाहिए कि आप अपनी बात या अपने विचार प्रस्तुत कर रहे हैं।

22.2 निबंध लिखने की आवश्यकता

जब हम निबंध लिखने की बात करते हैं, तो आपका पहला सवाल यह हो सकता है कि हम निबंध क्यों लिखें ? इसकी क्या आवश्यकता है? आपने सही प्रश्न पूछा है। आप जो भी कार्य करें उसके 'क्यों' का उत्तर जानना आपका अधिकार है। 'दीपावली' पर या 'यदि मैं प्रधानमंत्री होता' जैसे विषयों पर निबंध लिखने से हमें क्या हासिल होगा ? आइए, हम इस प्रश्न का उत्तर ढूँढने की कोशिश करें।

आइए, एक सामान्य उदाहरण लें। मान लीजिए, आपके घर के रास्ते में निम्नलिखित स्थल आते हैं,

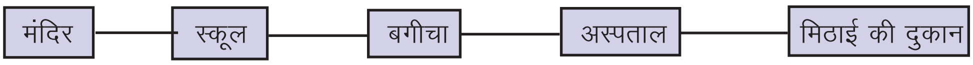

ठीक है। आपका मित्र आपके घर आने के लिए रास्ता जानना चाहता है। आप मित्र को अपने घर का रास्ता किस प्रकार बताएँगे? यहाँ लिखिए :

....

....

....

....

आपने ठीक लिखा। आप बताएँगे कि आपके घर के रास्ते में क्रम से क्या-क्या चीजें आती हैं या कौन-कौन से स्थान आते हैं। यानी गली के किनारे ही एक मंदिर है। उस मंदिर से आगे चलने पर स्कूल है। स्कूल के पास वाली गली में बाँईं ओर मुड़ने पर एक बगीचा है। फिर दाँईं ओर मुड़ने पर अस्पताल तथा उससे आगे लगभग 50 मीटर चलने पर बाँईं ओर एक मिठाई की दुकान है। बस उसके सामने ही मेरा घर है। आप यह तो नहीं बता सकते कि मेरे घर के रास्ते में एक बगीचा आता है, एक मंदिर, एक मिठाई की दुकान, एक अस्पताल और एक स्कूल। ऐसा सुनकर आपका दोस्त और चाहे कहीं भी पहुँच जाए, लेकिन वह आपके घर तक नहीं पहुँच सकता। आप अपने मित्र को अपने घर बुलाना चाहते हैं, तो आपको उसे पूरा रास्ता विस्तार से समझाना होगा। शायद इसीलिए सूचना या घटना को विस्तार से लिखने की आवश्यकता होती है। विस्तार से क्रमबद्ध लिखने का यह तरीका ही निबंध का जन्मदाता है।

आइए, अब निबंध लिखने की बात करें। निबंध में हम किसी विषय पर अपने विचार क्रम से और व्यवस्थित ढंग से इस प्रकार लिखते हैं कि पढ़ने वाला हमारी बात को समझ सके और उससे प्रभावित हो सके। निबंध लिखने से हमें किसी विषय पर अपने विचारों को एकत्रित करने, क्रमबद्ध करने, उदाहरण जुटाने और उन्हें प्रभावशाली भाषा में कहने या लिखने का अभ्यास होता है। यही कारण है कि हम निबंध लिखते हैं। इससे हमें न केवल मित्रों के साथ बातचीत करने में, अपितु घर में, दफ़्तर में और सभी जगह अपनी बात उचित ढंग से कहने या लिखने में मदद मिलती है।

एक बात और। हिंदी के अलावा इतिहास, अर्थशास्त्र, भूगोल, वाणिज्य आदि विषयों में अनेक प्रश्नों के उत्तर हमें कुछ विस्तार से लिखने होते हैं, जैसे – अकबर के शासन की विशेषताएँ, भारत की जनसंख्या-समस्या, भूमध्य रेखा की जलवायु या माँग और पूर्ति संबंधी प्रश्न। ऐसे प्रश्नों को निबंधात्मक प्रश्न कहा जाता है। उनके उत्तर लिखने में भी निबंध-लेखन का अभ्यास काम आता है।

हाँ, तो अब आप समझ गए कि निबंध लिखने का अभ्यास करने की आवश्यकता क्यों है ? समझ गए न ?

22.3 निबंध के प्रकार

आइए, अब निबंध के बारे में कुछ और बातों को जानने की कोशिश करें।

विषय और लिखने वाले की मनःस्थिति के अनुसार अलग-अलग तरह के निबंध लिखे जा सकते हैं। इस प्रकार निबंध अनेक प्रकार के होते हैं। हम यहाँ तीन प्रकार के निबंधों पर विचार करेंगे। ये हैं :

1. वर्णनात्मक

2. विचारात्मक
3. भावात्मक।

वर्णनात्मक निबंध में किसी वस्तु, घटना, प्रदेश आदि का वर्णन किया जाता है। उदाहरण के लिए, होली, दीपावली, यात्रा, दर्शनीय स्थल या किसी खेल के विषय पर जब हम निबंध लिखेंगे, तो उसमें विषय का वर्णन किया जाएगा। इस प्रकार के निबंधों में घटनाओं का एक क्रम होता है। इनमें साधारण बातें अधिक होती हैं। ये सूचनात्मक होते हैं तथा इन्हें लिखना अपेक्षाकृत सरल होता है।

विचारात्मक निबंध लिखने के लिए चिंतन-मनन की अधिक आवश्यकता होती है। इनमें बुद्धि-तत्त्व प्रधान होता है तथा ये प्रायः किसी व्यक्तिगत, सामाजिक या राजनीतिक समस्या पर लिखे जाते हैं। 'दूरदर्शन का जीवन पर प्रभाव', 'दहेज-प्रथा', 'प्रजातंत्र' आदि किसी भी विषय पर विचारात्मक निबंध लिखा जा सकता है। इसमें विषय के अच्छे-बुरे पहलुओं पर विचार किया जाता है, तर्क दिए जाते हैं तथा कभी-कभी समस्या को हल करने के सुझाव भी दिए जाते हैं।

भावात्मक निबंध या भाव-प्रधान निबंध में आप विषय के प्रति अपनी भावनात्मक प्रतिक्रिया व्यक्त करते हैं। इनमें कल्पना की प्रधानता रहती है, तर्क की बहुत अधिक गुंजाइश नहीं होती। उदाहरण के लिए 'मित्रता', 'बुढ़ापा', 'यदि मैं अध्यापक होता' आदि विषयों पर निबंध लिखते समय आप अपनी भावनाओं को खुलकर व्यक्त कर सकते हैं। भाव की तीव्रता होने के कारण इन निबंधों में एक प्रकार की आत्मीयता या अपनापन रहता है। यह अपनापन ही इस प्रकार के निबंधों की विशेषता है।

इसी प्रकार निबंध को विषय-वस्तु के आधार पर भी अनेक वर्गों में बाँट सकते हैं। जैसे—

1. सामाजिक निबंध
2. सांस्कृतिक निबंध
3. देश-प्रेम/राष्ट्रीय चेतना परक निबंध
4. विज्ञान, तकनीक एवं प्रौद्योगिकी परक निबंध
5. व्यायाम एवं खेल संबंधी निबंध
6. शिक्षा एवं ज्ञान विषयक निबंध
7. राजनीतिक निबंध
8. प्रेरक व्यक्तित्त्व
9. सूक्तिपरक निबंध
10. मनोरंजन के साधन
11. भाषा, साहित्य एवं प्रभाव परक-निबंध, आदि

आइए, निबंध कैसे लिखा जाता है, यह जानने से पहले हम जानें कि इसमें कौन-कौन से अंग सम्मिलित हैं।

22.4 निबंध के अंग

निबंध के तीन प्रमुख अंग होते हैं :

1. भूमिका
2. विषय-वस्तु
3. उपसंहार

भूमिका को प्रस्तावना भी कहते हैं। इसमें निबंध के विषय को स्पष्ट किया जाता है। भूमिका रोचक होगी, तभी पाठक निबंध पढ़ने के लिए उत्सुक होंगे। सवाल यह आता है कि निबंध की भूमिका कैसे लिखी जाए ? निबंध की शुरुआत किसी लेखक, कवि, चिंतक या राजनीतिज्ञ के कथन से की जा सकती है। यह सही है कि सुप्रसिद्ध कथन से निबंध प्रारंभ करने से पाठक के मन-मस्तिष्क पर अच्छा प्रभाव पड़ता है। दूसरा प्रकार है कि किसी घटना के उल्लेख से निबंध प्रारंभ किया जाए। भूमिका में हाल ही में घटी किसी घटना से विषय को जोड़कर भी परिवेश का निर्माण किया जा सकता है। एक और पद्धति भी है। मैंने बहुत पहले एक निबंध पढ़ा था। उसका प्रारंभ कुछ इस प्रकार था, '*'बाबू जी, अख़बार ले लेना'। हमारी आँख तब खुलती है, जब हमारे दरवाज़े पर अख़बार आता है। क्या आप जानते हैं कि अख़बार कैसे छपता है? यह विज्ञान की महत्त्वपूर्ण देन है।''* इस प्रकार की प्रस्तावना के बाद, 'समाचार-पत्र' पर बहुत अच्छा निबंध लिखा जा सकता है। महत्त्वपूर्ण बात यह है कि भूमिका की अंतिम पंक्ति तक पहुँचते-पहुँचते निबंध के मूल कथ्य का उल्लेख कर दिया जाना चाहिए।

उदाहरण के लिए भूमिका का एक और नमूना देखिए। 'महानगर का जीवन' विषय की भूमिका हम कुछ इस प्रकार लिख सकते हैं :

महानगर का जीवन

हमारा देश बहुत तेजी से विकास कर रहा है। नित नए उद्योग खुल रहे हैं। नए कारखाने लग रहे हैं। नए कार्यालय खुल रहे हैं। पर, इस विकास के केंद्र बड़े–बड़े नगर हैं। गाँवों, कस्बों और छोटे शहरों से लोग बड़े शहरों की ओर भाग रहे हैं, क्योंकि वहाँ रोज़गार के अवसर अधिक हैं। परिणामस्वरूप, ये नगर महानगर बन रहे हैं। ज्यों–ज्यों महानगरों में आबादी बढ़ रही है, त्यों–त्यों उनका जीवन बदल रहा है। समस्याएँ बढ़ रही हैं।

उपर्युक्त भूमिका उदाहरण के रूप में दी गई है। आपको यह अच्छी न लगे, तो अपने ढंग से प्रारंभ कीजिए।

विषय-वस्तु निबंध का मुख्य भाग है। इसमें विषय का परिचय दिया जाता है, उसका रूप स्पष्ट किया जाता है। विषय का एक ही केंद्रीय भाव होता है, उसका विस्तार करने की आवश्यकता होती है। विषय के विभिन्न पक्ष होते हैं। पक्ष-विपक्ष में तर्क देकर विषय-वस्तु को गहराई से समझाया जाता है। कुछ विषय ऐसे होते हैं, जिनसे प्राप्त होने वाले लाभ या हानि का उल्लेख भी किया जा सकता है, जैसे विज्ञान के लाभ और हानि। आवश्यकता पड़ने पर उसकी उपयोगिता पर प्रकाश डालते हुए उसे अपनाने की बात भी की जा सकती है, जैसे समाचार-पत्र पढ़ना। किसी चीज की बुराइयों का संकेत करते हुए उसे त्यागने पर बल दिया जा सकता है, जैसे—दहेज़-प्रथा। इसी अंश में आप अपना मत भी प्रस्तुत कर सकते हैं। अपना मत देते समय विनम्र भाषा का प्रयोग करना अच्छा होता है। यह भी ध्यान रखना चाहिए कि कोई ऐसी बात न कही जाए जिसका प्रभाव किसी एक पक्ष के लिए आपत्तिजनक हो। विषय से संबंधित नई-से-नई जानकारी देना निबंध को प्रभावशाली बना देता है। आप विषय-वस्तु के किसी पक्ष पर प्रकाश डालने वाली कविता की पंक्तियों का उल्लेख भी कर सकते हैं। किंतु, ध्यान रखने की बात यह है कि प्रत्येक बिंदु को अलग अनुच्छेद में लिखिए।

विषय की रूपरेखा बनाते हुए हमें प्रमुख विषय-बिंदु अथवा बिंदुओं के भी बिंदु बना लेने चाहिए। कुछ विषय ऐसे होंगे जिनके बिंदुओं के भी उप-बिंदु हो सकते हैं। उप-बिंदुओं से तात्पर्य यह है कि उस प्रमुख बिंदु के अंतर्गत हम किन-किन बातों का समावेश करना चाहते हैं। जैसे 'दहेज़ प्रथा' पर निबंध लिखते हुए विषय-वस्तु के मुख्य विषय बिंदु और उप-बिंदु इस प्रकार हो सकते हैं :

मुख्य विषय-बिंदु	उपबिंदु
दहेज़ क्यों	• पुत्री का नया घर • नई गृहस्थी • सहायक उपयोगी वस्तुओं की भेंट • धीरे-धीरे प्रथा में विकृति आना • दहेज़ देने की शुरुआत
दहेज़ प्रथा की बुराइयाँ	• विवाह पूर्व दूल्हे के लिए भाव-ताव • दूल्हे पशुओं की भाँति बिकते हैं • विवाह के बाद बहू पर अत्याचार • वर-पक्ष की ओर से बढ़ती माँगें • मानसिक पीड़ा पहुँचाना • बहू को जला डालना

आइए,देखें कि हम इन्हें अनुच्छेदों में कैसे पिरो सकते हैं :

पहला मुख्य बिंदु

दहेज़ क्यों

दहेज प्रथा का जन्म पुरानी सामाजिक प्रथाओं में ढूँढा जा सकता है। विवाह के बाद लड़की एक नए घर में जाती है। उसे नई गृहस्थी बसानी होती है। अपना नया घोंसला बनाने में उसे अधिक असुविधा न हो, इसलिए उसे कुछ उपहार देने का रिवाज़ था। उपहार में उसे गृहस्थी में काम आने वाली वस्तुएँ, जैसे—बर्तन, वस्त्र, गहने आदि स्वेच्छा से दिए जाते थे, कोई माँग या बाध्यता नहीं होती थी। पर, धीरे-धीरे इसमें बुराइयाँ आती गईं। वर-पक्ष वाले कन्या-पक्ष से वस्तुओं की माँग करने लगे। ये माँगें बढ़ती गईं और कन्या-पक्ष के सामर्थ्य को देखे-समझे बिना बढ़-चढ़कर माँगें रखी जाने लगीं। यहीं से शुरू हुई दहेज़ लेने और देने की प्रथा।

दूसरा मुख्य बिंदु

दहेज़ प्रथा की बुराइयाँ

आज दहेज-प्रथा में अनेक बुराइयाँ आ गई हैं। सबसे पहली और विचित्र बात तो यह है कि अच्छे दूल्हे के लिए ऐसे 'भाव-ताव' होता है, जैसे अनाज की मंडी या पशुओं के मेले में नीलामी हो रही हो। तरीका भिन्न होता है, पर बात लगभग वैसी ही है।

पर, यह तो एक पक्ष है। विवाह के बाद इसके अनेक रूप दिखाई पड़ते हैं। लालची लोग बहू के दहेज़ से संतुष्ट नहीं होते। वे बार-बार नई माँगें रखते हैं। बहू को विवश करते हैं कि वह अपने माता-पिता से यह लाए-वह लाए। इन माँगों को पूरा करना उनके वश में नहीं रहता, तब बहू पर अत्याचार प्रारंभ हो जाते हैं। उसे अनेक प्रकार के मानसिक कष्ट दिए जाते हैं। पहले तो उसे विवश किया जाता है कि वह तंग आकर आत्महत्या कर ले। यदि ऐसा नहीं होता तो सास, ननद, पति आदि मिलकर बहू को जला डालते हैं और इसे दुर्घटना का नाम दे दिया जाता है।

इस प्रकार विषय के बिंदु और उप-बिंदु अनुच्छेदों की रचना में सहायक होते हैं और निबंध बनता चला जाता है।

क्रियाकलाप-22.2

1. नीचे दिए विषयों के बिंदु और उप-बिंदु बनाइए :

   (क) (i) हमारा पर्यावरण   (ii) सांप्रदायिक एकता

   (iii) बालिका शिक्षा   (iv) वन्य जीवन का संरक्षण

2. निम्नलिखित विषयों के दिए गए बिंदुओं और उप-बिंदुओं के आधार पर अनुच्छेद लिखिए :

   (क) **प्लेटफॉर्म पर :** अनेक प्रकार के लोग, उम्र, वेशभूषा, क्रियाकलाप, शोरगुल,

कुली, सामान बेचने वालों की हाँकें, भगदड़, अव्यवस्था आदि।

(ख) **सड़क पर :** चुपचाप शांतिपूर्वक यात्रा, तभी सामने से एक स्कूटर, टक्कर, दुर्घटना, घायल की दशा, भीड़ के सुझाव, पुलिस-सहायता।

(ग) **नारी का सशक्तीकरण :** घर में–माँ, बहन, पत्नी, बहू, बेटी;

घर से बाहर–कार्यालय, समाज-सेवा, सेना, खेलकूद, पुलिस में ।

प्रत्येक स्थान पर नारी की पहुँच–हवाई जहाज के पायलट के रूप में भी और अंतरिक्ष में भी।

उपसंहार-लेखन

अब आप भूमिका और विषय-वस्तु लिखना सीख गए हैं। आइए, उपसंहार लेखन का भी अभ्यास करें। क्या आप जानते हैं कि उपसंहार में पूरे निबंध का निचोड़ और निष्कर्ष होता है। जिस प्रकार भूमिका अच्छी हो, तो वह पाठक को निबंध पढ़ने के लिए आकर्षित करती है, उसी प्रकार यदि उपसंहार अच्छा हो, तो पढ़ने वाले पर उसका प्रभाव अच्छा पड़ता है।

निबंध के मुख्य भाग यानी विषय-वस्तु के बिंदुओं में जो बातें आपने उठाई थीं, जो तर्क दिए थे, उनका निष्कर्ष और समाधान उपसंहार में दिया जाता है। विविध बातों में तालमेल बिठाइए और उसे प्रभावपूर्ण बनाइए। जिस प्रकार भूमिका लिखने की कोई एक विधि नहीं है, उसी प्रकार उपसंहार की भी कोई निश्चित विधि नहीं है। आप किसी सूक्ति से भी निबंध का उपसंहार लिख सकते हैं। प्रभावी उपसंहार लिखने की सफलता की एकमात्र कसौटी यह है कि उसके बाद निबंध अधूरा-सा न लगे। ऐसा न लगे कि अभी कुछ छूट रहा है या पढ़ने वाला सोचे कि अभी कुछ शेष है।

आइए, नमूने के तौर पर देखें 'आधुनिक नारी' निबंध के लिए निम्नलिखित दो प्रकार के उपसंहार :

(क) *इस प्रकार स्पष्ट है कि आज की नारी प्रत्येक क्षेत्र में पुरुष के कंधे से कंधा मिलाकर राष्ट्र–निर्माण में सहयोग दे रही है, परंतु पुरुष का उसके प्रति दृष्टिकोण अब भी पुराना और पिछड़ा हुआ है। वह उसे बंधन में रखना चाहता है, उससे ईर्ष्या करता है, उसे विलासिता की वस्तु मानता है; पर यह स्थिति अब अधिक दिन नहीं रहेगी। अब नारी अपना सामर्थ्य और अपना लक्ष्य दोनों जानती है उसे लक्ष्य पाने से कोई नहीं रोक सकता।*

(ख) *पुरुष और नारी सदा ही एक दूसरे के पूरक रहे हैं। नारी आज पुरुष की भाँति शिक्षित है। उसे संविधान से अधिकार मिले हुए हैं। पुरुष का सहयोग भी उसे प्राप्त है। वह प्रगति के मार्ग पर आगे बढ़े, इस पर किसी को कोई आपत्ति नहीं; पर उसे यह नहीं भूलना चाहिए कि पुरुष के बिना उसकी उपलब्धि की प्रशंसा भी कौन करेगा! इसलिए अच्छा यही है कि वह पुरुष की संगिनी और मित्र बनी रहे।*

टिप्पणी

क्रियाकलाप-22.3

नीचे दिए गए उदाहरण के अनुसार उपसंहार बिंदु बनाइए।

(क) **दहेज प्रथा**

उपसंहार-बिंदु : सारा भारतीय समाज दहेज-प्रथा के अभिशाप से पीड़ित, समाज में कलंक, विदेशों में बदनामी, प्रगति में बाधक, नवयुवकों का दायित्व, कुप्रथा से मुक्ति।

(i) परोपकार

(ii) समाचार पत्र

(iii) यदि मैं रेलमंत्री होता

(ख) **व्यायाम** : अच्छे स्वास्थ्य के बिना जीवन भार, समाज और देश के कल्याण के लिए, सुखी जीवन के लिए व्यायाम, कोई न कोई व्यायाम करना परमावश्यक।

22.5 निबंध का नमूना

अब तक हमने निबंध के अलग-अलग भागों पर चर्चा की। आइए, उनके उदाहरण भी देखें। यहाँ हम एक पूरा निबंध उदाहरण के रूप में दे रहे हैं। इसको पढ़कर आप समझ सकेंगे कि किसी विषय पर पूरा निबंध कैसे लिखा जाना चाहिए। इस निबंध को ध्यान से पढ़िए, सोचिए और समझिए।

सबसे सुंदर देश हमारा

इस भूमंडल पर सैकड़ों देश हैं। एक से बढ़ कर एक। छोटे-बड़े, गर्म-ठंडे, धनी-निर्धन, अनेक प्रकार के देश। पर, सारे भूमंडल में शेर-सा सिर उठाए, अंगद के पाँव-सा अटल, सूरज-सा प्रखर, चाँद-सा उजला बस एक ही देश है। मेरा देश – भारत देश। तभी तो इकबाल ने कहा है – *'सारे जहाँ से अच्छा हिंदोस्ताँ हमारा।'*

तीन-तीन सागर रात-दिन इसके चरण पखारते हैं। अथाह सागर की लहरें एक पर एक आकर इसके तटों पर सिर पटकती हैं, पर इसकी थाह नहीं पातीं। निराश लौट जाती हैं। प्रकृति ने इसे अपनी प्रियतम पहचान दी है। बर्फ़ीला हिमालय इसे भव्य रूप देता है, सुंदरतम बनाता है। कश्मीर से उत्तर-पूर्व प्रांतों तक फैला हिमालय – सदा धवल, सदा शीतल, ऐसा है इसका मुकुट।

गंगा-यमुना इसके गले का हार हैं। सतलुज, नर्मदा, ताप्ती, महानदी, कृष्णा, कावेरी इसकी धमनियाँ हैं– इसका जीवन हैं। विंध्य-सतपुड़ा इसके कमरबंद हैं। अरावली शृंखला इसकी धूसर अलकें हैं। ऐसा सुंदर-सलोना मोहक है इसका रूप। तभी तो देवता भी मेरे देश में जन्म लेना चाहते हैं।

मेरे देश की धरती सतरंगी है। कहीं हरे-भरे खेत, तो कहीं सरसों; कहीं सूरजमुखी का पीलापन, तो कहीं टेसू की लालिमा और कहीं गेहूँ-धान के रंग बदलते खेत; केरल के ताड़, नारियल, काजू, कहवा के बगीचे; सतपुड़ा के घने वन; कश्मीर की केसर की क्यारियाँ; असम के चाय के बाग – सब मिलाकर मेरे देश के सौंदर्य को हज़ार गुना कर देते हैं।

मेरे देशवासियों की वेशभूषा देखिए–रंगीले राजस्थान की ओढ़नी, गुजराती पाग, पंजाबी सलवार-कुरता, हरियाणा की घाघरी, बनारसी साड़ियाँ, कश्मीरी फ़िरन – हर प्रांत का कोई न कोई विशेष पहनावा। इतना सुंदर, इतना मोहक कि विदेशी पर्यटक देखते ही रह जाते हैं।

तीज-त्योहार हों या मेले-उत्सव हों, मेरे देशवासियों के कंठों से लोकगीतों की लहरें फूटकर सारे वायुमंडल को गुँजा देती हैं। नाचते पैरों की थिरकन तो बस देखते ही बनती है। साथ में इतने विविध वाद्य कि बस पूछिए मत !

विशेषताएँ तो और भी हैं मेरे देश में इतने बड़े देश के सौंदर्य को भला शब्दों में कैसे बाँधा जा सकता है। अनेक कवियों ने, लेखकों ने इसकी प्रशंसा में बहुत कुछ लिखा है, पर इसके सौंदर्य का संपूर्ण वर्णन कोई नहीं कर सका। नित बदलते रूप का संपूर्ण वर्णन भला कैसे हो सकता है! हर भोर इस देश में नया रंग भरती है, हर शाम इसे नया रूप देती है। हम तो बस इतना ही कह सकते हैं – सबसे सुंदर, सबसे प्यारा, देश हमारा।

क्रियाकलाप-22.4

यहाँ 'साक्षरता:' एक वरदान' और 'बाल मज़दूरी: एक अपराध' निबंध के लिए कुछ महत्त्वपूर्ण बिंदु दिए जा रहे हैं, जिनके आधार पर निबंध लिखने का प्रयास कीजिए :

साक्षरता: एक वरदान

- 'अक्षर' से अभिप्राय
- 'साक्षर' का अर्थ तथा महत्त्व
- निरक्षर होने के कारण
- निरक्षरता की हानियाँ
- साक्षर होने के प्रेरक कारण
- साक्षरता के लाभ
- साक्षरता और शोषण-मुक्ति
- साक्षर बनने के अवसर
- साक्षरता-अभियान और हमारा दायित्व
- साक्षरता सभी के लिए
- साक्षरता और राष्ट्र–विकास
- साक्षरता और सद्भाव

बाल मज़दूरी

- बचपन से अभिप्राय
- बचपन का महत्त्व–अपेक्षा

टिप्पणी

- बाल-मज़दूरी का अर्थ एवं स्वरूप
- बाल मज़दूरी के विभिन्न रूप/आयाम
- बाल मज़दूरी के कारण
- बाल मज़दूरी और समाज का दायित्व
- छिनता बचपन: एक सामाजिक अभिशाप
- बाल-मज़दूरी निषेध-कानून का संदर्भ
- बाल मज़दूरी रोकने के उपाय
- बाल-अधिकारों की व्याख्या
- बच्चों को शिक्षा-जगत में प्रवेश हेतु आह्वान।

22.6 निबंध-लेखन से पूर्व की तैयारी

निबंध लिखना आरंभ करने से पूर्व निम्नलिखित बातों का अवश्य ध्यान रखा जाना चाहिए—

विषय का चुनाव

प्रश्न-पत्र में प्रायः पाँच-छह विषय दिए होते हैं। आपको उनमें से किसी एक पर निबंध लिखना होता है। अपने लिए विषय चुनते समय देखें कि आप किस पर अच्छा निबंध लिख सकते हैं! जिस विषय की जानकारी अच्छी हो, जिस पर आपके अपने विचार या धारणाएँ भी हों, शायद उससे संबंधित एक-दो उक्तियाँ भी याद हों– उस विषय को चुन लीजिए। कुछ विद्यार्थी किसी विषय को केवल अच्छा विषय समझ कर चुन लेते हैं, पर एक-दो अनुच्छेद लिखने के बाद उनकी कलम रुक जाती है। फिर विषय बदलना हानिकारक होता है, क्योंकि आप तब तक 10–20 मिनट खराब कर चुके होते हैं। बाद में दुविधा न हो, इसलिए आपको विषय का चुनाव सोच-समझ कर करना चाहिए। हाँ, यदि आपको लगे कि आप दो या तीन विषयों में से किसी भी विषय पर अच्छा निबंध लिख सकते हैं, तो केवल उस विषय को चुनिए, जिसके बारे में आपको लगे कि उस पर कम विद्यार्थी लिखेंगे। जहाँ अनेक विद्यार्थी एक ही विषय पर लिख रहे हों, वहाँ किसी नए विषय पर लिखा गया निबंध मौलिक बन जाता है और ऐसा निबंध परीक्षक पर अच्छा प्रभाव डालता है।

रूपरेखा का निर्माण

मनपसंद विषय चुनने के बाद कॉपी के सबसे पीछे वाले (रफ़ काम वाले) पृष्ठ पर आप उसकी रूपरेखा बना लीजिए। भूमिका, वर्णन और उपसंहार में आप क्या-क्या देना चाहेंगे, इसका निर्धारण पहले से कर लेने पर लिखने में सुविधा होती है। इससे निबंध में क्रमबद्धता बनी रहती है और दुहराव नहीं होता। जैसे – 'महानगर का जीवन' विषय चुनने पर रूपरेखा कुछ इस प्रकार की हो सकती है :

भूमिका
- नगर और महानगर; महानगर किसे कहते हैं?
- महानगरों की विशेषता; मेरा महानगर, इसका जीवन।

विषय-वस्तु वर्णन
- महानगर में भीड़-भाड़
- आवास की समस्या

- निवास और कार्य-स्थल की दूरी, यातायात की समस्या
- व्यस्तता और समय का अभाव
- तड़क-भड़क, शान-शौकत और गरीबी
- प्रदूषण—ध्वनि, वायु, जल और स्वास्थ्य संबंधी समस्याएँ
- बड़े-बड़े अस्पताल, फिर भी चिकित्सा साधनों की अपर्याप्तता
- आसपास ढेरों लोग होते हुए भी आपसी परिचय का अभाव
- सुख-सुविधाएँ; रोज़गार की संभावनाएँ
- देश-विदेश से संपर्क

उपसंहार

- बुराइयाँ और अच्छाइयाँ भी
- उद्योग-धंधों के कारण विवशता
- कुछ सुझाव।

ऊपर रूपरेखा का एक नमूना दिया गया है। ज़रूरी नहीं कि आप भी ऐसी ही रूपरेखा बनाएँ। भूमिका में आप तीव्र औद्योगिक विकास के कारण गाँवों से शहरों की ओर हो रहे पलायन का उल्लेख कर सकते हैं। वर्णन में आप चाहें, तो महानगरीय सुख-सुविधाओं पर बल दे सकते हैं और चाहें तो केवल गरीबों के बेबस-बेसहारा जीवन पर।

आप उपर्युक्त विषय पर अपनी रूपरेखा के अनुसार निबंध-लेखन शुरू कीजिए। पहले शीर्षक दीजिए और भूमिका का अनुच्छेद प्रारंभ कर दीजिए।

क्रियाकलाप-22.5

1. यहाँ एक निबंध की रूपरेखा दी जा रही है। आप उसके आधार पर निबंध के विषय का अनुमान लगाइए।

   (क) **भूमिका** – यात्रा क्यों ? रेल-यात्रा की चाह, पूर्ति का अवसर

   (ख) **विषय-वस्तु/वर्णन**
   – यात्रा की तैयारी, टिकट-आरक्षण
   – यात्रा का प्रारंभ, रेलवे प्लेटफॉर्म का दृश्य
   – रेल का छूटना, धीरे-धीरे शोरगुल में कमी
   – सहयात्रियों से परिचय
   – रात को सबके सो जाने पर घटी घटना

– डिब्बे में आतंक, ज़ंजीर खींचना, रेल का रुकना
– घटना की विशेषता।

(ग) **उपसंहार**
– कभी न भुलाया जा सकने वाला अनुभव
– अब भी याद।

शीर्षक : ....

2. 'वह दुर्घटना' विषय की रूपरेखा लिखिए।

3. 'मेरी प्रिय पुस्तक' विषय की दो भिन्न-भिन्न रूपरेखाएँ तैयार कीजिए।

22.7 कुछ ध्यान रखने की बातें

कुछ और भी बातें हो सकती हैं, जो किसी निबंध को अच्छा निबंध बनाने में सहायक होती हैं। आइए, उनकी भी कुछ चर्चा कर ली जाए।

1. भाषा

भाषा के प्रति सजगता ज़रूरी है। वाक्य छोटे-छोटे हों और परस्पर संबद्ध हों। लंबे वाक्य न केवल उबाऊ होते हैं, उनमें रचना-दोष होने की संभावना भी रहती है। वाक्य हर प्रकार से शुद्ध लिखने का प्रयास करना चाहिए। वर्तनी की अशुद्धियों से बचें। आवश्यक नहीं कि शुद्ध तत्सम या कठिन शब्दों की भरमार हो। सरल प्रचलित शब्दों का प्रयोग निबंध को स्वाभाविक बनाता है। हाँ, अंग्रेज़ी, अरबी और फ़ारसी के शब्दों के अनावश्यक प्रयोग से बचना चाहिए। जैसे – मिष्ठान्न-विक्रेता (तत्सम) के स्थान पर मिठाई का दुकानदार या मिठाईवाला या मिठाई बेचने वाला शब्द चल सकते हैं, पर 'स्वीट मर्चेंट शॉप' लिखना ठीक नहीं।

आपने इस पुस्तक में स्थान-स्थान पर मुहावरों के प्रयोग ध्यान से पढ़े होंगे। आप जानते हैं कि मुहावरे भाषा में जान डाल देते हैं, अतः यथासंभव आप उनका भी प्रयोग करें।

2. रूपाकार

निबंध लिखना सीख लेने पर जीवन में बड़े-बड़े निबंध लिखने का अवसर भी आपको प्राप्त हो सकता है। परंतु, परीक्षा में आपको केवल तीन-चार सौ शब्दों का निबंध लिखना होता है। भूमिका और उपसंहार के एक-एक अनुच्छेद पर्याप्त हैं। इसके अतिरिक्त तीन-चार अनुच्छेदों में विषय से जुड़े कम-से-कम चार बिंदुओं में विषय-वस्तु का विस्तार पर्याप्त है। निबंध लिखते समय, भाषा और रूपाकार के अतिरिक्त निम्नलिखित बातों का भी विशेष ध्यान रखना आवश्यक है–

- प्रत्येक नई बात नए अनुच्छेद से प्रारंभ करें और उस अनुच्छेद में उसी बात पर अपने विचार लिखें;
- वाक्य परस्पर गुँथे हुए हों;
- विचार क्रमबद्ध हो, उनमें कसाव हो, दोहराव न हो;
- एक बिंदु को अधूरा छोड़ कर दूसरे बिंदु का उल्लेख न हो;
- पूरे निबंध में विचारों और भाषा का सहज प्रवाह हो।

आपने क्या सीखा

1. निबंध मुख्यतः तीन प्रकार के होते हैं—वर्णनात्मक, विचारात्मक और भावात्मक।
2. वर्णनात्मक निबंधों में घटनाओं का क्रम, सूचनाएँ तथा साधारण वर्णनात्मक बातें होती हैं।
3. विचारात्मक निबंधों में बुद्धितत्त्व की प्रधानता होती है। ये निबंध किसी समस्या पर लिखे जाते हैं, इनमें तर्क-दृष्टि रहती है।
4. भावात्मक निबंधों में कल्पना की प्रधानता, भाव की तीव्रता तथा आत्मीयता होती है।
5. निबंध के मुख्यतः तीन अंग होते हैं – भूमिका, विषय-वस्तु तथा उपसंहार।
6. निबंध लिखने से पूर्व विषय का चयन ध्यानपूर्वक करना चाहिए। निबंध का विषय सुनिश्चित करने के बाद विषय की रूपरेखा बिंदुओं और उप-बिंदुओं सहित बनाना आवश्यक है।
7. निबंध में क्रमबद्धता होनी चाहिए, वाक्य छोटे तथा प्रभावशाली होने चाहिए।
8. निबंध लिखकर दोहराना आवश्यक है। इससे वर्तनी व व्याकरण की बहुत-सी अशुद्धियाँ आप स्वयं ही दूर कर सकते हैं।

पाठांत प्रश्न

1. 'पर्यावरण की शुद्धता' अथवा 'बढ़ता प्रदूषण' विषय की भूमिका अपने शब्दों में लिखिए।
2. 'शहरी जीवन' अथवा 'कटते पेड़, घटते वन्य पशु' शीर्षक के निबंध का उपसंहार लिखिए।
3. निम्नलिखित विषयों पर निबंध लिखने के लिए विस्तृत रूपरेखा बनाइए :

   (क) मेरा देश

(ख) श्रम का महत्त्व

(ग) नारी-शक्ति

4. निम्नलिखित में से प्रत्येक वर्ग से एक-एक विषय पर निबंध लिखिए (शब्द-सीमा : लगभग 300 शब्द)

(क) (i) दूरदर्शन : वरदान या अभिशाप

(ii) पढ़ी-लिखी लड़की रोशनी घर की

(iii) मनोरंजन के बदलते साधन

(iv) बढ़ता भ्रष्टाचार और घटता विकास

(v) जल-संरक्षण और मानव-जीवन

(vi) मोबाइल का बढ़ता चलन

(vii) प्रदूषण की समस्या

(viii) मेरा प्रिय त्योहार

(ix) जीवन में साहित्य का महत्त्व